समग्र हिंदी व्याकरण

डॉ० प्रेम भारती

प्रकाशक
संदर्भ प्रकाशन, भोपाल

ISBN : 978-81-904999-1-1

समग्र हिन्दी व्याकरण

डॉ. प्रेम भारती

प्रकाशक
संदर्भ प्रकाशन, भोपाल
जे-154, हर्षवर्द्धन नगर, भोपाल
मो. +91 9424469015

संस्करण
प्रथम 2018

मूल्य
रुपये 2500/-

मुद्रण
स्पेसिफिक प्रिन्टर्स
जेड-23, जोन-1, एम.पी. नगर,
भोपाल (म.प्र.)

शब्द-ब्रह्मरूपा है व्याकरण

हे! मेरी आत्मा
मेरे अंत:करण के आँगन में
तुम व्याकरण बन कर उतरी हो।
नाम-रूप (संज्ञा) का संसार रचकर
तुमने विविध प्राणियों, स्थानों तथा वस्तुओं से
मेरी पहचान करवाई।
सर्वनाम बनकर
मैं, तुम और वह की उपाधि से
संसार में व्यवहार करना सिखाया।
विशेषण बनकर मुझमें सदगुणों का
संख्यात्मक और परिमाणात्मक विस्तार किया।
क्रिया के रूप में तुम्हीं ने मुझे
कार्य के होने और करने की
कला सिखाई।
क्रिया-विशेषण बनकर
मुझे बताया कि
काम, कैसे, कहाँ, कितना और कब करना चाहिए।
सम्बन्धबोधक बनकर तुम्हीं ने संज्ञा और सर्वनाम के साथ
अन्य सम्बन्धों के तार भी जोड़े।
और समुच्चय बोधक बनकर
हर शब्द, वाक्यांश और वाक्य के
माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक रूप का विस्तार किया।

मैं तो केवल एक साधारण जीव हूँ
विस्मयादि बोधक के रूप में
अपने मनोभावों के प्रसून तुम्हें अर्पित करना जानता हूँ।
मृदु–भाषी बनना तुमने सिखाया।
समाज और संस्कृति का वाहक बनना तुमने सिखाया।
भाषा के क्षेत्र में अनुशासन का पाठ
मुझे तुमने पढ़ाया।
तुम्हारी स्तुति के लिए
बस मेरे पास इससे अधिक
शब्द नहीं है।
हे शब्द–ब्रह्मरूपा!
व्याकरण
तुम्हें शत्–शत् नमन्।।

–डॉ. प्रेम भारती

आमुख

विगत कई वर्षों से विद्यालय और उच्चतर विद्यालय स्तर की कक्षाओं में हिन्दी और व्याकरण का अध्यापन-प्रशिक्षण देते हुए आधुनिक संदर्भ में हिन्दी के एक पूर्ण किन्तु वैज्ञानिक व्याकरण की आवश्यकता का मैं अनुभव करता रहा। आधुनिक हिन्दी की प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर इधर जिन व्याकरण ग्रंथों का सृजन किया जा रहा है वे वैज्ञानिक धरातल का स्पर्श तो करते हैं किन्तु उनमें नवाचार का अभाव है। अत: वे छात्रों की आवश्यकता को पूरी नहीं कर पाते।

आज की हिन्दी केवल संस्कृत से आगत, तत्सम, तद्‌भव और अर्द्ध तत्सम शब्दावली से युक्त भाषा ही नहीं है अपितु उसमें देशी, विदेशी और संकर-शब्दों का भी समोवश होता जा रहा है, जिससे उनकी पद-संरचना एवं वाक्य विधा में भी परिवर्तन हुआ है। ऐसे कितने ही नियम हैं, जो केवल संस्कृत-निष्ठ शब्दों पर ही पूर्णत: लागू होते हैं किन्तु संकर-शब्दों के साथ उनका निर्वह्न असंभव सा हो गया है। अत: उनका स्वरूप और व्याकरण भी बदल रहा है।

मेरा सौभाग्य रहा है कि विश्वविद्यालय स्तर तक की अनेक कार्यशालाओं में मुझे व्याकरण पर बोलने का अवसर मिला है। समय-समय पर छात्रों तथा प्रतिभागियों के साथ संवाद करते समय मुझे तभी से यह ध्यान आया कि व्याकरण की सैद्धांतिक जड़ता को तोड़ा जाना चाहिए और व्याकरण को एक विषय के रूप में न पढ़ाकर उसे सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ा जाए। इस ध्येय की पूर्ति हेतु मैंने लेखन कार्य किया तथा मुझे लगा कि विषय वस्तु रुचिकर बनती गई और छात्रों को समझ में आने लगी। छात्रों का इससे गुणात्मक सुधार भी हुआ।

आज जिसे नवाचार कहा जाता है- उसमें से तीन गुण ही आवश्यक हैं- समझ विकसित करना, रोचक प्रस्तुति देना और छात्रों का गुणात्मक विकास करना। यही सोच मेरे लेखन का आधार बना।

भारतीय जीवन-दर्शन में परम ब्रह्म ही सर्वशक्तिमान, सर्वत्र विद्यमानकर्ता है और प्रकृति क्रिया। यही कर्त्ता और क्रिया मिलकर भाषा-संसार की रचना करते हैं। संभव है, कुछ विद्वानों को यह बात उचित न लगे किन्तु मैं तो अपने परिश्रम को सार्थक तभी समझूँगा तब पाठकों को इससे संतोष मिले।

मेरा सभी अध्यापकों से अनुरोध है कि वे इस पुस्तक का गहराई से अध्ययन करें और व्याकरण को जीवन के हर पहलू से जोड़ने की शैली विकसित करें, तभी व्याकरण की समझ बनेगी और आने वाले पीढ़ी को भी विरासत में हम कुछ दे पाएँगे।

ग्रंथ के विषय में एक महत्वपूर्ण बिन्दु यह है कि यह ग्रंथ मेरे द्वारा पूर्व में प्रकाशित

व्याकरण की ग्यारह पुस्तकों पर आधारित है। इन पुस्तकों की मौलिकता का दावा तो मैं नहीं कर सकता क्योंकि नई इमारत गढ़ने में सीमेंट, रेत, ईंट आदि का संग्रह तो करना ही पड़ता है किन्तु विषय–वस्तु के चयन और प्रस्तुतिकरण को रोचक ढँग से रखने का विशेष ध्यान रखा गया है।

इन भावनाओं के साथ मैं उन सभी साथियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिनके प्रश्न और जिज्ञासा मेरे चिंतन और लेखन का आधार बने। विशेषकर देववाणी प्रकाशन, इलाहाबाद के मालिक श्री रमेश शुक्ल जो हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के भाषा–विभाग के प्रभारी भी रहे हैं। उन्होंने मेरी व्याकरण संबंधी सभी पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

श्री श्याम सुंदर दुबे निदेशक, मुक्तिबोध सृजनपीठ, सागर का जिन्होंने इस विषय में मेरा मनोबल बढ़ाया तथा एक नई दृष्टिकोण विकसित करने का सामर्थ्य दिया।

विशेष रूप से श्री राकेश सिंह जी का जिन्होंने संदर्भ प्रकाशन (भोपाल) द्वारा समग्र व्याकरण प्रकाशित करने का संकल्प लिया और अथक परिश्रम कर समय–सीमा में धैर्य पूर्वक इसका आकल्पन किया। उनकी इस उदारता को मैं भुला नहीं सकता। अन्य कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर उन्होंने मुझे कृतार्थ किया है।

अंत में पाठकों से निवेदन है कि कोई भी कृति अपने आप में पूर्ण नहीं होती है। जिज्ञासाएँ अनन्त हैं और समाधान भी किन्तु उन कमियों की ओर वे अवश्य ध्यान दिलाएँ, जिन्हें आगामी संस्करण में सुधारा जा सके, तो मैं उनका आभारी रहूँगा।

–डॉ. प्रेम भारती

हिन्दी व्याकरण की विकास यात्रा

विषय प्रवेश : हिन्दी व्याकरण का इतिहास जानने की इच्छा हर शोधार्थी को रहती है किन्तु इस संबंध में शोधपूर्ण कार्य देखने में नहीं आया है। जो कुछ भी पढ़ने में आया उससे ऐसा प्रतीत होता है कि- व्याकरण के प्रवर्त्तक के रूप में पाणिनि का नाम इसलिए उल्लेखनीय है कि उन्होंने अपने ग्रंथ **अष्टाध्यायी** के रूप में एक व्यवस्थित ग्रंथ रचा। नवीं शताब्दी में भर्तृहरि ने **'वाक्य प्रदीप'** पुस्तक लिखी जिसमें व्याकरण के दर्शनपक्ष का बहुत रोचक वर्णन किया गया है। इस शृंखला में हमें चंद्र का नाम भी 12वीं सदी में आता है, जिन्होंने **'शब्दानुशासन'** नामक ग्रंथ की रचना की। इस पुस्तक के लेखक ने जन-भाषाओं का विवेचन सुंदर ढँग से किया है। परंतु हिन्दी व्याकरण का प्रथम आचार्य कौन है, इस विषय में निश्चय पूर्वक कुछ भी नहीं कहा जा सकता है क्योंकि इसकी विधिवत प्रस्तुति अंग्रेजी विद्वानों द्वारा की गई। ईसाई धर्म के प्रचार के लिए जन-भाषाओं की प्रकृति का अध्ययन करके उन्होंने बोल-चाल के हिन्दी शब्दों और वाक्यों को उसमें उदाहरण स्वरूप रखा।

जार्ज ग्रियर्सन तथा डॉ. पुनीति कुमार चटर्जी ने व्याकरण रचना का प्रयास 1676 ई. के आसपास किया। उर्दू तथा हिन्दी के मिले जुले उदाहरणों से लल्लूलाल द्वारा लिखित **'हिन्दी कवायद'** भी इस काल की रचना है किन्तु हिन्दी व्याकरण के लेखन का कार्य अंग्रेजी के अनुकरण पर ही चला।

सन् 1876 में केलाग ने तुलनात्मक पद्धति के आधार पर हिन्दी व्याकरण की व्यवस्थित रूप से रचना की। बाद में यही व्याकरण बहुत काल तक आदर्श रूप में बना रहा। इस ग्रंथ का नाम 'ग्रामर ऑफ दी हिन्दी लेंग्वेज' (हिन्दी भाषा का व्याकरण) था, जो सन् 1876 में ही प्रकाशित हुआ। उन्होंने 13 अध्यायों में विषय-वस्तु का विस्तार कर इस ग्रंथ की रचना की थी। इसके बाद भारतेन्दु हरिश्चन्द ने भी सन् 1884 में हिन्दी व्याकरण लिखा था जो मात्र 20 पृष्ठ का था। यह व्याकरण प्राथमिक शालाओं के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ। कामता प्रसाद गुरु ने 1921 ई. में केलाग की पुस्तक को महत्व नहीं दिया और व्याकरण की ऐसी पुस्तक तैयार की जो आज तक भी सर्वमान्य बनी हुई है। काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने इसे प्रकाशित किया था। हिन्दी का यह सांगोपांग व्याकरण है।

बाद में सन् 1943 में किशोरीदास वाजपेयी द्वारा लिखित ब्रजभाषा का व्याकरण प्रकाशित हुआ। उन्होंने हिन्दी व्याकरण पर आधारित अन्य पाँच पुस्तकें और लिखी-

1. हिन्दी निरुक्त - जिसमें शब्दों के विकास की प्रक्रिया स्पष्ट की गई है।
2. हिन्दी शब्दानुशासन- व्याकरण का तत्त्व दर्शन का स्वरूप रखा गया है।
3. सरल शब्दानुशासन- छात्रोपयोगी संस्करण।

4. भारतीय भाषा विज्ञान
5. हिन्दी वर्तनी तथा शब्द विश्लेषण।

इस प्रकार वाजपेयी जी ने हिन्दी व्याकरण तथा भाषा से संबंधित साहित्य रचकर हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया तब से लेकर आज तक इस क्षेत्र में जिन अनेक विद्वानों ने कार्य किया उनमें महत्वपूर्ण नाम हैं– **डॉ. दीपाशिन्स** का। **'हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा'** नाम की उनकी यह पुस्तक राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें किसी अल्पभाषा के व्याकरण के नियम आरोपति करने का प्रयास उन्होंने नहीं किया है।

डॉ. श्याम सुंदर दुबे के अनुसार हम कह सकते हैं कि कामता प्रसाद गुरु ने व्याकरण की नींव रखी। वाजपेयी ने हिन्दी व्याकरण का शास्त्रीय पक्ष प्रस्तुत किया। इसी कड़ी में आगे डॉ. बाहरी ने व्याकरण के व्यवहारिक स्वरूप का अनुशीलन किया है किन्तु उसे छुटपुट प्रयत्नों के अलावा नवाचार से जोड़ने का प्रयत्न अभी तक उचित प्रकार से नहीं हुआ है।

हिन्दी व्याकरण की कुछ ऐसी विशेषताओं का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है, जिससे पाठक यह समझ ले कि किस प्रकार हिन्दी की व्याकरण संस्कृत व्याकरण पर आधारित होते हुए भी, उससे स्वतंत्र विशेषता भी रखती है। इस ओर हमारा ध्यान अवश्य जाना चाहिए। कुछ विशेषताओं का यहाँ उल्लेख किया जाना उपयोगी होगा–

1. हिन्दी व्याकरण में 'ड़' तथा 'ढ़' आगत ध्वनियाँ हैं। ये ध्वनियाँ संस्कृत व्याकरण में नहीं है।
2. हिन्दी व्याकरण में देशज तथा विदेशी शब्दों का प्रयोग भी होने लगा है। संस्कृत से लिए गए तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग धीरे-धीरे कम हो रहा है। संकर शब्दों का प्रयोग बढ़ रहा है।
3. हिन्दी संधि के कुछ नए नियम बनाए गए हैं, जबकि संस्कृत के अनुसार स्वर, व्यंजन तथा विसर्ग संधि भी प्रचलन में है।
4. हिन्दी वाक्य-रचना का ढाँचा भी संस्कृत से भिन्न है, जिसके अपने नियम हैं।
5. हिन्दी मुहावरे तथा लोकोक्तियों का प्रयोग भी एक विशेषता है। ये प्रयोग संस्कृत भाषा से भिन्न है।
6. संस्कृत व्याकरण में दो प्रकार के रूप देखने को मिलते हैं– तिङन्त और कृदन्त। तिङ्गत में कर्ता या कर्म के अनुसार पुल्लिंग स्त्रीलिंग के रूप भेद नहीं होते। किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार, 'हिन्दी ने कृदन्त क्रियाओं को अधिक पसन्द किया है क्योंकि यह बहुत सरल और स्पष्ट है। यही कारण है कि हिन्दी की अधिकांश क्रियाएँ कृदन्त हैं।'
7. किशोरी दास वाजपेयी के अनुसार 'हिन्दी में संस्कृत के समान विशेषण के साथ अलग विभक्ति लगाने का बखेड़ा नहीं है। विशेषण तो विशेष्य के रंग में डूबा हुआ है। विशेष्य की विभक्तियाँ ही विशेषण की विभक्तियाँ हैं। सर्वनाम में ये विशेषण निर्विभक्तिक होते हैं।'

8. संस्कृत में विभक्तियों के प्रयोग में अनेक रूप भेद होते हैं, हिन्दी में केवल आठ कारकीय विभक्तियों से काम चल जाता है।
9. हिन्दी के सर्वनामों पर संस्कृत की तुलना में प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं का अधिक प्रभाव है।
10. हिन्दी के कुछ अव्यय संस्कृत से अवश्य आए हैं किन्तु कुछ उसके अपने भी हैं।
11. संस्कृत में पूर्ण विराम का प्रयोग अधिक होता है किन्तु अन्य चिह्नों का नहीं। हिन्दी के विराम चिह्नों पर अंग्रेजी विराम चिह्नों का प्रभाव देखने में अवश्य आता है।

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि हिन्दी व्याकरण पर संस्कृत और अंग्रेजी व्याकरण पर प्रभाव अवश्य देखने को मिलता है किन्तु उसकी अपनी दो विशेषताओं-सरलता तथा स्पष्टता के कारण हिन्दी भाषा को वह गौरव प्राप्त हुआ कि आज वह राष्ट्र-भाषा के रूप में विश्वभर में जानी जाती हैं। अत: हमें विद्यालयों तथा महाविद्यालय स्तर पर इसे नवाचार से जोड़ना आवश्यक हो गया है ताकि व्याकरण का विषय रटन विधा तक सीमित न रहे।

मेरी मान्यता है कि जिस प्रकार कुम्भकार मिट्टी से घड़े बनाता है, उसे सँवारता है। उसी प्रकार भाषा को सही रूप देने का कार्य वैयाकरण का है। भाषा की जड़ है- व्याकरण। साथ ही, व्याकरण शिक्षण का सामाजिक-सांस्कृतिक संबंध की दृष्टि से भी महत्व अविच्छिन्न रूप में है, यह बात भी हमें अनुभव में लाना होगा। अत: हर वैयाकरण का कर्त्तव्य है कि वह समाज की प्रवृत्ति, भौगोलिक परिवेश आदि में होने वाले ऐसे परिवर्तनों को समझें और तदनुरूप उसे व्याकरण शिक्षण से जोड़ें।

सामाजिक विकास के साथ-साथ भाषा के स्वरूप में भी परिवर्तन होता रहता है। उस परिवर्तन से भाषा मुक्त नहीं हो सकती। अत: हमें व्याकरण के हर पहलू को ध्यान में रखकर भाषा की शुचिता तथा शुद्धता को बनाए रखना होगा और उसमें निहित हर प्रकरण को जीवन और उससे जुड़े सामाजिक-सांस्कृक सरोकारों के नए-नए संदर्भों से छात्रों की रुचि तथा सहभागिता के साथ जोड़ना होगा। यह एक चुनौती भरा काम है किन्तु उसे शिक्षक के लिए जो पेट की भाषा के साथ-साथ संस्कार की भाषा भी जानता हो कठिन कार्य नहीं है।

व्याकरण पर यूँ तो अनेक पुस्तकें पढ़ने को मिलती हैं किन्तु प्रस्तुत पुस्तक '**समग्र हिन्दी व्याकरण**' की इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार की गई है।

इसमें विषय-वस्तु को चार शीर्षकों के अंतर्गत रखा गया है-

(क) प्रसंग (दैनिक जीवन से संबंधित)।
(ख) परिभाषा
(ग) प्रकार, पहचान एवं प्रयोग
(घ) प्रायोजित कार्य

इन शीर्षकों के पीछे हेतु यह है शिक्षकगण व्याकरण की नीरसता तोड़ने के लिए छात्रों को प्रसंगानुकूल कहानियाँ सुनाएँ, उसके आधार पर परिभाषा स्पष्ट करें तथा उसे प्रयोग करने हेतु छात्रों को प्रायोजित कार्य दें। साथ ही, नवाचार की दृष्टि से व्याकरण की समझ विकसित करने

के लिए इस पुस्तक के आधार पर प्रश्न तुम्हारे उत्तर हमारे कार्यक्रम प्रति सप्ताह अथवा मासान्त में रखें ताकि छात्रों का अध्ययन अधिक व्यावहारिक बन सके।

मेरा अनुरोध है, यह प्रयास अंतिम नहीं है, प्रारंभ है। इस प्रयास को आगे भी वैयाकरणों को जारी रखना चाहिए। यह कैसे होगा- इसके लिए व्याकरण लगभग पन्द्रह पुस्तकें मेरी प्रकाशित हुई हैं। उनमें से 11 पुस्तकों को समग्र रूप से यहाँ दिया जा रहा है। पुस्तकों की सूची इस प्रकार है-

क्र.	**पुस्तक का नाम**	**प्रकाशक**
1.	हिन्दी वर्ण और वर्तनी	संदर्भ प्रकाशन, इलाहाबाद (2009)
2.	हिन्दी संधि अवधारणा और अभ्यास (इस पुस्तक के आधार पर संधि पर आधारित साफ्टवेयर तैयार किया जा रहा है)	आरती प्रकाशन, इलाहाबाद (2012)
3.	हिन्दी : शब्द और पद	सुरभि प्रकाशन, इलाहाबाद (2014)
4.	हिन्दी व्याकरण : पद व्यवस्था एवं व्यवहार	संदर्भ प्रकाशन, इलाहाबाद (2014)
5.	हिन्दी वाक्य रचना और विधान	आरती प्रकाशन, इलाहाबाद (2014)
6.	विराम चिह्न : प्रकार एवं प्रयोग	देववाणी प्रकाशन, इलाहाबाद (2011)
7.	व्याकरण की समझ	देववाणी प्रकाशन, इलाहाबाद (2015)
8.	वस्तुनिष्ठ व्याकरण	अंकुर प्रकाशन, इलाहाबाद (2014)
9.	मुहावरों का खेल और लोकोक्तियाँ	आरती प्रकाशन, इलाहाबाद (2015)
10.	कैसे देखें हिन्दी शब्दकोश	सुरभि प्रकाशन, इलाहाबाद (2011)
11.	व्याकरण परिवार कौमुदी (एकांकी संग्रह)	सुरभि प्रकाशन, इलाहाबाद (2012)

(इस संग्रह में नौ एकांकी हैं, जिसका एक एकांकी मध्य प्रदेश शासन द्वारा प्रकाशित कक्षा 6 की भाषा भारती में शामिल है।)

इन पुस्तकों को अलग-अलग क्रय करने पर महँगी पड़ती हैं, यह पाठकों का कहना था। अत: पाठकों के अनुरोध पर ही यह प्रयास किया गया है।

नवाचार को ध्यान में रखते हुए आप 'समग्र हिन्दी व्याकरण' की इन पुस्तकों का अध्ययन करेंगे, तो आपको एक नई दृष्टि मिलेगी, ऐसी आशा है।

-डॉ. प्रेम भारती
एफ-9/49, तुलसी नगर, भोपाल
मो. 9424413190

अनुक्रमणिका

हिंदी संधि : अवधारणा एवं अभ्यास 87-229

ख. व्यंजन संधि

ग. विसर्ग संधि

3. स्वमूल्यांकन

4. विभिन्न परीक्षाओं में पूछी गई संधि

5. परीक्षापयोगी संधियों की सूची (वर्ण क्रमानुसार)

हिंदी : शब्द और पद 230–350

इकाई–एक : शब्द परिचय

1.1. शब्द क्या है?

1.2. शब्द और पद

1.3. पद और पद बंध

इकाई–दो : शब्द–उत्पत्ति

2.1 तत्सम

2.2 अर्द्ध तत्सम

2.3 तद्भव

2.4 देशज

2.5 विदेशी–शब्द

2.6 (संकर) (द्विज)

इकाई–तीन : शब्द–रचना (व्युत्पत्ति)

3.1 रूढ़

3.2 (क) यौगिक

(ख) योगरूढ़

3.3 उपसर्ग

3.4 प्रत्यय

3.5 समास

इकाई–चार : शब्द और अर्थ

4.1 एकार्थी शब्द

4.2 अनेकार्थी शब्द

4.3 पर्यायवाची शब्द

4.4 विलोमार्थी शब्द

4.5 श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

4.6 वाक्यांशों के लिए एक शब्द

4.7 उनार्थक शब्द

4.8 समूहवाची शब्द

(स) वृत्ति

(द) वाच्य

3. अविकारी शब्द : अव्यय

I क्रिया विशेषण

II सम्बन्ध बोधक अव्यय

III समुच्चय बोधक अव्यय

IV विस्मयादि बोधक (द्योतक)

V निपात

4. परिशिष्ट

I पद व्यवस्था में शब्दों की पहचान कैसे करें?

II स्व-शिक्षण एवं स्व-परीक्षण

III निदानात्मक परीक्षण

हिंदी वाक्य-रचना और विधान 454-531

1. वाक्य परिचय

क. वाक्य किसे कहते हैं?

ख. लघुवाक्य

ग. प्रोक्ति

घ. शब्द और पद

ङ वाक्यांश (पद बंध) एवं उपवाक्य

च. वाक्य के गुण

2. वाक्य विन्यास

क. पदक्रम

ख. अन्विति/अन्वय

3. पदबंध और उपवाक्य

क. पद बंध - पदबंध से आशय

- पद बंध की संरचना
- पद बंध के भेद

ख. उपवाक्य- उपवाक्य से आशय

- उपवाक्य की संरचना
- उपवाक्य के भेद

4. वाक्य के भेद एवं रूपांतरण

क. अर्थ के आधार पर

ख. संरचना के आधार पर

4.2 जीवन-शैली में उथल-पुथल बताता है- वर्ण विपर्यय।

4.3 वर्तनी सुधार की वैज्ञानिक प्रक्रिया है- वर्ण विन्यास।

5. लिपि

5.1 चाक्षुय भाषा है- देवनागरी लिपि।

2. शब्द

2.1 लोक व्यवहार में प्रचलित देशज शब्द।

2.2 परकीय प्रेम की तरह बढ़ रहा है- परकीय शब्दों का प्रयोग।

2.3 विलोमार्थी शब्द बनाने में अ/अन् का अनप्रयोग।

2.4 उपसर्गों द्वारा विलोमार्थी शब्दों का निर्माण।

2.5 संस्कृति की पहचान कराते- संख्यावाची शब्द।

2.6 शब्दों का मायाजाल है- समोच्चारित शब्द।

2.7 पुनरुक्त शब्दों की मिठास।

2.8 व्यवहार में प्रचलित युगात्मक शब्द।

2.9 रंगत बदलते शब्द।

2. संधि

2.10 संधि-स्वर तथा स्वर संधि में क्या अंतर है?

2.11 श, ष, स के प्रयोग सम्बन्धी व्याकरणिक सूत्र।

3. समास

2.12 द्वंद्व समास की रूप रचना में समुच्चयबोधक की भूमिका।

2.13 विभक्ति चिह्नों का लोप होता है- तत्पुरुष समास में।

2.14 रामेश्वर में कौन सा समास है?

3. संज्ञा

3.1 वस्तु का नामकरण संस्कार है-व्यक्तिवाचक संज्ञा।

3.2 जातीय स्मृति जगाने में सहायक है-जातिवाचक संज्ञा।

3.3 उपजाति भी जातिवाचक संज्ञा है।

3.4 अमूर्त जगत की परिचायक है-भाववाचक संज्ञा।

3.5 खेल का खेल- एक व्याकरणिक पहेली।

3.6 वचन का उत्स है- 'एकोहं बहुस्याम'।

3.7 अधिकरण कारक का प्रयोग कहाँ होता है?

3.8 विशेष अर्थबोधक संज्ञा शब्द।

4. सर्वनाम

4.1 मैं का बहुवचन हम नहीं होता।

4.2 मैं ही उत्तमपुरुष क्यों?

4.3 क्यों नहीं होता पुरुषवाचक सर्वनाम में संबोधन कारक का प्रयोग।

4.4 मैं (सर्वनाम) + मेरा (सम्बन्धकारक) = माया।

4.5 अपना कार्य आप करें की शिक्षा देता है निजवाचक सर्वनाम।

5. विशेषण

5.1 चरित्र निर्माण की शिक्षा देते हैं- विशेषण।

5.2 कहानी में छिपे विशेषण के भेद।

5.3 सदाचरण की शिक्षा देते है- गुणवाचक विशेषण।

5.4 साधना का मार्ग दिखाती-गुणवाचक विशेषण की अवधारणाएँ।

5.5 वान/मान का प्रयोग कहाँ होता है।

6. क्रिया

6.1 क्रिया का होना करना।

6.2 अकर्मक में 'अकर्म' किस बात का संकेत है-संज्ञा का या क्रिया का।

6.3 अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं की रूपरचना।

6.4 कितनी मनोरंजक है- रंजक क्रियाएँ।

6.5 संज्ञार्थक क्रिया और क्रियार्थक संज्ञा की अवधारणा क्या है?

6.6 संयोजी क्रियाएँ किसे कहते है?

6.7 कैसे होते हैं, शब्दों के तिर्यक रूप।

7. क्रिया विशेषण

7.1 विशेषण विकारी और क्रिया विशेषण अविकारी क्यों?

7.2 क्रिया विशेषण की रूपरचना में अव्ययीभाव समास की भूमिका।

7.3 समानार्थक क्रिया-विशेषणों के अंतर को पहचानें।

8. सम्बन्धबोधक अव्यय

8.1 आपसी सम्बन्ध जोड़ता है- सम्बन्धबोधक।

9. समुच्चयबोधक

9.1 वाक्य संरचना का संस्कार देते है- समुच्चबोधक अव्यय।

9.2 विलोमार्थीशब्द द्वंद्व समास और समुच्चयबोधक में अंतर।

10. विस्मयादिबोधक अव्यय

10.1 मनोभावों का दर्पण हैं विस्मयादिबोधक अव्यय।

11. वाक्य

11.1 मिश्रवाक्य की रचना में सहायक है- सम्बन्धवाचक सर्वनाम।

12. विराम चिह्न

12.1 पदों के निर्माण में सहायक है विराम चिह्न।

12.2 विराम चिह्नों का प्रयोग कैसे करें?

9. जीभ संबंधी मुहावरे
10. दाँत संबंधी मुहावरे
11. ओंठ संबंधी मुहावरे
12. मुँह संबंधी मुहावरे
13. गला संबंधी मुहावरे
14. गरदन संबंधी मुहावरे
15. छाती संबंधी मुहावरे
16. हाथ संबंधी मुहावरे
17. पेट संबंधी मुहावरे
18. पीठ संबंधी मुहावरे
19. पैट संबंधी मुहावरे

लोकोक्ति

1. लोकोक्ति-शब्द से आशय

2. मुहावरा तथा लोकोक्ति में अंतर

3. लोकोक्तियों का महत्त्व

4. लोकोक्तियाँ में प्राणी जगत्

5. लोकोक्तियों पर आधारित गतिविधियाँ

6. प्राणी नभचर

1. कौआ
2. चिड़िया
3. बटेर
4. मुर्गी
5. मोर
6. हंस

7. प्राणी थलचर

1. ऊँट
2. कुत्ता
3. गधा
4. गाय
5. घोड़ा
6. चुहिया
7. बंदर
8. बिल्ली
9. बैल

हिन्दी वर्ण और वर्तनी

01

वर्ण परिचय

वर्ण और अक्षर

हिन्दी भाषा के प्रशिक्षण के समय एक शिक्षक ने प्रश्न किया–''हिन्दी व्याकरण की सभी पुस्तकों में यह बात पढ़ने को मिली है कि वर्णों को अक्षर भी कहते हैं, फिर वर्णमाला को अक्षर–माला क्यों नहीं कहा जाता है? वर्ण और अक्षर में स्पष्ट अन्तर क्या है? इस विषय में मुझे समझाने का कष्ट करें।''

शिक्षक द्वारा रखा गया प्रश्न बहुत ही स्पष्ट था। कई वर्षों से हिन्दी पढ़ाते–पढ़ाते वे दोनों के अन्तर को स्पष्ट नहीं कर पाए, तो छात्रों को तो इस विषय में भ्रम ही बना रहेगा। प्राय: हिन्दी भाषा के अध्येता वर्ण और अक्षर को पर्याय मानकर अध्ययन करते हैं, किन्तु वे इनके सूक्ष्म अन्तर पर ध्यान नहीं दे पाते। आइए, इस विषय पर विचार करें।

भाषाविदों की दृष्टि में 'अक्षर' शब्द के दो अर्थ हैं—

1. अक्षर=अ+क्षर अर्थात् जो नष्ट (क्षर) न हो। इस दृष्टि से अक्षर वह ध्वनि है, जो कभी नष्ट नहीं होती। अत: ध्वनि अक्षर है, किन्तु ध्यान रहे वाद्य–यंत्रों से निकलनेवाली आवाज को भी ध्वनि कहते हैं किन्तु उसे हम अक्षर नहीं कह सकते। ऐसी ध्वनि जो मुँह के किसी अवयव से निकलती है, उस सार्थक ध्वनि को ही अक्षर कहते हैं।
2. अक्षर=अक्ष+र अर्थात् जो आँखों (अक्ष) में रमण करे। इस दृष्टि से ध्वनि को व्यक्त करनेवाले लिपि चिह्नों को 'वर्ण' कहते हैं। संक्षेप में कहें तो इस प्रकार कह सकते हैं—
   'वर्ण भाषिक ध्वनियों के लिखित रूप होते हैं।'
   'वर्ण का सामान्य अर्थ आकार अथवा रूप भी होता है।'

अत: प्रत्येक ध्वनि अक्षर भी है, तथा प्रत्येक वर्ण ध्वनि भी है। अक्षर और वर्ण में इस सूक्ष्म अन्तर को ध्यान में रखकर अक्षर या वर्ण में भेद करना कठिन है। यही कारण है कि हिन्दी में वर्णों को अक्षर भी कहा जाता है, और एक दूसरे को पर्याय के रूप में माना जाता है।

भाषा के रूप

सामान्यत: भाषा में अभिव्यक्ति के दो रूप हैं—

1. मौखिक (उच्चरित) स्वरूप
2. लिखित (वर्तनी) स्वरूप।

वर्णमाला

उच्चरित ध्वनि–संकेतों को जब लिपिबद्ध किया जाता है तो वे वर्ण (आकार) का रूप धारण कर लेते हैं। उनके व्यवस्थित समूह (या क्रमिक रूप) को ही वर्णमाला कहते हैं।

हिन्दी वर्णमाला में कुल कितने वर्ण होते हैं? यह प्रश्न हिन्दी के अध्येताओं के लिए कोई महत्व नहीं रखता किन्तु जब पुस्तकों में हमें कहीं 52 वर्णों का तथा कहीं 48 वर्णों का उल्लेख मिलता है तो हमारी कठिनाई यह होती है कि हम उसका उत्तर ठीक से नहीं दे पाते।

यदि यह पूछा जाए कि स्वर कितने होते हैं? और व्यंजन कितने होते हैं? तो संख्या बता दी जाती है। स्वर 13 तथा व्यंजन 35 होते हैं। यह सब हमारे स्वाध्याय की कमी को दर्शाता है। आइए, इस विषय में हमारी धारणा स्पष्ट करें। वर्णमाला में कुल 52 वर्णों का उल्लेख मिलता है—

1.	स्वर – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ = 11			
2.	व्यंजन – क वर्ग से प वर्ग तक		25 (5 वर्ग प्रत्येक में 5 वर्ण)	
	– अन्तःस्थ व्यंजन–	य, र, ल, व	4	
	– ऊष्म व्यंजन –	श, ष, स, ह	4	= 33
3.	संयुक्त व्यंजन –	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र	4	
4.	द्विगुण व्यंजन –	ड़, ढ़	2	
5.	अयोगवाह – अनुस्वार (ं) विसर्ग (:)		2	
		योग	**52**	

उपर्युक्त आधार पर हम सरलता से कह सकते हैं कि —

वर्णमाला में स्वर 11 तथा व्यंजन 33 होते हैं। व्यंजनों में 'ड़' तथा 'ढ़' दोनों उत्क्षिप्त ध्वनियाँ भी शामिल हैं। इन्हें मिलाकर कुल 35 व्यंजन होते हैं। अयोगवाह की संख्या दो है। इन्हें मिलाकर कुल वर्ण 48 होते हैं। चार व्यंजन संयुक्त हैं, जो क्रमशः निम्नानुसार विकसित हुए हैं, इन्हें वर्णमाला में शामिल नहीं किया जाता है।

क् + ष = क्ष

त् + र = त्र

ज् + ञ = ज्ञ

श् + र = श्र

वर्ण और ध्वनि

व्याकरण की दृष्टि से वर्ण भाषा की वह सबसे छोटी इकाई है, जिसके और खण्ड नहीं किए जा सकते। उदाहरण के लिए —

श्याम गया। (वाक्य) यह एक पूरा वाक्य है।

इस वाक्य के शब्दों को अलग-अलग किया जाए, तो वे दो होते हैं।

1 2

श्याम, गया (यहाँ श्याम और गया दो शब्द हैं।)

इन शब्दों को भी बाँटा जा सकता है —

1 2 3 4 5 6 7 8 9

श्+य्+आ+म्+अ, ग्+अ+य+आ (कुल नौ वर्ण)।

यहाँ पूरे वाक्य में आनेवाले सभी वर्णों अथवा मूल ध्वनियों को प्रदर्शित किया गया है। अब इनके और खण्ड नहीं हो सकते। शब्द के इन बँटे हुए खण्डों को ही वर्ण कहते हैं।

इस विवरण से स्पष्ट है कि ध्वनि अथवा वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं; तथा शब्दों के मेल से वाक्य। इसका सही ज्ञान होने पर ही भाषा का सही उच्चारण तथा लेखन सम्भव हो सकता है। खेद की बात है कि हिन्दी पढ़ाते समय इस बात की जानकारी शिक्षक-गण छात्रों को नहीं देते।

इसे हमारे राष्ट्र का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है कि अंग्रेजी भाषा पढ़ाते समय हम 'स्पेलिंग' पर विशेष ध्यान देते हैं, उर्दू भाषा सीखते समय 'हिज्जे' करवाते हैं किन्तु हिन्दी भाषा पढ़ाते समय वर्णमाला में कितने वर्ण होते हैं? वर्णों के भेद कितने हैं? वर्ण-ध्वनि विच्छेद, वर्ण विच्छेद एवं वर्ण संधि क्या है? इसका अभ्यास बिल्कुल नहीं करवाते। इस उपेक्षा-भाव को जितनी शीघ्रता से दूर किया जाए, उतना अच्छा। इस सम्बन्ध में कुछ जानकारियाँ यहाँ दी जा रही हैं—

वर्ण-ध्वनि विच्छेद

वर्ण-ध्वनि विच्छेद करते समय शब्द में व्याप्त एक-एक ध्वनि को अलग-अलग लिखा जाता है। इस दृष्टि से एक शब्द में कितने स्वर और कितने व्यंजन छिपे हैं, इसका उल्लेख करना ही वर्ण-ध्वनि विच्छेद करना है; जैसे —

1. कमल – क् + अ + म् + अ + ल् + अ
2. विद्यालय – व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ
3. गिलास – ग् + इ + ल् + आ + स् + अ
4. ऋषि – ऋ + ष् + इ
5. उन्नति – उ + न् + न् + अ + त् + इ

इस प्रकार शब्द में आए हुए सभी स्वरों एवं व्यंजनों को पहचानना ही वर्ण-ध्वनि विश्लेषण है। कुछ विशेष प्रयोग देखें —

1. गई – ग् + अ + ई
2. गी – ग् + ई
3. क्षमा – क् + ष् + अ + म् + आ
4. क्रम – क् + र् + अ + म् + अ
5. कर्म – क् + अ + र् + म् + अ
6. ट्रक – ट् + र् + अ + क् + अ
7. गृह – ग् + ऋ + ह् + अ
8. शिष्ट – श् + इ + ष् + ट् + अ
9. मंदिर – म् + अ + न् + द् + इ + र् + अ
10. रद्दी – र् + अ + द् + द् + ई

वर्ण विच्छेद

शब्द में आ रहे वर्णों को अलग-अलग पहचानना वर्ण विच्छेद कहलाता है; जैसे 'कलम' शब्द में तीन अलग-अलग वर्ण नजर आ रहे हैं। इनकी ध्वनि भी अलग-अलग है।

अतः इसका वर्ण विच्छेद होगा— (1) क + ल, म (2) व्याकरण-व् + या + क + र + ण, (3) विद्यालय - वि+द्+या+ल+ य, (4) हिन्दी- हि+न्+दी।

विशेष वर्ण

विच्छेद की दृष्टि से कुछ प्रमुख संयुक्त व्यंजन यहाँ दिए जा रहे हैं—

संयुक्त व्यंजन	वर्ण-विच्छेद	प्रयोग
द्य/द्य*	द्+य	विद्या-विद्या, विद्युत-विद्युत, विद्यमान-विद्यमान आदि।
द्व/द्व*	द्+व	द्वंद्व-द्वंद्व, द्वारा-द्वारा, द्वितीय-द्वितीय आदि।
द्ध/द्ध*	द्+ध	सिद्ध-सिद्ध, वृद्ध-वृद्ध, क्रुद्ध-क्रुद्ध आदि।
द्म/दम्*	द्+म	पद्म-पद्म, छद्म-छद्म आदि।
ह्म/ह्म*	ह्+म	ब्रह्म-ब्रह्म, ब्राह्मण-ब्राह्मण आदि।
ह्न/ह्न*	ह्+न	चिह्न-चिह्न इत्यादि।
ह्व/ह्व*	ह्+व	विह्वल-विह्वल, आह्वान-आह्वान आदि।
ह्ल/ह्ल*	ह्+ल	आह्लाद-आह्लाद, प्रह्लाद-प्रह्लाद आदि।
हृ	ह्+ऋ	हृदय, हृषिकेश, हृष्ट आदि।
ह्र	ह्+र	ह्रस्व, ह्रास आदि।
स्र	स्+र	स्रोत, स्राव आदि।

* इन वर्णों का द्वितीय (हल् चिह्नवाला) रूप ही प्रयोज्य है।

कुछ रोचक तथ्य

क. क्ष (क्+ष) स्पष्ट है कि क्ष् (क्) कंठ+ऊष्म व्यंजन से मिलकर बना है किन्तु कुछ लोग **क्ष** के स्थान पर **छ** बोलते हैं; जैसे- सक्षम को सक्छम, लक्ष्मण को लछ्मण, क्षत्रिय को छत्रिय, क्षमा को छमा। ऐसा स्थानीय बोली के आधार पर होता है किन्तु इस भ्रम को दूर कर बोलने एवं लिखने की स्पष्ट कल्पना छात्रों को देना होगी।

ख. त्र (त्+र) स्पष्ट है कि त्र में त् आधा तथा र पूरा है लेकिन त् की बनावट कुछ ऐसी है कि इसमें (्र) चिह्न के रूप 'र' मिलाने पर एक त्रिकोण बनने 'त्रि' का खतरा रहता है, अतः लेखन सुख में इसे 'त्र' इसी रूप में लिखा जाता है; जैसे— पत्र, पत्रिकाएँ आदि।

ग. ज्ञ (ज्+ञ) का उच्चारण प्रायः 'ज्यं' की भाँति होता है, किन्तु 'ज्यं' की नासिक्य कठिनता के कारण इसे 'ज्य' बोला जाता है। अब हिन्दी में यही उच्चारण प्रचलित हो गया है। इससे एक भ्रम हो गया है कि 'ज्ञ' 'ग्+य' का संयुक्त रूप है। इस भ्रम को दूर किया जाना उचित होगा; जैसे-यज्ञ, प्रतिज्ञा आदि बोलकर अभ्यास कराएँ।

घ. श्र (श्+र) स्पष्ट है कि 'श्' आधा तथा 'र' पूरा है, जिसे 'श्र' इस प्रकार लिखा जाना चाहिए किन्तु इससे किसी अन्य वर्ण का भ्रम न हो; इसलिए 'श' के नीचे वाली घुंडी को हटाकर (श+र) श्र के रूप में बदल दिया गया; जैसे— श्रीमान्, विश्राम आदि।

02

मात्रा-ज्ञान

मैंने किसी से सुना था- एक समारोह के आमंत्रण-पत्र में विशेष अतिथि के रूप में बुलाया गया था : श्रीमान् रोशनलाल जी को, पत्र में छप गया 'राशन लाल'। बुलानेवाले का नाम था : देशमुख, छप गया 'दशमुख'। आमंत्रण-पत्र छपवानेवाले ने भी नहीं सोचा था कि इस प्रकार की मुद्रण त्रुटि से कितना अनर्थ हो जाएगा; जैसे ही उनका ध्यान आमंत्रण-पत्र पर गया उन्होंने ठीक से मात्रा लगवाकर पुन: आमंत्रण-पत्र छपवाए। सोचो, ऐसी मात्रा की अशुद्धि से कितना बड़ा अनर्थ हो जाता है। इसलिए मात्रा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

एक अन्य अवसर पर मैंने हिन्दी कक्षा के बालकों से पूछा : ''बच्चो! बताइए ऐसी कौन-सी भाषा है, जिसमें वर्ण के ऊपर, नीचे, दाएँ, बाएँ मात्राएँ लगाई जाती हैं?''

बच्चे! सोचते रहे और उनमें से ही किसी एक बालक ने बतलाया, 'हिन्दी'। मैंने उसकी तारीफ करते हुए सभी बच्चों को यह स्पष्ट किया कि 'अ' की कोई मात्रा नहीं होती; तथा 'ऋ' की मात्रा को छोड़कर शेष दस स्वरों की मात्राएँ अनुस्वार तथा विसर्ग के साथ जब व्यंजन से मिलती हैं तब उनकी संख्या 12 होती है, जिन्हें '**बारह खड़ी**' में निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है —

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अ:
मात्राएँ	क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	क:

फिर मैंने बच्चों को समझाया कि याद रखो —

1. जब तक व्यंजन में स्वर नहीं मिलते, व्यंजन का उच्चारण नहीं होता। शब्द सदैव स्वर और व्यंजन के मिलने से ही बनते हैं; जैसे—

   अ+न्+आ+र्+अ = अनार

   यहाँ न् में 'आ' की मात्रा (ा) मिलाने पर ही <u>ना</u> शब्द बना है।

2. मूल व्यंजन स्वररहित होता है; जैसे 'र' में हलन्त (्) लगाने से वह स्वर रहित (र्) कहा जाता है। उसमें 'अ' स्वर मिलाने पर वह 'र' बनता है, जिसे व्याकरण में व्यंजन कहा जाता है। इस प्रकार सभी व्यंजनों में मूल ध्वनि 'अ' मिलाने पर ही वह पूर्ण व्यंजन बनता है। पूर्ण व्यंजन बनाते समय हलन्त का चिह्न हटा दिया जाता है।

मात्रा के रूप एवं प्रयोग

व्यंजनों के साथ कोई-न-कोई स्वर जुड़कर ही शब्द बनाते हैं। स्वरों को मिलाते समय उन्हें विशेष आकृति देते हैं, जिनकी आकृति स्वरों की साधारण आकृति से भिन्न होती है, उसे हम

व्याकरण में मात्रा कहते हैं। स्वरों की यह आकृति विशेष चिह्नों के रूप में व्यक्त होती है।

प्राय: छात्र मात्रा सम्बन्धी अनेक त्रुटियाँ करते हैं। इसका कारण अभ्यास की कमी तो है ही, साथ ही ठीक से उच्चारण न करने के कारण भी इस प्रकार की भूलें होने की संभावना रहती है। अत: मात्राओं के सम्बन्ध में छात्रों को विशेष जानकारी देनी चाहिए। अच्छा होगा, उनकी हिन्दी पाठ्यपुस्तक से कुछ शब्दों की मात्राएँ लिखने को कहा जाए।

स्वरों की मात्राओं का अभ्यास निम्न उदाहरणों से कराया जाना उचित होगा। इससे यह स्पष्ट हो सकेगा कि स्वरों का स्वतंत्र रूप से प्रयोग तो होता ही है; जैसे— अब, आज, इस, ईख, उस, ऊन, एक, ऐसा, ओस, औरत आदि में क्रमश: अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऐ, ओ, औ का प्रयोग अपने मूल रूप में हुआ है किन्तु जब स्वरों का व्यंजन सहित प्रयोग होता है, तो इनके स्वतंत्र रूपों के स्थान पर मात्रा चिह्नों का प्रयोग किस प्रकार होता है, उस विधि को जानेंगे—

क्र.	स्वर	मात्रा	प्रयोग	उदाहरण
0	अ	x	कोई मात्रा नहीं 'अ' के मिलने पर हलन्त का चिह्न हटा दिया जाता है	फ्+अ,+ल्+अ=फल
1.	आ	ा	व्यंजन + ा (व्यंजन के आगे)	ज्+आ+न्+आ=जाना
2.	इ	ि	ि + व्यंजन (व्यंजन के पहले)	च्+इ+अ+=चिर
3.	ई	ी	व्यंजन + ी (व्यंजन के आगे)	त्+ई+र्+अ=तीर
4.	उ	ु	व्यंजन + ु (व्यंजन के नीचे)	प्+उ+ल्+अ=पुल
5.	ऊ	ू	व्यंजन + ू (व्यंजन के नीचे)	प्+ऊ+ज्+आ=पूजा
6.	ऋ	ृ	व्यंजन + ृ (व्यंजन के नीचे)	अ+म्+ऋ+त्+अ=अमृत
7.	ए	े	व्यंजन + े (व्यंजन के ऊपर)	क्+ए+ल्+आ=केला
8.	ऐ	ै	व्यंजन + ै (व्यंजन के ऊपर)	प्+ऐ+स्+आ=पैसा
9.	ओ	ो	व्यंजन + ो (व्यंजन के आगे)	ब्+ओ+ल्+अ=बोल
10.	औ	ौ	व्यंजन + ौ (व्यंजन के आगे)	म्+औ+न्+अ=मौन
11.	अं	ं	व्यंजन के ऊपर	क्+अ= कं
12.	अ:	:	व्यंजन के आगे	क्+अ:=क:

विशेष

मूल रूप में तथा मात्रा के रूप में प्रयुक्त करते समय एक ही स्वर शब्द के आदि मध्य तथा अन्त्य स्थितियों में सूक्ष्म अन्तर के साथ उच्चरित होता है; जैसे—

इ	इस	परिवार	शांति
उ	उस	अनुराग	साधु

ध्यान रहे —

1. उपर्युक्त उदाहरण में जिन शब्दों में 'इ' अथवा 'उ' की मात्रा अन्त में आई है, उनका

उच्चारण ह्रस्वतर हो जाता है। प्राय: तत्सम शब्दों में ही इसका प्रयोग होता है; अर्थात् ये शब्द संस्कृत से आए हैं; जैसे— शांति,साधु। तद्भव,देशज तथा विदेशी शब्दों में इनका ऐसा उच्चारण देखने में नहीं आता।

2. इन शब्दों में दीर्घ उच्चारण को मानक नहीं माना जाता है; अर्थात् साधु को साधू नहीं बोला जाता है।

3. इसी प्रकार 'ई' तथा 'ऊ' की मात्रा भी यदि शब्द के अंत में आती है, तो एकाक्षरी होने पर उनका उच्चारण दीर्घतम रहता है; जैसे— हाथी, बाजू आदि। यदि शब्द दो या दो से अधिक अक्षरवाले होते हैं, तो उनका उच्चारण दीर्घतर रहता है; जैसे— छाती, आलू तथा 'ई' और 'ऊ' मध्य में आने पर उनका उच्चारण दीर्घ होता है; जैसे— परीक्षा, मालूम। इस प्रकार के अन्य शब्द छाँटकर इस अन्तर को जानने का प्रयत्न करें। यहाँ री तथा लू का उच्चारण दीर्घ है।

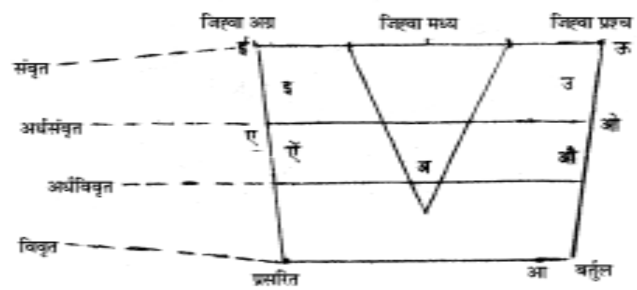
‖03‖

उच्चारण-अवयव

प्रात: घूमने जाते समय किसी व्यक्ति ने - अ-अ... का उच्चारण करते हुए अपनी बात इशारों ही इशारों में समझाई किन्तु मुझे कुछ समझ में नहीं आया। इतना अवश्य लगा कि वह एक गूँगा व्यक्ति है, जो कठिनाई से नहीं, आसानी से 'अ-इ-उ-ऋ'-इन चार स्वरों की ध्वनि के सहारे अपनी बात कह रहा है। बात समझ में न आने पर वह अपनी बात पुन: 'अ' को 'आ', 'इ' को 'ई' तथा 'उ' को 'ऊ' ध्वनि पर जोर देकर बार-बार कहना चाह रहा था, फिर भी मुझे कुछ समझ में नहीं आया। हाँ, इतना अवश्य समझ में आ रहा था कि वह एक ऐसी आवाजें थीं जिसमें 'सुर' था। स्वर का अर्थ 'सुर' भी होता है। फिर मुझे ध्यान आया कि वह अपनी बात स्पष्ट रूप से इसलिए नहीं कह पा रहा था कि गूँगा होने से वह वर्णों का उच्चारण करते समय स्वर को कुछ रुकावट के साथ मुँह से बाहर नहीं निकाल पा रहा था। बात करते समय ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा (जीभ) मुख अवयवों की प्रमुख भूमिका रहती है। तो आइए स्वर+व्यंजन के उच्चारण स्थानों के विषय में जानें।

स्वरों के उच्चारण स्थान एवं उच्चारण-आकृति

स्वरों के उच्चारण-स्थान जिह्वा की स्थिति तथा मुख एवं ओठों की उच्चारण आकृति को निम्नलिखित आरेख द्वारा समझा जा सकता है—



स्वरों के उच्चारण में जिह्वा की स्थिति

1. अग्र, मध्य, पश्च स्थितियाँ जिह्वा के जिस भाग से जो स्वर उच्चरित होता है, उस भाग की ओर संकेत करती हैं।
2. जिह्वा के अग्र (अगले) भाग से 'ई, इ, ए, ऐ' स्वरों का उच्चारण होता है, अत: इन्हें अग्र स्वर कहते हैं।

3. जिह्वा के मध्य भाग से उच्चरित होनेवाले स्वर को मध्य (बीच का) स्वर कहते हैं। हिन्दी में केवल 'अ' मध्य स्वर है।
4. जिह्वा के पश्च (पिछले) भाग से उच्चरित होनेवाले स्वरों को (अर्थात् मुख के भीतर लटकनेवाले कौए के नीचे के भाग को) पश्च स्वर कहते हैं। हिन्दी में 'ऊ, उ, ओ, औ' पश्च स्वर कहलाते हैं।
5. जिह्वा के पश्च भाग तथा मध्य भाग के बीच में हिन्दी के 'आ' स्वर का उच्चारण स्थान है।

इस प्रकार ओठों के पास के जिह्वा नोक से जिह्वा पश्च भाग तक हिन्दी स्वरों के उच्चारण स्थान का विस्तार है।

स्वरों के उच्चारण करते समय मुखाकृति की स्थिति

स्वरों के शुद्ध उच्चारण में मुखाकृति की स्थिति के अनुसार स्वरों का ज्ञान होना भी आवश्यक है—

1. **संवृत-स्वर—** संवृत का अर्थ है; कम खुला हुआ मुँह। जिन स्वरों के उच्चारण में मुँह कम खुले, उन्हें संवृत स्वर कहते हैं; जैसे-'ई,ऊ'।
2. **अर्द्ध संवृत्त स्वर—** जिन स्वरों के उच्चारण में मुँह संवृत्त स्वर से कुछ अधिक खुले, उन्हें अर्द्ध संवृत्त स्वर कहते हैं; जैसे- 'ए, ओ'।
3. **अर्द्ध विवृत स्वर—** विवृत का अर्थ है : अधिक खुला हुआ मुँह। जिन स्वरों के उच्चारण में मुख अर्द्ध संवृत स्वर से कुछ अधिक खुले, उन्हें अर्द्ध विवृत्त स्वर कहते हैं; जैसे- 'ऐ, औ'।
4. **विवृत्त स्वर—** जिन स्वरों के उच्चारण में मुख अधिक खुलता है, उन्हें विवृत स्वर कहते हैं; जैसे- आ।

स्वरों के उच्चारण में ओष्ठाकृति की स्थिति

अवृत्ताकार, सामान्य और वृत्ताकार ओठों की ये तीन स्थितियाँ हैं। विभिन्न स्वरों के उच्चारण में इनकी आवृति से स्वरों का ज्ञान होता है —

1. **अवृत्ताकार स्थिति—** जिह्वा के अग्र स्वरों के उच्चारण करते समय ओठों की आकृति अवृत्ताकार होती है; जैसे-'इ, ई, ए, ऐ'।
2. **सामान्य स्थिति—** मध्य स्वर 'अ' के उच्चारण में ओठों की स्थिति सामान्य होती है। इन्हें न वृत्ताकार कहा जा सकता है, और न अवृत्ताकार।
3. **वृत्ताकार स्थिति—** पश्च स्वरों के उच्चारण के समय ओठों की स्थिति गोल (वृत्ताकार) होती है; जैसे-'उ, ऊ, ओ, औ'।

व्यंजनों के उच्चारण-स्थान एवं प्रयत्न

व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में जिन मुख भागों की भूमिका रहती है-उनमें प्रमुख हैं— कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत, ओठ, जीभ और नाक और इसी आधार पर व्यंजनों के उच्चरण स्थान निर्धारित किए गए हैं; जैसे —

'क' वर्ग तथा 'ह' के लिए	कंठ तथा जीभ का पश्च भाग
'च' वर्ग तथा 'य', 'श' के लिए	तालु तथा जीभ का मध्य भाग

'ट' वर्ग तथा 'र', 'ष', 'ड़', 'ढ़' के लिए	मूर्धा और जीभ का अग्र भाग
'त' वर्ग तथा 'ल', 'स' के लिए	दाँत और जीभ का अग्र भाग
'प' वर्ग – के लिए	दोनों ओठ
– 'व' के लिए	दाँत और ओठ
सभी वर्गों के पंचम वर्ण के लिए	मुख और नासिका

किन्तु क, च, ट, त, प वर्गों के इन क्रमों का वैज्ञानिक आधार क्या है? 'क' के बाद 'च' वर्ग ही क्यों आता है, 'ट' वर्ग क्यों नहीं। इसी प्रकार अन्य वर्गों के क्रम निर्धारण की यदि कोई वैज्ञानिक विधि हो तो उसे अवश्य बताएँ।

मुझे यह जानकर संतोष था कि शिक्षक महोदय ने यह प्रश्न पूछा, तथा उन्होंने व्यंजनों के उच्चारण स्थान तो सही-सही बताए। रही बात वर्गों के क्रम निर्धारण के लिए वैज्ञानिक आधार की, तो मैंने मुखाकृति की ओर उनका ध्यान दिलाया और बताया कि प्रत्येक वर्ग अर्थात् 'क' वर्ग, 'च' वर्ग, 'ट' वर्ग, 'त' वर्ग तथा 'प' वर्ग के उच्चारण करते समय कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत तथा ओठ के क्रम में जीभ का घुमाव घड़ी की विपरीत दिशा (Anti Clock Wise) में होता है। अत: व्यंजनों का क्रम भी इसी आधार पर निश्चित किया गया है और उस उच्चारण अवयव को ही व्यंजन का उच्चारण स्थान माना गया है।

व्यंजन ध्वनि के उच्चारण स्थान से परिचित होने के पश्चात् हमें व्यंजनों के शुद्ध उच्चारण के लिए किए जानेवाले प्रयत्नों पर भी ध्यान देना होगा, अन्यथा व्यंजनों के सही उच्चारण कर सकने की क्षमता का विकास हम नहीं कर पाएँगे। ये प्रयत्न तीन प्रकार से किए जाते हैं—

1. मुख-अवयवों द्वारा श्वास का अवरोध
2. श्वासवायु की मात्रा
3. स्वर तंत्री में कंपन।

1. **मुख-अवयवों द्वारा श्वास का अवरोध—** ध्वनियों का उच्चारण करते समय हमारी जीभ या अन्य मुख-अवयव अनेक प्रकार से प्रयत्न करते हैं। इस आधार पर व्यंजनों का निम्नलिखित विभाजन किया जाता है—

   स्पर्श— जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख-अवयव (जीभ, होंठ, दाँत, वर्त्स आदि) परस्पर स्पर्श करके वायु को रोकते हैं, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं; जैसे— क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ।

   नासिक्य— जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख-अवयव वायु को रोकते हैं, परन्तु वायु पूरी तरह मुख से न निकल कर नाक से निकलती है, उन्हें नासिक्य व्यंजन कहते हैं। ङ, ञ, ण, न, म नासिक्य व्यंजन हैं।

   स्पर्श-संघर्षी— जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु पहले किसी मख-अवयव से स्पर्श करती है, फिर रगड़ खाते हुए बाहर निकलती है, उन्हें स्पर्श-संघर्षी व्यंजन कहते हैं। च, छ, ज, झ स्पर्श-संघर्षी व्यंजन हैं।

   संघर्षी— जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास-वायु मुख-अवयवों से रगड़ खाते हुए

(घर्षित होते हुए) बाहर निकलती है, उन्हें संघर्ष व्यंजन कहा जाता है। इन्हें ऊष्म ध्वनियाँ भी कहा जाता है। स, श, ष, ह, फ तथा ज संघर्षी व्यंजन हैं। ख, ग भी संघर्षी हैं।

उत्क्षिप्त— उत्क्षिप्त का अर्थ है-फेंका हुआ। जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ का अग्र भाग मूर्धा को स्पर्श करके झटके से वापस जाता है, उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहते हैं। ट, ठ, ड, ढ, ड़, ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन हैं।

अंत:स्थ— स्वरों और व्यंजनों के मध्य स्थित होने के कारण य, र, ल, व को अंत:स्थ व्यंजन कहा जाता है। इनके उच्चारण में वायु का अवरोध बहुत कम होता है। कई विद्वान् अंत:स्थ व्यंजनों का विभाजन निम्न प्रकार से करते हैं —

(क) **पार्श्विक—** पार्श्विक का अर्थ है-बगल का। जिस ध्वनि के उच्चारण में जिह्वा श्वास-वायु के मार्ग में खड़ी हो जाती है, और वायु उसके आस-पास से निकल जाती है, उसे पार्श्विक व्यंजन कहते हैं। **ल** पार्श्विक है।

(ख) **प्रकंपित—** प्रकंपित का अर्थ है-काँपता हुआ। जिस व्यंजन के उच्चारण में जिह्वा की नोक वायु में रगड़ खाकर काँपती रहती है, उसे प्रकंपित व्यंजन कहते हैं। **र** प्रकंपित व्यंजन है।

(ग) **अद्र्धस्वर—** हिन्दी में **य, व** ऐसी ध्वनियाँ हैं जो न तो पूर्ण रूप से स्वर हैं, न पूर्णरूपेण व्यंजन। इनके उच्चारण में श्वास-वायु को रोकने के लिए उच्चारण-अवयव प्रयत्न तो करते हैं, लेकिन वह प्रयत्न न के बराबर होता है। अत: ये ध्वनियाँ लगभग अवरोध-रहित निकल जाती हैं।

2. **श्वास वायु की मात्रा—** इस आधार पर व्यंजनों के दो भेद किए जाते हैं—

अल्पप्राण— जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास वायु कम मात्रा में लगती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं; जैसे-क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म (वर्णों के प्रथम, तृतीय और पंचम व्यंजन) तथा ड़, य, र, ल, व एवं सम्पूर्ण स्वर अल्पप्राण हैं।

महाप्राण— जिन ध्वनियों के उच्चारण में श्वास-वायु अधिक मात्रा में लगती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं; जैसे-छ, झ,ठ, ढ, थ, ध, फ, भ (वर्णों के द्वितीय तथा चतुर्थ वर्ण)। ढ़, ह, न, म, ल ध्वनियों को भी महाप्राण रूप न्ह, म्ह तथा ल्ह की तरह बोला जाता है। इनके लिए अलग से कोई लिपि-चिह्न नहीं है।

3. **स्वरतंत्री में कंपन—** स्वर तंत्रियों में होनेवाले कंपन, नाद या गूँज के आधार पर व्यंजनों के दो भेद किए जाते हैं— सघोष और अघोष।

सघोष— जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन पैदा होता है, उन्हें सघोष व्यंजन कहते हैं। हिन्दी के सघोष व्यंजन हैं— ग, घ, ड़, ज, झ, ञ, ङ, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म (वर्णों के तीसरे, चौथे तथा पाँचवें व्यंजन), ड़, ढ़, ज, य, र, ल, व, ह व्यंजन तथा सभी स्वर।

अघोष— जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में गूँज उत्पन्न नहीं होती, उन्हें 'अघोष' कहते हैं। हिन्दी की अघोष ध्वनियाँ हैं— क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ (वर्णों के पहले तथा दूसरे व्यंजन) तथा फ, श, ष, स।

विशेष— उत्पत्ति के अनुसार स्वरों के दो भेद हैं—1. मूल स्वर, 2. संधि स्वर।

1. **मूल स्वर—** अ, इ, उ, ऋ-ये चार मूल स्वर हैं। चूँकि इनकी उत्पत्ति दूसरे स्वरों के मेल से नहीं होती है और इनका परस्पर मेल नहीं होता है, अतः इन्हें मूल स्वर कहते हैं।

2. **संधि स्वर—** जिन स्वरों की उत्पत्ति दूसरे स्वरों के मेल से होती है और जिनका परस्पर मेल होता है, उन्हें संधि-स्वर कहते हैं। ये दो प्रकार के हैं-

   (क) संयुक्त स्वर— जिनकी उत्पत्ति दूसरे स्वरों के मेल से होती है, उन्हें संयुक्त स्वर कहते हैं। ये हिन्दी में चार हैं -

   अ+इ=ए   आ+ए=ऐ

   अ+उ=ओ   आ+ओ=औ

   (ख) दीर्घ स्वर - जिनकी उत्पत्ति उसी वर्ण में उसी वर्ण के मेल से होती है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये हिन्दी में तीन हैं -

   अ+अ = आ

   इ+इ = ई

   उ+उ = ऊ

3. साधारणतया प्रत्येक वर्ण श्वासमय होता है अथवा नादमय; दोनों में जो भेद है, वह क्रम से उच्चारण करने से प्रतीत होता है। श्वासमय शब्दों को अघोष तथा नादयुक्त वर्णों को सघोष वर्ण कहते हैं। इनके अन्तर को स्पष्ट जानने के लिए कंठ पर अँगुली रखकर देखें, तो अघोष वर्णों के उच्चारण करने पर कण्ठ-पिटक (टेंटुआ) पर कम्पन नहीं होता है, जबकि सघोष वर्णों के उच्चारण अँगुली में कम्पन प्रतीत होगा।

04

वर्तनी-विचार

हिन्दी वर्तनी पर आयोजित एक गोष्ठी में वर्तनी पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए एक अंग्रेजी विद्वान् ने टिप्पणी की कि अंग्रेजी ही नहीं, हिन्दी वर्तनी में भी कई त्रुटियाँ हैं। जैसा बोला जाता है, वैसा लिखा नहीं जाता। हिन्दी तो क्या, संस्कृत में भी कुछ शब्दों की दो-दो वर्तनी प्रचलित रही हैं। इससे हिन्दी सीखनेवालों को समस्या आती है कि वर्तनी की दृष्टि से कौन से शब्द शुद्ध हैं, और कौन से अशुद्ध।

हिन्दी के कुछ ऐसे ही शब्द, जो संस्कृत से तत्सम रूप में दो-दो वर्तनियों में स्वीकृत किए गए हैं, उदाहरण स्वरूप इस प्रकार हैं —

1. कोसल-कोशल, कलस-कलश, कैलास-कैलाश, कुतुहल-कौतूहल, आशिष-आशीष, ऊषा-उषा, प्रतीकार-प्रतिकार, किशलय-किसलय, तुरग-तुरंग, औषधि-औषध, पृथिवी-पृथ्वी, सुवर्ण-स्वर्ण, वशिष्ठ-वसिष्ठ, वाजीकरण-बाजीकरण, अंत:सलिला-अंतस्सलिला, अंत:चेतना-अंतश्चेतना।
2. विसर्ग में 'दुख' की भी दो-दो वर्तनियाँ प्रचलित हैं-दुख-दु:ख।
3. र—ड़ के विकल्पित प्रयोग के कारण भी कुछ शब्दों के दो रूप प्रचलित हैं-घबराहट-घबड़ाहट, तिवारी-तिवाड़ी, पिंजरा-पिंजड़ा, चपरासी-चपड़ासी।
4. हिन्दी में उर्दू से आए निम्नांकित शब्दों के भी दो-दो रूप चले आ रहे हैं, वे भी मान्य हैं; जैसे —

गरदन	-	गर्दन
गरमी	-	गर्मी
बरफ	-	बर्फ
सरदी	-	सर्दी
बरतन	-	बर्तन
दुबारा	-	दोबारा
बिमारी	-	बीमारी
वापिस	-	वापस

ऐसे शब्दों की विस्तृत सूची दी जा सकती है। प्रश्न उठता है किसे सही माना जाए और किसे गलत। प्राय: देखने में आता है कि इनमें से एक वर्तनी को एक विशेष प्रदेश ठीक मानता है, तो दूसरी को दूसरा प्रदेश। ऐसी स्थिति में या तो इन्हें चलते रहने दिया जाए अथवा कोई एक नीति

घोषित होना चाहिए कि इनका मानक प्रयोग ऐसा रहेगा।

डॉ० भोलानाथ तिवारी जी ने '**हिन्दी वर्तनी की समस्याएँ**' नामक पुस्तक में इस प्रकार के शब्दों की एक लम्बी सूची दी है, जिसे पढ़कर उस विषय में सैद्धान्तिक रूप से जाना जा सकता है। वैसे सभी की जानकारी में यह बात भी आनी चाहिए कि भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने इस समस्याओं के निराकरण के लिए विद्वानों की एक समिति गठित की थी जिसके कारण हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण अस्तित्व में आया है।

मानकीकरण समिति की सिफारिशों के कुछ बिन्दु यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

संयुक्त वर्ण

1. खड़ी पाईवाले व्यंजनों का संयुक्त रूप खड़ी पाई को हटाकर ही बनाया जाना चाहिए।
   यथा—ख्याति, व्यास, उल्लेख, त्र्यंबक, डिब्बा।
2. 'क' और 'फ' के संयुक्ताक्षर—
   यथा—पक्का, दफ्तर।
3. छ, ट, ठ, ड, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल चिह्न लगाकर ही बनाए जाएँ—
   यथा—लट्टू, बुड्ढा, विद्या, चिह्न, ब्रह्मा।
4. संयुक्त 'र' से प्रचलित तीनों रूप यथावत रहेंगे।
   यथा—प्रकार, धर्म, राष्ट्र।
5. 'श्र' का प्रचलित रूप ही मान्य होगा 'श्र' इस रूप मे नहीं; जैसे-श्रावण।
   त्+र के संयुक्त रूप के लिए 'त्र' और 'त्र' दोनों रूप में मान्य हैं, किन्तु 'क्र' का 'कृ' के रूप में नहीं लिखा जाएगा।
6. हल चिह्नयुक्त वर्ण से बननेवाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के तत्काल पूर्व ही किया जाएगा, न की पूरे युग्म से पूर्व।
   यथा— बुद्धिमान, चिह्नित आदि।
7. दो महाप्राण संयुक्त रूप में नहीं आते।
   क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, ड, ढ, द, ध
   यथा— 1. मक्खी, दक्खन, 2. कच्छा, इच्छा, मच्छर, 3. गट्ठर, लट्ठ, मट्ठा, विट्ठल, 4. चड्ढा, गड्ढा, बुड्ढा, 5. जत्था, कत्था, गुत्थी, पत्थर, 6. बुद्ध, वृद्ध, पद्धति। (यहाँ मख्खी नहीं, मक्खी ही सही है)

विभक्ति चिह्न

1. हिन्दी के विभक्ति-चिह्न सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में प्रातिपदिक से पृथक् लिखे जाएँ।
   जैसे— राम ने, राम को, राम से आदि।
2. सर्वनाम शब्दों में यह चिह्न प्रातिपदिक के साथ मिलाकर लिखे जाएँ।
   जैसे— उसने, उसको, उसपर।
3. सर्वनामों के साथ यदि दो विभक्ति-चिह्न हों तो उनमें से पहला मिलाकर और दूसरा पृथक् लिखा जाए।

जैसे— उसके लिए, इनमें से।

4. सर्वनाम और विभक्ति के बीच 'हो', 'तक' आदि का निपात हो तो विभक्ति को पृथक् लिखा जाए।
   जैसे— आप ही के लिए, मुझ तक को।

क्रियापद

संयुक्त क्रियाओं में सभी अंगभूत क्रियाएँ पृथक्-पृथक् लिखी जाएँ।

यथा— पढ़ा करता है, आ सकता है आदि।

संयोजक चिह्न (हाइफन)

1. द्वंद्व समास में पदों के बीच हाइफन रखा जाए।
   जैसे— राम-लक्ष्मण, देख-रेख, चाल-चलन।
2. 'सा', 'जैसा' आदि से पूर्व हाइफन रखा जाए।
   यथा— तुम-सा, मुझ-जैसा।
3. तत्पुरुष समास में हाइफन का प्रयोग केवल वहीं किया जाए, जहाँ उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो, अन्यथा नहीं।
   जैसे— भू-तत्त्व।
   सामान्यत: तत्पुरुष समासों में हाईफन लगाने की आवश्यकता नहीं है।
   जैसे— राजकुमार,गंगाजल,आत्महत्या आदि। ये शब्द ऐसे ही लिखे जाएँ।
4. कठिन संधियों से बचने के लिए भी संयोजक चिह्न (हाइफन) का प्रयोग किया जा सकता है।
   जैसे— द्वि-अक्षर, द्वि-अर्थक।

अव्यय

1. हिन्दी में आह, ओह, अहा, ऐ, ही तो, न, जब, तक, यहाँ, वहाँ, कहाँ, सगा, क्या, श्री, जी, तक, मात्र, साथ, कि, किन्तु, मगर, लेकिन, चाहे, या, अथवा, तथा, यथा और आदि अनके प्रकार के भावों का बोध करानेवाले अव्यय हैं। नियम के अनुसार अव्यय सदा पृथक् लिखे जाने चाहिए; जैसे— आपके साथ, यहाँ तक।
   सन्मानार्थक 'श्री' और 'जी' पृथक् लिखे जाएँ।
   जैसे— श्री राम, जयप्रकाश जी, महात्मा जी।
2. सामासिक पदों में 'प्रति', 'मात्र', 'यथा' आदि अव्यय पृथक् नहीं लिखे जाएँ।
   जैसे— प्रतिदिन, प्रतिशत, मानवमात्र, यथासमय। यह सर्वविदित नियम है कि समास होने पर समस्त पद एक माना जाता है। अत: उसे अलग-अलग न लिखकर एक साथ लिखना ही संगत है।

विदेशी ध्वनियाँ

1. अरबी-फारसी या अंग्रेजी मूलक वे शब्द जो हिन्दी के अंग बन चुके हैं, और जिनकी विदेशी ध्वनियों में रूपांतर हो चुका है, हिन्दी रूप में ही स्वीकार किए जा सकते हैं।

पर जहाँ उनका शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग अभीष्ट है, अथवा उच्चारणगत भेद बताना आवश्यक है, वहाँ उनके हिन्दी में प्रचलित रूपों में यथा स्थान नुक्ते लगाए जाएँ।

विशेष : नुक्तायुक्त वर्ण

1. क़, ख़, ग़, ज़, फ़ और ड़, ढ़ ये सात वर्ण उच्चारण के अनुरूप वर्तनी में नुक्तासहित प्रयुक्त होते हैं।

   क़, ख़, ग़, ज़, फ़ ये पाँच ध्वनियाँ उन शब्दों में होती हैं, जो अरबी, फारसी, तुर्की आदि विदेशी भाषाओं से आए हों।
2. हिन्दी में निम्नांकित शब्दों के दो–दो रूप बराबर चल रहे हैं। वे दोनों भी मान्य हैं। यथा— गरदन/गर्दन, गरमी/गर्मी, बरफ/बर्फ, वापिस/वापस, सरदी/सर्दी, बरतन/बर्तन, बीमारी/बिमारी, दोबारा/दुबारा।
3. अंग्रेजी के जिन शब्दों में अर्धविवृत्त 'ओ' ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके शुद्ध रूप का हिन्दी में प्रयोग अभीष्ट होने पर 'आ' की मात्रा (ा) के ऊपर अर्धचन्द्र का प्रयोग किया जाए (ऑ)।

पूर्वकालिक प्रत्यय

'कर', 'करके', 'के' पूर्वकालिक प्रत्यय क्रिया से मिलाकर लिखे जाएँ।

जैसे— मिलाकर, खाकर, रो-धोकर, ले-लेकर। इसके अलावा शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा। पूर्ण विराम के लिए खड़ी पाई (।) का प्रयोग किया जाए।

'ड़' और 'ढ़' वर्ण— ये दोनों हिन्दी की स्वतंत्र ध्वनियाँ हैं। हिन्दी में 'ड' 'ढ' की स्थिति स्वरमध्य होती है। हिन्दी में जिस 'ड' और 'ढ' का उच्चारण अपेक्षाकृत कम बल से अर्थात् हलका होता है, उसके नीचे नुक्ता लगाया जाता है।

यथा— लड़ना, लड़का, घोड़ा, पेड़, भीड़, ओढ़ना, पीढ़ी, बूढ़ी, पढ़ना आदि।

शब्द के आरम्भ में आनेवाले 'ड', 'ढ' के नीचे नुक्ता नहीं लगता।

यथा— डमरू, डाल, ढोल, ढाल, डरपोक आदि।

अंग्रेजी भाषा से लिए गए शब्दों मे आनेवाले 'ड', 'ढ' के नीचे नुक्ता नहीं लगता।

यथा— रोड, डिग्री, सेकंड, रेडियो।

यदि 'ड' से पूर्व अनुस्वारयुक्त वर्ण हो तो 'ड' के नीचे नुक्ता नहीं लगता।

यथा— ठंडा, डंडा।

चन्द्रबिन्दुयुक्त वर्ण के बाद आनेवाले 'ड', 'ढ' के नीचे नुक्ता नहीं लगता।

यथा— हाँडी, ढँकना, ढाँचा, डाँटना।

यदि 'ड', 'ढ' का द्वित्व हो, तो 'ड', 'ढ' के नीचे नुक्ता नहीं लगता।

यथा-अड्डा, लड्डू आदि।

आगत ध्वनियों के सम्बन्ध में कुछ रोचक तथ्य

अँग्रेजी से आगत ध्वनि 'ऑ' का उच्चारण हिन्दी के 'ओ' तथा 'औ' ध्वनियों के मध्य का है। अत: इसके लिए (ॅ) का प्रयोग किया जाता है। इस चिह्न का प्रयोग न करने पर कुछ

समस्याएँ आ सकती हैं; जैसे—

हिन्दी शब्द	अँग्रेजी शब्द
काल (समय)	कॉल (पुकार)
हाल (समाचार)	हॉल (बरामदा/बड़ कमरा)
बाल (केश)	बॉल (गेंद)
डाल (टहनी)	डॉल (गुड़िया)

इसी प्रकार 'नुक्ता' का प्रयोग भी सावधानीपूर्वक न करने पर कुछ समस्याएँ आ सकती हैं; जैसे —

	हिन्दी शब्द	नुक्ता वाले शब्द
क-क़	कालीन (समय संबंधी)	क़ालीन (गलीचा)
ख-ख़	खुदा (खुदा हुआ)	ख़ुदा (ईश्वर/अल्लाह)
ग-ग़	गरज (गरजना/ऊँची आवाज)	ग़रज (मतलब)
ज-ज़	जरा (बुढ़ापा)	ज़रा (थोड़ा)
फ-फ़	फन (सर्प का फैला सिर)	फ़न (कला/हुनर)

वर्णों के मानक रूप

हिन्दी में मानक रूप की अपेक्षा सर्वत्र परिलक्षित हो रही है। पत्र-पत्रिकाओं एवं पाठ्यपुस्तकों ने भी इन्हीं रूपों को स्वीकार किया है। इन पर ध्यान दें—

अमानक रूप	मानक रूप
अ	अ
रव	ख
छ	छ
झ	झ
रा	ण
ध	ध
भ	भ
ल	ल
श	श
त्र	त्र

हिन्दी भाषा में कतिपय वर्ण अशुद्ध लिखे जाते हैं, जिनका शुद्ध रूप इस प्रकार लिखना चाहिए—

द्य	–	द्य
श्रृ	–	श्र/शृ
रु	–	रु
रू	–	रू
ऐ	–	ऐ
डा.	–	डॉ.

रोचक तथ्य

'रव' अक्षर की आकृति में परिवर्तन हुआ है। इसे अब 'रव' इस प्रकार लिखा जाता है। क्योंकि इसके वर्तमान स्वरूप में प्रयोग करने पर मार वाडी को मारवाड़ी तथा रवाना को खाना पढ़ने का भ्रम बना रहता है।

05

मूल-स्वर (अ, इ, उ)

एक बार श्रीमती जी ने श्रीमान जी से कहा, ''सुनो जी! कुछ लोग मुझे श्रीमति कहते हैं, कुछ श्रीमती कहकर पुकारते हैं। बताओ दोनों सम्बोधन में शुद्ध उच्चारण किसका है?''

प्रश्न की गंभीरता देखते हुए श्रीमान् बोले, ''श्रीमति जी! दोनों ही उच्चारण ठीक हैं।''

श्रीमती बोलीं, ''यह कैसे संभव है? पहेलियाँ न बुझाओ, मुझे स्पष्ट समझाओ। दोनों ही उच्चारण कैसे ठीक हो सकते हैं। यदि दोनों ही सही हैं, फिर तो शुद्ध-अशुद्ध उच्चारण का झगड़ा ही समाप्त हो जाएगा।''

श्रीमान् बोले— ''जब मैं तुम्हें (सम्बोधन करके) बुलाता हूँ तो श्रीमति कहता हूँ। संबोधन कारक के रूप में वही सही है और जब कोई तुम्हारे विषय में चर्चा करता है तो 'श्रीमती' कहता है। उदाहरण के लिए 'देवि' और 'देवी' शब्द को लें। दुर्गासप्तशती में जहाँ देवताओं ने देवी को संबोधित किया है वहाँ 'देवि' कहकर ही संबोधित किया है, शेष संदर्भों पर 'देवी' लिखा है।''

यह स्थिति केवल 'इ' अथवा 'ई' के सम्बन्ध में नहीं है, कुछ अन्य शब्दों के उच्चारण करते समय भी ऐसा होता है। इसलिए हिन्दी मात्राओं का प्रयोग करते समय शब्द का उच्चारण सोच समझकर करना चाहिए। ह्रस्व (अ/इ/उ) की जगह दीर्घ और दीर्घ (आ/ई/ऊ) की जगह ह्रस्व स्वर बोलने से उनमें होने वाले अंतर पर यदि ध्यान नहीं दिया जाए तो अर्थ में भी अन्तर आ जाता है।

जैसे —

1. कम-काम, कल-काल, नग-नाग। (अ/आ)
2. सूचि-सूची, दिन-दीन, जाति-जाती। (इ/ई)
3. कुल-कूल, सुत-सूत, बहु-बहू। (उ/ऊ)

रेखांकित सभी शब्द समूहों में दोनों ही शब्दों के उच्चारण ठीक हैं क्योंकि प्रत्येक समूह में दोनों शब्दों के अर्थ में भिन्नता है। अत: ऐसे शब्दों का उच्चारण करते समय उनके अर्थ को ध्यान में रखना होगा। तभी हम इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग ठीक से कर सकेंगे।

हिन्दी में प्राय: 'कि' तथा 'की' का प्रयोग भी छात्र ठीक से नहीं कर पाते हैं। 'कि' समुच्चय-बोधक है अर्थात् 'कि' से दो वाक्य आपस में जुड़ते हैं, तभी उसका आशय स्पष्ट होता है, जैसे— राम ने श्याम से कहा कि तुम आगरा क्यों नहीं जा रहे हो? यहाँ दो वाक्यों के मध्य **कि** जुड़ने पर ही आशय स्पष्ट हो रहा है। जबकि किसी व्यक्ति या वस्तु से सम्बन्ध स्थापित करने के

लिए 'की' का प्रयोग किया जाता है, जैसे-दिव्या **की** पुस्तक मेरे पास है। इस वाक्य में दिव्या और पुस्तक का सम्बन्ध **'की'** से स्पष्ट हो रहा है। अत: 'की' सम्बन्ध-सूचक शब्द है।

इसी प्रकार पढ़ना-पढ़ाना, मिटना-मिटाना, लुटना-लुटाना आदि इन शब्दों पर भी ध्यान दें। यहाँ सभी शब्दों में अ-आ, इ-ई तथा उ-ऊ की मात्राओं का प्रयोग भी ठीक किया गया है। किन्तु सभी के अर्थ में अन्तर है। पढ़ना, मिटना, लुटना इन तीनों का प्रयोग व्यक्ति स्वयं के लिए करता है, जबकि पढ़ाना, मिटाना, लूटना का प्रयोग दूसरों के साथ क्रिया करते समय करता है; जैसे— लुटना— स्वयं लुटना और लूटना— दूसरे को लूटना।

अत: अ/आ/इ/ई/उ/ऊ की मात्राओं के उच्चारण करते समय अर्थ की प्रधानता को ध्यान में रखते हुए निर्णय करना होगा।

1. उच्चारण की दृष्टि से मात्राओं में अन्तर

यहाँ अ-आ, इ-ई, उ-ऊ की कुछ सामान्य मानक अशुद्धियों को उदाहरण स्वरूप दिया जा रहा है। ये अशुद्धियाँ ह्रस्व व दीर्घ की मात्राओं के उच्चारण में अन्तर आने से होती हैं। अत: छात्रों को यह स्पष्ट अवश्य किया जाए कि, ह्रस्व अ इ और उ के उच्चारण में वायु को थोड़ा रोक लिया जाता है जबकि दीर्घ आ, ई और ऊ के उच्चारण में वायु को पूरी तरह छोड़ दिया जाता है। छात्रों से कक्षा में इनका उच्चारण कराया जाए, तभी वे इस अन्तर को पहचान सकेंगे। यहाँ हम कुछ मानक शुद्धियाँ उदाहरण स्वरूप दे रहे हैं —

'आ' के स्थान पर 'अ' अपेक्षित —

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
अत्यधिक	अत्याधिक	आजकल	आजकाल
दुरवस्था	दुरावस्था	अधीन	आधीन
बरात	बारात	लगान	लागान
हस्तक्षेप	हस्ताक्षेप	अपना	आपना

'अ' के स्थान पर 'आ' की मात्रा अपेक्षित —

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
आजमाइश	अजमाइश	महाराज	महराज
नादान	नदान	भागना	भगना
अंत्याक्षरी	अंत्यक्षरी	माहात्म्य	महात्म्य
आवश्यकता	अवश्यकता	पाजामा	पजामा

'ई' के स्थान पर 'इ' की मात्रा अपेक्षित —

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
उपाधि	उपाधी	नदियाँ	नदीयाँ
मंदिर	मन्दीर	कीर्ति	कीर्ती

भाइयों	भाईयों	शक्ति	शक्ती
पिया	पीया	हानि	हानी

'इ' के स्थान पर 'ई' —

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
अधीन	अधिन	आशीर्वाद	आशिर्वाद
मंत्री	मंत्रि	पीतांबर	पिताम्बर
बीमार	बिमार	दीपावली	दिपावली
परीक्षा	परिक्षा	स्त्री	स्त्रिी

'उ' के स्थान पर 'ऊ' की अशुद्धियाँ —

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
गुरु	गुरू	उत्थान	ऊत्थान
प्रभु	प्रभू	कुआँ	कूआं
धुआँ	धूआं	वधु	वधू
रुपये	रूपये	रुई	रूई
दुकान	दूकान	हेतु	हेतू

'ऊ' के स्थान पर 'उ' की अशुद्धियाँ —

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
दूसरा	दुसरा	हिन्दू	हिन्दु
सिंदूर	सिंदुर	जरूरी	जरुरी
तूफान	तुफान	आँसू	आंसु
पूज्य	पुज्य	फूल	फुल
शुरू	शुरु	सूर्य	सुर्य

2. मात्राओं में अन्तर होने से अर्थ में अन्तर आ जाता है किन्तु शब्द अशुद्ध नहीं होते। ऐसे कुछ शब्दों को यहाँ उदाहरणस्वरूप दिया जा रहा है। उनके अर्थ में अन्तर को पहचानें।

(अ/आ)	**(इ/ई)**	**(उ/ऊ)**
बल-बाल	बिन-बीन	सुना-सूना
धन-धान	जाति-जाती	चूना-चुना
भर-भार	पिता-पीता	
रख-राख	दिन-दीन	

विशेष

संयुक्त व्यंजनों में यदि किसी व्यंजन के पूर्व स्वर रहित व्यंजन आए, तो 'इ' की मात्रा दोनों व्यंजनों के पहले लगेगी; जैसे— स्थिति = स् + थ + इ + त + इ

इस प्रकार के शब्दों का विशेष अभ्यास करें।

रोचक तथ्य

1. पंजाब प्रांत के लोग 'आ' के स्थान पर 'अ' का प्रयोग करते हैं।
   जैसे—

अशुद्ध	**शुद्ध**
शरीरिक	शारीरिक
समान	सामान
रजिंदर	राजिंदर
मनिस्टर	मिनिस्टर
नराज़	नाराज़

2. अक्षर के अंत में 'अ' के उच्चारण के नियम —

(क) अक्षरों के अंत में जो व्यंजन होता है, उसके 'अ' का उच्चारण बहुत धीमी ध्वनि से होता है।
जैसे—राम, बालक, फिसलन आदि।

(ख) अक्षर के अंत में संयुक्त व्यंजन होने पर 'अ' का स्पष्ट उच्चारण होता है।
जैसे—चित्र, शुक्ल आदि।

(ग) अक्षर के अंत में ह, ण, ड़ आने पर भी उसके अंतिम 'अ' का उच्चारण होता है।
जेसे—चाह, राह, प्राण, प्रमाण, पेड़, तीड़ आदि।

विलुप्त होता वर्ण - ऋ

एक विवाह समारोह में विभिन्न प्रांतों के लोग एकत्रित हुए। उनमें उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत के लोग भी थे। दक्षिण-पश्चिम भारत के लोगों में विशेषकर गुजरात तथा महाराष्ट्र के थे। वे लोग परस्पर मिलते समय एक-दूसरे से 'कृपा दृष्टि बनी रहे', कह रहे थे किन्तु कृपा को क्रपा तथा दृष्टि को द्रष्टि बोलते हुए सुनाई दे रहे थे। एक समय मैं ग्रीष्म ऋतु में नागपुर गया, वहाँ मुझे 'अमृतांजन' खरीदना था। वहाँ उसे अम्रुतांजन बोला जाता था।

लगता है, 'अमृतफल' अम्रूतफल कहने से ही धीरे-धीरे अमृत का अमरूद बोला जाने लगा होगा। (अमृत-अम्रूत-अमरूद) यही स्थिति वृक्ष-व्रुक्ष-रूख की हुई होगी।

उत्तर भारत के लोगों को 'ऋ' का 'रि' बोलने की आदत है। यहाँ तक तो ठीक किन्तु कुछ लोगों का आग्रह है कि हिन्दी में अन्य वर्णों की भाँति चूँकि ऋ ध्वनि संस्कृत से ही आई है। अ, इ, उ, ऋ इन चारों स्वरों को ह्रस्व स्वर माना गया है अत: हिन्दी में 'ऋ' का मानक उच्चारण र + इ = रि ही माना जाना उचित है किन्तु ऋ को 'रि' बोलते समय कहाँ 'रि' लिखना उचित होगा, और कहाँ 'ऋ'; इसकी सही-सही जानकारी कैसे होगी- इसका एक ही उपाय है। निम्नलिखित दो नियमों को ध्यान में रखा जाए—

नियम —

1. संस्कृत शब्दों में ही 'ऋ' का प्रयोग होता है। अत: संस्कृत के तत्सम शब्दों की एक सूची तैयार की जाए जिसे साधारण व्यक्ति भी उसे जान सकें। शब्दकोश की सहायता से यह सूची तैयार की जा सकती है।

   सूची के दो आधार होने चाहिए —

क. **स्वतंत्र रूप से प्रयोग में आनेवाले शब्द जैसे-**

ऋण, ऋतु, ऋषि, ऋग्वेद, ऋचा आदि।

ख. **मात्रा के रूप में प्रयोग में आनेवाले शब्द जैसे-**

कृति, कृपया, कृषि, कृष्ण, गृह, घृणा, मृदु, पृथ्वी आदि।

भाषा के रूप में 'ऋ' का प्रयोग करते समय (ृ) की मात्रा का उच्चारण 'रि' ही होता है, रू नहीं; जैसे— कृष्ण को 'क्रिष्ण' बोला जाए, क्रुष्ण नहीं।

2. ट—वर्ण (ट, ठ, ड, ढ, ण) में ऋ मात्रा का कोई भी शब्द देखने में नहीं आता है।

'ऋ' और 'रि'

याद रखें 'ऋ' स्वर है, जबकि 'र' व्यंजन वर्ण है। देखने में आया है कि अक्सर छात्र 'ऋ' की

मात्रा (ृ) के स्थान पर रेफ (र्) और रेफ के स्थान पर 'ऋ' (ृ) की मात्रा लगा देते हैं। ध्यान दें —

सप्त + ऋषि = सप्तर्षि

यहाँ सप्त + ऋषि शब्दों की संधि करते समय 'ऋ' की स्थिति रेफ जैसी ही है किन्तु यह केवल अपवाद है। अत: इस विषय में सावधानी रखना होगी, किन्तु 'कृपा' के लिए 'क्रपा' तथा 'ब्रज' के लिए 'बृज' लिखना उचित नहीं। वर्ण-ध्वनि विश्लेषण करके देखें-

ब् + र + ज् + अ = ब्रज।

ब् + ऋ + ज् + अ= बृज।

ग्रह को गृह, मात्रिक को मातृक, प्रसंगानुकूल लिखना अशुद्ध नहीं क्योंकि दोनों के अर्थ भिन्न-भिन्न हैं किन्तु 'ब्रजभूमि' को 'बृजभूमि' लिखना उचित नहीं है।

विशेष

1. विदेशी भाषा के आगत शब्दों में (उर्दू/अंग्रेजी) से गृहीत शब्दों में ऋ का प्रयोग कभी नहीं होता है; जैसे—

   रिश्ता, रिक्शा, परिन्दा, मरियम, क्रिस्टल आदि।
2. इसी प्रकार श्रंगार और श्रृंगार दोनों ही अशुद्ध हैं, शुद्ध रूप है-शृंगार।

'ऋ' तथा 'रि' विषयक अशुद्धियाँ —

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
भृष्ट	भ्रष्ट	दृष्टी	दृष्टि
मात्रि	मातृ	स्मिरति	स्मृति
ग्रहीत	गृहीत	क्रिशि	कृषि
रिण	ऋण	प्रथक	पृथक
क्रितज्ञ	कृतज्ञ	रितु	ऋतु
रिषि	ऋषि	किरपा, क्रपा	कृपा
श्रंगार	शृंगार	उपगृह	उपग्रह
घ्रणा	घृणा	कृया	क्रिया
ग्रहस्थ	गृहस्थ	प्रिथ्वी	पृथ्वी
क्रिपा	कृपा	दृष्टा	द्रष्टा
द्रष्टव्य	दृष्टव्य	म्रिग	मृग
पैत्रिक	पैतृक	त्रितीय	तृतीय
अनुग्रहीत	अनुगृहीत	रिद्धि	ऋद्धि
त्रिप्त	तृप्त	निक्रिष्ट	निकृष्ट
द्रिढ़	दृढ़	म्रित्यु	मृत्यु
स्म्रति	स्मृति	चन्द्रगृहण	चंद्रग्रहण
स्रष्टा	सृष्टा	द्रश्य	दृश्य
द्रष्टांत	दृष्टांत		

07

संयुक्त स्वर (ए, ऐ)

एक सज्जन ने मुझसे सहज ही प्रश्न किया कि प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ते समय सभी ने 'ए' एड़ी का तथा 'ऐ' (अय) ऐनक का पढ़ा है किन्तु उनके उच्चारण के समय सदैव भ्रम बना रहता है। उदाहरणस्वरूप उन्होंने ये समस्याएँ बताईं —

1. 'एकतारा' बोलते समय हम इकतारा बोलते हैं। यहाँ हम 'ए' का ह्रस्व स्वर के रूप में उच्चारण करते हैं, जबकि 'एकता' शब्द का उच्चारण करते समय हम 'ए' को 'इ' के रूप में उच्चारित नहीं करते। यहाँ 'ए' का उच्चारण हम दीर्घ-स्वर के रूप में करते हैं, ऐसा क्यों?
2. 'ऐनक' में कहीं 'अय' नहीं, फिर भी हम ऐनक का उच्चारण 'अय्' ध्वनि के रूप में करते हैं, ऐसा क्यों? इससे वर्तनी अशुद्ध होने की संभावना बनी रहती है।

उनका प्रश्न बहुत सही था, मेरे विचार में 'ए' और 'ऐ' दोनों ध्वनियों की उत्पत्ति को स्पष्ट करने पर ही इसका समाधान हो सकता है। अत: मैंने उन्हें इसी आधार पर समझाने का प्रयत्न किया —

अब ध्यान दें— सर्वप्रथम मैंने दोनों की रचना को स्पष्ट किया —

अ + इ = ए	अ + ए = ऐ
अ + ई = ए	अ + ऐ = ऐ
आ + इ = ए	आ + ए = ऐ
आ + ई = ए	आ + ऐ = ऐ
अ/आ + इ/ई = ए	**अ/आ + ए/ऐ = ऐ**

1. 'ए' और 'ऐ' दोनों ही कंठ तालव्य स्वर हैं, अर्थात् इन्हें कंठ तथा तालु के सहयोग से बोला जाता है , किन्तु —
   - **(क)** 'ए' का उच्चारण करते समय जीभ की नोंक तालु के समीप पहुँचती है तथा मुँह से श्वास छोड़ने पर कंठ से ध्वनि निकालना पड़ती है।
   - **(ख)** 'ऐ' का उच्चारण करते समय ओंठ अधिक खुलते हैं तथा जीभ की नोक कुछ नीचे झुकती है तथा मुँह से श्वास अधिक निकालना पड़ती है।
2. दोनों का उच्चारण-भेद समझ लेने पर छात्रों को यह स्पष्ट समझाया जाए कि संस्कृत की अपेक्षा हिन्दी में 'ऐ' के उच्चारण में भिन्नता है।

संस्कृत में 'ऐ' का उच्चारण 'अय्' की भाँति होता है, जबकि हिन्दी में 'ऐ' का उच्चारण

'अय्' के स्थान पर 'इ' और 'ए' के मध्यवर्ती रूप में होता है।

'ए-ऐ' का प्रयोग हिन्दी में अन्य स्वरों की भाँति स्वर के रूप में स्वतन्त्र ध्वनि के रूप में भी होता है, तथा मात्रा के रूप में भी। इसे इस प्रकार समझें —

जब दो स्वरों का उच्चारण एक ही श्वासाघात में होता है तब संयुक्त स्वरों में स्वर ध्वनियाँ एकाक्षर में परिणत हो जाती हैं। पूर्व उदाहरणानुसार जैसे-'अ+इ' दो स्वर ध्वनियाँ मिलकर 'ए' एकाक्षर ध्वनि में परिवर्तित हो गईं। यहाँ यह स्वतंत्र ध्वनि (सन्धि स्वर) के रूप में कार्य करती है किन्तु स्वर संयोग में यदि वे अपनी अलग-अलग सत्ता बनाए रखती हैं तो दोनों का एक साथ उच्चारण नहीं हो पाता। दोनों के मध्य एक विराम की स्थिति उच्चारण में आ जाती है, अर्थात् पृथक्-पृथक् श्वासाधातों में उनका उच्चारण होता है। इसे हम स्वर संयोग की स्थिति कहते हैं। एक उदाहरण द्वारा इसे इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है।

संधि स्वर के रूप में निर्मित शब्द	**स्वर संयोग के रूप में निर्मित शब्द**
भैया	भइया
गैया	गइया
पैसा	पइसा
कौआ	कउआ
गवैया	गवइया

यहाँ भैया शब्द में भ+अ+ऐ+य+आ रेखांकित वर्ण की संधि है, जबकि भइया स्वर संयोग में भ+अ+इ दोनों की स्वतंत्र सत्ता है।

उच्चारण की दृष्टि से ए, ऐ की मात्राएँ

इस सम्बन्ध में अन्य तथ्य भी विचारणीय हैं —

1. (लघु) स्वर के रूप में 'ए' का उच्चारण करते समय हमें झटके के साथ आगामी वर्ण का उच्चारण करना पड़ता है; जैसे-एकट्ठा (इकट्ठा)। यही कारण है कि एकतारा बोलते समय हमें इकतारा की ध्वनि सुनाई देती है।
2. दीर्घ स्वर के रूप में 'ए' का उच्चारण करते समय 'ए' पर कुछ अधिक समय तक रुकना पड़ता है; जैसे-एकता, बेचना आदि।

   उन सज्जन के प्रथम प्रश्न का उत्तर मैंने इस प्रकार दे दिया, जिससे वे संतुष्ट भी थे। फिर मैंने 'ए' के सम्बन्ध में एक नियम और बताया कि सामान्यत: 'ए' शब्द यदि किसी शब्द में मात्रा के रूप में प्रथम हो, द्वितीय वर्ण 'ह' हो तथा तृतीय वर्ण दीर्घ-स्वर के रूप में हो तो भी 'ए' का उच्चारण लघु स्वर के रूप में होता है; जैसे-चेहरा, मेहमान, मेहर आदि।
3. उनके दूसरे प्रश्न का उत्तर देते समय मैंने उन्हें बताया कि 'ऐ' का स्वतंत्र ध्वनि (संधि स्वर) के रूप में उपयोग करने पर प्रथम स्वर 'अ' झटके के साथ बोलना पड़ता है। उसमें जिह्वा का भाग निष्क्रिय रहता है तथा पश्च भाग गतिशील रहता है; जैसे-बैल,

दैव, सैर, मैल, छैल आदि।

4. संस्कृत से हिन्दी में आए तद्‌भव शब्दों में भी 'ऐ' का उच्चारण 'अय्' होता है, जैसे- ऐश्वर्य (यहाँ ऐ का उच्चारण स्वतंत्र ध्वनि के रूप में हुआ है)।
5. यदि 'ऐ' के पश्चात् य अथवा व आवे तो 'ऐ' का उच्चारण 'अइ' होता है; जैसे-मैयर, मैया, गवैया आदि यहाँ ऐ की मात्रा का उच्चारण 'अइ' स्वर संयोग के रूप में हुआ है।

वर्तनी की दृष्टि से 'ए' तथा 'ऐ' की मात्राएँ

'ए' तथा 'ऐ' वर्णों की मात्राएँ क्रमश: े ै हैं। मूल अक्षर 'ऐ' में ऊपर एक खड़ी पाई रहती है, जबकि मात्रा में दो पाइयाँ हो जाती हैं। मूल अक्षर 'ऐ' की एक खड़ी पाई पीछे लौटकर 'ए' की मात्रा बन जाती है। इस बात को स्पष्ट समझ लेना चाहिए।

अर्थ की दृष्टि से ए, ऐ की मात्राएँ —

अंत में एक विशेष उल्लेखनीय बात यह भी है कि छात्रों को 'ए', 'ऐ' की ह्रस्व एवं दीर्घ ध्वनियों के उच्चारण एवं वर्तनी के प्रयोग को भी सावधानी से बताना होगा, ताकि वे उनके अंतर को ध्यान में रखते हुए अर्थ परिवर्तन को भी समझें; जैसे—

1. लुटे-लूटे दोनों ही शब्द ठीक हैं क्योंकि प्रथम लुटे शब्द का अर्थ है— स्वयं लुटना और दूसरे शब्द लूटने का अर्थ है, दूसरे को लूटना।
2. बहू और बहु (बहू/अधिक) दोनों ठीक हैं।

अन्य उदाहरण —

मेल	-	मैल
मेला	-	मैला
सेर	-	सैर

अधिक अभ्यास के लिए अपनी पाठ्यपुस्तक से ऐसे और भी शब्द छाँटकर शब्दकोश की सहायता से उनके अर्थ को समझें।

'ए' के स्थान पर 'ऐ' की अशुद्धियाँ —

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
योग्यताएँ	योग्यताऐं	फैंकना	फेंकना
इतिहास	ऐतिहास	चाहिए	चाहिऐ
भाषाएँ	भाषाऐं	एक	ऐक
सेना	सैना	ऐसा	अयसा

'ऐ' के स्थान पर 'ए' की अशुद्धियाँ —

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
दैहिक	देहिक	वैसा	वेसा
सैनिक	सेनिक	टैक्स	टेक्स
विस्मय	विस्मै	एक्शन	ऐक्शन
पैसा	पेसा	मटमैले	मटमेले

रोचक तथ्य —

पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोग प्राय: 'ऐ' का उच्चारण अशुद्ध करते हैं।
जैसे—

अशुद्ध	शुद्ध
बइल	बैल
पइसा	पैसा
कइसा	कैसा

08

संयुक्त स्वर (ओ, औ)

दीपावली का त्योहार था। दो मित्रों ने ग्रीटिंग कार्ड बनाए। उसमें एक ने **त्योहार** के स्थान पर **त्यौहार** लिखा। दूसरे ने कहा— नहीं, त्यौहार ही सही है, त्योहार नहीं। समस्या का हल वे मुझसे कराना चाहते थे। मैंने उनसे कहा— कोरव शुद्ध है या कौरव।

फिर अन्य शब्दों के बारे में भी मैंने उनसे पूछा–पड़ोस सही है या पड़ौस, पोधा शब्द सही है या पौधा। उनके सामने विपरीत स्थिति यह थी कि समाधान के स्थान पर वे समस्या में और उलझ गए, तब मैंने पहले उनकी रचना की ओर उनका ध्यान दिलाया, और बताया कि, 'ओ' अथवा 'औ' का प्रयोग हिन्दी में अन्य स्वरों की भाँति स्वर के रूप में स्वतंत्र भी होता है तथा मात्रा के रूप में भी।

हिन्दी स्वर सिखाते समय 'ओ' तथा 'औ' को सन्धि स्वर के अन्तर्गत रखा गया है। इनकी रचना पर ध्यान दें—

अ + उ		अ + ओ	औ
अ + ऊ	ओ	आ + ओ	
आ + उ			
आ + उ			

अ/आ + उ + ऊ = ओ   अ/आ + ओ = औ

उच्चारण स्थान कंठ + ओष्ठ = कंठोष्ठ्य

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'अ + आ' का उच्चारण कंठ्य से होता है जबकि उ+ऊ का ओष्ठ से। अत: ओ+औ–दोनों स्वरों को कंठोष्ठ्य वर्ण कहा गया है। अर्थात् इन स्वरों का उच्चारण कंठ, जीभ के नीचे का भाग तथा ओष्ठ से किया जाता है। उनके उच्चारण में मुँह गोलाकार या वर्तुल आकार धारण कर लेता है।

स्वयं प्रयोग करके देखें— 'ओ' बोलने के लिए ओठ फैलाकर जीभ आगे को करना पड़ता है और मुँह की स्थिति लगभग डेढ़ सेंटीमीटर खुली हुई रहती है तथा 'ओ' से अधिक मुँह खोलकर जीभ आगे करके ओठ फैलाते हुए 'औ' का उच्चारण किया जाता है। 'औ' का उच्चारण करते समय ऊपर–नीचे के ओठों के ठीक मध्य भाग में डेढ़ सेंटीमीटर के लगभग खाली स्थान बनता है। केवल मुँह की आकृति पर ही अधिक ध्यान देने से दोनों में अन्तर स्पष्ट हो जाता है। अत: 'ओ' एवं 'औ' के अन्तर को उच्चारण के अभ्यास द्वारा ही दूर कराया जा सकता है।

स्वतंत्र एवं संधि स्वर के रूप में 'औ'

'ओ' मूलत: स्वतंत्र स्वर है किन्तु 'औ' की दो ध्वनि हमें सुनाई देती है, जैसा कि स्वरों के उच्चारण स्थान एवं आकृति के आरेख में बताया गया है कि 'औ' का उच्चारण जिह्वा की पश्च–मध्य में बननेवाली आकृति से होता है। अत: कौन, मौन, मौज, फौज आदि शब्दों में 'औ' की एक स्वतंत्र ध्वनि है किन्तु कौतुक, औदार्य जैसे शब्दों में 'औ' के स्थान पर 'अउ' संधि स्वर सुनाई देता है। जिसमें मध्य स्वर 'अ' से पश्च–स्वर 'उ' तक का भाग सक्रिय रहता है।

विशेष

1. लोहा और सोना में 'ओ' दीर्घ है किन्तु कर्तृ वाचक 'आर' प्रत्यय जोड़ने से लोहार और सोनार में 'ओ' ह्रस्व हो जाता है। इसको ध्यान में रखकर बच्चों को यह भी स्पष्ट किया जाना चाहिए कि हिन्दी शब्द रचना में प्रथम अक्षर का स्वर यदि दीर्घ है तो थोड़ा रुकना पड़ता है और ह्रस्व हो तो बिना रुके–झटके के साथ आगामी वर्ण का उच्चारण किया जाता है। इसके कारण 'ओ' अनेक शब्दों में 'उ' (ह्रस्व) हो जाता हैं; जैसे —

   लोहा + आर = लुहार (यहाँ ओ का उ हो गया है)

   अन्य उदाहरण —

   घोड़ा + दौड़ = घुड़दौड़

   मोटा + पा = मुटापा

2. 'ओ' तथा 'औ' में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनमें मात्राओं में अशुद्धियाँ तो नहीं होतीं किन्तु अर्थ में भिन्नता होती है। अत: ऐसे शब्द की पृथक् से सूची बनाएँ और शब्दकोश की सहायता से उनके अर्थ को जानें —

ओर	–	और	लो	–	लौ
मोर	–	मौर	जो	–	जौ
शोक	–	शौक	सो	–	सौ

'ओ' तथा 'औ' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

इस दृष्टि से 'ओ' तथा 'औ' के सही उच्चारण का अभ्यास तो करवाना ही चाहिए किन्तु दोनों की शुद्ध वर्तनी का अभ्यास करना भी जरूरी है।

उदाहरणार्थ कुछ शब्द यहाँ दिए जा रहे हैं —

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पोधा	पौधा	पारलोकिक	पारलौकिक
ओद्यौगिक	औद्योगिक	अध:गति	अधोगति
ओषधालय	औषधालय	न्यौता	न्योता
मोखिक	मौखिक	गोतम	गौतम

उपन्यासिक	औपन्यासिक	कसोटी	कसौटी
भोगौलिक	भौगोलिक	त्यौहार	त्योहार
आलोकिक	अलौकिक	पड़ौस	पड़ोस

रोचक तथ्य

पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ लोग 'औ' का उच्चारण प्राय: अशुद्ध करते हैं।
जैस —

अशुद्ध	**शुद्ध**
पउधा	पौधा

09

अनुस्वार-अनुनासिक (अं-अँ)

बदरीनाथ और गंधे जी पक्के दोस्त थे। संयोग से वे पड़ोसी भी थे। प्रात:काल नित्य साथ-साथ घूमने भी जाते थे। एक दिन गंधे जी ने बदरीनाथ जी से विनोद में कहा, ''बदरीनाथ जी! यदि आपके नाम के प्रथम अक्षर पर अनुस्वार (ं) की बिन्दी लग जाए, तो आप बंदरीनाथ हो जाएँगे।'' बदरीनाथ जी भी कम विनोदी स्वभाव के नहीं थे। वे तपाक् से बोले, ''वह बिन्दी तुम्हारे नाम के ऊपर से हटकर मेरे नाम पर आई है, जानते हो अब तुम्हारा नाम गंधे की बजाए क्या होगा? गधे जी!'' इस बात पर दोनों खूब हँसे। सचमुच अनुस्वार की महिमा ही कुछ ऐसी है।

घर जाकर गंधे जी ने पुन: कहा— ''बदरीनाथ जी! आप तो हिन्दी-भाषी हैं। कृपया बताएँ कि अनुस्वार और अनुनासिक इन दोनों में क्या अन्तर है। प्राथमिक कक्षाओं से लेकर आज तक मैंने इन्हें जानने के बहुत प्रयत्न किए किन्तु मेरी तो कुछ समझ में नहीं आया। एक भाषाविद् ने एक दिन यह अवश्य बताया कि वर्णमाला में ये दोनों ध्वनियाँ हैं और इनका नाम 'अयोगवाह' है किन्तु वे इसके विषय में अधिक कुछ नहीं बता पाए। यदि आप कुछ स्पष्ट कर सकें, तो मुझे अवश्य बताइए।''

बदरीनाथ जी बोले— ''तो सुनो, वर्णमाला में अनुस्वार और विसर्ग दो ऐसी ध्वनियाँ हैं, जिन्हें न स्वरों के साथ रखा गया है और न व्यंजनों के साथ। इनकी स्थिति दोनों के मध्य है।''

गंधे जी ने जिज्ञासावश पूछा— ''ऐसा क्यों?''

बदरीनाथ जी ने कहा— ''स्वरों तथा व्यंजनों की उत्पत्ति के विषय में एक जनश्रुति है कि वर्णों की उत्पत्ति शंकर जी के डमरू बजाने से हुई है। विविध प्रकार की ध्वनि को डमरू से निकालते-निकालते शंकर जी ने यह अनुभव किया कि 'अं' तथा 'अ:' के बिना भाषा का महल खड़ा नहीं किया जा सकता। अत: वे दोनों प्रकार की ध्वनि निकालने लगे किन्तु प्रयत्न करने पर भी उनका डमरू उन ध्वनियों को नहीं निकाल पाया। अन्त में शंकर जी ने इन दोनों अदृश्य ध्वनियों के अधिष्ठाताओं से पूछ— तुम दोनों अपनी उपस्थिति क्यों नहीं दिखा पा रहे हो।''

शंकर जी के पूछने पर दोनों भाइयों ने समवेत स्वर में कहा, हमको वर्णों की उत्पत्ति के बाद क्यों याद किया गया। अब हम तभी प्रकट हो सकते हैं, जब हमें स्वर तथा व्यंजन इन दोनों के मध्य स्थान मिले।

चूँकि शब्दों के निर्माण में हमारी महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी, अत: हम अदृश्य रूप से ही इस कार्य में सहायक बनेंगे। नव-ग्रहों में जिस प्रकार राहु-केतु, दोनों ग्रहों को अशरीरी रूप में

शामिल किया गया है, वैसे ही हम भी वर्णों के मध्य अशरीरी रूप से रहेंगे। केवल ध्वनि के रूप में ही हमारी पहचान हो सकती है।

चूँकि हमारा स्थान स्वरों के पश्चात् रहेगा। अतः हम स्वरों के नेता 'अ' के पश्चात् ही अपना अस्तित्व प्रकट करेंगे। अनुस्वार ने कहा— 'मैं स्वर अ' के माथे पर सवार रहूँगा। विसर्ग ने कहा—'मैं स्वर 'अ' की पीठ पर लदा रहूँगा।' उदाहरण के लिए —अ + ं = अं (यहाँ अनुस्वार के रूप में बिंदी अ के ऊपर लगी है।)

अ + : = अः (यहाँ अ की पीठ पर दो बिन्दियाँ लगी हैं)

आचार्य किशोरीदास जी ने इन ध्वनियों की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखकर शायद इन्हें अयोगवाह कहा है, अ + योग + वाह = अयोगवाह, अर्थात् योग न होने पर भी जिसे वहन किया जाए। इसको इस प्रकार समझें —

अयोगवाह में 'अ' निषेध अर्थात् नहीं का सूचक है। अर्थात् स्वर तथा व्यंजनों के साथ योग न होने पर भी इन्हें वर्णमाला में स्वतंत्र स्थान मिला है। कुछ विद्वान् 'अ' के सकारात्मक पहलू पर ध्यान देकर यह भी व्याख्या करते हैं कि 'अ' के योग से चलनेवाले वर्ण अयोगवाह की स्थिति स्वर तथा व्यंजन के मध्य क्यों है।

फिर मैंने बताया कि एक हिन्दी कार्यशाला में अनुस्वार एवं अनुनासिक के अन्तर को स्पष्ट करने का अनुरोध मुझसे किया गया था। वह भी रोचक ढंग से। कुछ देर तक तो मुझे समझ में नहीं आया कि प्रस्तुति में रोचकता कैसे आ सकती है फिर मैंने एक युक्ति का प्रयोग किया।

सर्वप्रथम, मैंने सहभागियों को 'अनु' शब्द को स्पष्ट करते हुए बताया कि दोनों शब्दों में 'अनु' उपसर्ग का प्रयोग हुआ है। 'अनु' का अर्थ होता है-'पीछे-पीछे चलनेवाला।' इस दृष्टि से अनु+स्वार का अर्थ होता है, जो स्वर का अनुगमन करे तथैव अनु+नासिक का अर्थ है-जो 'नासिका' (नाक) का अनुगमन करे।

लिपि चिह्नों के आधार पर अन्तर

हिन्दी तथा संस्कृत में दोनों के लिए प्रयोग में लाए गए लिपि चिह्न इस प्रकार हैं-

अनुस्वार (-ं)

अनुनासिक (-ँ) इस चिह्न को चन्द्रबिन्दी कहते हैं।

एक रेखा चित्र द्वारा दोनों में अन्तर इनके चिह्न से सरलता से हो जाता है। नीचे दिए गए चित्रों को ध्यान से देखें —



अनुस्वार   अनुनासिक

अनुनासिक स्वर

उच्चारण के आधार पर स्वर दो प्रकार के होते हैं —

1. **निरनुनासिक स्वर—** जिन स्वरों की ध्वनि केवल मुख से निकलती है, उन्हें निरनुनासिक स्वर कहते हैं। इसमें नासिका का उपयोग बिल्कुल नहीं होता है।
2. **अनुनासिक स्वर—** जिन स्वरों की ध्वनि मुख के साथ-साथ नासिका से भी निकलती है, उन्हें अनुनासिक स्वर कहते हैं। इसका चिह्न शिरोरेखा के ऊपर (ँ) चन्द्र बिन्दु है। परन्तु जब शिरोरेखा के ऊपर स्वर की मात्रा भी लगी हो तो सुविधा के लिए चन्द्रबिन्दु (ँ) के स्थान पर मात्र (ं) बिन्दु लगा दिया जाता है।

अनुनासिक के प्रयोग से अर्थ में अन्तर पड़ता है; जैसे —

निरनुनासिक स्वर		**अनुनासिक स्वर**	
स्वर	**शब्द**	**स्वर+अनुनासिक**	**शब्द**
अ	सवार	अँ	सँवार (सुधार)
आ	बाट	आँ	बाँट
इ	बिध	इँ	बिँध (बिंध)
ई	कही	ईँ	कहीँ (कहीं)
उ	उगली	उँ	उँगली
ऊ	पूछ	ऊँ	पूँछ
ए	बूढ़े	एँ	बूढ़ेँ (बूढ़ें)
ऐ	है	ऐँ	हैँ (हैं)
ओ	गोद	ओँ	गोँद (गोंद)
औ	चौक	औँ	चौँक (चौंक)

इस प्रकार आपने देखा कि अनुनासिकता का नासिक्य व्यंजनों से कोई सम्बन्ध नहीं होता। अनुनासिकता हिन्दी के दस स्वरों के साथ संयुक्त होकर स्वरों की कुल संख्या 20 कर देती है। इनमें दस निरनुनासिक स्वर होते हैं, दस अनुनासिक स्वर।

अनुस्वार

अनुस्वार एक नासिक्य व्यंजन है। इसके उच्चारण में नाक से अधिक श्वास निकलती है।

हिन्दी में अनुस्वार (ं) से सम्बन्धित नियम इस प्रकार प्रचलित हैं —

1. पाँचों वर्गों (क वर्ग... आदि) के स्वर रहित पंचम व्यंजन के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है; जैसे— गंगा में 'ङ्' (पंचम वर्ण) की जगह गंगा मान्य है। इसी प्रकार चंचल, दंड, अंगीकार, दंत भी मान्य है। शुद्धता की दृष्टि से 'त' वर्ग तथा 'प' वर्ग में पंचमाक्षर और अन्य वर्गों (अ,च,र) में अनुस्वार का प्रयोग किया जाना उचित होगा; जैसे— नन्दन, अन्त, चम्पा, अनुकम्पा आदि। किन्तु एक और बात ध्यान में रखने योग्य है कि संस्कृत में व्यवस्था है कि अनुस्वार का उच्चारण उसी व्यंजन वर्ग में आनेवाले नासिक्य व्यंजन के रूप में होता है, जिस स्पर्श व्यंजन से पूर्व वह आता है।

इसलिए अनुस्वार के उच्चारण में भी भिन्नता रहती है। इसे निम्नांकित जानकारी के आधार पर जानें —

स्पर्श व्यंजन	उच्चारण अवयव	नासिक्य व्यंजन	उच्चरित रूप	लिखित मानक रूप
क वर्ग	कंठ	ङ	गङ्गा	गंगा
च वर्ग	तालु	ञ	चञ्चल	चंचल
ट वर्ग	मूर्धा	ण	ठण्डा	ठंडा
त वर्ग	दंत	नर	दन्त	दंत
प वर्ग	ओठ	म	चम्पक	चंपक

यहाँ उच्चारण अवयव की भिन्नता के कारण पाँचों वर्गों में अनुस्वार के उच्चारण में भी भिन्नता है किन्तु हिन्दी में अनुस्वार पाँचों नासिक्य ध्वनियों के लिए समान रूप से प्रयोग में लाया जाता है। इसे अभ्यास से जानें।

2. जिन शब्दों में पंचम व्यंजन के बाद कोई अन्य पंचम व्यंजन आता है तो पंचम वर्ण द्वित्व (दो बार) आता है। वहाँ अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता है। उदाहरणार्थ-जन्म में न के पश्चात् पंचम वर्ण आया है इसलिए इसका रूप जन्म ही होगा, जंम नहीं। इसी प्रकार उन्नति को उंनति नहीं लिखा जा सकता। इसी प्रकार सम्मेलन, सम्मति आदि लिखना चाहिए।
3. य, र, ल, व, (अन्तस्थ) श, ष, स, ह (ऊष्म) के पूर्व अनुस्वार आने पर 'न' या 'म' या किसी अन्य पंचमाक्षर का प्रयोग किसी भी पंचम वर्ण की भाँति हो सकता है। इसका कोई निश्चित नियम नहीं है; जैसे—पुण्य, अन्य, संलाप, संसार, कंस, अंश आदि शब्दों में अनुस्वार का उच्चारण 'न्' की भाँति हो रहा है। संवाद में 'म' के रूप में संहार में 'ङ' के रूप में हो रहा है।

सुविधा के लिए याद रखें

(क) जहाँ न, म, य, व, ह के पूर्व न, ण, म का स्पष्ट उच्चारण होता है, वहाँ पंचमाक्षर ही लिखा जाए; जैसे—अन्न, अक्षुण्ण, अन्वय, तुम्हारा, तन्मात्रा आदि।

(ख) ख, र, ल, व तथा श, ष, स, ह के पूर्व अनुनासिक के रूप में किसी भी पंचमाक्षर का प्रयोग न करें; जैसे— संयम, संरक्षण, संलग्न, संवाद, संशय, संसार, संहार आदि।

4. शब्द के अंत में अनुस्वार आने पर उच्चारण 'म्' के रूप में होता है; जैसे-स्व में स्वयम्।
5. अन्तस्थ (य र ल व) ऊष्म (श ष स ह) व्यंजनों में अनुस्वार का उच्चारण सामान्य ध्वनि के समान किया जाता है; जैसे-स्वयं, अहं, एवं सायं।
6. शब्दों के बहुवचन रूप में चन्द्रबिन्दु के स्थान पर केवल बिन्दु का प्रयोग किया जाता है; जैसे-लताएँ, (लताएं) चिड़ियाएँ (चिड़ियाएं) आदि।

7. संबोधन बहुवचन में हो तो अनुस्वार का प्रयोग निम्नलिखित विधि से होगा; जैसे - अरे लड़कों-अरे लड़को। ('ओं' के स्थान पर 'ओ' का प्रयोग करें) यही शुद्ध रूप है।

किन्तु अन्य संदर्भों में बहुवचन के रूप में अनुस्वार का प्रयोग करते समय बिन्दी लगी रहेगी; जैसे- लड़का - लडकों। साधु - साधुओं आदि।

इस प्रकार बहू, डाकू, छात्र आदि को दोनों रूपों में प्रयोग करने का अभ्यास करें।

अनुस्वार तथा अनुनासिक ध्वनि के उच्चारण में अन्तर

अब आप समझ गए होंगे कि —

1. अनुनासिकता के उच्चारण में किसी नासिक्य व्यंजन का उच्चारण नहीं होता। नासिक व्यंजन के उच्चारण की स्थिति में अनुस्वार आता है, अनुनासिकता नहीं। अर्थात् अनुस्वार नासिक्य व्यंजनों का प्रतिनिधि होता है, जबकि अनुनासिकता का नासिक्य व्यंजनों से कोई सम्बन्ध नहीं होता।
2. अनुस्वार के स्थान पर अनुनासिकता अथवा निरनुनासिकता का उच्चारण करने पर सम्बद्ध शब्द का अर्थ बदल जाता है; जैसे —

अनुस्वार	**अनुनासिक**
हंस	हँस
बंध	बँध

अतः चन्द्र बिन्दु के स्थान पर हर जगह अनुस्वार लगाना दोषपूर्ण है।

3. सतर्कता की दृष्टि से एक अन्तर और भी ध्यान में रखना चाहिए कि कहीं-कहीं निरनुनासिक ध्वनि पर भी अनुस्वार अथवा अनुनासिकता आरोपित हो जाती है, जबकि उसकी आवश्यकता नहीं होती है, फिर भी कुछ लोग उच्चारण में अनुनासिकता ले आते हैं। आश्चर्य तो इस बात को लेकर है कि उसे वर्तनी से भी प्रकट कर देते हैं; जैसे —
शुद्ध - हाथ, पूछना, नाक, भेजना, माथा, कान आदि।
अशुद्ध - हाँथ, पूँछना, नाँक, भेंजना, माँथा, काँन आदि।

अतः उच्चारण एवं लेखन में अनुस्वार, अनुनासिकता, निरनुनासिकता, इन तीनों में स्पष्ट अन्तर जानने के लिए अलग-अलग सूची बनाकर इनका अभ्यास किया जाना चाहिए। उदाहरण स्वरूप कुछ शब्दों के शुद्ध रूप यहाँ दिए जा रहे हैं—

अनुस्वार ( ) - अनुनासिक ( ) विषयक अशुद्धियाँ

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
सन्सार	संसार	बांसुरी	बाँसुरी
कँगन	कंगन	महंगा	महँगा
सांप	साँप	उंगली	उँगली
अहँकार	अहंकार	गुँजन	गुंजन
दिनाँक	दिनांक	हंसोड़	हँसोड़
हंसमुख	हँसमुख	दांत	दाँत

सन्यासी	संन्यासी	संवारना	सँवारना
आंख	आँख	साँसारिक	सांसारिक
गंवार	गँवार	अंधेरा	अँधेरा
ऊंट	ऊँट	कन्ठ	कंठ (कण्ठ)
अँधा	अंधा	जहां	जहाँ
चांद	चाँद	हँस (पक्षी)	हंस
पांचवां	पाँचवाँ	आंचल	आँचल
हंसना	हँसना	अंगूठी	अँगूठी
अपभ्रँश	अपभ्रंश	अँदाज	अंदाज
आंत	आँत	रेखाँकित	रेखांकित

पंचमाक्षर सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
भन्डार	भण्डार	पन्डित	पंडित (पण्डित)
कन्गन	कंगन	सम्वत्	संवत्
सम्वाद	संवाद	संमान	सम्मान
अंय	अन्य	सांम्य	साम्य

विशेष

1. उच्चारण में उन मौखिक स्वरों में अनुनासिकता आ जाती है, जिनके आगे या पीछे नासिक्य व्यंजन हों किन्तु लिखित रूप में उसे लिखा नहीं जाता। उदाहरण के लिए— ने को नें नहीं लिखा जाना चाहिए। 'नें' में जो अनुनासिकता प्रतीत होती है, वह 'न' के नासिक्य व्यंजन होने के कारण है, इसमें मिला स्वर 'ए' मौखिक ही है। ऐसा ज्ञान नहीं होने से 'नें' लिख दिया जाता है। इसके विपरीत 'में' में अनुनासिकता उच्चारण स्तर पर भी है। अत: लिखते समय 'में' को 'में' लिखा जाना उचित है।
2. तत्सम शब्दों में उ, न, म से पूर्व ङ को पंचमाक्षर के रूप में ही लिखें। यहाँ अनुस्वार लगाना अनुचित है; जैसे-वाङ्मय आदि।

10

अयोगवाह (विसर्ग) अः

प्रात: मैं नित्य घूमने जाता हूँ। एक दिन संस्कृत के शिक्षक से संयोगवश परिचय हो गया। वे कहने लगे, ''विसर्ग मूलत: संस्कृत भाषा की ध्वनि है। हिन्दी में विसर्ग ध्वनि का धीरे-धीरे लोप होता जा रहा है। यह दुखद स्थिति है।''

मैंने कहा, ''आपने संस्कृत भाषा पढ़ी है, इसलिए ऐसा कह रहे हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि विसर्ग का प्रयोग केवल संस्कृत में ही होता आया है। संस्कृत के बाद प्राकृत, पाली, अपभ्रंश भाषाओं में विसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ। महात्मा कबीर के काल तक भी जो खिचड़ी भाषा चल रही थी, उसमें भी विसर्ग का प्रयोग देखने में नहीं आता है। हाँ! जब हिन्दी का मानकीकरण होने लगा तब पुन: संस्कृतनिष्ठता के कारण संस्कृत के कुछ शब्द यथावत हिन्दी में प्रयुक्त होने लगे। ऐसे विसर्गयुक्त संस्कृत शब्दों की सूची बहुत लंबी नहीं है, उन्हें ध्यान देने पर याद रखा जा सकता है, किन्तु दु:ख का उच्चारण तो दुक्ख किया जाता है, अत: दु में विसर्ग (:) लगाने की आवश्यकता क्या है?''

इसी प्रकार अन्य शब्द, जो उच्चारण तथा वर्तनी की दृष्टि से पूर्ण सामंजस्य रखते हैं, उनमें भी विसर्ग का लोप होना, मेरी दृष्टि में उचित ही है।

इतना सब कहने पर भी वे मेरे कथन से सहमत नहीं हुए और कहने लगे, ''संस्कृत भाषा लंबे समय तक बोलचाल की भाषा रही है। अत: हम इस समस्या के निवारण के लिए उसे ही क्यों न आधार बनाएँ?''

मैंने कहा, ''श्रीमान्! संस्कृत से आए लगभग चालीस विसर्ग-शब्द ऐसे हैं जिनका हिन्दी में प्रयोग हो रहा है। संस्कृत में भी पूर्व में उन्हें विकल्प रूप से प्रयोग करने का प्रावधान था; जैसे- विसर्ग श्/स् की स्थिति में चाहे तो विसर्ग रखा जाए, चाहे रहने दिया जाए। उदाहरणार्थ- दु:शासन अथवा दुश्शासन-दोनों ही लिखने में मान्य थे। चूँकि हिन्दी एक विकासशील भाषा है, अत: उच्चारण एवं लेखन की समानता बनाए रखने के लिए दोनों ही प्रकार से लिखना उचित होगा।

हिन्दी में विसर्ग का प्रयोग दो प्रकार से देखने में आता है —

1. **संस्कृत के तत्सम शब्द—** संस्कृत विसर्ग का प्रयोग शुद्ध विन्यासों में आता है, जो हलन्त अघोष 'ह' की ध्वनि देता है; जैसे-पुन:, अत:, शनै:-शनै:, प्रात: कोटिश:, सामान्यत: आदि शब्द। इन्हें इसी रूप में लिखा जाना चाहिए।

   विसर्ग युक्त शब्द या उपसर्ग के कुछ उदाहरण—

संस्कृत— अंत:, अध:, बहि:, पुन:, पुर:, प्राय:, नम:, अत:, शनै:, क्रमश:, शतश:, अनेकश:, कोटिश:, वस्तुत:, अन्तत:, सामान्यत:, विशेषत:, मुख्यत:, अत:, इतस्तत:, प्रात:।

हिन्दी— छ:, छि:।

2. **हिन्दी में प्रयुक्त प्रमुख तत्सम शब्द—** हिन्दी में कुछ संस्कृत तत्सम शब्द ऐसे भी प्रयोग में आ रहे हैं, जिनका उच्चारण अगले व्यंजन की भाँति हो जाता है। उदाहरण के लिए-दु:ख (दु:ख के उच्चारण करते समय दुक्ख बोला जाता है)। यहाँ 'ख' महाप्राण है किन्तु इसके उच्चारण करने से पूर्व अल्पप्राण 'क' का उच्चारण करना आवश्यक लगता है, तभी हम उसे ठीक से बोल पाते हैं। एक अन्य शब्द है-'दु:शासन' जिसे दुश्शासन-बोला जाता है। यहाँ भी श महाप्राण ध्वनि के पहले 'श' अल्पप्राण बोलना जरूरी है। ऐसे शब्दों को अब विसर्ग हटाकर लिखना ही मान्य है।
3. विसर्ग के संधि नियमों के अनुसार भी कुछ शब्दों में विसर्ग का स्वत: लोप हो जाता है, उसे भी जानें —

विसर्ग का 'श' में परिवर्तन	**विसर्ग का 'स' में परिवर्तन**	**विसर्ग का 'ष' में परिवर्तन**
नि:+छल=निश्छल	नम:+ते=नमस्ते	नि:+पाप=निष्पाप
दु:+चरित्र=दुश्चरित्र	दु:+साहस=दुस्साहस	दु:+प्रकृति=दुष्प्रकृति

उल्लेखनीय है कि हिन्दी के शब्दकोश में अब इसी आधार पर विसर्ग युक्त हिन्दी शब्दों को देखा जाता है। हिन्दी में इन्हें 'अ' वर्ण से भी पूर्व में लिया गया है।

‖ 11 ‖

नासिक्य व्यंजन (न और ण)

एक सज्जन गीता प्रेस, गोरखपुर से 'कल्याण' मासिक पत्रिका मँगवाने हेतु पत्र लिख रह थे। पत्र में उन्होंने 'कल्याण' को 'कल्यान' लिखकर संपादक से पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाने का आग्रह किया था। मैंने उनसे कहा— ''आप 'कल्यान' शब्द अशुद्ध लिख रहे हैं, शुद्ध शब्द है 'कल्याण'।'' उन्होंने कहा— ''इस विषय में मुझे अभी तक कुछ ज्ञान नहीं है। क्या फर्क पड़ता है 'न' लिखने में? इसका कोई नियम है कि कहाँ 'न' लिखा जाना है, और कहाँ 'ण', यदि है तो मुझे बताइए।''

मैंने कहा— ''शब्द के उच्चारण पर यदि आप ध्यान देंगे तो ही शुद्ध लेखन कर सकेंगे''। फिर मैंने उनको 'न' और 'ण' के उच्चारण में क्या अंतर है, यह समझाया।

हिन्दी की व्यंजन-प्रणाली में 'न' और 'ण' दोनों ही वर्ण स्पर्श, नासिक्य सघोष व्यंजन हैं। दोनों के उच्चारण में मृदु तालु झुका रहता है और श्वास नासा-विवर से गुजरता है। इतनी समानता होते हुए भी दोनों के उच्चारण पर ध्यान देंगे तो अंतर स्पष्ट हो जाएगा; जैसे —

1. 'न' और 'ण' दोनों ही नासिक्य व्यंजन हैं अर्थात् इनके उच्चारण करते समय वायु पूरी तरह मुख से न निकलकर नाक से निकलती है किन्तु 'ण' के उच्चारण में जिह्वा का अग्रभाग मूर्धा को स्पर्श करता है और 'न' के उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग दाँतों को स्पर्श करता है। अत: स्पष्ट है कि 'न' (दाँतों के मूल से) उच्चरित होने से दंत्य वर्ण है जबकि 'ण' मूर्धन्य अर्थात् तालु के मूर्धा भाग से बोला जाता है।
2. नासिक्य व्यंजन होते हुए भी कुछ शब्दों के आदि में 'न' का प्रयोग होता है जैसे— नमक, नाम आदि, किन्तु 'ण' का प्रयोग शब्द के आदि में नहीं हो सकता जैसे-ठण्डा। यहाँ 'ण' का प्रयोग शब्द के मध्य हुआ है। आचरण-यहाँ ण का प्रयोग शब्द के अंत में हुआ है।
3. संयुक्त व्यंजनों की रचना में 'न' का प्रयोग दो रूपों में होता है -
   (न्) नासिक व्यंजन के रूप में अनुस्वार के रूप में ( )
   जैसे - कन्या, चिह्न, जन्म संसार, पंथ, संत
4. 'ण' का प्रयोग केवल संस्कृत के तत्सम शब्दों में मिलता है; जैसे-कण्व, पुण्य, नगण्य, हिरण्यकशिपु, आरण्यक, मृण्मय आदि। तद्भव देशज एवं विदेशी शब्दों में उसका प्रयोग नहीं मिलता।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए मैंने उनसे 'कल्याण' शब्द बोलने को कहा। उन्होंने

'ण' के उच्चारण पर ध्यान दिया और कहा कि सचमुच 'कल्याण' कहते समय स्वरु में जिह्वा का अग्र भाग मूर्धा को स्पर्श कर रहा है, दाँतों को नहीं। ऐसी स्थिति में मुझे कल्याण लिखने में 'न' के स्थान पर 'ण' ही लिखना होगा। उनके इस प्रकार संतुष्ट होने पर मैंने उनका ध्यान इस विषय में प्रतिपादित कुछ अन्य नियमों की ओर दिलाया, जिससे यह बात उनको और अधिक स्पष्ट हो सके।

नियम -1 यदि 'ऋ', 'र', 'ष' के बाद 'न' का उच्चारण करना है तो 'न' का 'ण' हो जाता है। उदाहरण के लिए —

अशुद्ध	**शुद्ध**
ऋन	ऋण
आचरन	आचरण (ऋ+न=ण)
शोषन	शोषण (र+न=ण)

नियम -2 'य', 'व', 'ह' आवे तो भी 'न' का 'ण' हो जाता है। उदाहरण के लिए —

वर्ग	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
य	रामायन	रामायण	कल्यान	कल्याण
व	श्रवन	श्रवण	वीना	वीणा
ह	आरोहन	आरोहण	ग्रहन	ग्रहण

अपवाद - शत्रुघ्न, निर्विघ्न, पुनर्नवा, दुर्नीति, आदि शब्दों में 'न' का 'ण' नहीं होता।

नियम-3 अनुस्वार के रूप में यह 'ट' वर्ग के साथ आता है; जैसे- ठण्डा, कण्ठ, डण्डा, घण्टा।

अन्य उदाहरण

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
उत्तरायन	उत्तरायण	रामायन	रामायण
गुन	गुण	भूषन	भूषण
चरन	चरण	उच्चारन	उच्चारण
कर्मन्य	कर्मण्य	आवरन	आवरण
अपहरन	अपहरण	तृष्ना	तृष्णा
प्रनय	प्रणय	दर्पन	दर्पण
प्रसारन	प्रसारण	स्मरन	स्मरण

अभ्यास हेतु —

निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए —

प्रनाम -------- किरन --------

नारायन -------- अजीर्न --------

घन्टा --------

चरन --------

रोचक तथ्य —

हरियाणा क्षेत्र के लोग 'न' को 'ण' बोलते हैं।

जैसे—

अशुद्ध	**शुद्ध**
खाणा	खाना
गाणा	गाना

नासिक्य व्यंजन

12

'म' के विषय में विशेष नियम

संगीत सुनते समय एक सज्जन ने मुझसे प्रश्न किया— 'संगीत' शब्द सङ्गीत बोला जाता है, जबकि मूल शब्द सम्+गीत है। यहाँ 'म्' को उसी वर्ग के पाँचवें वर्ण अथवा अनुस्वार में क्यों बदल दिया जाता है? सम्मान में सम्+मान कहते 'म्' का उच्चारण अनुस्वार (ं) के रूप में क्यों नहीं माना जाता है? दोनों उदाहरणों में पंचम वर्ण 'म' के विषय में उच्चारण तथा वर्तनी में अन्तर क्यों है? उनके प्रश्नों के समाधान के लिए मैंने इसी प्रकार के कुछ शब्दों के उदाहरण देकर इस समस्या का समाधान करने का प्रयत्न किया।

मैंने उन्हें बताया कि व्याकरण नियमों के अनुसार 'म्' के बाद 'क' से 'म' तक कोई भी व्यंजन आ जाए, तो उस 'म्' व्यंजन को पाँचवें वर्ण (ङ, ञ, ण, न्, म्) में बदल दिया जाता है और वह अनुस्वार (ं) के रूप में लिखा जाता है। ध्यान रहे, अनुस्वार का यह प्रयोग मानक वर्तनी के नियमानुसार वर्गीय व्यंजनों के साथ नासिक्य वर्ण के संयुक्त होने पर एकरूपता के कारण होता है। वैसे यहाँ दोनों ही रूप शुद्ध हैं; जैसे— सङ्गीत भी शुद्ध है; और संगीत भी।

जैसे —

1. म्–ङ् (म् + क वर्गीय वर्ण = म् + ङ्)

सम् + कल्प	=	सङ्कल्प या संकल्प
सम + गीत	=	सङ्गीत या संगीत

म्–ञ् (म् + च वर्गीय वर्ण = म् + ञ्)

सम् + चय	=	सञ्चय या संचय
सम् + चार	=	सञ्चार या संचार

म्–न् (म् + त वर्गीय वर्ण = म् – न्)

सम् + देह	=	सन्देह या संदेह
सम् + तोष	=	सन्तोष या संतोष
सम् + ध्या	=	सन्ध्या या संध्या

म्–म् (म् + प वर्गीय वर्ण = म् – म्)

सम् + पूर्ण	=	सम्पूर्ण या संपूर्ण
सम् + बन्ध	=	सम्बन्ध या संबंध
सम् + भव	=	सम्भव या संभव

2. इसी प्रकार अंतस्थ (य, र, ल, व) व्यंजनों से पहले आने वाले 'सम्' उपसर्ग आने पर भी 'म्' का सदैव अनुस्वार (-ं) के रूप में प्रयोग करते हैं; जैसे-

सम् + यम = संयम

सम् + रक्षक = संरक्षक

सम् + लाप = संलाप

सम् + वाद = संवाद

3. ऊष्म (श, ष, स, ह) व्यंजनों से पहले आने वाले 'सम्' उपसर्ग के 'म्'-का भी अनुस्वार ( ) हो जाता है; जैसे-

सम् + शय = संशय

सम् + सार = संसार

सम् + हार = संहार

4. नासिक्य व्यंजन 'म' के पूर्व सम् उपसर्ग आने पर 'म् का प्रयोग अनुस्वार के रूप में नहीं होता है; जैसे-

सम् + मति = सम्मति

सम् + मुख = सम्मुख

सम् + मोहन = सम्मोहन

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नियम-1 के अन्तर्गत संगीत एवं नियम-4 के अन्तर्गत सम्मान-शब्द को ध्यान में रखकर ही 'म' का उच्चारण एवं लेखन करना चाहिए। अभ्यासार्थ ऐसे अन्य शब्द भी छाँटें।

अन्तःस्थ वर्ण

13

'र' तेरे कितने रूप

शिक्षक पद के लिए साक्षात्कर में आए एक प्रतिभागी से मैंने-आशीर्वाद शब्द लिखने को कहा। लगभग 98 प्रतिशत प्रतिभागियों ने आर्शीवाद अथवा आशिर्वाद लिखा। यह उनका दोष नहीं। प्रायः हम भी लेखन में इस प्रकार की अशुद्धियाँ करते रहते हैं। यही अशुद्धियाँ हमारे द्वारा बच्चों तक पहुँचती रहती हैं।

आइए, इस सम्बन्ध में यह जानने का प्रयास करें कि - 'र' का प्रयोग कितने प्रकार से होता है?

इन शब्दों को ध्यान से पढ़ें— चित्र, राम, कर्म, क्रम, रुपया।

अब ध्यान से देखें कि इन सभी शब्दों में 'र' का प्रयोग अलग-अलग ढंग से हुआ है।

'र' एक महत्वपूर्ण व्यंजन है। इसकी स्थिति अन्य व्यंजनों से बहुत अलग है किन्तु अध्ययन की दृष्टि से स्थूल रूप में 'र' के दो रूप स्पष्ट दिखाई देते हैं—(1) 'र' का पूरा रूप, (2) 'र' का आधा रूप जिसे रेफ (र्) भी कहते हैं।

1. 'र' का पूरा रूप —

आधे 'त्' 'श' तथा 'स' के साथ 'र' पूरा आता है।

(क) चित्र, पत्र शब्दों पर ध्यान दें। इन शब्दों में 'त्' (स्वरहीन व्यंजन) के साथ पूरा 'र' (स्वर युक्त) आया है; जैसे—

त् + र = त्र

चि + त् + र = चित्र (यहाँ 'त्' के बाद पूरा 'र')

प + त् + र = पत्र

(ख) श्रवण, श्रेया— शब्दों पर ध्यान दें। इन शब्दों में श् (आधे) के साथ पूरा 'र' आया है और इसका रूप 'श्र' हो गया है। जैसे—

श् + र + व + ण = श्रवण

श् + र + ए + या = श्रेया

विशेष— स्वरहीन श् के साथ ऋ का प्रयोग-(शृ/शृ)

श्+ऋ+अं+गा+र = शृंगार/शृंगार

श्+ऋ+अं+ख+ला = शृंखला/शृंखला

(ग) स्रोत शब्द पर ध्यान दें। इस स् (आधे) के साथ 'र' पूरा आया है।

जैसे–

स् + र + ओ + त =　　　स्रोत

विशेष— स् + र = स्र को अज्ञान के करण कुछ लोग स्त्र लिख देते हैं। अत: स्र और स्त्र के अन्तर को जानने का प्रयत्न करें। स्रोत को स्त्रोत्र न पढ़ें न लिखें।

कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

स् + त्र = स्त्र　–　स्त्री, अस्त्र, शस्त्र आदि।

स् + र = स्र　–　स्राव, सहस्र, स्रोत आदि।

(घ) प्रथम, प्रभा शब्दों पर ध्यान दें। इन शब्दों में प् (स्वरहीन व्यंजन) के ठीक बाद पूर्ण 'र' (स्वर सहित) का प्रयोग हुआ है। अत: 'र' नीचे की ओर (्र) लगाया गया है; जैसे–

प् + र + थ + म = प्रथम

प् + र + भ + आ = प्रभा

यहाँ 'र' प के साथ ऐसा घुलमिल गया है कि उसका स्पष्ट रूप दिखाई नहीं देता। 'प्र' को देखकर पूरे 'प' तथा '्र' के रूप में 'र' का मान आधा रूप दिखाई देता है। जबकि ऐसा नहीं है। 'प' आधा है तथा 'र' पूरा है। खड़ी पाईवाले अक्षरों में 'र' का प्रयोग करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वह व्यंजन आधा हो जाता है, जहाँ 'र' पूरा आता है।

(ङ) राम-शब्द पर ध्यान दें। इसमें 'र' का पूरा रूप स्पष्ट है। इस प्रकार के अन्य शब्द— राधा, रमा, रात, रथ, रेणु आदि हैं। यहाँ 'र' **एक स्वतंत्र व्यंजन** के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

2. 'र' का आधा रूप जिसे रेफ भी कहते हैं

(क) कर्म, धर्म शब्दों पर ध्यान दें। इसमें 'र' का प्रयोग रेफ (र्) के रूप में हुआ है। जब 'र' के साथ 'अ' की ध्वनि सम्मिलित नहीं होती तो इसे रेफ कहते हैं; जैसे–

क + र् + म　=　कर्म

ध + र् + म　=　धर्म

यहाँ आप देख रहें हैं कि आधे 'र' (स्वरहीन) के बाद पूर्ण व्यंजन 'म' आया है। इसलिए 'र्' को 'म' के ऊपर रेफ के रूप में लगाया गया है। यानी यहाँ 'र' रेफ के रूप में 'म' व्यंजन के पूर्व आने से, 'प्रथम आऊँ तो सिर पर बैठूँ' के अनुसार 'म' के ऊपर लगा है।

(ख) यदि 'र' संयुक्त अक्षर के साथ आता है तो इसे अंतिम वर्ण पर लगाया जाता है; जैसे– मर्त्य, वार्षिक आदि।

'र' विषयक अन्य उदाहरण —

र् + व = र्व　–　सर्वत्र, पर्व, पर्वत आदि।

र् + द = र्द　–　दर्द, मर्द, सर्द, गर्द, आदि।

र् + ष = र्ष　–　वर्ष, संघर्ष, दुर्धर्ष, प्रकर्ष आदि।

र् + य = र्य　–　आश्चर्य, दिनचर्या, सौंदर्य आदि।

(ग) मात्रा वाले वर्णों में यह मात्रा के बाद लगाया जाता है; जैसे–कुर्सी, महर्षि आदि।

(घ) राष्ट्र, ड्रम शब्दों पर ध्यान दें। यहाँ 'ट' वर्ग के शब्दों के साथ 'र्' का प्रयोग हुआ है। हलन्त (्) और 'र' (ˏ) चिह्न मिलकर अंग्रेजी (ᵥ) का उल्टा (∧) का रूप बनेगा। संस्कृत के राष्ट्र और उष्ट्र इन दो रूपों के अलावा इस प्रकार बनने वाले शब्द अंग्रेजी के सर्वाधिक हैं; जैसे–ट्रक, ट्रेन, ड्रम, ड्रामा आदि।

विशेष

1. 'र' के साथ उ/ऊ की भाषा को लेकर भी प्राय: भ्रम बना हुआ है। इसके निराकरण के लिए निम्न उदाहरणों पर ध्यान दें —

   र् + उ = रु – रुचि, रुकावट, रुझान, रुद्र, रुधि आदि।

   र् + ऊ = रू – रूप, रूखा, रूढ़, रूपक, रूपा, रूप आदि।

2. **'गुरु'** शब्द का अर्थ है–आचार्य, शिक्षक या धार्मिक आचार्य।

   'गुरू' शब्द का एक और अर्थ है–धूर्त, चालाक, काइयाँ आदि। दोनों शब्द ठीक हैं किन्तु अर्थ में भिन्नता है।

   अत: 'र' के साथ उ/ऊ की मात्रा का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए।

अन्य उदाहरण भी देखिए

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**
रूचि	रुचि
रूकावट	रुकावट
रुप	रूप
रुढ	रूढ
रूद्र	रुद्र

1. शुद्ध करिए–आर्शीवाद, महेन्द्र, धरम, श्रृंखला, क्रमा, भरम।
2. अपने पाठ्यपुस्तक के पठित अंश में से 'र' एवं रेफ के शब्दों को छाँटकर वर्ण विच्छेद कर के लिखिए।

रोचक तथ्य

'अंतर' और 'अंतर्' दोनों का उच्चारण समान है, किन्तु इनमें पहला शब्द है और दूसरा उपसर्ग। पहले का अर्थ है दूरी, दूसरे का अर्थ है : भीतर। इस दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय और अन्तर राष्ट्रीय–दोनों शब्द शुद्ध हैं, किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय का अर्थ है–राष्ट्र के भीतर। अन्तर राष्ट्रीय का अर्थ है–राष्ट्र से बाहर।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों का अर्थ है, राष्ट्र के भीतर सम्पन्न होने वाले विभिन्न प्रांतों के कार्यक्रम। अन्तर राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों का अर्थ है–सम्पूर्ण विश्व के राष्ट्रों के लिए आयोजित कार्यक्रम।

अंत:स्थ ध्वनियाँ 14

श्रुतिमूलक ध्वनि (य, व)

सामने कौआ को देखकर एक सज्जन पूछ बैठे, ''महोदय, इस पक्षी को कौआ कहा जाए या कौवा।'' प्रश्न का उत्तर देना सहज है– 'दोनों ही सही हैं' किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। कौवा नहीं, कौआ सही है। यदि मैं ऐसा कहूँ तो कुछ सैद्धान्तिक बात किए बिना उनका भ्रम कैसे दूर हो सकता है। इसलिए मैंने उनके सम्मुख दो वाक्य लिखकर उनसे ही पूछा —

बताइए – कौआ/कौवा उड़ गया।

कोयल उड़ गई/गयी।

इन दोनों वाक्यों में क्या अन्तर है? वे इसका उत्तर नहीं दे पाए– हाँ, उन्होंने इतना, अवश्य बताया कि संज्ञा रूप में कौआ भी सही, और कौवा भी सही है। इसी प्रकार क्रिया के रूप में प्रयुक्त <u>गई</u> भी सही है, और <u>गयी</u> भी। क्या फर्क पड़ता है यदि दोनों ही विकल्प खुले रखे जाएँ।

शुद्ध-वर्तनी की दृष्टि से मैं उनसे सहमत नहीं था। इसलिए मैंने बताया–''सुनने में 'ई' तथा 'यी' दोनों ही समान ध्वनि के हैं। इसमें उच्चारण सम्बन्धी कोई कठिनाई नहीं है किन्तु व्याकरण का सिद्धान्त है कि जहाँ श्रुतिमूलक अर्थात् सुनने में 'य' अथवा 'व' का प्रयोग शब्दों में विकल्प के रूप में होता है, वहाँ केवल स्वर रूपों का ही प्रयोग होना चाहिए।

	अमानक प्रयोग		**मानक प्रयोग**
जैसे –	कि<u>ये</u>	–	किए
	न<u>यी</u>	–	नई
	हु<u>वा</u>	–	हुआ

यहाँ किये में य तथा हुवा में 'वा' सुनने में आ रहा है, अत: विकल्प रूप में 'ये' के स्थान पर 'ए' तथा 'वा' के स्थान पर 'आ' का प्रयोग ही मानक प्रयोग होगा।

अत: कौवा नहीं, कौआ ही शुद्ध है। गयी नहीं, गई ही शुद्ध है।

यह नियम क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि रूपों के प्रयोग में सभी जगह लागू होता है; जैसे –

संज्ञा	**विशेषण**	**अव्यय**	**क्रिया**
मातायें-माताएँ	नयी-नई	लिये-लिए	जाये/जाए
लतायें-लताएँ	नये-नए		आयेगा/आएगा
कौवा-कौआ			करायेगा/कराएगा
कुँवर-कुँअर			

निष्कर्ष यह कि 'य' 'व' दोनों अन्त:स्थ व्यंजनों का प्रयोग जहाँ भी सुनने में विकल्प के रूप में आए वहाँ 'य' अथवा 'व' लिखने के स्थान पर केवल स्वर का प्रयोग ही करना चाहिए।

इसके विपरीत जहाँ श्रुतिमूलक व्याकरणिक परिवर्तन न होकर शब्द ही संस्कृत के तत्सम रूप में हो तो वहाँ ऐसे परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है; जैसे—स्थायी, अव्ययी भाव, दायित्व, न्यायी, आततायी, अनुयायी, उत्तरदायी, फलदायी, वरदायी, विषपायी, विषयी जैसे शब्दों में 'यी' ही रहेगा। क्योंकि ये संस्कृत के मूल शब्द हैं अत: यहाँ 'य' के स्थान पर 'ई' का प्रयोग विकल्प रूप से करना अशुद्ध है।

लेकिन ध्यान रहे, सही रूप में वर्तनी की शुद्धता तब आएगी जब आप इसका अभ्यास जितनी बार कर सकें, अवश्य करेंगे। यहाँ कुछ शब्दों की जानकारी दी जा रही है —

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
लिखाई	लिखायी	देखिए	देखिये
विजयी	विजई	बनाइए	बनाइये
मिठाई	मिठायी	जाइए	जाइये
स्थायी	स्थाई	आई	आयी
हलवाई	हलवायी	कुँअर	कुँवर
हुई	हुयी	कुँआ	कुँवा
जाएँ	जायें	कमाई	कमायी
चाहिए	चाहिये	गेरुआ	गेरुवा

15

'ब' और 'व' सम्बन्धी अशुद्धियाँ

बसन्त पंचमी का दिन था। एक विद्यालय में कार्यक्रम देखते समय यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि वसन्त शब्द सही अथवा बसन्त। बहुत से व्यक्ति 'ब' तथा 'व' से बने इस प्रकार के शब्दों में भ्रमित रहते हैं। जहाँ ब तथा व का प्रयोग एक साथ किया जाता है, वहाँ यह त्रुटि अक्सर होती है; जैसे— दबाव शुद्ध है या दवाब। बीवी अथवा बीबी।

निष्कर्ष यह कि प्राचीन काल से ही यह विवाद चला आ रहा है।

लेखन करते समय भी इस प्रकार की त्रुटियों का सामना करना पड़ता है; जैसे—

शुद्ध है	**अशुद्ध लिखते हैं**
व्रत	ब्रत
विवाह	बिवाह
वैभव	बैभव

अत: दोनों वर्णों के उच्चारण में स्थूल अंतर क्या है? इस पर ध्यान दिया जाना उचित होगा —

'ब' तथा 'व' का उच्चारण-अवयव

'ब' स्पर्श ओष्ठ्य व्यंजन है। इसके उच्चारण करते समय दोनों ओठ प्राणवायु का मार्ग अवरुद्ध करते हैं। प्राणवायु एक तीव्र धक्के के साथ अवरोध को तोड़ती है तभी 'ब' वर्ण का उच्चारण हो पाता है।

'व' अन्त:स्थ व्यंजन है। इसे दन्त्योष्ठ सघोष संघर्षी ध्वनि कहा गया है अर्थात् इसके उच्चारण करते समय ऊपर के दाँत नीचे के ओठों के बिल्कुल ऊपर आ जाते हैं। दाँत और ओंठ के मध्य हल्की सी दरार रहती है, जिससे होकर प्राणवायु बड़ी शिथिलता के साथ बाहर निकलती है। अत: आवश्यकता इस बात की है कि 'व' बोलते समय ओठ को दाँतों से पूरा चिपकाया न जाए बल्कि हल्के ढंग से लगभग सटा दिया जाए।

लेकिन सही मानों में यह ध्वनि पक्की तभी होगी जब आप पूरे 'ब' और 'व' का अभ्यास बोलकर भी करें तथा अन्य ध्वनियों के साथ भी करें।

यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक होगा कि 'व' ध्वनि मूलत: तत्सम ध्वनि है अर्थात् तत्सम शब्दों के साथ 'व' आता है जबकि हिन्दी के व्यावहारिक शब्दों में 'ब' का प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ— 'वन' और 'बन' शब्दों में 'वन' शब्द शुद्ध है क्योंकि यह तत्सम शब्द है किन्तु व्यवहार में बन शब्द ही बोला जाता है।

हिन्दी में प्रचलित निम्नांकित शब्द संस्कृत तत्सम ही हैं; जैसे बहिष्कार, बन्धु, बान्धव, बाधक, बाध्य, बणिक, बड़वानल, बड़वाग्नि आदि।

'व' - 'ब' सम्बन्धी अशुद्धियाँ —

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
नबाब	नवाब	ब्रत	व्रत
बन (जंगल)	वन	बृक्ष	वृक्ष
बाणी	वाणी	बिष	विष
बैदेही	वैदेही	बर्षा	वर्षा
बस्तु	वस्तु	वाण	बाण
ब्यापार	व्यापार	बनस्पति	वनस्पति
अजनवी	अजनबी	अनवन	अनबन

विशेष

कुछ संस्कृत भाषा के शब्दों का आरंभ 'ब' से भी होता है और 'व' से भी। किन्तु हिन्दी शब्दों में इनका आरंभ 'ब' से ही देखने को मिलता है; जैसे— बटुक-वटुक ऐसे अन्य शब्द शब्दकोश से ढूँढ़कर देखें।

ऊष्म व्यंजन

16

'श-ष-स'

रेलवे-स्टेशन पर मेरे एक मित्र सहसा एक दिन मिले। पूछने पर उन्होंने बताया कि 'सनिवार को मेरे ससुर सिरी ससि भूषण जी ने फोन पर मुझे बताया कि वे कस्मीर मेल से आनेवाले हैं। मैं उन्हें लेने आया हूँ। मेरे साथ मेरे दोनों बच्चे राकेस, आसा भी हैं।'

मुझे आशा है ('आसा' नहीं) कि अब तक आप उनके द्वारा प्रयुक्त 'श' के स्थान पर 'स' ध्वनि के उच्चारण के विषय में ही सोच रहे होंगे। हाँ, आप बिल्कुल ठीक समझे। 'श' के स्थान पर 'स' का प्रयोग करना केवल उनकी ही आदत नहीं, कई शिक्षित लोग भी दोनों में अन्तर नहीं कर पाते हैं। कुछ लोग संभव है ग्रामत्व के प्रभाव से भी ऐसा करते हों। कारण कुछ भी हो किन्तु यह बात उचित नहीं है। ऐसे तो फिर हम शाम को साम, शक को सक, शत को सत, बोलकर भी दोनों 'श'-'स' के अन्तर को नहीं समझ पाएँगे और भविष्य में दोनों ध्वनियों के उच्चारण में अन्तर करना कठिन हो जाएगा।

हिन्दी वर्णमाला में 'श, ष, स' इन तीनों ध्वनियों को ऊष्म एवं संघर्षी व्यंजन कहा गया है। इन व्यंजनों में उच्चारण के समय प्राण-वायु मुख-अवयवों से रगड़ खाकर (घर्षित होकर) गर्म हो उठती है और बाहर निकलती है। अत: इन्हें संघर्षी अथवा ऊष्म व्यंजन कहा जाता है। किन्तु उच्चारण की दृष्टि से तीनों में अन्तर है। आइए, उसे जानने का प्रयत्न करें।

उच्चारण की दृष्टि से 'श' 'स' और 'ष' में अन्तर

1. 'श' की ध्वनि के निस्सरण के समय जिह्वा के अग्र भाग का ऊपरी भाग उठकर ऊपर के दाँतों के मूल में स्थिति मसूड़ों से थोड़ा ऊपर तालु पर जा पहुँचता है किन्तु दोनों (जिह्वा तथा दाँतों) के मध्य स्पर्श नहीं होता। एक पतली सी दरार बनी रहती है। 'श' की ध्वनि उत्पन्न करनेवाली वायु इस दरार से होकर गुजरती है, तब 'श' ध्वनि का उच्चारण सीटी की ध्वनि के समान सुनाई देता है। उच्चारण स्थान की दृष्टि से इसे तालव्य व्यंजन कहा जाता है।
2. 'स' के उच्चारण में जिह्वा सामान्य स्थिति में ही अपने अग्र भाग की नोक दाँतों के समीप ले आती है और ऊपर के दाँतों के भीतरी भाग तथा जिह्वा के अग्र भाग के ऊपरी भाग के मध्य बनी उठी दरार में घर्षण करते समय प्राण-वायु बाहर निकलती है। उच्चारण स्थान की दृष्टि से 'स' दन्त्य वर्ण है। अत: जिह्वा के उच्चारण प्रयत्न में तनिक भी त्रुटि होने के कारण 'स' के स्थान पर 'श' तथा 'श' के स्थान पर 'स' के उच्चारण की स्थिति पैदा होती है। आप 'श' और 'स' को कई बार स्वयं बोलकर जीभ की स्थिति

को अच्छी तरह महसूस कीजिए। आप स्वयं देखेंगे कि जिह्वा की नोक लगभग एक इंच पीछे लाकर 'स' बोला जाए तभी 'श' ध्वनि निकलेगी।

3. 'ष' के उच्चारण में जिह्वा के अग्र भाग का निचला हिस्सा जिह्वा के मुड़े होने के कारण गाल के ऊपरी भाग मूर्धा (वर्त्स) के पास आता है, तब साँस छोड़ने पर 'ष' का उच्चारण होता है। 'ष' का उच्चारण करते समय मुख-सुख नहीं होता। इस कारण हिन्दी में तो 'ष' ध्वनि का प्रयोग लुप्त-सा होता जा रहा है। मात्र संस्कृत के तत्सम शब्दों में ही इसका प्रयोग होता है।

'ष' युक्त शब्दों की सूची यहाँ सुविधा के लिए दी जा रही है।

'ष' केवल संस्कृत शब्दों में आता है। भीष्म, युधिष्ठिर, धृतराष्ट्र, मंजूषा, दोष, वृषभ, आषाढ़, राष्ट्र, षष्ठ, ज्येष्ठ, उष्ट्र, ग्रीष्म, उष्ण, ऊष्मा, श्लेष्मा, कल्मष, मेष, श्रेष्ठ, झष, ऋषि, विषय, पाषाण, अनुष्ठान, शीर्ष, पीयूष, प्रतिष्ठान, कलुष, परुष, वरिष्ठ, भिषक्, उषा, पुष्प, औषधि, पुरुष, पौरुष, गरिष्ठ, मनुष्य, इष्ट, विषम, सुश्रूषा, काष्ठ, भाषा, अंगुष्ठ, गोष्ठी, पौष, कषाय, षोडश, निषेध, अभिषेक, निषाद आदि।

इस प्रकार उच्चारण भेद को ध्यान में रखते हुए तीनों-श, ष, स वर्णों का प्रयोग करना चाहिए।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि हिन्दी में अब 'ष' का उच्चारण 'श' के समान होने लगा है। पूर्व में लेखन में भी 'ष' का प्रयोग 'ख' के स्थान पर देखने को मिलता है। विशेष रूप से गोस्वामी तुलसीदास जी ने लखन शब्द का प्रयोग लषन शब्द लिखकर किया है। इसका मुख्य आधार यह था कि 'ख' शब्द लिखने में र एवम् व का भ्रम होने लगा था। इस भ्रम के निवारणार्थ ही 'ख' के स्थान पर 'ष' का प्रयोग होने लगा था अत: रामचरित मानस के प्रकाशकों से हमारा विनम्र अनुरोध है कि रामचरित मानस में यह प्रयोग सर्वथा बन्द कर दें तथा लषन के स्थान पर लखन ही मुद्रित करें। अब 'ख' का मानस लेखन 'ख' के रूप में किया जाने लगा है।

हिन्दी भाषा के अध्यापन करते समय यदि हम प्राथमिक स्तर पर ही श, ष और स के उच्चारण एवं प्रयोग पर विशेष ध्यान देंगे तो अधिक उपयोगी होगा। यहाँ हम कुछ नियम दे रहे हैं जिन्हें ध्यान में रखकर इनके प्रयोगों में क्या-क्या सावधानी बरती जाए इसका ज्ञान हो जाएगा—

1. जहाँ श और ष एक साथ आते हैं, वहाँ श पहले आता है और ष बाद में।
   जैसे-शोषण, शीर्षक, विशेषण, आशीष, शुष्क आदि।
2. जहाँ श और स एक साथ आते हैं, वहाँ श ही पहले आता है और स बाद में।
   जैसे-शासन, अनुशासन, शासक, नृशंस आदि।
   (उपसर्ग का सु या सम, श के पूर्व भी आ सकता है यथा-संशोधन, सुशील, सशक्त आदि)।
3. उपसर्ग के रूप में नि:, निर् या वि आने पर मूल शब्द का स बना रहता है,
   जैसे-निस्संदेह, विस्तार आदि।
4. यदि स के पूर्व अ, आ के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर हो, क वर्ग का कोई अक्षर हो

अथवा य, र, ल, व और ह में से कोई अक्षर हो तो **स** का **ष** हो जाता है; जैसे- (अभि+सेक) अभिषेक, (वि+स+म) विषम।

5. ऋ (ृ)और (र्) रेफ के पश्चात् प्राय: ष हो जाता है; जैसे-ऋषि, तृष्णा। इस नियम के कुछ अपवाद भी हैं; जैसे-नृशंस, नृसिंह आदि।
6. (र्) रेफ के पश्चात् श या ष आता है, स कदापि नहीं जैसे-हर्ष, दर्शन, स्पर्श, आकर्षण आदि।
7. यदि क, ख, ट, ठ, य, फ अक्षर पीछे आएँ तो इनका मेल ष से होता है। श या स से नहीं जैसे-निष्काम, निष्फल आदि।
8. कुछ शब्दों में दो श एक साथ आते हैं जैसे-शशांक, शिशु आदि।
9. 'क' के पूर्व 'श' नहीं आता या तो ष आता है या स; जैसे-नमस्कार, निष्काम, निष्कर्ष आदि, किन्तु कब 'ष' का प्रयोग होगा और कब स का इसके लिए नियम है-

    (क) 'क' के पूर्व यदि अ या आ अथवा कोई स्वर न हो या सम उपसर्ग हो तो 'स' आएगा; जैसे-पुरस्कार, भास्कर आदि।

    (ख) 'क' के पूर्व यदि इ, ई, उ, उ, ऊ हो तो ष आएगा; जैसे-परिष्कार, निष्क्रमण, बहिष्कार, शुष्क, निष्कपट आदि।
10. 'च' वर्ग के पूर्व केवल श आता है; जैसे-शौच, निश्चय, निश्छल, निशिचर आदि किन्तु उपसर्ग के रूप में 'स' भी आ सकता है; जैसे-सुचित, सचल, संचार, सुजाता आदि।
11. 'ट' वर्ग के पूर्व केवल 'ष' आता है। 'श' नहीं; जैसे-षष्ठ, षोडश, षडानन, कष्ट, दृष्टि, विष्णु, उष्ण आदि।
12. यदि 'त' अथवा 'थ' बाद में आए तो इनका मेल 'स' से होता है, 'श', 'ष' से कदापि नहीं; जैसे-निस्तार, अन्तस्थल।
13. कुछ शब्दों के वैकल्पिक रूप होते हैं; जैसे-वेश या वेष, कोष या कोश, कैलाश-कैलास, केसर-केशर, कौशल्या-कौसल्या आदि।
14. 'श' वर्ण का सामान्यत: प्रयोग संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी शब्दों में समान रूप से पाया जाता है; जैसे-अंश, पशु (संस्कृत) शराब, लाश (अरबी, फारसी) स्टेशन, कमीशन (अंग्रेजी)।
15. 'श' और 'स' के गलत उच्चारण करने से शब्दों का अर्थ ही बदल जाता है; जैसे-

अंश (भाग)	अंस (कन्धा)
श्व (कुत्ता)	स्व (अपना)
शकल (खण्ड)	सकल (सारा)
शर (बाण)	सर (तालाब)
शंकर (महादेव)	संकर (मिश्रित)

16. यदि तत्सम शब्दों में 'श' हो तो उसके तद्भव शब्दों में 'स' होता है; जैसे—

तत्सम **तद्भव**

शूली	सूली
श्वसुर	ससुर
शाक	साग

'श', 'ष', 'स' की अशुद्धियाँ

'श', 'ष' और 'स' की ध्वनियों में छात्र गलती करते हैं। 'श' और 'ष' का उच्चारण लगभग एक जैसा है। दोनों ही संघर्षी ध्वनियाँ हैं। यह लिखना कठिन है कि कहाँ 'श' आना चाहिए और कहाँ 'ष'। शब्दों के आधार पर ही यह वर्गीकरण किया जा सकता है; जैसे–'ट' से पहले जब 'श' ध्वनि आती है तो वह अद्‌र्ध 'ष' का रूप धारण कर लेती है; जैसे–दुष्ट, शिष्ट आदि। इसी प्रकार निष् और दुष् उपसर्ग के साथ भी अद्‌र्ध 'ष' आता है; जैसे–निष्पाद, दुष्कर्म आदि।

अन्य उदाहरण के आधार पर भी अपनी धारणा स्पष्ट करें।

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
अमावस्या	अमावश्या	आदर्श	आर्दष
दुष्कर	दुस्कर	अवकाश	अवकास
कलश	कलस	दृष्य	दृस्य
अशोक	असोक	कष्ट	कस्ट
नाश	नास	आत्मसात्	आत्मशात
तपस्या	तपश्या	निष्काम	निश्काम
विश्वास	विस्वास	स्रोत	श्रोत
निष्फल	निश्फल	संकट	शंकट
संतोष	संतोश	प्रशंसा	प्रसंशा
सारांश	शारांश	प्रसाद	प्रशाद
शासन	शाशन	भाषा	भाशा
शीर्षक	शीर्शक	संशोधन	संसोधन
मनुष्य	मनुश्य	सुशोभित	सुसोभित
शाखा	साखा	राष्ट्र	राश्ट्र
शूर्पणखा	सूर्पनखा	विकास	विकाश
शोषक	शोशक	शोचनीय	सोचनीय

रोचक तथ्य

बंगाल तथा पहाड़ी क्षेत्रों में लोग 'स' का उच्चारण 'श' की भाँति करते हैं; जैसे —

अशुद्ध	**शुद्ध**
शाहब	साहब
शामान	सामान

17

स्टेशन में 'इ' ध्वनि तो स्वच्छता में 'इ' की ध्वनि क्यों नहीं?

कभी किसी देहाती ने आपसे टेसन का रास्ता पूछा होगा या किसी सरदारजी के मुँह से आपने सटेशन शब्द सुना होगा, तो कभी सोचा कि स्टेशन का वे सही उच्चारण क्यों नहीं कर पाते हैं? कठिनाई यह है कि 'स्नान' को अस्नान, 'स्पष्ट' को 'अस्पष्ट' सुनकर छात्र उच्चारण और वर्तनी में भेद नहीं कर पाते। बोलने के अनुसार वर्तनी लिखने की झोंक में यदि वे अशुद्ध लिखते हैं तो इसमें उनका क्या दोष। अत: इस विषय पर विचार करना आवश्यक है।

उच्चारण की सुविधा के लिए यदि हम संयुक्त व्यंजन में स्वर का समावेश स्वेच्छापूर्वक करने लगेंगे तो हम यह स्पष्ट धारणा नहीं बना पाएँगे कि आधे अक्षर स (स्) से प्रारम्भ होनेवाले शब्द के प्रारम्भ में 'इ' अथवा 'अ' का स्वरागम क्यों और कहाँ होता है?

हिन्दी के प्रारम्भिक अध्ययन में ही यह अवधारणा शिक्षकों को छात्रों के समक्ष स्पष्ट करना होगा। यदि ऐसा नहीं किया गया तो हिन्दी वर्तनी में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो जाएँगी। छात्रों को यह स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए कि 'स्टेशन' में 'इ' की ध्वनि का प्रयोग क्यों होता है तथा 'स्लेट' बोलते समय 'इ' का उच्चारण क्यों नहीं होता है।

इस दृष्टि से सर्वप्रथम प्रत्येक शिक्षक को '**व्यंजन-गुच्छ**' की धारणा स्पष्ट समझना होगी कि जब दो या दो से अधिक व्यंजन एक साथ एक श्वास में झटके में बोले जाते हैं तो उन्हें '**व्यंजन-गुच्छ**' कहते हैं। अत: ऐसे शब्दों के उच्चारण प्रारम्भ करते समय ही प्रथम अक्षर की ध्वनि के बाद ही दूसरे अक्षर की ध्वनि के लिए तत्सम्बन्धी उच्चारण अवयव तैयार रखें, ताकि दोनों का विस्फोट या उच्चारण एक साथ हो सके। यहाँ स्टेशन शब्द में स्टे शब्द को एक साथ एक श्वास में बोला जाना है तभी हम स्टेशन का शुद्ध उच्चारण कर पाएँगे। एक उदाहरण से यह बात हम स्पष्ट करते हैं।

'इ' की ध्वनि क्यों?

स्टेशन में 'स' (आधे स्) में 'इ' की ध्वनि क्यों आवश्यक है। इस दृष्टि से शिक्षक यह स्पष्ट करे कि व्यंजनों का उच्चारण बिना स्वर की सहायता के नहीं होता है। उदाहरणस्वरूप छात्रों से 'स' बोलने को कहें। 'स' बोलते समय शिक्षक उन्हें ध्यान दिलाए कि 'स' बोलने पर 'स' की ध्वनि का तत्काल लोप होकर 'अ' की ध्वनि क्यों सुनाई दे रही है। इसका कारण है— व्यंजन बिना 'अ' के उच्चारण के बोला ही नहीं जा सकता। यही कारण है कि आधा 'स' (स्) को बोलने का हम कितना ही प्रयत्न करें। उसका उच्चारण बिना 'अ' की बैसाखी लगाए नहीं कर सकते। 'अ' की बैसाखी के सहारे ही हम 'स्' व्यंजन का उच्चारण कर सकते हैं। सभी व्यंजन इस प्रकार 'अ' की ध्वनि की बैसाखी (स्वरागम) के सहारे ही बोलने में आते हैं, किन्तु लिखते समय हम किसी भी व्यंजन के

साथ 'अ' नहीं लिखते केवल उच्चारण करने में ही उसकी सहायता ली जाती है।

यही बात आधे 'स' (स्) से प्रारंभ होनेवाले शब्दों के बारे में है। यहाँ आधे 'स' (स्) से शुरू होनेवाले शब्दों में पहले 'इ' स्वर की ध्वनि सुनाई देती है किन्तु उसका लिखने में उपयोग नहीं होता है; जैसे–स्टेशन, स्त्री, स्कूल, स्मारक, स्मृति आदि। अभ्यास करके आप स्वयं देखें कि इन शब्दों के उच्चारण करते समय हमें 'इ' की ध्वनि सुनाई अवश्य देती है। किन्तु लिखने में उसका उपयोग नहीं होता है। छात्रों को उच्चारण तथा वर्तनी के इस अन्तर को स्पष्ट किया जाए।

'इ' की ध्वनि क्यों नहीं?

यह प्रश्न उन शब्दों के संबंध में है जो आधे 'स' (स्) से प्रारम्भ तो होते हैं, जैसे–स्वच्छ आदि किन्तु उनमें 'इ' की ध्वनि नहीं आती। यहाँ अन्य सूत्र पर ध्यान देना होगा कि य, र, ल, व जो कि अन्तस्थ व्यंजन है उन्हें आधे स्वरवाले व्यंजन माना गया है। अत: जहाँ य, र, ल, व का आधे 'स' (स्) के साथ प्रयोग होता है वहाँ 'इ' की बैशाखी की आवश्यकता नहीं रहती है। उदाहरण के लिए —

य	–	श्याम
र	–	स्रोत
ल	–	स्लेट
ल	–	स्वच्छ

इन शब्दों का उच्चारण करने में 'इ' की आवश्यकता नहीं है। अब आप समझ गए होंगे कि स्टेशन में 'इ' स्वर का उच्चारण (स्वरागम) क्यों होता है और स्वच्छता में स्वरागम क्यों नहीं होता। देहाती अपने उच्चारण में स्वरागम का प्रयोग नहीं करता है। अत: वह स्टेशन को टेसन कह देता है तथा सरदार के उच्चारण में आधा 'स' (स्) पूरा 'स' के रूप में प्रयुक्त होता है। इसलिए वह स्टेशन को सटेशन कहता है।

अच्छा हो, शिक्षक छात्रों को प्रेरित करें कि वे स्वयं इस प्रकार के शब्दों को छाँटें और बोलने का अभ्यास करें। कक्षास्तर के अनुसार शब्दकोष का उपयोग भी आवश्यकता के अनुरूप किया जा सकता है। उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि हिन्दी में दो प्रकार के व्यंजन–गुच्छ प्रचलित हैं—

1. स् + य र ल व से भिन्न व्यंजन जिनमें 'इ' की ध्वनि आवश्यक है।
2. स् + य, र, ल व व्यंजन जिनमें 'इ' की ध्वनि आवश्यक नहीं है।

प्रथम प्रकार के व्यंजन–गुच्छ के कुछ उदाहरण —

स् + क = स्कंध

स् + त = स्तंभ

स् + फ = स्फूर्ति

स् + थ = स्थान

स् + प = स्पष्ट

स् + म = स्मारक

शेष द्वितीय प्रकार के व्यंजन–गुच्छ के उदाहरण स्वयं छाँटें।

18

महाप्राण 'ह'

मैं जब मंदसौर जिले में शासकीय सेवा में पदस्थ था तो यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि वहाँ के निवासी 'पत्थर' को 'फत्तर', 'पढ़ने' को 'फड़ने' और 'बहुत' का 'भौत'-ऐसे कुछ शब्दों का विशेष प्रयोग करते हैं। पूछने पर ज्ञात हुआ कि घुमन्तू जातियों के समान 'ह' वर्ण भी भ्रमणशील है। वह भी अपना सुनिश्चित स्थान छोड़कर अन्य स्थान पर निकल जाता है। उदाहरण के लिए ध्यान दीजिए- पत्थर में 'प' का स्थान 'फ' ने ले लिया और फत्तर बोला जाने लगा। यही स्थिति पढ़ने में प की हुई और बहुत में भ की हुई।

ऐसा क्यों होता है, आइए इस बात को हम कुछ उदाहरणों से समझने का प्रयास करें। श्वास-वायु की मात्रा के आधार पर व्यंजनों के **अल्पप्राण** और **महाप्राण**-दो भेद किए गए हैं। जिन व्यंजनों के उच्चारण में कम वायु तथा शक्ति का प्रयोग होता है उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं तथा जिनके उच्चारण में अधिक प्राण-वायु या शक्ति का व्यय होता है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं। वर्णों के प्रथम, तृतीय तथा पंचम वर्ण अल्पप्राण व्यंजन हैं। क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म तथा य, र, ल, व = 19 तथा समस्त स्वर में भी अल्पप्राण ध्वनियाँ हैं।

शेष सभी 18 व्यंजन महाप्राण ध्वनियाँ हैं।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इन 18 महाप्राण ध्वनियों में 'ह' ही एक ऐसी महाप्राण ध्वनि है, जो स्वयं तो महाप्राण ध्वनि है ही किन्तु वह अन्य अल्पप्राण ध्वनियों को भी महाप्राण बना देती है। इसलिए इसे महाप्राण ध्वनियों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है; जैसे 'क' (अल्पप्राण) में 'ह' जुड़ने पर ख महाप्राण बना। 'ग' (अल्पप्राण) है उसमें 'ह' जुड़ने पर 'घ' महाप्राण बना, इसी प्रकार छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ की स्थिति है। यदि मुँह के सामने किसी कागज का टुकड़ा रखकर महाप्राण ध्वनियों का उच्चारण करेंगे तो आप स्वयं अनुभव करेंगे कि अल्पप्राण व्यंजन की अपेक्षा महाप्राण व्यंजनों के उच्चारण में कागज अधिक कम्पित होगा।

अब पत्थर शब्द पर ध्यान दीजिए। पत्थर शब्द पथ्थर से बना है। यहाँ 'थ्थ' दो महाप्राण एक साथ नहीं बोले जा सकते इसलिए पहला अक्षर थ् (महाप्राण) त् (अल्पप्राण) के रूप में बदल गया। फत्तर शब्द में भी यही बात समझ में आती है। 'प' अल्पप्राण के स्थान पर 'फ' महाप्राण आने से आगे के त् तथा त अल्पप्राण बन गए। अत: यह ध्यान रखें कि दो महाप्राण एक साथ प्रयोग में नहीं आते। कुछ शब्द ऐसे अवश्य हैं, जिनमें दो महाप्राण साथ-साथ आते हैं; जैसे-भूख, छाछ, भाभी, फूफा, हाथ, हाथी, घाघ, घाघरा, ठेठ, ठाठ आदि। पर इन शब्दों के उच्चारण को ध्यान से सुनने से ज्ञात होता है कि प्राय: लोग इन्हें भूक, छाच, भाबी, फूपा, हात्, हाती, घाग, घागरा, ठेट, ठाट बोलते हैं। अत: इस प्रकार के शब्दों को जब लिखना हो तो सतर्कता के साथ ही लेखन करना होगा।

एक और स्थिति है जिसमें 'ह' महाप्राण ध्वनि के उच्चारण करने पर जिह्वा एक ही स्थान पर टिकी रहती है किन्तु जब बोलने में नासिक्य व्यंजन न् एवं म् का अन्तःस्थ व्यंजन ल् एवं ह् से संयोग होता है, तो न्ह, म्ह, ल्ह ध्वनि एक स्थान पर नहीं रह पाती। जैसे–हम कुल्हड़ बोलते हैं तो कु (ल्/ल्हड़) में व्यंजन ल् संयोग द्वित्व में है जो उच्चारण से स्पष्ट हो जाता है। अर्थात् कुल्हड़ बोलते समय ल् को दुहराना पड़ता है। जब आप कन्हैया शब्द बोलते हैं तो न्+ह मिलने से 'न्ह' की ध्वनि एक साथ नहीं आती बल्कि न् को उसे दुहराना पड़ता है, तभी उसे बोल पाते हैं। इस प्रकार के अन्य उदाहरण भी देखिए और बोलने का प्रयत्न कीजिए। उदाहरणस्वरूप कुछ शब्द यहाँ दिए जा रहे हैं – कान्हा, उन्हें, तुम्हें, कुम्हार, सम्हलना, कुल्हाड़ी, चूल्हा आदि।

'ह' की एक और इसी प्रकार की विशेषता पर ध्यान दिलाना आवश्यक समझते हैं; जैसे–हम चिह्न लिखें या चिन्ह। बहुधा लिखने में यह भ्रम बना रहता है। यह स्पष्ट नहीं समझ पाते हैं कि कौन–सा शब्द सही है। इस सम्बन्ध में निम्न सूत्र को ध्यान में रखकर ही यदि लिखने का अभ्यास करेंगे तो सुविधाजनक होगा। ह + न/म/ल/व का योग जिन शब्दों के मध्य/अन्त में होता है, उनमें ह के बाद आने वाला न/म/ल/व ये चार व्यंजन एक बार स्वररहित तथा दूसरी बार स्वरयुक्त रूप में दुहराए जाते हैं; जैसे–चिह्न (चिह्न्/न), ब्रह्मा (ब्रह्म्/मा), प्रह्लाद (प्रह्ल्+लाद) आह्वान (आह्व्+वान)। इन शब्दों में आप देखेंगे कि चिह्न्/न में न् व्यंजन दो बार आया है। शेष शब्दों का उच्चारण स्वयं करके देखें।

अन्य स्मरणीय तथ्य

1. शब्द के मध्य/अन्त में ह्+य की स्थिति हो तो ह् के साथ इ का आगम हो जाता है, जैसे – सह्याद्रि = सहि/याद्/द्रि
   बाह्य = बाहि/य्
2. यदि किसी दीर्घ स्वर के बाद आनेवाले शब्दों में 'ह' आता है, जैसे–ओह, देह, समूह आदि। यहाँ देह शब्द बोलने को दे तथा ह दोनों की ध्वनि अलग–अलग सुनाई देती है। इसी प्रकार ओह तथा समूह में 'ह'–'ओ', यू–दीर्घ स्वरों के पश्चात् आया है तो 'ह' का उच्चारण पृथक् अक्षर के रूप में हो रहा है। इसके विपरीत यदि किसी शब्द के ह्रस्व स्वर के बाद 'ह' आता है तो वह स्वतन्त्र अक्षर नहीं बनता; जैसे–गृह, ग्रह शब्दों को हम बोलें तो पूरा शब्द ही एक अक्षर बन जाता है। 'ह' का उच्चारण अल्पप्राण के रूप में सुनाई देता है।
3. राजस्थानी, बोली में विशेषकर अजमेर मेवाड़ क्षेत्र से लेकर पश्चिम क्षेत्र तक 'स' के स्थान पर 'ह' बोलने की बात भी चलते–चलते स्पष्ट कर लें। वहाँ सप्ताह को हप्ता, सवासेर को हवाहेर, सासू को हाहू आदि शब्द सुनने को मिलते हैं। यह मात्र बोली का प्रभाव है। मानक लिपि में इसका कोई स्थान नहीं। राजस्थान से लगे मंदसौर जिले में इसी कारण 'स' को 'ह' बोला जाता है।

   इसी प्रकार भोपाल में अक्सर आपने सुना होगा— खाँ (कहाँ) जा रहे हो? झाँ (यहाँ) बैठो, बच्चे कहानी को खाणी, बहन को बैन, महल को म्हैल, वहाँ को व्हाँ, बोलते हैं। यहाँ भी बोली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।
4. विसर्ग भी 'ह' का उच्चारण देता है।

हिन्दी की नवीन विकसित ध्वनियाँ (ड़, ढ़)

हिन्दी वर्णमाला में अधिकांश ध्वनियाँ अपनी पूर्वजा संस्कृत भाषा से पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हुई हैं किन्तु विदेशी भाषाओं के सम्मिलनस्वरूप कुछ विदेशी ध्वनियाँ भी अब हिन्दी में विकसित हो रही हैं, जिनके प्रयोग करने में सावधानी रखनी चाहिए। ऐसा ही दो ध्वनियों की चर्चा हम यहाँ कर रहे हैं। ये हैं-'ड़, ढ़'। ध्यान रहे, इन ध्वनियों का प्रयोग केवल हिन्दी में ही होता है। संस्कृत में नहीं। इन ध्वनियों का प्रयोग बारहवीं, तेरहवीं शताब्दी में अरबी-फारसी के प्रभाव से हुआ है।

अत: इन दोनों ध्वनियों को हिन्दी वर्णमाला में अब स्थान दिया जाने लगा है। मनौवैज्ञानिक दृष्टि से भी उच्चारण में कोमलता लाने के लिए इन शब्दों का प्रयोग हिन्दी प्रदेश की जनता करने लगी है। अत: लेखन विषयक अशुद्धि न बने और देवनागरी लिपि में 'ड़, ढ़' की भिन्नता सुरक्षित रह सके, इस दृष्टि से इन ध्वनियों को शब्दों में प्रयोग करने के कुछ नियमों की चर्चा यहाँ की जा रही है।

मूल रूप से दोनों ध्वनियाँ 'ट' वर्ग के अन्तर्गत ही आती हैं। अत: उच्चारण-स्थान की दृष्टि से दोनों ही मूर्धा से सम्बन्धित होने के कारण मूर्धन्य कहलाती हैं किन्तु प्रयत्न की दृष्टि से इन ध्वनियों में भिन्नता है। 'ड' और 'ढ' के उच्चारण करते समय जिह्वा का अग्रभाग मूर्धा को स्पर्श करके झटके से ऊपर जाता है, जबकि 'ड़' तथा 'ढ़' के उच्चारण करते समय जिह्वा का अग्रभाग मूर्धा को स्पर्श करके झटके से फेंका जाता है। इसी कारण इन ध्वनियों को उत्क्षिप्त (उठाकर फेंका हुआ) व्यंजन भी कहते हैं। अभ्यास द्वारा जानने का प्रयत्न करें।

अत: 'ड' और 'ढ' के दो-दो उच्चारण होते हैं —

1. मूर्धन्य (ड, ढ) 2. द्विस्पृष्ट (ड़, ढ़)

1. मूर्धन्य 'ड' और 'ढ' के प्रयोग सम्बन्धी नियम —

(क) ड और ढ शब्द के आरंभ में आते हैं; जैसे-

ड - डर, डिब्बा, डाल, डमरू, डरपोक आदि।

ढ - ढक्कन, ढेर, ढोल, ढाल आदि।

(ख) ड और ढ का प्रयोग - संयुक्त व्यंजन (द्वित्वरूप) में होता है; जैसे-

ड - अड्डा, गुड्डी, लड्डू आदि।

ढ़ - गड्ढा, बुड्ढा आदि।

(ग) ह्रस्व स्वर के पश्चात् नासिक्य व्यंजन (अनुस्वार) के संयोग में ड और ढ का प्रयोग होता है; जैसे-अंडा, डण्डा, ठंडा, भंडार, मंडप, पिण्डी, ढाँचा, डाँटना, ढँकना आदि।

(घ) विदेशी शब्दों के प्रयोग में ड बीच या अन्त में भी आ सकता है; जैसे-
रोड, कोड, इडली, सोडा, बेडरूम, डिग्री, सेकंड, रेडियो आदि।

2. द्विस्पृष्ट 'ड़' और 'ढ़' के प्रयोग सम्बन्धी नियम —

जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया गया है। द्विस्पृष्ट उच्चारण जिह्वा का अग्रभाग उलटाकर मूर्ध में लगाने से होता है, इस उच्चारण के लिए इन अक्षरों के नीचे एक बिन्दी लगाई जाती है। द्विस्पृष्ट उच्चारण बहुधा नीचे लिखे स्थानों में होता है —

(क) प्राय: ड़ और ढ़ का प्रयोग दो स्वरों के मध्य में या अन्त में होता है; जैसे-
मध्य में - रोकड़िया, लड़की, पढ़ाई आदि।
अंत में - पहाड़, गाड़ी, गुड़, गढ़, चढ़, बढ़ आदि।

(ख) दीर्घ स्वर के पश्चात् अनुनासिक व्यंजन के संयोग में जैसे-खाँड़, साँड़, ढूँढ़ना,मूँड़ना आदि। इनके उच्चारण अन्तर को समझाने के लिए निम्न तालिका समझने का प्रयास करें।

ड	**ढ**	**ड़**	**ढ़**
ड्योढ़ी	ढोंगी	जकड़	टेढ़ा-मेढ़ा
डोरी	ढाढ़स	झापड़	चढ़ावा
डाक	ढलना	खोपड़ी	कढ़ाई

आचार्यों को चाहिए कि —

1. वाचन करते समय दोनों के अन्तर पर विशेष ध्यान देना होगा तभी छात्र इनके उच्चारण एवं प्रयोग के नियमों को ठीक से समझ सकेंगे।
2. पाठ्य पुस्तक पढ़ते समय छात्रों को निर्देशित करें कि ड, ढ तथा ड़, ढ़ के अन्तर को स्पष्ट करने के लिए पठित सामग्री के आधार पर शब्द छाँटें तथा ड, ढ, ड़, ढ़ की अशुद्ध वर्तनी वाले शब्दों को पृथक् से लिखकर, इनके प्रयोग के नियम भी लिखवाएँ।
3. अभ्यास कार्य हेतु यहाँ कुछ शब्द दिए जा रहे हैं, जिन पर आवश्यकतानुसार बिन्दु लगाने हेतु छात्रों को कहा जाए; जैसे —
डर, सडक, लडकी, चढाई, ढक्कन, डाली ऐसे अन्य शब्दों का अभ्यास किया जाए।

ड, ड़, ढ, ढ़ की अशुद्धियाँ —

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
खाँड	खाँड़	पढ़ना	पढना
बूढ़ा	बूढा	कन्नड़	कन्नड
ढेर	ढ़ेर	पड़ता	पडता
मेंढक	मेंढ़क	पीड़ा	पीडा

लुढ़कना	लुड़कना	बढाई	बढ़ाई
सीढ़ियाँ	सीड़ियाँ	रोड	रोड़

रोचक तथ्य —

बिहार के लोग प्राय: 'ड़' का उच्चारण 'र' करते हैं।

जैसे—

अशुद्ध	**शुद्ध**
खिरकी	खिड़की
घोरा	घोड़ा
दौर	दौड़

20

संयुक्ताक्षर (संयुक्त व्यंजन)

उपन्यास पढ़ते समय एक व्यक्ति ने अपनी बात रखी कि उपन्यास शब्द सही है या उपन्न्यास। प्रश्न उनका सही था किन्तु व्याकरण की दृष्टि से इसका उत्तर कैसे दिया जाए, यह समस्या थी। उन्होंने ऐसे और भी शब्द बतलाए; जैसे-कन्या, अन्याय, जघन्य, अभिमन्यु आदि।

संयुक्त व्यंजन के विषय में जानकारी न होने से हिन्दी के पाठक का इस प्रकार की शंका उठना सहज है। मैंने उन्हें बताया कि 'उपन्यास' शब्द संयुक्ताक्षर है। संयुक्ताक्षर का अर्थ है एक साथ एक झटके में उच्चारण होनेवाली ध्वनियों का समूह। उपन्यास शब्द में दो अक्षर हैं— उप+न्यास। इन दोनों अक्षरों को एक साथ बोलने पर उपन्न्यास शब्द बोलने में आता है क्योंकि इसमें न् वर्ण दुहराता है किन्तु लिखित रूप में न् को दोहराया नहीं जाना चाहिए।

नियम है कि य, र, ल, व की स्थिति में एक व्यंजन पहले हो तो लिखते समय व्यंजन का दोहराना नहीं होता। इसी दृष्टि से विचार न्यास अक्षर में या के पहले न् का प्रयोग हुआ है। अत: वर्तनी में उपन्यास ही लिखा जाएगा। कन्या, अन्याय, जघन्य, अभिमन्यु आदि के सम्बन्ध में भी यही नियम लागू होगा। इन शब्दों में न्+न् (न्न) बोला जाता है किन्तु लिखने में एक न् ही लिखा जाता है।

महत्त्व (महत्व), तत्त्व (तत्व), सत्त्व (सत्व) इसमें भी त् बोलते समय दोहराने में आता है किन्तु इन्हें लिखते समय अब त् का प्रयोग नहीं होता।

ऐसे कुछ अन्य प्रयोग भी संयुक्त व्यंजन के हैं, जिनके उच्चारण का वर्तनी पर प्रभाव पड़ने की दृष्टि से विचार किया जाना चाहिए; जैसे— उच्चारण की समानता के कारण शय्या शब्द शैया लिखा जाने लगा है। नियम यह भी है कि जब शब्द के मध्य अथवा अन्त में य्+य की स्थिति हो तो, व्यंजन 'य्' के स्थान पर 'इ' बुलाती है; जैसे-शैया/इ+या, न्याय/न्याई+य।

अत: संयुक्त व्यंजन की कुछ विशेषताओं का अध्ययन इस दृष्टि से करना बहुत आवश्यक है —

1. संयुक्त व्यंजन शब्द के मध्य/अन्त में हो, तो संयुक्त व्यंजन का 'व्यंजन' लेखन में परवर्ण के साथ रहता है, किन्तु उच्चारण में पूर्ववर्ण के साथ, यथा— किन्तु = किन्/तु, चर्चित : चर्/चित्, अन्त = अन्/त।
2. शब्द के मध्य/अन्त में आए संयुक्त व्यंजन में वर्ण य/र/ल/व हो तथा पूर्व में भिन्न व्यंजन हो, तो उच्चारण में व्यंजन दुहराता है। वह पूर्व वर्ण के साथ भी बोलने में आता है और

परवर्ती य/र/ल/व के साथ भी, यथा–सत्य = सत्/त्य, विद्या=विद्/द्या, मित्र=मित्/त्र, विक्रम=विक्/क्रम, शुक्ल= शुक्/क्ल, विप्लव=विप्/प्लव, विद्वान=विद्/द्वान, पक्वाशय: पक्/क्वा/शय।

3. महाप्राण व्यंजन (ख्, घ्, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्) के दुहरान की स्थिति में उसके अल्पप्राण व्यंजन का उच्चारण होता है, यथा विख्यात=विक्/ख्यात, व्याघ्र = व्याग्/घ्र, अठ्यासी = अट्/ठ्यासी, धनाढ्य = धनाड्/ढ्य, मिथ्या = मित्/थ्या, अध्यापक = अद्/ध्यापक, अभ्यास = अब्/भ्यास।
4. शब्द के मध्य/अन्त में ह् + न/म/ल/व दुहराते हैं, यथा–चिह्न = चिह्न/न, ब्रह्मा = ब्रह्म/मा, ब्राह्मण = ब्राह्म/मण, प्रह्लाद = प्रह्ल/लाद, आह्वान = आह्व/वान।
5. शब्द के मध्य/अन्त में ह् + य की स्थिति हो, तो 'ह्' के साथ 'इ' का आगम हो जाता है, यथा–बाह्य = बाहि/य, सह्याद्रि = सहि/याद्/द्रि।
6. शब्द के अंत में र् (ˊ) + ह्रस्व वर्ण (अ/इ/उ/ऋ–युक्त) हो, तो र् दुहरता है, यथा–अर्थ = अर्/र्थ, कर्म = कर्/र्म, गर्द = गर्/र्द, मुर्ग = मुर्/र्ग, कर्तृ = कर्/र्तृ।
7. शब्द के मध्य/अन्त में क्ष (क् + ष) हो, तो उसका व्यंजन क् दुहराता है, यथा–अक्षर = अक्/क्षर, कक्षा = कक्/क्षा, चकक्षु = चक्/क्षु, भिक्षुक = भिक्/क्षुक, शिक्षक = शिक्/क्षक।

विशेष —

1. स्वर रहित व्यंजन का अपने से भिन्न व्यंजनों से मिलकर बने व्यंजन को **संयुक्त व्यंजन** कहते हैं; जैसे—सत्य=त्य (संयुक्त व्यंजन है।) हिन्दी भाषा में इन रूपों के शुद्ध उच्चारण तथा लेखन का विशेष महत्व है।
2. एक ही व्यंजन के दो बार मिलने से जो व्यंजन बनता है, उसे **द्वित्व व्यंजन** कहते हैं; जैसे—पक्का=क्क (द्वित्व व्यंजन है।)

ऐसे दोनों व्यंजनों की सूची बनाकर उनके अन्तर को भली भाँति जानने का प्रयास करें।

सुविधा के लिए हिन्दी में पाए जानेवाले आदि, मध्य एवं अन्तस्थानीय संयुक्त व्यंजन के कुछ रूप यहाँ दिए जा रहे हैं—

1. आदि व्यंजन-संयोग

क	:	क्+र	क्रम
		क्+य	क्यारी
		क्+ल	क्लिष्ट
		क्+व	क्वार
ख	:	ख्+य	ख्याति
ग	:	ग्+र	ग्रहण
		ग्+ल	ग्लानि
		ग्+य	ग्यारह

		ग्+व	ग्वाल
घ	:	घ्+र	घ्राण
च	:	च्+य	च्युत
ज	:	ज्+य	ज्योति
		ज्+व	ज्वाला
ट	:	ट्+र	ट्रेन, ट्रंक
		ट्+य	ट्यूशन
ड	:	ड्+य	ड्योढ़ा
त	:	त्+र	त्राण, त्रेता
		त्+य	त्याग
		त्+व	त्वचा
द	:	द्+र	द्रुम
		द्+व	द्वार
		द्+य	द्युति
ध	:	ध्+र	ध्रुव
		ध्+य	ध्यान
		ध्+व	ध्वजा, ध्वनि
न	:	न्+र	नृत्य, नृप
		न्+य	न्याय
प	:	प्+र	प्रेम
		प्+ल	प्लेग, प्लावन
		प्+य	प्यार
फ	:	फ्+र	फ्रान्स
ब	:	ब्+र	ब्रज
		ब्+ल	ब्लाउज
		ब्+य	ब्याज
भ	:	भ्+र	भ्रम
म	:	म्+ल	म्लान
		म्+य	म्यान
व	:	व्+य	व्यक्ति
		व्+र	व्रत
श	:	श्+र	श्री, श्रुति
		श्+य	श्याम
		श्+व	श्वास, श्वान

		श्+ल	श्लेष
स	:	स्+र	स्रोत
		स्+य	स्याही
		स्+व	स्वर
		स्+ल	स्लेट
		स्+क	स्कन्ध, स्कूल
		स्+ख	स्खलन
		स्+त	स्तन, स्तंभ
		स्+थ	स्थान, स्थूल
		स्+न	स्नेह, स्नान
		स्+प	स्पर्द्धा
		स्+फ	स्फूर्ति
		स्+म	स्मार्त्त
		ह्+र	ह्रास, ह्रदय

2. मध्य व्यंजन संयोग

इस स्थिति में दो व्यंजनों का संयोग होता है, किन्तु उनमें से एक व्यंजन प्रथम अक्षर के साथ चला जाता है तथा दूसरा व्यंजन परवर्ती अक्षर के साथ रहता है जैसे— अर्जन=अर्+जन। हिन्दी में पाये जानेवाले मध्य व्यंजन–संयोग इस प्रकार हैं—

क	:	क्+क	मक्का
		क्+ख	मक्खन
		क्+छ	रक्छा (रक्षा)
		क्+ट	नक्टा
		क्+ठ	लक्ठा
		क्+र	वक्रोक्ति
ख	:	ख्+य	व्याख्या
ग	:	ग्+ग	सुग्गा
		ग्+घ	बग्घी
		ग्+न	अग्नि
ङ	:	ङ्+क	अङ्कुर
		ङ्+ख	पङ्खा
		ङ्+ग	गङ्गा
		ङ्+घ	कङ्घा
च	:	च्+च	उच्चाटन
		च्+छ	गुच्छा

ज	:	ज्+व	उज्ज्वल
		ज्+य	त्रिज्या
		ज्+र	वज्र
		ज्+य	मज्जा
		ज्+झ	खुज्झा
त	:	त्+र	खत्री
		त्+य	हत्या
		त्+प	उत्पादन
		त्+त	उत्तर
		त्+थ	पत्थर
		त्+क	उत्कल
द	:	द्+व	विद्वान
		द्+य	विद्या, उद्योग
		द्+ध	उद्धार
		द्+द	भद्दा, रद्दी
		द्+म	पद्मावत
		द्+ग	उद्‌गार
		द्+घ	उद्‌घाटन
न	:	न्+य	अन्याय
		न्+व	सुधन्वा
		न्+त	चिन्ता
		न्+द	कुन्दन
		न्+ध	कन्धा
		न्+न	गन्ना
		न्+च	चन्चल
		न्+छ	पन्छी
		न्+ज	अन्जन
		न्+झ	मन्झा
		न्+ट	कन्टक
		न्+ठ	कन्ठा
		न्+ड	पन्डा
		न्+ह	नन्हा
प	:	प्+प	चप्पल
		प्+त	सप्ताह

फ	:	फ्+त	हफ्ता, दफ्तर
ब	:	ब्+व	गुब्बारा
		ब्+ज	कब्जा
म	:	म्+ह	कुम्हार
		म्+प	कम्पन
		म्+ब	अम्बर
		म्+भ	खम्भा
		म्+म	अम्मा
		म्+च	चम्चा
		म्+छ	गम्छा
ट	:	ट्+ठ	खट्टा
		ट्+ठ	गट्ठर
ड	:	ड्+ड	अड्डा
		ड्+ढ	बुड्ढा
र	:	र्+र	गुर्राना
		र्+व	गर्वीला
		र्+क	कर्कश
		र्+ग	अर्गला
		र्+घ	अर्घ्य
		र्+च	अर्चना
		र्+छ	बर्छी
		र्+त	कर्तार, कुर्त्ता
		र्+थ	अर्थी
		र्+द	गुर्दा
		र्+ध	अर्धाली
		र्+न	कर्नाटक
		र्+प	अर्पण
		र्+भ	अर्भक
		र्+म	अकर्मण्य
व	:	व्+य	काव्यांग
ल	:	ल्+क	वल्कल
		ल्+प	कल्पना
		ल्+म	कल्मष
		ल्+द	जल्दी

		ल्+थ	पाल्थी
		ल्+य	कल्याण
		ल्+व	खल्वाट
		ल्+ल	लल्लन
		ल्+स	जल्सा
		ल्+ह	चूल्हा, आल्हा
श	:	श्+व	विश्वास
		श्+र	विश्राम
		श्+य	कश्यप
		श्+ल	विश्लेषण
		श्+क	लश्कर
		श्+च	पश्चिम
		श्+त	कुश्ती
		श्+म	दुश्मन
स	:	स्+स	किस्सा, गुस्सा
		स्+रा	संसृष्टि
		स्+त	विस्तार
		स्+थ	अस्थायी

3. अन्त व्यंजन-संयोग

इसमें विभिन्न व्यंजन अधिकांशत: य, र, ल, व व्यंजनों से मिलकर ही संयुक्त व्यंजन का रूप बनता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

क	:	क्+य	वाक्य
		क्+र	वक्र, तक्र
		क्+ल	शुक्ल
		क्+व	परिपक्व
ख	:	ख्+य	असंख्य, सौख्य
ग	:	ग्+र	अग्र
		ग्+य	भाग्य
		ग्+ल	आंग्ल
घ	:	घ्+र	व्याघ्र
		घ्+य	श्लाघ्य
व	:	व्+य	काव्य
		व्+र	तीव्र
ल	:	ल्+य	दौर्बल्य

		ल्+प	अल्प
		ल्+म	गुल्म
		ल्+द	जल्द
र	:	र्+य	कार्य
		र्+व	पर्व, सर्व
		र्+प	दर्प
		र्+फ	वर्फ
		र्+भ	गर्भ, दर्भ
		र्+म	मर्म
		र्+त	गर्त
		र्+थ	अर्थ, व्यर्थ
		र्+द	गर्द, सर्द
		र्+ध	अर्ध
		र्+न	हार्न
		र्+च	खर्च
		र्+ज	कर्ज, गुर्ज
		र्+ट	आर्ट
		र्+ड	गार्ड, कार्ड
		र्+क	अर्क
		र्+ख	मूर्ख
		र्+ग	वर्ग
		र्+घ	दीर्घ
		र्+स	पर्स
		र्+ह	प्रयोगार्ह
श	:	श्+य	दृश्य
		श्+व	विश्व, अश्व
		श्+र	मिश्र
स	:	स्+य	शस्य
		स्+र	सहस्र
		स्+व	ह्रस्व
		स्+त	अस्त, मस्त
		स्+थ	स्वस्थ
		स्+क	यास्क, फ्लास्क
		स्+म	भस्म, किस्म

रोचक तथ्य

संयुक्त व्यंजन के दो प्रकार के रूप उपलब्ध होते हैं—

1. एकरूप व्यंजनों का संयोग (अथवा व्यंजन द्वित्व); यथा— कुत्ता, गल्ला, इक्का, पप्पू, खट्टा, अड्डा आदि।
2. भिन्न रूप व्यंजनों का संयोग; यथा— अक्खड़, पत्थर, बग्घी।
3. हिन्दी में प्राय: दो ही व्यंजनों का संयोग होता है, दो से अधिक व्यंजनों के संयोग तो अपवाद स्वरूप संस्कृत से प्राप्त कुछ शब्दों में ही दृष्टिगोचर होते हैं; यथा— काकुत्स्थ, स्वास्थ्य, वर्त्स्य, पार्श्व, आर्द्र, केन्द्रीय आदि।
4. संयुक्त व्यंजनों को 'व्यंजन गुच्छ' भी कह दिया जाता है।

21

समस्या बलाघात की

भाषा प्रशिक्षण देते समय बहुधा यह देखने में आया कि शिक्षकों में स्वाध्याय एवं चिन्तन का सर्वथा अभाव है। इसलिए वे व्याकरण सम्बन्धी समस्याएँ तो बनाते हैं किन्तु उनका तर्कपूर्ण समाधान खोजना उनके लिए दुष्कर कार्य है। ऐसे ही एक प्रसंग में हिन्दी शिक्षक ने मुझसे 'समस्या' शब्द श्यामपट पर लिखने का आग्रह किया और प्रश्न किया कि इसे समस्या क्यों बोला जाता है, जबकि इसे **सम+स्या** भी बोला जा सकता है। इसका प्रामाणिक उत्तर वे जानना चाहते थे।

मैंने बताया कि उनकी यह समस्या 'बलाघात' प्रकरण पर आधारित है। 'बलाघात' शब्द का अर्थ है— चोट करना। जिस शक्ति का प्रयोग हम शब्दों के बोलने में लगाते हैं, उसे **बलाघात** कहते हैं। यह शक्ति दो प्रकार से लगाई जाती है। एक में श्वासवायु का प्रयोग किया जाता है, दूसरे में स्वर या ताल का।

कुछ विद्वान बलाघात को अक्षरों तक सीमित मानते हैं किन्तु वास्तव में बलाघात की स्थिति सापेक्षिक है। वह भाषा के हर स्तर पर न्यूनाधिक रूप में पाई जाती है। इस आधार पर बलाघात दो प्रकार का होता है—

1. ध्वनि अथवा अक्षर पर किया जाने वाला बलाघात या स्वराघात।
2. शब्द अथवा वाक्य स्तर पर किया जाने वाला बलाघात। इसे अनुतान या सुरलहरी भी कहते हैं।

जब हम किसी शब्द या वाक्य का उच्चारण करते हैं तो उसके सभी भागों पर समान बल नहीं देते हैं। कभी शब्द की एक ध्वनि पर बल अधिक दिया जाता है, तो कभी दूसरी ध्वनि पर। वस्तुत: हम देखेंगे कि भाषा की कोई भी ध्वनि पूर्णत: बलाघात से रहित नहीं है। इसी प्रकार वाक्य में कभी एक शब्द पर अधिक बल दिया जाता है, तो कभी दूसरे शब्द पर।

ध्वनि अथवा अक्षर पर किया जाने वाला बलाघात

'समस्या' शब्द के उच्चारण का सम्बन्ध ध्वनि अथवा अक्षर बलाघात से है। इस 'बलाघात' को निम्नांकित आधार पर समझा जा सकता है —

1. यदि शब्द के पूर्व अपूर्णोच्चारित 'अ' आए तो उपान्त्य (अंतिम से पहले) अक्षर पर बलाघात होता है; जैसे— घर, तन, मन, वह आदि। यहाँ रेखांकित शब्दों पर बलाघात है। (स्वयं बोलकर देखें)
2. यदि शब्द के मध्य भाग में अपूर्णोच्चारित 'अ' आए तो उसके पूर्ववर्ती अक्षर पर बलाघात होता है; जैसे— अनबन, दिनभर, चलना, करना, बोलकर। (यहाँ रेखांकित अक्षर पूर्ववर्ती अक्षर है, जिस पर बलाघात है)

3. संयुक्त व्यंजन के पहले अक्षर पर बलाघात होता है; जैसे— पत्थर, जत्था, कत्था। (इन शब्दों में त् अक्षर पर बलाधात है)
4. यदि इ, ई, ऊ के बाद 'य' हो तो 'य' पर बलाघात होगा।
जैसे— प्रिय, सीय, भारतीय, राजसूय।
5. विसर्ग युक्त शब्दों का उच्चारण झटके के साथ होता है।
जैसे— दु:ख, अंत:करण आदि।
6. यदि अंतिम से पहला अक्षर दीर्घ हो तो उसी पर बलाघात होगा।
जैसे— बाल् (दो अक्षर)
किराया (तीन अक्षर)
महारानी (चार अक्षर)
7. यदि किसी अक्षर में महाप्राण ध्वनि अथवा व्यंजन गुच्छ हो तो बलाघात उससे पूर्व अक्षर पर होगा; जैसे—
क - थन (कथन) सम् - प्रति (संप्रति)
ग - धा (गधा) भक् - ति (भक्ति)
मा - धुरी (माधुरी) अक् - षर (अक्षर)
8. अकर्मक से सकर्मक अथवा सकर्मक से प्रेरणार्थक बनाने में बलाघात प्रथम अक्षर से दूसरे अक्षर पर परिवर्तित हो जाता है; जैसे—
ब - ना (बना) बनाया - बनवाया
सु-ना (सुना) सुनाया - सुनवाया
9. सामासिक शब्दों में प्राय: दूसरे भाग पर बलाघात होता है
जैसे— राज - कुमार (राजकुमार)
घुड - दौड़ (घुड़दौड़)

इसी प्रकार समस्या में 'म' पर बलाघात होने से इसे सम+स्या नहीं, समस्या ही बोलेंगे। नियम (2) के अन्तर्गत स्या (संयुक्त व्यंजन) है अत: संयुक्त व्यंजन के पहले अक्षर 'म' पर बलाघात हुआ।

अनुतान (सुर-लहरी)

सड़क पर दो बालक जा रहे थे। परस्पर चर्चा करते-करते किसी बात को लेकर एक बालक ने कहा—

'अच्छा।' 'अच्छा'? 'अच्छा'!

'अच्छा' शब्द का प्रयोग यहाँ भिन्न-भिन्न प्रसंगों में तीन बार अलग-अलग रूप से किया गया है। पहली बार ह्रस्व के रूप में, दूसरी बार प्रश्न के रूप में और तीसरी बार दीर्घ स्वर के रूप में इस प्रकार किया कि उसके कथन का आशय तीनों ही बार भिन्न-भिन्न रहा।

1. प्रथम बार ह्रस्व स्वर में 'अच्छा' शब्द का उच्चारण उसने स्वीकृति के रूप में किया। (साधारण कथन)

2. 'अच्छा'? शब्द का दूसरी बार उच्चारण दीर्घ स्वर में करके उसने एक प्रश्न खड़ा किया? (प्रश्नात्मक कथन)
3. 'अच्छा'! शब्द का तीसरी बार प्रयोग प्लुत स्वर के रूप में करके उसने आश्चर्य प्रकट किया। (आश्चर्यात्मक कथन)

इस प्रकार स्वीकृति, प्रश्न और आश्चर्य के भावों को सुरों के आरोह-अवरोह (उतार-चढ़ाव) में प्रस्तुत कर उसने 'अच्छा' शब्द का प्रयोग तीन प्रकार से भिन्न-भिन्न रूप में किया। जिसे हम व्याकरण की भाषा में **सुरलहरी** या **अनुतान** कहते हैं।

ध्वनियों के उच्चारण में स्वर-तंत्रियों में जो परिवर्तन होता है, उसकी प्रति सेकंड आवृत्ति पर यह निर्भर करता है कि अमुक सुर ऊँचा है अथवा नीचा। तीव्र गति से कम्पन होने पर किसी भी ध्वनि का स्वर ऊँचा होगा तथा धीमी गति से कम्पन होने पर नीचा। यह कम्पन शब्द, वाक्यांश अथवा सम्पूर्ण वाक्य में भी हो सकता है। सुर के इस अन्तर के कारण ही सुरों के उतार-चढ़ाव में एक लहर बन जाती है, इसे ही सुर लहरी अथवा अनुतान कहते हैं। सुर लहरी के कारण वाक्य के अर्थ में अन्तर आ जाता है। इसके मुख्य दो भेद हैं।

1. शब्द सुर लहर 2. वाक्य सुर लहर।

1. शब्द सुर लहर

सामान्य रूप में 'अच्छा' शब्द का उच्चारण पूर्व में दिए गए उदाहरणानुसार मौखिक रूप में तो होता ही है किन्तु लिखित रूप में भी अनुतान का प्रयोग हम विराम चिह्न के माध्यम से इस प्रकार कर सकते हैं।

जैसे -	अच्छा। (साधारण कथन)	-	पूर्ण विराम का चिह्न
	अच्छा? (प्रश्नात्मक कथन)	-	प्रश्नवाचक चिह्न
	अच्छा! (आश्चार्यात्मक कथन)	-	विषमयादिबोधक चिह्न

2. वाक्य सुर लहर

शब्द अनुतान (सुर लहरी) के उपरोक्त उदाहरण के पश्चात् हम वाक्य सुर लहरी का उदाहरण दे रहे हैं, जिसके कारण अर्थ में भिन्नता आ जाती है। वाक्य अनुतान दो प्रकार के हैं —

1. जिस वाक्य में शब्द का क्रम बदल जाता है; जैसे -

   क्रिया के अर्थ में - **कौन जाएगा।** इस वाक्य का क्रम बदलने पर **जाएगा कौन?** होगा। (इस उदाहरण में कौन जाएगा का अर्थ है-कोई जाएगा किन्तु जाएगा कौन? का अर्थ है-कोई नहीं जाएगा। अर्थात् इस वाक्य के क्रम बदलने से इसमें निषेध का अर्थबोध हो रहा है।)

   विशेषण के अर्थ में - **भले आदमी हैं**। क्रम बदलने पर यह वाक्य होगा। **आदमी भले हैं**।

   इस वाक्य में भले आदमी हैं का अर्थ-सामान्यत: अच्छे आदमी से है किन्तु आदमी भले हैं, का अर्थ है : बहुत अच्छे आदमी हैं इसमें विशेषता लक्षित होती है।
2. जिस वाक्य में शब्दों का क्रम तो नहीं बदलता किन्तु किसी विशेष **शब्द** पर बल देने से

अर्थ बदल जाता है; जैसे–राम ने सीता को वनवास दिया।

(क) राम ने सीता को वनवास दिया। (सामान्य वाक्य)

(ख) **राम** ने सीता को वनवास दिया। (यहाँ राम पर विशेष बल देने से राम ने सीता को वनवास दिया और किसी ने नहीं यह भाव प्रकट हो रहा है। (**सामान्य भाव**))

(ग) राम ने **सीता** को वनवास दिया। (यहाँ सीता पर विशेष बल देने का अर्थ होता है कि सीता तो राम की पत्नी है फिर उसको वनवास क्यों दिया?) (प्रश्नवाचक भाव)

(घ) राम ने सीता को **वनवास** दिया? (यहाँ वनवास पर बल देने पर प्रश्न खड़ा होता है कि वनवास ही क्यों दिया अन्य कोई प्रतिकार क्यों नहीं किया?) (आश्चर्यात्मक भाव)

भाषाशास्त्रियों द्वारा सुर लहरी को व्यक्त करने सम्बन्धी अनेक प्रयोग किए जा रहे हैं। इनमें अंकों तथा रेखाओं के प्रयोग में उदाहरण प्रस्तुत हैं —

1. अंकों के द्वारा —

1. 2 राम ने + 2 सीता को + 2 वनवास दिया। (सामान्य बात)
2. 3 राम ने + 2 सीता को + 2 वनवास दिया। (साधारण कथन)
3. 2 राम ने + 3 सीता को + 2 वनवास दिया? (प्रश्नात्मक कथन)
4. 2 राम ने + 2 सीता को + 3 वनवास दिया? (आश्चर्य कथन)

(यहाँ 1 अंक ह्रस्व, 2 अंक–दीर्घ तथा 3 अंक–प्लुत ध्वनि का प्रतीक है।) प्लुत के सामने 3 ध्वनि अंक लिखकर अनुतान प्रकट किया गया है।

2. रेखाओं के द्वारा —

उपर्युक्त वाक्य रेखाओं के द्वारा इस प्रकार प्रकट किया जा सकता है।

1. राम ने सीता को वनवास दिया। (सामान्य बात)

2. राम ने
सीता को वनवास दिया (साधारण कथन)

सीता को
3. राम ने वनवास दिया? (प्रश्नात्मक कथन)

4. वनवास दिया! (आश्चर्यात्मक कथन)
राम ने सीता को

अभ्यास - क्या मैं तुम्हें एक गिलास दूध पीने को दूँ?

रेखांकित शब्दों को शब्द अनुतान की दृष्टि से बोलकर स्वयं देखें। प्रत्येक शब्द पर बलाघात करने पर एक नया ही अर्थ सामने आएगा।

22

संगम (विवृत्ति)

किसी ने चर्चा में बताया कि बचपन में वे मनोविनोद के लिए यों ही 'बतासा ले' के लिए बता-साले तथा मरसा-ले (साग विशेष) के लिए मर-साले का उच्चारण करते थे। उस समय व्याकरण नियमों का ज्ञान न होने से उनके लिए यह मनोविनोद की बात थी किन्तु बाद में जब उन्हें व्याकरणिक नियमों का अध्ययन करने को मिला, तब उन अनर्गल बातों को सोचकर हँसी आती है।

व्याकरण का नियम है कि उच्चारण करते समय यदि यह ध्यान नहीं रखा जाता है कि जिन शब्दों का हम प्रयोग कर रहे हैं, उन्हें एक साथ बोलना अथवा पढ़ना है, अथवा कुछ हल्का सा विराम देकर; तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। अत: शब्दों के मध्य उचित विराम देकर बोलना अथवा पढ़ना चाहिए। इस उचित विराम देकर बोलने अथवा पढ़ने को ही 'संगम' कहा जाता है। कुछ अन्य उदाहरणों से इसे और भी स्पष्ट किया जा सकता है।

1. वह रेतीला मैदान जल-सा दिखाई देता है। (जल+सा)
   आज हमारे नगर में जलसा है। (जलसा)
2. रोहित के पिता का रण में देहांत हो गया। (का+रण)
   इसी कारण वे आज नहीं आए। (कारण)
3. लड़के लड़ के आ रहे हैं। (लड़+के) लड़ाई करके
4. असरकारी काम ही असर कारी सिद्ध होता है। असर+कारी (प्रभावकारी)

कुछ अन्य शब्दों के अर्थ और उनके प्रयोग को भी जानिए —

1. सिरका - एक तरह का तरल पदार्थ
   सिर+का - सिर से सम्बन्धित
2. मनका - माला का दाना
   मन+का - मन से सम्बन्धित
3. मोतीलाल- नाम है
   मोती+लाल- मोती और लाल (रत्न)
4. पीलिया - रोग विशेष
   पी+लिया- पीने का काम समाप्त हो गया।
5. मरमरा गया- मरमराहर की ध्वनि से सम्बन्धित।
   मर+मरा गया- मृत्यु से सम्बन्धित

अत: इस प्रकार शब्दों का प्रयोग करते समय संगम (विवृत्ति) को ध्यान में रखकर ही उच्चारण एवं लेखन करना चाहिए।

23

हिन्दी के सन्धि नियम

शीर्षक देखकर चौकिए नहीं। 'सन्धि' संस्कृत शब्द है अत: सन्धि के जो भी नियम आप जानते हैं, वे संस्कृत भाषा के हैं किन्तु सन्धि का सम्बन्ध केवल संस्कृत शब्दों तक ही सीमित नहीं है, हिन्दी में अनेक ऐसे सन्धि स्थल हैं,जहाँ संस्कृत के नियम हिन्दी के अनुकूल नहीं बैठते।

उदाहरण के लिए —

विश्व+मित्र = विश्वामित्र

संस्कृत के सन्धि नियमानुसार यहाँ विश्वामित्र नहीं लिखा जा सकता। विश्वमित्र ही लिखना होगा, किन्तु लिखा जाता है विश्वामित्र। उच्चारण की सुविधा के लिए यहाँ विश्व तथा मित्र शब्द एक-दूसरे से मिलकर विश्वामित्र हो जाता है। यही हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल है।

हिन्दी में यद्यपि व्यवस्थित रूप से अभी तक कोई मानक सन्धि नियमों का विकास नहीं हुआ है फिर भी समय के साथ-साथ कुछ नियम विकसित हो रहे हैं। संस्कृत और हिन्दी के इन नियमों के अन्तर को समझें।

संस्कृत में दो वर्णों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं। यह परिवर्तन स्वर, व्यंजन तथा विसर्ग वर्णों में होता है, अत: सन्धि के तीन प्रकार बताए गए हैं, स्वर सन्धि, व्यंजन सन्धि तथा विसर्ग सन्धि, किन्तु हिन्दी में तद्भव शब्दों में सन्धि के नियम पाए जाने की आवश्यकता अनुभव की गई है।

हिन्दी सन्धि नियम के अनुसार जब दो ध्वनियाँ निकट होने पर आपस में मिल जाती हैं और एक नए रूप को धारण कर लेती हैं, तो वहाँ दो ध्वनियों की सन्धि होती है। इससे स्पष्ट है कि **हिन्दी सन्धि नियम में सन्धि दो ध्वनियों की होती है, वर्णों की नहीं**। यह बात कुछ उदाहरणों से स्पष्ट की जा रही है —

1. **केवल पूर्व ध्वनि में परिवर्तन-**

अनेक सन्धि स्थलों पर केवल पूर्व (पहली) ध्वनि में परिवर्तन होता है; जैसे -

का<u>लि</u>+दास=कालीदास

मूस<u>ल</u>+धार=मूसलाधार

यहाँ लि, ल रेखांकित ध्वनि ह्रस्व से दीर्घ हो गई है।

2. **केवल पर ध्वनि में परिवर्तन**

कुछ सन्धि स्थलों 'पर' केवल पर (बादवाली) ध्वनि में परिवर्तन आता है।

जैसे—

मही+इन्द्र = महीन्द्र

यहाँ मह् (ई) + (इ) न्द्र में (इ) पर-ध्वनि है, जो 'ई' के रूप में बदल गई है।

3. **पूर्व-ध्वनि तथा पर-ध्वनि दोनों में परिवर्तन**

जैसे— उत् (त्) + (ह्) हरण = उद् + धरण = उद्धरण

यहाँ पूर्व ध्वनि त्, द् में तथा पर ध्वनि ह ध में परिवर्तित हो गई है।

4. **परिवर्तन शून्य समीपता**

कई सन्धि स्थानों पर दो ध्वनियाँ (पूर्व-ध्वनि+पर-ध्वनि) परस्पर समीप आती है किन्तु उनमें कोई विकार (परिवर्तन) नहीं आता। केवल एक शिरोरेखा के मध्य वे आ जाती है; जैसे— सत्+कर्म = सत्कर्म

5. **नवीन ध्वनि का आगमन् (आगम)**

कुछ सन्धि स्थलों पर पूर्व-ध्वनि तथा पर-ध्वनि मिलकर एक नई ध्वनि का रूप धारण कर लेती है।

जैसे- आ+ए=आइए, ले+आ=लिया, ला+आ=लाया,

खा+आ=खाया, आ+आ=आया।

यहाँ पूर्व ध्वनि 'अ' तथा पर ध्वनि 'ई' ने मिलकर एक नई ध्वनि 'ए' का रूप धारण कर लिया है।

6. **सदृशीकरण**

कई सन्धि स्थलों पर दो भिन्न ध्वनियाँ एक समान हो जाती हैं।

जैसे— सत्+जन=सज्जन

यहाँ (त्) पूर्व-ध्वनि (ज्) में परिवर्तन हुई है।

7. **दीर्घ सन्धि**

कई सन्धि स्थलों पर पूर्वपद के अन्तिम स्वर का दीर्घ हो जाता है।

जैसे— दीन+नाथ=दीनानाथ ('अ' का 'आ')

8. **स्वर का ह्स्वीकरण**

कुछ स्थलों पर सन्धि के कारण पूर्व पद के स्वर में परिवर्तन हो जाता है; **जैसे** -

घोड़ा+दौड़ = घुड़दौड़ (ओ, उ हो गया)

एक+तारा = इकतारा (ए का इ हो गया)

हाथ+कड़ी = हथकड़ी   हाथ+कंडा=हथकंडा,

आधा+पका=अधपका   मीठा+बोला=मिठबोला

बच्चा+पन=बचपन   आधा+खिला=अधखिला

आम+चूर=अमचूर   बड़ा+बोला=बड़बोला

काठ+पुतली=कठपुतली   दो+पहिया=दुपहिया

मिलना+जुलना=मेलजोल (इ का ए अथवा ओ हो गया)

9. **स्वर परिवर्तन**

कुछ स्थलों पर पूर्व-पद ही नहीं, पर-ध्वनिवाले पद का दीर्घ स्वर भी ह्रस्व हो जाता है।

जैसे -	पानी+घाट = पनघट,	बकरा+ईद = बकरीद
	लकड़ी+हारा=लकड़हारा	लोहा+आर=लुहार
	लोटा+इय=लुटिया	डिब्बा+इया=डिबिया
	छोटा+भैया=छुटभैया	मामा+एरा=ममेरा।

10. **लोप**

कहीं-कहीं दो ध्वनियों की सन्धि में एक ध्वनि का लोप हो जाता है।

जैसे - यहाँ+ही = यहीं, वह+ही = वही
कहाँ+ही = कहीं, वहाँ+ही = वहीं, वह+ही=वही, इस+ही=इसी

11. **महाप्राणीकरण**

शब्द के अंत में यदि अल्पप्राण ध्वनि हो और आगे 'ह' ध्वनि का संयोग हो, तो अल्पप्राण ध्वनि महाप्राण हो जाती है;

जैसे- सब+ही = सभी, कब+ही = कभी

(ब अल्पप्राण का भ महाप्राण हो गया) इसी तरह तभी, जभी भी होते हैं।

आपने देखा होगा कि उपर्युक्त उदाहरणों से इस बात की पुष्टि होती है कि हमें हिन्दी के सन्धि नियमों की आवश्यकता क्यों पड़ रही है। भविष्य में उसकी मानकता बने, इसके पूर्व इन्हें छात्रों को सरल तरीके से कैसे समझाएँ, इसकी तैयारी करना होगी। उसके लिए कुछ निर्देश यहाँ दिए जा रहे हैं —

1. आप जो पाठ छात्रों को पढ़ाएँ, उसमें ऐसे शब्द अवश्य छाँटे, जहाँ संस्कृत सन्धि नियम लागू नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए काठ+पुतली=कठपुतली। अब आप छात्रों को नियम-8 स्वर ह्रस्वीकरण को छात्रों के समक्ष स्पष्ट करें।
2. छात्रों को एक बात और स्पष्ट समझाएँ कि संधि तथा संयोग में बहुत अन्तर है। ध्वनियों के मेल के कारण जहाँ परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं, तथा जहाँ परिवर्तन नहीं होता है उसे संयोग कहते हैं; जैसे—
   1. सत्+जन = सज्जन (संधि)
   2. सत्+कर्म= सत्कर्म (संयोग)
3. आप स्वयं कुछ वाक्य बोलकर अथवा छात्रों से वाक्य बनाने को कहकर श्रुत-लेख लिखवाएँ तथा उनके नियमों को समझाएँ।

अभ्यास— यहाँ कुछ शब्द दिए जा रहे हैं, उनमें कौन-से नियम लागू होते हैं, यह जानने का प्रयत्न कीजिए। किस+ही, पोत+दार, आम+चूर, बच्चा+पन, लकड़ी+हारा, श्याम+पट, हिलना+मिलना, छोटा+पन, लेना+देना, छोटा+भैया, ईश+आसरे, राम+अधीर।

24

छात्र स्वयं तैयार करें अपना शब्दकोश

भाषा की पाठ्यपुस्तकों के अन्त में शब्दार्थ के अन्तर्गत कठिन और अपरिचित शब्दों को दिए जाने की पद्धति प्राय: छोटी कक्षाओं में देखने को मिलती है, जिससे छात्र शब्दों के अर्थ भली-भाँति जान सकें। इसे देखने की सही विधि भी जानना आवश्यक है ताकि धीरे-धीरे छात्र शब्द-कोश का उपयोग करना भी सीख सकें। ध्यान रहे, शब्दकोष न केवल शब्दार्थ बताते हैं अपितु वर्तनी भी स्पष्ट करते हैं।

नीचे लिखे बिन्दुओं को आचार्य-गण भी ध्यान से पढ़ें ताकि वे छात्रों में शब्दकोष का उपयोग, शुद्ध वर्तनी और रचना आदि के अभ्यास की कुशलता विकसित कर सकें।

- प्रत्येक शब्दकोष में शब्दों को अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ के पश्चात् 'क' से 'ह' तक के सभी वर्णक्रम देवनागरी वर्ण माला के वर्ण क्रमानुसार दिए रहते हैं। हमें जिस शब्द के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है, उसके आरम्भ का वर्ण देखकर शब्द ढूँढ़ा जा सकता है; जैसे 'अ' से प्रारम्भ होनेवाले सभी शब्द 'अ' शीर्षक के नीचे ही होंगे।
- सभी वर्ण अनुस्वार एवं चन्द्रबिन्दु से शुरू होते हैं। इसके बाद वर्णक्रम 'अ' वर्ण के साथ शुरू होता है। इसलिए अंगरखा, अंशुमनि, आँख आदि के पश्चात् ही अटल, अनुरोध आदि शब्द आते हैं। यही क्रम सभी वर्णों के साथ स्वीकृत है।
- हर वर्ण में मात्राओं का वही क्रम आता है, जो स्वरों का होता है; जैसे—'क' में क्रमश: (हिन्दी) 'क' के बाद का, कि, की, कु, कू, के, कै, को, कौ आदि से प्रारम्भ होने वाले शब्द होंगे। इसी प्रकार अन्य वर्णों के क्रम में भी उनसे बनने वाले शब्द मिलेंगे। मात्राओं से युक्त वर्णों के समाप्त होने पर ही संयुक्त वर्ण शुरू होता है; जैसे— क्क, क्ख, क्च, क्त, क्य, क्य आदि।
- आधे वर्णों का क्रम पूरे वर्ण की मात्राओं के बाद आता है; जैसे— 'स्या' शब्द 'सौ' के बाद आएगा।
- 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ' को 'ह' के बाद नहीं ढूँढ़ना चाहिए क्योंकि ये संयुक्त व्यंजन के रूप में प्रयुक्त होते हैं।
  1. 'क्' और 'ष' का संयुक्त रूप है : 'क्ष' अत: 'क्ष' से शुरू होने वाले शब्दों को 'क' से शुरू होने वाले शब्दों के समाप्त होने पर ढूँढ़ना चाहिए। 'क्ष' के बाद 'क्या' (आधे वर्ण) से बननेवाले शब्द आते हैं।

2. ‘त्’ और ‘र’ का संयुक्त रूप ‘त्र’ है। अत: ‘त’ से शुरू होने वाले शब्दों के समाप्त होने पर ‘त्र’ से बनने वाले शब्दों को ढूँढ़े। ‘त्र’ से बनने वाले शब्दों के बाद ‘त्व’ (आधे वर्ण) से सम्बन्धित शब्द देखे जा सकते हैं।
3. ‘ज्’ और ‘ञ’ का संयुक्त रूप है ‘ज्ञ’। अत: ‘ज्ञ’ से शुरू होने वाले शब्दों को ‘ज’ से शुरू होनेवाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़ना चाहिए। ‘ज्ञ’ के बाद ‘ज्य’ (आधे वर्ण) से बननेवाले शब्द आते हैं।
4. ‘श्’ और ‘र’ का संयुक्त रूप है ‘श्र’। अत: ‘श्र’ से शुरू होनेवाले शब्दों को ‘श’ से शुरू होनेवाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़ना चाहिए। ‘श्र’ के बाद ‘श्या’ (आधे वर्ग) से बनने वाले शब्द आते हैं।

उपर्युक्त सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर आचार्यों को अपनी-अपनी कक्षा की पाठ्यपुस्तकों के लिए छात्रों को स्वयं ही अपना शब्दकोष बनाने की प्रेरणा देना चाहिए ताकि हर छात्र अपने-अपने स्तर से कठिन शब्दों के अर्थ जानने का प्रयास कर सकेगा। उनमें शब्दकोष निर्माण की कुशलता विकसित करने के लिए कुछ निर्देश यहाँ दिए जा रहे हैं, जिनकी जानकारी आचार्यगण शब्दकोष से उदाहरण देकर प्रत्येक छात्र को दें ताकि ‘शब्द रचना’ की प्रक्रिया को समझने में उसको सहायता मिलेगी।

‘क’-वर्ण से बनने वाले शब्दों के क्रम को निम्नलिखित उदाहरण द्वारा जानें। अन्य वर्णों से बनने वाले शब्दों का भी यही क्रम रहेगा—

कँ, कं, क, का, कि, की, कु, कू, के, कै, को, कौ, क् (क), क्त, क्, क्ल, क्ष (क्ष) आदि।

- शब्दकोष निर्माण करते समय बाँई ओर कठिन शब्द तथा दाँई ओर उसका अर्थ लिखा जाना चाहिए।
- आवश्यकतानुसार शब्दों के आगे कोष्टक में संयुक्त शब्दों को अलग-अलग करके दिखाना चाहिए, ताकि वे शब्द निर्माण की विधि से परिचित हो सके।
- शब्द का अर्थ देने के पूर्व मूल शब्द के बाद कोष्टक में एक संकेताक्षर दिया जाना चाहिए जिसमें व्याकरण की दृष्टि से कोई शब्द संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि शब्द भेदों में से किस भेद का है यह जानकारी मिल सके; जैसे -

पुलिंग	-	पु०	विशेषण	-	वि०	अव्यय	-	अ०
स्त्रीलिंग	-	स्त्री०	क्रिया	-	क्रि०	मुहावरा	-	मु०
सर्वनाम	-	सर्व०	क्रिया वि०	-	क्रि० वि०			

- कहीं-कहीं शब्दों के पर्याय भी देना चाहिए ताकि प्रसंग के अनुसार छात्र अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकें।
- अर्थ देते समय शब्द के प्रसंगगत अर्थ को भी महत्व देना चाहिए।
- आवश्यक स्थानों पर समानार्थी शब्द भी दिए जाने चाहिए जिससे छात्र मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्दों में अन्तर करना और उनमें से उपयुक्त शब्द का चुनाव करना सीख

सकें।

- सामान्य शब्द कोषों में मुहावरों को उनके पहले शब्द के अन्तर्गत दिया जाता है किन्तु छात्रों को सुविधा की दृष्टि से उन्हें अपना शब्दकोष तैयार करते समय मुहावरों को स्वतंत्र इकाई मानकर अलग पद के रूप में दिया जाए ताकि शब्द-कोष देखना उनके लिए सुविधाजनक रहे।

गतिविधियाँ

1. छात्रों से शब्दकोष में शब्दों को ढूँढ़ने का अभ्यास कराएँ। देखें कि उनमें समझ बढ़ रही है अथवा नहीं।
2. श्यामपट पर शब्दों के विभिन्न रूपों का प्रयोग अलग-अलग वाक्यों में कराएँ। इन्हें कुछ स्थान छोड़कर नीचे लिखें —

   जैसे— आम

शब्द	अर्थ	प्रयोग
आम	एक प्रकार का मीठाफल	कच्चे आम से अचार, अमचुर, पना (शरबत) आदि बनता है।
आम	सामान्य, साधारण	आमतौर पर साधारण आदमी आम खाता है।

सामान्य शब्दकोश दिखाकर छात्रों को विषय-शब्दकोष तैयार करने की धारणा स्पष्ट की जा सकती है किन्तु धारणा स्पष्ट करने के पूर्व उन्हें समझाया जाना चाहिए कि शब्दकोष कितने प्रकार के होते हैं तथा उनका उपयोग एवं प्रयोग किस प्रकार से किया जाता है।

1. **बाल शब्दकोष—** बालकों के उपयोग के लिए आवश्यक शब्दों को सरल भाषा में समझाने वाला शब्द संग्रह है।
2. **चित्रमय बालकोष—** निर्धारित आवश्यक शब्दों का चित्रों के साथ अर्थ एवं उपयोग समझानेवाला शब्द भण्डार है।
3. **सरल विश्वकोष—** विश्व भर के बालकों के द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले शब्दों का भण्डार है। इसमें उन सभी विषयों से सम्बन्धित शब्द और तकनीकी शब्दों का विवरण होता है, जो विश्वभर में कहीं भी उपयोग में लाए जाते हैं।
4. **बालक विश्वकोष—** विश्वभर के बालकों के हाईस्कूल स्तर तक के सभी आवश्यक शब्द और तकनीकी शब्दों का चित्रों के साथ विवरण, अर्थ दिया रहता है। इनमें शब्दों का बनना, उसके रूप तथा उनका उपयोग एवं प्रयोग भी दिए रहते हैं।

25

स्व-मूल्यांकन

आशा है आपने यह पुस्तक ध्यान से पढ़ी होगी। यदि आप इन सिद्धान्तों को व्यवहार में लाना चाहते हैं, तो एक मात्र अभ्यास द्वारा ही ऐसा संभव हो सकता है।

स्वमूल्यांकन पद्धति द्वारा अभ्यास को सुदृढ़ बनाया जा सकता है, यह ध्यान में रखते हुए यहाँ कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, उनका उचित उत्तर प्रसंगानुकूल ढूँढकर स्वयं लाभ लें। ये प्रश्न चिन्तन हेतु दिए जा रहे हैं, ऐसे अन्य प्रश्न आप स्वयं बनाकर स्वयं का मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रश्न —

1. वर्णमाला किसे कहते हैं?
2. हिन्दी वर्णमाला में कितने वर्ण होते हैं?
3. हिन्दी भाषा किस लिपि में लिखी जाती है?
4. स्वर किसे कहते हैं?
5. हिन्दी में स्वरों की संख्या कितनी है?
6. हिन्दी के मूलस्वर कितने हैं?
7. प्लुत स्वर किसे कहते हैं?
8. संधि स्वर किसे कहते हैं?
9. व्यंजन किसे कहते हैं? उसके कितने भेद हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।
10. कौन-से वर्ण अयोगवाह हैं?
11. व्यंजन गुच्छ से आप क्या समझते हैं?
12. क्ष, त्र, ज्ञ, श्र - व्यंजन किसके योग से बने हैं? दो-दो उदाहरण देकर समझाइए।
13. मात्रा किसे कहते हैं?
14. किस स्वर की मात्रा नहीं होती है?
15. किन व्यंजनों के ऊपर मात्राएँ लगती हैं?
16. किन व्यंजनों के नीचे मात्राएँ लगती हैं?
17. किन व्यंजनों के आगे मात्राएँ लगती हैं?
18. किन व्यंजनों के पहले मात्राएँ लगती हैं?
19. जिह्वा के अग्र भाग से कौन-से स्वर उच्चरित होते हैं?

20. जिह्वा के पश्च भाग से कौन-से स्वर उच्चरित होते हैं?
21. जिह्वा के मध्य भाग से कौन-से स्वर उच्चरित होते हैं?
22. 'आ' स्वर का उच्चारण स्थान कौन-सा है?
23. संवृत स्वर किसे कहते हैं?
24. अर्द्ध स्वर किसे कहते हैं?
25. अर्द्ध विवृत स्वर किसे कहते हैं?
26. विवृत स्वर किसे कहते हैं?
27. स्वरों के उच्चारण में ओष्ठ्य कृतियों की कितनी स्थितियाँ बनती हैं?
28. व्यंजनों के उच्चारण स्थान उदाहरण देकर समझाइए?
29. व्यंजनों के उच्चारण में प्रयत्नों से क्या तात्पर्य है? उदाहरण देकर समझाइए?
30. 'ऋ' और 'रि' की मात्राओं में क्या अन्तर है?
31. 'र' के आधे रूप को क्या कहते हैं?
32. बलाघात किसे कहते हैं?
33. अनुतान का उदाहरण दीजिए।
34. किन्हीं दो संगम शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कर समझाइए।
35. हिन्दी के संधि नियम से क्या आशय है?
36. उदाहरण सहित अन्तर बताइए —
    - वर्ण-अक्षर-वर्ण-ध्वनि
    - ह्रस्व-स्वर दीर्घ-स्वर
    - अल्पप्राण-महाप्राण
    - अनुस्वार-अनुनासिक
    - संयुक्त व्यंजन-द्वित्व व्यंजन
    - वर्ण ध्वनि विच्छेद-वर्ण विच्छेद
    - वर्ण विच्छेद, वर्ण संयोग
    - अघोष-सघोष व्यंजन
    - अनुनासिक-निरनुनासिक
    - स्वर-व्यंजन
    - संघर्षी-स्पर्शसंघर्षी
    - शब्द बलाघात-वाक्य बलाघात
    - अनुतान-संगम
    - बाह्य प्रयत्न-आभ्यंतर प्रयत्न।
36. निम्नांकित तालिका में वर्णों को उचित स्थान पर लिखिए —

(क) स्वर —

<table>
<tr><td></td><td>मूल स्वर</td><td></td></tr>
<tr><td rowspan="2">संधि स्वर</td><td>संयुक्त स्वर</td><td></td></tr>
<tr><td>दीर्घ स्वर</td><td></td></tr>
</table>

(ख) व्यंजन —

	स्पर्श व्यंजन	**अंतस्थ व्यंजन**	**ऊष्म व्यंजन**	**नासिक्य व्यंजन**
कंठस्थ				
तालव्य				
मूर्धन्य				
दन्त्य				
ओष्ठ्य				
नासिक्य				
कंठ-तालव्य				
कंठ-ओष्ठ्य				
दंतोष्ठ्य				

हिन्दी संधि : अवधारणा एवं अभ्यास

||01||

वर्ण-वंश का विस्तार है- संधि

संस्कृत भाषा के एक प्रकांड पंडित मुझसे चर्चा करने आए। चर्चा में उन्होंने बताया कि मेरे द्वारा लिखित 'हिंदी वर्ण और वर्तनी' पुस्तक उन्होंने आद्योपान्त पढ़ी और विषय प्रस्तुति की भी उन्होंने प्रशंसा की। साथ ही, वे वर्ण-वंश के विस्तार पर चर्चा करने लगे और आग्रह पूर्वक कहने लगे कि, 'वर्णों का विस्तार' संधि के माध्यम से हुआ है। उस पर भी कुछ नवाचार से जोड़कर लिखिए। फिर उन्होंने एक पौराणिक संदर्भ का उदाहरण देकर इस रूपक को स्वयं जिस प्रकार प्रस्तुत किया पाठकों के लाभार्थ उसे मैं यहाँ ज्यों का त्यों बताना चाहता हूँ।

उनका कथन था— 'सर्वप्रथम चतुर्मुखी ब्रह्मा के मुख से चार प्रकार के वर्ण- अ, इ, उ, ऋ एक साथ उच्चरित हुए। उन्हें सुनकर ब्रह्मा जी स्वयं चकित हुए। उन्होंने उन्हें प्रत्यक्ष दिखने का आदेश दिया तो चारों वर्ण लिपि के रूप में उनके सामने प्रकट हो गए। श्रवणेन्द्रिय, नेत्रेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय (हाथ) के माध्यम से इनके रूप को देखकर वे मोहित हो गए तथा उन्हें साक्षात् 'शब्द-ब्रह्म' की संज्ञा दे डाली। उसी शब्द-ब्रह्म से वर्ण-वंश का विस्तार हुआ है।'

'अ' वर्ण तभी से सभी वर्णों में श्रेष्ठ माना गया क्योंकि सर्व प्रथम उन्होंने उसी के दर्शन किए। गीता में भगवान कृष्ण ने इसीलिए 'अक्षराणाम् अकारोऽस्मि' अर्थात् अक्षरों में मैं 'अ' कार हूँ, कहकर इस वर्ण का संबंध परा-शक्ति से जोड़ा है।

मुझे उनके रूपक को और अधिक जानने की इच्छा हुई और मैंने कहा— 'वर्ण-वंश का विस्तार आगे किस प्रकार हुआ, अब इस पर भी प्रकाश डाल दीजिए।'

उनका कहना था, जिस प्रकार ब्रह्माजी ने सृष्टि के आदि में चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) का विस्तार किया है, उसी प्रकार भाषा के इन चार वर्णों ने भी ब्रह्मा जी से अपने वंश के विस्तार करने की प्रार्थना की।

ब्रह्मा जी ने उनके आग्रह को स्वीकार कर सर्व-प्रथम अ+अ, इ+इ, उ+उ, ऋ+ऋ को अपने निज स्वरूप से संधि (मिलन) कर दीर्घ होने को कहा।

इस प्रकार अपने निज स्वरूप से मिलकर वे अ-आ, इ-ई, उ-ऊ, ऋ-ॠ के रूप में दीर्घ वर्ण बन गए। इसी को **दीर्घ संधि** कहा जाता है। इस प्रकार संख्या में आठ वर्ण हो गए, किन्तु 'ॠ' (दीर्घ स्वर) के संन्यास लेने से हिंदी में सात नाम ही प्रधान हैं।

पुन: उन आठ वर्णों को ब्रह्मा जी ने वंश-विस्तार का आदेश दिया। ब्रह्मा जी के अनुरोध पर उन्होंने अपने स्वयं के वर्ण से इतर वर्णों में गुण-धर्म के आधार पर मिलकर वर्ण-विस्तार किया। इस प्रकार 'अ-आ' ने 'इ-ई' से मिलकर 'ए' एवं 'उ', 'ऊ' से मिलकर 'ओ' की सृष्टि

की और 'ऋ' से मिलकर दोनों ने 'आर्' का रूप धारण कर लिया। उसे ही **गुण संधि** कहा जाता है। इस प्रकार इस वंश 'ए' तथा 'औ' के रूप में दो वर्ण और मिल गए और उनकी संख्या नौ हो गई। ये दो वर्ण विजातीय (असवर्ण) कहलाए।

पुन: उसमें 'अ-आ' का मिलन 'ए/ओ' (गुण संधि) से हुआ, जिससे 'ऐ' तथा 'औ' का जन्म हुआ। गुण संधि ने इस वृद्धि को **वृद्धि-संधि** नाम दिया। इस प्रकार इनकी संख्या ग्यारह हो गई। यह वर्णों का सजातीय तथा विजातीय वंश-विस्तार कहलाया।

सृष्टि का विस्तार यहीं न रुक जाए इसलिए सजातीय (ह्रस्व+दीर्घ वर्णों ने 'इ/ई, उ/ऊ' तथा 'ऋ' ने) विजातीय वर्णों से मिलकर पुन: सृष्टि का विस्तार करने का निश्चय किया। 'इ/ई' ने अपने भिन्न स्वरों से मिलकर 'य, उ/ऊ' ने अपने भिन्न स्वरों से मिलकर 'व' तथा 'ऋ' ने भी भिन्न स्वरों से मिलकर 'र्' की उत्पत्ति की और इस वंश की पहचान **यण-संधि** के रूप में होने लगी क्योंकि इनमें प्रथम 'य' वर्ण की उत्पत्ति हुई है।

अंत में स्वरों का एक वंश और भी निर्मित हुआ। इस वंश का विस्तार 'ए/ऐ, ओ/औ' (ए/ओ=गुण संधि तथा ऐ/औ=वृद्धि संधि) के अपने से भिन्न किसी भी स्वर से संबंध बनने से हुआ। 'ए' ने अपने से भिन्न स्वरों से मिलकर 'अय', 'ऐ' ने 'आय', 'ओ' ने 'अव्' तथा 'औ' ने 'आव्' को उत्पन्न किया। स्वरों के वंश का यह अंतिम परिवार था, इसे **अयादि संधि** का परिवार कहा गया क्योंकि इसमें प्रथम 'अय' है। उसी के नाम पर अप+आदि के अनुसार अत्यादि नाम उसका उचित ही है।

ब्रह्मा जी ने पुन: विचार किया और वर्ण-वंश के आदि वर्ण 'अ' की सहायता से तैंतीस व्यंजन-वर्णों की रचना स्वयं की। इस वंश के तीन परिवार हैं—स्पर्श, अन्तस्थ तथा ऊष्म।

1. **स्पर्श :** स्पर्श परिवार व्यंजनों की स्फोटक ध्वनियों से उत्पन्न हुआ। इनके उच्चारण में उन्होंने जीभ, कंठ, तालु, मूर्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों से वर्गीय-व्यंजनों की रचना की। 'क' वर्ग कंठ से उत्पन्न हुआ। 'च, ट, त' तथा 'प' वर्ग क्रमश: तालु, मूर्धा, दाँत तथा ओठ से उत्पन्न हुआ। इन वर्गीय व्यंजनों की संख्या 25 है।
2. **अन्तस्थ :** अन्तस्थ व्यंजनों को जीभ, तालु, दाँत तथा ओठों को परस्पर सटाकर उत्पन्न किया। इनके उच्चारण में जिह्वा का कहीं भी पूर्ण स्पर्श नहीं है। अत: इन्हें अर्द्ध-स्वर या अन्तस्थ व्यंजन कहा गया है। ये व्यंजन हैं- 'य, र, ल, व'।
3. **ऊष्म :** ऊष्म व्यंजनों को उच्चारण करते समय घर्षण होने से उनके मुख की वायु ऊष्म हो गई, जिससे 'श, ष, स, ह' चार व्यंजन वर्ण उत्पन्न हुए। इन्हें ऊष्म व्यंजन कहा गया है।

इस प्रकार स्वर तथा व्यंजनों की संख्या 11+33=44 हो गई।

व्यंजन संधि के लिए इन 33 व्यंजनों को ध्यान में रखना होगा। इनका 11 स्वरों से मेल होने को ही 'व्यंजन संधि' कहा गया है।

अंत में दो द्विगुण व्यंजन 'ड़, ढ़', दो अयोगवाह अनुस्वार (-ं) तथा विसर्ग (:) तथा चार संयुक्त व्यंजन 'क्ष, त्र, ज्ञ, श्र' मिलकर आठ वर्ण इसमें और शामिल हो गए। इस प्रकार

इनकी कुल संख्या 52 हो गई, किन्तु चार संयुक्त व्यंजनों को वर्ण-वंश (वर्ण-माला) में शामिल नहीं करने से इनकी संख्या 48 ही मानी गई है।

वर्ण-वंश की इस वंशावली को सुनकर मुझे भी आश्चर्य हुआ कि उन्होंने अपनी बात कितने सुंदर ढंग से रखी, इस बात को लेकर मैंने संधि के विषय में विचार किया और निष्कर्ष निकाला कि संभवत: इन्हीं वर्ण-वंश को आधार बनाकर संधि के तीन भेद किए गए हैं।

संधि भेद

स्वर संधि | व्यंजन संधि | विसर्ग संधि

तो आइए, इस विषय में हम और भी जानने का प्रयास करें कि ब्रह्मा जी द्वारा रचित वर्णों के इस मेल ने किस प्रकार शब्द-संसार की रचना की है।

रोचक तथ्य

1. **दीर्घ संधि :** दो सवर्ण अथवा सजातीय वर्णों के मेल को कहते हैं। अ+अ=आ, इ+इ=ई, उ+उ=ऊ, ऋ+ऋ=ॠ।
2. **गुण-संधि :** अपने से भिन्न वर्ण के मेल को गुण संधि कहते हैं। इसे असवर्ण अथवा विजातीय संधि कहते हैं। (अ/आ+इ/ई+ए) (अ/आ+उ+ऊ=ओ+आ=और)।
3. **वृद्धि-संधि :** अपने से भिन्न (गुण-संधि वाले) वर्णों के मेल को वृद्धि संधि कहते हैं। (अ/आ+ए/ऐ=ओ) (अ/आ+ओ/औ=औ)।
4. **यण संधि :** गुण-संधि तथा वृद्धि संधि में अ/आ से भिन्न स्वर वाले वर्णों का मेल होता है, यण संधि में इ, उ तथा ऋ अपने से भिन्न स्वर वर्णों का मेल होता है। (इ/ई के मेल से य, उ/ऊ के मेल से ब तथा ऋ के मेल से र् बनता है)।
5. **अयादि संधि :** यण-संधि में इ, उ, ऋ का मेल अपने से भिन्न स्वरों से होता है। अयादि संधि में ए, ऐ, ओ, औ (गुण संधि ए/आ तथा वृद्धि संधि-ऐ/औ) का मेल अपने से भिन्न स्वरों से होता है। (ए का अय्/ऐ का आय् ओ का अव् तथा औ का आव होता है)

║02║

संधि प्रकरण

2.1 संधि की अवधारणा

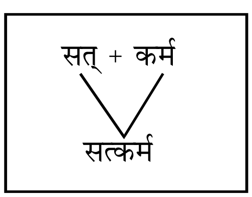
दो शब्द जब एक-दूसरे के पास होते हैं, तब उच्चारण की सुविधा के लिए पहले शब्द का अंतिम तथा दूसरे शब्द का प्रारंभिक वर्ण एक-दूसरे से इस प्रकार मिलते हैं कि उनका मूल स्वरूप परिवर्तित हो जाता है और वे मिलकर एक नई शब्द रचना करते हैं। उसे ही संधि कहा जाता है।

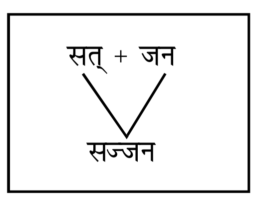
अत: ध्यान रहे 'न' तो शब्दों के मेल को संधि कहते हैं और 'न' अक्षरों के मेल को। दो अक्षरों के मेल को तो संयोग कहते हैं। संधि में दो अक्षरों का मेल तो होता है किन्तु जब तक दोनों अक्षर मिलकर तीसरा रूप धारण नहीं कर लेते, तब तक उसे संधि नहीं कह सकते।

आइए, संयोग और संधि के अंतर को विस्तार से समझें।

2.2 संयोग और संधि

किसी प्रसंग में एक शिक्षक ने मुझसे सहज ही पूछा— ''संयोग और संधि में क्या अंतर है?'' उन्होंने दो शब्द मेरे सामने इस समस्या को लेकर रखे।





शिक्षक का प्रश्न उचित ही था। इन दो शब्दों में किसे संयोग कहें, किसे संधि, यह स्पष्ट होना ही चाहिए। दोनों ही शब्दों में सत् है किन्तु एक में 'सत्' का प्रयोग यथावत बना हुआ है, जबकि दूसरे में 'त्' का 'ज्' हो गया। सर्वप्रथम मैंने संयोग तथा संधि के अंतर को स्पष्ट करने के लिए उन्हें बताया —

संयोग	संधि
1. संयोग में परस्पर मिलने वाले वर्णों में परिवर्तन (विकार) नहीं होता है; जैसे–'सत्+कर्म' में 'त्' में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। परिवर्तन केवल इतना हुआ है कि दोनों वर्ण मिलकर एक शिरो रेखा के अंतर्गत आ गए हैं।	1. संधि में परस्पर मिलने वाले वर्णों में परिवर्तन होता है; जैसे 'सत्+जन' में 'त्' का रूप परिवर्तित होकर 'ज्' हो गया।
2. संयोग में दोनों ही वर्ण (पूर्व वर्ण तथा पर वर्ण) अपनी अलग-अलग सत्ता बनाए रखते हैं। उनका रूप नहीं बदलता; जैसे- सत्कर्म में 'त्' (पूर्व वर्ण) तथा 'क' (पर वर्ण) की सत्ता पृथक्-पृथक् बनी हुई है।	2. संधि करते समय दोनों वर्णों (पूर्व वर्ण+पर वर्ण) की ध्वनियाँ एकाक्षर में परिणत हो जाती हैं अथवा कभी-कभी दोनों के बदले कोई तीसरी ध्वनि आ जाती है। कभी उच्चारण के अनुसार एक वर्ण में भी परिवर्तन हो जाता है; जैसे- यहाँ पूर्व वर्ण 'त्' का 'ज्' हो गया।

इस दृष्टि से पहला शब्द **सत्कर्म** संयोग का तथा दूसरा शब्द **सज्जन** संधि का उदाहरण है। संधि वहीं होती है जहाँ ध्वनि में परिवर्तन हो। यदि उनमें परिवर्तन नहीं होता है तो वहाँ संधि नहीं, संयोग है, ऐसा माना जाता है।

रोचक तथ्य

1. जब दो या दो से अधिक व्यंजनों के बीच में स्वर (अ) नहीं रहता तब उनका संयोग होता है किन्तु संधि सम्पूर्ण वर्णों में होती है। चाहे वे स्वर वर्ण हों, चाहे व्यंजन वर्ण; जैसे—

   सत्+कर्म - में व्यंजनों का संयोग हुआ है। यहाँ 'त्' में 'अ' स्वर नहीं है। 'त्' हलन्त है।

   सज्जन - में 'त्' 'ज' मिलकर ज्ज के रूप में परिवर्तित हुआ है। 'त्' का 'ज्' में विकार ही संधि के नाम से जाना जाता है।
2. ध्यान रहे, हिंदी के देशज शब्दों में संधि कदापि नहीं होती; जैसे— घुमा+आए में संधि होकर घुमाए नहीं होगा। संधि का प्रयोग संस्कृत के तत्सम् शब्दों में ही पाया जाता है।
3. बोलियों में स्वर संयोग की स्थिति अवश्य देखने को मिलती है।

2.3 संधि की चार स्थितियाँ

संधि के कारण ध्वनियों के वर्णों में जो परिवर्तन होता है, उनकी प्राय: चार स्थितियाँ देखने को मिलती हैं-

1. पूर्व ध्वनि में परिवर्तन किन्तु पर ध्वनि (बाद की ध्वनि) में नहीं; जैसे—
   सत्+जन = सज्जन
   यहाँ 'त्' पूर्व ध्वनि है जिस पर परिवर्तन होकर 'ज्' रूप हो गया है। पर ध्वनि 'ज' यथावत् है।
2. पूर्व-ध्वनि में कोई परिवर्तन नहीं, किन्तु बाद की ध्वनि (पर ध्वनि) में परिवर्तन; जैसे—
   मही+इन्द्र = महीन्द्र
   यहाँ 'ही' पूर्व ध्वनि में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। पर ध्वनि 'इ' में परिवर्तन हुआ है।
3. पूर्व ध्वनि और पर ध्वनि (दोनों ध्वनियों) में परिवर्तन; जैसे—
   उत्+हरण = उद् + धरण = उद्धरण
   यहाँ रेखांकित दोनों ध्वनियो ('त्' का 'द्' तथा 'ह' का 'ध') में परिवर्तन हुआ है।
4. दोनों ध्वनियाँ मिलकर तीसरी ध्वनि के रूप में आती हैं; जैसे—
   देव + इन्द्र
   दे + व् + अ + इ + न् + द् + र
   'ए'
   दे+व+ए+न्+द्र = देवेन्द्र

विशेष

यदि पूर्व एवं पर-दोनों प्रकार की ध्वनियों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है, तो इसे वर्ण-संयोग कहा जाता है, वर्ण-संधि नहीं। संधि कहलाने के लिए उपरोक्त चार स्थितियाँ निर्मित होती हैं। आइए, संधि के इस विवेचन को पंच-सोपान के आधार पर और अधिक स्पष्ट जानने का यत्न करें।

2.4 संधि के पंच-सोपान

जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया गया है, संधि का व्यवहारिक ज्ञान पंच-सोपान पर आधारित है— 1. शब्द, 2. संधि-विच्छेद, 3. वर्ण-विच्छेद, 4. वर्ण-परिवर्तन, 5. संधि पद। इन पंच-सोपानों में शब्द और संधि-पद एक-दूसरे के पर्यायवाची शब्द जैसे लगते हैं किन्तु ऐसा नहीं है। शब्द का संबंध शुद्ध कोशीय शब्दों से है जबकि संधि पद का संबंध उस शब्द के प्रयोग पर आधारित होता है। संधि किन शब्दों की करना है, यह प्रथम सोपान-शब्द का सूचक है तथा पंचम सोपान संधि-पद संधि की प्रक्रिया के बाद निर्मित शब्द का सूचक है। द्वितीय सोपान संधि-विच्छेद का है।

संधि विच्छेद

संधि-युक्त शब्द को फिर से संधि पूर्व रूप में पृथक्-पृथक् करके रखना 'संधि विच्छेद' कहलाता है। इसको उदाहरण सहित जानें—

	(क)		(ख)	
1.	हिमालय	=	हिम+आलय	(स्वर संधि)
2.	जगन्नाथ	=	जगत्+नाथ	(व्यंजन संधि)
3.	पुनर्जन्म	=	पुन:+जन्म	(वसर्ग संधि)

यहाँ 'क' में संधि-युक्त शब्द है तथा 'ख' में संधि-विच्छेद करके उस शब्द को दर्शाया गया है। जैसा कि उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है, यह मेल तीन प्रकार से हुआ है।

1. **स्वर संधि के अनुसार —**

शब्द-हिमालय

संधि विच्छेद-हिम+आलय

वर्ण-विच्छेद - ह् + इ + म् + अ + आ + ल + य

पूर्व पद उत्तर पद

'आ' (संधि वर्ण)

यहाँ 'हिम' शब्द के (म् + अ) का 'अ' तथा 'आलय' शब्द का 'आ' मिलकर 'मा' बना है। यह वर्ण विच्छेद द्वारा ज्ञात होता है। अत: संधि विच्छेद वर्ण-विच्छेद पर आधारित है।

2. **व्यंजन संधि का उदाहरण —**

शब्द-जगन्नाथ

संधि विच्छेद-जगत् + नाथ

वर्ण-विच्छेद-ज् + अ + ग् + अ + त् + न + आ + थ

पूर्व पद उत्तर पद

न्+ना = न्ना

यहाँ 'त्+न' दोनों व्यंजनों का मेल होने से त् का न् हो गया है। यह बात हमें वर्ण-विच्छेद द्वारा ज्ञात हो रही है। अत: संधि पदों की अवधारणा को समझने के लिए हमें **वर्ण विच्छेद** पर भी ध्यान देना होगा। इसका विस्तार से वर्णन 'हिंदी वर्ण और वर्तनी' में किया गया है।

3. **विसर्ग संधि का उदाहरण —**

शब्द-पुनर्जन्म

संधि विच्छेद-पुन: + जन्म

वर्ण विच्छेद- प् + उ + न् +अ+ (:) + ज + न् + म

पूर्व पद उत्तर पद

र्

संधि का नियम है कि यदि विसर्ग के पूर्व 'अ' अथवा 'आ' से भिन्न कोई स्वर हो और

विसर्ग का मेल किसी स्वर अथवा व्यंजन के किसी वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ग से हो तो विसर्ग 'र्' में बदल जाता है।

उपर्युक्त उदाहरण में विसर्ग (:) का 'च' वर्ग के तीसरे वर्ण 'ज' से मेल हो रहा है, अत: यह विसर्ग-संधि है।

वर्ण-विच्छेद

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि बिना वर्ण-विच्छेद किए संधि की अवधारणा स्पष्ट नहीं हो सकती। अत: उसे भी जानें।

वर्ण विच्छेद से आशय है- शब्दगत वर्णों को उनके स्वाभाविक क्रम से पृथक्-पृथक् करना। वर्ण विच्छेद करते समय एक बात विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए कि हिंदी वर्णमाला में पंचमाक्षर (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) का रूप अनुस्वार के रूप में जहाँ-जहाँ मिलता है, वर्ण-विच्छेद के समय उसे पंचमाक्षर में ही लिखा जाए; जैसे—

पंक्ति - प् + अ+ ङ् + क् + त् + इ

संधि-वर्ण

पूर्व-पद के अंतिम तथा उत्तर पद के प्रथम वर्ण की ध्वनियों के वर्णों में जो परिवर्तन होता है उसे संधि वर्ण कहते हैं। पूर्व उदाहरणों के अनुसार—

स्वर-संधि	-	अ+आ	= आ (संधि वर्ण)
व्यंजन संधि	-	त्	= त् का न (संधि वर्ण)
विसर्ग संधि	-	(:) + ज	= विसर्ग का र् (संधि वर्ण)

इस प्रकार संधि-पदों को संधि-विच्छेद, वर्ण-विच्छेद तथा संधि-वर्ण परिवर्तन की सहायता से बहुत आसानी से समझा जा सकता है। इस संबंध में उदाहरण सहित विस्तार से वर्णन हम आगे के अध्यायों में करेंगे।

03

स्वर संधि

अवधारणा

दो स्वरों के मेल से जो विकार (रूप परिवर्तन) होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं।

स्वर-संधि के भेद

दीर्घ | गुण | वृद्धि | यण् | अयादि

सवर्ण स्वर (दीर्घ) | असवर्ण स्वर (गुण, वृद्धि, यण्, अयादि)

संधि के नियमानुसार स्वर-संधि इन पाँचों भेदों में होने वाले परिवर्तनों को निम्नांकित तालिका के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

स्वर संधि संबंधी तालिका

मूल स्वर	दीर्घादेश	गुणादेश	वृद्ध्यादेश	यणादेश
अ	आ	–	–	–
इ	ई	ए	ऐ	य्
उ	ऊ	ओ	औ	व्
ऋ	–	अर	आर्	र्

विशेष

1. दीर्घ-स्वर संधि के अंतर्गत 'ई + इ' तथा 'ऊ + उ' वाले शब्द संस्कृत में ही अल्प-मात्रा में पाए जाते हैं। अतः इन शब्दों का प्रचलन हिंदी में भी अपेक्षाकृत कम पाया जाता है।
2. गुण संधि के अंतर्गत भी 'अ/आ + उ' तथा 'ऊ' के उदाहरण बहुत कम मात्रा में देखने को मिलते हैं।
3. वृद्धि संधि के उदाहरण भी नगण्य हैं। 'आ+ऐ=ऐ' का उदाहरण ढूँढ़ने पर भी उपलब्ध नहीं हुआ।
4. यण् संधि के अंतर्गत 'इ + अन्य स्वर के उदाहरण ही अधिक मात्रा में उपलब्ध होते हैं।

5. स्वर संधि के पाँच भेदों में से चार प्रकार के रूप तो स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। अयादि संधि संस्कृत की मूल धातु के आधार पर होती है। अत: हिंदी में इस संधि के शब्दों को यथावत ग्रहण किया जाना ही सुविधाजनक रहता है। इस दृष्टि से कुछ वैयाकरण-आचार्यों ने हिंदी में स्वर-संधि के अंतर्गत चार भेदों को ही मानने का आग्रह किया है।
6. 'ऋ' से प्रारंभ एवं अंत होने वाले शब्द भी हिंदी में अँगुलियों पर गिने जाने वाले पाए जाते हैं। अत: 'अ' अथवा 'आ + ऋ' के अतिरिक्त 'ऋ' के अन्य शब्द हिंदी में उपलब्ध नहीं होते हैं।
7. सवर्ण स्वर से आशय समान स्वर वर्णों से है तथा असवर्ण स्वर से आशय असमान स्वर-वर्णों से है, जैसा कि तालिका में दर्शाया गया है।

3.1 दीर्घ संधि

नियम— जब दो सवर्ण ह्रस्व या दीर्घ स्वर परस्पर निकट होने के कारण मिल जाते हैं, तो दोनों के मिलने पर दीर्घ स्वर हो जाता है। स्वर संधि के इस विकार को **दीर्घ संधि** कहते हैं। मूल स्वर चार हैं— 'अ, इ, उ, ऋ'। दीर्घ संधि में 'अ, इ, उ' की संधि की जाती है। 'ऋ' का प्रयोग गुण संधि के अंतर्गत किया जाता है।

तालिका-दीर्घ संधि

ऌऽ	**अ**	**आ**	**इ**	**ई**	**उ**	**ऊ**	**ऋ**
अ	आ	आ	–	–	–	–	–
आ	आ	आ	–	–	–	–	–
इ	–	–	ई	ई	–	–	–
ई	–	–	ई	ई	–	–	–
उ	–	–	–	–	ऊ	ऊ	–
ऊ	–	–	–	–	ऊ	ऊ	–
ऋ	–	–	–	–	–	–	ॠ

'आ' स्वर
1. अ + अ = आ
2. अ + आ = आ
3. आ + ऊ = आ
4. आ + आ = आ

'ई' स्वर
5. इ + इ = ई
6. इ + ई = ई
7. ई + इ = ई
8. ई + ई = ई

'ऊ' स्वर
9. उ + उ = ऊ
10. उ + ऊ = ऊ
11. ऊ + उ = ऊ
12. ऊ + ऊ = ऊ

विशेष

'ऋ' की संधि का प्रयोग हिंदी में बहुत कम व्यवहृत होता है। इसका प्रयोग संस्कृत भाषा में अधिक है।

दीर्घ संधि—

3.1.1 सूत्र : ह्रस्व स्वर+ह्रस्व स्वर = दीर्घ स्वर

(अ + अ = आ)

नियम— (1)

'अ' के बाद 'अ' हो तो दोनों मिलकर 'आ' हो जाते हैं।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'आ'
संधि विच्छेद	– अ+अ

शब्द – परमार्थ

संधि विच्छेद = परम् + अर्थ

वर्ण विच्छेद = प्+अ+र्+अ+म्+अ + अ+र्+थ+अ

पूर्व पद \/ उत्तर पद

आ

वर्ण परिवर्तन = प + र +म् + आ+र्+थ

मा

संधि पद = परमार्थ

(यहाँ पूर्वपद का अंतिम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'आ' में बदल गया है)

उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें।

संधि-पद	**सूर्यास्त**	**कल्पान्त**	**मुरारि**	**दिनांक**
संधि-विच्छेद	सूर्य+अस्त	कल्प+अन्त	मुर+अरि	दिन+अंक
संधि-पद	**स्वर्णावसर**	**दीपावली**	**अन्यान्य**	**सावधान**
संधि-विच्छेद	स्वर्ण+अवसर	दीप+अवली	अन्य+अन्य	स+अवधान

3.1.2 सूत्र : ह्रस्व स्वर+दीर्घ स्वर = दीर्घ स्वर

(अ + आ = आ)

नियम— (2)

'अ' के बाद 'आ' हो तो दोनों मिलकर 'आ' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'आ'
संधि वर्ण	– अ+आ

शब्द – शिवालय

संधि विच्छेद = शिव+आलय

वर्ण विच्छेद = श्+इ+व+अ+आ+ल्+अ+य+अ

पूर्व पद आ उत्तर पद

वर्ण परिवर्तन = शि+व+ आ+ल+य

वा

संधि पद = शिवालय

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'अ' ह्रस्व स्वर तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'आ' (दीर्घ स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'आ' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास कीजिए–

संधि-पद	**सत्याग्रह**	**भोजनालय**	**रामाधार**	**परमानन्द**
संधि-विच्छेद	सत्य+आग्रह	भोजन+आलय	राम+आधार	परम+आनन्द
संधि-पद	**रत्नाकर**	**छात्रावास**	**धर्मात्मा**	**कुशासन**
संधि-विच्छेद	रत्न+आकर	छात्र+आवास	धर्म+आत्मा	कुश+आसन

3.1.3 सूत्र : दीर्घ स्वर+ह्रस्व स्वर = दीर्घ स्वर

(आ + अ = आ)

नियम— (3)

दीर्घ 'आ' (ा) के बाद ह्रस्व 'अ' हो तो दोनों मिलकर 'आ' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	–	'आ'
संधि वर्ण	–	आ+अ

शब्द – परीक्षार्थी

संधि विच्छेद = परीक्षा+अर्थी

वर्ण विच्छेद = प्+अ+र्+ई+क्ष्+ आ+अ+र्+थ्+ई

पूर्व पद उत्तर पद

आ

वर्ण परिवर्तन = परीक्ष्+आ+र्थी

क्षा

संधि पद = परीक्षार्थी

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'आ' (दीर्घ स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'आ' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास कीजिए-

संधि-पद	**सीमान्त**	**विद्यार्थी**	**भाषान्तर**	**जिलाधीश**
संधि-विच्छेद	सीमा+अन्त	विद्या+अर्थी	भाषा+अंतर	जिला+अधीश
संधि-पद	**तथापि**	**मायाधीन**	**युवावस्था**	**दीक्षान्त**
संधि-विच्छेद	तथा+अपि	माया+अधीन	युवा+अवस्था	दीक्षा+अन्त

3.1.4 सूत्र : दीर्घ स्वर+दीर्घ स्वर = दीर्घ स्वर

(आ + आ = आ)

नियम— (4)

दीर्घ 'आ' के बाद दीर्घ 'आ' हो तो दोनों मिलकर 'आ' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	–	'आ'
संधि वर्ण	–	आ+आ

शब्द – वार्तालाप

संधि विच्छेद = वार्ता+आलाप

वर्ण विच्छेद = व+आ+र्+त्+आ+आ+ल्+आ+प्+अ

पूर्व पद \ / उत्तर पद

आ

वर्ण परिवर्तन = वा+र्+ ता+आ+ ला+प

तां

संधि पद = वार्तालाप

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'आ' (दीर्घ स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'आ' (दीर्घ स्वर) मिलकर 'आ' दीर्घ स्वर में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें

संधि-पद	**वार्तालाप**	**महाशय**	**महात्मा**	**सदानन्द**
संधि-विच्छेद	वार्ता+आलाप	महा+आशय	महा+आत्मा	सदा+आनन्द
संधि-पद	**विद्यालय**	**विद्यारम्भ**	**दयानन्द**	**करुणाकर**
संधि-विच्छेद	विद्या+आलय	विद्या+आरम्भ	दया+आनन्द	करुणा+आकर

3.1.5 सूत्र : ह्रस्व स्वर+ह्रस्व स्वर = दीर्घ स्वर

(इ + इ = ई)

नियम— (5)

ह्रस्व 'इ' (ि) के बाद ह्रस्व 'इ' (ि) हो तो दोनों मिलकर दीर्घ 'ई' (ी) हो जाते हैं।

उदाहरण —

संधि स्वर	–	'ई'
संधि वर्ण	–	इ+इ

शब्द – रवीन्द्र

संधि विच्छेद = रवि+इन्द्र

वर्ण विच्छेद = र्+अ+व्+इ + इ+न्+द्+र्+अ

पूर्व पद उत्तर पद

ई

वर्ण परिवर्तन = र+व्+ई+न्द्र

वी

संधि पद = रवीन्द्र

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'इ' (स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'इ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'ई' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें

संधि-पद	**प्रतीति**	**कवीन्द्र**	**अभीष्ट**	**अतीव**
संधि-विच्छेद	प्रति+इति	कवि+इन्द्र	अभि+इष्ट	अति+इव
संधि-पद	**हरीच्छा**	**रवीन्द्र**	**मुनीन्द्र**	**परीक्षा**
संधि-विच्छेद	हरि+इच्छा	रवि+इन्द्र	मुनि+इन्द्र	परि+इक्षा

3.1.6 सूत्र : ह्रस्व स्वर+दीर्घ स्वर = दीर्घ स्वर

(इ + ई = ई)

नियम— (6)

'इ' (ि) के बाद दीर्घ 'ई' (ी) हो तो दोनों मिलकर दीर्घ स्वर 'ई' (ी) हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'ई'
संधि वर्ण	– इ+ ई

शब्द – गिरीश

संधि विच्छेद = गिरि + ईश

वर्ण विच्छेद = ग् + इ + र् + इ + ई + श् + अ

पूर्व पद \/ उत्तर पद

ई

वर्ण परिवर्तन = गि + र् + इ+ ई + श

री

संधि पद = गिरीश

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'इ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'ई' (दीर्घ स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'ई' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**कवीश्वर**	**प्रतीक्षा**	**कपीश**	**अधीश्वर**
संधि-विच्छेद	कवि+ईश्वर	प्रति+ईक्षा	कपि+ईश	अधि+ईश्वर
संधि-पद	**हरीश**	**परीक्षित**	**नारीश्वर**	
संधि-विच्छेद	हरि+ईश	परि+ईक्षित	नारि+ईश्वर	

3.1.7 सूत्र : दीर्घ स्वर+ह्रस्व स्वर = दीर्घ स्वर

(ई + इ = ई)

नियम— (7)

दीर्घ 'ई' (ी) के बाद ह्रस्व 'इ' (ि) हो तो दोनों मिलकर दीर्घ स्वर 'ई' (ी) हो जाते हैं।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'ई'
संधि वर्ण	– ई + इ

शब्द – महीन्द्र

संधि विच्छेद = मही + इन्द्र

वर्ण विच्छेद = म् + ह् + ई + इ + न् + द् + अ+ र्

पूर्व पद उत्तर पद

ई

वर्ण परिवर्तन = म + ह + ई + न्द्र

ही

संधि पद = महीन्द्र

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'ई' (दीर्घ स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'इ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'ई' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**सुधीन्द्र**			
संधि-विच्छेद	सुधि+इन्द्र			
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.1.8 सूत्र : दीर्घ स्वर+दीर्घ स्वर = दीर्घ स्वर
(ई + ई = ई)

नियम— (8)

दीर्घ 'ई' (ी) के बाद दीर्घ 'ई' (ी) हो तो दोनों मिलकर दीर्घ 'ई' (ी) हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'ई'
संधि वर्ण	– ई + ई

शब्द – रजनीश

संधि विच्छेद = रजनी + ईश

वर्ण विच्छेद = र् + अ + ज् + अ + न् + ई + ई + श् + अ

पूर्व पद उत्तर पद

ई

वर्ण परिवर्तन = र + ज + न् + ई +ई+ श

नी

संधि पद = रजनीश

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'ई' (दीर्घ स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'ई' (दीर्घ स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'ई' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**नदीश**	**सतीश**	**भारतीश्वर**	**श्रीश**
संधि-विच्छेद	नदी+ईश	सती+ईश	भारती+ईश्वर	श्री+ईश
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.1.9 सूत्र : ह्रस्व स्वर+ह्रस्व स्वर = दीर्घ स्वर

(उ + उ = ऊ)

नियम— (9)

ह्रस्व 'उ' (ु) के बाद ह्रस्व 'उ' (ु) हो तो दोनों मिलकर दीर्घ 'ऊ' (ू) हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'ऊ'
संधि वर्ण	– उ + उ

शब्द – भानूदय

संधि विच्छेद = भानु + उदय

वर्ण विच्छेद = भ् + आ + न् + उ + उ + द् + अ + य् + अ

पूर्व पद उत्तर पद

ऊ

वर्ण परिवर्तन = भा + न् + ऊ + द + य

नू

संधि पद = भानूदय

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'उ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'उ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'ऊ' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**अनूदित**	**लघूत्तर**	**सूक्ति**	**गुरूपदेश**
संधि-विच्छेद	अनु+उदित	लघु+उत्तर	सु+उक्ति	गुरु+उपदेश
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.1.10 सूत्र : ह्रस्व स्वर+दीर्घ स्वर = दीर्घ स्वर

(उ + ऊ = ऊ)

नियम— (10)

ह्रस्व 'उ' (ु) के बाद यदि दीर्घ 'ऊ' (ू) हो तो दोनों मिलकर दीर्घ 'ऊ' (ू) हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'ऊ'
संधि वर्ण	– उ + ऊ

शब्द – लघूर्मि

संधि विच्छेद = लघु + ऊर्मि

वर्ण विच्छेद = ल् + अ + घ् + उ + ऊ + र् + म् + इ

पूर्व पद — उत्तर पद

ऊ

वर्ण परिवर्तन = ल + घ् + ऊ + र्मि

घू

संधि पद = लघुर्मि

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'उ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'ऊ' (दीर्घ स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'ऊ' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**सिन्धूर्मि**	**मन्जूषा**		
संधि-विच्छेद	सिन्धु+उर्मि	मन्जु+उषा		
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.1.11 सूत्र : <u>दीर्घ स्वर+ह्रस्व स्वर</u> = दीर्घ स्वर

(ऊ + उ = ऊ)

नियम— (11)

यदि दीर्घ 'ऊ' (ू) के बाद ह्रस्व 'उ' (ु) आए तो दोनों मिलकर दीर्घ 'ऊ' (ू) हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	–	'ऊ'
संधि वर्ण	–	ऊ + उ
शब्द	–	वधूत्सव
संधि विच्छेद	=	वधू + उत्सव
वर्ण विच्छेद	=	व् + अ + ध् + ऊ + उ + त् + स् + अ + व् + अ
		पूर्व पद ऊ उत्तर पद
वर्ण परिवर्तन	=	व + ध् + ऊ + त्सव
		धू
संधि पद	=	वधूत्सव

विशेष –

हिंदी में ऐसे शब्दों का प्रयोग नगण्य है।

3.1.12 सूत्र – दीर्घ स्वर + दीर्घ स्वर = दीर्घ स्वर

नियम : 12

यदि दीर्घ स्वर 'ऊ' (ू) के बाद दीर्घ स्वर ऊ (ू) आए तो दोनों मिलकर दीर्घ 'ऊ' (ू) हो जाते हैं।

विशेष : हिंदी में ऐसे शब्दों के उदाहरण देखने को नहीं मिलते हैं।

असवर्ण स्वर

3.2 गुण संधि

सूत्र : (‘ए’, ‘ओ’, ‘अर्’ को गुण कहते हैं)

नियम

जब ‘अ’ या ‘आ’ के बाद ‘इ’, ‘ई’, ‘उ’, ‘ऊ’ अथवा ‘ऋ’ आए तो दोनों के मेल से उनके स्थान पर ‘ए’, ‘ओ’ अथवा ‘अर्’ हो जाता है। स्वर संधि के इस विकार को गुण संधि कहते हैं। इसे इस प्रकार भी समझा जा सकता है कि जब दो भिन्न स्वरों के मेल से तीसरा भिन्न स्वर बनता है, तो उसे गुण संधि कहते हैं। इसे निम्नांकित चक्र से समझा जा सकता है।

तालिका–गुण संधि

[illegible]	**इ**	**ई**	**उ**	**ऊ**	**ऋ**
अ	ए	ए	ओ	ओ	अर्
आ	ए	ए	ओ	ओ	अर्

‘ए’ स्वर	1. अ + इ = ए			7. अ + ऊ = ओ
	2. अ + ई = ए			8. आ + ऊ = ओ
	3. आ + इ = ए		**‘अर्’ स्वर**	9. अ + ऋ = अर्
	4. आ + ई = ए			10. आ + ऋ = अर्
‘ओ’ स्वर	5. अ + उ = ओ			
	6. आ + उ = ओ			

रोचक तथ्य : गुण संधि को स्मरण रखने का सूत्र—

अ, आ   इ, ई, उ, ऊ, ऋ   (ह्रस्व/दीर्घ स्वर)

ए ^ ओ   अ, इ, उ

3.2.1 सूत्र : अ + इ = ए

नियम— (13)

'अ' के बाद यदि 'इ' हो तो दोनों मिलकर 'ए' (े) होता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'ए'
संधि वर्ण	– अ + इ

शब्द – सुरेन्द्र

संधि विच्छेद = सुर + इन्द्र

वर्ण विच्छेद = स् + उ + र् + अ + इ + न् + द् + र् + अ

पूर्व पद | उत्तर पद

ए

वर्ण परिवर्तन = सु + र् + ए + न्द्र

रे

संधि पद = सुरेन्द्र

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'इ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर स्वर 'ए' हो गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**देवेन्द्र**	**गजेन्द्र**	**महेन्द्र**	**भारतेन्द**
संधि-विच्छेद	देव+इन्द्र	गज+इन्द्र	मह+इन्द्र	भारत+इन्दु
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.2.2 सूत्र : अ + ई = ए

नियम— (14)

'अ' के बाद यदि दीर्घ 'ई' हो तो दोनों मिलकर 'ए' (े) होता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'ए'
संधि वर्ण	– अ + ई

शब्द – सुरेश

संधि विच्छेद = सुर + ईश

वर्ण विच्छेद = स् + उ + र् + अ + ई + श् + अ

पूर्व पद — उत्तर पद

ए

वर्ण परिवर्तन = सु + र् + ए + श

रे

संधि पद = सुरेश

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'ई' (दीर्घ स्वर) मिलकर 'ए' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**नरेश**	**गणेश**	**देवेश**	**परमेश्वर**
संधि-विच्छेद	नर+ईश	गण+ईश	देव+ईश	परम+ईश्वर
संधि-पद	**देवेश**			
संधि-विच्छेद	देव+ईश			

3.2.3 सूत्र : आ + इ = ए

नियम— (15)

दीर्घ 'आ' के बाद यदि 'इ' हो तो दोनों मिलकर 'ए' (े) हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'ए'
संधि वर्ण	– आ + इ

शब्द – रमेन्द्र

संधि विच्छेद = रमा + इन्द्र

वर्ण विच्छेद = र् + अ् + म् + आ + इ + न् + द् + र् + अ

पूर्व पद — ए — उत्तर पद

संधि वर्ण = र + म् + ए + न्द्र

मे

संधि पद = रमेन्द्र

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'आ' (दीर्घ स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'इ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर 'ए' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**महेन्द्र**	**राजेन्द्र**	**यथेष्ट**	
संधि-विच्छेद	महा+इन्द्र	राजा+इन्द्र	यथा+इष्ट	
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.2.4 सूत्र : आ + ई = ए

नियम— (16)

दीर्घ 'आ' के बाद यदि 'ई' हो तो दोनों मिलकर 'ए' (े) हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'ए'
संधि वर्ण	– आ + ई

शब्द – राकेश

संधि विच्छेद = राका + ईश

वर्ण विच्छेद = र् + आ + क् + आ + ई + श् + अ

पूर्व पद ए उत्तर पद

वर्ण परिवर्तन = रा + क् + ए + श

के

संधि पद = राकेश

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'आ' (दीर्घ स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'ई' (दीर्घ स्वर) मिलकर स्वर 'ए' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**महेश्वर**	**रमेश**	**लंकेश**	**रत्नेश**
संधि-विच्छेद	महा+ईश्वर	रमा+ईश	लंका+ईश	रत्ना+ईश
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.2.5 सूत्र : अ + उ = ओ

नियम— **(17)**

'अ' (ह्रस्व) के बाद यदि ह्रस्व 'उ' आए तो दोनों मिलकर 'ओ' (ो) हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'ओ'
संधि वर्ण	– अ + उ

शब्द – वेदोपदेश

संधि विच्छेद = वेद + उपदेश

वर्ण विच्छेद = व्+ए+द्+अ+ उ+प्+अ+द्+ए+श्+अ

पूर्व पद ... उत्तर पद

ओ

वर्ण परिवर्तन = वे + द् + ओ + प + दे + श

दो

संधि पद = वेदोपदेश

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'उ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर 'ओ' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**परोपकार**	**पुरुषोत्तम**	**सर्वोदय**	**वीरोचित**
संधि-विच्छेद	पर+उपकार	पुरुष+उत्तम	सर्व+उदय	वीर+उचित
संधि-पद	**वार्षिकोत्सव**	**भाग्योदय**	**लोकोक्ति**	**सर्वोत्तम**
संधि-विच्छेद				

3.2.6 सूत्र : अ + ऊ = ओ

नियम— (18)

'अ' के बाद यदि दीर्घ 'ऊ' (ू) हो तो दोनों मिलकर 'ओ' (ो) हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'ओ'
संधि वर्ण	– अ + ऊ

शब्द – सूर्योष्मा

संधि विच्छेद = सूर्य + ऊष्मा

वर्ण विच्छेद = स् + ऊ + र् + य् + अ् + ऊ + ष् + म् + आ

पूर्व पद \/ उत्तर पद

ओ

वर्ण परिवर्तन = स् + र् + य् + ओ + ष् + मा

यो

संधि पद = सूर्योष्मा

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'ऊ' (दीर्घ स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'ओ' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**जलोर्मि**	**नवोढ़ा**		
संधि-विच्छेद	जल+ऊर्मि	नव+ऊढ़ा		
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.2.7 सूत्र : आ + उ = ओ

नियम— (19)

'आ' के बाद यदि 'उ' हो तो दोनों मिलकर 'ओ' (ो) हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'ओ'
संधि वर्ण	– आ + उ

शब्द – विद्योन्नति

संधि विच्छेद = विद्या + उन्नति

वर्ण विच्छेद = व्+इ+द्+य् + आ + उ +न+न्+अ+त्+इ

पूर्व पद उत्तर पद

ओ

वर्ण परिवर्तन = वि + द् + य + ओ + उन्नति

यो

संधि पद = विद्योन्नति

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'आ' (दीर्घ स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'उ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर 'ओ' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**महोत्सव**	**गंगोदय**	**यथोचित**	**आत्मोसर्ग**
संधि-विच्छेद	महा+उत्सव	गंगा+उदय	यथा+उचित	आत्मा+उत्सर्ग
संधि-पद	**महोदय**			
संधि-विच्छेद	महा+उदय			

3.2.8 सूत्र : आ + ऊ = ओ

नियम— (20)

दीर्घ ‘आ’ के बाद यदि दीर्घ ‘ऊ’ आए तो दोनों मिलकर ‘ओ’ (ो) हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– ‘ओ’
संधि वर्ण	– आ + ऊ

शब्द – गंगोर्मि

संधि विच्छेद = गंगा + ऊर्मि

वर्ण विच्छेद = ग्+अ+ङ्+ग्+ आ + ऊ +र्+म्+इ

पूर्व पद — उत्तर पद

ओ

वर्ण परिवर्तन = ग + ङ + ग् + ओ + र्मि

गो

संधि पद = गंगोर्मि

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण ‘आ’ (दीर्घ स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण ‘ऊ’ (ह्रस्व स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर ‘ओ’ में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**यमुनोर्मि**			
संधि-विच्छेद	यमुना+उर्मि			
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.2.9 सूत्र : अ + ऋ = अर्

नियम— **(21)**

'अ' के बाद यदि 'ऋ' आए तो दोनों मिलकर 'अर्' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'अर्'
संधि वर्ण	– अ + ऋ

शब्द – देवर्षि

संधि विच्छेद = देव + ऋषि

वर्ण विच्छेद = द् + ए + व् + अ + ऋ + ष् + इ

पूर्व पद उत्तर पद

अर्

वर्ण परिवर्तन = दे + व्+अ र् + षि

वे र्षि

संधि पद = देवर्षि

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'ऋ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'अर्' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**ब्रह्मर्षि**	**सप्तर्षि**	**वेदर्षि**	**राजर्षि**
संधि-विच्छेद	ब्रह्म+ऋषि	सप्त+ऋषि	वेद+ऋषि	राज+ऋषि
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.2.10 सूत्र : आ + ऋ = अर्

नियम— (22)

'आ' के बाद यदि 'ऋ' आए तो दोनों मिलकर 'अर्' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'अर्'
संधि वर्ण	– आ + ऋ

शब्द – महर्षि

संधि विच्छेद = महा + ऋषि

वर्ण विच्छेद = म् + अ + ह् + आ + ऋ + ष् + इ

पूर्व पद   उत्तर पद

अर्

संधि स्वर = म् + ह् + अ + र् + षि (ह्+अ=ह, र्+षि=:र्षि)

हर्षि

संधि पद = महर्षि

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'आ' (दीर्घ स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'ऋ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'अर्' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**राजर्षि**			
संधि-विच्छेद	राजा+ऋषि			
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

असवर्ण स्वर

3.3 वृद्धि संधि

नियम—

1. जब 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' (गुण स्वर) आए तो दोनों के मेल से 'ऐ' हो जाता है।
2. जब 'अ' या 'आ' के बाद 'ओ' या 'औ' (गुण स्वर) आए तो दोनों के मेल से 'औ' हो जाता है।

इस प्रकार 'ऐ' तथा 'औ' हो जाना वृद्धि संधि कहलाता है। इस नियम के अनुसार 'ए' की 'ऐ' में तथा 'ओ' की 'औ' में वृद्धि हो गई। अत: इसका वृद्धि संधि नाम सार्थक है।

तालिका-वृद्धि संधि

[illegible]	**ए**	**ऐ**	**ओ**	**औ**
अ	ऐ	ऐ	औ	औ
आ	ऐ	ऐ	औ	औ

'ऐ' स्वर			**'औ' स्वर**		
	1.	अ + ए = ऐ		5.	अ + ओ = औ
	2.	आ + ए = ऐ		6.	अ + औ = औ
	3.	अ + ऐ = ऐ		7.	आ + औ = औ
	4.	आ + ऐ = ऐ		8.	आ + औ = औ

रोचक तथ्य : वृद्धि संधि को स्मरण रखने का सूत्र—

अ, आ   ए, ऐ, ओ, औ   (अ-ह्रस्व/दीर्घ के साथ+गुण संधि)

ऐ ऐ

3.3.1 सूत्र : अ + ए = ऐ

नियम— (23)

'अ' के बाद यदि 'ए' आए तो दोनों मिलकर 'ऐ' (ै) हो जाते हैं।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'ऐ'
संधि वर्ण	– अ + ए

शब्द – लोकैषणा

संधि विच्छेद = लोक + एषणा

वर्ण विच्छेद = ल् + ओ + क् + अ + ए + ष् + अ + ण् + आ

पूर्व पद उत्तर पद

ऐ

संधि स्वर = लो + क् + ऐ + ष + णा (क्+अ=क, क+ऐ=कै)

कै

संधि पद = लोकैषणा

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'ए' (ह्रस्व स्वर) मिलकर स्वर 'ऐ' में बदल गया है।)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**एकैक**	**जीवैषणा**		
संधि-विच्छेद	एक+एक	जीव+एषणा		
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.3.2 सूत्र : आ + ए = ऐ

नियम— (24)

यदि 'आ' के बाद 'ए' आए तो दोनों मिलकर 'ऐ' (ै) हो जाते हैं।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'ऐ'
संधि वर्ण	– आ + ए

शब्द – सदैव

संधि विच्छेद = सदा + एव

वर्ण विच्छेद = स् + अ + द् + आ + ए + व् + अ

पूर्व पद — उत्तर पद → ऐ

संधि स्वर = स + द् + ऐ + व → दै

संधि पद = सदैव

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'आ' (दीर्घ स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'ए' (ह्रस्व स्वर) मिलकर स्वर 'ऐ' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**वसुधैव**	**तथैव**		
संधि-विच्छेद	वसुधा+एव	तथा+एव		
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.3.3 सूत्र : अ + ऐ = ऐ

नियम— (25)

यदि 'अ' के बाद 'ऐ' आए तो दोनों मिलकर 'ऐ' हो जाते हैं।

उदाहरण —

संधि स्वर	–	'ऐ'
संधि वर्ण	–	अ + ऐ

शब्द	–	मतैक्य
संधि विच्छेद	=	मत+ऐक्य
वर्ण विच्छेद	=	म+अ+त्+अ + ऐ +क्+य्+अ
		पूर्व पद \/ उत्तर पद
		ऐ
संधि स्वर	=	म+त+ऐ+क्य
		तै
संधि पद	=	मतैक्य

विशेष :-

हिंदी में इस प्रकार के उदाहरण उपलब्ध नहीं हैं।

3.3.4 सूत्र : आ + ऐ = ऐ

नियम— (26)

यदि 'आ' के बाद यदि 'ऐ' आए तो दोनों मिलकर 'ऐ' हो जाते हैं।

उदाहरण —

संधि स्वर	– ऐ
संधि वर्ण	– आ+ऐ

शब्द – महैश्वर्य

संधि विच्छेद = महा+ऐश्वर्य

वर्ण विच्छेद = म्+अ+ह्+आ+ऐ+श्+व्+अ+र्+य्+अ

पूर्व पद ऐ उत्तर पद

संधि स्वर = म+ह्+ए+श्वर्य

है

संधि पद = महैश्वर

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**राजैश्वर्य**			
संधि-विच्छेद	राजा+ऐश्वर्य			
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.3.5 सूत्र : अ + ओ = औ

नियम— (27)

'अ' के बाद 'ओ' आने पर दोनों मिलकर 'औ' (ौ) हो जाते हैं।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'औ'
संधि वर्ण	– अ + ओ

शब्द – अधरौष्ठ

संधि विच्छेद = अधर + ओष्ठ

वर्ण विच्छेद = अ+ध्+अ+र्+अ+ओ+ष्+ठ्+अ

पूर्व पद — उत्तर पद

औ

संधि स्वर = अ + ध + र् + औ + ष्+ ठ

रौ

संधि पद = अधरौष्ठ

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'ओ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'औ' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**जलौध**	**दंतौष्ठ**		
संधि-विच्छेद	जल+ओध	दंत+ओष्ठ		
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.3.6 सूत्र : अ + औ = औ

नियम— (28)

यदि 'अ' के बाद 'औ' आए तो दोनों मिलकर 'औ' (ौ) हो जाते हैं।

उदाहरण —

संधि स्वर	–	'औ'
संधि वर्ण	–	अ + औ
शब्द	–	परमौषधि
संधि विच्छेद	=	परम + औषधि
वर्ण विच्छेद	=	प्+अ+र्+अ+म्+अ+औ+ष्+अ+ध्+इ (पूर्व पद / उत्तर पद → औ)
संधि स्वर	=	प+र+म्+औ+ष+धि (म्+औ → मौ)
संधि पद	=	परमौषधि

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'औ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'औ' में बदल गया है)

विशेष :-

हिंदी में इस प्रकार के उदाहरण उपलब्ध नहीं हैं।

3.3.7 सूत्र : आ + ओ = औ

नियम— (29)

यदि 'आ' के बाद 'ओ' आए तो दोनों मिलकर 'औ' (ौ) हो जाते हैं।

उदाहरण —

संधि स्वर – 'औ'
संधि वर्ण – आ+ओ

शब्द – महौजस्वी

संधि विच्छेद – महा+ओजस्वी

वर्ण विच्छेद = म्+अ्+ह्+आ+ओ+ज्+अ+स्+व्+ई

पूर्व पद — उत्तर पद

औ

वर्ण विच्छेद = म+ह+औ + ज स्वी

हौ

संधि स्वर = महौजस्वी

संधि पद =

विशेष :-

हिंदी में ऐसे अन्य उदाहरण उपलब्ध नहीं है।

संधि-पद	**महौध**			
संधि-विच्छेद	महा+ओध			
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.3.8 सूत्र : आ + औ = औ

नियम— (30)

यदि 'आ' के बाद 'औ' आए तो दोनों मिलकर 'औ' (ौ) हो जाते हैं।

उदाहरण —

संधि स्वर – 'औ'
संधि वर्ण – आ + औ

शब्द – महौषधि

संधि विच्छेद = महा + औषधि

वर्ण विच्छेद = म् + ह् + आ + औ + ष् + अ + ध् + इ

पूर्व पद औ उत्तर पद

संधि स्वर = म + ह + औ + ष + धि
हौ

संधि पद = महौषधि

विशेषः-

हिंदी में इस प्रकार के अन्य उदाहरण देखने में नहीं आते हैं।

संधि-पद	**महौदार्य**			
संधि-विच्छेद	महा+औदार्य			
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

विजातीय स्वर

3.4 यण संधि

नियम— जब 'इ/ई, उ/ऊ, ऋ' (ह्रस्व + दीर्घ) के बाद कोई असमान स्वर आए तो उनके मेल से क्रमश: उनके स्थान पर 'य, व, अर्' हो जाता है। स्वर संधि के इस विकार (परिवर्तन) को यण् संधि कहते हैं। आप बता सकते हैं कि इस संधि को यण् संधि क्यों कहते हैं? क्योंकि 'य' इसका प्रथम संधि वर्ण है। इसका नाम यदि 'यवर' संधि रखा जाए, तो अधिक उपयुक्त रहेगा। यह नाम आपको जँचेगा।

तालिका-यण संधि

[illegible]	**अ**	**आ**	**इ**	**ई**	**उ**	**ऊ**	**ए**	**ऐ**	**अं**	
इ	य	या	–	–	यु	यू	ये	–	यं	
ई	य	या	–	–	यु	यू	–	यै	–	
उ	व	वा	वि	–	–	–	वे	–	–	
ऊ	–	वा	–	वी	–	–	–	–	–	
ऋ	र	रा	रि	–	रु	–	–	–	–	

1.	इ	+	अ	=	य	11.	ई	+	ऐ	=	यै
2.	इ	+	आ	=	या	12.	उ	+	अ	=	व
3.	इ	+	उ	=	यु	13.	उ	+	आ	=	वा
4.	इ	+	ऊ	=	यू	14.	उ	+	इ	=	वि
5.	इ	+	ए	=	ये	15.	उ	+	ए	=	वे
6.	इ	+	अं	=	यं	16.	ऊ	+	आ	=	वा
7.	ई	+	अ	=	य	17.	ऊ	+	ई	=	वी
8.	ई	+	आ	=	या	18.	ऋ	+	अ	=	र
9.	ई	+	उ	=	यु	19.	ऋ	+	आ	=	रा
10.	ई	+	ऊ	=	यू	20.	ऋ	+	इ	=	रि
						21.	ऋ	+	उ	=	रु

रोचक तथ्य—

1. रेखांकित 1, 2, 3, 4, 5, 8, 12, 13, 14, 15 कुल 10 प्रकार की संधि के उदाहरण ही यहाँ दिए जा रहे हैं। शेष उदाहरण हिंदी में देखने में नहीं आते हैं।

यण संधि को स्मरण रखने का सूत्र—

2.(क) इक्= इ/ई +उ/ऊ + ऋ/ॠ+ ऌ (स्वर)

यण= य व् र् ल् (अन्त:स्थ व्यंजन)

(यण संधि में स्वरों का मेल होता है किंतु संधि वर्ण अन्तस्थ व्यंजन होते हैं।)

(ख) अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ए, ऐ का अपने से भिन्न स्वरों से मेल

मूल+दीर्घ स्वर गुण वृद्धि

य व अर्

3.4.1 सूत्र : इ + अ = य

नियम— (31)

यदि 'इ' के बाद भिन्न हस्व स्वर (अ) आए तो 'इ' का 'य' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर – 'य'

संधि वर्ण	– इ + अ
शब्द	– प्रत्यक्ष

संधि विच्छेद = प्रति + अक्ष

वर्ण विच्छेद = प् + र् + अ + त् + इ + अ + क्ष् + अ

पूर्व पद उत्तर पद

य

संधि स्वर = प्र + त् + य + क्ष

त्य

संधि पद = प्रत्यक्ष

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'इ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर 'य' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**अत्यल्प**	**अत्यधिक**	**अभ्यन्तर**	**व्यर्थ**
संधि-विच्छेद	अति+अल्प	अति+अधिक	अभि+अन्तर	वि+अर्थ
संधि-पद	**प्रत्यय**	**यद्यपि**		
संधि-विच्छेद	प्रति+अय	यदि+अपि		

3.4.2 सूत्र : इ + आ = या

नियम— (32)

यदि 'इ' के बाद भिन्न दीर्घ स्वर 'आ' आए तो 'ई' का 'या' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर – 'या'

संधि वर्ण	– इ + आ
शब्द	– इत्यादि

संधि विच्छेद = इति + आदि

वर्ण विच्छेद = इ + त् + इ् + आ + द् + इ

पूर्व पद उत्तर पद

या

संधि स्वर = इ + त् + या + दि

त्या

संधि पद = इत्यादि

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'इ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'आ' (दीर्घ स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'या' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**अत्याचार**	**व्यायाम**	**व्याप्त**	**अभ्यागत**
संधि-विच्छेद	अति+आचार	वि+आयाम	वि+आप्त	अभि+आगत
संधि-पद	**व्याकुल**	**अत्यावश्यक**		
संधि-विच्छेद	वि+आकुल	अति+आवश्यक		

3.4.3 सूत्र : <u>इ + उ = यु</u>

नियम— (33)

यदि 'इ' के बाद भिन्न स्वर 'उ' आए, तो 'इ' का 'यु' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'यु'
संधि वर्ण	– इ + उ

शब्द – अत्युत्तम

संधि विच्छेद = अति + उत्तम

वर्ण विच्छेद = अ+त्+ इ + उ+त्+त्+अ+म्+अ

पूर्व पद उत्तर पद

यु

संधि स्वर = अ+त्+यु+त्त+म

त्यु

संधि पद = अत्युत्तम

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'इ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'उ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर 'यु' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**प्रत्युपकार**	**उपर्युक्त**	**अभ्युदय**	
संधि-विच्छेद	प्रति+उपकार	उपरि+उक्त	अभि+उदय	
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.4.4 सूत्र : इ + ऊ = यू

नियम— (34)

यदि 'इ' के बाद भिन्न स्वर 'ऊ' आए, तो 'इ' का 'यू' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'यू'
संधि वर्ण	– इ + ऊ

शब्द – न्यून

संधि विच्छेद = नि + ऊन

वर्ण विच्छेद = न् + इ + ऊ + न् + अ

पूर्व पद उत्तर पद

यू

संधि स्वर = न् + यू + न

न्यू

संधि पद = न्यून

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'इ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'ऊ' (दीर्घ स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'यू' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**न्यून**	**व्यूह**	**प्रत्यूष**	
संधि-विच्छेद	नि+ऊन	वि+ऊह	प्रति+ऊष	
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.4.5 सूत्र : इ + ए = ये

नियम— (35)

यदि 'इ' के बाद भिन्न ह्रस्व 'ए' स्वर आए, तो 'इ' का 'ये' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर – 'ये'

संधि वर्ण	– इ + ए
शब्द	– प्रत्येक

संधि विच्छेद = प्रति + एक

वर्ण विच्छेद = प्+र्+अ+त्+ इ + ए +क्+अ

पूर्व पद — उत्तर पद

ये

संधि स्वर = प्र + त् + ये + क

त्ये

संधि पद = प्रत्येक

अभ्यास

पाठ्यपुस्तक से उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**अध्येता**			
संधि-विच्छेद	अधि+एता			
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.4.6 सूत्र : ई + आ = या

नियम— (36)

यदि 'ई' के बाद दीर्घ स्वर (आ) हो तो 'ई' का 'या' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'या'
संधि वर्ण	– ई + आ

शब्द – देव्यागमन

संधि विच्छेद = देवी + आगमन

वर्ण विच्छेद = द्+ए+व्+ई + आ+ग्+अ+म्+अ+न्+अ

पूर्व पद उत्तर पद

या

संधि स्वर = दे+व्+या+ग+म+न

व्या

संधि पद = देव्यागमन

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'ई' (दीर्घ स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'आ' (दीर्घ स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'या' में बदल गया है)

अभ्यास

पाठ्यपुस्तक से उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**देव्यालय**	**देव्यागम**		
संधि-विच्छेद	देवी+आलय	देवी+आगम		
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.4.7 सूत्र : उ + अ = व

नियम— (37)

यदि 'उ' के बाद अन्य ह्रस्व स्वर 'अ' हो तो 'उ' का 'व' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'व'
संधि वर्ण	– उ + अ

शब्द – अन्वय

संधि विच्छेद = अनु + अय

वर्ण विच्छेद = अ+न्+ उ + अ +य्+अ

पूर्व पद उत्तर पद

व

संधि स्वर = अ + न् + व + य

न्व

संधि पद = अन्वय

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'उ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर 'व' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**स्वस्ति**	**स्वल्प**	**अन्वय**	**स्वच्छ**
संधि-विच्छेद	सु+अस्ति	सु+अल्प	अनु+अय	सु+अच्छ
संधि-पद	**मन्वन्तर**			
संधि-विच्छेद	मनु+अन्तर			

3.4.8 सूत्र : उ + आ = वा

नियम— (38)

यदि 'उ' के बाद अन्य दीर्घ स्वर 'आ' हो तो 'उ' का 'वा' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'वा'
संधि वर्ण	– उ + आ

शब्द – स्वागत

संधि विच्छेद = सु + आगत

वर्ण विच्छेद = स्+ उ + आ +ग्+अ+त्+अ

पूर्व पद उत्तर पद

वा

संधि स्वर = स्+वा+ग+त

स्वा

संधि पद = स्वागत

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'उ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'आ' (दीर्घ स्वर) मिलकर 'वा' में बदल गया है)

अभ्यास

पाठ्यपुस्तक से उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**मध्वालय**			
संधि-विच्छेद	मधु+आलय			
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.4.9 सूत्र : उ + इ = वि

नियम— (39)

यदि 'उ' के बाद अन्य ह्रस्व स्वर 'इ' आए तो 'उ' का 'वि' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'वि'
संधि वर्ण	– उ + इ

शब्द – अन्विति

संधि विच्छेद = अनु + इति

वर्ण विच्छेद = अ + न् + उ + इ + त् + इ

वि

संधि स्वर = अ + न् + वि + ति

न्वि

संधि पद = अन्विति

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'उ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'इ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर 'वि' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**अन्विक्षा**	**अन्वित**		
संधि-विच्छेद	अनु+इच्छा	अनु+इत		
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

3.4.10 सूत्र : उ + ए = वे

नियम— **(40)**

यदि 'उ' के बाद ह्रस्व स्वर 'ए' आए तो 'उ' का 'वे' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'वे'
संधि वर्ण	– उ + ए

शब्द – अन्वेषण

संधि विच्छेद = अनु + एषण

वर्ण विच्छेद = अ+न्+ उ + ए +ष्+अ+ण+अ

पूर्व पद — उत्तर पद

वे

संधि स्वर = अ+न्+वे+ष+ण

न्वे

संधि पद = अन्वेषण

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'उ' (ह्रस्व स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'ए' मिलकर दीर्घ स्वर 'वे' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**अन्वेषी**	**अन्वेषक**		
संधि-विच्छेद	अनु+एषी	अनु+एषक		
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

असवर्ण स्वर

3.5 अयादि संधि

नियम—

यदि 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' के पश्चात् कोई भिन्न स्वर हो तो उनके स्थान पर 'अय', 'आय', 'अव', 'आव' हो जाता है।

तालिका-अयादि संधि

[illegible]	**अ**	**आ**	**इ**	**ई**	**उ**	**ऊ**
ए	अय्	–	–	–	–	–
ऐ	आय्	–	आयि	–	–	–
ओ	अव्	–	अवि	–	–	–
औ	आव	–	आवि	–	आवु	–

'अ' स्वर

1.	ए	+	अ	=	अय्	(ए को अय)
2.	ऐ	+	अ	=	आय्	(ऐ को आय)
3.	ओ	+	अ	=	अव्	(ओ को अव)
4.	औ	+	अ	=	आव्	(औ को आव)

'इ' स्वर

5.	ऐ	+	इ	=	आयि	(ऐ का आमि)
6.	ओ	+	इ	=	अवि	(ओ को अवि)
7.	औ	+	इ	=	आवि	(औ का आवि)

'उ' स्वर

8.	औ	+	उ	=	आवु	(औ का आवु)

विशेष :—

1. अयादि संधि में अय्, आय्, अव्, आव् — इन चार के होने से इसे चतुष्टय संधि भी कहते हैं।
2. अयादि संधि करते समय मूलधातु तथा प्रत्यय का ज्ञान आवश्यक है।
3. मूलधातु शब्दांश है, शब्द नहीं, जिसकी जानकारी संस्कृत के अध्ययन पर ही हो सकती है। अत: इस संधि को यहाँ दिए गए चतुष्टय संधि के आधार पर ही समझने का यत्न करें। इस संधि का प्रयोग संस्कृत में ही होता है, हिंदी में नहीं। अत: बहुत से व्याकरणाचार्य इसे हिंदी संधि नहीं मानते।
4. इस संधि में प्रथम संधि वर्ण 'अय' है। इसलिए इस संधि को अय+आदि (आय, अव, आव) कहा जाता है।
5. यह संधि मूल स्वर अ, इ, उ तथा दीर्घ स्वर आ, ई, ऊ के ए, ओ (गुण संधि) ऐ, औ (वृद्धि संधि) के मेल से बनती है।
6. यण संधि तथा अयादि संधि में अंतर का ध्यान रखें—

   यण संधि— अ/आ, इ/ई, उ/ऊ, ए/ऐ के अपने से भिन्न स्वरों के मेल से बनती है।

   अयादि संधि— अ/आ, इ/ई, उ/ऊ के ए, ऐ, ओ, औ (गुण+वृद्धि) के मेल से बनती है।
7. अयादि संधि का स्मरण रखने का सूत्र—

   अ, आ, इ, ई, उ, ऊ — ए, ऐ, ओ, औ

   मूल+दीर्घ स्वर — गुण+वृद्धि

   अय, आय, अव, आव

आइए, प्रत्येक संधि का अध्ययन करें —

सूत्र : 3.5.1 ए + अ = अय

नियम— **(41)**

यदि 'ए' के बाद 'अ' स्वर आए तो 'ए' का अय हो जाता है; और बाद का स्वर 'अय' में मिल जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'अय'
संधि वर्ण	– ए + अ

शब्द – नयन

संधि विच्छेद = ने + अयन

वर्ण विच्छेद = न् + ए + अ + य्+अ+न्+अ

पूर्व पद (न्) — उत्तर पद (अ + य्+अ+न्+अ); ए + अ → अय

संधि स्वर = न् + अय + न (न्+अ=न)

न् + अय → नय

संधि पद = नयन

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'ए' तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर 'अय' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**चयन**	**शयन**		
संधि-विच्छेद	चे+अयन	शे+अयन		
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

सूत्र : 3.5.2 ऐ + अ = आय

नियम— (42)

यदि 'ऐ' के बाद 'अ' स्वर आए तो 'ऐ' का आय् हो जाता है और बाद का स्वर 'आय्' में मिल जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'आय'
संधि वर्ण	– ऐ + अ

शब्द – गायक

संधि विच्छेद = गै + अक

वर्ण विच्छेद = ग् + ऐ + अ + क् + अ

पूर्व पद / उत्तर पद

आय

संधि स्वर = ग् + आ + य + क (ग्+आ=गा)

गाय

संधि पद = गायक

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'ऐ' (दीर्घ स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर दीर्घ स्वर 'आय' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**नायक**	**नायिका**	**राय**	**दायक**
संधि-विच्छेद	नै+अक	नै+इका	रै+अय	दै+अक
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

सूत्र : 3.5.3 <u>ओ + अ = अव</u>

नियम— (43)

यदि 'ओ' के बाद 'अ' स्वर आए तो 'ओ' का अव् हो जाता है और बाद का स्वर 'अव्' में मिल जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'अव'
संधि वर्ण	– ओ + अ

शब्द – पवन

संधि विच्छेद = पो + अन

वर्ण विच्छेद = प् + ओ + अ् + न् + अ

पूर्व पद \/ उत्तर पद

अव

संधि स्वर = प् + अ व + न (प्+अ=प)

पव

संधि पद = पवन

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'ओ' तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर 'अव' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**भवन**	**हवन**		
संधि-विच्छेद	भो+अन	हो+अन		
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

सूत्र : 3.5.4 औ + अ = आव्

नियम— (44)

यदि 'औ' के बाद 'अ' स्वर आए तो 'औ' का आव् हो जाता है और बाद वाला स्वर 'आव' में मिल जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'आव्'
संधि वर्ण	– औ + अ

शब्द – पावक

संधि विच्छेद = पौ + अक

वर्ण विच्छेद = प् + औ + अ + क् + अ

पूर्व पद \/ उत्तर पद

आव

संधि स्वर = प् + आ + व + क (प्+आ=पा)

पाव

संधि पद = पावक

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'औ' (दीर्घ स्वर) तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'अ' (ह्रस्व स्वर) मिलकर 'आव्' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**धावक**	**शावक**	**श्रावण**	**नाव**
संधि-विच्छेद	धौ+अक	शौ+अक	श्रौ+अण	नौ+अव
संधि-पद	**पावन**			
संधि-विच्छेद	पौ+अन			

सूत्र : 3.5.5 <u>ऐ + इ = आयि</u>

नियम— (45)

यदि 'ऐ' के बाद 'इ' स्वर आए तो 'ऐ' का 'आयि' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'आयि'
संधि वर्ण	– ऐ + इ

शब्द – गायिका

संधि विच्छेद = गै + इका

वर्ण विच्छेद = ग् + ऐ + इ + क् + आ

पूर्व पद — उत्तर पद

आयि

संधि स्वर = ग् + आ यि + का (ग्+आ=गा)

गा यि

संधि पद = गायिका

विशेष :-

यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'ऐ' तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'इ' मिलकर 'आयि' में बदल गया है।

अभ्यास

पाठ्यपुस्तक से उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**नायिका**			
संधि-विच्छेद	नै+इका			
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

सूत्र : 3.5.6 ओ + इ = अवि

नियम— (46)

यदि 'ओ' के बाद 'इ' स्वर आए तो 'ओ' का 'अवि' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर – 'अवि'
संधि वर्ण – ओ + इ
शब्द – पवित्र
संधि विच्छेद = पो + इत्र
वर्ण विच्छेद = प् + ओ + इ + त्र
पूर्व पद उत्तर पद
अवि
संधि स्वर = प् + अ वि + त्र (प्+अ=प)
पवि
संधि पद = पवित्र

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'ओ' तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'इ' मिलकर 'अवि' में बदल गया है)

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**भविष्य**			
संधि-विच्छेद	भो+इष्य			
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

सूत्र : 3.3.7 औ + इ = आवि

नियम— (47)

यदि 'औ' के बाद 'इ' स्वर आए तो 'औ' का 'आवि' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर	– 'आवि'
संधि वर्ण	– औ + इ

शब्द – नाविक

संधि विच्छेद = नौ + इक

वर्ण विच्छेद = न् + औ + इ + क

पूर्व पद — उत्तर पद

आवि

संधि स्वर = न् + आ वि + क (न्+आ=ना)

नावि

संधि पद = नाविक

विशेष :-

यहाँ पूर्व पद का अंतिम पद 'औ' तथा उत्तर पद का प्रथम पद 'इ' मिलकर 'आवि' में बदल गया है।

अभ्यास

पाठ्यपुस्तक से उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद				
संधि-विच्छेद				
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

सूत्र : 3.5.8 औ + उ = आवु

नियम— (48)

यदि 'औ' के बाद 'उ' स्वर आए तो 'औ' का 'आवु' हो जाता है।

उदाहरण —

संधि स्वर – 'आवु'
संधि वर्ण – औ + उ

शब्द – भावुक

संधि विच्छेद = भौ + उक

वर्ण विच्छेद = भ् + औ + उ + क

पूर्व पद उत्तर पद

आवु

संधि स्वर = भ् + आ वु + क

भावु

संधि पद = भावुक

विशेष :-

यहाँ पूर्व पद का अंतिम पद 'औ' तथा उत्तर पद का प्रथम पद 'उ' मिलकर 'आवु' में बदल गया है।

अभ्यास

पाठ्यपुस्तक से उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद				
संधि-विच्छेद				
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

04

व्यंजन संधि

अवधारणा —

व्यंजन वर्ण के साथ स्वर या व्यंजन वर्णों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

व्यंजन संधि

- व्यंजन+स्वर
- स्वर+व्यंजन
- व्यंजन+व्यंजन

उदाहरण —

1.	दिक् + अम्बर	=	दिगम्बर	(क्+अ) व्यंजन+स्वर
2.	अनु + छेद	=	अनुच्छेद	(उ+छ) स्वर+व्यंजन
3.	सम् + कल्प	=	संकल्प	(म्+क) व्यंजन+व्यंजन

याद रखिए —

1. व्यंजन संधि को समझने के पूर्व हमें व्यंजनों के तीनों भेदों (स्पर्श व्यंजन, अंतस्थ व्यंजन व ऊष्म व्यंजन) का विशेष ध्यान रखना है। इसमें वर्गीय व्यंजनों (स्पर्श व्यंजनों) का सर्वाधिक वर्णन रहता है। अत: इनके बारे में जानकारी होना आवश्यक है। इस प्रकरण में यथा स्थान उसका उल्लेख किया गया है।
2. स्पर्श व्यंजन– 25 हैं। 'क, च, ट, त, प' पाँचों वर्णों को स्पर्श व्यंजन कहा जाता है। इनका उच्चारण मुख में कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत और ओठों के स्पर्श से होता है।

अंत:स्थ व्यंजन – 4 हैं। 'य, र, ल, व' ये स्वरों तथा व्यंजनों के मध्य (अंत:) स्थित होने से अंत:स्थ व्यंजन कहलाते हैं।

ऊष्म व्यंजन – 4 हैं। 'श, ष, स, ह' इनके उच्चारण के समय वायु घर्षण के कारण ऊष्म हो जाती है। अत: इन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं।

3. व्यंजन संधि में अघोष तथा सघोष वर्णों का भी मेल होता है। अत: जानिए, प्रत्येक वर्ग का प्रथम एवं द्वितीय व्यंजन तथा श, ष, स् **अघोष वर्ण** है। जबकि तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम वर्ण, सभी स्वर, य, र, ल **सघोष वर्ण** हैं। अघोष वर्ण, सघोष वर्ण से मिलकर सघोष हो जाते हैं। इस प्रकरण को आप यथास्थान उदाहरण सहित और स्पष्ट जान सकेंगे।
4. स्पर्श व्यंजनों को वर्गीय व्यंजन तथा अंत:स्थ एवं ऊष्म व्यंजनों को अवर्गीय व्यंजन भी कहते हैं।
5. अनुस्वार (अं) तथा विसर्ग (अ:) के रूप और उच्चारण की विशेषता के कारण अनेक इन्हें अं, अ: के रूप में स्वरों के साथ ढूँढते हैं, किंतु ये यथार्थ में व्यंजन हैं। इसी से संधि में अनुस्वार (अं) क्रम से ङ, ञ, ण्, न्, म् तथा विसर्ग (अ:) क्रम से श, ष्, र् हो जाते हैं।

4.1 स्वर + व्यंजन (छ)
('छ' संबंधी विशेष नियम पर आधारित)

नियम - (1) यदि ह्रस्व स्वर (अ, इ, उ) के पश्चात् 'छ' व्यंजन हो तो उसके पहले 'च्' को उसके साथ जोड़ दिया जाता है और वह 'च्छ' हो जाता है। यदि दीर्घ स्वर हो तो कहीं 'च्छ' होता है, कहीं नहीं।

तालिका - संधि व्यंजन 'छ'

पूर्व पद	अ + / आ	इ + / ई	उ + / ऊ
उत्तर पद	छ =	छ =	छ =
संधि वर्ण	च्छ	च्छ	च्छ

उदाहरण —

ह्रस्व स्वर - शब्द - विच्छेद

संधि विच्छेद - वि + छेद

वर्ण विच्छेद - व् + इ + छ् + ए + द् + अ

पूर्व पद च्छ उत्तर पद

(यहाँ 'छ' उत्तर पद में प्रथम वर्ण है। अत: उसमें 'च्छ' हो गया)

संधि वर्ण = व् + इ + च्छ् + ए + द् + अ

च्छे

संधि पद = विच्छेद

दीर्घ स्वर - शब्द - आच्छादन

संधि विच्छेद - आ + छादन

वर्ण विच्छेद - आ + छ् + आ + द् + अ + न् + अ

पूर्व पद च्छा उत्तर पद

संधि वर्ण = आ + च्छा + द + न

संधि पद = आच्छादन

अभ्यास—उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें।

संधि-पद	**अनुच्छेद**	**संधिच्छेद**	**स्वच्छ**	**परिच्छेद**
संधि-विच्छेद	अनु+छेद	संधि+छेद	स्व+छ	परि+छेद

4.2 व्यंजन + स्वर

तृतीय व्यंजन

नियम – (2) यदि विभिन्न वर्गों के पहले व्यंजन के आगे अनुनासिक को छोड़कर कोई स्वर अथवा घोष व्यंजन आए तो व्यंजन अपने वर्ग के तीसरे व्यंजन में बदल जाता है।

तालिका —

वर्ग के पहले वर्ण है (व्यंजन)	निम्नांकित में से कोई भी स्वर	पहले वर्ण के स्थान पर तीसरा वर्ण
क	अ / आ	ग
च	इ / ई	ज
ट	उ / ऊ	ड
त	ए / ऐ	द
प	ओ / औ	ब

उदाहरण —

शब्द – दिगम्बर

संधि विच्छेद – दिक् + अम्बर

वर्ण विच्छेद – द् + इ + क् + अ + म् + ब् + अ् + र् + अ

पूर्व पद ग् उत्तर पद

(यहाँ प्रथम वर्ण 'क्' है, जो 'ग्' (तीसरे वर्ण) में बदल गया है)

संधि वर्ण = दि् + ग + म्ब + र

संधि पद = दिगम्बर

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	अजंत	जगदानन्द	जगदम्बा	षडानन
संधि-विच्छेद	अच्+अंत	जगत्+आनन्द	जगत्+अम्बा	षट्+आनन

4.3.1 व्यंजन + व्यंजन

वर्ग के प्रथम वर्ण का तृतीय वर्ण में परिवर्तन

नियम - **(3)** यदि स्पर्श व्यंजन क, च, ट, त, प वर्ग के पश्चात् किसी वर्ण का तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण आए तो पहले वर्ण के स्थान पर तृतीय वर्ण हो जाता है।

तालिका —

पूर्व पद	**उत्तर पद**		**संधि वर्ण**
	तृतीय वर्ण	**चतुर्थ वर्ण**	
क	ग	घ	ग
च	ज	झ	ज
ट	ड	ढ	ड
त	द	ध	द
प	ब	भ	ब

तृतीय वर्ण का उदाहरण —

मूल शब्द - दिग्भ्रम

संधि विच्छेद - दि्क + भ्रम

वर्ण विच्छेद - द् + इ + क् + भ् + र् + अ + म् + अ

पूर्व पद उत्तर पद

ग्

(यहाँ 'क्' के पश्चात् 'प' वर्ग का चतुर्थ वर्ण 'भ्' आ गया है। अतः पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'क्' अपने वर्ण के तृतीय वर्ण 'ग्' में परिवर्तन हो गया है)

संधि वर्ण = दिग् + भ्रम

संधि पद = दिग्भ्रम

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**दिग्दर्शन**	**षड्दर्शन**	**उद्गम**	
संधि-विच्छेद	दिक्+दर्शन	षट्+दर्शन	उत्+गम	

चतुर्थ वर्ण का उदाहरण —

मूल शब्द - सद्भावना

संधि विच्छेद - सत् + भावना

वर्ण विच्छेद - स्+त्+भ्+आ+व्+अ+न्+आ

पूर्व पद द् उत्तर पद

संधि वर्ण = स+द+भा+व+ना

(यहाँ 'त' के पश्चात् 'प' वर्ण का चतुर्थ वर्ण 'भ' आया है। अत: पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'त्' का 'द्' हो गया है।

संधि पद = सद्भावना

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**उद्घाटन**	**तद्भव**		
संधि-विच्छेद	उत्+घाटन	तत्+भव		
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

4.3.2 पहले वर्ण का पाँचवे वर्ण में परिवर्तन

नियम – (4) यदि स्पर्श व्यंजन क, च, ट, त, प का संयोग किसी नासिक्य व्यंजन से हो तो क्, च्, ट्, त्, प् के स्थान पर उसी वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है। इसे तालिका की सहायता से जानें —

तालिका —

पूर्व पद	उत्तर पद नासिक्य व्यंजन	संधि वर्ण
क च ट त प	कोई भी अनुनासिक वर्ण	ङ ञ ण न म

उदाहरण —

मूल शब्द – वाङ्मय

संधि विच्छेद – वाक् + मय

वर्ण विच्छेद – व् + आ + क् + म् + अ + य् + अ

पूर्व पद उत्तर पद

ङ

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'क्' है। इसके बाद उत्तर पद का प्रथम नासिक्य व्यंजन 'म' है। अत: 'क्' का उसी वर्ग के पंचम वर्ण 'ङ्' में परिवर्तन हो गया)

संधि वर्ण = वाङ् + मय

संधि पद = वाङ्मय

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	जगन्नाथ	उन्मूलन	उन्नति	तन्मय
संधि-विच्छेद	जगत्+नाथ	उत्+मूलन	उत्+नति	तत्+मय

4.3.3 वर्गीय व्यंजन

वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण का प्रथम वर्ण में परिवर्तन

नियम – (5)

किसी वर्ग के प्रथम/द्वितीय/तृतीय/चतुर्थ वर्ण को उसी वर्ग का प्रथम वर्ण हो जाता है, यदि बाद में वर्ग के प्रथम अथवा द्वितीय में से कोई वर्ण अथवा यदि बाद में श, ष, स में से कोई वर्ण हो। इसे निम्नांकित तालिका द्वारा समझें।

तालिका —

प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ	प्रथम अथवा द्वितीय	संधि वर्ण
क, ख, ग, घ	क्, ख्	क
च, छ, ज, झ	च्, छ्	च
ट, ठ, ड, ढ	ट्, ठ्	ट
त, थ, द, ध	त्, थ्	त
प, फ, ब, भ	द्, ध	प
श, ष, स		

उदाहरण — 1

स्पर्श व्यंजन शब्द – उत्तर

संधि विच्छेद – उद् + तर

वर्ण विच्छेद – उ + द् + त् + अ + र् + अ

पूर्व पद त् उत्तर पद

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'द्' है तथा उत्तर पद का प्रथम वर्ण 'त्' है। अत: प्रथम वर्ण 'द्' का 'त्' हो गया है)

संधि वर्ण = उ + त् + त + र

संधि पद = उत्तर

उदाहरण — 2

ऊष्म व्यंजन शब्द - उत्साह

संधि विच्छेद - उद् + साह

वर्ण विच्छेद - उ + द् + स + आ + ह् + अ

पूर्व पद त् उत्तर पद

(यहाँ उत्तर पद का प्रथम ऊष्म वर्ण 'सा' है। अतः पूर्व पद का अंतिम वर्ण 'द्' का 'त्' हो गया है)

संधि वर्ण = उ + त् + सा + ह

संधि पद = उत्साह

अभ्यास क्रमांक-1

उदाहरण क्रमांक-1 के अनुसार अभ्यास करें।

संधि-पद				
संधि-विच्छेद				
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

अभ्यास क्रमांक-2

उदाहरण क्रमांक-2 के अनुसार अभ्यास करें।

संधि-पद				
संधि-विच्छेद				
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

4.4.1 त् का द्

त् + स्वर अथवा किसी वर्ग का तीसरा या चौथा वर्ण अथवा य, र, व = द्

नियम – (6)

1. यदि 'त्' के बाद कोई स्वर आए तो 'त्' के स्थान पर 'द्' हो जाता है।
2. यदि 'त्' के बाद स्पर्श व्यंजन ग, घ, ध, ब, भ हो तो 'त्' के स्थान पर 'द्' हो जाता है।
3. यदि 'त्' के बाद अंत:स्थ वर्ण य, र, व हो तो 'त्' 'द्' में बदल जाता है, इसे तालिका द्वारा भी जानें —

तालिका —

पूर्व पद	उत्तर पद	संधि वर्ण
त	कोई भी स्वर अथवा स्पर्श व्यंजन ग, घ, ध, ब, भ य, र, व	द्

उदाहरण – 1 (स्वर के आधार पर)

शब्द – – उदय

संधि विच्छेद – उत् + अय

वर्ण विच्छेद – उ + त् + अ + य् + अ

पूर्व पद द् उत्तर पद

(यहाँ 'त्' के बाद 'अ' स्वर आया है, अत: 'त्' 'द्' में बदल गया है)

संधि वर्ण = उ + द् + अ + य

संधि पद = उदय वर्ग का तीसरा वर्ण के अनुसार

अभ्यास

उदाहरण क्रमांक–1 के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि–पद	सदाचार्य	सदाशय	सदानन्द	जगदीश
संधि–विच्छेद	सत्+आर्य	सत्+आशय	सत्+आनन्द	जगत्+ईश

उदाहरण - 2 (स्पर्श व्यंजन के अनुसार)

शब्द - - उद्गम/उद्गम

संधि विच्छेद - उत् + ग् म

वर्ण विच्छेद - उ + त् + ग् + म + अ + अ

पूर्व पद द् उत्तर पद

(यहाँ 'त' के बाद स्पर्श व्यंजन 'ग' (तृतीय वर्ण) के आने से 'त्' 'द्' में बदल गया है)

संधि वर्ण = उ + द् + गम

संधि पद = उद्गम = उद्गम

उदाहरण - 3 (अंत:स्थ वर्ण के अनुसार)

शब्द - तद्रूप

संधि विच्छेद - तत् + रूप

संधि वर्ण - त् + अ + त् + र् + उ + प

पूर्व पद द् उत्तर पद

(यहाँ 'त' के बाद अंत:स्थ वर्ण 'र्' के आने से 'त्' 'द्' में बदल गया है)

संधि वर्ण = तद् + रूप

संधि पद = तद्रूप

अभ्यास

उदाहरण क्रमांक- 1, 2, 3 के अनुसार पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

4.4.2 त् का च् / छ्

नियम – (7)

'त्' या 'द्' के बाद यदि 'च' वर्ग हो तो त्/द् के स्थान पर 'च्' वर्ग हो जाता है।

तालिका —

पूर्व पद	उत्तर पद	संधि वर्ण
त् द्	च वर्ग	च् वर्ग

उदाहरण —

मूल शब्द – उच्चारण

संधि विच्छेद – उत् + चारण

वर्ण विच्छेद – उ + त् च् + आ + र् + अ + ण् + अ

पूर्व पद च् उत्तर पद

(यहाँ 'त्' के पश्चात् 'च' आया है अत: पूर्व पद के 'त्' के स्थान पर 'च्' हो गया है)

संधि वर्ण = उ + च् + चा + र + ण

संधि पद = उच्चारण

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**महच्छाया**	**उच्छिन्न**	**उज्ज्वल**	**विपज्जाल**
संधि-विच्छेद	महत्+च्छाया	उत्+छिन्न	उत्+ज्वल	विपत्+जाल
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

4.4.3 त् / द का च् / श्

नियम - (8) यदि 'त् / द्' के बाद 'श्' हो तो 'त् / द्' के स्थान पर 'च्' तथा 'स्/श्' के स्थान पर 'छ्' हो जाता है।

तालिका —

पूर्व पद	उत्तर पद	संधि वर्ण
त्	श्	च्
द्		
–	स्/श्	छ

उदाहरण —

मूल शब्द – उच्छिष्ट

संधि विच्छेद – उत् + शिष्ट

वर्ण विच्छेद – उ + त् + श् + इ + ष् + ट् + अ

पूर्व पद उत्तर पद

च् छ

(यहाँ 'त्' के पश्चात् 'श' आने से 'त्' का 'च्' तथा 'श्' का 'छ' हो गया)

संधि वर्ण = उ + च् + छ् + इ + ष्ट

संधि पद = उच्छिष्ट

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**उच्छवास**			
संधि-विच्छेद	उत्+श्वास			
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

4.4.4 त् का ट् / ड्

नियम - (9)

यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'ट' वर्ग हो तो 'त् / द्' 'ट' वर्ग में बदल जाता है।

तालिका —

पूर्व पद	**उत्तर पद**	**संधि वर्ण**
त् द्	ट् वर्ग	ट् वर्ग

उदाहरण —

मूल शब्द - उड्डयन

संधि विच्छेद - उत् + डयन

वर्ण विच्छेद - उ + त् + ड् + अ + य् + अ + न् + अ

पूर्व पद ड् उत्तर पद

(यहाँ 'त्' के पश्चात् 'ट' वर्ग का 'ड' आने से 'त्' 'ड' में बदल गया है)

संधि वर्ण = उ + ड् + डयन

संधि पद = उड्डयन

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**तट्टीका**			
संधि-विच्छेद	तट्+टीका			
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

4.4.5 त् / द् का द्ध

नियम – (10)

यदि 'त्/द्' के बाद 'ह' हो तो 'त्/द्' के स्थान पर 'द्' तथा 'ह' के स्थान पर 'ध्' हो जाता है।

तालिका —

पूर्व पद	उत्तर पद	संधि वर्ण
त्	ह	द्
द्	ह	ध्

उदाहरण —

मूल शब्द – तद्धित

संधि विच्छेद – तत् + हित

वर्ण विच्छेद – त्+अ + त्+ ह्+इ+त्+अ

पूर्व पद द् ध् उत्तर पद

(यहाँ 'त्' के बाद 'ह' आने से 'त' 'द्' में तथा 'ह्' 'ध्' में बदल गया है)

संधि वर्ण = त + द् + ध् + इ + त

संधि पद = तद्धित = तद्धित

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**उधृत**	**उद्धार**	**उद्धरण**	**पद्धति**
संधि-विच्छेद	उत्+दृथ	उत+हार	उत्+हरण	पत्+हति
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

4.4.6 त् का ल्

नियम – (11)

जब 'त्' के पश्चात् 'ल्' हो तो 'त' का 'ल्' हो जाता है।

तालिका —

पूर्व पद	उत्तर पद	संधि वर्ण
त्	ल्	ल्

उदाहरण —

मूल शब्द – उल्लेख

संधि विच्छेद – उत् + लेख

वर्ण विच्छेद – उ+ त् + ल् +ए+ख्+अ

पूर्व पद ल् उत्तर पद

(यहाँ 'त्' के पश्चात् 'ल्' आने से 'त्' 'ल' में बदल गया है)

संधि वर्ण = उ + ल् + लेख

संधि पद = उल्लेख

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**उल्लास**	**तल्लीन**	**उल्लंघन**	
संधि-विच्छेद	उत्+लास	तत्+लीन	उत्+लंघन	
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

4.5 'न' के स्थान पर 'ण' (णत्व विधान)

नियम - (12)

'ऋ, र, ष' में से किसी एक वर्ण के पश्चात् 'न' आए और बीच में चाहे स्वर अथवा 'क' वर्ग, 'प' वर्ग, अनुस्वार अथवा 'य' 'र' व 'ह' रहे तो 'न' का 'ण' हो जाता है।

न —> ण

नियम तालिकाद्वारा समझें
क्रमांक–1

– स्वर	–	सभी स्वर
– स्पर्श व्यंजन	–	'क' वर्ग
	–	'प' वर्ग
– अन्तस्थ व्यंजन	–	य / व
– ऊष्म व्यंजन	–	ह

अपवाद तालिका
क्रमांक–2

स्वर	–	कोई नहीं
स्पर्श व्यंजन	–	च, ट, त (तीनों वर्ग)
अन्तस्थ व्यंजन	–	ल
ऊष्मव्यंजन	–	श, ष

इनके बीच में होने पर 'न' का 'ण' नहीं होता।

ध्यान दें : अपवाद तालिका नियम तालिका के ठीक विरुद्ध है—

1. नियम में सभी स्वर आते हैं। अपवाद में कोई स्वर नहीं आता।
2. स्पर्श व्यंजन में तालिका क्र. 1 में वर्गीय व्यंजनों में 'क' 'व' वर्ण है, अपवाद तालिका में शेष 'च, ट, त' (तीन वर्ग हैं)।
3. अंत:स्थ व्यंजन तालिका क्र. 1 में शामिल है, अपवाद तालिका में केवल 'ल'।
4. ऊष्म व्यंजन में तालिका क्रमांक 1 में केवल 'ह' है, अपवाद तालिका में श, ष हैं।

अपवाद तालिका के उदाहरण —

'च' वर्ग	–	रचना, दुर्जन, अर्जुन, प्रजनन
'ट' वर्ग	–	पर्यटन
'त' वर्ग	–	रतन, आराधना, परिवर्तन, प्रधान
'ल'	–	मिलन
'श'	–	दर्शन
'स'	–	रसना

उदाहरण (स्वर के अनुसार णत्व विधान) —

मूल शब्द – नारायण

संधि विच्छेद – नार + अयन

वर्ण विच्छेद – न्+आ+र्+ अ+अ+य्+अ+न्+अ

पूर्व पद उत्तर पद ण

(यहाँ पूर्व पद में 'र' आने से उत्तर पद में 'न' के स्थान पर 'ण' हो गया है)

संधि वर्ण = नार + अयण

संधि पद = नारायण

अभ्यास

तालिका क्रमांक 1 के नियमों को ध्यान में रखकर उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें।

संधि-पद	**तृष्णा**	**भरन**	**प्रमाण**	**प्रांगण**
संधि-विच्छेद	तृष्+ना	भर्+अन	प्र+मान	प्र+आँगन
संधि-पद	**ऋण**	**रामायण**	**मरण**	**परिमाण**
संधि-विच्छेद	ऋ+न	राम+अयन	मर्+अन	परि+मान

4.6 स्पर्श 'म' वर्ण [म् के स्थान पर अनुस्वार]

नियम – (13) जब 'म' के आगे कोई स्पर्श व्यंजन हो तो 'म' के स्थान पर अनुस्वार अथवा उसी वर्ग का नासिक्य व्यंजन (पाँचवाँ) व्यंजन हो जाता है। तालिका द्वारा समझें–

तालिका —

पूर्व पद	उत्तर पद	संधि वर्ण
म्	क च ट त प	अनुस्वार अथवा उसी वर्ण का पंचम वर्ण

उदाहरण —1

मूल शब्द – संगम

संधि विच्छेद – सम् + गम

वर्ण विच्छेद – स् + अ + म् + ग् + अ + म् + अ
ङ

संधि वर्ण = स + ङ् + ग + म
ङ्ग

(पूर्व पद में 'म्' के आगे 'ग्' होने से 'म्' का 'ङ' (उसी वर्ग 'क' के पंचम वर्ण) में परिवर्तन हो गया है)

संधि पद = सङ्गम्

अन्य उदाहरण —1

<u>स्पर्श व्यंजन</u>

क —> वर्ग ङ	सम् + गम्	=	संगम/सङ्गम
च —> वर्ग ग	सम् + चय	=	संचय/सञ्चय
ट —> वर्ग ण	–	–	–
त —> वर्ग न	सम् + तोष	=	संतोष/सन्तोष
प —> वर्ग म्	सम् + बंध	=	संबंध/सम्बन्ध

विशेष —

1. 'म्' के साथ स्वरों का संयोग होता है, सन्धि नहीं। 'म्' के बाद व्यंजन होने पर ही संधि होती है। 'म्' का अनुस्वार हो जाता है तथा बाद का व्यंजन ज्यों का त्यों रहता है।

उदाहरण —2

सम्मोहन
सम्मुख
सम्मान

2. 'म्' से पूर्व 'म्' आने पर द्वित्त्व 'म्' म का प्रयोग होता है; जैसे —
सम् + मति = सम्मति

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**संकल्प**	**संतोष**	**किंचित**	**किंकर**
संधि-विच्छेद	सम्+कल्प	सम्+तोष	किम्+चित	किम्+कर
संधि-पद	**संभव**			
संधि-विच्छेद	सम्+भव			

4.6.2 म + अन्तस्थ वर्ण

नियम – (14)

जब 'म' के आगे कोई ऊष्म वर्ण (य, र, ल, व) वर्ण हो तो 'म' के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है।

तालिका —

पूर्व पद	उत्तर पद	संधि वर्ण
म्	य र ल व	अनुस्वार

उदाहरण —

मूल शब्द – संयोग

संधि विच्छेद – सम् + योग

वर्ण विच्छेद – स् + अ + म् + य् + ओ + ग् + अ

पूर्व पद   उत्तर पद

अनुस्वार (÷)

(यहाँ पूर्वपद 'म्' के पश्चात् 'य' आने से 'म्' का अनुस्वार हो गया है)

संधि वर्ण – स + ं + यो + ग

संधि पद = संयोग

अन्य उदाहरण—

य	–	सम् + योग	=	संयोग
र	–	सम् + रक्षण	=	संरक्षण
ल	–	सम् + लाप	=	संलाप
व	–	सम् + वाद	=	संवाद

4.6.3 म + ऊष्म वर्ण

नियम – (15) जब 'म' के आगे कोई ऊष्म वर्ण (श, ष, स, ह) हो तो 'म' के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है।

तालिका —

पूर्व पद	उत्तर पद	संधि वर्ण
म्	श ष स ह	अनुस्वार

उदाहरण —

मूल शब्द – संहार
संधि विच्छेद – सम् + हार
वर्ण विच्छेद – स्+अ+म्+ ह्+आ+र्+अ
पूर्व पद \ उत्तर पद
अनुस्वार (ं)
(यहाँ 'म्' के पश्चात् 'ह' आने से 'म्' अनुस्वार में बदल गया है)
संधि वर्ण – स + ं + हा + र
संधि पद = संहार

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें।

संधि-पद	**संहर्त्ता**			
संधि-विच्छेद	सम्+हर्त्ता			
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

4.6.4 'म' संबंधी विशेष नियम

नियम - (16) यदि अनुस्वार के बाद कोई स्वर वर्ण रहे, तो अनुस्वार के स्थान पर 'म' हो जाता है।

तालिका —

पूर्व पद	उत्तर पद	संधि वर्ण
अनुस्वार	कोई स्वर	म्

उदाहरण —

मूल शब्द - समुदाय

संधि विच्छेद - सं + उदाय

वर्ण विच्छेद - स् + ं + उ + द् + आ + य् + अ

पूर्व पद — उत्तर पद

मु

(यहाँ पूर्व पद का अंतिम वर्ण अनुस्वार (ं) है, और उसके बाद उत्तर पद में 'उ' स्वर आया है, अत: अनुस्वार 'म्' में बदल गया है। म्+उ=मु)

संधि वर्ण = स + म् + उ + दाय

मु

संधि पद = समुदाय

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें।

संधि-पद				
संधि-विच्छेद				
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

विशेष - अनुस्वार के बाद यदि अन्तस्थ वर्ण (य, र, ल, व) अथवा ऊष्म वर्ण (श, ष, स, ह) हो तो अनुस्वार में कुछ भी विकार नहीं होता; जैसे—

1. सं + यम = संयम
2. सं + रक्षा = संरक्षा
3. सं + लाप = संलाप
4. सं + वाद = संवाद
5. सं + शय = संशय
6. सं + सद = संसद
7. सं + हार = संहार

अभ्यास

पाठ्यपुस्तक से उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**संलग्न**			
संधि-विच्छेद	सम्+लग्न			
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

4.7 र् का लोप

नियम 20

यदि र् के बाद भी र् हो तो पहले वाले र् का लोप हो जाता है और उसके पहले के ह्रस्व अ, इ, उ का दीर्घ हो जाता है।

तालिका

पूर्व पद	उत्तर पद	संधि वर्ण
र्	र्	पूर्व पद के र् के पूर्ववर्ती ह्रस्व का दीर्घ तथा र् का लोप

उदाहरण —2

मूल शब्द - नीरज

संधि विच्छेद - निर् + रज

वर्ण विच्छेद - न् + इ + र् + र् + अ + ज् + अ

वर्ण परिवर्तन नी

(यहाँ पूर्व पद र् के पूर्ववर्ती ह्रस्व इ का दीर्घ में परिवर्तन होने से 'नि' का 'नी' होगा)

संधि पद = नीरज

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**नीरव**	**नीरस**		
संधि-विच्छेद	निर्+रव	निर्+रस		
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

4.8 ‘स’ का श

नियम – (17)

यदि ‘स’ के बाद ‘श’ अथवा ‘च’ वर्ग हो तो दन्त्य ‘स’ के स्थान पर तालव्य ‘श’ हो जाता है।

तालिका —

पूर्व पद	उत्तर पद	संधि वर्ण
स	श् अथवा च् वर्ग	श

उदाहरण —

मूल शब्द – तपश्चर्या

संधि विच्छेद – तपस् + चर्या

वर्ण विच्छेद – त्+अ+प्+अ+स् + च्+अ+र्+य्+आ

पूर्व पद उत्तर पद

श

(यहाँ पूर्व पद के अंतिम वर्ण ‘स’ के पश्चात् ‘च’ आया है, अतः ‘स’ ‘श्’ में बदल गया है)

संधि वर्ण = त + प + श् + च + र्या

संधि पद = तपश्चर्या

अभ्यास

पाठ्यपुस्तक से उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद				
संधि-विच्छेद				
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

4.9 ‘स’ का ‘ष’ (षत्व विधान)

नियम – (18) यदि ‘स्’ के पहले ‘अ/आ’ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तो ‘स’ का ‘ष’ हो जाता है।

तालिका —

पूर्व पद	**उत्तर पद**	**संधि वर्ण**
स्	अ / आ से भिन्न स्वर (इ, इ, उ, ऊ ए, ए, ओ, औ)	ष

उदाहरण —

मूल शब्द – अभिषेक

संधि विच्छेद – अभि + सेक

वर्ण विच्छेद – अ + भ् + इ + स् + ए + क् + अ

पूर्व पद / उत्तर पद

ष

(यहाँ पूर्व पद के अंतिम वर्ण ‘इ’ के बाद ‘स्’ आया है, अत: ‘स्’ का ‘ष’ हो गया)

संधि वर्ण = अ + भि + षे + क

संधि पद = अभिषेक

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**विषम**	**विशेष**	**निषिद्धि**	**निषेध**
संधि-विच्छेद	वि+सम	वि+सेष	नि+सिद्ध	नि+सेध
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

4.10 'ष' संबंधी विशेष नियम

नियम – (19)

यदि किसी शब्द के अंत में 'ष' हो और उसमें 'त' अथवा 'थ' जोड़ना हो तो 'त' के स्थान पर 'ट' तथा 'थ' के स्थान पर 'ठ' होगा।

तालिका —

पूर्व पद	उत्तर पद	संधि वर्ण
ष्	त थ	ट ठ

उदाहरण —

मूल शब्द – रुष्ट

संधि विच्छेद – रुष् + त

वर्ण विच्छेद – र् + उ + ष + त् + अ

पूर्व पद (र् + उ + ष) / उत्तर पद (त् + अ)

ट

(यहाँ पूर्व पद 'ष' के पश्चात् 'त्' है, अतः 'त्' का 'ट्' हो गया)

संधि वर्ण = रुष् + ट

संधि पद = रुष्ट

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**तुष्ट**	**सृष्ट**	**आकृष्ट**	
संधि-विच्छेद	तुष्+त	सृष+थ	आकृष+त्	
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

05

विसर्ग संधि

विसर्ग

एक सज्जन मेरे पास किसी काम से आए। उनके साथ उनके मित्र भी थे। मित्र का परिचय देते हुए उन्होंने बताया कि, 'ये मेरे अंतरंग मित्र हैं।'

मैंने उनसे पूछा, 'अंतरंग मित्र! अंतरंग का आशय ही घनिष्ठ मित्र या विश्वस्त मित्र से है। फिर आप मित्र के साथ अंतरंग मित्र क्यों प्रयोग कर रहे हैं।' वे बोले- क्षमा करें मेरा भाषा-ज्ञान बहुत थोड़ा है।

मैंने कहा, 'अंतरंग शब्द दो शब्दों के योग से बना है। अंतर+अंग 'अंतर' अव्यय है, जिसका शब्दों में यदि प्रथम पद के रूप में यदि उपयोग किया जाए, तो बहुधा निम्नांकित अर्थ होते हैं-

आंतरिक रूप से, के अंदर भीतर, भीतर रहकर, भरा हुआ, अंदर की ओर, आंतरिक, गुप्त आदि। अत: अंतर के 'र्' का प्रयोग वर्ण के प्रथम, द्वितीय वर्ण अथवा 'श, ष, स्' से पूर्व किया जाए, तो विसर्ग का रूप धारण करता है, जैसे- अंत:करण, अंत:स्थ आदि। क्योंकि दोनों ही शब्दों में विसर्ग के पूर्व त-प्रथम वर्ण आया है। अत: यहाँ 'र्' ने विसर्ग का रूप धारण किया है, किंतु अन्य वर्णों के साथ प्रयोग करने पर यह अपने पूर्व रूप 'र्' के रूप में ही रहता है। अंतरंग में अंतर्+अंग की संधि है। इसमें 'र्' विसर्ग के रूप में होने से 'र्+अ' मिलकर 'र' का रूप ले रहा है। इस प्रकार अंतरंग शब्द का अर्थ हुआ, जो अंतर अर्थात् आंतरिक अंग हैं (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) उनसे अभिन्न है अत: अंतरंग का अर्थ हुआ, जो मनके अनुकूल है, बुद्धि, चित्त अथवा अहंकार के अनुकूल है, वह व्यक्ति। अत: अंतरंग शब्द स्वत: उस व्यक्ति का द्योतक है, जो अत्यंत घनिष्ठ संबंध रखता है तो यह बात बिना विसर्ग-संधि को जाने स्पष्ट नहीं हो सकती। तो आइए, विसर्ग की अवधारणा को स्पष्ट करें।

अवधारणा —

विसर्ग का अर्थ है- त्याग। विसर्ग नाम इसलिए दिया गया है कि उक्त वर्ण के उच्चारण करने के लिए मुख से श्वास छोड़ना (त्यागना) पड़ता है। जब विसर्ग के साथ स्वर एवं व्यंजन का मेल होता है, तो उससे होने वाले विकार (परिवर्तन) को **विसर्ग संधि** कहते हैं।

विसर्ग-संधि का संबंध विशेष रूप से संस्कृत के तत्सम शब्दों से है। संस्कृत में विसर्ग संधि को चार प्रकार से बताया गया है।

विसर्ग

उत्व	**रुत्व**	**शत्व**	**विसर्ग का लोप**
विसर्ग	विसर्ग	विसर्ग को श	
का	का	का	
ओ	र्	श, ष, स	

नियम —

1. यदि विसर्ग के आगे घोष ध्वनियाँ हों तो विसर्ग 'उ' में बदल जाता है। और यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुण संधि द्वारा 'ओ' (अ+उ) हो जाता है।
2. यदि विसर्ग के पूर्व अ, इ, उ हो और बाद में सघोष ध्वनियाँ हो तो विसर्ग 'र्' में बदल जाता है। 'र्' के कारण इसे रुत्व संधि कहते हैं।
3. यदि विसर्ग के पूर्व अ, इ, उ हो तथा बाद में 'त' वर्ग के साथ 'स्' आता अघोष ध्वनियाँ आए तो विसर्ग श, ष, स में बदल जाता है। 'श्' में बदलने से इसे 'शत्व' विधान कहते हैं। 4. विसर्ग का लोप।

घोष वर्ण– प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा तथा पाँचवा वर्ण, सारे स्वर तथा य, र, ल, व है। इनके उच्चारण के समय नाद तंत्रियाँ झंकृत होती है।

5.1 विसर्ग + स्पर्श व्यंजन

5.1.1 विसर्ग का 'ओ' (उत्व-विधान)

(अ-विसर्ग (:)+किसी वर्ग का तीसरा वर्ण = ओ)

नियम - (1)

यदि विसर्ग (अः) के बाद घोष व्यंजन (वर्ग का तृतीय वर्ण) आ जाए तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है और यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुण संधि द्वारा 'ओ' होता है।

घोष ध्वनि —

वर्ग	तृतीय वर्ण
क	ग
च	ज
ट	ड
त	द
प	ब

उदाहरण —

मूल शब्द - सरोज

संधि विच्छेद - सरः + ज

वर्ण विच्छेद - स् + अ + र् + अ + : + ज + अ

पूर्व पद उत्तर पद

(अ+उ=ओ)

(यहाँ पूर्व पद में विसर्ग के बाद 'च' वर्ग का तृतीय वर्ण 'ज' आने से 'र्' में 'ओ' मिलकर 'ओ' हो गया)

संधि वर्ण = स + रो + ज (र्+ओ=रो)

संधि पद = सरोज

विशेष —

1. इस नियम के कुछ अपवाद भी हैं; जैसे —
अंत: + देशीय = अतर्देशीय
अंत: + गत = अन्तर्गत

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**यशोदा**	**रजोगुण**	**तपोबल**	**अधोगति**
संधि-विच्छेद	यश:+दा	रज:+गुण	तप:+बल	अध:+गति
संधि-पद	**स्वर्ग**	**मनोज**	**पयोद**	
संधि-विच्छेद	स्व:+ग	मन:+ज	पय:+द	

विशेष—

किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण घोष वर्ग कहलाता है।

विसर्ग + स्पर्श व्यंजन

5.1.2 विसर्ग का 'ओ' (उत्व विधान)

(अ + विसर्ग (:)+किसी वर्ग का चतुर्थ वर्ण = ओ)

नियम - (2)

विसर्ग (अ:) के बाद किसी वर्ग का चतुर्थ वर्ण आ जाए तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है और यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुण संधि द्वारा 'ओ' हो जाता है।

घोष ध्वनि —

वर्ग	चतुर्थ वर्ण
क	घ
च	झ
ट	ढ़
त	ध
प	भ

उदाहरण —

मूल शब्द - मनोभाव

संधि विच्छेद - मन: + भाव

वर्ण विच्छेद - म् + अ + न् + अ + (:) + भ् + आ + व् + अ

पूर्व पद उत्तर पद

अ+उ=ओ

(यहाँ पूर्व पद में विसर्ग के पश्चात् 'प' वर्ग का चतुर्थ वर्ण 'भ' आया है, अत: विसर्ग का 'उ' हो गया और वह 'अ' से मिलकर 'ओ' हो गया।)

संधि वर्ण = म+न्+ओ+भा

नो

संधि पद = मनोभाव

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**पयोधर**	**यशोधरा**	**तपोभूमि**	**मनोभाव**
संधि-विच्छेद	पय:+धर	यश:+धरा	तप:+भूमि	मन:+भाव
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

विसर्ग + स्पर्श व्यंजन

5.1.3 विसर्ग का 'ओ' (उत्व विधान)

(अ + विसर्ग (**:**)+किसी वर्ग का पंचम वर्ण = ओ)

नियम - **(3)**

विसर्ग से पहले यदि 'अ' हो और उसके बाद किसी वर्ग का पंचम वर्ण आ जाए, तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है और यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुणसंधि द्वारा 'ओ' हो जाता है।

घोष ध्वनि —

वर्ग	चतुर्थ वर्ण
क	ङ
च	ञ
ट	ण
त	न
प	म

उदाहरण —

मूल शब्द - तेजोमय

संधि विच्छेद - तेज**:** + मय

वर्ण विच्छेद - त्+ए+ज्+अ+ **:** +म्+अ्+य्+अ

पूर्व पद उत्तर पद

(अ+उ)

(यहाँ विसर्ग से पूर्व 'अ' होने से तथा उसके बाद 'प' वर्ग के पंचम वर्ण 'म्' आने से विसर्ग का 'उ' हो गया तथा वह पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर 'ओ' हो गया।)

संधि वर्ण = ते+जो+म+य (ज्+ओ)

संधि पद = तेजोमय

अभ्यास

पाठ्यपुस्तक से उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**शिरोमणि**			
संधि-विच्छेद	शिर:+मणि			
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

अपवाद—

पुन: + मिलन=पुनर्मिलन (यहाँ 'म' म वर्ग का पंचम वर्ण है)

विसर्ग + स्पर्श + अंतस्थ व्यंजन

5.1.4 विसर्ग का 'ओ' (उत्व विधान)

(अ-विसर्ग (:) + य, र, ल, व, ह = ओ)

नियम - (4) यदि विसर्ग के बाद अन्तस्थ (य, र, ल, व, ह) + ऊष्म वर्ण आ जाए तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है और यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुण संधि द्वारा 'ओ' हो जाता है।

उदाहरण —

मूल शब्द - मनोयोग

संधि विच्छेद - मन: + योग

वर्ण विच्छेद - म् + अ + न् + अ + (:) + य् + ओ + ग् + अ

पूर्व पद उत्तर पद

अ+उ=ओ

(यहाँ विसर्ग के बाद उत्तर पद का प्रथम पद 'य्' आने से विसर्ग का 'उ' हो गया तथा यह 'उ' अपने पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर 'ओ' हो गया है)

संधि वर्ण = म + न् + ओ + यो + ग (न्+ओ=नो)

नो

संधि पद = मनो योग

अपवाद —

अंत: + राज्यीय = अन्तर्राज्यीय

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**मनोरथ**	**मनोहर**	**बयोवृद्ध**	**मनोविज्ञान**
संधि-विच्छेद	मन:+रथ	मन:+हर	बय:+वृद्ध	मन:+विज्ञान
संधि-पद	**मनोविनोद**	**पुरोहित**		
संधि-विच्छेद	मन:+विनोद	पुर:+हित		

5.2 विसर्ग + स्वर = विसर्ग का 'र्' (रुत्व विधान)

5.2.1 नियम – (5)

यदि विसर्ग के पश्चात (अ/आ को छोड़कर) कोई स्वर हो तो विसर्ग के स्थान पर 'र्' हो जाता है।

उदाहरण —

मूल शब्द – निरूपाय

संधि विच्छेद – नि: + उपाय

वर्ण विच्छेद – न् + इ + : + उ + प् + आ + य् + अ

पूर्व पद उत्तर पद

र् + उ = रू

(यहाँ विसर्ग (:) के बाद 'उ' स्वर है अत: विसर्ग का 'रु' हो गया)

संधि वर्ण = निर् + उपाय

संधि पद = निरूपाय

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**दुरुपयोग**	**निरुत्साह**		
संधि-विच्छेद	दु:+उपयोग	निर्:+उत्साह		
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

विसर्ग + स्पर्श व्यंजन = विसर्ग का 'र्' (रुत्व विधान)

5.2.2 नियम - (6) यदि 'इ' या 'उ' के बाद विसर्ग हो तथा विसर्ग के बाद किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ अथवा पंचम वर्ण आए तो विसर्ग का ' र्' हो जाता है।

उदाहरण —

मूल शब्द - दुर्भावना

संधि विच्छेद - दुः + भावना

वर्ण विच्छेद - द्+उ+ : + भ्+आ+व्+अ+न्+आ

पूर्व पद र् उत्तर पद

(यहाँ 'उ' के बाद विसर्ग है तथा विसर्ग के बाद 'प' वर्ग का चतुर्थ वर्ण 'भ' आने से विसर्ग का 'र्' हो गया है)

संधि वर्ण = दु + र् + भावना (रेफ का प्रयोग)

संधि पद = दुर्भावना

अन्य उदाहरण —		**तृतीय वर्ण**	**चतुर्थ वर्ण**	**पंचम वर्ण**
'क' वर्ग	-	स्वर्ग, पुनर्गमन	--	--
'च' वर्ग	-	निज	निर्जर	निर्झर
'ट' वर्ग	-	--	--	--
'त' वर्ग	-	निर्दय	निर्धन	पुनर्निर्माण
'प' वर्ग	-	निर्बाध	दुर्भावना	बहिर्मुख

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**दुर्जन**	**निर्मल**	**दुर्गंध**	**निर्धन**
संधि-विच्छेद	दु:+जन	नि:+मल	दु:+गंध	नि:+धन
संधि-पद	**दुर्घटना**			
संधि-विच्छेद	दु:+घटना			

अ-विसर्ग + अन्तस्थ तथा ऊष्मवर्ण = विसर्ग का 'र्' (रुत्व विधान)

5.2.3 नियम - (7)

यदि विसर्ग (अः) के बाद अन्तस्थ (य, र, ल, व) अथवा ऊष्म वर्ण 'ह' आए तो विसर्ग का 'र्' हो जाता है।

उदाहरण —

मूल शब्द - निर्लज्ज

संधि विच्छेद - निः + लज्ज

वर्ण विच्छेद - न्+इ+ : + ल्+अ+ज्+ज्+अ

पूर्व पद उत्तर पद

र

(यहाँ विसर्ग के बाद 'ल्' आने से विसर्ग का 'र्' हो गया है)

संधि वर्ण = नि + र् + लज्ज (रेफ का प्रयोग)

संधि पद = निर्लज्ज

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**निर्वाह**	**निर्विवाद**	**दुर्योधन**	**अंतर्यामी**
संधि-विच्छेद	निः+वाह	निः+वाद	दुः+योधन	अंतः+यामी
संधि-पद	**आशीर्वाद**			
संधि-विच्छेद	आशीः+वाद			

5.3 विसर्ग + स्वर + ऊष्म व्यंजन = विसर्ग का 'श' (शत्व विधान)

5.3.1 नियम – (8)

यदि विसर्ग के बाद 'च, वर्ग का कोई भी वर्ण हो या, श' हो तो विसर्ग का 'श्' हो जाता है।

उदाहरण —

मूल शब्द – दुश्चरित्र

संधि विच्छेद – दु: + चरित्र

वर्ण विच्छेद – द्+उ+ : +च्+अ+र्+इ+त्+र

पूर्व पद उत्तर पद

श्

(यहाँ विसर्ग के पश्चात् 'च्' आने से विसर्ग का 'श्' हो गया है)

संधि वर्ण = दु + श् + चरित्र

संधि पद = दुश्चरित्र

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**निश्चल**	**निश्छल**	**निश्शंक**	**हरिश्चन्द**
संधि-विच्छेद	नि:+चल	नि:+छल	नि:+शंक	हरि:+चन्द
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

विसर्ग + ऊष्म व्यंजन = विसर्ग का 'ष' में परिवर्तन (शत्व विधान)

(उपसर्ग + विसर्ग **:** + क/ख/प/फ) = ष्

5.3.2 नियम – (9)

उपसर्ग में आए विसर्ग के पश्चात् 'क, ख, प, फ, ट्, ठ' हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है।

उदाहरण —

मूल शब्द – निष्कपट

संधि विच्छेद – निः + कपट

वर्ण संधि – न् + इ + (:) + क् + अ + प् + अ + ट् + अ

पूर्व पद् उत्तर पद

ष्

(यहाँ उपसर्ग के पश्चात् विसर्ग आने से विसर्ग का 'ष्' हो गया है। यहाँ 'नि' उपसर्ग है।)

संधि वर्ण = नि + ष् + क + प + ट

संधि पद = निष्कपट

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**दुष्कर्म**	**निष्कलंक**	**निष्पाप**	**दुष्परिणाम**
संधि-विच्छेद	दु:+कर्म	नि:+कलंक	नि:+पाप	दु:+परिणाम
संधि-पद	**दुष्ट**	**आविष्कार**	**निष्फल**	
संधि-विच्छेद	दु:+ट	आवि:+कार	नि:+फल	

5.3.3 विसर्ग + ऊष्म व्यंजन = विसर्ग का 'स' (शत्व विधान)

(उपसर्ग + विसर्ग **:** + क/ख/प/फ) = ष्

नियम – (10)

विसर्ग के बाद यदि 'त्, थ, या स्' हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है।

उदाहरण —

शब्द – नमस्ते

संधि विच्छेद – नम**:** + ते

वर्ण विच्छेद – न् + अ + म् + अ + (:) + त् + ए

पूर्व पद — उत्तर पद

स्

(यहाँ विसर्ग के पश्चात् 'त्' आने से विसर्ग का 'स्' हो गया है)

संधि वर्ण = न+म+स्+ते

संधि पद = न मस्ते

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**मनस्ताप**	**निस्तेज**	**विस्तार**	**निसंतान**
संधि-विच्छेद	मन:+ताप	नि:+तेज	वि:+तार	नि:+संतान
संधि-पद	**श्रेयस्कर**	**निस्सार**	**दुस्साहस**	
संधि-विच्छेद	श्रेय:+कर	नि:+सार	दु:+साहस	

5.4 विसर्ग + स्वर + अन्तस्थ व्यंजन
'र्' का लोप

नियम - (11)

यदि 'इ' बाद विसर्ग हो और उसके बाद 'र्' आए तो पूर्वपद के ह्रस्व का दीर्घ होकर 'र्' का लोप हो जाता है।

उदाहरण —

शब्द - नीरस

संधि विच्छेद - नि: + रस

वर्ण विच्छेद - न् + इ + (:) + र + अ + स् + अ

पूर्व पद — उत्तर पद

ई

(यहाँ विसर्ग के बाद 'र्' आने से विसर्ग का पूर्व स्वर 'इ' दीर्घ 'ई' में बदल गया है)

संधि वर्ण = न् + ई + र + स (न्+ई=नी)

संधि पद = नी रस

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**नीरोग**	**नीरद**		
संधि-विच्छेद	नि:+रोग	नि:+रव		
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

5.5 विसर्ग का लोप नहीं होता

5.5.1 नियम – (12)

जब विसर्ग के बाद 'क, ख, प, फ' में से कोई वर्ण आए तो विसर्ग ज्यों का त्यों रहता है।

उदाहरण —

मूल शब्द – प्रात:काल

संधि विच्छेद – प्रात: + काल

वर्ण विच्छेद – प् + र् + आ + त् + अ +(:) + क् + आ + ल् + अ

पूर्व पद (प् + र् + आ + त् + अ +(:)) उत्तर पद (क् + आ + ल् + अ)

(विसर्ग ज्यों का त्यों है, क्योंकि विसर्ग के बाद 'क' वर्ण आया है)

संधि वर्ण = प्रा + त: + का+ल

संधि पद = प्रात: काल

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**पय:पान**	**रज:कण**	**अध:पतन**	**अंत:पुर**
संधि-विच्छेद	पय+पान	रज+कण	अध+पतन	अंत+पुर
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

विसर्ग का विकल्प में लोप नहीं होता

5.5.2 नियम - (13)

यदि विसर्ग के बाद 'श, ष, स' हो तो विसर्ग यथावत रहता है। अथवा विसर्ग के स्थान में आगे का वर्ण हो जाता है।

विशेष —

वर्तमान में यह नियम हिंदी में बहुत ही कम प्रचलित है। विकल्प के अभाव में विसर्ग का लोप हो जाता है।

उदाहरण —

शब्द - निस्संदेह/निःसंदेह

संधि विच्छेद - निः+संदेह

वर्ण विच्छेद - न्+इ+ (:) + स+(ं) द्+ए+ह्+अ

पूर्व पद (न्+इ+ (:)) उत्तर पद (स+(ं) द्+ए+ह्+अ)

(यहाँ विसर्ग के बाद 'स' आने से विसर्ग यथावत भी है तथा 'स्' का प्रयोग विकल्प रूप से भी किया गया है)

संधि वर्ण = निः+संदेह (निस्संदेह)

संधि पद = निःसंदेह/निस्संदेह

अभ्यास

पाठ्यपुस्तक से उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद	**निस्संतान**	**दुस्स्वप्न**		
संधि-विच्छेद	निः+संतान	दुः+स्वप्न		
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

5.6 विसर्ग + स्वर = विसर्ग का लोप

नियम – (14)

यदि विसर्ग से पूर्व 'अ' हो तथा उसके बाद 'अ' को छोड़कर भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

उदाहरण —

मूल शब्द	–	अत:एव
संधि विच्छेद	–	अत: + एव
वर्ण विच्छेद	–	अ + त् + अ + (:) + ए + व् + अ
		पूर्व पद उत्तर पद
	=	(यहाँ विसर्ग के पूर्व 'अ' है तथा विसर्ग के बाद 'अ' से भिन्न स्वर 'ए' है अत: विसर्ग का लोप हुआ)
संधि वर्ण	=	अ + त + ए + व
संधि पद	=	अतएव

अभ्यास

उदाहरण के अनुसार अभ्यास करें। साथ ही पाठ्यपुस्तक से अन्य उदाहरण लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

संधि-पद				
संधि-विच्छेद				
संधि-पद				
संधि-विच्छेद				

01

परिशिष्ट

निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले प्रश्न-पत्रों का प्रारूप

निदानात्मक प्रश्न-पत्र —

कक्षा - आठ | विषय - हिंदी व्याकरण

समय - 30 मिनिट

प्रकरण - विसर्ग संधि, विसर्ग का, श्, स्, ष् में परिवर्तन

निर्देश —

1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी प्रश्न-पत्र में निर्धारित स्थान पर देने हैं।
3. सभी प्रश्न स्वतंत्र हैं, अत: प्रश्न पढ़कर साथ-साथ उत्तर लिखते जाएँ।

प्रश्न-1. जिस शब्द में विसर्ग 'ष्' में परिवर्तित हुआ है उसके आगे (3) का निशान लगाएँ।

1.	निष्फल	( )	2.	विषाण	( )
3.	विष	( )	4.	निष्काम	( )
5.	भास्कर	( )	6.	कृष्ण	( )
7.	दुष्कर्म	( )	8.	निष्पाप	( )
9.	विष्णु	( )	10.	निश्चय	( )

प्रश्न-2. निम्नांकित शब्द समूह में जो शब्द शुद्ध हो, उसे रेखांकित करें।

क. विष्मय, विष्मय, विस्मय, विश्मय।

ख. विख्यात, विष्ख्यात, वि-ख्यात, विक्ख्यात।

ग. भाष्कर, भास्कर, भाश्कर, भाषकर।

घ. निष्पाप, नि:पाप, निस्पाप, निश्पाप।

ङ. दुश्कर्म, दुष्कर्म, दुस्कर्म, दुष्करम।

प्रश्न-3. संधि विच्छेद कीजिए— 'दुष्परिणाम', दुष्फल, निष्पाप, चतुष्कोण।

प्रश्न-4. संधि कीजिए- नि:+काम, नि:+कर्ष, नि:+पक्ष, नि:+फल, नि:+कारण।

प्रश्न-5. विसर्ग का 'ष्' किस-किस स्थिति में बनता है, दो स्थितियाँ बताइए।

प्रश्न-6. विसर्ग का 'श्' किस शब्द में हुआ है- उसके आगे (3) का निशान लगाइए।

1.	निश्चय	( )	2.	निस्ताप	( )
3.	शशक	( )	4.	पश्चाताप	( )
5.	निशाकर	( )	6.	निश्छल	( )

प्रश्न-7. प्राय:+चित्, हरि:+चन्द्र, राम:+च, वि:+तार, श्रेय:+कर
उपर्युक्त शब्दों की संधि कीजिए।

प्रश्न-8. संधि विच्छेद कीजिए -
दुश्शासन, दुश्चरित्र, दुश्शील, निश्चल

प्रश्न-9. संधि कीजिए -
नम:+ते, नम:+कार, नि:+तेज, नि:+चिंत

प्रश्न-10. संधि विच्छेद कीजिए-
निस्संदेह, निस्सार, मनस्ताप, दुस्साहस

प्रश्न-11. विसर्ग का 'स्' किस-किस स्थिति में बनता है? तीन स्थितियाँ बताइए।

प्रश्न-12. नम:+कार=नमस्कार में विसर्ग का 'स्' बना है तो
परि:+कार:परिष्कार में विसर्ग का 'ष्' क्यों बना?

प्रश्न-13. ऐसे चार उदाहरण दीजिए जिनमें संधि करने पर विसर्ग का 'ष्' बना हो।

प्रश्न-14. विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' हो तथा विसर्ग के बाद 'क्, ख् या प्, फ्' हो संधि करने पर विसर्ग में क्या परिवर्तन आएगा?

प्रश्न-15. विसर्ग के आगे यदि 'ट्', 'ठ' हो तो संधि में विसर्ग का क्या बनेगा? दो उदाहरण

देकर समझाओ।

प्रश्न-16. जो संधियुक्त पद सही है उसके आगे कोष्ठक में (3) का निशान लगाएँ।

1.	निस्ठुर	( )	2.	चतुष्कोण	( )
3.	निस्स्वार्थ	( )	4.	भास्पति	( )
5.	धनुस्टंकार	( )	6.	युधिष्ठिर	( )
7.	बहिष्कृत	( )	8.	इष्ट	( )
9.	दुष्प्रहार	( )			

अपेक्षित उत्तर

प्रश्न-1. निष्फल, निष्काम, दुष्कर्म, निष्पाप।

प्रश्न-2. विस्मय, विख्यात, भास्कर, निष्पाप, दुष्कर्म।

प्रश्न-3. दु:+परिणाम, दु:+फल, नि:+पाप, चतु:+कोण।

प्रश्न-4. निष्काम, निष्कर्ष, निष्पक्ष, निष्फल, निष्कारण।

प्रश्न-5. विसर्ग का ष् बनने की स्थितियाँ

(i) इ या उ+:+क्, ख, प, फ में विसर्ग का 'ष्'

(ii) :+ट् या ठ् में विसर्ग का 'ष्'

प्रश्न-6. नि:+चय=निश्चय, नि:+छल=निश्छल।

प्रश्न-7. प्रायश्चित्, हरिश्चन्द्र, रामश्च, विस्तार, श्रेयस्कर।

प्रश्न-8. दु:+शासन, दु:+चरित्र, दु:+शील, नि:+चल।

प्रश्न-9. नमस्ते, नमस्कार, निस्तेज, निश्चिंत।

प्रश्न-10. नि:+संदेह, नि:+सार, मन:+ताप, दु:+साहस।

प्रश्न-11. (i) अ/आ+:+क=विसर्ग का स् (नमस्कार)

(ii) :+त/थ होने पर (निस्तेज, मनस्ताप)

(iii)इ+:+स् होने पर (निस्सार, निस्संदेह)

प्रश्न-12. नमस्कार में विसर्ग से पूर्व अ है, परन्तु परिष्कार में विसर्ग से पूर्व इ है। विसर्ग से पूर्व इ/उ हो तथा आगे क हो तो विसर्ग का ष् होता है।

प्रश्न-13. विसर्ग का ष् उदाहरण- निष्पक्ष, दुष्कर, बहिष्कार, निष्कर्ष।

प्रश्न-14. विसर्ग का 'ष्' होगा।

प्रश्न-15. विसर्ग का 'ष्' होगा।

प्रश्न-16. चतुष्कोण, निस्वार्थ, भास्पति, बहिष्कृत, दुष्प्रहार।

प्रश्न-पत्र विश्लेषण

क्र.	अध्यापन बिन्दु/उद्देश्य	प्रश्न संख्या
1.	विसर्ग से 'ष्' का प्रत्यभिज्ञान	1 (1, 4, 7, 8)
2.	'ष्' प्रयोग के शुद्ध शब्द का प्रत्यभिज्ञान	2 (क से ङ तक)
3.	'ष्' संधि-विच्छेद करेंगे, ज्ञान-प्रत्यास्मरण	3, 4, 13, 14
4.	विसर्ग से 'ष्' रचना-प्रत्यस्मरण	5, 12, 15, 16
5.	विसर्ग से 'श्' का प्रत्यभिज्ञान (तुलना)	6
6.	विसर्ग से 'श्' (संधि, संधि विच्छेद) प्रत्यास्मरण	7, 8
7.	विसर्ग से 'स्' (संधि विच्छेद, संधि) प्रत्यास्मरण	9, 10, 11

संकलित अशुद्ध शब्द

(अशुद्ध शब्दों का प्रत्यभिज्ञान कर उनकी अशुद्धि का पता लगाएगा)

विष्मय	विष्मय	विश्मय	विष्ख्यात	वि-ख्यात
विक्ख्यात	भाष्कर	भाश्कर	भाषकर	नि:पाप
निस्पाप	निश्पाप	दुष्कर्म	दुस्कर्म	दुष्कर्म
निस्ठुर	धनुस्टंकार			

उपचारात्मक शिक्षण (अभ्यासचारिकाएँ)

(1)

क. अध्यापन बिन्दु - संधि में विसर्ग का 'ष्' में परिवर्तन बोध।

ख. त्रुटि का प्रकार - संधि में विसर्ग का 'ष्' में परिवर्तन करने के नियम से अनभिज्ञ रहते हैं। कई बार जहाँ 'ष्' होना चाहिए वहाँ 'स्' या 'श्' लिख देते हैं; जैसे- परि:+कृत का संधि में 'परिश्कृत' कर देते हैं। इस प्रकार 'निश्फल', 'दुस्परिणाम' आदि का अशुद्ध प्रयोग कर देते हैं।

ग. अभ्यासमाला

1. विसर्ग से पहले यदि 'इ' या 'उ' हो तथा विसर्ग के बाद क/ख या प/फ हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है।

इ/उ स्वरों के उच्चारण के समय जीभ मूर्धा की ओर उठती है, इस कारण विसर्ग भी मूर्धन्य ध्वनि 'ष्' का उच्चारण कर देता है; जैसे- नि:+काम=निष्काम।

इस नियम को तीन बार पढ़ो तथा अपनी कॉपी में तीन बार लिखो।

2. पुस्तक में से ऐसे उदाहरणों का संकलन करो जिसमें विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' स्वर हो तथा आगे क/ख/प/फ में से कोई व्यंजन हो- संधि पद में विसर्ग का 'ष्' हुआ हो।

3. संधि करो- नि:+कलंक, परि:+कार, परि:+कृत।

(2)

क. अध्यापन बिंदु - संधि पद बनाते समय विसर्ग का स्, ष् या श् में परिवर्तन।

ख. त्रुटि का प्रकार - विसर्ग का संधि करते समय कौन-सा सकार लिखा जाए छात्रों को इसका स्पष्ट बोध नहीं है।

ग. अभ्यासमाला

1. विसर्ग के बाद यदि च्/छ् हो तो विसर्ग का 'श्' विसर्ग के बाद यदि त/थ हो तो विसर्ग का 'स्' विसर्ग के बाद यदि ट/ठ हो तो विसर्ग का 'ष्' होता है; जैसे- नि:+चय=निश्चय, मन:+ताप=मनस्ताप, धनु:+टंकार:=धनुष्टंकार।

   उक्त नियम को उदाहरण सहित तीन बार पढ़ें तथा कॉपी में तीन बार लिखें।
2. विसर्ग से 'श्' बने पाँच शब्द लिखो तथा संधि विच्छेद करो।
3. विसर्ग से 'ष्' बने पाँच शब्द लिखो और उनका संधि विच्छेद करो।
4. विसर्ग से 'स्' बने पाँच शब्द लिखो तथा संधि विच्छेद करो।

(3)

क. अध्यापन बिंदु - विसर्ग के आगे 'श्' या 'स्' होने पर क्रमश: विसर्ग का श्/स् में परिवर्तन।

ख. त्रुटि का प्रकार - विसर्ग के आगे श्, स् आने पर संधि करते समय विसर्ग को किसमें परिवर्तन करें इसका स्पष्ट बोध बालकों को नहीं है।

ग. अभ्यासमाला

1. विसर्ग के आगे यदि 'श्' हो तो विसर्ग का 'श्' होगा। विसर्ग के आगे यदि 'स्' हो तो विसर्ग का 'स्' होगा। :+श=श्श, :+स्=स्स जैसे- नि:+संतान=निस्संतान, दु:+शील=दुश्शील।

   उक्त नियम को तीन बार पढ़ो तथा कॉपी में तीन बार लिखो।
2. निम्नांकित पदों का संधि विच्छेद करो तथा विसर्ग के पूर्व व पर वर्णों का उल्लेख करते हुए बताओ कि विसर्ग का क्या रूप परिवर्तित हुआ है; जैसे-

   निस्संदेह=नि:+संदेह (इ+:+स्, विसर्ग का स्)

   दुश्शासन, निस्संदेह, निश्शंक, निस्संकार, निश्चय।

(4)

क. अध्यापन बिंदु

1. विसर्ग संधि में विसर्ग से 'ष्', 'श्', 'स्' बनने के नियमों का बोध कराना।
2. उपयुक्त उदाहरणों द्वारा ज्ञान की पुष्टि करना।

ख. त्रुटि का प्रकार - छात्र प्राय: संधि में विसर्ग से श्, ष्, स् बनने के नियमों से परिचित नहीं हैं। वे अनुमान से ही संधि करते हैं।

ग. **अभ्यासमाला** – अध्यापक श्यामपट्ट पर निम्नांकित नियम व उदाहरण प्रस्तुत कर उनका विश्लेषण कर समझाएगा तथा इन नियमों को उदाहरण सहित तीन बार कॉपी में लिखने का निर्देश देगा।

1. विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' हो तथा विसर्ग के आगे क, ख, प, फ में से कोई व्यंजन हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है; जैसे—
   निः+पक्ष=निष्पक्ष, दुः+प्रचार=दुष्प्रचार।
2. उक्त नियम की पुष्टि करने वाले पाँच उदाहरणों का संग्रह कीजिए।
3. विसर्ग के बाद च/छ हो तो विसर्ग का 'श्', ट/ठ हो तो 'ष्', त/थ हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है; जैसे—
   हरिः+त्रायते=हरिस्त्रायते, धनुः+टंकार=धनुष्टंकार, निः+चय=निश्चय।
4. उक्त नियम से संबंधित पाँच उदाहरणों का संकलन कर उनका विश्लेषण कीजिए।
5. विसर्ग के आगे यदि श/स हो तो संधि में विसर्ग का भी वही व्यंजन श्/स् हो जाता है; जैसे—
   निः+संदेह=निस्संदेह, दुः+शासन=दुश्शासन।
6. उक्त नियमांतर्गत आने वाले पाँच उदाहरणों का संकलन कीजिए।

विशेष :-

1. नैदानिक परीक्षण वैयक्तिक अधिक होते हैं। छात्र की आवश्यकता को ध्यान में रखकर यह परीक्षण तैयार किया जाता है।
2. नैदानिक परीक्षण, परीक्षण का एक अंग है परीक्षा नहीं। शिक्षक किसी भी समय यह परीक्षण अपने विवेक से कर सकता है।
3. इस परीक्षण से छात्र की कमजोरी का पता लगाना है, उपलब्धि का नहीं।
4. उपचारात्मक शिक्षण नैदानिक परीक्षण के बाद की प्रक्रिया है। निदान के बाद, उपचार आवश्यक है। दोनों प्रक्रियाएँ तब तक चलती रहे, जब तक कि छात्र विषय वस्तु को ठीक से नहीं समझता।
5. उपचारात्मक शिक्षण के लिए अभ्यास चारिकाएँ बनाई जाती हैं। शिक्षक ऐसी अभ्यास-चारिकाएँ अपने विवेक से आवश्यकतानुसार तैयार कर सकते हैं।

टिप्पणी : —

श्री राधेश्याम शर्मा 'गौड़' जयपुर द्वारा यह प्रारूप तैयार किया गया है। उपर्युक्त प्रारूप के अनुसार स्वयं भी कुछ निदानात्मक परीक्षण तैयार कीजिए एवं तद्नुसार उपचारात्मक शिक्षण कीजिए। शिक्षा में गुणात्मक-शिक्षण के लिए यह विधि अत्यंत व्यावहारिक एवं उपयोगी है।

‖02‖

परिशिष्ट

2 (क) स्वर-संधि संबंधी संदर्भ तालिका

इस तालिका में सुलभ संदर्भ के लिए स्वर संधि के पूर्व पद के अंतिम वर्णों (अ/आ/इ/ई/उ/ऊ/ऋ) तथा उत्तर पद के पूर्व स्वरों ('अ' से 'औ' तक) में संधि को क्रमश: उदाहरण सहित तालिका में दिया जा रहा है। आपको इन उदाहरणों के आधार पर निर्दिष्ट पृष्ठों पर समान संधियों को ढूँढ़ने तथा समझने में सहायता मिलेगी तथा आवश्यकतानुसार आप तत्संबंधी नियमों से भी परिचित हो सकेंगे।

तालिका क्रमांक-1 (अ+)

पूर्व पद का अंतिम वर्ण स्वर	उत्तर पद का प्रथम वर्ण स्वर	संधि पद में प्रयुक्त संधि स्वर		मूल शब्द	संधि-विच्छेद	पृष्ठ संख्या
				1	2	
अ +	अ	आ	दीर्घ संधि	परमार्थ	परम+अर्थ	
	आ	आ				
	इ	ए	गुण संधि			
	ई	ए				
	उ	ओ				
	ऊ	ओ				
	ऋ	आर्				
आ+	ए	ऐ	वृद्धि संधि			
	ऐ	ऐ				
	ओ	औ				
	औ	औ				

तालिका क्रमांक-2 (आ+)

पूर्व पद का अंतिम वर्ण स्वर	उत्तर पद का प्रथम वर्ण स्वर	संधि पद में प्रयुक्त संधि स्वर		मूल शब्द	संधि-विच्छेद	पृष्ठ संख्या
				1	2	
आ +	अ	आ	दीर्घ संधि			
	आ	आ				
	इ	ए	गुण संधि			
	ई	ए				
	उ	ओ				
	ऊ	ओ				
	ऋ	आर्		हिंदी भाषा में	प्रयोग नहीं होता	
	ए	ऐ	वृद्धि संधि			
	ऐ	ऐ				
	ओ	औ		हिंदी भाषा में	प्रयोग नहीं होता	
	आ	औ				

तालिका क्रमांक-3 (इ+)

पूर्व पद का अंतिम वर्ण स्वर	उत्तर पद का प्रथम वर्ण स्वर	संधि पद में प्रयुक्त संधि स्वर	मूल शब्द	संधि-विच्छेद	पृष्ठ संख्या
			1	2	
इ +	अ	य् + अ = य			
	आ	य् + आ = या			
	इ	ई — दीर्घ संधि			
	ई	ई — दीर्घ संधि			
	उ	य् + उ = यु			
	ऊ	य् + ऊ = यू			
	ऋ	य् + ऋ = यृ यण संधि	हिंदी भाषा में	प्रयोग नहीं होता है	
	ए	य् + ए = ये			
	ऐ	य् + ऐ = यै			
	ओ	य् + ओ = यो	हिंदी भाषा में	प्रयोग नहीं होता है	
	औ	य् + औ = यौ			

तालिका क्रमांक-4 (ई+)

पूर्व पद का अंतिम वर्ण स्वर	उत्तर पद का प्रथम वर्ण स्वर	संधि पद में प्रयुक्त संधि स्वर	मूल शब्द	संधि-विच्छेद	पृष्ठ संख्या
			1	2	
ई +	अ	य् + अ = य यण			
	आ	य् + आ = या संधि			
	इ	ई दीर्घ			
	ई	ई संधि			
	उ	य् + उ = यु			
	ऊ	य् + ऊ = यू			
	ऋ	य् + ऋ = यृ	हिंदी भाषा में प्रयोग नहीं होता है		
	ए	य् + ए = ये यण			
	ऐ	य् + ऐ = यै संधि			
	ओ	य् + ओ = यो	हिंदी भाषा में प्रयोग नहीं होता है		
	औ	य् + औ = यौ			

तालिका क्रमांक-5 (उ+)

पूर्व पद का अंतिम वर्ण स्वर	उत्तर पद का प्रथम वर्ण स्वर	संधि पद में प्रयुक्त संधि स्वर		मूल शब्द	संधि-विच्छेद	पृष्ठ संख्या
				1	2	
उ +	अ	व्+अ = व	यण् संधि	हिंदी भाषा में प्रयोग नहीं होता है		
	आ	व्+आ = वा				
	इ	व्+इ = वि				
	ई	व्+ई = वी				
	उ	ऊ	दीर्घ संधि			
	ऊ	ऊ				
	ऋ	व्+ऋ = वृ				
	ए	व्+ए = वे	यण संधि			
	ऐ	व्+ऐ = वै				
	ओ	व्+ओ = वो				
	औ	व्+औ = वौ				

तालिका क्रमांक-6 (ऊ+)

पूर्व पद का अंतिम वर्ण स्वर	उत्तर पद का प्रथम वर्ण स्वर	संधि पद में प्रयुक्त संधि स्वर		मूल शब्द	संधि-विच्छेद	पृष्ठ संख्या
				1	2	
ऊ +	अ	व्+अ = व	यण् संधि	हिंदी भाषा में प्रयोग नहीं होता है		
	आ	व्+आ = वा				
	इ	व्+इ = वि				
	ई	व्+ई = वी				
	उ	ऊ	दीर्घ संधि			
	ऊ	ऊ				
	ऋ	व्+ऋ = वृ				
	ए	व्+ए = वे	यण संधि			
	ऐ	व्+ऐ = वै				
	ओ	व्+ओ = वो				
	औ	व्+औ = वौ				

तालिका क्रमांक-7 (ए्+, ऐ्+)

पूर्व पद का अंतिम वर्ण स्वर	उत्तर पद का प्रथम वर्ण स्वर	अयादि संधि पद में प्रयुक्त संधि स्वर	मूल शब्द	संधि-विच्छेद	पृष्ठ संख्या
			1	2	
ए् +	अ	अय् + अ = अय			
	आ	–			
	इ	–			
	ई	–	हिंदी भाषा में प्रयोग	नहीं होता है।	
	उ	–			
	ऊ	–			
ऐ् +	अ	आय् + अ = आय			
	आ	–			
	इ	आय् + इ : आयि			
	ई	–			
	उ	–	हिंदी भाषा में प्रयोग	नहीं होता है।	
	ऊ	–			

पूर्व पद का अंतिम वर्ण स्वर	उत्तर पद का प्रथम वर्ण स्वर	अयादि संधि पद में प्रयुक्त संधि स्वर	मूल शब्द	संधि-विच्छेद	पृष्ठ संख्या
			1	2	
ओ +	अ	अव् + अ = अव			
	आ	–	हिंदी भाषा में प्रयोग	नहीं होता है।	
	इ	अव + इ = अवि			
	ई	–			
	उ	–	हिंदी भाषा में प्रयोग	नहीं होता है।	
	ऊ	–			
औ +	अ	आव्=आव्+आ=आव			
	आ	–	हिंदी भाषा में प्रयोग	नहीं होता है।	
	इ	आवि=आव्+इ=आवि			
	ई	–	हिंदी भाषा में प्रयोग	नहीं होता है।	
	उ	आवु=आव्+उ=आवु			
	ऊ	–	हिंदी भाषा में प्रयोग	नहीं होता है।	

2 (ख) व्यंजन संधि संबंधी संदर्भ तालिका

इस तालिका में सुलभ संदर्भ के लिए व्यंजन संधि के पूर्व पद के अंतिम वर्णों तथा उत्तर पद के पूर्व स्वर/व्यंजन में मेल से बनने वाले संधि पदों को क्रमशः उदाहरण सहित दिया जा रहा है। इससे उदाहरण के आधार पर निर्दिष्ट पृष्ठों पर समान संधियों को ढूँढ़ने में सहायता मिलेगी तथा आवश्यकतानुसार आप तत्संबंधी नियमों से भी परिचित हो सकेंगे।

नियम	पूर्व पद	उत्तर पद	संधि वर्ण	उदा.संधि विच्छेद	संधि पद	पृष्ठ संख्या
1	अ/आ/इ/ई/उ/ऊ	छ	च्छ	वि+च्छ	विच्छेद	
2	किसी भी वर्ग का पहला वर्ण	कोई भी स्वर	पहले वर्ग के स्थान पर तीसरा वर्ण	दिक्+अम्बर	दिगम्बर	
3	किसी भी वर्ग का पहला वर्ण	किसी भी वर्ग का तृतीय/चतुर्थ वर्ण	पहले वर्ग के स्थान पर तीसरा वर्ण	दिक्+भ्रम	दिग्भ्रम	
4	किसी भी वर्ग का पहला वर्ण	कोई भी पंचम वर्ण	पंचम वर्ण	वाक्+मय	वाङ्मय	
5	किसी भी वर्ग का प्रथम/द्वितीय, तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण श, ष,	किसी भी वर्ग का प्रथम अथवा द्वितीय वर्ण	प्रथम वर्ण	उद्+तर	उत्तर	

नियम	पूर्व पद	उत्तर पद	संधि वर्ण	उदा.संधि विच्छेद	संधि पद	पृष्ठ संख्या
6	त्	कोई भी स्वर/कोई भी वर्ग का तृतीय/चतुर्थ वर्ण अथवा य, र, व	द्	उत्+अय	उदय	
7	त् अथवा द्	च वर्ग	च्	उत्+चारण	उच्चारण	
8	त् अथवा द्	श अथवा स/श	च अथवा छ	उत्+शिष्ट	उच्छिष्ट	
9	त् अथवा द्	ट वर्ग	ड वर्ग	उत्+डयन	उड्डयन	
10	त् अथवा द्	ह	त्+द=द्, द्+ह=ध्	तत्+हित	तद्धित	
11	त्	ल्	ल्	तत्+लीन	तल्लीन	
12	ऋ, र, ष	सभी स्वर, क/प वर्ग य, व, ह	ण	नार+अयन	नारायण	
13	म्	कोई भी स्पर्श व्यंजन	अनुस्वार अथवा उसी वर्ण का पंचम वर्ण	सम्+गम	संगम	
14	म्	य, र, ल, व	अनुस्वार	सम्+योग	संयोग	

नियम	पूर्व पद	उत्तर पद	संधि वर्ण	उदा.संधि विच्छेद	संधि पद	पृष्ठ संख्या
15	म्	श, ष, स, ह	अनुस्वार	सम्+हार	संहार	
16	अनुस्वार	कोई स्वर	म्	सं+उदाय	समुदाय	
17	स	श अथवा च वर्ग	श्	तपस्+चर्या	तपश्चर्या	
18	स	अ/आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो	ष	अभि+सेक	अभिषेक	
19	ष	त/थ	ट/ठ	सब्+त	रूष्ट	
20	र्	र्	र् का लोप पूर्व पद के र् के पूर्ववर्ती ह्रस्व स्वर का दीर्घ	निर्+रज	नीरज	

2 (ग) विसर्ग संधि संबंधी तालिका

इस तालिका में सुलभ संदर्भ हेतु विसर्ग संबंधी अभ्यास दिया जा रहा है। विसर्ग संधि के प्रसंग में दिए गए नियमों की पृष्ठ संख्या अंकित कर अभ्यास को दृढ़ कीजिए।

नियम	पूर्व पद का अंतिम वर्ण विसर्ग	उत्तर पद का पूर्व वर्ण	उदा.संधि विच्छेद	परिणाम	पृष्ठ संख्या
1.	पद के अंत में विसर्ग हो	वर्ग का तृतीय वर्ण (ग्, ज्, ड्, द, ब)	सर : + एव (अतएव)	विसर्ग का ओ	
2.	---"---	वर्ग का चतुर्थ वर्ण (घ, झ, ढ्, ध, भ)	मनः + भाव मनोभाव	--"--	
3.	---"---	वर्ग का पंचम वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म)	पनुः + मूल्यांकन पुनर्मूल्यांकन		
4.	---"---	य, र, ल, व, ह	मनः + योग मनोयोग		
5.	रुत्व विधान	उत्तर पद के आरंभ में अ/आ को छोड़कर कोई स्वर हो	निः + उपाय निरूपाय	विसर्ग का 'र्'	

6. नियम	---"--- पूर्व पद का अंतिम वर्ण विसर्ग	किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण हो उत्तर पद का पूर्व वर्ण	दुः + भावना दुर्भावना उदा.संधि विच्छेद	परिणाम	पृष्ठ संख्या
7.	---"---	अन्तस्थ (य,र,ल,व) तथा ऊष्म वर्ग 'ह' हो	निः + लज्ज निर्लज्ज	विसर्ग का 'र्'	
8.	शत्व विधान	च, वर्ग का कोई भी वर्ण या, श हो	दुः + चरित्र दुश्चरित्र	विसर्ग का श्	
9.	---"---	क, ख, प, फ, ट, ठ हो	दुः + कर्म दुष्कर्म	विसर्ग का ष्	
10.	---"---	त्, थ्, स्	नमः + ते नमस्ते	विसर्ग का स्	
11.	'र' का लोप	र	निः + रस नीरस	र् का लोप	
12.	विसर्ग का लोप नहीं होता	क, ख, प, फ	प्रातः + काल प्रातःकाल	विसर्ग का लोप नहीं होता	
13.	विसर्ग का विकल्प में लोप होता है	श, ष, स	दुः + स्वप्न दुःस्वप्न	विसर्ग का विकल्प से लोप होता है	
14.	विसर्ग का लोप	पद के आरंभ में 'अ' को छोड़कर कोई भिन्न स्वर हो	अतः + एव अतएव	विसर्ग का लोप	

03

परिशिष्ट

स्व-मूल्यांकन

अब आप लगभग उन सभी संधि-नियमों से भली-भाँति परिचित हो गए हैं, जिन्हें हम व्यवहार में प्रयोग करते हैं। अत: यहाँ कुछ ऐसे संधि-पदों की सूची दी जा रही है, जिसके सामने आपको संधि विच्छेद संबंधी नियमों का तालिका में दिए गए उदाहरण के अनुसार उल्लेख करना है।

संधि पहचानिए—

दीर्घ संधि - अधीश्वर, अन्नाभाव, अभीष्ट, तथापि, दावानल, नदीश, परमार्थ, परीक्षा, पीतांबर, पुण्यात्मा, भोजनालय, महार्णव, महाशय, मुनीन्द्र, रत्नाकर, रामायण, शशांक, सतीश, स्वाधीन, स्वार्थ।

गुण संधि - आत्मोत्सर्ग, उपेक्षा, देवेश, पदोन्नति, पुरुषोत्तम, प्रोत्साहन, मृगेन्द्र, यथोचित, रमेश, लोकोक्ति, सर्वोदय, सूर्योदय।

वृद्धि संधि - एकैक, परमौजस्वी, मतैक्य, वसुधैव, सदैव।

यण संधि - अत्यधिक, अत्याचार, अत्युत्तम, अभ्यागत, आद्यंत, उपर्युक्त, देव्यागम, प्रत्यय, प्रत्युत्तर, मन्वंतर, व्यर्थ, व्याप्त, व्यायाम, स्वाधीन।

अघोष संधि - उच्छ्वास, उत्कृष्ट, यत्किंचित्।

सघोष संधि - उद्गम, उद्विग्न, उन्नति, उल्लंघन, उद्दाम, तद्रूप, दिग्भ्रम, विपद्जाल, सद्वाणी।

अनुनासिक संधि - उन्मत्त, उन्माद, पराङ्मुख, मृण्मय, सन्निहित।

अन्य व्यंजन संधि - अनुचित, अनुत्तीर्ण, अहंकार, संगठन, संगोष्ठी।

विसर्ग का ओ - अधोगति, तपोभूमि, तेजोमय, पयोधि, मनोगत, मनोनुकूल, मनोभाव, मनोयोग, मनोविकार, यशोधरा।

विसर्ग का र् - दुर्दिन, दुर्नीति, दुर्बल, निरर्थक, निरीह, निर्गुण, निर्जल, निर्झर, निरुद्देश्य, निरुपाय, पुनरुक्ति।

विसर्ग का श् - निश्चित, निश्शेष।

विसर्ग का ष् - दुष्कर, निषिद्ध, निष्कारण, परिष्कार, बहिष्कार।
विसर्ग का स् - तिरस्कार, नमस्कार, निस्सार।
विसर्ग सुरक्षित - अंत:संज्ञा, अंत:साक्ष्य, मन:स्थिति।

तालिका संधि-विच्छेद

मूल शब्द	संधि का प्रकार	भेद	संधि-विच्छेद	नियम
अधीश्वर	स्वर संधि	दीर्घ संधि	अधि+ईश्वर	नियम-6

||04||

परिशिष्ट

4.1 विभिन्न परीक्षाओं में पूछी गई संधि —

1. संधि किसे कहते हैं?
2. संधि और संयोग का अंतर उदाहरण देकर समझाइए।
3. संधि के तीन मुख्य भेद बताइए।
4. स्वर संधि कितने प्रकार की होती है? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।
5. स्वर संधि तथा व्यंजन संधि में अंतर स्पष्ट कीजिए।
6. यदि वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद अनुनासिक वर्ण रहे, तो क्या विकार होता है, उदाहरण देकर समझाइए।
7. स्वर वर्ण से परे 'छ' हो तो क्या विकार होता है?
8. जगन्नाथ, षण्मास, वाङ्मय का संधि विच्छेद कीजिए तथा नियम बनाइए।
9. जब 'त्' से परे स्वर हो तो 'त्' के स्थान पर 'द्' हो जाता है, इसे दो उदाहरण देकर समझाइए।
10. उत् + चारण, विपद्+जाल, उत्+लंघन और उत्+डयन की संधियाँ मिलाइए और मिले हुए रूपों के कारण बनाइए।
11. सच्छास्त्र, उद्धत, उद्धार और तदधित का संधि विच्छेद कीजिए।
12. 'न्' के स्थान पर अनुस्वार कब होता है, दो उदाहरण देकर समझाइए।
13. अनुस्वार के स्थान पर 'म्' कहाँ-कहाँ होता है?
14. विसर्ग के स्थान पर मूर्धन्य 'ष्' कहाँ-कहाँ होता है?
15. विसर्ग के स्थान पर 'श्', 'ष्' तथा 'स्' कब हो जाता है?

4.2 निम्नलिखित में से सही वर्ण-विच्छेद को रेखांकित कीजिए—

1. पवन
   (पो+अन्, पव+अन्, पौ+अन्)
2. सूर्योदय
   (सूर्या+उदय, सूर्य+उदय, सूर्या+दय)
3. नीरोग
   (नि:+रोग, निर्+रोग, नीर्+रोग)

4. निर्झर

(नि+झर, नी+झर, नि:+झर)

5. शतांश

(शता+अंश, शत्+अंश, शत्+आंश)

6. अत्याचार

(अत्या+चार, अती+चार, अति+अचार)

7. निश्चय

(नि:+चय, निश्+चय, नि+चय)

8. दिग्गज

(दिक्+गज, दिग्+गज, दिग्ग+ज)

9. स्वागत

(स्व+आगत, सु+आगत, स्वा+गत)

10. कवीन्द्र

(कवि+इंद्र, कवी+इंद्र, कवि+ईंद्र)

4.3. निम्नलिखित में से सही संधि को चुनकर कोष्ठक में लिखिए—

1. आशी:+वाद

(आशीर्वाद, आर्शिवाद, आर्शीवाद)

2. उपरि+उक्त

(उपरोक्त, उपर्युक्त, उपरियुक्त)

3. नि:+रव

(निर्रव, नीरव, निर् रव)

4. अंत:+पुर

(अंत:पुर, अंतर् पुर, अंतर्पुर)

5. अत:+एव

(अतरेव, अतएव, अत एव)

6. ने+अन

(नयन, निअन, नेयन)

7. अति+उत्तम

(अत्युत्तम, अति उत्तम, अति युत्तम)

8. षडदर्शन

(षट्+दर्शन, षड्+दर्शन, षट्+दर्शन)

9. दुरुपयोग

(दु:+उपयोग, दुरु+उपयोग, दुर+उपयोग)

10. स्वागत

(सु+आगत, स्व+आगत्, सू+आगत)

4.4 उदाहरण के अनुसार संधि कीजिए—

1.	सम्+तोष	=	संतोष
2.	श्री+ईश	=	
3.	नम:+ने	=	
4.	सुर+इन्द्र	=	
5.	सु+आगत	=	
6.	इति+आदि	=	
7.	धनु:+टंकार	=	
8.	सत्+जन	=	
9.	प्र+मान	=	
10.	नि:+छल	=	
11.	स्व+इच्छा	=	
12.	यथा+इष्ट	=	
13.	राम+अयन	=	
14.	अनु+एषण	=	
15.	सीमा+अंत	=	

4.5 उदाहरण के अनुसार संधि-विच्छेद कीजिए —

1.	विद्यालय	=	विद्या+आलय
2.	सूक्ति	–	---------
3.	गायक	–	---------
4.	संवाद	–	---------
5.	अंतर्राष्ट्रीय	–	---------
6.	निराशा	–	---------
7.	तल्लीन	–	---------
8.	उद्धार	–	---------
9.	निस्संदेह	–	---------
10.	सर्व+उच्च	–	---------
11.	नमस्कार	–	---------
12.	सुषमा	–	---------

13.	यशोदा	–	---------
14.	यद्यपि	–	---------
15.	हरिश्चंद्र	–	---------

4.6 उदाहरण के अनुसार संधि के माध्यम से संधियों के नाम लिखिए—

1.	प्रातः + काल	=	प्रात:काल	विसर्ग संधि
2.	रवि + इन्द्र	=	रवीन्द्र	दीर्घ संधि
3.	भाव + अर्थ	=	-----	------
4.	जगत् + नाथ	=	-----	------
5.	ने+ अन्	=	-----	------
6.	प्रति+एक	=	-----	------
7.	स्व+इच्छा	=	-----	------
8.	पुष्प+अंजलि	=	-----	------
9.	धन+एषणा	=	-----	------
10.	एक+एक	=	-----	------
11.	सु+अल्प	=	-----	------
12.	उप+आसना	=	-----	------
13.	अभि+इष्ट	=	-----	------
14.	मनु+अंतर	=	-----	------
15.	लघु+उत्तर	=	-----	------

4.7 समुचित संधि/विच्छेद के माध्यम से रिक्त स्थानों की पूर्ति उदाहरण के अनुसार कीजिए —

1.	नौ + -------	=	नाविक	'औ' का 'अवि'
2.	------ + गीता	=	भगवद्गीता	'त्' को 'द्'
3.	गज + इन्द्र	=	गजेन्द्र	(-------)
4.	------ + आगत	=	स्वागत	(-------)
5.	वि + छेद	=	-------	(-------)
6.	प्रत्युत्तर	=	-------	(-------)
7.	---+अंत	=	देहांत	(-------)
8.	यदि+---	=	यद्यपि	(-------)
9.	अति+आनंद	=	-------	(-------)
10.	स्व+----	=	स्वाधीन	(-------)

05

परिशिष्ट

परीक्षोपयोगी संधियों की सूची (वर्णक्रमानुसार)

(अ, आ)

अन्याय=अ+नि+आय	अभ्युदय=अभि+उदय	अन्वय=अनु+अय
अन्त:पुर=अन्त:+पुर	अत्यधिक=अति+अधिक	अधीश्वर=अधि+ईश्वर
अन्योन्याश्रय=अन्य+ अन्य+आश्रय	अभीष्ट=अभि+इष्ट	अत्याचार=अति+आचार
अन्याय=अन्य+अन्य	अरण्याच्छादित=अरण्य+ आच्छादित	अधोगति=अध:+गति
अतएव=अत:+एव	अत्यंत=अति+अन्त	अन्तर्निहित=अन्त:+निहित
अहर्निश=अह:+निश	अन्वेषण=अनु+एषण	अब्ज=अप्+ज
अजन्त=अच्+अन्त	अम्मय=अप्+मय	अभ्यागत=अभि+आगत
आत्मोसर्ग=आत्म+उत्सर्ग	अन्नाभाव=अन्न+अभाव	अम्बूर्मि=अम्बु+ऊर्मि
अत्युत्तम=अति+उत्तम	अत्यावश्यक=अति+ आवश्यक	अहंकार=अहम्+कार
अन्वित=अनु+अय+इत	आशीर्वाद:आशी:+वाद	आकृष्ट=आकृष्+त
आविष्कार=आवि:+कार	आच्छादन=आ+छादन	आद्यन्त=आदि+अन्त

(इ, ई, उ, ए, क)

इत्यादि=इति+आदि	ईश्वरेच्छा=ईश्वर+इच्छा	अच्छृखल=उत्+श्रृंखल
उन्नति=उत्+नति	उद्धत=उत्+हत	उद्धृत=उत्+हृत
उन्मूलित=उत्+मूलित	उपदेशान्तर्गत=उपदेश+	उद्विग्न=उत्+विग्न

अन्तर्गत

उद्गम=उत्+गम	उपेक्षा=उप+ईक्षा	उद्घाटन=उत्+घाटन
उद्दाम=उत्+दाम	उच्चारण=उत्+चारण	उच्छिन्न=उत्+छिन्न
उच्छ्वास+उत्+श्वास	उल्लास=उत्+लास	उद्धार=उत्+अय
उन्मत=उत्+मत्त	उज्ज्वल=उत्+ज्वल	उच्छिष्ट=उत्+शिष्ट
उन्नयन=उत्+नयन	उद्योग=उत्+डयन	उल्लेख=उत्+लेख
उन्माद=उत्+माद	एकैक=एक+एक	कृदन्त=कृत्+अन्त

(त)

तथैव=तथा+एव	तल्लीन=तत्+लीन	तद्धित=तत्+हित
तेजोपुंज=तेजः+पुंज	तदाकार=तत्+आकार	तथापि=तथा+अपि
तद्रूप=तत्+रूप	तपोभूमि=तपः+भूमि	तेजोमय=तेजः+मय
तृष्णा=तृष्+ना	तेजोराशि=तेजः+राशि	तट्टीका=तत्+टीका
तपोवन=तपः+वन	तिरस्कार=तिरः+कार	

(द)

देवेन्द्र=देव+इन्द्र	दुश्शासन=दुः+शासन	देवेश:देव+ईश
दुनीति=दुः+नीति	दिग्गज=दिक्+गज	दिग्भ्रम=दिक्+भ्रम
दुर्ग=दुः+ग	दिगम्बर=दिक्+अम्बर	दुःस्थल=दुः+स्थल
दावानल=दाव+अनल	दुर्धर्ष=दुः+धर्ष	दुर्दिन=दुः+दिन
दुस्तर=दुः+तर	दुर्वह=दुः+वह	देवर्षि=देव+ऋषि
देव्यागम=देवी+आगम	दुष्कर=दुः+कर	दुर्जन=दुः+जन

(न)

नमस्कार=नमः+कार	नद्यम्बु=नदी+अम्बु	नारायण=नार+अयन ('न' का 'ण')
नारीश्वर=नारी+ईश्वर	नदीश=नदी+ईश	न्यून=नि+ऊन
नद्यूर्मि=नदी+ऊर्मि	नयन=ने+अन	नायक=नै+अक

नाविक=नौ+इक
निश्छल=नि:+छल
निश्चल=नै९अक
निस्सन्देह=नि:+सन्देह
निस्सृत=नि:+सृत
निस्सार=नि:+सार
निराधार=नि:+आधार
निरीक्षण=नि:+ईक्षण
निरीह=नि:+ईह
निष्पा=नि:+पाप
निष्काम=नि:+काम
निषिद्ध=नि+सिद्ध, निसिध्
निस्सहाय=नि:+सहाय
निरर्थक=नि:+अर्थक
निर्विवाद=नि:+विवाद
निश्चिन्त=नि:+चिन्त
निरन्तर=नि:+अन्तर
निर्झर=नि:+झर
निश्चय=नि:+चय
निष्प्राण=नि:+प्राण
निर्मल=नि:+मल
निर्भर=नि:+भर
निरुद्देश्य=नि:+उद्देश्य
निश्शब्द=नि:+शब्द
निष्कपट=नि:+कपट
निर्गुण=नि:+गुण
निस्तार=नि:+तार
निर्विकार=नि:+विकार
निष्फल=नि:+फल
निष्कारण=नि:+कारण
निरुपाय=नि:+उपाय
निर्जल=नि:+जल
नीरव=नि:+रव
नीरोग=नि:+रोग

(प)

परमौजस्वी=परम+ओजस्वी
परमेश्वर=परम+ईश्वर
परमौषध=परम+औषध
परमार्थ=परम+अर्थ
पावन=पौ+अन
पावक=पौ+अक
पित्रादेश=पितृ+आदेश
पंचम=पम्+चम
पुरुषोत्तम=पुरुष+उत्तम
प्रत्येक=प्रति+एक
प्रत्युत्तर=प्रति+उत्तर
पित्रनुमति=पितृ+अनुमति
प्राङमुख=प्राक्+मुख
पित्रिच्छा=पितृ+इच्छा
पवन=पो+अन
पवित्र=पो+इत्र
पुनर्जन्म=पुन:+जन्म
पुरस्कार=पुर:+कार
प्रत्यय=प्रति+अय
परिच्छेद=परि+छेद
परीक्षा=परि+ईक्षा
प्रत्यक्ष=प्रति+अक्ष
प्रांगण=प्र+अंगण
पुनरुक्ति=पुन:+उक्ति
पीताम्बर=पीत+अम्बर
पदोन्नति=पद+उन्नति
पश्वधम=पशु+अधम
पृष्ठ=पृष्+थ
प्रतिच्छाया=प्रति+छाया
प्रोत्साहन=प्र+उत्साहन
पयोधि=पय:+धि
परन्तु=परम्+तु
परिष्कार=परि:+कार
प्रात:काल=प्रात:+काल
प्रथमोऽध्याय:=प्रथम: +अध्याय:
पयोद=पय:+द
पय:पान=पय:+पान

(भ)

भवन=भो+अन	भानूदय=भानु+उदय	भाग्योदय=भाग्य+उदय
भोजनालय=भोजन+आलय	भावुक=भौ+उक	

(म)

मुनीन्द्र=मुनि+इन्द्र	महीन्द्र=मही+इन्द्र	महोर्मि=महा+ऊर्मि
मृण्मय=मृत्+मय	मातृण=मातृ+ऋण	मतैक्य=मत+ऐक्य
महौज=महा+ओज	महौषध=महा+औषध	मनोहर=मन:+हर
मनोगत=मन:+गत	महाशय=महा+आशय	महेश्वर=महा+ईश्वर
मन्वन्तर=मनु+अन्तर	मध्वासव=मधु+आसव	महोत्सव=महा+उत्सव
महार्णव=महा+अर्णव	मृगेन्द्र=मृग+इन्द्र	महर्षि=महा+ऋषि
मनोयोग=मन:+योग	मनोज=मन=+ज	महेन्द्र=महा+इन्द्र
महेश=महा+ईश	मनोरथ=मन:+रथ	मनोभाव=मन:+भाव
मनोविकार=मन:+विकार	मनोऽनुकूल=मन:+अनुकूल	

(य)

यशइच्छा=यश:+इच्छा	यद्यपि=यदि+अपि	यशोऽभिलाषी=यश:+ अभिलाषी
यथोचित=यथा+उचित	यशोदा=यश:+दा	यशोधरा=यश:+धरा
यथेष्ट=यथा+इष्ट	युधिष्ठिर=युधि+स्थिर	यशोधन=यश:+धन

(र, ल, व)

रत्नाकर=रत्न+आकर	रामायण=राम+अयन	राजर्षि=राज+ऋषि
रमेश=रमा+ईश	लोकोक्ति=लोक+उक्ति	वधूत्सव=वधू+उत्सव
वध्वैश्वर्य=वधू+ऐश्वर्य	विपज्वाल=विपद्+जाल	बहिष्कार=बहि:+कार
व्यायाम=वि+आयाम	व्युत्पत्ति=वि+उत्पत्ति	वाङ्मय=वाक्+मय
वागीश=वाक्+ईश	व्यर्थ=वि+अर्थ	व्याप्त=वि+आप्त
वीरांगणा=वीर+अंगना	व्याकुल=वि+आकुल	वयोवृद्ध=वय:+वृद्ध
वसुधैव=वसुधा+एव	विद्योन्नति=विद्या+उन्नति	विद्यालय=विद्या+आलय

(श, ष, स)

शिरोमणि=शिरः+मणि	शंकर=शम्+कर	सुरेन्द्र=सुर+इन्द्र
स्वागत=सु+आगत	स्वार्थ=स्व+अर्थ	सदानन्द=सत्+आनन्द
सद्गुरु=सत्+गुरु	सद्भावना=सत्+भावना	सद्धर्म=सत्+धर्म
सज्जन=सत्+जन	सच्छास्त्र=सत्+शास्त्र	संकल्प=सम्+धर्म
सन्तोष=सम्+तोष	संचय=सम्+चय	संयोग=सम्+योग
संसार=सम्+सार	संवाद=सम्+वाद	संयम=सम्+यम
सदाचार=सत्+आचार	सीमान्त=सीमा+अन्त	संवत्=सम्+वत्
संयम=सम्+यम	सप्तर्षि=सप्त+ऋषि	सतीश=सती+ईश
स्वाधीन=स्व+अधीन	समन्वय=सम्+अनु+अय	साष्टांग=स+अष्ट+अंग
साश्चर्य=स+आश्चर्य	सत्याग्रह=सत्य+आग्रह	सर्वोत्तम=सर्व+उत्तम
सावधान=स+अवधान	संगठन=सम्+गठन	सन्निहित=सत्+निहित
सच्चरित्र=सत्+चरित्र	सद्विचार=सत्+विचार	सदैव=सदा+एव
सद्भाव=सत्+भाव	समुच्चय=सम्+उत्+चय	समुदाय=सम्+उत्+आय
सन्धि=सम्+धि	सर्वोदय=सर्व+उदय	सूर्योदय=सूर्य+उदय
सरोज=सरः+ज	सरोवर=सरः+वर	सद्वाणी=सत्+वाणी
सरय्वम्बु=सरयू+अम्बु	समुद्रोर्म्मि=समुद्र+ऊर्म्मि	स्वयम्भूदय=स्वयम्भू+उदय
स्वर्ग=स्वः+ग	शस्त्रास्त्र=शस्त्र+अस्त्र	शशांक=शश+अंक
शुद्धोदन=शुद्ध+ओदन	श्रेयस्कर=श्रेयः+कर	षड्दर्शन=षट्+दर्शन

हिन्दी : शब्द और पद

01

शब्द परिचय

1.1 शब्द क्या है?

एक कार्यशाला में मुझसे 'शब्द' पर बोलने के लिए कहा गया। मैंने 'शब्द' पर अपने विचार रखने के पूर्व यह स्पष्ट करना आवश्यक समझा कि जिस प्रकार 'जीवन' क्या है? इसका उत्तर देना एक चुनौती भरा काम है। उसी प्रकार 'शब्द' क्या है? यह समझना तथा समझाना कठिन है। इसके अर्थ को जानने में पूरा जीवन भी अधूरा लगता है।

शब्द-कोश में 'शब्द' की व्युत्पत्ति 'शब्द' धातु से 'घञ्' प्रत्यय करके की गई है, जिसका अर्थ है- बोलना। कुछ विद्वान इसे 'शप्' 'आक्रोशे' धातु से सिद्धि करते हैं। उनके अनुसार जिस प्रकार 'अप्+द = अब्द' बनता है, उसी प्रकार 'शप्+द = शब्द' बनता है। 'शप्' का अर्थ है-आक्रोश। हलायुध-कोश में 'शब्द' की सिद्धि दोनों प्रकार से दी गई है, तथा इस शब्द के 20 पर्याय दिए गए हैं।

शब्द का एक अर्थ ध्वनि भी है। इस प्रकार शब्द का अर्थ ध्वनि करना, शब्द करना अर्थात बोलना है। **महर्षि पंतजलि** ने शब्द को कर्णेन्द्रिय से ग्राह्य, बुद्धिगम्य, प्रयोग से स्फुरित तथा आकाशव्यापी ध्वनि कहा है। **महाराज भोज** ने 'शृंगार प्रकाश' में शब्द के विषय में बताया है कि जिससे अर्थ की प्रतीति हो, उसे शब्द कहते हैं।

महर्षि यास्क ने शब्द के नाम, आख्यात, (धातु) उपसर्ग और निपात चार भेद स्वीकार किए हैं। पाणिनि का विवेचन इस संबंध में सर्वाधिक प्रामाणिक माना गया है। उनके अनुसार 'सुबंत' तथा 'तिङन्त' शब्द के ये दो भेद हैं। **भरत मुनि** ने समान, विभ्रष्ट एवं देशी-शब्द के ये तीन भेद माने हैं, जिन्हें आज तत्सम, तद्भव तथा देशज के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में इसमें एक विदेशज शब्द और जुड़ गया है। उद्‌गम या रचना की दृष्टि से रूढ़, यौगिक एवं योग रूढ़ तीन भेद हैं। इस प्रकार शब्द के विषय में भारतीय मनीषियों ने बहुत चिंतन किया है। किसी एक परिभाषा में शब्द को नहीं बांधा। पाश्चात्य विद्वान इन्हें आठ वर्गों में विभाजित करते हैं, जिन्हें ''पार्ट ऑफ स्पीच (वाग्भाग)'' कहा जाता है। आज की व्याकरण इन्हीं ''पार्ट ऑफ स्पीच'' को आधार बनाकर लिखी गई है, किंतु ध्यान रहे, पाश्चात्य आधार स्थूल चिंतन को लेकर चलता है।

भारतीय मनीषियों का चिंतन, अध्यात्मिक, दार्शनिक तथा वैज्ञानिक दृष्टि से अधिक व्यापक है। प्रत्येक क्षेत्र में उन्होंने स्थूल से सूक्ष्म, सूक्ष्म से सूक्ष्मतर तथा सूक्ष्मतर से सूक्ष्मतम के चरम बिन्दु को छुआ है। अत: उन्होंने ब्रह्म को शब्द से जोड़कर **शब्दब्रह्म** की कल्पना की है, जो शब्द की महत्ता तथा व्यापकता को प्रदर्शित करती है। जिस प्रकार ब्रह्म की सत्ता सर्वत्र है, उसी

प्रकार शब्द की भी। **दण्डी के** शब्दों में यदि शब्द न होते तो सम्पूर्ण जगत अंधकारमय होता और हम लोगों का जीवन पशुवत होता। **भर्तृहरि** ने स्वीकार किया है कि सम्पूर्ण सृष्टि का प्रादुर्भाव तथा विलय शब्द से ही होता है।

जिस प्रकार ब्रह्म सत्, चित तथा आनंद तीन उपाधियों से जाना जाता है, उसी प्रकार शब्द भी नाद, रूप और बिन्दु तीन उपाधियों से युक्त है। इन्हें ज्ञान जगत (नाद या नाम जगत), ज्ञेय जगत (रूप जगत) तथा ज्ञातृ जगत (बिन्दु या मानस जगत) भी कहा गया है क्योंकि स्थूल (बाह्य) जगत शब्द जगत के माध्यम से मानस जगत में प्रवेश करता है, तथा मानस जगत शब्द जगत के माध्यम से बाह्य जगत में प्रकट होता है। यही प्रक्रिया सदैव चलती रहती है।

कहने का आशय यह कि शब्द की सत्ता सर्वव्यापी, सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक है। संसार का सम्पूर्ण ज्ञान इसी सत्ता से है। उसके बिना संसार में कुछ भी नहीं है।

हमारा सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान समस्त विधाएँ, समग्र-शैक्षिक उपलब्धियाँ, संस्कृति और सभ्यता सब कुछ शब्दों पर आश्रित हैं। संक्षेप में कहें, तो संसार का सम्पूर्ण ज्ञान शब्दमय है। इसीलिए 'शब्द' की महत्ता सर्वोपरि है। आइए, हम शब्दों की इस महत्ता को समझने का प्रयास करें।

शब्दों के दायरे में ही फलता-फिसलता मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक मात्र शब्दों की ही तो यात्रा करता है। किसी ने प्रशंसा में अच्छे शब्द कह दिए तो वह मुस्करा उठता है, और अपशब्द कह दिए तो अपने को अपमानित अनुभव करने लगता है। शब्दों में ही वह अपना क्रोध प्रकट करता है। प्रेम प्रकट करता है तथा विविध व्यापारों को सम्पादित करता है। इस प्रकार जीवन में शब्दों की सार्थकता निस्संदेह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। हम शब्द ही बोलते हैं, शब्द ही सुनते हैं, शब्द ही लिखते हैं। प्रात: से सायं तक हम अपना जीवन शब्दों के इस मायाजाल में उलझकर व्यर्थ ही गंवा देते हैं। हमें समय ही नहीं मिलता कि शब्दों की विराट महिमा को पहचाने। यदि मनुष्य इस सत्य को समझ ले, तो वह राग-द्वेष से मुक्त हो सकता है, और अपने जीवन को सार्थक बना सकता है।

कविगण इसी शब्द सम्पदा तथा भाव धारा को लेकर अपने रचना विधान से हृदय में रस-निष्पत्ति करने में सक्षम होते हैं।

दार्शनिकों ने इसी सम्पदा के सहारे पुरुष और प्रकृति का भेद मिटाने का प्रयत्न किया है। ब्रह्म से तादात्म्य स्थापित कर शब्द अद्वैत-भावना का ऐसा अनुभव कराते हैं कि पशु-पशु नहीं, पक्षी-पक्षी नहीं, दीपक-दीपक नहीं, और मनुष्य मनुष्य नहीं रहता। शायद इसी कारण भारतीय चिंतन में शब्द को ब्रह्म के समकक्ष रखकर **'शब्द-ब्रह्म'** की संज्ञा दी गई है। अत: मेरी समझ से तो शब्द को परिभाषित करना संभव ही नहीं है। फिर भी विद्वानों ने व्याकरण की दृष्टि से शब्द की परिभाषा निम्न प्रकार से दी है-

'शब्द भाषा की लघुतम तथा अर्थवान इकाई है।'

इसी को आधार बनाकर हम इसकी विवेचना करेंगे।

रोचक तथ्य

1. शब्द में एक या एक से अधिक वर्ण होते हैं।
2. वर्णों की सार्थक इकाई को ही शब्द कहा जाता है। उदा. के लिए कमल और कलम दोनों ही शब्द हैं लेकिन मलक/ मकल/ लमक/लकम शब्द नहीं है।
3. शब्दों को कोश में स्थान मिलता है। शब्द-कोश में सम्पूर्ण शब्दों की गणना संभव नहीं क्योंकि नए-नए शब्दों का निर्माण निरंतर हो रहा है।

1.2. शब्द और पद

एक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्राध्यापकों ने मुझसे शब्द और पद में अंतर पूछा। वास्तव में बहुत कम लोगों को इन दोनों के अंतर का ज्ञान होता है। अध्ययन के अभाव में शिक्षक भी इस विषय को छात्रों के समक्ष स्पष्ट रूप से नहीं रख पाते हैं।

मैंने ध्वनि, वर्ण और शब्द के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट करते हुए बतलाया कि (जिस प्रकार एक अथवा अनेक ध्वनियों के संयोग से 'वर्ण' बनते हैं, उसी प्रकार एक अथवा अनेक सार्थक वर्णों के संयोग से शब्द का निर्माण होता है।

शब्द जब शब्द कोश में रहते हैं, तो **शब्द** कहलाते हैं किंतु उन्हीं शब्दों का वाक्यों में प्रयोग होते ही वे **पद** बन जाते हैं।) इसके लिए मैंने एक उदाहरण प्रस्तुत किया। शिकारी, शेर, तीर, मार ये चार शब्द श्यामपट पर लिखे और किसी एक छात्र से उन शब्दों को उच्चारण करने को कहा-उसने चारों शब्दों का ठीक-ठीक उच्चारण किया।

मैंने पूछा-'इन शब्दों के उच्चारण से क्या अर्थ निकलता है? क्या इन शब्दों के उच्चारण मात्र से हम अपनी बात दूसरों को समझा सकते हैं?' उत्तर था-नहीं।

अत: स्पष्ट है कि इन शब्दों के उच्चारण से ये शब्दकोशीय अर्थ तो प्रकट कर रहे हैं किंतु इतने से ही बात पूरी नहीं होती है, सम्प्रेषण के लिए हमें यह भी बताना और जानना होगा कि 'किसने, किसको, क्या' किया-

(शिकार ने शेर को तीर मारा।

यह वाक्य ही हमारा आशय स्पष्ट करता है। यहाँ शिकारी, शेर, तीर तथा मारा ये चारों शब्द वाक्य में प्रयुक्त होने से पद कहलाएंगे। अत: स्पष्ट है कि समाज के विभिन्न व्यक्तियों के मध्य भाषा तभी व्यवहार का अंग बन सकती है, जब उन्हें शब्दों को वाक्य में ढालने की सामर्थ्य आए। अर्थ की दृष्टि से शब्द भाषा की सबसे छोटी इकाई भले ही हो, किंतु जब तक उस शब्द को वाक्यों में सही-सही प्रयोग करने की क्षमता हम प्राप्त नहीं करेंगे, तब तक समाज के भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के बीच सम्प्रेषण नहीं हो सकता है। वाक्यों की रचना शब्दों से नहीं पदों से होती है। यह तभी संभव है जब सम्प्रेषण के लिए शब्द-कोशीय शब्दों को पदों में परिवर्तित किया जाए।

ऐसे विभिन्न पदों का निर्माण व्याकरण के अंतर्गत आता है। इसी के अंतर्गत विराम चिह्नों द्वारा शब्दों को अर्थपूर्ण समूहों में संघटित करना भी आता है। अर्थ की दृष्टि से एक और उदाहरण देकर मैंने अपने कथन की पुष्टि की-

1. बेटे! अब भोजन कर ले।

2. मेरी ओर से यह भेंट ले।

रेखांकित 'ले' शब्द दोनों वाक्यों में प्रयुक्त है किंतु अर्थ की दृष्टि से 'ले' का प्रथम वाक्य में वही अर्थ नहीं है, जो दूसरे वाक्य में है।

प्रथम वाक्य में 'ले' शब्द भोजन क्रिया की रंजकता को बढ़ा रहा है। अत: 'ले' का कोई कोशीय अर्थ नहीं है, यह व्याकरणिक शब्द है। जबकि दूसरे वाक्य में 'ले' का वही अर्थ है, जो कोश में दिया गया है अर्थात् ग्रहण करना। अत: पद में दो प्रकार के शब्द प्रयुक्त होते हैं–

1. कोशीय शब्द
2. व्याकरणीय शब्द

इस दृष्टि से यह स्पष्ट धारणा बना लें कि किसी शब्द का वाक्य में सीधा प्रयोग नहीं होता है। कोई न कोई प्रत्यय जुड़ने पर ही वह वाक्य में प्रयुक्त होता है। अत: कोशीय शब्द का प्रयोग व्याकरणिक नियमों के अंतर्गत वाक्य में करने पर ही वाक्य रचना संभव है।)

मेरी बात सुनकर एक छात्र ने समस्या रखी कि 'लड़की जाती है।' इस वाक्य में 'लड़की' शब्द में कोई प्रत्यय/विभक्ति नहीं लगी है। अत: यहाँ 'लड़की' शब्द है या पद।

मैंने कहा इस वाक्य में 'लड़की' शब्द में कोई विभक्ति (प्रत्यय) नहीं लगी है, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है। ऐसी स्थिति में भाषाई वैज्ञानिकों का मत है कि वाक्यों में प्रयुक्त होने वाले ऐसे शब्द जिसके साथ कोई विभक्ति नहीं लगी है, शून्य प्रत्यय माना जाएगा। अत: 'लड़की' शून्य प्रत्यय है। 'लड़की' शब्द वाक्य का अंग है, अत: यहाँ यह शब्द नहीं पद है।

इसी संबंध में एक अन्य छात्र ने अपनी समस्या कुछ इस प्रकार रखी कि–

1. लड़की जाती है।
2. लड़कियाँ जाती हैं।
3. लड़कियों को जाना चाहिए।
4. लड़कियो! जाओ

इन चारों वाक्यों में पहले वाक्य को तो आपने स्पष्ट कर दिया कि 'लड़की' शब्द भी पद है किंतु शेष तीन शब्दों लड़कियाँ, लड़कियों तथा लड़कियो!– का वाक्यों में प्रयोग हुआ है। 'लड़की' शब्द कोशीय शब्द है तथा इसका प्रयोग चार प्रकार से वाक्य में हुआ है। क्या प्रयोग के आधार पर ये सभी शब्द कहे जाएँगे? मैंने उन्हें समझाया। याद रखो, जो भी शब्द कर्ता की भूमिका निभाएगा वह 'पद' कहलाएगा।

यहाँ लड़कियाँ, लड़कियों तथा लड़कियो!– लड़की के ही बहुवचन रूप हैं, जो कि प्रत्यय के भिन्न–भिन्न रूप हैं। इन्हें एक ही रूप के सहरूप कहा जाता है। सम्प्रेषण की आवश्यकता के अनुसार वाक्य में उपयोग करते समय शब्द के रूपों में परिवर्तन किया जा सकता है। परिवर्तन की इस व्यवस्था को रूप व्यवस्था कहा जाता है, जो कि व्याकरण का एक महत्वपूर्ण अंग है।

रोचक तथ्य

1. शब्दकोश में केवल शब्द होते हैं, पद नहीं।
2. कोशगत शब्दों से विचार प्रकट नहीं किए जा सकते। विचार प्रकट करने के लिए

व्याकरणिक इकाईयों का प्रयोग करना पड़ता है।

3. शब्द की सत्ता वाक्य से पृथक है। वाक्य में प्रयुक्त होकर वह पद कहलाता है।
4. वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द के साथ कोई न कोई प्रत्यय अवश्य जुड़ा रहता है।
5. पद की संरचना में प्रत्यय तथा विभक्ति का होना आवश्यक है किंतु यह आवश्यक भी नहीं है कि सभी शब्दों के साथ प्रत्यय अथवा विभक्ति हो। कहीं कहीं शून्य प्रत्यय अथवा शून्य विभक्ति से भी काम चलाया जा सकता है।
6. वाक्य में प्रयुक्त होने पर एक ही शब्द अनेक रूपों में प्रकट हो सकता है।
7. 'पद' का संबंध एक ओर शब्द से है, तथा दूसरी ओर वाक्य से।
8. नीचे लिखे आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं-

शब्द के भेद

उत्पत्ति के आधार पर	**रचना के आधार पर**	**अर्थ के आधार पर**	**प्रयोग के आधार पर**
(क) तत्सम (ख) तद्भव (ग) देशज (घ) विदेशी (ङ) द्विज (संकर)	(क) रूढ़ (ख) यौगिक (ग) योग-रूढ़ (घ) उपसर्ग (ङ) प्रत्यय (च) समास	(क) एकार्थी (ख) अनेकार्थी (ग) पर्यायवाची (घ) विलोमार्थी (ङ) वाक्यांश के लिए एक शब्द (च) ऊनार्थक (छ) समूहवाची (ण) सहचर (झ) शब्दयुग्म	(क) विकारी शब्द -संज्ञा -सर्वनाम -विशेषण -क्रिया अविकारी शब्द -क्रिया विशेषण -संबंध बोधक -समुच्चय बोधक -विस्मयादि बोधक

9. व्याकरणिक-प्रकार्य के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण दो प्रकार से होता है-
   1. विकारी शब्द- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया।
   2. अविकारी शब्द- क्रिया विशेषण, संबंध बोधक, समुच्चय बोधक, विस्मयादि बोधक।

   इस दृष्टि से पद आठ प्रकार के होते हैं।

1.3. पद और पद बंध

शब्द और पद की चर्चा तब तक अधूरी ही रहेगी, जब तक पद बंध के विषय में विचार नहीं किया जाता। पद और पदबंध का संबंध जानने के लिए 'बंध' शब्द की व्याख्या करना आवश्यक है। 'पद' कहने से एक शब्द वाले पद का अर्थ निकलता है, जैसे- राम, राम ने, राम के द्वारा आदि किंतु पद-बंध में कई पदों की एक इकाई अर्थात बंध होना आवश्यक है, जैसे-

राम का भाई लक्ष्मण, सीता के पति राम अथवा 'चल गया, चल पड़ा, चलता है' जैसे कई पद बंध बनकर वाक्य की रचना होती है। एक इकाई में पद बंध की दृष्टि से कर्ता अथवा कर्म (संज्ञा) एवं क्रिया का होना आवश्यक है। ध्यान देने की बात यह है कि प्रकार्य की दृष्टि से पद और पद बंध में कोई अंतर नहीं है, जैसे-

वाक्य	संज्ञापद	क्रिया-पद
पद	राम	वनवास गए
पदबंध	दशरथ-पुत्र राम	वनवास गए

अर्थात् जो कार्य एक पद ने (राम) प्रथम वाक्य में किया, वही कार्य उसी के पदबंध के रूप में (दशरथ पुत्र राम) ने भी किया। अंतर प्रकार्य का नहीं अपितु संरचना का है। ध्यान रहे, यहाँ राम में शून्य प्रत्यय है। 'शून्य प्रत्यय' के विषय में पूर्व में बताया जा चुका है।

उपरोक्त उदाहरण से यह भी स्पष्ट है कि किसी भी वाक्य में कम से कम दो पद होना अनिवार्य है, एक संज्ञापद, दूसरा क्रिया पद। अधिक से अधिक वाक्य में कुल पाँच पद हो सकते हैं-1. संज्ञा पद, 2. सर्वनाम पद, 3. विशेषण पद, 4. क्रिया पद, 5. अव्यय पद। (क्रिया विशेषण आदि) इन सभी का अध्ययन व्याकरण में आठ प्रकार से किया जाता है।

पदों की तरह पदबंध भी आठ प्रकार के होते हैं-

1. संज्ञा पदबंध
2. सर्वनाम पदबंध
3. विशेषण पदबंध
4. क्रिया पदबंध
5. क्रिया विशेषण पदबंध
6. संबंध बोधक पदबंध
7. समुच्चयबोधक पदबंध
8. विस्मयादिबोधक पदबंध

कुछ अन्य उदाहरणों द्वारा पद एवं पदबंध की धारणा को और स्पष्ट किया जा रहा है।

1. संज्ञा पद- यदि दो पदों के बीच का, की, के, को आदि आए तो वे एक इकाई का निर्माण कर पदबंध की रचना करते हैं।

   उदाहरण-**गरीबों का खून चूसने वाले लोगों** को किसी के दुख दर्द से क्या मतलब?
   यहाँ रेखांकित स्थान को संज्ञा पदबंध कहा गया है।

2. सर्वनाम पद-

   पदबंध- **भाग्य का मारा मैं** उसकी शेर की तरह दहाड़ सुनकर कांपने लगा। (यहां रेखांकित अंश सर्वनाम पदबंध है।)

3. विशेषण पद- भक्त-गण

   पदबंध- **हजारों की संख्या में भक्त-गण** उनका स्वागत कर रहे थे।

4. क्रिया पद- करते आना

   पदबंध- हम वैदिक काल से ही 'ऊँ' का उच्चारण **करते आ रहे हैं।**

5. <u>क्रिया विशेषण पद</u>- उसने
पदबंध- **<u>भूखे शेर की तरह दहाड़ते</u>** हुए **<u>उसने</u>** शत्रु पर हमला किया।
6. <u>संबंध बोधक पद</u>- अंदर से
पदबंध- माँ भगवान राम के दर्शन कर मंदिर के **<u>अंदर से बाहर निकली</u>**
7. <u>समुच्चय बोधक पद</u>- क्योंकि
पदबंध- मैं आ नहीं सका **<u>क्योंकि घर से निकलते ही वर्षा होने लगी</u>** थी।
8. <u>विस्मयादि बोधक पद</u>- बाप रे बाप!
पदबंध- **<u>बाप रे बाप!</u>** यह सब कैसे हुआ!!
(विशेष-रेखांकित अंश पदबंध का सूचक है)

रोचक तथ्य-

1. पदबंध एक से अधिक पदों का होता है।
2. पदबंध के सभी पद परस्पर सम्बद्ध होकर एक इकाई का रूप लेकर काम करते हैं।
3. पद के स्थान पर पदबंधों का प्रयोग जटिल भावों की अभिव्यक्ति के लिए होता है, जैसे-
   'लड़का' के स्थान पर 'मेरा सबसे छोटा लड़का'। ऐसा प्रयोग आमतौर पर बातचीत के स्तर पर देखा जाता है।
4. पद की तरह पदबंध भी आठ प्रकार के होते हैं। जो पद संज्ञा पदों का (दो या दो से अधिक पदों का) कार्य करते हैं, वे संज्ञा-पदबंध कहलाते हैं। इसी प्रकार सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया विशेषण आदि के संबंध में भी जानें।
5. चूँकि पदबंध पद से अधिक बड़ा होता है, अत: इसके अर्थ में पद से अधिक स्पष्टता होती है।
6. पदबंध से बने वाक्य अपेक्षाकृत छोटे होते हैं, तथा वे अर्थ को अधिक स्पष्ट करने की क्षमता रखते हैं।

02

शब्द उत्पत्ति

(शब्द उत्पत्ति से तात्पर्य शब्द के उस मूलार्थ के क्रमिक विकास से हैं, जो वर्तमान में किसी भाषा में आज उपलब्ध है। प्राचीन काल से ही हमारे देश में निरुक्त द्वारा इस प्रकार शब्दों की व्याख्या करने की परंपरा रही है।)

उत्पत्ति की दृष्टि से हिंदी में छः प्रकार के शब्द उपलब्ध हैं-

1. तत्सम, 2. अर्द्धतत्सम, 3. तद्‍भव, 4. देशज, 5. विदेशी, 6. संकर

एक पत्रिका में प्रकाशित कुछ दोहे यहाँ पाठकों के समक्ष इस दृष्टि से दिए जा रहे हैं कि उत्पत्ति की दृष्टि से उनमें चार प्रकार के शब्दों का प्रयोग हुआ है।

जिन बेटों पर बाप ने, वार दिया संसार।
बाप उन्हीं के वास्ते, अब रद्दी-अखबार।।
एक पिता ने उम्र भर, ढोये बेटे चार।
ढो न सके चारों मगर, एक पिता का भार।।
आपस में भाई बँटे, घर-आँगन के साथ।
अम्मा की आँखें बँटीं, बँटे पिता के हाथ।।
आया मेरे गाँव में, इस ढंग से बाजार।
आँखें, आँसू, आह सब, बिकने को तैयार।।
सड़क बनी, बिजली मिली, गाँव हुआ खुशहाल।
लेकिन कोयल पूछती, कहाँ हमारी डाल।।
नदी तड़पती प्यास से, भूखों मरते खेत।
हम सहेजते फिर रहे, लोहा पत्थर, रेत।।
दिया नए युग ने हमें, सेहत का यह श्लोक।
खाओ वर्गर-चाउमिन, पियो पेप्सी-कोक।।
कल-परसों-नरसों यही, चला उम्र भर खेल।
राधा बूढ़ी हो गई, हुआ न नौ मन तेल।।

उपर्युक्त दोहों में शब्द उत्पत्ति की दृष्टि से चार प्रकार के शब्द पढ़ने को मिल रहे हैं-

1. तत्सम शब्द, जैसे- श्लोक
2. तद्‍भव शब्द, जैसे- पिता
3. देशज शब्द, जैसे- परसों-नरसों

4. विदेशी शब्द, जैसे- उर्दू- इजलास, उम्र, अंग्रेजी- पेप्सी, कोक।

हिंदी भाषा का प्रारंभिक विकास क्रम के अनुसार संस्कृत से पाली, पाली से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश और अपभ्रंश से हिंदी में हुआ है। भाषा का विकास इस क्रम से होने पर हिंदी के शब्दों में अधिकतर शब्द ऐसे आ गए हैं, जो मूल रूप से शब्दों की जननी संस्कृत भाषा के हैं। इन्हें **तत्सम शब्द** कहते हैं। जिन शब्दों के रूपों में इनका थोड़ा परिवर्तन हुआ है किन्तु उनका मूलरूप स्पष्ट दिखाई देता है, उन्हें **अर्द्धतत्सम शब्द** कहते हैं, किंतु जो शब्द काल के जाल में बुनकर इतने अधिक परिवर्तित हो गए हैं कि वे अपने मूल रूप से दूर हो गए हैं, उन्हें **तद्‌भव शब्द** कहते हैं, तथा कुछ शब्द **देशज** तथा **विदेशज** कहे जाते हैं, जो स्थानीय तथा अन्य भाषाओं से होकर हिंदी में प्रयुक्त किए जाने लगे हैं। अत: आइए, शब्दों के विकास क्रम की यात्रा के इन चारों आयामों को जानने का यत्न करें।

रोचक तथ्य-

1. तत्सम शब्द तत्+सम से मिलकर बना है जिसका अर्थ है: उसके समान आशय वाले शब्द। हिंदी में सभी राशियाँ, नक्षत्र, धार्मिक संस्कार, पशु-पक्षी तथा स्थानों के नाम आज भी संस्कृत के तत्सम (मूल) रूप में ही प्रयुक्त हो रहे हैं।
2. तत्+भव इन दो शब्दों से मिलकर तद्‌भव शब्द बना है, जिसका अर्थ है: उससे उत्पन्न या विकसित शब्द। वस्तुत: इन शब्दों का जन्म संस्कृत से हुआ है, किंतु उनका वर्तमान रूप विकृत हो गया है।
3. देशज शब्द-स्थानीय शब्द (बोली के अनुसार)।
4. विदेशज शब्द-अंग्रेजी, फारसी आदि विदेशी भाषाओं से आए शब्द
5. संकर शब्द-दो भिन्न-भाषाओं से मिलकर बने नए शब्द।

2.1 तत्सम-शब्द

सरदार भगत सिंह का एक लेख निराला जी द्वारा सम्पादित 'मतवाला' में प्रकाशित हुआ था। उसके कुछ अंश यहाँ दिए जा रहे हैं। इन्हें पढ़कर आपको लगेगा कि भगतसिंह अपने लेखन में तत्सम शब्दों का प्रयोग कितनी सहजता से करते थे। यह लेख 'युवक' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था।

'युवावस्था मानव जीवन का बसंतकाल है। उसे पाकर मनुष्य मतवाला हो जाता है। मदान्ध मातंग की तरह निरंकुश, वर्षाकालीन शोणभद्र की तरह दुर्धर्ष, प्रलयकालीन प्रबल प्रभंजन की तरह प्रचण्ड, नवागत बसंत की प्रथम मल्लिका कलिका की तरह कोमल, ज्वालामुखी की तरह उच्छृंखल और भैरवी संगीत की तरह मधुर युवावस्था है।

उज्जवल प्रभात की शोभा, स्निग्ध संध्या की छटा, शरच्चन्द्रिका की माधुरी, ग्रीष्म मध्याह्न का उत्ताप और भाद्रपदी अमावस्या की अर्द्ध रात्रि की भीषणता युवावस्था में सन्निहित है।

यह अवस्था देखने में तो शस्यश्यामला वसुंधरा से भी सुंदर है, पर इसके अंदर भूकम्प की भयंकरता भी भरी हुई है।

संसार में युवक का ही साम्राज्य है। युवक ही रणचण्डी के ललाट की रेखा है, स्वदेश की

यश–दुन्दुभि का तुमुल निनाद है। युवक ही स्वदेश की विजय–वैजयंती का सुदृढ़ दण्ड है, वह महासागर की उत्ताल तरंगों के समान उद्दण्ड है। भावुकता पर उसी का सिक्का है। अद्‌भुत है, उसका साहस, अमोध है उसका उत्साह।'

उपरोक्त वाक्यों में अधिकांश ऐसे शब्दों का प्रयोग हुआ है जो संस्कृत से सीधे हिंदी में प्रयुक्त हुए हैं। इसीलिए इन शब्दों को तत्सम शब्द कहा जाता है। ये शब्द अपने मूलरूप में ही हिंदी भाषा में अपना स्थान बनाए हुए हैं।

तत्सम शब्द की अवधारणा

जो संस्कृत शब्द अपना रूप बदले बिना ही, हिंदी में यथावत् प्रयुक्त होने लगे हैं, उन्हें **तत्सम** शब्द कहा जाता है। तत्सम शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– तत्+सम। तत् का तात्पर्य है: 'उसके' और सम का तात्पर्य 'समान' अर्थात् संस्कृत के समान। हिंदी में ऐसे शब्दों की संख्या बहुतायत से देखने को मिलती है।

कुछ विद्वानों ने उन शब्दों को भी तत्सम माना है, जो संस्कृत से कुछ परिवर्तन के साथ हिंदी में आए हैं। किंतु ऐसे शब्दों का अध्ययन हम अर्द्धतत्सम शब्दों के अंतर्गत करेंगे क्योंकि वे अपना मूल रूप खो चुके हैं।

तत्सम शब्दों के अंतर्गत तीन प्रकार के शब्दों का अध्ययन किया जाता है, यथा–

1. जो शब्द संस्कृत से हिंदी में ज्यों के त्यों आए हैं, यथा– माता, पुण्य, सुंदर, सहसा, नित्य, आत्मा, विद्या, कन्या, पुस्तक आदि।
2. जो संस्कृत शब्द संस्कृत के उपसर्ग या प्रत्यय लगाकर प्रयोग में लाए जा रहे हैं, यथा– क्रयशक्ति, आयुक्त, आकाशवाणी, दूरदर्शन, प्रौद्योगिकी आदि।
3. जो शब्द प्रचलन काल से ही विदेशी भाषाओं या अन्य स्रोतों से संस्कृत में यथावत् ले लिए गए हैं, यथा– सिंदूर, तांबूल, कदली, गंगा, रात्रि, मर्कट, पुष्प, यवन, असुर, तीर, मुद्रा आदि।

रोचक तथ्य–

1. हिंदी में सभी राशियाँ, नक्षत्र, धार्मिक–संस्कार, पशु–पक्षी एवं स्थानों के नाम तत्सम रूप में प्रचलित है।
2. संस्कृत के सभी उपसर्ग हिंदी में तत्सम शब्दों की रचना करते हैं, जैसे–प्र+हार=प्रहार आदि।

2.2 अर्द्ध तत्सम–शब्द

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि ऐसे शब्द जो संस्कृत से होते हुए कुछ ही परिवर्तन के साथ हिंदी में आए हैं, उन्हें **अर्द्ध तत्सम शब्द** कहते हैं। इनका परिवर्तित रूप तत्सम शब्दों की अपेक्षा कुछ कम होता है, अर्थात् वे अपने मूल शब्द के अधिक निकट जान पड़ते हैं। फिर भी पूर्णरूप से तत्सम भी नहीं होते।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से कुछ तत्सम तथा अर्द्ध तत्सम शब्द यहाँ दिए जा रहे हैं–

तत्सम	अर्द्ध तत्सम
आम्र	आम
कर्म	काम
कृपा	किरपा
खर्पर	खप्पर
चूर्ण	चूरन
जन्म	जनम
धर्म	धरम
शलाका	सलाई
क्षीर	खीर
मुहूर्त	मुहूरत
पत्र	पत्ता

2.3 तद्भव-शब्द

जिन शब्दों का मूल तो संस्कृत में है किंतु मध्ययुगीन भाषाओं में परिवर्तित स्वरूप में होते हुए हिन्दी में भी अपना लिए गए हैं, उन्हें **'तद्भव शब्द'** कहते हैं।

तद्भव शब्द दो शब्दों का योग है-तद्+भव अर्थात तद् (उससे)+भव (उत्पन्न)। इस दृष्टि से वे शब्द जो संस्कृत भाषा से बने हैं किंतु संस्कृत से सीधे न आकर पालि, प्राकृत अपभ्रंश से होते हुए एक लंबी यात्रा तय करके हिंदी में आए हैं, उन्हें **तद्भव** शब्द कहा जाता है।

तत्सम से तद्भव बनाने में निम्नलिखित क्रियाएँ अपनाई जाती हैं-

1. **वर्णागत- नए अक्षरों का आना**

जैसे- शाप- सराप विद्युत- बिजली

अन्न- अनाज एकादश- ग्यारह

गो-गाय समुद्र- समुन्दर

2. **वर्ण लोप**

जैसे- नासिका- नाक उत्तिष्ठ- उठ

कर्ण- कान दुग्ध- दूध

अहम्- हम चणक- चना

3. **वर्ण विप यर्य- अक्षरों का स्थान परिवर्तन**

जैसे- वाराणसी-बनारस महाराष्ट्र- मराठा

लखनऊ-नखनऊ मतलब- मतबल

चक्र-चरखा

4. **वर्ण विकार**

जैसे- पितृ- पिता	हस्त- हाथ

सप्त- सात	कूप- कुआ

पाषाण- पाहन	बधू- बहू

उपरोक्त उदाहरण उन तद्‌भव शब्दों के हैं, जो सीधे संस्कृत से हिन्दी में आए हैं किंतु कुछ तद्‌भव शब्द ऐसे भी है, जो प्राकृत भाषा से हिंदी में आए हैं। अत: उनका अध्ययन भी करना चाहिए, यथा-

संस्कृत	**प्राकृत**	**तद्‌भव- हिंदी शब्द**
अग्नि	अग्नि	आग
कृत:	कउने	किया
कार्य	कज्ज	काज
चतुर्थ	चउट्ठ	चौथा
चत्वारि	चन्तारि	चार
चतुर्दश	चोद्दस	चौदह
नव	नअ	नौ
प्रिय	प्रिय	पिय
पुष्प	पुष्फ	फूल
मया	मई	मैं
मध्य	मज्झ	में
मयूर	मऊर	मोर
वचन	वअण	बैन
वत्स	वच्छ	बच्चा
हस्त	हत्थ	हाथ

2.4 देशज-शब्द

एक समाचार पत्र में मुझे एक छोटी सी घटना पढ़ने को मिली। घटना कुछ इस प्रकार थी- दस वर्षों से जरनैल सिंह और करनैल सिंह आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे। अमृतसर विलेज हाईस्कूल से उन्होंने साथ-साथ मैट्रिक की परीक्षा पास की। बाद में जरनैल सिंह सेना में भर्ती हो गया, तथा करनैल सिंह पंजाब पुलिस में नौकरी करने लगा। पन्द्रह सालों के बाद संयोग से दोनों की मुलाकात हुई। जब दोनों एक साथ गाँव आए, तो करनैल सिंह जरनैल सिंह को अपने घर ले गया। दोनों ने एक-दूसरे के साथ अपने दिल की बातें की। आधी रात के बाद जब दोनों की बातचीत खत्म हो गई तो जरनैल सिंह ने अपने दोस्त से कहा-'अबहूं मैनू आज्ञा भी देओ।'

करनैल सिंह अचानक गुस्से से भरकर हाथों में बड़ी कृपाण लेकर जरनैल सिंह पर कूद पड़ा। भयभीत जरनैल सिंह को बाद में पता चला कि आज्ञा (कौर) करनैल सिंह की पत्नी का नाम है।

उपरोक्त घटना को पढ़कर जो विचार मेरे मन में आए, उनमें से मुख्य इस प्रकार थे-

1. घटना के विवरण में हिंदी, उर्दू के शब्दों के साथ-साथ देशज शब्दों का प्रयोग हुआ है। अत: हमें नूतन शब्द रचना के इस विधान से परिचित होना होगा।
2. आज्ञा (कौर) शब्द श्लेष है जिसे व्याकरण में अनेकार्थी शब्द कहा गया है। शब्द और अर्थ का संबंध कितने प्रकार से होता है? यह भी जानना चाहिए।
3. देशज शब्दों का प्रयोग सोच समझकर करना चाहिए अन्यथा उसका अर्थ अनर्थ भी कर सकता है।

अत: जो शब्द क्षेत्रीय प्रभाव एवं बोलचाल से विकसित होकर हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रयुक्त होने लगे हैं, उन्हें **देशज** शब्द कहा जाता है। इन शब्दों की व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता है। लोकभाषाओं में इन शब्दों का प्रयोग अवश्य देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए कुछ शब्द यहाँ दिए जा रहे हैं-

झाड़ू, पगड़ी, लोटा, झोला, टाँग, ठेठ, पेट, थूक, खिड़की, झंझा, चीनी, खाट, ठोकर, थप्पड़, भोंदू, अटकल आदि।

2.5 विदेशी-शब्द

अधेड़ उम्र की एक **अमीर औरत** हर सोमवार को अपने स्वास्थ्य की जाँच कराने **डॉक्टर** के पास जाती थी। हर बार डॉक्टर कहता कि आप **बिल्कुल** ठीक हैं, और वह महिला **फीस** देकर लौट आती। एक सोमवार को महिला ने डॉक्टर को **फोन** किया, ''डॉक्टर साहब मैं आज नहीं आ पाऊँगी क्योंकि मेरी **तबीयत** कुछ ठीक नहीं है।''

उपरोक्त रेखांकित शब्दों को ध्यान से पढ़िए। इनमें से अधेड़, उम्र, अमीर, औरत, बिल्कुल, तबीयत शब्द उर्दू के हैं, तथा डॉक्टर, फीस, फोन शब्द अंग्रेजी के। ये शब्द अन्य देशों की भाषाओं से आए हुए शब्द हैं। इसलिए इन्हें **विदेशी** शब्द कहते हैं।

युगों से विदेशी भारत में आते रहे हैं। उनसे सम्पर्क होने के कारण हिन्दी में विदेशी भाषाओं के अनेक शब्दों का प्रयोग होने लगा है। इन्हें आगत तथा ग्रहीत शब्द भी कहा जाता है।

मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव इस देश पर अधिक समय तक रहा। इसी कारण अनुमानत: छ: हजार अरबी-फारसी के शब्द आज की हिन्दी में उपलब्ध हैं। इसी प्रकार तुर्की से लगभग 70, पुर्तगाल से 80, फ्रेंच से 3, डच के 5 तथा अंग्रेजी से लगभग तीन हजार शब्द हिन्दी में प्राप्त होते हैं।

इन आगत शब्दों की ध्वनि सहज ही लोक मानस द्वारा ग्रहीत होती है। वैयाकरणिकों के विरोध के बाद भी इन शब्दों को ग्रहण कर मूर्धन्य रचनाकारों ने अपनी रचनाओं को समृद्ध किया है।

कुछ भाषाविदों ने इन शब्दों को शुद्ध हिंदी में भाषांतर करने का प्रयत्न अवश्य किया किंतु वे शब्द उच्चारण तथा लेखन में इतने जटिल थे कि उन्हें आम आदमी प्रयोग में नहीं लाते हैं। इस प्रकार धीरे-धीरे वे चलन से बाहर हो गए। उदाहरण के लिए- 'रेल' के लिए- 'लौह पथ गामिनी' शब्द बनाया गया, जो कि उच्चारण की दृष्टि से भी जटिल था। तथा समझ के बाहर भी।

एक सज्जन अपनी आप बीती कुछ इस प्रकार सुना रहे थे-

'मेरी शादी हुए कुछ ही दिन हुए थे। मेरा स्थानांतर एक बड़े शहर में हो गया। वहाँ हमने

एक शानदार मकान किराए से लिया। एक दिन मुझे डाक में सिनेमा के दो टिकट मिले। टिकटों के साथ एक पर्ची थी जिस पर लिखा था- बताओ ये टिकट किसने भेजे होंगे? हम दोनों मियाँ बीबी खुशी-खुशी सिनेमा देखने चल दिए, और आधी रात को जब घर लौटे, तो क्या देखते हैं कि मकान की सभी वस्तुओं का सफाया हो गया था। मेज पर एक पर्चा पड़ा था, जिस पर लिखा था- अब पता चला टिकट किसने भेजे होंगे?'

इस पूरी घटना में यदि सिनेमा का टिकट शब्द को हटा लें, और भाषांतर का कोई नया शब्द गढ़कर लिख दें तो क्या उस घटना को सुनने/पढ़ने में वह रोचकता बनी रहेगी, जो अभी सुनने/पढ़ने में लगी। अतः इन विदेशी शब्दों का प्रयोग हिंदी भाषा में दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है।

यहाँ इन विदेशी भाषाओं के कुछ ऐसे शब्द दृष्टव्य हैं, जो हिंदी में दूध-पानी की तरह ऐसे घुलमिल गए हैं कि उनको स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त करना आवश्यक हो गया है। हमारी भाषा में ये शब्द बहुतायत से देखने को मिलते हैं। इनसे हमारी भाषा निस्संदेह समृद्ध हुई है। इनकी रचना-प्रक्रिया के संबंध में कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं-

अरबी-फारसी-तुर्की शब्द	**हिंदी में प्रमुख**	**रचना-प्रक्रिया का स्वरूप**
1. क़ीमत, फ़ैसला (अरबी), ख़ूब, आग़ा (तुर्की)	कीमत, फैसला, खूब, आगा	नुक्ता हटाकर लिखा जाता है।
2. आईनः, कमीनः (फारसी) हैजः (अरबी) चम्चः (तुर्की)	आईना, कमीना, हैजा, चम्चा	अंतिम विसर्ग की जगह आकार की मात्रा लगाकर लिखा जाता है।
3. अल्लाह (अरबी)	अल्ला	हकार हटाकर
4. परवा (फारसी)	परवाह	हकार लगाकर
5. दुकॉं (फारसी), ईमाँ (अरबी)	दुकान, ईमान	यहाँ अनुनासिक को हटा कर **आन** कर दिया गया है।
6. काइदः (अरबी)	कायदा	इ को य कर दिया गया है।
7. नश्शः (अरबी)	नशा	मध्य अक्षर का लोप
8. अफ्सोस, किश्मिश (फारसी), तर्फ़, कस्रत (अरबी), तग्गा (तुर्की)	अफसोस,किशमिश, तरफ, कसरत, तमगा	मध्य के अक्षर को पूरा कर दिया गया है।
9. आबोदाना:(फारसी), मौसिम, वापिस (अरबी) चुगुल (तुर्की)	आबदाना, मौसम, वापस चुगल	मध्य की मात्रा का लोप करके।
10. आतशबाजी (फारसी), दुन्या, तक्यः (अरबी)	आतिशबाजी, दुनिया, तकिया	मध्य में 'इ' की मात्रा लगाकर।
11. खुराक, दिहात (फारसी), उम्मीद	खुराक, देहात, उम्मेद	हस्व मात्रा को दीर्घ में 'इ' के स्थान पर 'ए' अथवा दीर्घ के स्थान पर हस्व 'ए' के स्थान पर 'इ'
12. बालाई (फारसी)	मलाई	सवर्गीय परिवर्तन करके।

पुर्तकाली शब्द

अचाट, अलकतरा, अनन्नास, आलपीन, आलमारी, गमला, चाबी, तम्बाकू, तौलिया, पिस्तौल, पाव रोटी, बिस्कुट, बाल्टी, संतरा आदि।

अंग्रेजी शब्द–

अपील, इंच, कमीशन, कमिश्नर, कैम्प, क्लास, क्वार्टर, क्रिकेट, गार्ड, गजट, जेल, ट्यूशन, डायरी, ड्राइवर, पेन्सिल, नर्स, थर्मामीटर, पार्सल, पेट्रोल, पाउडर, प्रेस, फ्रेम आदि।

रोचक तथ्य–

निष्पक्ष रूप से देखा जाए तो हम यह कह सकते हैं कि आधुनिक हिन्दी में केवल 40 प्रतिशत शब्द ऐसे हैं, जो हमारी पैर्तिक सम्पत्ति के रूप में हमें प्राप्त हुए हैं। शेष 60 प्रतिशत शब्द या तो विदेशी मूल के हैं, अथवा देशी स्रोत से आए हुए हैं, अथवा आवश्यकतानुसार नवनिर्मित शब्द हैं।

2.6 संकर (द्विज) शब्द

दो भिन्न भाषाओं के शब्दों को मिलाकर जो नया शब्द बनता है, उसे संकर शब्द कहा जाता है। हिंदी में इस प्रकार के शब्दों के अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं। यहाँ कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं–

जैसे– वर्षगाँठ, माँग पत्र, काम–धंधा, जेब ख़र्च, टिकट–घर।

वर्षगाँठ	वर्ष (संस्कृत) + गाँठ (हिंदी)
माँग पत्र	माँग (हिंदी) + पत्र (संस्कृत)
कामधंधा	काम (फारसी) + धंधा (हिंदी)
जेब खर्च	जेब (अरबी) + खर्च (फारसी)
टिकट घर	टिकट (अंग्रेजी) + घर (हिंदी)

1. **हिंदी और संस्कृत**

सजावट + कक्ष (हिंदी+संस्कृत)

2. **हिंदी और अरबी/फारसी**

खून पसीना	खून + पसीना (फारसी+हिंदी)
बे समझ	बे + समझ (फारसी+हिंदी)
कफन चोर	कफन + चोर फारसी+हिंदी
पंच फैसला	पंच + फैसला हिंदी+फारसी
रीति रिवाज	रीति + रिवाज हिंदी+फारसी
इमाम बाड़ा	इमाम + बाड़ा (+)
हुक्का–पानी	हुक्का + पानी (+)

पान–दान पानदान (हिंदी+फारसी)

छाया दार छायादार (हिंदी+फारसी)

3. **हिंदी और अंग्रेजी**

टिकटघर टिकटघर (अंग्रेजी+हिंदी)

लाठीचार्ज लाठी + चार्ज (हिंदी+अंग्रेजी)

कपड़ा मिल कपड़ा + मिल (हिंदी+अंग्रेजी)

रेलगाड़ी रेलगाड़ी (अंग्रेजी+हिंदी)

सिनेमाघर सिनेमा + घर (अंग्रेजी+हिंदी)

माल गोदाम माल + गोदाम (अंग्रेजी+हिंदी)

पोप लीला पोप + लीला (अंग्रेजी+हिंदी)

डबल रोटी डबल + रोटी (अंग्रेजी+हिंदी)

4. **संस्कृत और अंग्रेजी**

रेलयात्री, योजना–कमीशन, रेडियो तरंग, आपरेशन कक्ष

5. **अरबी/फारसी और अंग्रेजी**

अफ़सरशाही, पार्टीबाजी, बीमा पालिसी

जेलखाना जेलखाना (अंग्रेजी+फारसी)

सीलबंद सील + बंद (+)

6. **अरबी–फारसी**

नमक हलाल, बेमौत, सफर खर्च, हवादार

तहसीलदार तहसील + दार (अरबी+फारसी)

फ़जूलखर्ची फ़जूल + खर्ची (अरबी+फारसी)

03

शब्द रचना (व्युत्पत्ति)

शब्दों की रचना कैसे हुई?

रेल यात्रा करते समय किसी सज्जन ने बातों ही बातों में दो सहज प्रश्न किए-

1. गाय के चार पैर होते हैं, पर हम उसे चारपाई (चार+पाई = चार पैर वाली) क्यों नहीं कहते?
2. पेड़ पर बने चिड़िया के घोसले को चिड़ियाघर क्यों नहीं कहते?

बात उनकी सही थी किंतु उत्तर कैसे दिया जाए! क्योंकि यह प्रश्न शब्दों की व्युत्पत्ति (रचना) से संबंधित था। शब्दों की व्युत्पत्ति की सीधी चर्चा करना भी ठीक नहीं था। अत: मैंने उनसे पुछा- आप कृष्ण को घनश्याम क्यों कहते हैं? क्या कृष्ण घन+श्याम अर्थात् काले बादल थे। रावण को दशानन क्यों कहते हैं? क्या रावण के दस मुख थे?

उन सज्जन ने कहा 'यह परम्परा चली आई है। शास्त्रों में भी उनके यही नाम दिए गए हैं। अत: उनके अर्थ खोजने की आवश्यकता ही क्या है! विशेष अर्थ बतलाने के कारण कृष्ण को घनश्याम तथा रावण को दशानन कहा जाता है।'

उनका उत्तर सुनकर मुझे संतोष हुआ। मैंने बात आगे बढ़ाते हुए कहा-शब्दों की व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्द निर्माण की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। उदाहरण के लिए 'मच्छर' शब्द को ही लें। मच्छर शब्द पहले बना होगा, उसके बाद मच्छर से सुरक्षित रहने के उपाय स्वरूप जो वस्तु बनी होगी, उसके आधार पर उसे 'मच्छरदानी' कहा जाने लगा होगा। 'मच्छर' मूलशब्द है, तथा उसमें 'दानी' आगत शब्द है। इस प्रकार 'मच्छर-दानी' एक नया शब्द बना।

इस प्रकार 'व्युत्पत्ति' शब्द को ही लें। उत्पत्ति के पूर्व 'वि' उपसर्ग लगा है जिसका अर्थ है: विशेष उत्पत्ति अर्थात शब्द रचना के क्या आधार पर है, उनके निर्माण का मापदण्ड क्या है, आदि प्रश्नों के विषय में विचार करना।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से विश्व की अनेक भाषाओं का इतिहास हिंदी भाषा की तुलना में शिशुतुल्य है। हिंदी का नामकरण 'खड़ी' बोली के रूप में सन् 1903 में पोर्ट विलियम कालेज, कोलकाता में हुआ था। इस प्रकार मात्र 150 वर्षों में ही उसने इतनी उन्नति कर ली कि न केवल संसार की अन्य भाषाओं की तुलना में वह वैज्ञानिक कसौटी पर खरी उतरी अपितु इसके पढ़ने की चाह भी अब बढ़ गई है। वह दिन दूर नहीं जब यह अन्य भाषाओं की तुलना में अधिक समृद्धि के शिखर को छुएगी। राष्ट्र संघ में इसकी स्वीकृति इसकी इसी महाशक्ति का परिचायक है।

अत: हिंदी भाषा में व्युत्पत्ति के आधार पर शब्द भण्डार में किस प्रकार वृद्धि होती है,

यहाँ उस पर विचार करना आवश्यक है।

<u>व्युत्पत्ति (रचना) के आधार पर शब्द भेद</u>

मूलशब्द
- सामान्य मूलशब्द
- रूढ मूलशब्द

यौगिक (व्युत्पन्न) शब्द
- सामान्य यौगिक शब्द
- यौगरूढ़ शब्द

3.1. मूल-शब्द

जो शब्द दीर्घकाल से किसी विशेष अर्थ के लिए प्रयुक्त होते आ रहे हैं, तथा जिनका निर्माण किसी अन्य शब्द से नहीं हुआ है, उन्हें मूल शब्द कहते हैं। इन शब्दों को सार्थक खण्डों में विभक्त नहीं किया जा सकता, जैसे-घर, मेज, कुर्सी, दिन, पुस्तक गधा आदि। इन मूल शब्दों का अपना एक निश्चित अर्थ होता है। उदाहरण के लिए 'गधा' शब्द लें तो यह किसी पशु के लिए प्रयोग किया जाता है, किंतु इस शब्द को यदि हम 'तुम तो रहे गधे के गधे ही' कहकर प्रयोग करें तो यहाँ गधे का अर्थ 'मूर्ख' लिया जाएगा। अत: अर्थ की दृष्टि से भी हमें यह सोचना होगा कि इस शब्द का प्रयोग सामान्य रूप में किया जा रहा है, अथवा विशिष्ट अर्थ के रूप में। इस दृष्टि से मूल शब्द दो प्रकार के हो सकते हैं-

1. सामान्य मूल शब्द

2. रूढ़ मूल शब्द

1. सामान्य मूलशब्द

जिन शब्दों के सार्थक खण्डन नहीं किए जा सकते, उन्हें **रूढ़** अर्थात् प्रसिद्ध शब्द कहते हैं, जैसे- गधा। इसके 'ग' और 'धा' दो खण्ड किए जा सकते हैं किंतु इन्हें/ सार्थकखण्ड नहीं कहा जा सकता। वे अर्थहीन हैं। उनका कोई अर्थ नहीं निकलता जबकि 'गधी' कहते ही हमारी आँखों के सामने एक विशिष्ट पशु का बिम्ब उतर आता है।

अत: जो शब्द किसी स्थान, वस्तु प्राणी के लिए वर्षों से प्रयुक्त हो रहे हैं, उन्हें रूढ़-शब्द कहा जाता है।

2. रूढ़ मूलशब्द

जिन मूल रूढ़ शब्दों का प्रयोग अर्थ की दृष्टि से विशिष्ट रूप में किया जाता है, उन्हें **रूढ़ मूल शब्द** कहते हैं, जैसे—

<u>उदाहरण</u>- उल्लू- एक पक्षी (सामान्य मूलशब्द)
मूर्ख (रूढ़ मूलशब्द)
तारा- बाली की पत्नी (सामान्य मूलशब्द)
नेत्रों की पुतली (रूढ़ मूलशब्द)

उदाहरण–

तालिका के आधार पर

शब्द	**सामान्य मूल शब्द**	**रूढ़ मूलशब्द**
उल्लू	एक पक्षी	मूर्ख
तारा	बाली की पत्नी	नेत्रों की पुतली

रोचक तथ्य–

1. रूढ़ शब्दों में उपसर्ग अथवा प्रत्यय का प्रयोग नहीं होता है। इनका रूप पूर्व निर्धारित है।

3.2 यौगिक (व्युत्पन्न) संयुक्त-शब्द

यौगिक का अर्थ है– मेल से बना हुआ। जो शब्द किसी रूढ़ शब्द या उपसर्ग या प्रत्यय अथवा किसी अन्य शब्दों के मेल से बनते हैं, उन्हें **यौगिक शब्द** अथवा–व्युत्पन्न शब्द कहा जाता है। इन शब्दों के सार्थक खण्ड खड़े किए जा सकते हैं।

यौगिक शब्द भी दो वर्गों में रखे जा सकते हैं–

क. सामान्य यौगिक शब्द

ख. योगरूढ़ शब्द

(क) सामान्य यौगिक शब्द–

जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बनते हैं, उन्हें सामान्य यौगिक शब्द कहते हैं। इनमें प्रत्येक शब्द का अलग–अलग अर्थ भी हो सकता है। इसकी रचना तीन प्रकार से होती है। उदाहरण–

1. मूलशब्द + मूलशब्द = यौगिक शब्द

प्रधान + मंत्री = प्रधानमंत्री (समास)

रसोई + घर = रसोई घर (समास)

पाठ + शाला = पाठशाला (समास)

महा + ईश = महेश (संधि)

2. मूलशब्द + प्रत्यय = यौगिक शब्द

नम्र + ता = नम्रता

लड़क+पन = लड़कपन

इतिहास + इक = ऐतिहासिक

3. उपसर्ग + मूलशब्द = यौगिक शब्द

अ + परिचित = अपरिचित

सु + कर्म = सुकर्म

अन+पढ़ = अनपढ़

अध + पका = अधपका

नेक + नीयत = नेकनीयत

(ख) योगरूढ़ शब्द

शब्दों के जिन यौगिक शब्दों का अर्थ रूढ़ है, उनहें योगरूढ़ शब्द कहा जाता है। उदाहरण के लिए 'जलज' शब्द यौगिक शब्द है, जो (जल+ज) मूलशब्द+प्रत्यय से मिलकर बना है। इस शब्द का अर्थ है: कमल, शंख, मछली, मोती, चंद्रमा किंतु यह कमल के फूल के लिए रूढ़ हो गया है। जल से उत्पन्न होने वाली अन्य वस्तुओं के लिए इसका प्रयोग नहीं होता है।

उदाहरण–

	शब्द	**अर्थ (सामान्य मूल शब्द)**	**रूढअर्थ**
घर+वाला	घरवाला	किसी घर का मालिक पति	पति
अ+क्षर	अक्षर	ब्रह्मा, विष्णु, महेश, धर्म, गगन, सत्य, वर्ग	अकारादि वर्ग
अ+मृत	अमृत	अन्न, दूध, समुद्र, पारा, स्वर्ण, समुद्र मंथन से प्राप्त पदार्थ	समुद्र मंथन से प्राप्त पदार्थ
हिम+आलय	हिमालय	बर्फ का घर, एक पर्वत का नाम	हिमालय एक पर्वत
नील+कंठ	नीलकंठ	पक्षी, विशेष, शंकर	शंकर
महा+वीर	महावीर	महान योद्धा, हनुमान	हनुमान
एक+दंत	एकदंत	एक दांत, गणेश	गणेश
दश+आनन	दशानन	दस मुख, रावण	रावण
घन+श्याम	घनश्याम	काला बादल	कृष्ण

रोचक तथ्य–

1. कर्मधारय एवं द्विगु समास यौगिक शब्द होते हैं जबकि बहुब्रीहि समस्त पद योगरूढ़ होते हैं।

अंत में मैंने कहा ''आशा है, आपकी इस संबंध में जिज्ञासा शांत हुई होगी।'' वे सज्जन कहाँ मानने वाले थे! उन्होंने फिर प्रश्न किया है 'आपने मुझे 'घनश्याम' शब्द के माध्यम से जानकारी देकर 'चारपाई' तथा 'चिड़ियाघर' के विषय में स्पष्ट किया। ये शब्द 'योगरूढ़' है किंतु एक शब्द है'–

अलौकिक

मुझे लगता है यह मूलशब्द नहीं है। मूलशब्द है–लोक/लोक में आगे 'अ' लगाने से अलोक बना तथा 'इक' पीछे लगने से शायद 'अलौकिक' बना होगा। शब्द रचना की यह कौन सी प्रक्रिया है? इसमें तीन भिन्न–भिन्न अर्थवान इकाईयों का योग है–अ+लोक+इक। अत: अलौकिक मूलशब्द नहीं है। इसमें 'अ' तथा 'इक' दोनों ध्वन्यात्मक इकाईयाँ स्वतंत्र रूप से

कोई अर्थ नहीं देती हैं, किंतु शब्दों के साथ उपयुक्त योग करने पर इन शब्दों का एक नया ही अर्थ निकलता है। 'लोक' शब्द अवश्य ही एक सार्थक शब्द कहा जा सकता है।

उन सज्जन की बात सुनकर मुझे लगा जैसे उनमें भाषा के कुछ सिद्धांतों का अच्छा ज्ञान तो है किंतु व्यवहारिक ज्ञान के अभाव में उनकी जिज्ञासा बनी हुई है।

मैंने उनसे कहा-''आपने ठीक ही कहा है कि 'लोक' शब्द एक स्वतंत्र शब्द है, जिसके बोलने तथा लिखने पर एक सार्थक अर्थ निकलता है'', और 'अ' एवं 'इक' यदि 'लोक' से हटकर लिखे जाए तो वे कोई अर्थ नहीं देते। वे तभी अर्थ देते हैं, जब उन्हें लोक जैसे अन्य शब्दों के साथ प्रयुक्त किया जाए।

शब्द और शब्दांश

आप तो जानते ही है कि भाषा सार्थक ध्वनियों की समष्टि है। उसमें कुछ ध्वनियाँ तो स्वतंत्र रूप से सार्थक होती हैं किंतु कुछ ध्वनियाँ ऐसी भी होती हैं जो स्वयं तो सार्थक नहीं होतीं किंतु जब मूल शब्दों के साथ उनका संयोग होता है, तब वे सार्थक होती हैं इस प्रकार दोनों प्रकार की ध्वनियों के संयोग से ही शब्द बनाए जाते हैं।

उपरोक्त उदाहरण में 'लोक' शब्द कुछ सार्थक एवं स्वतंत्र (मुक्त) ध्वनियों से मिलकर बना है, किंतु 'अ' तथा 'इक' स्वतंत्र ध्वनियाँ नहीं है। वे परतंत्र (बद्ध) ध्वनियाँ हैं। ऐसी परतंत्र ध्वनियाँ शब्द नहीं, शब्दांश कहलाती है। ऐसे शब्दांश जब किसी मूल शब्द के पहले जोड़े जाते हैं, तो उन्हें उपसर्ग कहा जाता है, तथा जब उन्हें मूल शब्द के पीछे जोड़ा जाता है, तो उन्हें प्रत्यय कहते हैं। अलौकिक शब्द में 'अ' उपसर्ग तथा 'इक' प्रत्यय है।

आइए, इस प्रकार के बनने वाले शब्द-संसार से भी हम परिचय प्राप्त करें।

3.3 उपसर्ग

'एक विवाह समारोह में मुझे एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय की प्रोफेसर नीता जी मिलीं। उनके साथ उनकी बहनें भी थीं। उन सब बहनों का परिचय उन्होंने कुछ इस प्रकार कराया।'-

1. ये हैं अनीता- ये पेशे से वकील हैं।
2. ये हैं सुनीता- ये पेशे से डॉक्टर हैं।
3. ये हैं विनीता- ये पेशे से इंजीनियर हैं।
4. ये हैं पुनीता- ये पेशे से लेखक है।

मैंने कहा-''लगता है, आपके पिताश्री अवश्य ही पेशे से अध्यापक हैं। उन्होंने आप पाँचों बहनों का नाम चुन-चुनकर रखा है। आप सभी बहनों से मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है, क्योंकि इस समय मैं एक पुस्तक लिखने में व्यस्त हूँ। आपसे परिचय होने पर मुझे उपसर्ग के विषय में ध्यान आ रहा है।'

उपरोक्त घटना का वर्णन करते हुए मैंने किसी कक्षा में उपसर्ग के विषय में बताया कि नीता शब्द के आगे कहीं 'अ', कहीं 'सु', कहीं 'वि', कहीं 'पु' शब्दांश लगा है। इन शब्दों के लगाने से सभी बहनों की पहचान अलग-अलग नाम से होती है। लगता है, इस प्रकार कुछ नए शब्दों की रचना की प्रवृत्ति चल निकली होगी। बाद में इन्हें उपसर्ग कहा जाने लगा।

जैसा कि स्पष्ट है उप-सर्ग शब्द दो शब्दों के योग से बना है। पहला शब्द है, 'उप' जिसका अर्थ है- समीप, पास या निकट। दूसरा शब्द है सर्ग-जिसका अर्थ है-निर्माण, रचना या सृष्टि। अत: वे शब्द या शब्दांश जो मूल शब्द के पूर्व में लगकर उसके अर्थ नवीनता ला देता है। उन्हें **उपसर्ग** कहते हैं।

उपसर्ग का प्रयोग करते समय प्राय: तीन स्थितियाँ बनती हैं-

1. शब्द के अर्थ में एक नई विशेषता आती है।
2. शब्द के अर्थ में विपरीत अर्थ निकलता है।
3. शब्द के अर्थ में कोई नया परिवर्तन नहीं होता।

उपसर्ग के भेद

हिंदी भाषा में तीन प्रकार के उपसर्ग देखने को मिलते हैं?

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिंदी के उपसर्ग
3. आगत उपसर्ग (अन्य भाषाओं से आए उपसर्ग। ये उपसर्ग या तो उर्दू, फारसी, के हैं, या अंग्रेजी के।)

1. संस्कृत के उपसर्ग

(क) हिंदी में प्रयुक्त तत्सम उपसर्ग मूलत: संस्कृत से आए हैं। संस्कृत भाषा में कुल 22 उपसर्ग हैं। इन उपसर्गों से बने अनेक शब्द हमें हिंदी में मिलते हैं।

(ख) उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होने वाले कुछ संस्कृत अव्यय भी हैं, जैसे- सु.कु.सत् आदि। इनका अध्ययन भी किया जाना चाहिए।

मूल संस्कृत अव्यय

उपसर्ग	**अर्थ**	**उदाहरण**
अ	नहीं, अभाव (व्यंजनों से आरंभ होने वाले शब्दों से पूर्व आता है)	अखण्ड, अज्ञान, अनीति, अधर्म, अचल, अबोध।
अति	अधिक	अत्यन्त, अत्युत्तम, अत्यधिक, अत्याचार
अधि	ऊपर, समीप, बड़ा	अधिकार, अधिपति, अध्यक्ष, अधिनायक, अधिकारी
अनु	समान, पीछे	अनुज, अनुकरण, अनुकम्पा, अनुरूप
अप	बुरा, हीन	अपमान, अपकार, अपयश
अव	बुरा, नीच	अवगुण, अवनति, अवशेष
आ	तक, पूर्ण उल्टा	आगमन, आजन्म, आजीवन, आमरण
उत्	ऊँचा, श्रेष्ठ	उत्साह, उद्धार, उत्पत्ति, उत्कर्ष, उत्तम, उत्थान
दुर्	बुरा, कठिन	दुर्बल, दुर्जन, दुर्दशा, दुर्गम, दुर्गुन
नि	अच्छी तरह	निवेदन, निवास, निरोध, निवारण, निबन्ध
निर्	अच्छी तरह	निर्मल, निर्मम, निर्दोष, निरपराध

परा	उल्टा, पीछे	पराजय, पराभव, पराकाष्ठा
प्र	आगे,अधिक,ऊपर,उत्कृष्ठ	प्रबल, प्रगति, प्रख्यात, प्रचार, प्रसार
प्रति	ओर, हरेक, विरोध	प्रतिकूल, प्रतिध्वनि, प्रत्येक, प्रतिभागी
वि	विशेष, अलग, उल्टा	वियोग, विभाग, विदेश, विज्ञान
सु	अच्छा, अधिक, आसान	सुकर्म, सुलभ, सुवास, सुगम, सुपात्र
स्व	अपना, निजी	स्वराज, स्वदेश, स्वतन्त्र, स्वनाम
दुस्	बुरा	दुष्कर्म, दुस्साहस, दुश्चरित्र दुष्कर
निस्	बिना	निश्छल, निश्चय, निस्सन्देह

उपसर्ग की भाँति प्रयोग में आने वाले संस्कृत अव्यय

अव्यय	**अर्थ**	**उदाहरण**
अध:	नीचे	अध:पतन, अधोगति, अधोमुख
अन्तर्	अन्दर	अन्तरात्मा, अन्तर्राष्ट्रीय, अन्तर्प्रान्तीय
बहिर	बाहर	बहिर्मुख, बहिर्गमन
पुर:	आगे	पुरोहित, पुरस्कार
पुन:	फिर	पुनर्जन्म, पुनर्निर्माण, पुनरागमन
पुरा	प्राचीन	पुरातन, पुरातत्व
कु	बुरा	कुपुत्र, कुसमय
तिर:	बुरा	तिरस्कार, तिरोभाव
स	सहित	सजल, सपरिवार, सहर्ष
सत्	अच्छा	सज्जन, सदाचार, सद्भाव, सत्पुरुष
सह	साथ	सहयोग, सहोदर, सहकारी, सहपाठी
चिर	बहुत देर	चिरस्थायी, चिरकाल, चिरायु
इति	ऐसा	इतिहास, इतिश्री

2. (हिंदी) उपसर्ग

तद्भव उपसर्ग हिंदी के उपसर्ग कहे जाते हैं। हिंदी में लगभग 25 प्रकार के तद्भव उपसर्ग देखने को मिलते हैं। उदाहरण स्वरूप उनमें से कुछ यहाँ दिए जा रहे हैं–

उपसर्ग	**अर्थ**	**उदाहरण**
अध	आधा	अधपका, अधखिला, धकचरा, अधमरा।
अन	अभाव, निषेध	अनपढ़, अनबन।
नि	निषेध, रहित	निडर, निहत्था।
भर	पूरा	भरपेट, भरपूर, भरसक।
अ	अभाव, निषेध	अछूत, अचेत, अथाह, अजान, अकाज।
कु	बुरा	कुचाल, कुकर्म, कुचैला, कुढंग।

दु	बुरा, हीन	दुबला, दुविधा, दुसह।

3. आगत उपसर्ग

(क) उर्दू फारसी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
कम	थोड़ा	कमउम्र, कमजोर कमअक्ल, कमकीमत।
बे	रहित	बेईमान, बेचारा, बेवकूफ, बेइज्जत, बेखटके।
बद	बुरा	बदनाम, बदकिस्मत, बदहजमी, बद्दुआ।
ला	अभाव (बिना)	लाइलाज, लावारिस, लापरवाह, लापता।
खुश	अच्छा	खुशबू, खुशखबरी, खुशनसीब, खुशकिस्मत।
गैर	भिन्न	गैरसरकारी, गैरकानूनी, गैरहाजिर।
ना	नहीं	नापसन्द, नासमझ, नालायक, नाचीज।
बा	साथ	बाकायदा, बाइज्जत।
सर	मुख्य	सरकार, सरहद, सरदार

(ख) अंग्रेजी के उपसर्ग

सब (स्ह्वड्ड) अधीन, नीचे	सब इंस्पैक्टर, सब कमैटी, सबवे, सब जज।
असिस्टैंट (ड्डह्यह्यद्बह्यह्लड्डठ्ठह्ल) सहायक	असिस्टैंट टीचर, असिस्टैंट मैनेजर, असिस्टेंट कलैक्टर।
वाइस (ङ्कद्बष्द्) सहायक, उप	वाइस-चांसलर, वाइस-प्रैसिडेंट, वाइस-केप्टन।
डिप्टी (ष्ठद्गश्चह्वह्ल4) सहायक, उप	डिप्टी डायरेक्टर, डिप्टी कलैक्टर, डिप्टी कमिश्नर, डिप्टी कंट्रोलर।
हैड (॥द्गड्डस्र) प्रधान	हैड क्लर्क, हैड मास्टर, हैड मिस्ट्रेस, हैड बॉय।
चीफ (ष्द्धद्बद्गद्ध) प्रमुख	चीफ मिनिस्टर, चीफ सैक्रेटरी।
जनरल (त्रद्गठ्ठद्गह्म्ड्डद्य) प्रधान	जनरल मैनेजर, जनरल सैक्रेटरी।

रोचक तथ्य-

1. कुछ शब्दों में एक से अधिक उपसर्गों का प्रयोग भी देख जाता है, जैसे-
   असुरक्षित = अ+सु+रक्षित
   अप्रत्यक्ष = अ+प्रति+अक्ष
   अनियंत्रित = अ+नि+यंत्रित
   अनासक्ति = अन+आ+सक्ति
   अत्याचार = अति+आ+चार
   प्रत्युपकार = प्रति+उप+कार
   प्रत्याघात = प्रति+आ+घात।
2. उपसर्ग का स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं होता है।
3. उपसर्ग शब्द न होकर वर्ण या वर्ण समूह होता है।

4. उपसर्ग किसी शब्द से पहले जुड़कर उसमें नवीनता ला देता है।
5. एक उपसर्ग का एक ही अर्थ नहीं होता है। वह एक से अधिक, भिन्न अथवा कभी-कभी बिल्कुल विपरीत अर्थ भी बताता है, जैसे-प्रहार, आहार, निहार, संहार, विहार, उपहार परिहार आदि।
6. तत्सम उपसर्गों में कुछ उपसर्ग ऐसे होते हैं, जो अर्थ तो समान देते हैं, किंतु उनके रूप भिन्न होते हैं, जैसे-

(क) दुर, दुस दुष् (बुरा-कठिन)।
दुर्घटन, दुराग्रह, दुस्साहस, दुस्साध्य, दुष्कर, दुष्कर्म।

(ख) निर, निस, नि (निषेध, रहित, बिना)
निर्जन, निर्दय, निर्मल, निष्कपट, निस्तंत्र, निश्चय, निरोध, निबंध, निवास

7. आवश्यक नहीं कि तत्सम, तद्भव या विदेशी उपसर्ग उसी कोटि के शब्दों के साथ प्रयुक्त हों, जैसे-
अपयश (तत्सम), अपजस (तद्भव), (दोनों शब्दों में अप उपसर्ग प्रयुक्त हुआ है।) पहला शब्द तत्सम है, दूसरा तद्भव।
सुयश (तत्सम), सुजस (तद्भव)
8. उपसर्ग का प्रयोग संज्ञा, विशेषण, क्रिया, किया विशेषणः इन चारों के साथ किया जाता है। सर्वनाम के साथ उपसर्ग का प्रयोग नहीं किया जाता।
9. शब्द जिस स्रोत का होता है, उपसर्ग भी उसी स्रोत भाषा का होना चाहिए। मूलशब्द के आरंभ के 'आ' (दीर्घ स्वरों) को अ (ह्रस्व स्वर) में नहीं बदलना चाहिए, जैसे-आधारित को अधारित नहीं करना।

3.4 प्रत्यय

प्रत्यय पर चर्चा करने से पूर्व एक छात्र ने पूछा ''प्रत्यय' किसे कहते हैं? प्रत्यय का ज्ञान तो परिभाषा देकर हमें छोटी कक्षाओं से ही दिया जा रहा है। रटकर मैंने भी याद कर लिया कि-जो शब्दांश शब्दों के बाद जुड़कर उन शब्दों के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं, जैसे- जादू शब्द में 'गर' शब्दांश मिलने से एक नया शब्द जादूगर बना जो अर्थ में परिवर्तन कर देता है। किंतु प्रत्यय शब्द किस प्रकार बना यह स्पष्ट करेंगे, तो अच्छा रहेगा।

छात्र की जिज्ञासा को सुनकर अच्छा लगा। ऐसे कम ही छात्र होते हैं, जो शब्द-रचना के मूल को समझने का प्रयास करते हों। मैंने छात्र की जिज्ञासा को शांत करते हुए बताया-प्रत्यय-शब्द दो शब्दों के मिलने से बना है-'प्रति+अय'।'प्रति' शब्द का अर्थ है-साथ में किंतु, बाद में 'अय' का अर्थ है-चलने वाला, अर्थात जो शब्दों के साथ किंतु बाद में चले, वही शब्द 'प्रत्यय' कहलाता है, जैसे-

दुकान- एक विशेष स्थान है, जहाँ से हम आवश्यक वस्तुएँ क्रय करते हैं किंतु जब इसमें 'दार' शब्दांश बाद में जोड़ दिया, तो शब्द 'दुकानदार' बन जाता है, जिसका अर्थ होगा, वह व्यक्ति जो दुकान चलाता है।

अत: स्पष्ट है कि-

1. प्रत्यय शब्द खण्ड या शब्दांश होते हैं, जो शब्द के अंत में जुड़ते हैं।
2. ये सार्थक होते हुए भी स्वयं में अपूर्ण होते हैं।
3. वाक्य में इनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं हो सकता। ये केवल शब्द के पश्चात जुड़कर प्रयुक्त होते हैं।
4. कृत तथा तद्धित प्रत्ययों का प्रयोग संस्कृत में भी होता है, हिंदी में भी किंतु इनका संस्कृत में जो अर्थ व प्रयोग दिया गया है, ठीक वही अर्थ सीमा एवं व्याख्या हिंदी में संगत नहीं होती। हिंदी के संदर्भ में इनकी पृथक से व्याख्या की गई है जो संस्कृत से पूर्णत: भिन्न है।

प्रत्यय के भेद

हिंदी में मूलत: प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं-

(क) कृत प्रत्यय (क्रिया या धातु के अंत में प्रयुक्त होने वाला प्रत्यय)
(ख) तद्धित प्रत्यय (संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण में प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय)
(ग) आगत प्रत्यय (अन्य भाषा से आने वाले प्रत्यय)

(क) कृत् प्रत्यय

क्रिया तथा धातुओं के अंत में जिन प्रत्ययों के लगाने से संज्ञा, विशेषण आदि शब्द बनते हैं, वे कृत प्रत्यय कहलाते हैं। इन शब्दों को (कृत्+अन्त) 'कृदंत' भी कहा जाता है। कृदन्त शब्द संज्ञा एवं विशेषण होते हैं।

हिंदी कृत प्रत्ययों के निम्नलिखित भेद प्रचलित हैं—

1. **कर्त्तृवाचक कृदंत**- ये कृत् प्रत्यय क्रिया के करने वाले (कर्त्ता) का बोध कराते हैं। इनके प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं:

मूल शब्द	+	**प्रत्यय**	=	**नवीन शब्द रूप (विशेषण)**
घूम	+	अक्कड़	=	घुमक्कड़
बिकना, टिकना	+	आऊ	=	बिकाऊ, टिकाऊ
चलाना, तैसा	+	आक	=	चालाक, तैराक
खेलना	+	आड़ी	=	खिलाड़ी
कृपा, झगड़ना	+	आलू	=	कृपालु, झगड़ालु
जड़ना, धुनना	+	इया	=	जड़िया, धुनिया
अड़ना, सड़ना	+	इयल	=	अड़ियल, सड़ियल
रटना, खाना	+	ऊ	=	रट्टू, खाऊ
लड़ना	+	ऐत	=	लड़ैत
लूटना	+	ऐरा	=	लुटेरा
हँसना	+	ओड़	=	हँसोड़
भागना	+	ओड़ा	=	भगोड़ा

भूल	+	अक्कड़	=	भुलक्कड़
पढ़ना, लिखना, गाना	+	वाला	=	पढ़नेवाला, लिखने वाला
खेल	+	वैया	=	गवैया, खिवैया
पालना, रखना	+	हारा	=	पालनहारा, राखनहारा

2. **कर्मवाचक कृदंत**– जिन कृत प्रत्ययों के जुड़ने से कर्मवाचक शब्दों का बोध है, उन्हें कर्मवाचक कृदन्त कहते हैं। कर्म वाचक कृत प्रत्यय अकर्मक क्रियाओं के पीछे जोड़े जाते हैं। इस प्रकार के बने शब्द भूतकाल अथवा कर्म का अर्थ देते हैं, जैसे—

मूल शब्द	**+**	**प्रत्यय**	**=**	**नवीन शब्द रूप (भूतकाल)**
बिछैल	+	औना	=	बिछौना, खिलौना
जा, गा, भाग	+	ना	=	जाना, गाना, भागना
सूंघ, ओठ	+	नी	=	सूंघनी, ओढ़नी
देख, सुन	+	हुआ	=	देखा हुआ, सुना हुआ
पढ़, लिख	+	हुई	=	पढ़ी हुई, लिखी हुई

3. **करणवाचक कृदंत**– जिन कृत प्रत्ययों के योग से करणवाचक शब्दों अर्थात क्रिया के साधनों का बोध होता है, उन्हें करण वाचक कृदन्त कहते हैं, जैसे-

मूल शब्द	**+**	**प्रत्यय**	**=**	**नवीन शब्द रूप (साधन-सूचक)**
बंध, ढक	+	अन/न	=	बंधन, ढक्कन
भूल	+	आ	=	भूला
कतरना, सुमरना	+	ई	=	कतरनी, सुमरनी
झाड़ना	+	ऊ	=	झाड़ू
ढक	+	ना	=	ढकना
धौंकना, कतरना	+	नी	=	धौंकनी, कतरनी

4. **भाववाचक कृदंत**– जिन कृत प्रत्ययों के योग से शब्द क्रिया का भाव व्यक्त होना बताते हैं, उन्हें भाववाचक कृदन्त कहते हैं, जैसे-

मूल शब्द	**+**	**प्रत्यय**	**=**	**नवीन शब्द रूप**
गढ़ना, रटना	+	अंत	=	गढंत, रटंत
निंदा	+	अनीय	=	निंदनीय
पूजन, कथन	+	आ	=	पूजा, कथा
पढ़ना, लड़ना	+	आई	=	पढ़ाई, लड़ाई
उड़ना, उठना	+	आन	=	उड़ान, उठान
मिलना	+	आप	=	मिलाप
पूजना	+	आपा	=	पुजापा
घुमाना, छिड़कना	+	आप	=	घुमाव, छिड़काव
बुलाना, दिखना	+	आवा	=	बुलावा, दिखावा

डरना	+	आवना	=	डरावना
डरना	+	आवनी	=	डरावनी
थकना, लिखना	+	आवट	=	थकावट, लिखावट
घवराना, मुस्कराना	+	आहट	=	घबराहट, मुस्कराहट
थपकाना, हँसना	+	ई	=	थपकी, हँसी
समझ	+	औता	=	समझौता
मन, चुन	+	औती	=	मनौती, चुनौती
लिखना, पालना	+	क	=	लेखक, पालक
बढ़ना, घटना	+	ती	=	बढ़ती, घटती
मिल, लेन–देन	+	न	=	मिलन, लेन–देन
मथना	+	नी	=	मथनी
खोना	+	या	=	खोया

5. **क्रियार्थक कृत प्रत्यय**– जिन प्रत्ययों के योग से क्रिया विशेषण, अव्यय अथवा विशेष प्रकार के क्रिया शब्दों का बोध होता है, उन्हें क्रियार्थक कृत प्रत्यय कहते हैं। इन प्रत्ययों के योग से धातु संज्ञा बन जाती है किंतु अर्थ क्रिया का ही प्रधान रहता है, जैसे–

मूल शब्द	+	**प्रत्यय**	=	**नवीन शब्द रूप**
पूज	+	अनीय	=	पूजनीय (विशेषण)
चलाया	+	आ	=	चला
लिखना	+	कर	=	लिखकर
बहाना	+	ता	=	बहता
मराना	+	ता	=	मरता
गाना	+	ता	=	गाना
पढ़ना	+	ता	=	पढ़ना
हँसना	+	ते	=	हँसते
दौड़, खेल	+	ना	=	दौड़ना, माँगना
देना	+	प	=	देय (विशेषण)
आना, खाना	+	या	=	आया, खाया

(ख) तद्धित प्रत्यय

संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण अथवा अव्यय के अंत में लगने वाले प्रत्यय को तद्धित प्रत्यय कहा जाता है। तद्धित तथा कृत प्रत्यय में मूल अंतर यह है कि कृत प्रत्यय क्रिया या धातु के अंत में लगता है तथा तद्धित प्रत्यय संज्ञा आदि के अंत में।

1. **कर्त्तृवाचक**– इन प्रत्ययों के लगाने से कार्य करने वाले का बोध होता है। ये प्रत्यय जाति वाचक संज्ञाओं के बाद जोड़े जाते हैं,

जैसे–लकड़ी+हारा = लकड़हारा। इसके उदाहरण हैं—

मूल शब्द	+	प्रत्यय	=	नवीन शब्द रूप
छात्र	+	आ	=	छात्रा (स्त्री वाचक)
लोहा, सोना	+	आर	=	लुहार, सुनार (स्त्री वाचक)
पंडित	+	आईन	=	पंडिताइन (स्त्री वाचक)
नौकर, देवर	+	आनी	=	नौकरानी, देवरानी (स्त्री वाचक)
माली	+	इन	=	मालिन (स्त्री वाचक)
कुत्ता	+	इया	=	कुतिया (बहुवचन)
हिरन, मामा	+	ई	=	हिरनी, मामी (स्त्री वाचक)
गेरू	+	उवा	=	गेरुआ
मामा	+	एरा	=	ममेरा (संबंध वाचक)
कन्या, पुस्तक	+	एँ	=	कन्याएँ, पुस्तकें (बहुवचन)
भाँग	+	एड़ी	=	भँगेड़ी
हाथ	+	एली	=	हथेली
पाठ, सुधार	+	क	=	पाठक, सुधारक
ऊँट, मोर	+	नी	=	ऊँटनी, मोरनी (स्त्री वाचक)
कुर्सी, दवाई	+	याँ	=	कुर्सियाँ, दवाइयाँ (बहुवचन)
दूध, गाड़ी	+	वाला	=	दूधवाला, गाड़ी वाला
पानी	+	हार	=	परिहार (संबंध वाचक)

विशेष–कर्त्तृवाचक तद्धित प्रत्यय द्वारा लिंग, वचन तथा संबंध वाचक प्रत्यय बनाए जाते हैं। ये संज्ञा से संज्ञा बनाने वाले प्रत्यय भी कहलाते हैं।

2. **स्त्रीवाचक**– इन प्रत्ययों के लगाने से स्त्री जाति का बोध होता है, जैसे–पति+नी = पत्नी, सुत+आ = सुता

3. **भाववाचक**– इन प्रत्ययों के लगाने से जो शब्द बनते हैं, वे अपने मूल शब्द का भाव बताते हैं। किसी भाव का बोध होता है, जैसे–मनुष्य+ता = मनुष्यता

मूल शब्द	+	प्रत्यय	=	नवीन शब्द रूप
जोड़	+	आ	=	जोड़ा
भला	+	आई	=	भलाई
पंच	+	आयत	=	पंचायत
बूढ़ा	+	आपा	=	बुढ़ापा
चौड़ा	+	आन	=	चौड़ान
लिख	+	आवट	=	लिखावट
मीठा	+	आस	=	मिठास
कड़वा	+	आहट	=	कड़ुवाहट

बाप	+	औती	=	बपौती
लाली	+	इमा	=	लालिमा
खेत	+	ई	=	खेती
मर्दाना	+	गी	=	मर्दानिगी
संग	+	त	=	संगत
महान	+	ता	=	महानता
कीमत	+	ती	=	कीमती
देव	+	त्व	=	देवत्व
बच्चा	+	पन	=	बचपन
तम	+	स	=	तमस

4. **गुणवाचक**- इन प्रत्ययों के लगाने से गुण का बोध होता है। इस प्रकार के संज्ञाओं से बने शब्द विशेषण होते हैं, जैसे—
राष्ट्र+ईय=राष्ट्रीय।

मूल शब्द	+	**प्रत्यय**	=	**नवीन शब्द रूप**
भूख, प्यास	+	आ	=	भूखा, प्यासा
दया	+	आलू	=	दयालु
भार, धन	+	ई	=	भारी, धनी
धर्म	+	इक	=	धार्मिक
क्रोध	+	इत	=	क्रोधित
भारत	+	ईय	=	भारतीय
प्राची	+	ईन	=	प्राचीन
शर्म, रंग	+	ईला	=	शर्मीला, रंगीला
विष	+	ऐला	=	विषैला
घर	+	ऐल	=	घरेलू
दया	+	वंत	=	दयावंत
रूप	+	वान	=	रूपवान

5. **ऊनता वाचक**- इन प्रत्ययों के लगाने से पदार्थ की लघुता का बोध होता है, जैसे-
पहाड़+ई = पहाड़ी

मूल शब्द	+	**प्रत्यय**	=	**नवीन शब्द रूप**
लोटा	+	इया	=	लुटिया
ढोलक	+	ई	=	ढोलकी
छाता	+	री	=	छतरी

लंगोट	+	टी	=	लंगोटी
मुख	+	ड़ा	=	मुखड़ा
टांग	+	ड़ी	=	टंगड़ी

6. **अपत्य वाचक**- इन प्रत्ययों के लगाने से संतान का बोध होता है, जैसे-रघु+अव = राघव, कुरु+अव = कौरव
7. **संबंध वाचक**- इन प्रत्ययों के लगाने से संबंध का बोध होता है, जैसे-चाचा+एरा = चचेरा
8. **गणनावाचक**- इन प्रत्ययों के लगाने से जोड़ने की संख्या का बोध होता है, जैसे-पाँच+वाँ = पाँचवाँ

मूल शब्द	+	**प्रत्यय**	=	**नवीन शब्द रूप**
चार	+	था	=	चौथा
दो	+	रा	=	दूसरा
प्रथम	+	ला	=	पहला
सात	+	वाँ	=	सातवाँ
एक	+	ह	=	इकहरा

9. **सादृश्य वाचक**- इन प्रत्ययों के लगाने से समता का बोध होता है, जैसे-हरा+सा = हरासा

मूल शब्द	+	**प्रत्यय**	=	**नवीन शब्द रूप**
हरा	+	सा	=	हरा-सा
सोना	+	हरा	=	सुनहरा

10. **अन्य तद्धित प्रत्यय**-

मूल शब्द	+	**प्रत्यय**	=	**नवीन शब्द रूप**
भोपाल	+	ई	=	भोपाली
जयपुर	+	इया	=	जयपुरिया
लखनऊ	+	वाला	=	लखनऊ वाला
ससुर	+	आल	=	ससुराल
खाट	+	ओला	=	खटोला (ऊनता वाचक)
सुख	+	इया	=	सुखिया
दुख	+	ड़ा	=	दुखड़ा
छाता	+	री	=	छतरी (ऊनता वाचक)
शांति	+	पूर्वक	=	शांतिपूर्वक
लकड़ी	+	हारा	=	लकड़हारा
नाना	+	हाल	=	ननिहाल

(ग) आगत प्रत्यय (अन्य भाषाओं से आए प्रत्यय)

1. संस्कृत के कुछ तद्धित प्रत्यय

संस्कृत	मूल शब्द	निर्मित शब्द
अक	रक्षा, लेख, भक्ष, धाव, पच	रक्षक, लेखक, भक्षक, धावक, पाचक।
त्व	लघु, महत्, स्व, आत्म, गुरु	लघुत्व, महत्त्व, स्वत्व, आत्मत्व, गुरुत्व।
ता	लघु, महत्, स्वायत्त, गुरु	लघुता, महत्ता, स्वायतत्ता, गुरुता।
इमा	लघु, गुरु, महा, अणु	लघिमा, गरिमा, महिमा, अणिमा।
मय	ज्ञान, अन्न, प्राण, मनः, सुख	ज्ञानमय, अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, सुखमय।
तः	सर्व, स्व, पूर्ण, मूल	सर्वतः, स्वतः, पूर्णतः, मूलतः।

2. उर्दू (अरबी/फारसी) भाषा से आए कुछ प्रत्यय

उर्दू	मूल शब्द	निर्मित शब्द
नाक	दर्द, शर्म, खतरा, खौफ	दर्दनाक, शर्मनाक, खतरनाक, खौफनाक।
दार	समझ, माल, कर्ज	समझदार, मालदार, कर्जदार।
दानी	चूहा, मच्छर	चूहादानी, मच्छरदानी।
दान	पान, पीक, चूहे, कलम	पानदान, पीकदान, चूहेदान, कलमदान।
खाना	दवा, तोप, शफा, जेल	दवाखाना, तोपखाना, शफाखाना, जेलखाना।
बाज	धोखा, चाल, पतंग	धोखेबाज, चालबाज, पतंगबाज।
गर	जादू, बाजी, काम, सौदा,	जादूगर, बाजीगर, कामगर, सौदागर, कारीगर।
मंद	अक्ल, जरूरत	अक्लमंद, जरूरतमंद।
गीरी	दादा, गुंडा	दादागिरी, गुंडागिरी।
अंदाज	तीर	तीरंदाज।
इश	आजमा, फरमा	आजमाइश, फरमाइश।
खोर	सूद, रिश्वत, चुगल	सूदखोर, रिश्वतखोर, चुगलखोर।
ईना	माह, मरजी	महीना, मरजीना।
इयत	इंसान, आदमी	इंसानियत, आदमीयत।
साज	जिल्द, जाल	जिल्दसाज, जालसाज।

दो प्रत्ययों का एक साथ प्रयोग

इस प्रकार प्रत्यय रूप और अर्थ- दोनों का विस्तार करने के लिए शब्द-रचना के प्रबलतम साधन हैं। कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं, जिनमें दो प्रत्ययों का एक साथ प्रयोग होता है-जैसे

मूल शब्द	+	प्रथम प्रत्यय	+	द्वितीय प्रत्यय	=	निर्मित शब्द
समाज	+	इक	+	ता	=	सामाजिकता
धर्म	+	इक	+	ता	=	धार्मिकता
अध्यात्म	+	इक	+	ता	=	आध्यामिकता
भूत	+	इक	+	ता	=	भौतिकता

मूल	+	इक	+	ता		=	मौलिकता
सप्ताह	+	इक	+	ई		=	साप्ताहिकी
नीति	+	इक	+	ता		=	नैतिकता
भारत	+	ईय	+	ता		=	भारतीयता
राष्ट्र	+	ईय	+	ता		=	राष्ट्रीयता
ईमान	+	दार	+	ता		=	ईमानदारी
समझ	+	दार	+	ई		=	समझदारी
रिश्वत	+	दार	+	ई		=	रिश्वतखोरी
बन	+	आवट	+	ई		=	बनावटी
देख	+	आवट	+	ई		=	देखावटी
बच्चा	+	पन	+	आ		=	बचपना
पी	+	आस	+	आ		=	प्यासा
बुद्धि	+	मान	+	ई		=	बुद्धिमानी
नीति		इक		ता		=	नैतिकता

रोचक तथ्य

1. प्रत्यय की रूप रचना दो प्रकार से होती है। एक स्वरान्त प्रत्यय- यह रचना अंतिम स्वर लुप्त होकर वर्ण संधि का रूप ले लेता है, जैसे—अधुना से आधुनिक (यहाँ ना के आ स्वर का लोप) हो गया है, तथा इक प्रत्यय लगकर आधुनिक बन गया है। व्यंजनात्मक प्रत्यय वर्णों का संगम होता है, जैसे— बुद्धि+मान=बुद्धिमान।
2. जिस स्रोत (भाषा) से शब्द आते हैं, उसी भाषा के प्रत्यय लगाना चाहिए। हिंदी में संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी से शब्द आए हैं, तो प्रत्यय भी उनके साथ आए हैं।
3. मूल प्रकृति में प्रत्यय लगाकर नए शब्द की रूप रचना—

अकर्मक धातु	सकर्मक धातु	प्रत्यय (वट)	प्रत्यय (ई)	प्रत्यय (पन)
बना	(प्रत्यय-आ)	बनावट	बनावटी	बनावटीपन
बना		(संज्ञा)	(विशेषण)	(भावावाचक संज्ञा)

4. मूलशब्द में एक बार में केवल एक ही प्रत्यय जोड़ा जाना चाहिए, जैसे-स्वतंत्र से स्वातंत्र्य अथवा सुंदर से सौंदर्य शब्द बना है। किंतु इन शब्दों में ता प्रत्यय जोड़कर स्वातंत्र्यता या सौन्दर्यता शब्द बनाना ठीक नहीं। इसी तरह पूजा शब्द में दो अलग-अलग प्रत्यय जोड़कर पूज्य तथा पूजनीय शब्द तो बनाए जा सकते हैं किंतु पूज्यनीय नहीं।
5. मूलशब्द के आरंभिक अक्षरों में 'आ' स्वर हो तो प्रत्यय लगाते समय उसका रूप नहीं बदलेगा, जैसे व्यापार+इक = व्यापारिक शब्द बनता है। हाँ, कुछ शब्दों में अवश्य दो स्थानों पर वृद्धि हो सकती है, जैसे- परलोक+इक= पारलौकिक। (यहाँ प में आ की तथा 'ल' में ओ के स्थान पर दीर्घ मात्रा औ का प्रयोग किया गया है।) अत: ध्वनि

परिवर्तन में कहीं एक जगह कहीं दो जगह भी परिवर्तन हो जाता है। अत: इक प्रत्यय जोड़ते समय भाववाचक संज्ञा बनाने से पहले संधि नियमों को ध्यान में रखा जाना चाहिए, जैसे—

संसार+इक = सांसारिक (संसारिक नहीं)

इतिहास+इक = ऐतिहासिक (इतिहासिक नहीं)

समाज+इक = सामाजिक (समाजिक नहीं)

पुराण+इक = पौराणिक (पुराणिक नहीं)

6. शब्दों में य, व, ई प्रत्यय जोड़ते समय शब्दों के स्वरूप में होने वाले ध्वनि परिवर्तनों को ध्यान में रखना चाहिए, जैसे-

गंभीर+य = गांभीर्य (गंभीर्य नहीं)

शिशु+व = शैशव (शिशुव नहीं)

मधुर+ई = माधुरी (मधुरी नहीं)

उपसर्ग तथा प्रत्यय का एक साथ प्रयोग

कहीं-कहीं हिंदी में शब्द रचना के लिए उपसर्ग तथा प्रत्यय का प्रयोग एक साथ भी होता है, और उनसे नए-शब्द का निर्माण होता है। इसे भी जानें। जैसे-

उपसर्ग		**मूलशब्द**		**प्रत्यय**		**नवनिर्मित शब्द**
अप	+	मान	+	इत	=	अपमानित
स्व	+	तंत्र	+	ता	=	स्वतंत्रता
स	+	फल	+	ता	=	सफलता
अभि	+	मान	+	ई	=	अभिमानी
खुश	+	नसीब	+	ई	=	खुशनसीबी
उप	+	कार	+	क	=	उपकारक
परि	+	श्रम	+	ई	=	परिश्रमी
परि	+	पूर्ण	+	ता	=	परिपूर्णता
अनु	+	करण	+	ईय	=	अनुकरणीय
निर	+	साहस	+	ता	=	निर्दयता
दूस्	+	साहस	+	ई	=	दुस्साहसी
नेक	+	नीयत	+	ई	=	नेकनीयती
बद	+	नसीब	+	ई	=	बदनसीबी
नि	+	डर	+	ता	=	निडरता
अ	+	लोक	+	ई+ता	=	अलौकिकता
अ	+	समाज	+	इक+ता	=	असामाजिकता
सु	+	गंध	+	इत	=	सुगंधित

इस प्रकार उपसर्ग तथा प्रत्यय के द्वारा सीमित शब्दों से असीमित शब्द का निर्माण किया

जा सकता है। चल शब्द को लेकर यहाँ कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं–

चल, अचल, चंचल, विचल, प्रचल, प्रचलन, अविचलन, चलन, चला, चाल, चालू, चल, चलाई आदि।

उपसर्ग+प्रत्यय के आधार पर शब्द रचना करने संबंधी रोचक तथ्य–

शब्दों में उपसर्ग तथा प्रत्यय शब्द रचना करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1. उपसर्ग तथा प्रत्यय दोनों ही शब्दांश है। इनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं किया जाता है।
2. उपसर्ग शब्द के आरम्भ में जोड़े जाते हैं, जबकि प्रत्यय शब्द के अंत में।
3. एक शब्द में उपसर्ग तथा प्रत्यय दोनों भी जोड़े जा सकते हैं।
4. उपसर्ग के कारण शब्द का अर्थ बदल जाता है, किंतु प्रत्यय अर्थ में परिवर्तन नहीं करते बल्कि उनके कारण अर्थ में विशेषता उत्पन्न होती है।

प्रत्यय के संबंध में इतनी जानकारी देने के बाद एक छात्र ने पुनः एक प्रश्न किया– व्याकरण की कुछ पुस्तकों में हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले प्रत्ययों के दो भेद पढ़ने को मिलते हैं–

1. व्युत्पादक प्रत्यय
2. व्याकरणिक प्रत्यय

कृपया इनकी अवधारणा भी स्पष्ट करें। मैंने बताया–

1. **व्युत्पादक प्रत्यय** वे हैं, जो किसी शब्द के पूर्व अथवा पश्चात आकर या तो उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं या उसे एक शब्द भेद से दूसरे शब्द भेद में बदल देते हैं। इन्हें दो भागों में विभक्त किया गया है–

1. पूर्व प्रत्यय (उपसर्ग)   2. पर प्रत्यय (केवल प्रत्यय)

अतः आपको उपसर्ग एवं प्रत्यय के विषय में जो भी बताया गया है, वह सब व्युत्पादक प्रत्यय के अंतर्गत आता है। इसमें किसी प्रकार का भ्रम न हो। उपसर्ग को पूर्व पद तथा प्रत्यय को उत्तर पद भी कहते हैं।

2. **व्याकरिणक प्रत्यय** वे हैं, जो वाक्य में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को व्याकरणिक रूप देकर पदों में परिवर्तित करते हैं। इनके भी दो भेद हैं:

1. विभक्ति   2. पश्चाश्रयी

व्याकरणिक प्रत्ययों का विचार व्याकरण के अंतर्गत आता है। यहाँ हमने केवल व्युत्पादक प्रत्ययों की चर्चा ही की है। फिर भी कुछ उदाहरण देकर छात्र की जिज्ञासा को शांत करने के लिए मैंने विभक्ति तथा पश्चाश्रयी व्याकरणिक प्रत्यय की बात कुछ इस प्रकार रखी–

1. **विभक्ति प्रत्यय** वे हैं, जो किसी शब्द के पश्चात उसे वाक्य में व्यवहार के योग्य पद में परिवर्तित करते हैं, जैसे– छात्र+ओं = छात्रों, लिख+आई = लिखाई।
2. **पश्चाश्रयी प्रत्यय** वे हैं जो वाचक में पदों के पश्चात प्रयुक्त होकर पदों के बीच व्याकरणिक संबंध व्यक्त करते हैं, जैसे–

(क) छात्रों ने पुस्तक पढ़ी। (ने– परसर्ग प्रत्यय)

(ख) उसने तो कल ही लिख लिया था। (तो-निपात प्रत्यय)

3.5. समास

तभी एक सज्जन पूछ बैठें- उपसर्ग प्रत्यय और समास में क्या अन्तर है? क्योंकि उपसर्ग एवं प्रत्यय द्वारा भी नए शब्दों का निर्माण तो होता ही है। फिर समास की प्रक्रिया किस प्रकार है?

प्रश्न उनका उचित था क्योंकि शब्द रचना में उपसर्ग तथा प्रत्यय की भूमिका पूर्वपद तथा उत्तरपद के साथ स्पष्ट हो जाती है किंतु समास की भूमिका शब्द रचना के अंतर्गत किस प्रकार तय की जाए, मैंने इसे स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण उनके सम्मुख रखा।

सज्जन शब्द का विग्रह कीजिए। इसके दो शब्द हैं-सत्+जन। सज्जन में सत् शब्द न तो उपसर्ग है, और न ही जन शब्द प्रत्यय है। सत्+जन दोनों मुक्त शब्द हैं किंतु दोनों का योग करने पर जो नए शब्द का निर्माण हुआ, वही समासीकरण की प्रक्रिया कहलाती है। इसे इस तरह और समझिए-

उपसर्ग- सु+जन (यहाँ सु जन का उपसर्ग है)

प्रत्यय- जन+ता (यहाँ ता प्रत्यय है)

समास- सत्+जन (यहां दोनों मुक्त शब्दों का समासीकरण हुआ है)

अब तीनों शब्दों के अर्थ को समझने पर अर्थ में भिन्नता स्पष्ट परिलक्षित होती है। अत: स्पष्ट है कि समास में दोनों मुक्त शब्द है। अत: दो मुक्त शब्द जब संयुक्त होकर एक नए शब्द का निर्माण करते हैं, तो उस प्रक्रिया को समास कहा जाता है। दूसरे शब्दों में कहें, तो समास पद बंधों का संक्षिप्तीकृत रूप (शब्द) है।

पद बंध और समास

कुछ लोग सुजन को भी समास कह सकते हैं किंतु हिंदी में 'सु' मुक्त शब्द नहीं है। अत: उसके प्रयोग से सामासिक रूप नहीं बन सकता। अत: समास को सही रूप से समझने के लिए पद बंधों से समास तथा समास को पद बंध के रूप में विग्रह करने का अभ्यास करने पर ही हम समास को भली भांति समझ सकते हैं, जैसे-'राजपुत्र' शब्द में समास है। यहाँ 'राजा' तथा 'पुत्र' का संबंध 'राजा का पुत्र'(पदबंध) से ही प्रकट होता है। राजा का पुत्र पदबंध का संक्षिप्त रूप ही राजपुत्र है। पदबंधों को समास के रूप में संक्षिप्त करने के लिए पदबंध के अंतर्गत आए परसर्ग तथा योजक तत्वों को पृथक कर दिया जाता है। समास विधि से बने ऐसे पदों को समस्त पद कहते हैं। राजपुत्र समस्त पद है।

तभी एक विद्वान, व्यक्ति ने मुझसे प्रश्न किया, ''आजकल हिंदी व्याकरण पर अंग्रेजी व्याकरण का प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है। अनेक प्रकरण अंग्रेजी भाषा से रूपांतरित होकर हिंदी में उभर रहे हैं। मुख्य रूप से विराम चिह्न जो अंग्रेजी भाषा से ही हिंदी में आए हैं। व्याकरण के आठ अंग-संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चय बोधक तथा विस्मयादि बोधक का स्वरूप भी अंग्रेजी भाषा के आधार पर गठित हुआ है। अंग्रेजी भाषा में समास का उल्लेख कहीं नहीं हुआ है? तो यह शब्द हिंदी में कहाँ से आया?''

मैंने तुरंत बताया ''समास'/समास शब्द अंग्रेजी में प्रचलित नहीं है। 'समास' हिंदी का

विषय भी नहीं है। यह शुद्ध संस्कृत भाषा की विशेषता है, जो हिंदी में उसकी सुंदरता में वृद्धि करती है, तथा थोड़े-शब्दों में अधिक अर्थ व्यक्त करने की क्षमता रखती है। समास शब्द का अर्थ है-समसन् या संक्षेपण। समास रचना भाषा में एक कसाव लाती है। इससे भाषा में संक्षिप्तता का गुण पैदा होता है। यह विशेषता संस्कृत को छोड़कर किसी और भाषा में नहीं है।''

समास शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है: सम+अस/संस्कृत में 'अस' धातु का आशय है, बैठना अर्थात दो या दो से अधिक शब्द जब पास आकर बैठते हैं तो उसे समास कहते हैं।

समास की यही तो विशेषता है कि इसके कारण जब शब्द पास-पास आकर बैठते हैं तो शब्दों की बचत होती है किंतु उस सामासिक शब्द के अर्थ को बिना विग्रह किए नहीं समझा जा सकता। कभी-कभी एक ही सामासिक शब्द के कई अर्थ निकलते हैं, तो यह कहना कठिन है कि उसमें कौन सा समास है, जैसे-

1. रामेश्वर- राम के ईश्वर अर्थात् शिव। यहाँ शिव की महत्ता बताई गई है। अत: तत्पुरुष समास होगा।
2. रामेश्वर- राम है ईश्वर जिसके अर्थात् शिव। यहाँ राम की महत्ता सूचित की गई है। अत: बहुब्रीहि समास होगा।
3. रामेश्वर- राम और ईश्वर (शिव) यहाँ द्वन्द्व समास होगा।

अत: इस कठिनाई का निवारण कैसे हो? यह भी बताइए? उन्होंने तुरंत प्रश्न किया। मैंने उन्हें पुन: समास रचना की प्रक्रिया (स्पष्ट करते हुए बताया कि) सामासिक शब्दों में दो शब्द (पद) होते हैं। प्रथम पूर्वपद तथा दूसरा उत्तरपद। इन दोनों से मिलकर बना नया शब्द समास पद कहलाता है, जैसे-रामेश्वर में

समास (समस्त पद)	पूर्वपद+उत्तर पद (विग्रह)
रामेश्वर	राम+ईश्वर

जब इन समस्त पद के सभी पद (पूर्वपद+उत्तरपद) अलग-अलग किए जाते हैं, तब उस प्रक्रिया को समास विग्रह कहते हैं। अत: सामासिक शब्द को विग्रह किए बिना, उनके भेदों को नहीं समझा जा सकता है। एक बात पर और भी ध्यान देना आवश्यक है। समास विग्रह में कठिनाई उस समय आती है, जब दो से अधिक पदों में समास करना हो। ऐसी स्थिति में पहले दो पदों में समास करके उन्हें एक पद बना लेते हैं, तब तीसरे पद के साथ उनका समास होता है। यही क्रम चौथे, पाँचवे एवं अन्य पदों के साथ चलता है तथा अंतिम बार जो समास होता है वही सारे समूह का समास कहलाता है, जैसे-

1.	देशकालानुमान	शब्द समस्त पद	समास
	देश और काल	देश-काल	द्वन्द्व समास
	देशकाल का अनुमान	देशकालानुमान	तत्पुरुष समास
2.	कोल-किरात-किशोरी	समस्त पद	
	कोल और किरात	कोल-किरात	द्वंद्व समास

कोल किरात किशोरी कोल किरात किशोरी <u>तत्पुरुष समास</u>

अतः ध्यान रखे-

1. समास हेतु कम से कम दो पद होते हैं-पहला पद पूर्वपद, दूसरा पद उत्तर पद।
2. समास होने पर दोनों पद या अन्य पद मिलकर संक्षिप्त रूप धारण करते हैं।
3. समास होने पर जहाँ संधि संभव हो, वहाँ नियमों के अनुसार संधि भी हो जाती है।
4. समास में शब्दों का नहीं, अपितु पदों का परस्पर संबंध होता है। अनेक शब्द मिलकर जब एक पद बन जाते हैं, तब वह समास कहलाता है। अतः समास में शब्दीकरण नहीं, पदीकरण महत्वपूर्ण होता है।

संधि और समास में अंतर

1. संधि में दो वर्णों का योग होता है किंतु समास में दो पदों का संयोग होता है।
2. संधि के वर्णो के मेल करते समय विकार की संभावना रहती है किंतु समास में पदों के प्रत्यय समाप्त हो जाते हैं। समास को मेल करते समय विकार से कोई मतलब नहीं।
3. संधि को तोड़ने को विच्छेद कहते हैं, जबकि समास के तोड़ने को विग्रह कहते हैं, जैसे- पीताम्बर के दो पद होते हैं- पीत+अम्बर इसका समास विग्रह होगा-पीत है अम्बर जिसका अर्थात विष्णु। इसका संधि विच्छेद होगा-पीत+अम्बर।
4. संधि केवल तत्सम शब्दों में होती है जबकि समास संस्कृत तत्सम, हिंदी उर्दू हर प्रकार के पदों में होता है।
5. शब्दों में संधि तथा समास दोनों भी हो सकते हैं, यथा-
   संधि- षड+आनन षडानन
   समास-(षडानन) (छः मुख है जिसके अर्थात कार्तिकेय) (बहुब्रीहि समास)
6. संधि में समास नहीं होता, जबकि समास में संधि होती है।

फिर मैंने कहा यह तो आप जानते ही हैं कि समास छः प्रकार के होते हैं। तो आइए उनके अर्थ भी जाने और विग्रह करके उन्हें समझें।

समास के भेद

	समास के भेद	अर्थ	उदाहरण
1.	अव्ययी भाव	अव्यय के भाव वाला।	यथाशक्ति
2.	तत्पुरुष	वह पुरुष	देश-द्रोही
3.	कर्मधारय	कर्म (गुण) बताने वाला।	नील कमल
4.	द्विगु	संख्या बताने वाला-(द्विगुणित करने वाला)	पंच-मुखी
5.	द्वंद्व	दो वस्तुओं का जोड़ा	भाई-बहन
6.	बहुब्रीहि	बहुत है ब्रीहि (<u>चाँवल</u>) जिसके पास वह व्यक्ति।	चक्रपाणि

हिंदी समास संबंधी कुछ विशेष नियम

1. द्वन्द्व समास में स्त्रीलिंग, मान्य और अल्प स्वर वाले शब्द

पहले आते हैं, यथा–

क. सीताराम, राधाकृष्ण (स्त्रीलिंग)

ख. राजा–रानी, राम–लक्षमण (मान्य)

ग. दाल–रोटी (अल्पस्वर वाले)

यहाँ राम और कृष्ण के पहले सीता और राधा शब्द आया है किन्तु राजा–रानी मान्य है। दाल रोटी में दाल में ल स्वर अल्प स्वर है। अत: वह शब्द पहले आया है।

विशेष–

1. द्वन्द्व समास में अन्य समासों की तुलना में दो से अधिक पद भी हो सकते हैं।

2. समास होने में समान शब्द का केवल 'स' अक्षर रह जाता है, यथा–

क. समान–गोत्र सगोत्र

ख. समान–पिण्ड सपिण्ड

किंतु धर्म और जातीय शब्दों के योग में 'समान' शब्द का 'स' शब्द विकल्प से होता है, यथा–

क. सधर्मा = समान धर्मा (दोनों ही प्रयोग शुद्ध है)

ख. सजातीय = समानजातीय (दोनों ही प्रयोग शुद्ध है)

3. 'अहन' 'राजन' और सखि शब्द बहुधा अह, राज, सख हो जाते हैं, यथा–

क. सप्त+अहन् = सप्ताह

ख. महा+राजन = महाराज

ग. मरुत+सखि = मरुत्सख

4. पुरुष शब्द के पहले यदि 'कु' आए तो विकल्प से कु का का हो जाता है, यथा–

कु+पुरुष = कुपुरुष/ कापुरुष

5. महत शब्द का रूप बहुधा महा हो जाता है, यथा–

महाराज, महावीर

6. सामासिक शब्द के अंत में 'रात्रि' शब्द का रात्र हो जाता है, यथा–

क. नव+रात्रि = नवरात्र

ख. अहो+रात्रि = अहोरात्र

7. अक्षि (आँख) तथा नाभि शब्दों के रूप समास करते समय 'अक्ष' और नाभ हो जाते हैं, यथा–

क. पुण्डरीक+अक्षि = पुण्डरीकाक्ष

ख. पद्म+नाभि = पद्मनाभ

8. समास में संख्या वाचक विशेषणों के रूप विकृत हो जाते हैं, यथा–

क. तिपाई चौदह

ख. चौअन्नी उन्नीस

9. कुछ शब्द नियम विरुद्ध बने हैं, यथा–

क.	जाया+पति	=	दम्पति
ख.	अन्य+अन्य	=	अन्योन्य
ग.	पर+पर	=	परस्पर

10. बहुधा संस्कृत शब्द के समास विग्रह करने पर हिंदी के अनुसार कुछ कठिनाई होती है। अत: ऐसे स्थानों पर(विशेषकर अव्ययी भाव तथा बहुव्रीहि समास में)हिंदी के शब्दों को लेकर विग्रह करना चाहिए, यथा–

कुंभकार	=	कुंभ को बनाने वाला (बहुब्रीहि)
खग	=	आकाश में गमन करने वाला (बहुब्रीहि)
आमरण	=	मरण तक (अव्ययी भाव)
व्यर्थ	=	बिना अर्थ का (अव्ययी भाव)

11 द्वन्द्व समास सदा बहुवचन में होता है, जैसे–राजा–रानी साथ–साथ आए।

12 यदि किसी सामासिक शब्द के अन्त में 'आ' हो, और उसका अर्थ उसके अवयवों (मूल) से भिन्न हो, तो 'अन्त' को ह्रस्व कर देते हैं, जैसे–दृढ़–प्रतिज्ञ (प्रतिज्ञा में 'ज्ञा' शब्द ह्रस्व हो गया) निर्लज्ज, लब्ध प्रतिष्ठ आदि।

13 समास का नाम विग्रह के अनुसार होता है। कभी–कभी एक ही सामासिक शब्द का विग्रह अर्थ भेद से कई प्रकार का हो सकता है, जैसे– सेवाव्रत–सेवा ही व्रत है। (कर्म धारय)

सेवा का व्रत (तत्पुरुष)

सेवा है व्रत जिसका वह (बहुबीहि)

14 कभी–कभी बहुब्रीहि सामासिक शब्द के अन्त में 'क' जड़ दिया जाता है, जैसे– सपत्नीक, अल्पवयस्क

15 समास करते समय कारकों तथा समुच्चय बोधकों का लोप हो जाता है।

16 कर्म धारय समास विशेषण का कार्य करता है, जबकि बहुबीहि समास संज्ञा का।

17. अव्ययी समास में पूर्वपद अव्यय होता है। इस कारण समस्त पद अव्ययी भाव बन जाता है।

हिंदी समास प्रक्रिया में शब्द रचना

हिंदी में सामासिक शब्दों का निर्माण दो प्रकार से किया गया है–

क. समस्रोतीय समास प्रक्रिया

इस प्रकार की समास प्रक्रिया में एक ही स्रोत से आए हुए शब्दों का निर्माण तीन प्रकार से हो सकता है–

1. **तद्भव एवं तदभव शब्दों के समास** से– यथा–

देश
भक्ति
> देशभक्ति

2. **तत्सम तथा तत्सम शब्दों के समास** से-यथा-

काम
चोर
> कामचोर

3. **विदेशी एवं विदेशी शब्दों के समास** से-यथा-

गिरह
कट
> गिरहकट

आराम
कुर्सी
> आराम कुर्सी

ख. संकर समास

जब दो भिन्न-भिन्न भाषाओं के शब्दों के योग से नए सामासिक शब्दों का निर्माण होता है, तो उसे संकर समास कहा जाता है, यथा-

1. तत्सम तथा तद्‌भव शब्दों के समास से-यथा

सूर्य (तत्सम)
मुखी (तद्‌भव)
> सूर्यमुखी

2. तद्‌भव तथा तत्सम शब्दों के समास से-यथा-

बिजली (तद्‌भव)
यंत्र (तत्सम)
> बिजली यंत्र

3. तत्सम तथा विदेशी शब्दों के समास से-यथा-

योजना (तत्सम)
कमिश्नर (विदेशी)
> योजना कमिश्नर

4. तद्‌भव तथा विदेशी शब्दों के समास से-यथा-

दीन (तद्‌भव)
ईमान (तत्सम)
> दीन-ईमान

5. विदेशी तथा तद्‌भव शब्दों के समास से

पॉकेट (विदेशी)
मार (तद्‌भव)
> पॉकेटमार

इस प्रकार उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास के योग से सदैव शब्द सम्पदा वैभव को प्राप्त हुई है, तथा नए-नए शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया भी सतत चलती रहती है।

04

शब्द और अर्थ

एक संगोष्ठी में किसी प्रतिभागी ने बताया कि ''बचपन में जब मैं प्राथमिक विद्यालय की कक्षाओं में पढ़ता था, शब्दार्थ याद नहीं होते थे। शिक्षक प्रतिदिन शब्दार्थ याद करने को कहते थे किंतु मैं बड़ी कठिनाई से याद कर पाता था। आगे की कक्षाओं में धीरे-धीरे यह समझ में आने लगा कि कुछ शब्द तो समानार्थी होते हैं, जो अर्थ की दृष्टि से बिल्कुल एक ही वस्तु या भाव का बोध कराते हैं, किंतु कुछ ऐसे भी शब्द होते हैं, जो एक अर्थ के सूचक होकर भी पूर्ण समानार्थी नहीं है। कुछ शब्द ऐसे मिले जो एक दूसरे के विपरीत अर्थ के सूचक हैं। कुछ शब्द अनेकार्थी भी मिले। स्थान विशेष पर प्रयोग करने से उनका अर्थ बदल जाता है। कुछ पुनरुक्त शब्द भी पढ़ने को मिले, जिन्हें दो-बार प्रयोग करने पर अर्थ में लालित्य आ जाता है। अत: अच्छी भाषा के लिए हमें उचित शब्द चयन करने के लिए उनके अर्थ को अच्छी तरह समझना होगा। अत: शब्द और अर्थ के संबंध को जाने बिना लगता है, शब्द के संबंध में ज्ञान अधूरा ही रहता है।''

मैं कुछ कह पाता उसके पहले ही उन्होंने अपने कथन को और भी स्पष्ट करते हुए कहा-

''मैं तो यह मानता हूँ कि शब्दों की महिमा अपार है। सभी शब्दों के ठीक-ठीक अर्थ जानना भी कठिन है। इस संबंध में मैंने एक कहानी पढ़ी थी कि एक लड़के को एक बार उसके पिता ने एक 'मीटर' दिया, और कहा कि जाओ बाहर के दरवाजे की ऊँचाई नाप लाओ। थोड़ी देर बाद जब वह लौटा, उसके हाथ में 'मीटर' के साथ-साथ एक बाँस का टुकड़ा और एक डोरा भी था। उसने आकर पिताजी को बतलाया कि दरवाजे की लंबाई दो मीटर, एक बांस और इतना सा डोरा है। यदि लोग इस प्रकार मनमाने ढंग से वस्तुएँ नापने लगें तो लंबाई की मानक नाप हो ही नहीं सकती क्योंकि बांस का टुकड़ा और डोरे की लंबाई कितनी है, यह कहना कठिन है। यही बात अर्थ के संबंध में भी मुझे लगती है। लोग मानक अर्थ को छोड़कर अपने-अपने अर्थ भी लगाने लगते हैं। इसलिए शब्द और अर्थ के विषय में मुझे विस्तार से उदाहरण सहित समझाएँ कि इनमें परस्पर क्या संबंध है, तथा अर्थ की दृष्टि से शब्द कितने प्रकार के होते हैं?''

शब्द और अर्थ

इस संबंध में अपनी बात प्रारंभ करने के पूर्व मैंने महाभारत के एक प्रसंग का उल्लेख करना उचित समझा। महाभारत के शांतिपर्व के अध्याय 220 के अंतर्गत महर्षि श्वेतकेतु तथा उनकी पत्नी सुवर्चला का शब्दार्थ के संबंध में वाद-विवाद एक रोचक एवं तर्कपूर्ण शैली में प्रस्तुत किया गया है। वह इस प्रकार है-

- महर्षि श्वेत केतु ने कहा, ''कमल पर स्थित जल के तुल्य शब्द और अर्थ के संबंध को अनियत कहते हैं।''
- ४ सुवर्चला का कहना है- ''अर्थ के कारण शब्द की स्थिति है। बिना अर्थ के शब्द की स्थिति नहीं है।''
- श्वेतकेतु सुर्वचला के इस कथन से सहमत नहीं होते, और कहते हैं जिस प्रकार आकाश के बिना पृथ्वी अथवा पार्थिव जगत की स्थिति नहीं है, फिर भी दोनों में नित्य संबंध नहीं है, उसी प्रकार शब्द और अर्थ के संबंध में भी जानना चाहिए।

यह विवाद इस प्रकार चलता रहता है। अंत में श्वेतकेतु शब्द की अपेक्षा अर्थ की प्रधानता को स्वीकार करता है।

महर्षि भर्तृहरि, महर्षि पंतजलि आदि विद्वानों का भी कहना है कि अर्थ को प्रकट करने के लिए ही शब्द का प्रयोग होता है। कुछ भाषाविद् मानते हैं कि शब्द और अर्थ का नित्य संबंध हो सकता है किंतु इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि शब्द के अर्थ में परिवर्तन नहीं होता है। भाषा विज्ञान में अर्थ परिवर्तन के सिद्धांत को स्वीकार किया गया है। यह सिद्धांत अपने आप में महत्वपूर्ण है।

अत: शब्द और अर्थ के संबंध में शास्त्रीय दृष्टि से सदैव विवाद होता रहा है। इस संबंध में किसी एक बिन्दु पर मनीषि सहमत नहीं हैं। किंतु निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि शब्द की उपयोगिता अर्थ की प्रतीति में है। अर्थ ही भाषा का लक्ष्य है, प्रतिपाद्य है, तथा शब्द की सत्ता अर्थ के कारण ही विद्यमान है।

शब्द स्वयं में अमूर्त है। अर्थ के द्वारा ही वह मूर्त होता है। गाय, पर्वत, नदी, आग, सूर्य, तारे आदि शब्दों को सुनकर श्रोता सहज ही समझ लेता है कि गाय अर्थात् दूध देने वाला चौपाया पशु। शेष शब्दों के अर्थ भी वह इस प्रकार जानता है। अत: अर्थ को मानसिक पक्ष कहा जा सकता है। श्रोता के मन में विचार या भाव (अर्थ) पहले से विद्यमान रहता है, जिसे शब्दों द्वारा वह व्यक्त कर देता है। इस दृष्टि से प्रत्येक शब्द अपना एक विशेष अर्थ, भाव या विचार रखता है। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि-

हमें अर्थ के विषय में तीन बातें जानना चाहिए: (क) अर्थ क्या है? (ख) अर्थबोध के साधन क्या है? तथा (ग) अर्थ में परिवर्तन क्यों होता है?

(क) अर्थ क्या है?

'किसी ध्वनि, शब्द, वाक्यांश या वाक्य को ज्ञानेन्द्रियों से ग्रहण करने पर जो मानसिक प्रतीति होती है, वही प्रतीति उस ध्वनि, शब्द, वाक्यांश या वाक्य का अर्थ होती है।' इस दृष्टि से ध्वनि, शब्द, वाक्यांश तथा वाक्य को अगर शरीर मान लिया जाए तो उनके अर्थ को उनकी आत्मा मानना पड़ेगा।

(ख) अर्थबोध के साधन

हमारे आचार्यों ने बताया है कि अर्थ का ग्रहण, 1. व्यवहार, 2. आप्त-वाक्य, 3. उपमान, 4. प्रकरण (प्रसंग), 5. विकृति (व्याख्या), 6. पद सान्निध्य, 7. व्याकरण, और 8. कोश, ये इन

आठ साधनों द्वारा होता है।

1. **व्यवहार**- भाषा अनुकरण से सीखी जाती है। प्रत्यक्ष विधि से व्यक्ति जिन शब्दों का व्यवहार जिन अर्थों में करते हुए देखता है, वह भी वैसा ही प्रयोग करता है।
2. **आप्त वाक्य**- कुछ अर्थ ज्ञान प्रत्यक्ष विधि से ग्रहण नहीं किया जा सकता। अत: उसे श्रद्धेय व्यक्तियों से सुनकर सीखना होता है। उदाहरण के लिए ईश्वर, ब्रह्म, माया, जीव, सुख-दुख आदि के अर्थ को वह आप्त वाक्यों (श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा कहे वाक्यों) द्वारा ही जानता है।
3. **उपमान**- किसी अन्य अप्रत्यक्ष वस्तु का उदाहरण देकर भी उसकी क्षमता के आधार पर अर्थ बोध कराया जाता है, जैसे-कमल सी आँखें।
4. **प्रकरण**- इसे प्रसंग द्वारा अर्थबोध भी कहा जाता है। मुझे जल दो, तथा मैं **जल** रहा हूँ। वाक्यों में **जल** शब्द का अर्थ-बोध प्रसंगानुसार समझना होगा।
5. **विवृत्ति** (व्याख्या)- किसी किसी शब्द का अर्थ व्याख्या द्वारा ही स्पष्ट होता है, जैसे- रावण एक महान योद्धा था किंतु आतंकवादी था, विद्वान था, किंतु आचरणहीन था।
6. **पद-सान्निध्य**- परिचित शब्द के साथ-साथ अपरिचित शब्द का भी जब अर्थबोध होने लगे, तो उसे पद सान्निध्य अर्थबोध कहते हैं।

7-8 व्याकरण तथा कोश की सहायता से भी हमें अर्थ के प्रयोग तथा अर्थ बोध में सहायता मिलती है। (परिशिष्ट में इस संबंध में विस्तार से देखें)

(ग) अर्थ परिवर्तन के कारक तत्व

प्रत्येक शब्द का एक मूल अर्थ होता है। अर्थ के स्तर पर शब्द प्रसंग, संदर्भ और कथन आदि के आधार पर विभिन्न अर्थ भी देता है। समाज संस्कृति, वक्ता की मानसिक स्थिति आदि के कारण भी शब्द नए-नए अर्थ देने लगते हैं। इसे भाषाविदों ने पाँच स्तरों पर अनुभव किया है:-

1. **अर्थ विस्तार**- शब्दों का कालांतर में अर्थ का व्यापक अर्थ हो जाता है। वे वही अर्थ नहीं देते जो परम्परा से चले आने से ज्ञात होता है। उदाहरण के लिए, जैसे-प्राचीन काल में कुशल शब्द यज्ञादि अनुष्ठानों के लिए कुश लाने वाले व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता था, कालांतर में यह सभी प्रकार की कुशलता का परिचायक बन गया।
   तेल पहले तिल से निकला तरल पदार्थ अर्थ का द्योतक था, अब आँवला, चमेली, केरोसिन सभी के लिए तेल प्रयुक्त होता है।
2. **अर्थ संकोच**- इस प्रक्रिया द्वारा शब्द अपने व्यापक अर्थ से हटकर संकुचित हो जाता है, जैसे-'जल' का अर्थ जल से उत्पन्न होने वाला है किंतु कमल, जोंक, मीन, सेंवार आदि भी जल से उत्पन्न होते हैं किंतु उन्हें जलज नहीं कहा जाता है। इसी प्रकार खग, मृग, धान, रसाल, सर्प भी अपना व्यापक अर्थ खो चुके हैं।
3. **अर्थादेश**- इस पद्धति में शब्द का मूल अर्थ समाप्त हो जाता है, और उसके स्थान पर दूसरा अर्थ प्रचलित हो जाता है, जैसे असुर शब्द ऋग्वेद में देव का वाचक था, बाद में राक्षस का द्योतक बन गया, तथा 'अ' का लोप कर उसका विरोधी स्वर 'सुर' बन गया

प्रारब्ध का अर्थ संस्कृत में प्रारंभ किया हुआ से था, जो हिन्दी में भाग्य बन गया।

4. **अर्थापकर्ष**– इस पद्धति में शब्द का मूल अर्थ समाप्त हो जाता है और उसके स्थान पर नवीन अर्थ प्रचलित हो जाता है। पहले गँवार शब्द का अर्थ था गाँव का रहने वाला किंतु अब इसका अर्थ मूर्ख हो गया है।

5. **अर्थोपकर्ष**– कभी–कभी शब्दों के अर्थ परिवर्तन होने से पहले ही उन्नत हो जाते हैं। इसी को अर्थ का उत्कर्ष कहते हैं। संस्कृत में साहस शब्द का प्रयोग व्यभिचार, हत्या के अर्थ में होता था, पर अब इसको प्रशंसा के अर्थ में लिया जाता है। कर्पट पहले फरेबी के रूप में बोला जाता था, पर अब अच्छे वस्त्र के रूप में प्रयुक्त होता है।

अर्थ परिवर्तन के इन अतिरिक्त निम्नलिखित सहायक पद्धतियाँ भी देखने को मिलती है–

1. **कर्तन पद्धति**– इस पद्धति से बड़े शब्दों को काट–छाँटकर छोटा शब्द बनाया जाता है, जो पूर्ण से अंश की ओर के सिद्धांत पर आधारित है। इस पद्धति से बनाए गए शब्दों से अर्थ में पूर्ण व्यंजना निहित है, जैसे–

शब्द	**नया शब्द**
मोटरकार मोटर	मोटर
लेबोरेटरी लैब	लैब
फोटोग्राफ	फोटो
टेलीफोन फोन	फोन
माइक्रोफोन	माइक

उपरोक्त सभी शब्द विदेशी भाषा के अनुकरण पर आधारित हैं।

2. मिश्र पद्धति

जब दो शब्दों की ध्वनि और अर्थ को कृत्रिम रूप देकर नया शब्द बनाया जाता है, तो उसे मिश्र पद्धति कहते हैं, जैसे–

शब्द	**नया शब्द**
ऊँट पर टाँग	ऊटपटांग
सिरका अंजवीन	सिकंजी

3. अनुकरण पद्धति

इस पद्धति से अनुस्यता के आधार पर नए शब्द बनाए जाते हैं, जैसे–

शब्द	**नया शब्द**
आलू	लालू, कचालू
पंजोबा	विनोबा

4. अर्थारोप

इस पद्धति से पुराने शब्दों को नए अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है–

नया शब्द	**पुराना शब्द**
हवाई जहाज	विमान

मैनुस्क्रिप्ट	पाण्डुलिपि
बिजली का पंखा	पंखा

रोचक तथ्य

1 काल के आयाम में वक्ता के अन्दर अर्थ का उद्‌भव पहले और शब्दों का बाद में होता है। इसके विपरीत श्रोता या पाठक की चेतना में शब्दों का उद्‌भव पहले और अर्थ का बाद में होता है।

2 शब्द मनुष्य की शारीरिक क्रियाओं से उत्पन्न होते हैं, जबकि अर्थ मानसिक एवं बौद्धिक क्रिया है।

3 शब्द भौतिक अस्तित्व रखते हैं। उन पर शोध की जा सकती है किन्तु अर्थ का अस्तित्व मनुष्य की मानसिक चेतना पर प्रभाव डालता है। अत: वह शोध का विषय नहीं बन सकता।

4 शब्दों के पर्याय होते हैं, अर्थ के नहीं।

5 शब्द के मौखिक और लिखित दोनों रूप होते हैं, अर्थ के नहीं।

6 शब्द का ज्ञान दिया जा सकता है, अर्थ का नहीं।

7 शब्द व्याकरण सम्मत होता है, अर्थ नहीं।

4.1. एकार्थी शब्द/एकार्थी से प्रतीत होने वाले शब्द

जिन शब्दों का एक ही अर्थ (मुख्यार्थ) होता है, वे एकार्थी शब्द कहलाते हैं। व्यक्ति वाचक संज्ञाएँ तथा स्थानों के नाम इसी श्रेणी के शब्द कहलाते हैं। व्यक्ति तथा स्थानों की विपुल संख्या होने के कारण हिंदी भाषा में एकार्थी शब्दों का बहुत बड़ा भंडार है, उदाहरण के लिए-

व्यक्ति, देश, प्रदेश, क्षेत्र, नदी, पहाड़, दिन, मास, त्यौहार, भाषा, ज्ञान-विज्ञान के विषय, विशेषण तथा वस्तुओं और पदार्थों के नाम इसी श्रेणी के अंतर्गत आते हैं।

एकार्थी से प्रतीत होने वाले शब्द

हम कुछ उदाहरणों से हम यह समझ सकेंगे कि एकार्थी और एकार्थी से प्रतीत होने वाले शब्दों में सूक्ष्म अंतर क्या है? इन एकार्थी से प्रतीत होने वाले शब्द को प्रयोग-कर्त्ता एक ही मान लेता है, जबकि उनका अर्थ एक दूसरे से पूर्णत: भिन्न होता है। अर्थ में सूक्ष्म अंतर होने के कारण इन्हें समरूपी भिन्नार्थ शब्द अथवा एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द भी कहते हैं। इस विषय में अध्ययन करना आवश्यक है, जैसे-

क. 1. मित्र- हम उसे कहेंगे जिससे हमारा अपनापन हो।
2. सखा- दो शरीर, एक प्राण।
3. सुहृद- उपकार का बदला न चाहने वाला।

ख. 1. प्रार्थना- श्रद्धेय अथवा आदरणीय व्यक्तियों से की जाती है।
2. अनुरोध- बराबर वाले अथवा साधारण व्यक्तियों से किया जाता है।
3. निवेदन- दूसरों के सामने नम्रता से विचार रखना।

ग. 1. अहंकार- किसी को कुछ समझना ही नहीं।

2. दर्प- किसी भी नियम को नहीं मानना (घमण्ड)
3. अभिमान- प्रतिष्ठा में अपने को बड़ा तथा दूसरे को छोटा समझना।

रोचक तथ्य-

1857 की क्रांति को अंग्रजों ने विद्रोह कहा। आज तक हमारे इतिहासकार इसमें भेद नहीं कर पा रहे हैं, और 1857 को विद्रोह ही कहते हैं। एक छात्र ने इन दोनों शब्दों में से कौन सा शब्द आज हमें प्रयोग में लाना होगा, इसे स्पष्ट करने के लिए मुझसे अनुरोध किया। उसने और भी इस प्रकार के शब्दों को मेरे सामने रखा।

मैंने कहा- ऐसे अनेक शब्द हैं, जो पर्याय प्रतीत होते हैं, परंतु वास्तव में उनके अर्थ में थोड़ा अंतर होता है। इन्हें एकार्थक कहना उचित नहीं, जैसे- हमने अभी मित्र, प्रार्थना, अहंकार के विषय में जाना। अत: ऐसे शब्दों की जानकारी प्राप्त करें। एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द—

1.	**अधर्म**	-	(धर्म के प्रतिकूल कार्य) रावण ने सदा **अधर्म** का कार्य किया।
	अन्याय	-	(न्याय के विरुद्ध) निर्बलों के साथ **अन्याय** करना बहुत बड़ा पाप है।
2.	**अभिनंदन**	-	(किसी सम्मानित व्यक्ति का विधिपूर्वक सम्मान करना) एक बड़े समारोह में विश्व सुंदरी का **अभिनंदन** किया गया।
	स्वागत	-	(किसी के आगमन पर स्वागत करना) दादा जी ने सारे बारातियों का **स्वागत** किया।
3.	**अनुमोदन**	-	(किसी कथन या कार्यवाही पर सहमत होना) प्रधानाचार्या के प्रस्ताव का सभी अध्यापिकाओं ने **अनुमोदन** किया।
	स्वीकृति	-	(किसी प्रस्ताव या बात को स्वीकार कर लेना) पिता जी ने सोमेश को आगरा घूमने जाने की **स्वीकृत** प्रदान कर दी।
4.	**अनुकूल**	-	(अनुसार) सर्दियों का मौसम गेहूँ की फसल के **अनुकूल** होता है।
	अनुरूप	-	(मिलता-जुलता) राम का आचरण उनकी शालीनता के **अनुरूप** था।
5.	**अनुभव**	-	(प्रत्यक्ष ज्ञान, देखकर-सुनकर या प्रयोग-परीक्षा से प्राप्त ज्ञान) निशा को दस वर्ष के अध्यापन का **अनुभव** है।
	अनुभूति	-	(चिंतन या संवेदन से प्राप्त ज्ञान) ईश्वर **अनुभूति** का विषय है।
6.	**अनुसंधान**	-	(पहले से मौजूद किसी वस्तु के बारे में नए तथ्यों की खोज करना) विश्व के अनेक वैज्ञानिक बृहस्पति ग्रह के बारे में **अनुसंधान** कर रहे हैं।
	आविष्कार	-	(किसी नई वस्तु का निर्माण) थॉमस एडीसन ने बल्व का **आविष्कार** किया था।
	अन्वेषण	-	(पहले से विद्यमान वस्तु की खोज) मैडम क्यूरी ने यूरेनियम का **अन्वेषण** किया।

7.	**आह्लाद**	–	(हार्दिक प्रसन्नता) राम के लौटने पर अयोध्या आह्लाद से भर उठी।
	उल्लास	–	(उमंग) होली हर्ष और **उल्लास** का पर्व है।
8.	**अध्ययन**	–	(पढ़ना) रमेश आजकल महाभारत का **अध्ययन** कर रहा है।
	अनुशीलन	–	(किसी विषय को पढ़ने के बाद उस पर सोच-विचार करना) मुनिजन वेदों और उपनिषदों का **अनुशीलन** करते थे।
9.	**आगामी**	–	(आने वाला) मंत्री जी पार्टी के सदस्यों के साथ **आगामी** चुनावों की योजना बना रहे हैं।
	भावी	–	(होने वाला) आज के बच्चे देश के **भावी** नागरिक हैं।
10.	**आशंका**	–	(अनिष्ट की संभावना) मौसम विभाग ने कल तूफान की **आशंका** व्यक्त की है।
	भय	–	(किसी भी चीज से डर) डाकुओं के **भय** से गाँव वाले सारी रात जागते रहे।
11.	**अहंकार**	–	(अपनी सत्ता का बोध, झूठा घमंड) रावण को अपनी शक्ति का बहुत **अहंकार** था।
	दर्प	–	(चित्त का वह भाव जिसके कारण मनुष्य दूसरों की अवज्ञा करे) दुर्योधन का **दर्प** ही उसकी पराजय का कारण बना।
12.	**उद्यम**	–	(परिश्रम) **उद्यम** से ही मनुष्य के कार्य सिद्ध होते हैं।
	उद्योग	–	(कोई व्यापारिक संस्थान) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में अनेक प्रकार के **उद्योग** विकसित हुए।
13.	**विवेक**	–	(भले-बुरे की पहचान) स्वामी दयानंद **विवेकशील** व्यक्ति थे।
	बुद्धि	–	(जानने, समझने और विचार करने की शक्ति) मानव ने अपनी **बुद्धि** के बल पर जीवन के हर क्षेत्र में प्रगति की है।
14.	**वात्सल्य**	–	(बच्चे के प्रति माँ का प्रेम) यशोदा **वात्सल्य** की साक्षात् प्रतिमा थी।
	प्रणय	–	(प्रेम, प्रीति, नायक और नायिका या पति-पत्नी के बीच का प्रेम) राधा और कृष्ण का **प्रणय** विश्व भर में प्रसिद्ध है।
15.	**उषाकाल**	–	(सूर्योदय से पूर्व का समय) **उषाकाल** की लालिमा देख पंछी चहचहाने लगते हैं।
	प्रातःकाल	–	(सुबह, सवेरा) सुदेश प्रतिदिन **प्रातःकाल** व्यायाम करती है।
16.	**उपकरण**	–	(साधन, औजार, विज्ञान शाला में काम आने वाले यंत्र) नीरज के पास स्कूटर ठीक करने के बहुत-से **उपकरण** हैं।
	उपादान	–	(वह द्रव्य जिससे कोई वस्तु बने) सीमेंट भवन-निर्माण में प्रयोग किया जाने वाला महत्वपूर्ण **उपादान** है।

17. **कमी** – (अल्पता, न्यूनता, कम होना) मेरे पास अभी पैसे की **कमी** है।

ह्रास – (गिरावट) आधुनिक काल में नैतिक मूल्यों का **ह्रास** हो गया है।

18. **कष्ट** – (शारीरिक व मानसिक दु:ख, किसी कार्य से होने वाली पीड़ा) मनोज के फेल होने पर उसके माता-पिता को बहुत **कष्ट** हुआ।

व्यथा – (मानसिक परेशानी) नेहा की मानसिक **व्यथा** कोई नहीं जानता है।

19. **कृपा** – (छोटों की सहायता की इच्छा) गुरु जी **कृपा** करके राजीव को एक घंटा पढ़ाते हैं।

दया – (किसी लाचार के कष्ट को दूर करने की इच्छा) हमें गरीबों पर **दया** कर उनके दु:खों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

20. **कांति** – (चमक, आभा) मीना के आभूषणों की **कांति** अब कम हो गई है।

किरण – (प्रकाश की एक रेखा) मेरे घर की खिड़की से सूर्य की **किरणें** प्रवेश करती हैं।

प्रकाश – (रोशनी, उजाला) बल्ब जलाते ही अँधेरे घर में **प्रकाश** हो जाता है।

21. **कृत** – (किया हुआ) तुलसीदास **कृत** रामायण पढ़ने योग्य है।

क्रीत – (खरीदा हुआ) **क्रीत** दासों का जीवन नरक के जैसा होता था।

22. **कुल** – (वंश) राम रघु **कुल** में जन्मे थे।

कूल – (किनारा) नदी के दोनों **कूल** कभी नहीं मिलते।

23. **ग्लानि** – (अपने कुकृत्यों पर पछतावा) राजीव को अपने कुकर्मों पर बहुत **ग्लानि** होती है।

संकोच – (किसी कार्य को करने में हिचक) राधिका बहुत **संकोची** स्वभाव की लड़की है।

लज्जा – (शर्म, स्वभाव या अपने किसी अनुचित आचरण के कारण मन की संकोचपूर्ण अवस्था) **लज्जा** नारी का आभूषण है।

24. **गुच्छा** – (पुष्पों, अंगूरों या चाभी आदि का गुच्छा) आज मैं अंगूरों का एक **गुच्छा** लाया हूँ।

गड्डी – (नोटों या कागजों की गड्डी) साकेत आज बैंक से दस-दस के नोटों की एक **गड्डी** लाया है।

25. **चारु** – (पवित्र और सुंदर वस्तु) पूर्णिमा के दिन **चारु** चंद्र की शोभा देखते ही बनती है।

सुंदर – (आकर्षक वस्तु) नगमा बहुत **सुंदर** लड़की है।

मनोहर – (मन को लुभाने वाली वस्तु) हिमालय का प्राकृतिक सौंदर्य अत्यंत **मनोहर** है।

26. **चेष्टा** – (किसी कार्य को पूर्ण करने का प्रयत्न, गति, उरकत) चेतना हर

कार्य पूर्ण **चेष्टा** से करती है।

यत्न – (उपाय, उद्योग, सार-संभाल) मैंने जीविकोपार्जन के अनेक **यत्न** किए हैं।

प्रयास – (कोशिश, प्रयत्न) मोहन ने प्रतियोगिता जीतने का भरसक **प्रयास** किया।

27. **चित्त** – (स्मरण रखने और भुला देने की शक्ति) माँ की बातें मेरे **चित्त** से उतर गई।

मन – (सुख-दु:ख की अनुभूति रखने वाला) नीरजा का **मन** पिता की मृत्यु के बाद से बहुत दु:खी रहता है।

28. **ठंडा** – (ठंडक प्रदान करने वाला पदार्थ) व्यास नदी का पानी बहुत **ठंडा** है।

शीतल – (सुखदायक ठंडक) चंद्रमा की किरणें **शीतल** होती हैं।

29. **तप्त** – (तपा हुआ) **तप्त** धरती पर पैर रखते ही बालक के पैर में छाले पड़ गए।

तृप्त – (संतुष्ट) अच्छा भोजन खाकर मेरा मन **तृप्त** हो गया।

30. **तट** – (नदी या सरोवर का किनारा) नदी के **तट** पर मछुआरों की नावें खड़ी हैं।

पुलिन – (नदी का रेतीला किनारा) गंगा के **पुलिन** पर योगी ध्यान लगाकर बैठा है।

31. **दंभ** – (अभिमान, घमंड) दुर्योधन के **दंभ** के कारण महाभारत का युद्ध हुआ।

मान – (आदर, प्रतिष्ठा, आत्म-सम्मान) महात्मा गांधी का **मान** विदेशों में भी है।

32. **दुराचार** – (बुरा या अशोभनीय आचरण) कंस **दुराचारी** राजा था।

अत्याचार – (जुल्म) अँग्रेजों ने भारतीयों पर बहुत **अत्याचार** किए।

33. **द्वेष** – (दूसरों के प्रति घृणा और शत्रुता का भाव) दुर्योधन पांडवों के प्रति **द्वेष** भाव रखता था।

स्पर्धा – (दूसरों को बढ़ता देखकर स्वयं आगे बढ़ने की इच्छा) गीता दौड़ **स्पर्धा** में सीता से आगे निकल गई।

ईर्ष्या – (जलन) सुंदर होने के कारण अपूर्वा की सहेलियाँ उससे **ईर्ष्या** करती हैं।

34. **निरीक्षक** – (निगरानी करने वाला) **निरीक्षक** महोदय ने आज पूरी कंपनी का निरीक्षण किया।

परीक्षक – (परीक्षा लेने वाला) एम.ए. की मौखिक परीक्षा लेने के लिए सागर

विश्वविद्यालय से **परीक्षक** आए थे।

35. **आमंत्रण** – (किसी अवसर पर सम्मिलित होने की प्रार्थना) प्रधानाचार्य ने मंत्री महोदय को विद्यालय के वार्षिक उत्सव में सम्मिलित होने का **आमंत्रण** दिया।

निमंत्रण – (भोजनादि पर बुलाना) आज पिता जी ने अपने कुछ मित्रों को भोजन पर आने का **निमंत्रण** दिया है।

36. **पारंगत** – (पूर्ण पांडित्य) स्वामी दयानंद सरस्वती वेदों में **पारंगत** थे।

विज्ञता – (विषय का अच्छा ज्ञान) विशेषज्ञता को **विज्ञता** कहा जाता है।

37. **प्राक्कलन** – (गणना के द्वारा किया गया निर्णय) **प्राक्कलन** के आधार पर पाया गया कि भारत में मानसिक विकलांगता बढ़ रही है।

अनुमान – (बौद्धिक तर्क द्वारा किया गया निश्चय) समाचारों में मौसम का पूर्व **अनुमान** भी बताया जाता है।

38. **भ्रमण** – (घूमना, सैर करना) मेरे माता-पिता प्रातःकाल **भ्रमण** के लिए जाते हैं।

पर्यटन – (किसी स्थान विशेष पर घूमने जाना) मनाली एक अत्यंत सुंदर **पर्यटन** स्थल है।

39. **विस्मय** – (असमंजस में पड़ जाना) धीरज की असमय वापसी ने सबको **विस्मय** में डाल दिया।

चमत्कार – (आश्चर्यजनक चीजें) प्रत्येक काल में **चमत्कार** को नमस्कार रहा है।

40. **शिष्ट** – (सभ्य, व्यवहार-पटु) राजन एक **शिष्ट** बालक है।

विनीत – (विनम्र, विनयी) नरेश ने बड़े ही **विनीत** स्वर में पिताजी से पैसे माँगे।

4.2 अनेकार्थी शब्द/भिन्नार्थी शब्द

एक कक्षा को हिंदी पढ़ाते समय मैंने रहीम का एक प्रसिद्ध दोहा श्याम पट्ट पर लिखा, और छात्रों से उसे ध्यान से पढ़ने को कहा-

'रहिमन <u>पानी</u> राखिए, बिन पानी सब सून।
<u>पानी</u> गए न ऊबरे, मोती, मानस चून।।'

छात्रों ने इसे पढ़ा। तब मैंने उनसे पूछा- इस दोहे में कौन सा शब्द अनेकार्थी है। छात्रों ने बताया-पानी। छात्रों का उत्तर तो सही था किंतु यह अनेकार्थी कैसे हुआ, यह वे नहीं बता सके। एक छात्र संयोग से बोला-यहाँ 'पानी' शब्द तीन अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। फिर मैंने छात्रों को बताया कि-

ऐसे शब्दों के सही अर्थ को जानने के लिए शब्दकोश की सहायता ली जाना चाहिए। शब्दकोश में प्रत्येक शब्द के लिए आपको एक से अधिक अर्थ मिलेंगे, उन्हें लिखकर रखने पर

ही हम उसका विविध अर्थों में प्रयोग समझ सकते हैं। अत: जब एक शब्द अनेक अर्थों का वाचक बन जाता है तो उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

मैंने पुन: छात्रों से पूछा-रहीम के जिस दोहे में 'पानी' शब्द के तीन अर्थ बताए गए हैं, क्या उसके अतिरिक्त भी पानी का अन्य अर्थों में प्रयोग कर सकते हैं। सभी छात्रों ने कहा-नहीं। क्यों? मैंने पूछा-छात्रों ने उत्तर दिया-हमें इतना ही बताया गया है।

मैंने उन्हें बताया कि 'शब्दकोश' के आधार पर आपको 'पानी' शब्द के अनेक अर्थ मिलेंगे, जिनका प्रयोग वाक्यों में करके ही सही अर्थ जान सकेंगे, यथा-

1. कुएँ का पानी खारा है। (जल)
2. असाम का पानी अच्छा नहीं है। (जलवायु)
3. यह पेड़ पाँच पानी का है। (वर्ष)
4. पानी आया, छतरी तान लो। (वर्षा)
5. सबके सामने पानी उतार दिया। (इज्जत)
6. वह बेचारा पानी-पानी हो गया। (लज्जित)
7. तलवार का पानी उतर गया है। (धार)
8. वह पानी की तरह रुपये बहा रहा है। (व्यर्थ)
9. मिठाई देखकर मुँह में पानी भर आया। (लोभ होना)
10. पंडित ने पानी पढ़कर फूँका, तब वह ठीक हुआ। (मंत्र पढ़ना)

एक शब्द के अनेकार्थी होने के इस प्रकार के अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि शब्दों के अर्थबोध के लिए संदर्भ का विशेष महत्व है।

रोचक तथ्य-

1. लगभग प्रत्येक भाषा में प्राय: एक शब्द से दो या दो से अधिक अर्थ निकलते हैं, और यह अर्थ उस शब्द के प्रयोग के आधार पर निश्चित किए जाते हैं। अत: जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थक शब्द कहते हैं।
2. सारंग ने सारंग गह्यो, सारंग बोल्यपो आय।
   जो सारंग सारंग कहे, सारंग मुख ते जाय।
   यहाँ सारंग शब्द का क्रमश: अर्थ है-मोर, सर्प, बादल, मोर, बादल, सर्प। अत: सारंग शब्द अनेकार्थी है।

   नीचे कुछ अनेकार्थी शब्द उदाहरण सहित दिए जा रहे हैं, जिनको जाने-

1. अर्थ हेतु, धन, तात्पर्य।
2. आम आम का फल, साधारण।
3. कंचन सोना, धतूरा, एक जाति।
4. कल आने वाला या बीता कल दिन, चैन, यन्त्र,सुन्दर
5. काम कार्य, रति संबंधी भाव।

6.	कुल	वंश, परिवार, समस्त।
7.	कुशल	चतुर, हालचाल।
8.	गज	हाथी, आठ की संख्या, लम्बाई की एक माप।
9.	घट	घड़ा, हृदय, किनारा, शरीर, कम।
10.	चीर	वस्त्र, फाड़ना
11.	छन्द	पद्य, रचना, रुचि, विष, धोखा, बन्धन, कलाई का एक गहना।
12.	जुआ	बैल के कन्धे पर रखा जाने वाला, खेल।
13.	झिल्ली	पतली तह, झींगुर, सूर्यप्रकाश, दीए की बत्ती, एक बाजा।
14.	ठाकुर	स्वामी, क्षत्रियों की उपाधि, परमेश्वर, नायक
15.	तन्त्र	ढाँचा, वस्त्र, सिद्धान्त, नियम, राज्य, वीणा का तार, जुलाहा।
16.	धुन	लगन, संगीत की धुन।
17.	पान	पान, पीना
18.	मन	दिन, चालीस सेर।
19.	लाल	रंग, पुत्र, रत्न।
20.	खून	रक्त, कत्ल।
21.	जलज	कमल, मोती, शंख, मछली, चन्द्रमा।
22.	तीर	बाण, नदी का किनारा।
23.	तात	मित्र, भाई, पिता, बड़ा, पूज्य।
24.	गुण	सत, शील, रस्सी, स्वभाव
25.	फल	पेड़–पौधों का एक भाग, परिणाम, मेवा, चार पदार्थ, भाले की नोक।
26.	बल	शक्ति, बलराम, सेना।
27.	भाग	हिस्सा, भाग्य, अंकगणित की एक गणना–विधि।
28.	योग	जोड़, सूत्र, उपाय, शुभ समय, आसन, प्राणायाम।
29.	रस	सार, स्वाद, जल, नवरस।
30.	वर	दूल्हा, वरदान, श्रेष्ठ।
31.	शाल	कम्बल, एक प्रकार का वृक्ष।
32.	सर	तालाब, बाण, चिता।
33.	सुर	ध्वनि, सूर्य, देवता, पण्डित, मुनि।
34.	सुधा	अमृत, दूध, जल, गंगा, पृथ्वी।
35.	सुवर्ण	सोना, सुन्दर, सुन्दर रंग, सुन्दर अक्षर।
36.	स्नेह	प्रेम, तेल, चिकना पदार्थ।
37.	हार	पराजय, गले का आभूषण
38.	हाल	समाचार, हिलना।
39.	हिम	बर्फ, ठण्डा, चन्द्रमा, चन्दन, मक्खन, मोती।

40. हेम सोना, जल, पाला, धतूरा, केसर का फूल।

4.3 पर्यायवाची शब्द/समानार्थी शब्द

मनीषा विद्यालय से लौटकर चिंतित थी। उसकी शिक्षिका ने पर्यायवाची शब्द रचना के विषय में कक्षा में जो जानकारी दी, उससे वह संतुष्ट नहीं थी। कहीं परिभाषाओं से भी कोई विषय स्पष्ट होता है भला! उसने मुझसे आकर कहा-'कृपया, आप मुझे पर्यायवाची शब्दों के विषय में ऐसा कुछ समझाएँ कि मैं जीवनभर उसे याद रख सकूँ।'

मैंने एक युक्ति निकाली, और मनीषा से पूछा-'तुम्हें हनुमान-चालीसा पढ़ते मैंने देखा है। तुम इन पंक्तियों को प्रतिदिन दोहराती हो'

जै हनुमान ग्यान-गुन सागर। जै कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनि पुत्र पवन-सुत नामा।।
महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।

ये रेखांकित सभी शब्द पर्यायवाची हैं। पर्याय का अर्थ होता है: विकल्प अर्थात् बदले में आने वाला शब्द। एक ही अर्थ में निश्चित शब्द के स्थान पर वैसा ही अर्थ देने वाला दूसरा शब्द आए, तो वे दोनों शब्द एक दूसरे के पर्यायवाची कहे जाते हैं। इन्हें समानार्थी शब्द भी कहा जा सकता है। हनुमान जी के लिए कपीस, रामदूत, अंजनि पुत्र, महावीर, बजरंगी शब्द पर्यायवाची हैं क्योंकि ये सभी शब्द अर्थ की दृष्टि से हनुमान जी के नाम हैं। अत: अर्थ की दृष्टि से समान प्रतीत होने वाले शब्द पर्यावाची होते हैं।

किंतु पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग बहुत सोच-समझकर करना चाहिए क्योंकि पर्याय या समानार्थी शब्द एक अर्थ के सूचक होकर भी पूरी तरह समानार्थी नहीं होते। कुछ ही ऐसे शब्द होते हैं, जो पूर्ण समानार्थक होते हैं, अन्यथा पर्याय शब्दों में भी अर्थगत भेद होता है। इस दृष्टि से पर्यायवाची शब्दों के दो भेद हो सकते हैं-एक पूर्ण पर्यायवाची, और दूसरा अपूर्ण पर्यायवाची।

1. पूर्ण पर्यायवाची- अर्थ, की दृष्टि से जो शब्द एक दूसरे के स्थान पर बिना किसी व्याघात के आ सकते हैं, वे पूर्ण पर्यायवाची कहे जाते हैं, जैसे-

क. भूप, भूपति, नृप, नृपति
ख. धरा, धरती, धरणी
ग. प्रकर, पत्थर, पाषाण, पाहन
घ. क्रोध, कोप, रोष

2. अपूर्ण पर्यायवाची- अर्थ, स्रोत, भाव तथा प्रयोग वितरण की दृष्टि से अंतर की प्रतीति हो तो समानार्थी होने पर उन्हें अपूर्ण पर्यायवाची कहा जाता है। अत: ऐसे शब्दों का प्रयोग करते समय जरा भी असावधानी अर्थ का अनर्थ पैदा करती है, जैसे- जल शब्द का पर्यायवाची पानी है, पर दोनों के अर्थ में भिन्नता है। किसी भी स्थान पर बहने वाले पानी को हम जल नहीं कह सकते क्योंकि गंदे नाले में बहने वाला पानी भी पानी है, और नदी में बहने वाला स्वच्छ पानी भी पानी है। पर गंदे नाले में बहने वाले पानी को जल नहीं कह सकते। हाँ! नदी में बहने वाले स्वच्छ पानी को हम जल कह सकते हैं।

एक और उदाहरण-

आँख शब्द के पर्यायवाची हैं–लोचन, नयन, नेत्र। हम हर आँख को आँख कहते हैं, पर हर आँख नयन या लोचन नहीं। नयन या लोचन स्त्रीवाचक शब्द है, जिसका प्रयोग स्त्रियों की सुंदर आँखों के लिए किया जाता है। हाँ, कभी–कभी देवी–देवताओं की आँखों को भी नयन या नेत्र कहा जाता है किंतु पुरुष या पशु–पक्षी की आँखों को हम नयन, लोचन या नेत्र नहीं कह सकते।

अत: पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग करते समय हमे विशेष सावधानी बरतना होगी। इनका प्रयोग करते समय उनके अर्थ भली प्रकार जान लेना चाहिए।

दो और उदाहरण यहाँ दिए जा रहे हैं जिससे पर्यायवाची शब्दों के विषय में और समझ विकसित हो सकती है–

1. राम – दशरथ नदंन, कौशल सुत, सीता–पति,
2. रावण – लंकेश, दशानन, रामारि

- प्रथम उदाहरण में 'दशरथ नंदन' राम कहने से राम दशरथ पुत्र हैं, यह ज्ञात होता है, 'कौशल–सुत' कहने से माता कौशल्या के पुत्र होने का भान होता है, तथा 'सीता–पति' कहने से सीता राम की पत्नी है, यह पता चलता है।
- द्वितीय उदाहरण में रावण के लिए 'लंकेश' कहने से लंका के राजा तथा लंका के ऐश्वर्य का बोध होता है। 'दशानन' कहने से उसके दस मुख अर्थात अलौकिक शक्ति सम्पन्न होने का भान होता है, तथा 'रामारि' कहने से राम से शत्रुता रखने का ज्ञान होता है।

इस प्रकार पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करते समय उनके अंतर को जानना भी आवश्यक है। यहाँ कुछ प्रमुख पर्यायवाची शब्द दिए जा रहे हैं, जिन्हें ध्यान से पढ़िए, और अपने शब्द ज्ञान में वृद्धि कीजिए, किंतु इन शब्दों का अध्ययन करने से पूर्व निम्नांकित बातों पर अवश्य ध्यान दें–

रोचक तथ्य–

1. पर्यायवाची एवं समानार्थी शब्दों का अर्थ समान होते हुए भी उनके अर्थ में सूक्ष्म भेद पाया जाता है। उदाहरण के लिए 'अनुरोध' और 'प्रार्थना' पर्यायवाची शब्द हैं, लेकिन दोनों के अर्थ में सूक्ष्म भेद है। 'अनुरोध' का अर्थ है–आग्रहपूर्वक विनती करना जबकि 'प्रार्थना' का अर्थ है–विनयपूर्वक निवेदन करना।
2. जहाँ तक संभव हो विदेशी भाषा के हिंदी पर्याय अवश्य बताए जाएँ, जैसे–स्कूल = विद्यालय, डॉक्टर = चिकित्सक, गरीब = निर्धन।

हिंदी में व्यवहृत होने वाले कुछ पर्यायवाची शब्द—

अमृत– अमिय, सुधा, मधु, सोम, अमी, पीयूष, जीवनोदक, सुरभोग

अग्नि– आग, बह्नि, पावक, अनल, धूमकेतु, कृशानु, दव, वाहन, ज्वाला, वैश्वानर, हुताशन

अनुपम–अनोखा, अपूर्व, अद्‌भुत,अनूठा, अतुल, अद्वितीय, अनन्य

अश्व– बाजि, हय, घोटक, सैन्धव, तुरंग, रविपुत्र, घोड़ा

अभिजात– उच्च, कुलीन, पूज्य, श्रेष्ठ

अभिप्राय- प्रयोजन, आशय, उद्देश्य, मन्तव्य, तात्पर्य, मंशा
आँख- दृग, लोचन, नेत्र, दृष्टि, नयन, अक्षि, चक्षु, अम्बक, विलोचन
आम- रसाल, सहकार, अमृतफल, पिकवल्लभ, आम्र, पियम्बु, पिकप्रिय, पिकबन्धु
आकाश- अम्बर, व्योम, गगन, नभ, अनन्त, शून्य, अंतरिक्ष
आपत्ति- आपदा, विपदा, मुसीबत, विपत्ति
आनन्द- प्रसन्नता, मोद, प्रमोद, हर्ष, उल्लास, आह्लाद
आदित्य- दिनकर, दिवाकर, सूर्य, प्रभाकर, भाष्कर, रवि, भानु
आडम्बर- प्रपंच, ढकोसला, दिखावा, ढोंग
इच्छा- आकांक्षा, कामा, ईप्सा, अभिलाषा
इन्द्र- सुरपति, शचीपति, मघवा, शक्र, पुरन्दर, देवराज, अमरपत, सहस्राक्ष, वज्रधर
ईश्वर- परमेश्वर, ईश, जगदीश, जगन्नाथ, प्रभु, त्रिलोकीनाथ
उत्सुक- व्यग्र, आतुर, उत्कंठित, रुझान, रुचि
उपकार- हितसाधना, भलाई, नेकी, कल्याण, परोपकार, अच्छाई, हित
ऊँचा- ऊर्ध्व, उत्तुंग, बुलंद, शीर्षस्थ, उच्च, गगनचुम्बी, उन्नत
ऊर्जा- शक्ति, ओज, स्फूर्ति
एकता- ऐक्य, एकरूपता, एकसूत्रता, अभिन्नता, अभेद
ऐच्छिक- स्वेच्छाकृत, वैकल्पिक, सविकल्प, मनचाहा
ऐंठन- मरोड़, बल, तनाव, अकड़न, उमेठन
ओंठ- अधर, ओष्ठ, होंठ, रदनच्द, दंतच्छद
ओझल-अदृश्य, लुप्त, तिरोहित, अन्तर्ध्यान
औरत- स्त्री, जोरू, घरनी, घरवाली
औषधि-दवा, भेषज, दवाई, औषध
कमल- जलज, पंकज, अम्बुज, सरोज, नलिन, अरविन्द, सरसिज, राजीव, अम्भोज, अम्बुज, पुण्डरीक
कपड़ा- वस्त्र, पट, चीर, अम्बर, वसन, परिधान
कारागार- बन्दीगृह, जेल, कारावास, कैदखाना
किरण- अंशु, रश्मि, कर, मरीचि
कामदेव- मन्मथ, मदन, मनोज, अनंग, रतिपति, पंचशर, प्रद्युम्न, कुसुमेश, मनसिज, मकरध्वज, कन्दर्प, मीनकेतु
खल- शठ, धूर्त, कुटिल, नीच, दुर्जन, अधम
खेती- कृषि, किसानी, कृषिकार्य, काश्तकारी, कृषिकर्म
खबर- संदेश, सूचना, समाचार, जानकारी, हालचाल, वृतान्त
खग- विहग, पक्षी, द्विज, चिड़िया, शकुन्त, पखेरू
खामोश- मौन, चुप, शांत, नीरव, नि:शब्द

गणेश– गजानन, गणपति, लम्बोदर, विनायक, गजबदन, हेरम्ब, विघ्नविनाशक, भवानीनन्दन, गिरिजानन्दन, गौरसुत, लम्बतुण्ड, मूषकवाहन

गंगा– मन्दाकिनी, जाह्नवी, सुरसरि, देवनदी, भागीरथी, देवापगा, विष्णुपदी, त्रिपथगा

गृह– घर, सदन, भवन, मन्दिर, धाम, निकेतन, आलय, निलय

गर्दभ– वैशाखनन्दन, रासभ, खर, धूसर, गधा, गदहा, चक्रीवान

गाँव– मौजा, पुरवा, बस्ती, देहात, ग्राम

घट– घड़ा, कलश, कुंभ, गगरा

घिनौना– विगर्हणीय, वीभत्स, घृण्य, घृणास्पद

घुमक्कड़– रमता, सैलानी, पर्यटक, विचरणशील, खानाबदोस

घर– आलय, आवास, गेह, गृह, निकेतन, निलय, भवन, शाला, सदन

चन्द्रमा– सुधाकर, शशांक, राकापति, रजनीपति, निशानाथ, सुधांशु, निशिपति, शशि, विधु, इन्दु, मृगांक, कलानिधि

चक्षु– अक्षि, दृग, लोचन, आँख, नयन

चाटुकारी– खुशामद, मिथ्या, प्रशंसा, चापलूसी, चमचागिरी

चाँदी– रजत, रौप्य, रूपा, रूपक, चन्द्रहास

छाया– छाँव, परछाई, बिम्ब, साया, छाँह

छूट– ढील, रियायत, कटौती, सुविधा

छाती– वक्षस्थल, वक्ष, सीना, उर

जल– अम्बु, वारि, नीर, उदक, तोय, सलिल

जानकी– सीता, वैदेही, जनकसुत्ता, जनकतनया, जनकात्मजा,

जंगल– विपिन, कानन, वन, अरण्य, अटवी, कान्तार

जगत– विश्व, संसार, भव, जग, लोक, दुनिया, भुवन, मृत्युलोक

जमुना– सूर्यतनया, सूर्यसुता, कालिन्दी, यमुना, रवितनया, रविनंदिनी

झण्डा– ध्वजा, पताका, केतु, निशान

झरना– प्रपात, निर्झर, स्रोत, उत्स, जलप्रताप, प्रस्रवण

झोपड़ी– कुटी, कुटिया, पर्णकुटी, कुंज, मड़हा, छानी

झुण्ड– समूह, मंडली, दल, पुंज, जत्था

झूठ– असत्य, अनृत, मिथ्या, असत्य

टेढ़ा– कुटिल, वक्र, तिरछा

टुकड़ा– हिस्सा, भाग, अवयव, खण्ड, अंश

टेक– आश्रय, सहारा, भरोसा, अवलम्ब

टपकना– चूना, रिसना, झरना, स्रवित होना

टीका– भाष्य, व्याख्या, वृत्ति, विवृत्ति, भाषान्तरण

ठौर– स्थान, जगह, स्थल, ठिकाना

ठग– वंचक, प्रवंचक, जालसाज, प्रतारक, धूर्त, छली
ठिठोली– उपहास, मजाक, हँसी, व्यंग्य, दिल्लगी
डर– भय, खौफ, त्रास, आतंक, भीति
डाकू– लुटेरा, दस्यु, डकैत, साहसिक, बटमार
डायरी– दैनिकी, रोजनामचा, दैनन्दिनी
डोरी– रस्सी, रज्जु, सुतली, डोर
ढंग– रीति, तरीका, विधि, उपाय, युक्ति
ढाढस– आश्वासन, तसल्ली, धीरज, दिलासा, सान्त्वना
ढोंगी– पाखंडी, बगुलाभगत, कपटी, छली
ढीठ– धृष्ट, प्रगल्भ, अविनीत
ढेर– अम्बार, राशि, पुंज, जमाव
तालाब– सर, जलाशय, तड़ाग, पुष्कर, ह्रदि, सरोवर, कासार, पोखर, ताल
तरुणी– युवती, मनोज्ञा, सुन्दरी, प्रमदा, रमणी
तम– अन्धकार, तिमिर, ध्वान्त, अंधेरा, तमिस्रा
तलवार– कृपाण, खड़्ग, चन्द्रहास, असि, करवाल, शमशीर
थल– पृथ्वी, धरती, जमीन, धरा, भूतल, भूमि
थकान– थकावट, थकन, श्रांति, क्लांति
थोड़ा– किंचित, अल्प, रञ्चमात्र, न्यून, जरा, कम
देवता– आदित्य, अमर्त्य, गीर्वाण, देव, अमर, सुर, बिवुध, निर्जर
दिन– दिवा, दिवस, वासर, अहन, वार
दु:ख– पीड़ा, कष्ट, क्लेश, यातना, व्यथा, उद्वेग, विषाद, वेदना
दामिनी– चपला, तड़ित, प्रभा, विद्युत, बिजली
दूध– पय, क्षीर, दुग्ध, पीयूष, अमृत
द्वार– दरवाजा, कपाट, पल्ला, किवाड़
द्विज– ब्राह्मण, पक्षी, दाँत, चन्द्र
धनुष– सरासन, कोदण्ड, चाप, धनु, कमान, पिनाक
धरोहर– अमानत, जमा, थाती
धन– द्रव्य, दौलत, पैसा, माल, सम्पदा, वित्त
धंधा– व्यवसाय, व्यापार, रोजगार, कारोबार
धनञ्जय– पार्थ, कौन्तेय, गुडाकेश, अर्जुन, गांडीवधर
नदी– सरिता, निर्झरिणी, तरंगिनी, पयस्विनी, तटिनी, अपगा
नारद– देवर्षि, ब्रह्मपुत्र, देवमुनि
नियति– प्रारब्ध, भवितव्यता, भाग्य, भावी, होनी
निस्तब्धता– चुप, शान्ति, खामोशी, सन्नाटा, नीरवता

पर्वत- भूधर, गिरि, महीधर, शैल, नगर, मेरु, तुंग, अचल
पवन- वायु, समीर, अनिल, हवा, मारुत, प्रभंजन, वात, बयार
पक्षी- खग, विहग, पतंग, अंडज, नभचर, परिन्दा
परिवर्तन- फेरबदल, बदलाव, हेरफेर, तब्दीली, अदल-बदल
पृथ्वी- अचला, धरा, धरित्री, धरणी, वसुन्धरा, वसुधा, मेदिनी, भूमि, जगती, वसुमति, भू, मही, अवनि, धात्री, रत्नगर्भा
प्रख्यात- प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर, यशस्वी, विश्रुत, नामी
प्रिय- प्यारा, वत्सल, वल्लभ, दुलारा
प्रभात- ऊषा, अरुणोदय, प्रातः
प्रसन्नता- हर्ष, खुशी, आह्लाद, आनन्द
फूल- पुष्प, कुसुम, पुहुप, सुमन, प्रसून
फणीन्द्र- सर्पराज, नागराज, वासुकी, शेषनाग, उरगाधिपति
फरेब- छल, प्रताड़ना, धोखा, कपट, प्रवंचना
फौरन- जल्दी, तत्क्षण, तत्काल, तुरन्त
ब्रह्मा- स्वयंभू, चतुरानन, पितामह, विधि, विधाता, विरंचि, सृष्टिकर्ता, कमलासन, धाता, अज
बचपन- बालपन, लड़कपन, बाल्यावस्था, बचपना
बादल- मेघ, जलधर, वारिद, नीरद, वारिधर, अम्बुद
बसंत- ऋतुराज, ऋतुपति, मधुमास, कुसुमाकर
भ्रमर- अलि, मधुकर, मधुप, चंचरीक, सारंग, भृंग, द्विरेफ, मिलिन्द, भौंरा
भारती- वाणी, वागीश, वागेश्वरी, शारदा, वीणावादिनी,
भारत- जम्बू द्वीप, हिन्दुस्तान, भारतखण्ड, आर्यावर्त
मछली- मीन, मत्स्य, जल-जीवन, झष, अंडभव, शफरी
माँ- अम्बा, अम्बिका, मैया, जननी, माता, धात्री, जनयित्री
मित्र- सखा, सुहृद, दोस्त, यार, सहचर
मोर- मयूर, सिखी, ध्वजी, नीलकण्ठ, शिखण्डी, कलापी
मार्ग- पथ, डगर, रास्ता, राह, सड़क
यमुना- सूर्यतनया, तरणि, तनूजा, भानुजा, कालिन्दी, सूर्यसुता
युवती- सुन्दरी, श्यामा, किशोरी, रमणी, तरुणी, नवोढ़ा
याचना- निवेदन, प्रार्थना, विनय, विनती,
यम- धर्मराज, काल, मृत्युपत, यमराज, श्राद्धदेव, दण्डधर, यमुना भ्राता, सूर्यपुत्र, शमन, जीवतेश, अतंक
राजा- भूपति, भूप, महीप, नृप, नरपति, नरेश, भूपाल, नरेन्द्र
रंक- निर्धन, अकिंचन, दरिद्र, कंगाल, धनहीन
रक्त- खून, रुधिर, शोणित, लहू, लोहित

रात्रि– राका, निशा, रजनी, रैन, यामिनी, विभावरी

लक्ष्य– ध्येय, निशाना, उद्देश्य, मंजिल

लक्ष्मण– लखन, शेषावतार, सौमित्र, शेष, अनंत, रामानुज

लाल– लोहित, रक्ताभ, अरुण, रक्तिम

लगातार– अनवरत, अविराम, निरन्तर, अजस्र

वृक्ष– द्रुम, पेड़, पादप, शाखी, तरु, विटप, गाछ

वायु– अनिल, समीर, पवन, हवा, वात, मरुत

विद्युत– चपला, बिजली, चञ्चला, तड़ित, दामिनी, क्षणप्रभा, कारका, सौदामिनी

वेश्या– गणिका, वारांगना, मंगलमुखी, सदासुहागिन,

वन– अरण्य, कानन, विपिन, जंगल, अटवी

शंकर–शंभु, भोले, त्रिपुरारि, महादेव, देवाधिदेव, कैलाशपति

शिकारी–बहेलिया, अहेरी, व्याध, आखेटक, लुब्धक

शरीर–काया, गात्र, वपु, तन, अंग, देह, बदन

शरण–रक्षा, संश्रय, आश्रय, त्राण

षड्यन्त्र– अभिसन्धि, दुरभिसन्धि, साजिश, कुचक्र

षडानन– षट्मुख, कार्तिकेय, षाष्मातुर,

षंड– हिजड़ा, नामर्द, नपुंसक

समुद्र– जलधि, रत्नाकर, अम्बुधि, नीरनिधि, सिन्धु, पयोधि, पयोनिधि, उदधि, वारीश, सागर

स्तुति– प्रार्थना, पूजा, आराधना, अर्चना

सुगन्ध– सुवास, खुशबू, महक, परिमल, इष्टगंध, सुरभि

समीप– पार्श्व, आसन्न, निकट, सन्निकट, पास

सूर्य– तरणि, आदित्य, दिवाकर, भाष्कर, प्रभाकर, मार्तण्ड, दिनकर

स्वर्ग– सुरलोक, गोलोक, देवलोक, इन्द्रपुरी, बैकुण्ठ

सारंग– सिंह, हाथी, कामदेव, कोयल, मृग

सर्प– अहि, भुजंग, विषधर, व्याल, फणिधर, उरग, पन्नम, सारंग

सोना– स्वर्ण, कनक, हिरण्य, हेम, सुवर्ण, कंचन

हिमालय– हिमपति, नगराज, नगपति, हिमाद्रि, हिमालय, हिमगिरि

हवा– अनिल, पवन, वायु, समीर, बयार

हरि– बन्दर, इन्द्र, विष्णु, सिंह

हाथी– गज, करि, कुंजर, गजेन्द्र, हस्ती

4.4 विलोमार्थी शब्द

शब्द के कुशल चितेरे संत तुलसीदास ने बड़ी ही कुशलता से विलोमार्थी शब्दों का प्रयोग निम्नलिखित चौपाइयों में किया है। ध्यान दीजिए-

दुखसुख पाप-पुण्य दिनराती। साधु-असाधु सुजाति-कुजाती।।

दानवदेव ऊँचअरुनीचू। अमिय सुजीवनु माहुर मीचू।।

सरगनरक अनुराग-विरागा। निगमागम गुनदोष विभागा।।

उपरोक्त पंक्तियों में दुख-सुख, पाप-पुण्य, दिन-रात, साधु-असाधु आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। ये परस्पर विरोधी अर्थ देने वाले शब्द एक दूसरे के संबंध से विलोमार्थी अथवा विरुद्धार्थी कहे जाते हैं।

कहने का आशय यह कि विलोमार्थी शब्द एक दूसरे के विपरीत अर्थ के वाचक होते हैं। यह विपरीत अर्थ उनके गुण, स्वभाव, आकार, स्थिति आदि के आधार पर निश्चित होता है। अत: ये शब्द प्राय: विशेषणात्मक होते हैं। यही कारण है कि जिन शब्दों में विशेषणात्मक गुणों की अवधारणा निश्चित नहीं होती, उनके विलोम नहीं बन पाते, जैसे-

1. कृष्ण का विलोम राधा नहीं है। (व्यक्ति वाचक संज्ञा)
2. आदमी का औरत विलोम नहीं है। (जाति वाचक संज्ञा)
3. सोना का विलोम चाँदी नहीं है। (वस्तु वाचक संज्ञा)
4. पचास का विलोम पाँच नहीं है। (संख्या)
5. मैं का विलोम हम नहीं है। (वचन)
6. खाना का विलोम पीना नहीं है। (क्रिया)
7. दोपहर का विलोम मध्य-रात्रि नहीं है। (समय)
8. यहाँ का विलोम वहाँ नहीं है। (स्थान)

अत: व्यक्ति, जाति, वस्तु, संख्या, वचन, क्रिया, समय एवं स्थान के संकेतक शब्दों के विलोम शब्द नहीं होते हैं।

यह सुनकर एक छात्र ने पूछा-'महोदय, हमने तो राम के विलोमार्थी रावण तथा दिन का विलोमार्थी रात को पढ़ा है। चल का विलोम अचल भी पढ़ा है। ये तीनों शब्द व्यक्ति, समय तथा वस्तु से संबंधित हैं, तो क्या ये विलोमार्थी शब्द नहीं है? कृपया भ्रम दूर करें।'

मैंने छात्र की कठिनाई को समझा तथा स्पष्ट किया कि राम का विलोम रावण कहने का यहाँ अर्थ है राम में निहित गुणों के विपरीत रावण के गुण है। अत: विपरीत गुणधर्मी होने से वह शब्द विलोमार्थी है। इसी प्रकार दिन-रात तथा चल-अचल शब्द भी एक दूसरे के विपरीत-धर्मी हैं। अत: ये भी विलोमार्थी शब्द हैं।

कहने का आशय यह कि विलोमार्थी शब्द भले ही विशेषण वर्ग के न हों किंतु अर्थ की दृष्टि से उनमें कुछ विशेषताएँ हैं, यह हमें अवश्य जानना होगा। तभी हम जान पाएँगे कि जिन शब्दों में विशेषणात्मक गुण नहीं है, उनके विलोमार्थी नहीं बनाए जा सकते।

इस दृष्टि से एक बात और ध्यान में रखना होगा कि विलोमार्थी शब्द का अर्थ विरोध तो

बताता है, निषेध नहीं। अत: निषेधार्थी शब्दों को विलोमार्थी शब्द नहीं कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए-

1. लड़की सुंदर है।
2. लड़की असुंदर है।

इन दोनों वाक्यों में दूसरा वाक्य विलोमार्थी प्रयोग वाला वाक्य है। किंतु दूसरे वाक्य को यदि हम इस प्रकार लिखें कि-

- लड़की सुंदर नहीं है।

तो इसे हम निषेधार्थी वाक्य कहेंगे। वाक्य के प्रयोग के आधार पर इस अंतर को जानने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए।

विलोमार्थी शब्द दो प्रकार के होते हैं-

1. अर्थ के आधार पर विलोमार्थी शब्द
2. व्युत्पत्ति के आधार पर विलोमार्थी शब्द

1. अर्थ के आधार पर विलोमार्थी शब्द दो प्रकार के होते हैं-

(क) पूर्ण विलोमार्थी

(ख) अपूर्ण विलोमार्थी

क. पूर्ण विलोमार्थी- जो विलोमार्थी शब्द-युग्म के रूप में बद्ध होते हैं, उन्हें हम पूर्ण विलोमार्थी कह सकते हैं, जैसे-

पाप-पुण्य, स्वर्ग- नर्क, सुख-दुख, आय-व्यय, प्रातः- सायं

ख. अपूर्ण विलोमार्थी- शब्द युग्म के रूप में बँधे नहीं होते।

जैसे-अँधेरा- प्रकाश दिन-रात्रि

2. व्युत्पत्ति के आधार पर विलोमार्थी शब्द-

व्युत्पत्ति के आधार पर विलोमार्थी शब्दों को दो भागों में बाँटा जा सकता है-

क. मूल विलोमार्थी शब्द

ख. व्युत्पन्न विलोमार्थी शब्द

क. मूल विलोमार्थी शब्द-

यदि किसी शब्द के अर्थ के ठीक विपरीत अर्थ देने वाला कोई दूसरा शब्द होता है, तो वे दोनों ही शब्द परस्पर मूल विलोमार्थी शब्द कहे जाते हैं। नीचे कुछ शब्दों के उदाहरण दिए जा रहे हैं। इनमें से कुछ ऐसे शब्द भी हैं जिन्हें हिंदी में मूल विलोमार्थी शब्द माना गया है, किंतु संस्कृत में उन्हें व्युत्पन्न विलोमार्थी शब्द माना गया है। अत: इस अंतर को ध्यान से पहचानें-

उदाहरण- अमृत-विष, आदि-अंत, उत्थान-पतन, अग्र-पश्च, जीवन-मरण, बन्धन-मोक्ष आदि।

ख. व्युत्पन्न विलोमार्थी शब्द- दो प्रकार के होते हैं-

1. जो मूलशब्द उपसर्ग के योग से विपरीत अर्थ प्रकट करने वाले बनाए जाते हैं, वे व्युत्पन्न

विलोमार्थी शब्द कहलाते हैं।

2. ऐसे शब्दों में मूल शब्द के पहले आ/अ/अन् उपसर्ग जुड़े रहते हैं।
 जैसे–अभिज्ञ, अनभिज्ञ यहाँ दोनों शब्दों में उपसर्ग का प्रयोग हुआ है जो विपरीत अर्थ प्रकट कर रहा है।
 यहाँ मूल शब्द 'भिज्ञ' है। पहले मूल शब्द में 'अ' जुड़कर अभिज्ञ बना, दूसरे में अन् उपसर्ग जुड़कर अनभिज्ञ बना (अन्+अभिज्ञ=अनभिज्ञ)

रोचक तथ्य–

1. यदि विलोमार्थी शब्द हिंदी का है, तो उसका विलोम शब्द भी हिंदी का होना चाहिए। यदि वह दूसरी भाषा का है, तो विलोम शब्द भी उसी भाषा का होना चाहिए, जैसे–
 1. जीवन–मरण (हिंदी) 2. जिंदगी–मौत (उर्दू)
2. तत्सम शब्दों का विलोम तत्सम तथा तदभव शब्दों का विलोम तद्भव शब्द ही होता है, जैसे– आय का विलोम शब्द व्यय होगा, 'खर्च' नहीं क्योंकि खर्च विदेशी शब्द है।
3. संज्ञा शब्द का विलोम संज्ञा ही होता है। विशेषण का विलोम (विपरार्थी) शब्द विशेषण ही होगा।
4. 'अ' उपसर्ग का प्रयोग व्यंजन से प्रारंभ होने वाले शब्दों में होता है, जैसे–भिज्ञ में अ लगने से अभिज्ञ बना। यहाँ 'भ' व्यंजन है।
 अन्–उपसर्ग का प्रयोग स्वरों से प्रारंभ होने वाले शब्दों के साथ होता है–जैसे– अन्+अभिज्ञ=अनभिज्ञ यहाँ अभिज्ञ में 'अ' स्वर होने से अन् लगा।
5. विलोम शब्दों को विपरीतार्थ अथवा विपर्याय वाची शब्द भी कहते हैं।
6. पुल्लिंग–स्त्रीलिंग को एक दूसरे के विलोम शब्द के रूप में नहीं लिखना चाहिए, जैसे– 'राजा' का विलोम 'रानी' नहीं, 'रंक' होता है।

इसे इस प्रकार ध्यान में रखें कि जिन शब्दों में विशेषणात्मक गुणों की अवधारणा नहीं होती, उनके विलोम नहीं बन पातें, यथा– जवाहर–गाँधी, सोना–चाँदी, मेज–खिड़की, तीन–दस, इतना–कितना, मैं–हम, खा–पी, दोपहर, यहाँ–कहाँ आदि ऐसे शब्द हैं जो जाति, व्यक्ति, वस्तु, संख्या, मात्रा, वचन, व्यापार, समय एवं स्थान के संकेतक मात्र हैं। अत: इनके विलोम शब्द नहीं बनाए जा सकते। विलोमार्थी शब्दों के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण यहाँ दिए जा रहे हैं—

शब्द	–	**विलोम**
अमृत	–	विष
अतिवृष्टि	–	अनावृष्टि
अवनि	–	अंबर
आकार	–	निराकार
आकर्षण	–	विकर्षण

आग्रह	–	दुराग्रह
आचार	–	अनाचार
आमिष	–	निरामिष
आतुर	–	अनातुर
आर्द्र	–	शुष्क
आस्था	–	अनास्था
आविर्भाव	–	तिरोभाव
अर्वाचीन	–	प्राचीन
आर्य	–	अनार्य
आहूत	–	अनाहूत
उत्तर	–	दक्षिण
उपरिलिखित	–	निम्नलिखित
ऐच्छिक	–	अनैच्छिक
एकतंत्र	–	बहुतंत्र
इष्ट	–	अनिष्ट
इहलोक	–	परलोक
ईश	–	अनीश
उत्थान	–	पतन
उत्कर्ष	–	अपकर्ष
उत्पादक	–	अनुत्पादक
उपयुक्त	–	अनुपयुक्त
कायर	–	निडर
कीर्ति	–	अपकीर्ति
कुटिल	–	सरल
कुकर्म	–	सुकर्म
कनिष्ठ	–	वरिष्ठ
क्रूर	–	दयालु
कोलाहल	–	नीरवता
कृपण	–	उदार
कृत्रिम	–	स्वाभाविक
कृतज्ञ	–	कृतघ्न
गरल	–	अमृत
गंभीर	–	वाचाल
गद्य	–	पद्य

घात	–	प्रतिघात
चेतन	–	जड़
जागरण	–	शयन
जागृति	–	सुषुप्ति
दुराचारी	–	सदाचारी
दुर्गुण	–	सद्गुण
दुर्गम	–	सुगम
दुर्गंध	–	सुगंध
दुर्लभ	–	सुलभ
दुर्जन	–	सज्जन
दीर्घायु	–	अल्पायु
भूगोल	–	खगोल
मनुज	–	दनुज
मलिन	–	निर्मल
महान	–	तुच्छ
मर्त्य	–	अमर
मंद	–	तीव्र
मानवता	–	दानवता
मौखिक	–	लिखित
मितव्यय	–	अपव्यय
मृदु	–	कठोर
योगी	–	भोगी
रुदन	–	हास्य
लघिमा	–	गरिमा
विधि	–	निषेध
वरदान	–	अभिशाप
विग्रह	–	संधि
वैमनस्य	–	सौमनस्य
विपुल	–	न्यून
विस्मृति	–	स्मृति
विक्रय	–	क्रय
विनीत	–	उद्धत
वक्र	–	सरल
वैद्य	–	अवैद्य

विरोध	–	समर्थन
श्वास	–	उच्छ्वास
स्वाधीन	–	पराधीन
स्वधर्मी	–	विधर्मी
स्मरण	–	विस्मरण
स्तुति	–	निंदा
स्थावर	–	जंगम
भूषण	–	दूषण
भाग्यवान	–	अभागा
दीर्घ	–	ह्रस्व
नवीन	–	प्राचीन
नश्वर	–	शाश्वत
निश्चित	–	अनिश्चित
निंदक	–	प्रशंसक
निर्माण	–	विनाश
नीरस	–	सरस
निराकार	–	साकार
निरादर	–	आदर
निरर्थक	–	सार्थक
पराजय	–	विजय
पतिव्रता	–	कुलटा
पक्ष	–	विपक्ष
परोक्ष	–	प्रत्यक्ष
प्रशंसा	–	निंदा
प्रसारण	–	रुकावट
विछोह	–	मिलन
बंधन	–	मुक्ति
बर्बर	–	सभ्य
स्वीकृति	–	अस्वीकृत
स्वावलंबी	–	परावलंबी
स्वार्थ	–	परमार्थ
स्वीकार	–	अस्वीकार
स्थिर	–	अस्थिर
संकीर्ण	–	विस्तीर्ण

सूक्ष्म	–	स्थूल
सापेक्ष	–	निरपेक्ष
सबल	–	निर्बल
सुबुद्धि	–	कुबुद्धि
सौभाग्य	–	दुर्भाग्य
सम्मुख	–	विमुख
साधु	–	दुष्ट
समाप्त	–	प्रारंभ
सेवक	–	स्वामी
सर्वत्र	–	अन्यत्र
सुपात्र	–	कुपात्र
सुदिन	–	दुर्दिन
सुमति	–	कुमति
संश्लेषण	–	विश्लेषण
हिंसा	–	अहिंसा
क्षुद्र	–	महान

4.5 श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द (समध्वनीय भिन्नार्थ शब्द/समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द)

एक छात्र ने अपनी समस्या कुछ इस प्रकार बताई कि- श्रुतलेख लिखते समय मुझे एक विशेष कठिनाई का सामना करना पड़ता है। ध्वनि की दृष्टि से कुछ शब्द ऐसे मिलते-जुलते होते हैं कि जो सुनने में एक जैसे लगते हैं किंतु उनकी वर्तनी में अंतर होता है, तथा प्रयोग करने पर उनके अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं। ऐसे में यह कैसे जाना जाए कि यहाँ अमुक शब्द ही ठीक है। उदाहरण के लिए श्रुत लेख में बोला गया था-गाड़ी।

मैंन लिख दिया गाढ़ी। शिक्षक ने उसे अशुद्ध माना, और मुझे बताया कि मैंने तो 'गाड़ी' शब्द बोला था, तुमने-शायद 'गाढ़ी' शब्द सुना इस प्रकार 'गाड़ी' जो वाहन का सूचक है, जैसे-बैलगाड़ी, रेलगाड़ी आदि किंतु तुमने लिख दिया 'गाढ़ी'। बोलने और सुनने में अंतर होने से यह स्थिति बनी है। इसलिए ऐसे शब्दों को सही-सही प्रयोग करने के लिए शब्दों के ठीक से अर्थ भी जानना चाहिए। तभी श्रुत लेखन शुद्ध होगा। अत: ध्यान रहे, जो शब्द सुनने में एक जैसे लगें किंतु उनके अर्थ में भिन्नता हो, उन्हें ही श्रुति समभिन्नार्थक शब्द कहा जाता है। तीन स्थितियाँ बनती हैं। जिन पर हमारा ध्यान जाना चाहिए।

1. सही-सही श्रवण।
2. सही-सही ध्वनि।
3. सही-सही उच्चारण।

हिन्दी में ऐसे अनेक शब्द प्रयुक्त होते हैं, जिनका उच्चारण तो बहुत कुछ समान होता है

किंतु उनकी वर्तनी तथा अर्थ प्राय: समान नहीं होते। इस प्रकार के शब्दों के नाम व्याकरण की पुस्तकों में भिन्न-भिन्न दिए गए हैं। जिससे भ्रम उत्पन्न होता है। इस दृष्टि से इन पर विचार कैसे करें, कृपया यह भी स्पष्ट करें?

1. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द
2. समध्वनीय भिन्नार्थक शब्द
3. समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द

मैंने श्यामपट पर उपरोक्त भिन्न-भिन्न प्रकार से बोले गए नामों को लिखा, और बताया कि व्याकरण की पुस्तकों में इनके नामों में भिन्नता देखने को अवश्य मिलती है किंतु वास्तव में ये भिन्न-भिन्न प्रकार के नाम वाले शीर्षक एक से ही हैं। यदि आप ध्यान से देखें तो आशय स्पष्ट हो जाएगा।

पहला तथा दूसरे प्रकार का नाम लगभग एक जैसा ही है-सुनने में आने वाले समरूप शब्द। यहाँ सुनने को आधार बना गया है। दूसरे तथा तीसरे प्रकार के नाम भी ध्वनि तथा उच्चारण के आधार बनाए गए हैं-अर्थात बोलना तथा सुनना इन दो दक्षताओं के आधार पर इनके नाम रखे गए हैं। इस प्रकार के सभी नाम एक ही हैं।

समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द संबंधी रोचक घटना

एक महात्मा जी का प्रवचन चल रहा था। श्रोताओं में एक युवक भी था जो दिन में तीन बार शेव करता था, जैसे कोई डॉक्टर की दवा ले रहा हो- सुबह, दोपहर और शाम। इसलिए वह रेजर तथा ब्लेड हमेशा साथ रखता था। पता नहीं कहाँ दोपहर बीते या शाम बीते।

महात्मा जी मोक्ष पर चर्चा कर रहे थे। उनका कहना था कि मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है। नवयुवक ने प्रश्न किया-भगवान ने पुरुषों के साथ ऐसा क्यों किया? एक तो दाढ़ी रूपी जंगल, तथा दूसरे मोंछ रूपी झाड़ी क्यों दिया? वहीं लड़कियों को दोनों से मुक्त रखा। ऊपर से आप हमें एक और मोंछ लेने को उकसा रहे हैं। आखिर क्यों ले मोंछ हम? हम तो पहले ही एक मोंछ से परेशान हैं। दोनों में शास्त्रार्थ बढ़ता ही गया।

अंत में युवक बोला- नहीं चाहिए, नहीं चाहिए हमें मोंछ, बिल्कुल नहीं चाहिए, और जेब से रेजर और ब्लेड निकालकर वहीं सबके सामने मोंछ छीलकर रख दी, और पुन: बोला- और मुझे यह भी नहीं चाहिए। जब भगवान बिना मोंछ के रह सकते हैं, तो हमें भी बिना मोंछ के रहना चाहिए। इसके लिए बस ये दो हथियार काफी हैं-एक ब्लेड और दूसरा रेजर। तब महात्मा जी बोले-अगर ऐसे ही भगवान बनना हो तो फिर देर किस बात की।

उपरोक्त घटना के वर्णन में मोंछ शब्द पर ध्यान दें। यहाँ मोक्ष के स्थान पर मोंछ आया है, जो कि समानोच्चारित है। मोक्ष और मूँछ- ये दोनों ही भिन्न अर्थ के सूचक है किंतु मोक्ष शब्द तत्सम शब्द है और मूँछ देशज।

नवयुवक मोक्ष शब्द को मोंछ ही सुन रहा था। इसलिए उसने महात्मा जी से शास्त्रार्थ भी किया, जबकि दोनों शब्दों के अर्थ भिन्न-भिन्न थे।

अत: जो शब्द सुनने, बोलने अथवा अर्थ की दृष्टि से एक जैसे लगें, उन्हें हम इनमें से

किसी एक नाम से पुकार सकते हैं। विशेष बात यह है कि ऐसे शब्दों का सही–सही अर्थ जानकर ही उनका प्रयोग किया जाना उचित होगा। इसी तरह के कुछ शब्द यहाँ अर्थ सहित दिए जा रहे हैं, जिनका ध्यानपूर्वक अध्ययन करें। आपका उद्देश्य इन्हें रटकर परीक्षा में अधिक से अधिक अंक प्राप्त करना नहीं होना चाहिए। इन्हें बार–बार पढ़कर इनके अर्थ को समझने का प्रयास करें, और इनका सही प्रयोग करना सीखें।

समोच्चरित शब्द

	शब्द	अर्थ
1.	अनल	आग
	अनिल	हवा
2.	अन	अनाज
	अन्य	दूसरा
3.	अणु	कण
	अनु	तुलना में
4.	अपेक्षा	तुलना में
	उपेक्षा	लापरवाही
5.	अन्दर	भीतर
	अन्तर	भेद
6.	अंक	गोद
	अंग	देह का भाग
7.	अश्व	घोड़ा
	अश्म	पत्थर
8.	अलि	भौंरा
	आलि	सखि
9.	अन्याय	अनुचित
	अन्यान्य	दूसरे–दूसरे
10.	आमरण	मृत्युपर्यन्त
	आभरण	गहना
11.	इतर	दूसरा
	इत्र	सुगन्धित द्रव्य
12.	उपकार	भलाई
	अपकार	बुराई
13.	ओर	तरफ
	और	तथा
14.	कल	पुर्जा, सुन्दर

	काल	समय
15.	कुल	वंश
	कूल	किनारा
16.	कृमि	कीट
	क्रमी	क्रमवाला
17.	कृति	रचना
	कृत्ती	निपुण, परिश्रमी
18.	कलि	कलियुग, झगड़ा
	कली	अधखिला फूल
19.	क्रम	सिलसिला
	कर्म	कार्य
20.	कुच	स्तन
	कूच	प्रस्थान
21.	कुजन	दुर्जन
	कूजन	पक्षियों का कलरव
22.	गत	बीता हुआ
	गति	चाल
23.	ग्रह	सूर्य,चन्द्र, आदि
	गृह	घर
24.	चरण	पैर
	चारण	भाट
25.	चिर	पुराना
	चीर	वस्त्र
26.	तरणि	सूर्य
	तरणी	नौका
27.	तरंग	लहर
	तुरंग	घोड़ा
28.	तृप्त	सन्तुष्ट
	तप्त	गर्म
29.	दिन	दिवस
	दीन	गरीब
30.	दशा	हालत
	दिशा	तरफ
31.	द्रव	तरल पदार्थ

	द्रव्य	धर, पदार्थ, मूल वस्तु
32.	धरा	पृथ्वी
	धारा	प्रवाह
33.	निर्वाण	मोक्ष
	निर्माण	बनाना
34.	पथ	राह
	पथ्य	रोगी का आहार
35.	परिणाम	फल, नतीजा
	परिमाण	वजन, मात्रा
36.	प्रणाम	नमस्कार
	प्रमाण	सबूत, साक्षी
37.	प्रसाद	कृपा
	प्रासाद्	महल
38.	पानी	जल
	पाणि	हाथ
39.	प्रकार	तरह
	प्राकार	किला, घेरा
40.	बदन	देह
	वदन	मुख
41.	मत	राय
	मति	बुद्धि
42.	मलिन	मैला हुआ
	म्लान	मुर्झाया हुआ
43.	मातृ	माता
	मात्र	केवल
44.	राज्य	शासन
	राज	रहस्य
45.	लक्ष्य	उद्देश्य
	लक्ष	रहस्य
46.	वक्ष	छाती
	वृक्ष	पेड़
47.	वसन	वस्त्र
	व्यसन	नशा, आदत
48.	वस्तु	चीज

	वास्तु	भवन
49.	शंकर	शिव
	संकर	मिश्रित
50.	शर	बाण
	सर	तालाब
51.	शम	संयम
	सम	बराबर
52.	सुधि	स्मरण
	सुधी	बुद्धिमान
53.	संघ	समुदाय
	संग	साथ
54.	सर्ग	अध्याय
	स्वर्ग	देवलोक
55.	चक्रवात	बवण्डर
	चक्रवाक	चकवा
56.	प्रणय	प्रेम
	परिणय	विवाह
57.	शील	चरित्र
	सील	मुहर

4.6. वाक्यांशों के लिए-एक शब्द

किसी विद्यालय में 'वाक्यांशों के लिए एक शब्द' पर प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता बहुत ही रोचक लगी क्योंकि वाक्यांशों अथवा अनेक शब्दों के लिए एक शब्द गागर में सागर भरने की कला है। ऐसे प्रयोगों से भाषा में संक्षेपण की क्षमता का विकास होता है, थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कहने की कुशलता भी आती है। अत: ऐसे शब्दों का अभ्यास छात्रों को प्रारंभ से ही कराना होगा।

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गए कतिमय महत्वपूर्ण शब्दों की सूची यहाँ प्रस्तुत की जा रही है। इनका अध्ययन करते समय ध्यान दें कि ये शब्द प्राय: उपसर्ग और प्रत्यय के सानिध्य से या सामासिक पदों के रूप में अभिव्यक्त हुए हैं।

जो पहले कभी न हुआ हो	अभूतपूर्व
जो कानून के प्रतिकूल हो	अवैध
पृथ्वी और सूर्यादि लोकों के मध्य का स्थान	अंतरिक्ष
जिनका जन्म पहले हुआ हो	अग्रज
जो बीत चुका है	अतीत
जिसकी सीमा न हो	असीम

जिसके समान दूसरा न हो	अद्वितीय
जिसकी गहराई का पता न चले	अथाह
गुरु के समीप रहने वाला विद्यार्थी	अंतेवासी
जो दिखाई न देता हो	अदृश्य
वह कार्य जो बिना वेतन के संभाला जाए	अवैतनिक
जिसे जीता न जा सके	अजेय
दोपहर के बाद का समय	अपराह्न
जिस बच्चे का बाप न हो	अनाथ
जिसे भुलाया न जा सके	अविस्मरणीय
जिसे त्यागा न जा सके	अपरिहार्य
जिसमें विवेक का अभाव हो	अविवेकी
हिसाब-किताब की जांच करने वाला	अंकेक्षक
जो किसी चीज पर आसक्त न हो	अनासक्त
जिसको क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य
जिसका वर्णन न हो सके	अवर्णनीय
जिस पर आक्रमण न किया गया हो	अनाक्रान्त
जिसका कोई शत्रु न उत्पन्न हुआ हो	अजातशत्रु
जो खाने योग्य न हो	अखाद्य
वह पुरुष जो अभिनय करता हो	अभिनेता
जिसे बुलाया न गया हो	अनाहूत
जिस पर अभियोग लगाया गया हो	अभियुक्त
व्यर्थ ही अधिक खर्च करने वाला	अपव्ययी
जो सदा से चला आ रहा है	शाश्वत
जो सबके अन्त:करण की बात जाने वाला हो	अन्तर्यामी
जिसके पास कुछ न हो	अकिंचन
जो पीछे चलता हो	अनुगामी
जिसकी उपमा न हो	अनुपम
रूप में समान हो	अनुरूप
जिसकी परिभाषा देना सम्भव न हो	अपरिभाष्य
विकृत शब्द	अपभ्रंश
जो बदला न जा सके	अपरिवर्त्य
जो विश्वास करने लायक न हो	अविश्वसनीय
जिसको क्षमा न किया जा सके	अक्षम्य
परम्परा से सुनी हुई बात या उक्ति	अनश्रुति

जो भेदा या छेदा न जा सके, जो टूट न सके	अभेद्य
जो कुछ नहीं जानता	अज्ञ
जो कम जानता हो	अल्पज्ञ
जो न मरे	अमर्त्य, अमर
अवश्य होने वाला	अवश्यम्भावी
जो अपने पैरों पर खड़ा हो	आत्मनिर्भर
जो धर्म और ईश्वर में विश्वास रखता हो	आस्तिक
आशा से अधिक	आशातीत
प्रारंभ से लेकर अन्त तक	आद्योपान्त
किसी के गुण-दोष की विवेचना करने वाला	आलोचक
इतिहास को जानने वाला	इतिहासविद्/इतिहासकार
इन्द्रियों को वश में करने वाला	इन्द्रियजित
इस लोक से संबंध रखने वाला	इहलौकिक
जो दूसरों की उन्नति देख कर जलता हो	ईर्ष्यालु
जिस (वस्तु) की आकांक्षा हो	ईप्सित
दूसरों की उन्नति को न देख सकने का भाव	ईर्ष्या
पूरब और उत्तर के बीच की दिशा	ईशानकोण
ऊपर कहा हुआ	उपर्युक्त
उपकार करने वाला	उपकारी
किसी के बाद उसकी संपत्ति पाने वाला	उत्तराधिकारी
जिसने ऋण चुका दिया हो	उऋण
जो धरती फोड़कर जन्मता हो	उद्भिज
ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ	ऊर्ध्वोच्चारित
जिस भूमि में कुछ उत्पन्न न हो	ऊसर
जो अपने वीर्य को न गिरने दे	ऊध्वरेता
जिसके एक ही आँख हो	एकाक्ष
जिसका चित्त स्थिर हो	एकाग्रचित
जो दिन में एक बार भोजन करता हो	एकभुक्त
किसी वस्तु के क्रय-विक्रय का एकछत्र अधिकार	एकाधिकार
इतिहास से संबंधित	ऐतिहासिक
इन्द्रियों से संबंधित	ऐन्द्रिक
इन्द्र का सफेद हाथी	ऐरावत
जो अपनी इच्छा पर निर्भर हो	ऐच्छिक
सारे देश की खेल प्रतियोगिताएँ	ओलम्पिक

उपनिवेश सम्बन्धी	औपनिवेशिक
उपनिषद् सम्बन्धी	औनिषदिक
उपन्यास सम्बन्धी	औपन्यासिक
जो कल्पना से परे हो	कल्पनातीत
जिसने अभी विवाह न किया हो	कुँआरा
किये हुए उपकार को न मानने वाला	कृतघ
राजनीतिज्ञों एवं राजपूतों की कला	कूटनीति
जो अपने काम से जी चुराता हो	कामचोर
जिसके पास करोड़ों रुपये हों	करोड़पति
बारह से सोलह वर्ष आयु की नायिका	किशोरी
जहाँ अपराधी रखे जाते हैं	कारावास
वह नायिका जिसका पति रात का किसी अन्य स्त्री के पास रहकर सबेरे आये	खंडिता
ऐसा ग्रहण जिसमें सूर्य या चन्द्र का पूरा बिम्ब ढँक जाए	खग्रास
जो आकाश में चलता हो	खेचर
जो खाने योग्य हो	खाद्य
महल जो गिर गया हो	खंडहर
आकाश चूमने वाला	गगनचुम्बी
शाम का वह समय जब पशु चरकर लौटते हैं	गोधूलि
जिसके सिर पर बाल न हो	गंजा
घृणा करने योग्य	घृण्य
जसे देख या सुनकर घृणा उत्पन्न हो	घृणित
जिसकी घोषणा की गयी हो	घोषित
जहाँ से मार्ग चारों ओर जाते हों	चौराहा
जिस पर चिन्ह लगाया गया हो	चिन्हित
जिसके सिर पर चन्द्रमा हो	चन्द्रशेखर
आँख से संबंध रखने वाला	चाक्षुष
सेना के ठहरने का स्थान	छावनी
रात्रि में बेखबर लोगों पर आक्रमण	छापा
बनावटी वेश धारण करने वाला	छद्मवेशी
अकस्मात बिना सूचना के छापा मारने वाला	छापामार
जल में पैदा होने वाला	जलज
जिसकी इन्द्रियाँ वश में हों	जितेन्द्रिय

जीने की इच्छा	जिजीविषा
जीतने की इच्छा वाला	जिगीषु
त्याग करने वाला	त्याज्य
एक व्यक्ति द्वारा चलाई जाने वाली शासन प्रणाली	तानाशाही
दोनों भौंहों का मध्यवर्ती स्थान	त्रिकुटी
भूत भविष्य और वर्तमान को देखने वाला	त्रिकालदर्शी
जंगल की आग	दावानल
जिसका दमन करना बहुत कठिन हो	दुर्दम्य
वह व्यक्ति जो बहुत दूर की बातों को सोच लेता है	दूरदर्शी
गोद लिया गया पुत्र	दत्तक
स्त्री और पुरुष का जोड़ा	दम्पत्ति
दो बार जन्म लेने वाला	द्विज
जहाँ जाना कठिन हो	दुर्गम
जो बहुत कठिनाई से प्राप्त हो	दुर्लभ
अनुचित बात के लिए आग्रह	दुराग्रह
जिसे कठिनाई से प्राप्त किया जा सके	दुष्प्राप्य
जिसकी धर्म में निष्ठा हो	धर्मनिष्ठ
यात्रियों के लिए धर्मार्थ बना हुआ घर	धर्मशाला
धर्म में आस्था रखने वाला	धार्मिक
धारण करने वाली	धरित्री
ध्यान या विचार करने वाला	ध्याता
जहाँ आबादी न हो	निर्जन
जो धर्म और ईश्वर में विश्वास न करता हो	नास्तिक
जिसका कोई अर्थ न हो	निरर्थक
जो नापा न जा सके	अपरिमेय
जो शंका करने योग्य न हो	नि:शंक
जिसमें उत्साह न हो	निरुत्साह
निम्न कोटि का किया गया कार्य	निकृष्ट
एक देश से दूसरे देशों में वस्तुओं का भेजा जाना	निर्यात
जिसके विषय में विवाद न हो	निर्विवाद
जो निन्दा के योग्य हो	निन्दनीय
जिसके ह्रदय में ममता न हो	निर्मम
जो नया आया हो	नवागन्तुक
जिसमें दया का अभाव हो	निर्दयी

जो माँस न खाता हो	निरामिष
नीति का ज्ञान रखने वाला	नीतिज्ञ
जहाँ किसी बात का डर न हो	निरापद
जो नीचे लिखा गया हो	निम्नलिखित
जिसका आश्रय न हो	निराश्रय
जो इन्द्रिय रहित हो	निरीन्द्रिय
पर्वत आदि की ऊँचाई का पता लगाने वाला अभियान दल	पर्वतारोही दल
ग्रंथ के वे बचे हुए अंश जो प्राय: अन्त में जोड़े जाते हैं	परिशिष्ट
जो दूसरों की भलाई करता हो	परोपकारी
वह वस्तु जिसके आर-पार देखा जा सके	पारदर्शी
जो दूसरों के अधीन हो	पराधीन
दोपहर के पहले का समय	पूर्वाह्न
पुस्तक की हाथ से लिखी हुई प्रति	पांडुलिपि
पत्ते की बनी हुई कुटी	पर्णकुटी
जो पृथ्वी से संबंधित हो	पार्थिक
पिता से प्राप्त की हुई सम्पत्ति	पैतृक
लौटकर आया हुआ	प्रत्यावर्ती
जिस पर मुकदमा चल रहा हो	प्रतिवादी
शीघ्र आग पकड़ने वाला	प्रज्ज्वलनशील
जो देखने में प्रिय लगे	प्रियदर्शी
इतिहास के पूर्व काल से संबंधित	प्रागैतिहासिक
दूसरे देश में रहने वाला	प्रवासी
जिस पर मुकदमा चलाया गया हो	प्रतिवादी
केवल फल खाकर रहने वाला	फलाहारी
बाहर आया या निकला हुआ	बहिर्गत
बहुत अधिक जानकारी रखने वाला	बहुज्ञ
जिसने सुनकर बहुत ज्ञान पाया हो	बहुश्रुत
जिसे समाज अथवा देश जाति से निकाल दिया गया हो	बहिष्कृत
बहुत सी भाषाएँ जानने वाला	बहुभाषाविद्
वह जो भूतकाल की तिथि से लागू हुआ हो	भूतलक्षी
जो आगे की बात सोचता हो	भविष्यचेता
जो भूमि को धारण करता हो	भूधर

जो भारत में रहता हो	भारतवासी
कम बोलने वाला	मितभाषी
जो मृत्यु के समीप हो	मरनासन्न
सूक्ष्म भोजन करने वाला	मिताहारी
मोक्ष की इच्छा रखने वाला	मुमुक्षु
मन, वचन, कर्म से	मनसा-वाचा-कर्मणा
दोपहर का समय	मध्याह्न
जिसने मृत्यु पर विजय पाई हो	मृत्युंजय
जो कम जानता हो	मन्दबुद्धि
हमेशा घूमते रहने वाला	यायावर
शक्ति के अनुसार	यथाशक्ति
जिसने यश प्राप्त किया हो	यशस्वी
जो युद्ध में स्थिर रहता हो	युधिष्ठिर
दूसरे देश में अपने राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने वाला	राजदूत
आधिकारिक रूप से सरकार द्वारा प्रकाशित होने वाला पत्र	राजपत्र
खून से लथपथ	रक्तरंजित
जिसने उधार लिया हो	ऋणी
कुछ लाभ पाने की इच्छा	लिप्सा
जिसने प्रतिष्ठा प्राप्त की हो	लब्ध प्रतिष्ठ
जो भूमि का लेखा-जोखा रखता हो	लेखापाल
चाटने योग्य वस्तु	लेह्य
जिस पुरुष की स्त्री मर गई हो	विधुर
जिस स्त्री का पति मर गया हो	विधवा
जो किसी विषय की जानकारी रखता हो	विशेषज्ञ
जो आवश्यकता से अधिक बोलता हो	वाचाल
व्याकरण का ज्ञाता	वैयाकरण
अनुचित संबंध रखने वाला	व्यभिचारी
जिसका कोई अंग टूट या बिगड़ गया हो	विकलांग
जिस पर शासन किया जाए	शासित
शिव की उपासना करने वाला	शैव
सदैव रहने वाला	शाश्वत
सौ वस्तुओं का संग्रह	शतक
जो असत्य न बोले	सत्यवादी
जो सबको समान समझता अथवा देखता हो	समदर्शी

अपनी इच्छानुसार आचरण करने वाला	स्वेच्छाचारी
जो सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ
अच्छे आचरण करने वाला	सदाचारी
दो धाराओं या नदियों के बीच का स्थान	संगम
जो स्मरण रखने योग्य हो	स्मरणीय
किसी काम में दूसरे से आगे बढ़ जाने की इच्छा	स्पर्द्धा
जो पढ़ना-लिखना जानता हो	साक्षर
जो संसार का संहार करता हो	संहारक
एक ही माँ से पैदा भाई	सहोदर
स्वेच्छा से पारिश्रमिक के बिना ही किसी कार्य में योग देने वाला	स्वयंसेवक
जो सर्वत्र व्याप्त हो	सर्वव्यापी
जिसकी सीमा न हो	सीमातीत
जो हमेशा रहने वाला हो	स्थाई
जो स्वयं भोजन बनाकर खाता हो	स्वयंपाकी
मिठाई बनाकर बेचने वाला	हलवाई
कोई वस्तु जो किसी दूसरे को सौंप दी गई हो	हस्तान्तरित
भला चाहने वाला	हितैषी
हाथ की कारीगरी	हस्तकौशल
भूख से आकुल	क्षुधातुर
कृश शरीर वाला	क्षीणकाय
क्षमा करने वाला	क्षमाशील
क्षमा करने योग्य	क्षम्य
जहाँ पृथ्वी और आकाश मिले दिखें	क्षितिज
जो तीन माह में एक बार हो	त्रैमासिक
तीन लोकों का संगम	त्रिकुटी
रात्रि का तीसरा पहर	त्रियामा
तीनों कालों को देखने वाला	त्रिकालदर्शी
जो जाना जा सके	ज्ञेय
ज्ञान की महत्ता	ज्ञान गरिमा
जो जानने योग्य हो	ज्ञातव्य

4.7. ऊनार्थक शब्द

जब मैं खरगोन (पश्चिम नीमाड़) मध्यप्रदेश में पदस्थ था तो समीप ही एक गाँव था, जिसका नाम ऊन है। मेरी जिज्ञासा हुई उस गाँव का नाम ऊन क्यों रखा गया। पता चला किसी काल में वहाँ के राजा ने उस नगर में 100 तालाब तथा 100 मंदिर बनाने का संकल्प लिया था किंतु वह 99 तालाब व 99 मंदिर ही बना पाया, कि उसकी मृत्यु हो गई। अत: एक तालाब और एक मंदिर की कमी रहने से उस नगर को 'ऊन' कहा जाने लगा।

जब किसी शब्द को सुविधा के लिए ऊन रूप में प्रयोग किया जाता है, तो उसे ऊनार्थक शब्द कहते हैं। ऊन शब्द न्यून शब्द से बना है जो कमी अथवा लघुता अथवा तुच्छत्ता का सूचक है? कुछ ऊनार्थक शब्द यहाँ दिए जा रहे हैं–

संज्ञा	**ऊनार्थक**
कली	कलिका
कटोरा	कटोरी, कोठी–कोठरी
गोला	गोली, गागर–गगरी
छुरा	छुरी, जूता–जूती, चोटी–चुटिया, झंडा–झंडी,
छाता–छतरी	
ढोलक	ढोलकी, टोकर–टोकरी
थाल	थाली, ताल–तलैया
नथ	नथनी, नद–नदी
बाग	बगीची, बच्चा–बचुआ
मटका	मटकी
खाट	खटिया

4.8 समूहवाची शब्द

जो शब्द समूह के द्योतक होते हैं, वे समूहवाची शब्द कहलाते हैं, यथा–भीड़, माला, संघ आदि। इनकी विस्तृत सूची अध्ययन के लिए यहाँ दी जा रही है।

क्र.	समूहवाची शब्द	जिसके साथ प्रयोग होता है
1.	अड्डा	बसों का
2.	कतार	पक्षी, बालक आदि
3.	कुंज	लताओं
4.	गट्ठर	लकड़ियों का
5.	गड्डी	नोटों की, कागज की
6.	गण	तारों का, छात्रों का
7.	गिरोह	डाकुओं, चोरों का
8.	गुच्छा	फूलों का, अंगूरों का
9.	छत्ता	मधुमक्खियों का

10.	झुंड	पशुओं, बालकों का
11.	जत्था	सत्याग्रहियों का
12.	जोड़ा	जूता, चप्पल आदि
13.	टुकड़ा	सैनिकों का
14.	ढेर	अनाज का
15.	दल	टिड्डियों का
16.	बेड़ा	जहाजों का
17.	भीड़	मनुष्यों की, भेड़ों की
18.	मंडली	भक्तों की
19.	राशि	धन की
20.	लच्छी	ऊन या धागे की
21.	समूह	यात्रियों का/तारों का
22.	संघ	कर्मचारियों का, मजदूरों का
23.	शृंखला	पर्वतों की

4.9 ध्वनि बोधक शब्द

जड़ या चैतन्य पदार्थ अथवा पशु-पक्षी जो बात ध्वनि के माध्यम से व्यक्त करते हैं, उन्हें ध्वनि बोधक शब्द कहा जाता है।

(क) अनुकरण वाचक शब्द-

हर भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं, जो मिलती-जुलती आवाजें की ध्वन्यात्मकता को सुनने की सार्थकता प्रदान करते हैं। जैसे-

1.	आग	-	धू-धू
2.	आँधी	-	साँय-साँय
3.	आँसू	-	छलछलाना
4.	इंजन	-	भक्-भक्
5.	घण्टी	-	टन-टन
6.	घड़ी	-	टिक्-टिक्
7.	झरना	-	झर-झर
8.	जीभ	-	लपलपाना
9.	ढोल	-	ढम-ढम
10.	धनुष	-	टंकारना
11.	पत्ते	-	खड़खड़ाना
12.	बूँद	-	टप-टप
13.	रुपया	-	खनखनाहट
14.	रेलगाड़ी	-	छुक्-छुक्

(ख) पशुओं की बोली

पशु–पक्षी व कीट–पतंगों के अधिकांश शब्दों को हिंदी भाषा में ध्वनि बोधक–शब्द कहा जाता है, जैसे–

1.	कुत्ता	–	भौंकना
2.	गधा	–	रेंकना
3.	गाय	–	रँभाना
4.	घोड़ा	–	हिनहिनाना
5.	चीता	–	गुर्राना
6.	बंदर	–	किटकिटाना
7.	बकरी	–	मिमयाना
8.	बिल्ली	–	म्याऊँ म्याऊँ
9.	मेढक	–	टर्राना
10.	भालू	–	घुरघुराना
11.	शेर	–	चिंघाड़ना

(ग) पक्षियों की बोलियाँ

1.	उल्लू	–	हू–हू करना
2.	कबूतर	–	गुटरगूँ करना
3.	कौआ	–	काँव–काँव करना
4.	कोयल	–	कूकना
5.	चिड़िया	–	चहचहाना
6.	चिता	–	टैं टैं करना
7.	पपीहा	–	पीपी करना
8.	पिल्ला	–	कूं कूं करना
9.	मोर	–	कुहकना
10.	मुर्गा	–	कुकड़ूकूं करना
11.	बतख	–	कें कें करना
12.	हंस	–	कुड़कुड़ाना

(घ) अन्य जीवों की बोलियाँ

1.	चूहा	–	चूँ चूँ करना
2.	मक्खियाँ	–	भिनभिनाना
3.	भौंरा	–	गुंजारना
4.	साँप	–	फुफकारना

4.10 शब्द–युग्म

एक व्यापारी ने अपनी व्यथा कुछ इस प्रकार ग्राहक को सुनाई–

राम-राम न जाने कैसे-कैसे लोग इस दुनिया में पैदा हो जाते हैं, जो समझते-बूझते कुछ नहीं, पर अपनी टाँग बात-बात में अड़ाते रहते हैं। कभी-कभी तो ऐसे लोगों के ऊल-जलूल व्यवहार से इनको बनाने वाला भगवान भी घबरा जाता होगा। अभी-अभी कुछ देर पहले एक ऐसे दुर्जन पुरुष धड़-धड़ाते हुए दुकान में घुस आए, और अपने अड़ोस-पड़ोस के लोगों को गोली से उड़ा देने के इरादे से किसी हथियार-बथियार बेचने वाली दुकान का पता पूछ-ताछ रहे थे। मैंने बार-बार इन्हें समझाने की कोशिश की कि इस बाजार में कोई ऐसी दुकान नहीं है जो हथियार या तोप-तमंचे बेचती हो, तो मुझ पर गर्म हो उठे, और तुम-तड़ाक करने लगे। समय-समय की बात है, मुझे भीतर ही भीतर ताव तो बहुत आ रहा था, पर सम्भल गया। अगले-मुहल्ले की एक दुकान का पता बताकर उन्हें टरका दिया। अब वे कोई-न-कोई गुल जरूर खिला रहे होंगे।

इस घटना के बारे में एक कक्षा में छात्रों से सहज ही पूछा-'इस घटना के वर्णन करते समय दो-दो शब्दों का प्रयोग करके व्यापारी अपनी व्यथा क्यों सुना रहा है?'

छात्रों ने कहा-'ऐसा प्रयोग सहज ही हम बातचीत में करते हैं?'

'इसे व्याकरण की भाषा में क्या कहते हैं?'

'ध्यान नहीं आता।'

मैंने पुनः कहा-व्याकरण का अध्ययन करते समय आपने 'शब्द-युग्म' के विषय में अवश्य पढ़ा होगा। (युग्म का अर्थ है-जोड़ा। अतः एक ही शब्द के जोड़े बनाकर जब शब्द-रचना की जाती है, तो उसे ही '**शब्द-युग्म**' कहते हैं। युग्मता के आधार पर बने शब्द एक नया ही अर्थ देने लगते हैं।) फिर मैंने अपने कथन को एक उदाहरण के द्वारा स्पष्ट करना चाहा-जैसे-

1. हम दिन में जगते हैं, और रात को सोते हैं।
2. रमेश ने रात-दिन कड़ी मेहनत की, तब सफलता मिली।

पहले वाक्य में 'दिन' तथा 'रात' शब्द अलग-अलग स्थान पर स्थित हैं, और अपना-अपना स्पष्ट अर्थ व्यक्त कर रहे हैं किंतु दूसरे वाक्य में, शब्द-युग्म (रात-दिन) के रूप में आकर वे एक पृथक अर्थ (कार्य की निरंतरता) प्रकट कर रहे हैं।

एक और उदाहरण लें। इधर और उधर-ये दोनों शब्द स्वतंत्र रूप से भिन्न-भिन्न अर्थ रखते हैं किंतु युग्म बनते ही 'चारों ओर' का अर्थ देने लगते हैं। इस प्रकार दो पर्यायवाची शब्द अथवा विपरीतार्थक शब्द अथवा सार्थक-निरर्थक शब्दों से मिलकर 'शब्द-युग्म' बनाए जाते हैं। एक शब्द की पुनरावृत्ति करके भी शब्द-युग्म का निर्माण किया जाता है, जैसे-घर-घर। यह पुनरुक्त शब्द प्रत्येक घर के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

इस प्रकार शब्द-युग्मों की रचना कई प्रकार से हो सकती है-

1. सजातीय (समानार्थक) शब्दों के द्वारा, जैसे-धन-दौलत।
2. विलोम शब्दों के द्वारा, जैसे-मान-अपमान, आग-पानी
3. सार्थक और निरर्थक शब्दों के द्वारा, जैसे-मार-धाड़।
4. एक ही शब्द की पुनरुक्ति द्वारा, जैसे- रोम-रोम, अच्छे-अच्छे।

5. विकल्पों द्वारा, जैसे-चाय-काफी, पान-सिगरेट।
6. तत्सम तथा तद्भव शब्दों द्वारा, दंत-दंत।
7. स्वनों के युग्म, पदों के युग्म, वाक्यों के युग्म आदि।

यह सूची काफी लंबी हो सकती है किंतु प्रयोग के आधार पर शब्द-युग्म के व्याकरण के आधार पर निम्नलिखित प्रकार देखने को मिलते हैं-

क. पर्याय-युग्म **ख.** विपरीतार्थक युग्म
ग. सार्थक-निरर्थक युग्म **घ.** पुनरुक्त शब्द-युग्म
ङ. निपात सहित युग्म

अब इन्हें विस्तार से जानें-

क. पर्याय-युग्म

जब किसी युग्म के दोनों पद परस्पर पर्यायवाची होते हैं, तो उसे पर्याय-युग्म कहा जाता है, जैसे-

जीव-जंतु (संज्ञा का विकल्प) मार-पीट (क्रिया का विकल्प)
यह-वह (सर्वनाम का विकल्प)
इधर-उधर (अव्यय के विकल्प) मोटा-ताजा (विशेषण का विकल्प)

(1) **अन्य उदाहरण**

	युग्म	**संयोजित शब्द**
1.	काम-काज	काम (कार्य)+काज (कार्य))
2.	जान-पहचान	जान (जानना) + पहचान (जानना)
3.	बाल-बच्चे	बाल (बालक) + बच्चे (बालक)
4.	बड़े-बूढ़े	(बड़ी आयु के) + बूढ़े (बड़ी आयु के)

(2) **प्रयोग**-

1. मैं अपना काम-काज खुद ही कर लेता हूँ।
2. इस शहर में मेरी किसी से जान-पहचान नहीं है।
3. आपके बाल-बच्चे कैसे हैं?
4. संयुक्त परिवार में बड़े-बूढ़ों को यथोचित सम्मान मिलता है।

(3) **अन्य पर्याय युग्म**

देख-भाल, नहा-धोकर, मोटा-ताजा, सीधा-सादा, कुशल-मंगल, गाते-बजाते, सोच-समझकर, सुना-सुनाया, चलते-फिरते, फटा-पुराना, हिलना-डुलना, बैठे-ठाले, लड़ते-झगड़ते, धन-दौलत, दाल-रोटी, अन्न-जल, कागज-पत्र, मार-पीट, हृष्ट-पुष्ट, भूला-भटका।

(4) **विशेष**-

पुनरुक्त शब्द में एक ही शब्द की पुनरावृत्ति होती है, जैसे-घर-घर। यहाँ घर शब्द दो बार आया है किंतु पर्याय-युग्म में, जैसा कि उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है समान अर्थ वाले दो

शब्द विकल्प रूप में आए हैं, जैसे काम-काज में दोनों शब्द एक दूसरे के विकल्प हैं। इसमें प्रथम शब्द ही अर्थ को स्पष्ट कर देता है। अतः इनका प्रयोग सोच-समझकर करें।

ख. विपरीतार्थक युग्म

जब किसी युग्म के दोनों पद विपरीत अर्थ बताते हों, तो विपरीतार्थक युग्म कहलाते हैं, जैसे-

	युग्म	संयोजित शब्द
1.	आना-जाना	आना + जाना (विपरीत क्रिया)
2.	इधर-उधर	इधर + उधर (विपरीत दिशा)
3.	जीवन-मरण	जीवन + मरण (विपरीत स्थितियाँ)
4.	बच्चे-बूढ़े	बच्चे + बूढ़े (विपरीत वय)
5.	माता-पिता	

प्रयोग-

1. मेरा दिल्ली <u>आना-जाना</u> बना ही रहता है।
2. वे दिन भर <u>इधर-उधर</u> भटकते रहते हैं।
3. हानि-लाभ, <u>जीवन-मरण</u>, यश-अपयश विधि हाथ।
4. <u>बच्चे-बूढ़े</u> एक समान।
5. हमें अपने <u>माता-पिता</u> की आज्ञा का पालन करना चाहिए।

<u>अन्य विपरीर्थाक युग्म</u>

आगे-पीछे, थोड़ा-बहुत, सुख-दुख, हँसना-रोना, आर-पार, दिन-रात, आवागमन, देश-विदेश, पाप-पुण्य, भला-बुरा, उतार-चढ़ाव, गुण-दोष, भाई-बहन, लेन-देन, हानि-लाभ, जय-पराजय, माता-पिता, नया-पुराना, लेना-देना, छोटी-बड़ी, सुबह-शाम, उठना-बैठना, वर-वधू, यश-अपयश।

ग. सार्थक-निरर्थक युग्म

जब युग्म में एक पद सार्थक तथा दूसरा पद निरर्थक होता है, तो उसे सार्थक-निरर्थक युग्म कहा जाता है। ऐसे शब्दों को प्रतिध्वन्यात्मक शब्द भी कहते हैं, क्योंकि प्रथम शब्द के ध्वनि के आधार पर दूसरा शब्द गढ़ लिया जाता है, जैसे-तड़क-भड़क, अनाप-शनाप, हल्ला-गुल्ला, रोटी-वोटी आदि।

	अन्य उदारण	संयोजित शब्द
1.	अता-पता	अता (निरर्थक) + पता (सार्थक)
2.	चुप-चाप	चुप (सार्थक) + चाप (निरर्थक)
3.	गाली-गलौज	गाली (सार्थक) + गलौज (निरर्थक)
4.	पूछ-ताछ	पूछ (सार्थक) + ताछ (निरर्थक)
5.	हक्का-बक्का	हक्का (सार्थक) + बक्का (निरर्थक)

प्रयोग-

1. मोहन का कुछ अता-पता ही नहीं।
2. मैं उसकी बात चुप-चाप सुनता रहा।
3. गाली-गलौज करना शरीफों का काम नहीं।
4. आपके बारे में पूछ-ताछ चल रही है।
5. मैं रमन की बात सुनकर हक्का-बक्का रह गया।

अन्य सार्थक-निरर्थक शब्द

भीड़-भाड़, ऊट-पटांग, आमने-सामने, हट्टा-कट्टा, हक्का-बक्का, आर-पार, भारी-भरकम, टाल-मटोल, आस-पास, पकड़-धकड़, चाय-वाय, इने-गिने, पानी-वानी, सज-धज, भीड़-भाड़।

घ. पुनरुक्त शब्द-युग्म

एक शब्द की पुनरुक्ति करके भी नए 'शब्द-युग्म' का निर्माण किया जाता है। इन शब्दों को छिटक या द्विरूक्ति शब्द भी कहते हैं, क्योंकि इसमें सार्थक शब्दों की दो बार आवृत्ति (उक्ति) होती है, जिससे अर्थ में नयापन आ जाता है।

1.संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, किया-विशेषण आदि पदों की पुनरुक्ति से इन शब्दों का निर्माण होता है।

	युग्म	संयोजित शब्द
क.	संज्ञापुनरुक्त	गाँव-गाँव, गली-गली, भाई-भाई, कौड़ी-कौड़ी आदि।
ख.	सर्वनाम पुनरुक्त	जो-जो, कौन-कौन, कोई-कोई, किस-किस आदि।
ग.	विशेषण पुनरुक्त	बड़े-बड़े, नए-नए, काले-काले, लाल-लाल, मीठी-मीठी, छोटे-छोटे, बड़े-बड़े आदि।
घ.	क्रिया पुनरुक्त	रोते-रोते, आते-आते, देखते-देखते, खाते-खाते, पढ़ते-पढ़ते, सोते-सोते आदि।
ङ.	क्रिया-विशेषण पुनरुक्त	धीरे-धीरे, ऊपर-ऊपर, नीचे-नीचे, कभी-कभी, साथ-साथ आदि।
च.	संबंध पुनरुक्त	पीछे-पीछे, तरह-तरह।
छ.	समुच्चय बोधक पुनरुक्त	और-और, पर-पर।
ज.	विस्मय पुनरुक्त	वाह-वाह, राम-राम, हरे-हरे आदि।

प्रयोग-

1. आज कल गाँव-गाँव में शिक्षा का प्रचार हो रहा है। (संज्ञा)
2. कौन-कौन आज अनुपस्थित हैं? (सर्वनाम)
3. आजकल शहरों में नए-नए चेहरे देखने में आ रहे हैं। (विशेषण)
4. रोते-रोते उसकी आँखें सूज गई। (क्रिया)
5. धीर-धीरे मत चलो। (क्रिया विशेषण)

ङ निपात सहित युग्म

कभी-कभी पुनरुक्त पद के बीच में 'न' 'ही' 'तो' 'का' आदि निपात अथवा परसर्ग आने से नए अर्थ का बोध होता है, जैसे- कुछ-न-कुछ, आप-ही-आप, और-तो-

और, कुछ-का-कुछ, कोई-न-कोई, मैं-ही-मैं, ढेर-के-ढेर, कभी-न-कभी, पेड़-ही-पेड़, खेत-के-खेत, झुंड-का-झुंड।

रोचक तथ्य-

1. पुनरुक्त शब्दों के अन्तर्गत वे शब्द भी आ जाते हैं, जो ध्वनि विशेष का बोध कराते हैं,

जैसे-	संज्ञा	-	टन-टन, खटखट, गड़बड़
	विशेषण	-	खटपटिया, झड़झड़िया
	क्रिया	-	हिनहिनाना, झनझनाना
	क्रिया-विशेषण	-	दनादन, धड़ाधड़, झटपट

05

शब्द पद/शब्द प्रयोग

व्याकरणिक आवश्यकताओं के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

कक्षा में भाषा की अध्यापिका ने एक दिन भूगोल के संबंध में चर्चा करते हुए अपनी बात इस प्रकार रखी बच्चो आपने भूगोल विषय में यह पढ़ा होगा कि भारत ही संसार में एक मात्र ऐसा देश है, जहाँ छह ऋतुएँ होती हैं जिनके कारण समय-समय पर मौसम में बदलाव आता रहता है। संसार में ऐसा देश और नहीं। यहाँ तक कि ध्रुव प्रदेशों में तो निरंतर बर्फ जमी रहती है। फलस्वरूप वहाँ ठंड का साम्राज्य बना रहता है। यही बात शब्दों के विषय में है। कुछ शब्द वाक्य के अर्थ के अनुसार अपना रूप बदलते रहते हैं। उनमें विकार या परिवर्तन हो जाता है, तथा कुछ शब्दों का कहीं भी प्रयोग करा लें, वे अपना रूप नहीं बदलते अर्थात उनमें कभी भी विकार या परिवर्तन नहीं होता। उसी आधार पर हम शब्दों को दो भागों में बाँट सकते हैं-

1. विकारी शब्द- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया
2. अविकारी शब्द- क्रिया-विशेषण, सम्बंध बोधक, समुच्चय बोधक, विस्मयादि बोधक

विशेष-

1. अविकारी शब्दों को अव्यय भी कहते हैं।
2. विकारी तथा अविकारी दोनों वर्गों में चार-चार प्रकार के शब्द हैं।

उपरोक्त शब्दों को वाक्य में प्रयोग करते समय यह बात ध्यान देने योग्य है कि प्रथम शब्दों का समूह (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण) वाक्यों में प्रयुक्त होते समय या तो अपने मूलरूप में रहता है या कभी अपने मूलरूप में विकार (परिवर्तन) रूप में प्रयुक्त होता है। यह विकार लिंग, वचन आदि के रूप में होता है। अत: इन्हें 'विकारी शब्द' के वर्गों में रखा गया है। दूसरे वर्ग में क्रिया विशेषण, संबंध बोधक, समुच्चय बोधक तथा विस्मयादि बोधक शब्द हैं, जिनका वाक्य में प्रयोग करते समय अपना मूलरूप यथावत बना रहता है। उनमें कोई विकार (परिवर्तन) नहीं आता। अत: उन्हें अविकारी शब्द के वर्गों में रखा जाता है। लिंग वचन आदि व्याकरणिक कोटियों के प्रभाव से इनमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है। एक उदाहरण द्वारा दोनों रूपों को स्पष्ट समझा जा सकता है।

(क) **विकारी शब्द**-

1. **संज्ञा शब्दों में विकार**

मूलशब्द	-	रूपांतरित शब्द
लड़का	-	लड़के, लड़कों, लड़को

2. **सर्वनामों के विकार**

मूलशब्द	-	रूपांतरित शब्द

मैं — मुझको, मुझे, मेरा, मेरे, मेरी

3. **विशेषणों के विकार**

मूलशब्द — रूपांतरित शब्द

अच्छा — अच्छे, अच्छी, अच्छा

4. **क्रियाओं के विकार**

मूलशब्द — रूपांतरित शब्द

पीना — पीता है, पिया, पिएंगे, पीना था, पीने के आदि

(ख) **अविकारी शब्द**

1. **क्रिया विशेषण**– क्रिया की विशेषता बनाने वाले शब्द, जैसे– आज, कल, अब, परसों, इधर, उधर, यहाँ, वहाँ, आदि।
2. **सम्बंध बोधक**– सम्बंध का बोध कराने वाले शब्द, जैसे– ने, से, में, पर, ऊपर से नीचे, के अनुसार आदि।
3. **समुच्चय बोधक**– दो शब्दों अथवा वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द, जैसे– और, किंतु, परंतु, लेकिन, या, अथवा आदि।
4. **विस्मयादि बोधक**– मनोभावों को व्यक्त कराने वाले शब्द, जैसे– आह, ओह, ओ, शाबास आदि।

इन आठ प्रकार के शब्दों पर पाठ्य पुस्तकों में विस्तार से चर्चा की गई है। उसे पढ़ें तथा यह जाने कि वे क्या कार्य करते हैं, तथा उनका प्रयोग कैसे किया जाता है?

रोचक तथ्य–

1. कोशगत शब्दों से विचार प्रकट नहीं किए जा सकते। विचार प्रकट करते समय शब्दों में व्याकरणिक इकाइयों के अंतर्गत भाषा के शब्दों, पदों, पदबंधों, उपवाक्यों आदि के नियमों तथा विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है।
2. शब्द मूलत: ध्वन्यात्मक होते हैं, या वर्णात्मक। व्याकरण में ध्वन्यात्मक शब्दों की अपेक्षा वर्णात्मक शब्दों पर विचार किया जाता है। वर्णात्मक शब्दों में भी वे ही शब्द आते हैं, जो सार्थक हों, निरर्थक शब्दों पर विचार नहीं किया जाता।
3. प्रयोग की दृष्टि से सार्थक शब्दों को दो भागों में बाँटा गया है: विकारी शब्द और अविकारी शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी शब्द है।
4. संज्ञा शब्द में परिवर्तन लिंग, वचन तथा कारक– इन तीन कारणों से आता है।
5. सर्वनाम– सर्वनाम शब्द में रूप परिवर्तन संज्ञा की भाँति ही होते हैं किंतु सर्वनाम शब्द पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग दोनों में एक समान रहते हैं। सर्वनाम का सम्बोधन नहीं होता।
6. विशेषण– संज्ञा तथा सर्वनाम के अनुसार रूप बदलते हैं।
7. क्रिया– लिंग, काल तथा अवस्था के अनुसार क्रिया का रूप बदलता रहता है।
8. अविकारी शब्दों का रूप नहीं बदलता है।

06

परिभाषिक शब्द

बात उन दिनों की है, जब मैं इंटरमीडिएट (1951 ई.) का छात्र था। उस समय देश में उच्च शिक्षा के अन्तर्गत परीक्षा में सर्वप्रथम हिन्दी माध्यम अपनाने की घोषणा हुई। 1953 ई. में स्नातक स्तर बी.ए. भी हिंदी माध्यम घोषित हुआ, तथा 1959-60 ई. एम.एड. में भी सर्वप्रथम हिंदी माध्यम घोषित हुआ। इस प्रकार मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि जब-जब भी मैं उच्च कक्षाओं में पहुँचा, हिन्दी माध्यम चुनने का अवसर मिलता रहा। किंतु कठिनाई यह रही कि तब हिंदी माध्यम की पुस्तकें नहीं मिल पाती थी। छात्रों को स्वयं विषय-वस्तु का हिन्दी रूपांतरण कर विषय वस्तु को समझना पड़ता था, तथा परीक्षा में प्रश्नों के उत्तर लिखना होता था।

परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाएं जाँचने वाले अधिकांश प्रोफेसर हिंदी माध्यम से कम परिचित थे। अत: अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की तुलना में हिंदी माध्यम से उत्तर लिखने वाले छात्रों के प्राप्तांको का औसत कम रहता था।

सबसे अधिक कठिनाई पारिभाषिक शब्दों के विषय में थी। किसी वस्तु, अवधारणा या विचार का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कराने वाला नपा तुला कथन परिभाषा कहलाता है। पारिभाषिक शब्द परिभाषा से ही बना है। जो शब्द अव्याप्ति, असंगति, दोष से मुक्त हो, तथा संक्षिप्त एवं सुस्पष्ट हो, उसे ही पारिभाषिक शब्द कहा जाता है। हिंदी में ऐसी पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग करना उस समय कठिन बात थी। अंग्रेजी की परिभाषाएँ ही सर्वमान्य थी। आज की पाठ्यपुस्तकों में यह कठिनाई नहीं है।

पारिभाषिक शब्द को हिंदी में अब 'तकनीकी' शब्द भी कहते हैं, जो अंग्रेजी के 'टेक्निकल' शब्द का हिंदी रूपांतर है।

पारिभाषिक शब्द से आशय

पारिभाषिक शब्दों का संबंध वस्तुत: किसी विषय विशेष से होता है, जैसे- कानून, कार्यालय, बैंक, सरकारी कामकाज अथवा विज्ञान आदि इन क्षेत्रों में ऐसे शब्दों का प्रयोग विशेष रूप से होता है। इन शब्दों को सुनकर या पढ़कर ही समझ में आ जाता है कि इनका संबंध किस विषय विशेष से है।

सामान्य शब्दों से इनमें भिन्नता इस अर्थ में है कि इन शब्दों का अर्थ विशिष्ट संदर्भों या प्रयोजनों के लिए निश्चित होता है। इन शब्दों को पारिभाषिक शब्द कहने का आशय भी यही है कि इनका अर्थ पूरी तरह से परिभाषा देकर या स्पष्टीकरण देकर ही समझाया जा सकता है।

पारिभाषिक शब्दों की विशेषताएँ तथा प्रकार-

पारिभाषिक शब्दों की विशेषताएँ निम्नलिखित आधार पर जानी जा सकती है-

1. पारिभाषिक शब्द का अर्थ स्पष्ट तथा सुनिश्चित होना चाहिए।
2. एक विषय या सिद्धांत में उसका एक ही अर्थ होना चाहिए।
3. पारिभाषिक शब्द छोटा होना चाहिए ताकि प्रयोग में कठिनाई न हो।
4. पारिभाषिक शब्द मूल (रूट) होना चाहिए, व्याख्यात्मक नहीं, जैसे, व्याकरण में 'संज्ञा', दर्शनशास्त्र में 'ब्रह्म', काव्यशास्त्र में 'लक्षणा', विज्ञान में 'परजीवी', वाणिज्य में 'अंकेक्षण'-पारिभाषिक शब्द हैं। इनकी व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है।
5. एक ही विषय से सम्बद्ध पारिभाषिक शब्दों के रूप की दृष्टि से सुदृश्य हो, तो संगत लगता है, जैसे-विज्ञान के विषय में आक्सीडेशन, रिडक्शन, हाइड्रोजिनेशन आदि शब्दों के अपने विशिष्ट अर्थ तो हैं ही, साथ ही इनके रूपों में एक सादृश्य भी है।
6. पारिभाषिक शब्द ऐसे होने चाहिए जिससे उसके अर्थ से सम्बद्ध क्रियाओं को प्रकट करने वाले शब्द बनाए जा सकें, जैसे-भाषा-विज्ञान में पारिभाषिक शब्द 'स्वन' से 'स्वनिम' 'स्वनिमिकी' सह-स्वन इस प्रकार के शब्दों की रचना हुई। ये सभी शब्द 'स्वन' से संबंध रखने वाली विविध धारणाओं को प्रकट करने में सक्षम है।

हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली तैयार करने में अब संस्कृत, अरबी-फारसी, अंग्रेजी तथा लोक प्रचलित देशज शब्दों को भी ग्रहण किया जाने लगा है। संस्कृत में तो दर्शन, ज्योतिष, व्याकरण, आयुर्वेद आदि पारिभाषित शब्द पूर्व से निर्धारित थे किंतु मुगलकाल में अरबी-फारसी तथा अंग्रेजों के शासनकाल में अंग्रेजी तथा यूरोपीय भाषाओं के पारिभाषिक शब्द भी हिंदी में समाविष्ट हुए। इससे हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली समृद्ध हुई।

पारिभाषिक शब्दावली के संबंध में कुछ अभिमत

1. कुछ विद्वानों का मत है कि प्राचीन भारतीय भाषाओं से ही ऐसे शब्द ग्रहण किए जाए, जो आधुनिक भाषाओं से आए पारिभाषिक शब्दों के समकक्ष अर्थ रखते हों, जैसे-

आकाशवाणी	(रेडियो)
मंत्री	(मिनिस्टर)
तस्कर	(स्मगलर)

2. बोलचाल की भाषा में प्रचलित शब्दों को मूल रूप में या सामासिक रूप में ग्रहण किया जाए, जैसे-

दलबदलू	(डिफेक्टर)
घुसपैठिया	(इन्फिल्ट्रेटर)
फिरौती	(रेनसम)

3. प्रांतीय भाषाओं में प्रचलित शब्दों को ग्रहण करना अधिक उपयुक्त होगा, ऐसा भी कुछ विद्वानों का मत है, जो प्रांतीय भाषाओं को जानते हैं, जैसे-

औत्साहिक	(अमेच्योर)	तेलगू

साजगृह	(ग्रीन रूम)	बंगला
प्रतिष्ठान	(एस्टेब्लिशमेंट)	कन्नड

4. विदेशी भाषा के शब्दों को यथावत ग्रहण कर लिया जाए–
जैसे– मीटर, लीटर, बजट आदि।
5. एक मत यह भी है कि विदेशी भाषा के पारिभाषिक शब्दों को अपनी भाषा के अनुकूल नया रूप देकर ग्रहण कर लिया जाए, जैसे–

त्रासदी	ट्रेजेडी
अकादमी	ऐकेडेमी
अंतरिम	अंतरिम

अत: स्पष्ट है कि विद्वानों के मतानुसार पारिभाषिक शब्दावली के अंतर्गत आने वाले शब्दों की तीन श्रेणियाँ हो सकती हैं–

1. दूसरी भाषा को अपनी भाषा में अनुवाद करके अपनाना, जैसे–

शब्द	**अनुवाद**
गोल्डन जुबली	स्वर्ण जयंती
सिल्वर जुबली	रजत जयंती

2. दो भिन्न भाषाओं को मिलाकर नया शब्द बनाना, जैसे–

शब्द	**भिन्न भाषाएँ**
जेलखाना	(अंग्रेजी+फारसी)
सरपंच	(अरबी+हिन्दी)

3. प्रांतीय भाषाओं से अर्जन करके, जैसे–

शब्द	**प्रांतीय भाषा**
काजल, कजरारे	कज्जल (मुंडा भाषा)
कोना, कोनिका	कोण (द्रविड़)

इस प्रकार शब्द निर्माण की बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उक्त तीनों प्रकार से पर्याप्त पूर्ति हो रही है।

पारिभाषित शब्दों की रचना–प्रक्रिया

हिंदी में तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशज शब्दों के साथ उपसर्ग, प्रत्यय, समास एवं संधियों के मेल से पारिभाषिक शब्दों की रचना हुई है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं—

उपसर्ग–

हिंदी में तीन प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग होता है– तत्सम, तद्भव और विदेशी। पारिभाषिक शब्दों की रचना में प्राय: तत्सम उपसर्गों का ही प्रयोग किया जाता है, उदाहरण के लिए–

अ	आ	+	वैतनिक	=	अवैतनिक (आनरेरी)
अति	अति	+	क्रमण	=	अतिक्रमण (इन्क्रोचमेंट)

अधि	अधि	+	सूचना	=	अधिसूचना (नोटीकफिकेशन)
अनु	अनु	+	कल्प	=	अनुकल्प (आल्टरनेटिव)
अप	अप	+	मार्जक	=	अपमार्जक (डिटरजेंट)
अभि	अभि	+	कर्ता	=	अभिकर्ता (एजेंट)
आ	आ	+	वर्ती	=	आवर्ती (रेकरिंग)
उत्	उत्	+	प्रेरक	=	उत्प्रेरक (केटेलिस्ट)
उप	उप	+	यंत्री	=	उपयंत्री (सब-इंजीनियर)
दुः	दुः	+	विनियोग	=	दुर्विनियोग (मिस एप्रोप्रिएशन)
निः	निः	+	जलित	=	निर्जलित (डिहाइड्रेशन)
परि	परि	+	वादी	=	परिवादी (कम्प्लेनेंट)
प्र	प्र	+	भाग	=	प्रभाग (डिवीजन)
प्रति	प्रति	+	जैविक	=	प्रतिजैविक (एंटिबायोटिक)
वि	वि	+	निर्णय	=	विनिर्णय (रुलिंग)
सं	सं	+	प्रेषण	=	संप्रेषण (कम्यूनिकेशन)
स	स	+	क्षम	=	सक्षम (कम्पीटेंट)

प्रत्यय-

हिंदी में चार प्रकार के प्रत्यय मिलते हैं- तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी। पारिभाषिक शब्दों के निर्माण में देशज प्रत्ययों का प्रयोग नहीं हुआ है। अधिकांश पारिभाषिक शब्दों के निर्माण में उपसर्गों की भाँति तत्सम प्रत्ययों का ही प्रयोग किया गया है, जैसे—

अन (यन)	सारणी	सारणीयन (टेबुलेशन)
आई	ढल	ढलाई (फाउन्ड्री)
आत्मक	गुण	गुणात्मक
इक	अंचल	आंचलिक
इका	परिचारक	परिचारिका
इत	आवंटन	आवंटित
इत्र	संधारण	संधारित्र (कैपेसिटर)
इम	रूप	रूपिम
इया	मुफ्त	मुफ्तिया (फ्री राइडर)
ई	विज्ञान	विज्ञानी
ईय	महाद्वीप	महाद्वीपीय
औती	फेर	फिरौती (रेनसम)
क	लिपि	लिपिक
करण	निरस्त्र	निरस्त्रीकरण
कार	सह	सहकार (को-आपरेशन)

कारी	विघटन	विघटनकारी
तम	उच्च	उच्चतम
तर	उच्च	उच्चतर
ता	सक्षम	सक्षमता
दार	बकाया	बकायादार
न	परिसीमा	परिसीमन
स्थ	दूर	दूरस्थ (रिमोट)

समास-

समास के द्वारा भी काफी शब्दों का निर्माण किया गया है। इनमें मुख्यत: तत्सम+तत्सम हैं—

(क) तत्सम + तत्सम
गाथागीत (बैलेड), लोकसभा, नगरपालिका, राज्यपाल

(ख) तत्सम + तद्भव
रक्षाचौकी, भाड़ाक्रय

(ग) तत्सम + विदेशी
अनुसूचित बैंक, मौसम विज्ञानी, हवाई पत्र, जिलाधीश

(घ) तद्भव + तद्भव
हाथकरघा, घुसपैठ, दलबदलू

(ङ) तद्भव + विदेशी
बचतस्कीम, चपटी, तश्तरी

(च) तत्सम + विदेशी + तद्भव
अंतर्राज्यीय बस-अड्डा

संधि-

शब्द + शब्द (गुण + अवगुण : गुणावगुण)
उपसर्ग + शब्द (अभि + आवेदन : अभ्यावेदन)
शब्द + प्रत्यय (यंत्र + इक : यांत्रिक)
(भूत + इकी : भौतिकी)

अपवादत: कुछ शब्दों में हिंदी संधियों का भी प्रयोग हुआ है, जैसे- इकाई (एक + आई), दुभाषिया (दो + भाषा + इया) आदि।

यहाँ हमने संक्षेप में पारिभाषिक शब्दावली की रचना-प्रक्रिया का उल्लेख किया है। विज्ञान और प्रविधि के इस युग में विज्ञान की नई उपलब्धियों का साक्षात्कार, उद्योगों का विस्तार तथा विकसित होती ज्ञान-चेतना के समुचित परिचय के लिए जहाँ सामान्य भाषा अपर्याप्त हो गई है, वहाँ उस विषय की विशिष्ट शब्दावली का ज्ञान आवश्यक है।

इस प्रकार समकालीन जीवन में पारिभाषिक या तकनीकी शब्दावली की उपयोगिता

असंदिग्ध है।

पारिभाषिक शब्द-सूची

यहाँ प्रशासन, मानविकी, वाणिज्य, न्याय तथा विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में प्रयुक्त कुछ पारिभाषिक शब्दों की सूची दी जा रही है, जिसमें अँग्रेजी पारिभाषिक शब्दों के लिए हिंदी के समानार्थक पारिभाषिक शब्द दिए गए हैं। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, हिंदी की तीन शैलियों (हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी) के कारण पारिभाषिक शब्दों में भी तीन प्रकार के शब्द प्रचलित हैं। साथ ही विभिन्न प्रदेशों में कुछ शब्दों के अलग-अलग समानार्थी प्रचलित हैं। भारत शासन के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने विभिन्न विषयों की लगभग बीस शब्दावलियाँ प्रकाशित की हैं, जिन्हें समूचे हिंदी क्षेत्र के लिए मानक आधार के रूप में लिया जाना चाहिए। प्रस्तुत शब्द-संकलन इन्हीं शब्दावलियों के आधार पर किया गया है।

(अ) प्रशासनिक

Ad hoc	तदर्थ
Attachment officeer	कुर्की अधिकारी
Affiliated College	सम्बद्ध महाविद्यालय
Authority	प्राधिकारी/प्राधिकरण/प्राधिकार
Block Development Officeer	खण्ड विकास अधिकारी
Cadre	संवर्ग
Census officer	जनगणना अधिकारी
Collector of Excise	उत्पाद-शुल्क समाहर्ता
Chief Labour Commissioner	मुख्य श्रमायुक्त
Co-operative officer	सहकारिता अधिकारी
Chancellor	कुलाधिपति
Compensatory Allowance	प्रतिपूरक भत्ता
Deputation	प्रतिनियुक्ति
Director	निदेशक
Despatch clerk	जावक लिपिक
Development Commissioner	विकास आयुक्त
Election Commissioner	निर्वाचन आयुक्त
Eligibility	पात्रता
Endorsement	पृष्ठांकन
Earned Leave	अर्जित अवकाश
Gazetted officer	राजपत्रित अधिकारी
Governor	राज्यपाल
Grant	अनुदान

Honorary	अवैतनिक
Horticulturist	उद्यान-कृषि विशेषज्ञ
Inspector	निरीक्षक
Inspector Genreral	महानिरीक्षक
Interim	अंतरिम
Land Aquisition officer	भू-अर्जन अधिकारी
Lumpsum	एकमुश्त राशि
Memorandum	ज्ञापन
Mineralogist	खनिज-विज्ञानी
Notification	अधिसूचना
Pay scale	वेतनमान
Project officer	परियोजना अधिकारी
Quality control officer	गुणवत्ता नियंत्रण अधिकारी
Recovery officer	वसूली अधिकारी
Registrar	कुलसचिव
Secretary	सचिव
Stenographer	आशुलिपिक
Sub-Divisional officer	उप मंडल अधिकारी
Sub-ordinate	अधीनस्थ
Surveyor	सर्वेक्षक
Through proper channel	उचित माध्यम
Tourist Publicity officer	पर्यटन प्रचार अधिकारी
Vice chancellor	उप कुलपति
Vigilance officer	सतर्कता अधिकारी
Wage inspector	मजदूरी निरीक्षक
Watch and ward inspector	निगरानी निरीक्षक
(आ)	**मानविकी**
Adaptation	रूपांतर, व्यानुकूलन
Adult franchise	व्यस्क मताधिकार
Aesthetics	सौंदर्यशास्त्र
Adultration	अपमिश्रण
Analogy	सादृश्य
Anthropologist	मानवविज्ञानी, नृतत्ववेत्ता
Appeasement	तुष्टीकरण

Aptitude	अभिरुचि
Ballot paper	मतपत्र
Behavioursm	व्यवहारवाद
Cabinet	मंत्रिमण्डल
Citizenship	नागरिकता
Concurrent list	समवर्ती–सूची
Concept	धारणा
Constitution	संविधान
Constituency	निर्वाचन क्षेत्र
Council of Ministers	मंत्रिपरिषद्
Content	विषय–वस्तु
Creation	सृष्टि, सर्जन
Cultural Heritage	सांस्कृतिक विरासत
Dean	अधिष्ठाता
Defamation	मानहानि
Duty	कर्त्तव्य
Electorate	निर्वाचक मंडल
Emotion	संवेग
Employer	नियोक्ता
Environment	परिवेश
Expressionism	अभिव्यंजनावाद
Family planning	परिवार नियोजन
Frustration	कुंठा, हताशा
Generalization	सामान्यीकरण
His Excellency	महामहिम
Human Rights	मानवाधिकार
Indology	प्राच्य विद्या
Illiteracy	निरक्षरता
Infancy	शैशव
Literacy	साक्षरता
Non-Alignment	गुटनिरपेक्षता
No Objection Certificate	अनापत्ति प्रमाण पत्र
Parliament	संसद
Personification	मानवीकरण

Population	जनसंख्या
Polling officer	मतदान अधिकारी
Public Service Commission	लोक सेवा आयोग
Prohibition	मद्य-निषेध
Reservation	आरक्षण
Right	अधिकार
Sensitivity	संवेदनशीलता
Single Transferable Vote	एकल-संक्रमणीय मत
(इ)	**वाणिज्य**
Accountant	लेखापाल
Accountant General	महालेखाकार
AAccounts clerk	लेखालिपिक
Accounts officeer	लेखा अधिकारी
Agent	अभिकर्ता
Auditor General	महालेखापरीक्षक
Bear Transaction	मंदडिया सौदा
Bill of exchange	हुण्डी/विनियम पत्र
Bil clerk	देयक लिपिक
Booking clerk	टिकट बाबू
Branch Manager	शाखा प्रबंधक
Bull	तेजड़िया
Capital	पूंजी
Cashier	रोकड़िया
Charterd Accountant	सनदी/चार्टरित लेखाकार
Chief Controller of Accounts	मुख्य लेखा नियंत्रक
Contract	अनुबंध
Cost Accounts officeer	लागत लेखा अधिकारी
Current Account	चालू खाता
Currency officer	मुद्रा अधिकारी
Co-operative Bank	सहकारी बैंक
Creditor	ऋणदाता
Debtor	ऋणी
Demand note	मांगपत्र
Depreciation	मूल्य-ह्रास

Disbursing officer	संवितरण अधिकारी
Ecconomic Advisor	आर्थिक सलाहकार
Equity Share	इक्विटी/सामान्य शेयर
Guarantee	प्रत्याभूति
Hypothecation	दृष्टिबंधक/गिरवी
Incidence of tax	करापात
Impact of tax	कराघात
Income	आय
Income tax return	आयकर विवरणी
Investment	निवेश
Joint Stock Company	मिश्रित पूँजी कंपनी
Ledger	खाता
Liabilities	देयताएँ
Manager	प्रबंधक
Net Loss	शुद्ध–घाटा
Partnership	साझेदारी
Pledge	गिरवी
Profit	लाभ
Production	उत्पादन
Reeurring Deposit	आवर्ती जमा
Store Keeper	भण्डारी
Tax	कर
Taxable	कर–योग्य
Tender	निविदा
Trade	व्यापार
(ई)	**न्यायिक**
Act	अधिनियम
Adjourm	स्थगन
Advocate	अधिवक्ता
Advocate General	महाधिवक्ता
Arbitrator	मध्यस्थ
Attorney General	महान्यायवादी
Affidavit	शपथपत्र
Appeal	अपील, पुनर्विचार, अभ्यावेदन

Assistant Public Prosecutor	सहायक लोक अभियोजक
Bail	जमानत
Bond	बन्धपत्र
Crime	अपराध
Crose Examination	प्रतिपरीक्षा
Claim	दावा
Criminal Procedure code	दण्ड-प्रक्रिया संहिता
Charge Sheet	आरोप-पत्र
Civil judge	व्यवहार-न्यायाधीश
Chief judicial magistrate	मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी
Court	न्यायालय
Contempt of Court	न्यायालय की अवमानना
Defendent	प्रतिवादी
Dispute	विवावद
District Court	जिला न्यायालय
District Magistrate	जिलादण्डाधिकारी
Division Bench	खण्डपीठ
Evidence	साक्ष्य
Ex parte	एकपक्षीय
High Court	उच्च न्यायालय
Impeachment	महाभियोग
Imprisonment	कारावास
Jurisdication	अधिकारक्षेत्र/क्षेत्राधिकार
Legal	वैध
Litigation	विवाद, मुकदमेबाजी
Labour Court	श्रम-न्यायालय
Liquidatior	परिसमापक
Magistrate	दण्डाधिकारी
Ordinance	अध्यादेश
Oath	शपथ
Plantiff	वादी
Penal Code	दण्ड-संहिता
Parol	पेरोल, वचन
Punishment	दण्ड

Record	अभिलेख
Rule	नियम
Stay	स्थगन
Sentence to Death	मृत्यु-दण्ड
Statute	परिनियम
Supreme Court	उच्चतम न्यायालय
Sub Rule	उपनियम
Tribunal	न्यायाधिकरण
Writ	याचिका
(उ)	**वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्द**
Acidity	अम्लता
AActiveimmunity	सक्रिय रोध क्षमता
Acid Sensitive	अम्ल संवेदी
AAnaeesthesia	संवेदनहरण
Abdomen	उदर
Air Pollution	वायु-प्रदूषण
Aeronatutics	अंतरिक्ष विज्ञान
Antibiotic	प्रतिजैविक
Bio Mathematics	जैव-गणित
Bio Chemistry	जैव-रसायन
Bio Energy	जैव-ऊर्जा
Bio Technology	जैव-तकनीक
Bio medical Engineering	जैव-चिकित्सकीय यांत्रिकी
Biosphere	जीव-मंडल
Cell	कोशिका
Cosmology	सृष्टि-विज्ञान
Computer	संगणक
Decimal	दशमलव
Differntal Calculus	अवकलन गणित
Digit	अंक
Diagram	रेखाचित्र
Diagnosis	रोग-निदान
Ecology	पारिस्थितिकी, परिस्थिति-विज्ञान
Element	तत्व, मूल-तत्व

Expiration	नि:श्सन
Environment	पर्यावरण, परिवेश
Frequency	आवृत्ति
Fertility	उर्वरता, प्रजनन क्षमता
Fertilizer	उर्वरक, खाद
food preservation	खाद्य संरक्षण
Fossil	जीवाश्म
Genetics	आनुवंशिकी
Giant Cell	महाकोशिका
Hypertension	अतितनाव
Gravitation	गुरुत्वाकर्षण
Meteorology	यांत्रिक
Meteorology	मापिकी, मापविज्ञान
Micro wave	सूक्ष्म तरंग
Medium wave	मध्य तरंग
Nerve	तंत्रिका
Nucleus	नाभिक
Nutrition	पोषण
Orbit	कक्षा
Oral Tract	मुखपथ
Parasite	परजीवी
Predator	परभक्षी
Radiation	विकीरण
Satellite	उपग्रह
Synthesis	संश्लेषण
Tissue	ऊतक

║01║

परिशिष्ट

शब्दकोश कैसे देखें?

एक सज्जन मुझसे मिले, और कहने लगे कि आज मेरे बच्चे ने मुझसे शब्द-कोश में क्षमा शब्द ढूँढने को कहा किंतु मैं नहीं ढूँढ पाया। कृपया आप मुझे ऐसी खास-खास बातें बता दें, जिससे हिन्दी भाषा के कोश को मैं सरलता से देख सकूँ।

अंग्रेजी भाषा के कोश को देखना बहुत सरल है, क्योंकि उसमें कुल 26 अक्षर हैं। थोड़े से अभ्यास से ही कोश में शब्द आसानी से मिल जाते हैं। यदि हमें 'ए' से 'जेड' तक अँग्रेजी अक्षरों का क्रम याद है, और शब्दों की स्पेलिंग याद है तो किसी भी शब्द को ढूँढने में कोई परेशानी नहीं होती किंतु हिन्दी भाषा के कोश में 48 शब्द तथा 10 मात्राओं तथा लगभग सभी अक्षरों के आधे रूप के कारण अकरादि क्रम को समझना अपेक्षाकृत कठिन है। उदाहरण के लिए-

चंद्र, क्षमा, कृषि, ज्ञान, प्रसाद, भ्रान्ति, द्वार, न्यास, स्थिर, श्रम आदि ऐसे शब्द हैं, जिन्हें ढूँढने में मुझे बहुत समय लगता है। फिर भी सभी शब्दों को पन्ने पर पन्ने पलटने के बाद भी कोश में शीघ्र ढूँढ पाना संभव नहीं। अत: मुझे शब्दकोश के विषय में कृपया बताएँ कि शब्द-कोश देखने की सही विधि क्या है? यह जानने की मुझे बड़ी जिज्ञासा है।

उन सज्जन की बात सुनकर मुझे लगा कि उनकी कठिनाई वास्तव में उचित है। एक विकसित भाषा में हजारों-लाखों शब्द होते हैं। इन सब शब्दों को, उनके अर्थों को एवं प्रयोगों को जानना किसी व्यक्ति के लिए संभव नहीं।

भाषा का विकास क्रम भी लगातार चलता रहता है। नए-नए शब्द पैदा होते रहते हैं। पुराने शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं, और कुछ शब्द चलन से बाहर हो जाते हैं, ऐसे में शब्दों के सही अर्थ जानने की आकांक्षा को कोई चुनौती नहीं दे सकता।

अब हम हिंदी शब्दकोश कैसे देखें? इस विषय को समझने का प्रयास करेंगे-

1. सर्वप्रथम हमें शब्द-क्रम की कुंजी को ध्यान में रखना होगा। हिंदी शब्द-कोश को स्वरों एवं व्यंजनों के इसी क्रम में देखा जाता है। अत: इसे हमेशा ध्यान में रखें ताकि बिना कठिनाई के हम शब्दकोश में वांछित शब्द को ढूँढ सकें।

   स्वरों के इस क्रम पर सर्वप्रथम ध्यान दें-

   अं, अँ, अ:, अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ **स्वर**

ं, ँ, ः, ्, ा, ि, ी, ु, ू, ृ, े, ै, ो, ौ **मात्राएँ**

किसी भी शब्द को शब्दकोश में ढूँढने पर उसका अकारादि क्रम इस प्रकार रहेगा-

शंकर, शक, शाक, शिक्षक, शीर्षक, शुक्र, शूल, शेष, शैल, शोच, शौक, श्मशान, श्याल, श्रद्धांजलि, श्रमिक, श्वेत, श्वेतांक।

यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि किसी भी शब्द को देखने में

प्रथम चरण में- अनुस्वार, अनुनासिक, चंद्रबिन्दु तथा विसर्ग सर्वप्रथम आता है।

द्वितीय चरण- स्वरों का क्रम निम्नानुसार रहता है-

अ, आ, इ, ई, ऊ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

तृतीय चरण- व्यंजनों के क्रम में जिन व्यंजनों में संयुक्त व्यंजन पाए जाते हैं, उनका क्रम निम्नानुसार से रहेगा-

(संयुक्त व्यंजन- क्ष, त्र, ज्ञ, श्र)

क- वर्ग

क, क्ष= (क+ष) यह वर्ग कोश में 'क' वर्ग में कौ, क्, क्र इत्यादि के समाप्त होने के बाद शुरू होता है।

फिर ख, ग, घ, ङ से बने शब्दों का क्रम होगा।

च- वर्ग

च, छ, ज, ज्ञ = (ज+ञ) यह वर्ण जौ के बाद जैसे जौहरी के बाद शुरू होता है।

झ, ञ

ट- वर्ग

ट, ठ, ड, ढ़, ण

त- वर्ग

त, त्र = (त्+र) तौ के बाद आधा=त् के बाद शुरू होता है।

थ, द, ध, न

प- वर्ग

प, फ, ब, भ, म

य, र, ल, व

श

श्र =(श्+र)

ष, स, ह

अब आप समझ गए होंगे कि

1. कोश क्रम में अनुस्वार (ं) चंद्रबिन्दु (ँ) वाले वर्ण पहले आते हैं। इसके बाद विसर्ग (:) वाले शब्द आते हैं। विसर्ग के बाद स्वर अर्थात् उस वर्ग का प्रथम अक्षर, जैसे- क-वर्ग में क, ख, ग आदि से शब्द शब्दकोश में देखने को मिलते हैं, जैसे- कचनार, कतरन। यहाँ कचनार के बाद कछार शब्द च-वर्ग के क्रम से आया है। पश्चात् त-वर्ग

का शब्द कतरन आया है।

2. 'र' का प्रयोग भिन्न भिन्न तरह से होता है। जैसे यदि हमें दुर्गति शब्द का क्रम जानना है। तो 'र' से लेकर 'रो' तक का क्रम समाप्त होने पर 'रेफ' शब्द आधा (र) देखने में आता है, उदाहरण के लिए खराब, खरिया, खरीद, खरोटना, खर्च, खर्राटा, खर्ल शब्द आएगा। अत: 'रेफ' का अनुक्रम भी देखना होगा।

3. खड़ी पाई वाले अर्द्धवर्णों को हलंत, चिह्न द्वारा नहीं लिखा जाता है, वरन् खड़ी पाई हटाकर लिखा जाता है, जैसे-ख्याति, ख्‌याति इस प्रकार लिखना अशुद्ध होगा। इन शब्दों का क्रम अकारादि क्रम के पश्चात् आता है, जैसे-

   त-वर्ग

   तंग, तंबू, त:, तकुआ, तकिया, तुहिन, तृप्त, तेज, तोबा, तौल, त्र, त्राटक, त्र्यंश, त्वचा

विशेष- इस उदाहरण से स्पष्ट है कि 'तं' से तौ तक की मात्रा वाले शब्द पूरा होने के बाद अर्द्ध अक्षर हलंत (त्) वाले शब्द आते हैं। ऐसी ही स्थिति हर वर्ग की होती है।

4. एक अन्य अनुक्रम के विषय में भी जान लें। इसे जानना बेहद जरूरी है। उदाहरण स्वरूप-'स्थिति' ऐसा शब्द है जिसमें 'इ' की मात्रा 'थ' पर लगना चाहिए किंतु ऐसा नहीं है। 'सथिति' लिखना अशुद्ध है। इसे 'स्थिति' ही लिखना होगा। अत: शब्दकोश में 'स्थावर' 'स्थिति' 'स्थूल' के अनुक्रम में ध्वनि क्रम के आधार पर देखें। एक अन्य उदाहरण भी दिया जा रहा है-जैसे-'स्मारिका', 'स्मार्त', 'स्मित', 'स्मृति' ये सभी ऐसे शब्द हैं जिनको शब्दकोश में देखते समय उनके उच्चारण द्वारा शब्द की मात्रा की स्थिति पर ध्यान देना होगा, तब हम उन्हें शब्दकोश में ढूँढ सकेंगे, अन्यथा नहीं।

5. एक बात और समझ लें हिंदी शब्दकोशों में व्याकरण, उत्पत्ति आदि संकेताक्षरों का विवरण दिया जाता है किंतु उनमें एकरूपता नहीं रहती है। अत: आप जिस कोश को देखें, उसकी संक्षिप्ति को अवश्य समझ लें।

प्रायोजना

अब आप शब्द कोश देखने की विधि सीख चुके हैं। आपका उद्‌देश्य शब्दार्थों को रटकर परीक्षा में अधिक से अधिक अंक प्राप्त करना नहीं होना चाहिए। आप इनका महत्व समझिए। सच्चे मित्र की भाँति ये सदैव आपका साथ देंगे। आवश्यकता है कि हम इनसे मित्रता बढ़ाएँ और जिस प्रकार एक सच्चे मित्र के प्रति आप अपना स्नेह प्रकट करते हैं, उसी प्रकार शब्दकोश से शब्दों का अर्थ जानकर इनका सही प्रयोग कर इन्हें अपना सच्चा मित्र बना सकते हैं।

रोचक तथ्य-

1. प्रत्येक शब्द कोश के प्रारंभ में शब्द का विशेष अध्ययन करने के लिए संकेताक्षर दिए रहते हैं, जैसे-प्रत्य.-प्रत्यय, देश.-देशज, बहु.-बहुवचन, पु.-पुल्लिंग, स.क्रि.-सकर्मक क्रिया आदि।
2. कोश में शब्दों को ढूँढने के लिए वर्ण-क्रम का ज्ञान आवश्यक है।
3. शब्द कोश में प्रविष्टियाँ अकारादि क्रम में रहती है।
4. शब्द कोश शब्दों का सूचनात्मक भंडार होता है।

02

परिशिष्ट

शब्दों का वस्तुनिष्ठ परीक्षण कैसे करें?

प्रश्न-पत्र निर्माण की एक कार्यशाला में मुझे भाग लेने का अवसर मिला। प्राय: उसमें प्रतिभागी के रूप में जो शिक्षक आए थे, वे प्रश्न-पत्र निर्माण के कार्य में वर्षों से संलग्न थे। मैंने सहज ही एक शिक्षक महोदय से वस्तुनिष्ठ प्रश्न बनाने के विषय में जानकारी चाही। उन्होंने बतलाया कि पाठ्य पुस्तक में जो वस्तुनिष्ठ दिए रहते हैं, हम उन्हीं को यथावत प्रश्न पत्र में दे देते हैं। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का स्वयं निर्माण नहीं करते।

मैंने उनसे पुन: प्रश्न किया- 'वस्तुनिष्ठ प्रश्न क्यों पूछे जाते हैं? यदि इस बारे में हम पूरी तरह स्पष्ट नहीं हैं, तो फिर प्रश्न पत्र में उन्हें देने से क्या लाभ।'

यह सुनकर सभी प्रतिभागियों को इस बात की जिज्ञासा जगी कि वे इस विषय में कुछ जानें।

उक्त जिज्ञासा को ध्यान में रखते हुए मैंने इस संबंध में यह बताने का भरसक प्रयत्न किया कि वस्तुनिष्ठ परीक्षण के माध्यम से हम किस सीमा तक भाषा ज्ञान का आकलन कर सकते हैं। भाषा का एक दूसरा पक्ष भी है भाषा-व्यवहार। इसके अंतर्गत शब्दों के अर्थ तथा प्रयोग इन दोनों को ध्यान में रखकर ही वस्तुनिष्ठ प्रश्न बनाना चाहिए।

नीचे हम अर्थ और प्रयोग के आधार पर कुछ प्रश्न बनाकर दे रहे हैं, जिससे इस विषय को अच्छी तरह समझा जा सकता है।

5. वाक्य (भाषाई संदर्भ) की सहायता से उपयुक्त शब्द का चयन, जैसे- इस साल भी अधिक ठंड पड़ने की ...... है। (संभावना/आशा/आशंका)

1. भिन्न-भिन्न अर्थ क्षेत्रों की पहचान-

इस प्रकार के प्रश्नों में चार विकल्प होते हैं जिसके अन्तर्गत एक ही अर्थ वर्ग में तीन शब्द दिए जाते हैं, और भिन्न अर्थ वर्ग का एक शब्द दिया जाता है, और छात्र को भिन्न अर्थ क्षेत्र वाले एक शब्द को चिन्हित करने को कहा जाता है, जैसे- स्नेह, प्रेम, अनुराग, सहानुभूति। (यहाँ सहानुभूति शब्द भिन्न अर्थ-क्षेत्र वाला शब्द है)

2. विलोम (विरुद्धार्थी शब्द) की पहचान-

इसके अंतर्गत किसी शब्द के लगभग समान से प्रतीत होने वाले चार विलोम शब्द दिए जाते हैं जिनमें से सबसे उपयुक्त विलोम शब्द का चयन करने को कहा जाता है, जैसे- सम्मान

(अपमान/अनादर/तिरस्कार/अपयश) यहाँ सम्मान का विलोम अपमान शब्द है।

3. प्रयोग की सहायता से उपयुक्त शब्द का चयन–

इसमें भी चार विकल्पों में से एक चयन करना होता है, जैसे– जिसे जीता न जा सके (अजीत/अपराजेय/अजेय/विजेता)

4. रूढ़ प्रयोग–

इसके अंतर्गत मुहावरों से संबद्ध सभी क्षेत्र के चार विकल्प दिए जाते हैं, जिनमें निकटतम अर्थ सूचित करने वाले एक विकल्प का चयन करना होता है, जैसे– आँखें चार होना (क) प्रेम हो जाना, (ख) चारों तरफ देखना, (ग) मुलाकात होना, (घ) तीनों गलत है) यहाँ प्रयोग के रूप में प्रेम हो जाना शब्द उचित है।

विशेष–

यहाँ जितने प्रकार से प्रश्न निर्माण के उदाहरण दिए गए हैं, वे अंतिम नहीं हैं, और भी प्रश्न इस प्रकार के बनाए जा सकते हैं।

वर्तनी परीक्षण–

वर्तनी संबंधी प्रश्नों का निर्माण करने के पूर्व यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि वर्तनी परीक्षण केवल ऐसे शब्दों का ही किया जा सकता है, जिनमें वर्तनी संबंधी अशुद्धि होने की अधिक संभावना रहती है। शब्दों की वर्तनी में दोष ढूँढते समय इन चार आधारों को समझने का प्रयास करें।

1. वर्तनी का मुख्य आधार <u>उच्चारण</u> है। उच्चारण पर देशकाल का प्रभाव परिलक्षित होता है। इस दृष्टि से कभी–कभी शब्द के दो वर्तनी रूप भी विकसित हो जाते हैं, जैसे– बर्फ–बरफ, गर्म–गरम।
2. **भाषा का मानकीकरण**– इस संबंध में प्रश्न नहीं पूछना चाहिए।
   इस प्रक्रिया के अंतर्गत किसी शब्द के कई प्रचलित रूपों के स्थान पर एक रूप निर्धारित किया जाता है। उसी के प्रयोग पर अधिक बल दिया जाता है। उदाहरण–बुद्धि, बुद्‌धि, बुद्‌ध हिंदी में ये तीनों रूप मान्य हैं किंतु गये के स्थान पर <u>गए</u> ही शुद्ध होगा।
3. **शब्द रचना के नियम**– इस प्रक्रिया की अज्ञानता के कारण भी वर्तनी दोष आता है, जैसे– कवयित्री के स्थान पर कवियित्री, देवियों के स्थान पर देवीयों, दायित्व के स्थान दाइत्व।
4. **परम्परागत दोष**– 'ऋ' के स्थान पर 'रि', 'ष' के स्थान पर 'श', 'अपना' के स्थान पर 'अप्ना', 'देखना' के स्थान पर 'देख्ना'।

उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखकर कम से कम चार विकल्प वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के निर्माण में देना होता है, जिनमें एक सही विकल्प तथा तीन भ्रामक विकल्प देने होते हैं किंतु यहीं एक सावधानी बरतने की भी आवश्यकता है। भ्रामक विकल्पों की संख्या अत्यन्त सीमित है। अत: उपयुक्त भ्रामक विकल्प का चुनाव करते समय अधिक सावधानी बरतना चाहिए। उदा.– कृषि, किरसी, कृसि, कृशि– यहाँ 'कृषि' के ये सभी विकल्प भ्रामक हैं। अत: ऐसे भ्रामक विकल्पों से

यथासंभव बचना चाहिए। जो प्रश्न सहज रूप से बनें, उन्हें ही बनाना होगा। उससे अच्छा तो ऐसे चार विकल्प देना उचित होगा जिनमें एक सही विकल्प हो, तथा तीन गलत। इसमें से सही विकल्प छाँटने को कहा जाना चाहिए। ऐसे विकल्प एक-दूसरे से भिन्न तथा अत्यन्त सरल होते हैं, जैसे- टेबल, गर्म, ठंडा, कुनकुना।

रोचक तथ्य-

अर्थ की दृष्टि से-

1. सभी रंग सूचक शब्द (काला/लाल/हरा/बैंगनी आदि) एक अर्थ-क्षेत्र का निर्माण करते हैं।
2. कामना/इच्छा/अभिलाषा आदि एक-दूसरे अर्थ क्षेत्र के शब्द हैं।
3. टेढ़ा का सीधा, हाथ का शरीर, कामना की अभिलाषा आदि ऐसे शब्द है, जो समान, असमान अथवा संबद्ध शब्दों के साथ अपना संबंध स्थापित कर रहे हैं, जैसे-
   टेढ़ा-सीधा (विरुद्धार्थी शब्द)/असमान
   हाथ-शरीर (अंग-अंग संबंध)
   कामना-अभिलाषा (पर्याय/अर्द्ध पर्याय संबंधी)
   धोखा/दगा/छलकपट (सम्बद्ध शब्द)

अत: अर्थक्षेत्र के अंतर्गत बनने वाले ऐसे वस्तुनिष्ठ शब्दों का चयन करना उचित होगा, जो सही विकल्प के अर्थ के इतने निकट हों कि स्वाभाविक भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो।

विशेष-

मुहावरे का भी वाक्य में प्रयोग होता है किंतु अर्थ की व्यंजना की दृष्टि से उनका प्रयोग सोच-समझकर करना चाहिए, जैसे- टेढ़ी खीर (मुश्किल काम)। यहाँ टेढ़ी खीर का अर्थ व्यंजना मूलशब्दों के अर्थ से एकदम भिन्न है।

प्रयोग की दृष्टि से-

1. अच्छा विशेषण के साथ 'घर', 'लड़का', 'स्थान' आदि अनेक संज्ञाओं का प्रयोग संभव है, जैसे-अच्छा घर, अच्छा लड़का, अच्छा स्थान किंतु कुछ शब्द ऐसे भी हैं, जिनका प्रयोग संभलकर ही करना चाहिए, जैसे-'मंथर' शब्द गति की आकांक्षा करता है (मंथर गति) किंतु मंथर ध्वनि, मंथर संगीत आदि शब्दों का प्रयोग उचित नहीं है।
2. चिलचिलाती शब्द का धूप के साथ प्रयोग होता है, चिकनी चुपड़ी शब्द का बातों के साथ प्रयोग होता है, 'बासी' शब्द का प्रयोग खाद्य पदार्थों का सूचक होता है किंतु 'बासी घर' कहना उपयुक्त नहीं होगा।

03

परिशिष्ट

निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण

20वीं शताब्दी के प्रारंभ में शैक्षिक मापन के क्षेत्र में जिन तीन प्रमुख बिन्दुओं की ओर शिक्षाशस्त्रियों का ध्यान गया है, वे हैं–परीक्षण, मापन तथा मूल्यांकन।

आत्मनिष्ठ परीक्षाओं की कमियों को दूर करने के लिए सर्वप्रथम वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं का निर्माण किया गया किंतु शिक्षा अधिगम के मापन की दृष्टि से उपरोक्त दोनों ही परीक्षाएँ अपूर्ण रहीं अत: शिक्षक अधिगम के मापन की दृष्टि से यह प्रक्रिया दो रूपों में विकसित हुई–

1. निर्माणी परीक्षण (Formative test)
2. संकलित परीक्षण (Summative test)

निर्माणी परीक्षण

निर्माणी परीक्षण का संप्रत्यय पाठ्यवस्तु विश्लेषण के निर्धारण पर आधारित है। इस परीक्षण में तीन बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

क. शिक्षण अधिगम प्रभावशाली कैसे बने?

ख. प्रत्येक इकाई का गहन अध्ययन कर पाठ्य वस्तु की व्यापकता को अधिकारपूर्वक समझने का अवसर कैसे मिले?

ग. पाठ्यवस्तु द्वारा प्रत्येक इकाई द्वारा निर्धारित विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति कैसे हो, तथा छात्र के व्यवहार में तदनुसार अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तन कैसे आए?

इस दृष्टि से इस प्रकार के परीक्षण में अधिगम क्षेत्र में विद्यार्थी की कमजोरी का सही-सही पता लगाया जाता है। इसके आधार पर शैक्षिक विधियों में अपेक्षित सुधार किया जाता है। यह शिक्षक के बृहद् अनुभव का ज्ञान भी कराता है। बिना बृहद् अनुभव के शिक्षक निर्माणी परीक्षण के प्रश्नों की रचना विभिन्न चरणों में नहीं कर सकता।

संकलित परीक्षण

जब निर्माणी परीक्षण के आधार पर यह सुनिश्चित कर लिया जाता है कि छात्र ने निर्धारित पाठ्यवस्तु की इकाइयाँ समाप्त कर ली है, तब संकलित परीक्षण किया जाता है ताकि शिक्षक/छात्र के सामान्य स्तर का निर्धारण कर सके।

निर्माण तथा संकलित परीक्षण में अंतर-

1. निर्माणी परीक्षण की प्रक्रिया अधिगम के मध्य सम्पन्न की जाती है, जबकि संकलित परीक्षण इकाई अधिगम के अंत में प्रयुक्त होता है।
2. दोनों परीक्षण एक साथ नहीं चल सकते क्योंकि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों की कार्य प्रणाली तथा उद्देश्य भी भिन्न-भिन्न है।
3. निर्माणी प्रक्रिया निर्देशन प्रक्रिया पर आधारित है जबकि संकलित परीक्षण विषय के प्रति गुणवत्ता की जाँच करता है।
4. निर्माणी परीक्षण निरंतर तथा नियमित होता रहता है जबकि संकलित परीक्षण स्थाई तथा गुणवत्ता की जाँच पर आधारित होता है।
5. निर्माणी परीक्षण में छात्र तथा शिक्षक के मध्य सीधे संवाद होता है, जबकि संकलित परीक्षण में अधिगम परिणामों की लिखित जाँच पर आधारित होती है।
6. निर्माणी परीक्षण व्यक्तिगत अधिगम पर आधारित होता है, जबकि संकलित परीक्षण का उपयोग सम्पूर्ण छात्र के उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण के परिप्रेक्ष्य में किया जाता है।

निदानात्मक तथा उपचारात्मक परीक्षण के प्रारूप के निर्माणी परीक्षण की प्रक्रिया समझने में उपयोगी है। अत: हिन्दी विषय में क्रिया-विशेषण पर केन्द्रित सामग्री यहाँ प्रस्तुत की जा रही है। शिक्षण गण इसका गहराई से अध्ययन करें ताकि अपने से संबंधित अन्य विषयों पर निदानात्मक परीक्षण करने की मानसिकता बना सकें।

निदानात्मक-परीक्षण
(प्रश्न-पत्र)

कक्षा-10 **विषय- हिन्दी**

प्रकरण- अव्ययीभाव समास

निर्देश- 1. सभी प्रश्न स्वतंत्र हैं। अत: प्रश्न पत्र पढ़ते जाइए, और उत्तर लिखते जाइए।

2. सभी प्रश्न करना अनिवार्य है।

प्रश्न-1. निम्नांकित वाक्यों में अव्ययीभाव समास की परिभाषा दी गई है। सही परिभाषा के आगे (√) चिह्न लगाएँ-

(क) जिसमें दोनों पद प्रधान होते हैं, उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं।

(ख) जिसमें केवल दोनों पदों में से कोई एक पद अव्यय हो, और वह क्रिया विशेषण का काम करता हो, अव्ययी भाव समास होता है।

(ग) जिसमें केवल उत्तर पद प्रधान हो, वह अव्ययी भाव समास कहा जाता है।

(घ) जिसमें प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होता है, उसे अव्ययी भाव समाज कहते हैं।

प्रश्न-2. निम्नलिखित कथनों में सही स्थान पर (√) चिह्न लगाएँ- (क) अव्ययीभाव समास में प्रथम पद अव्यय होता है।

(ख) अव्ययीभाव समास में प्रथम पद विशेषण होता है।

(ग) अव्ययीभाव समास में द्वितीय पद संज्ञा रहता है।

(घ) अव्ययीभाव समास में शब्दों का प्रयोग क्रिया विशेषण की भाँति होता है।

प्रश्न-3.निम्नलिखित वाक्यों में अव्ययीभाव वाले शब्दों को रेखांकित कीजिए-

(क) उसने भरपेट भोजन किया।

(ख) उसका सामान हाथों हाथ बिक गया।

(ग) आज्ञानुसार काम करो।

(घ) उसे आजन्म कैद की सजा सुनाई गई।

प्रश्न-4.निम्नांकित शब्दों में जो शब्द अव्ययीभाव समास हो, उसको गोला लगा दें-

पीताम्बर, कपड़े-लत्ते, प्रतिध्वनि, हाथ-पैर, रोग-मुक्त, निडर, धीरे-धीरे, धड़ाधड़।

प्रश्न-5. अव्ययीभाव समास तथा कर्मधारय समास में क्या अंतर है।

प्रश्न-6. अव्ययीभाव समास की रचना हिन्दी में प्राय: संज्ञा तथा अव्ययों की द्विरुक्ति

से होती है, निम्नांकित शब्दों में उनके नाम लिखिए-

(क) दिनोंदिन (ख) व्यर्थ (ग) जल्दी, जल्दी (घ) धड़ाधड़

प्रश्न-7. संज्ञा द्विरुक्ति वाले अव्ययीभाव के दो उदाहरण लिखिए।

प्रश्न-8. अव्ययों की द्विरुक्ति वाले अव्ययीभाव के दो उदाहरण लिखिए।

प्रश्न-9. ऐसे दो सामासिक शब्द लिखिए जिसमें अव्यय+संज्ञा का प्रयोग एक साथ हुआ हो।

प्रश्न-10. ऐसे दो सामासिक शब्द लिखिए जिसमें अव्यय+विशेषण का प्रयोग एक साथ हुआ हो।

प्रश्न-11. ऐसे दो सामासिक शब्द लिखिए जिसमें अव्यय+क्रिया का प्रयोग एक साथ हुआ हो।

उत्तर तालिका- प्रश्न

1. (ख) 2. (क)(ग)(घ)

3. भरपेट, हाथों-हाथ, आज्ञानुसार, आजन्म 4. प्रतिध्वनि, निडर, धीरे-धीरे, धड़ाधड़

5. जिस समास पद में दोनों पदों में से कोई एक पद अव्यय हो, और वह क्रिया विशेषण का काम करता हो, उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं। जिस समास पद में पूर्व पद विशेषण हो तथा उत्तर पद विशेष्य हो अथवा जहाँ दोनों पदों में उपमेय-उपमान का संबंध हो वहाँ कर्मधारय समास होता है।

6. (क) संज्ञा की द्विरुक्ति (ख) संज्ञा की द्विरुक्ति (ग) अव्ययों की द्विरुक्ति (घ) अव्ययों की द्विरुक्ति।

7. सालों साल, बीचों बीच 8. घड़ी-घड़ी 9. प्रत्यक्ष, भरपेट

10. प्रत्येक, यथाशक्ति

11. भरसक (शक्तिभर) यथाविधि।

प्रश्न पत्र विश्लेषण

प्रश्न	विषय	उद्देश्य	अपेक्षित परिवर्तन
1.	परिभाषा	ज्ञान/प्रत्यास्मरण	अंतर समझकर तुलना करेंगे
2.	परिभाषा	ज्ञान/अर्थग्रहण	महत्वपूर्ण बिन्दुओं को समझेंगे
3.	उदाहरण	प्रत्यभिज्ञान/अर्थग्रहण	वाक्यों में से अव्ययी भाव समास के पदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे
4.	उदाहरण	प्रत्यभिज्ञान	अव्ययी भाव के उदाहरणों की जाँच कर सकेंगे
5.	परिभाषा	प्रत्यास्मरण	दो समासों के बीच अंतर जान सकेगा

6.	दो भेदों का अंतर जानना	प्रत्यभिज्ञान	अव्ययी भाव के उदाहरणों में अंतर जान सकेंगे
7.	उदाहरण	अर्थग्रहण	पहचान के अनुसार उदाहरण दे सकेंगे
8.	उदाहरण	अर्थग्रहण	पहचान के अनुसार उदाहरण दे सकेंगे
9.	उदाहरण	अर्थग्रहण	पहचान के अनुसार उदाहरण दे सकेंगे
10.	उदाहरण	अर्थग्रहण	पहचान के अनुसार उदाहरण दे सकेंगे
11.	उदाहरण	अर्थग्रहण	पहचान के अनुसार उदाहरण दे सकेंगे

विश्लेषण का निर्णय तथा उपचारात्मक शिक्षण

इस प्रश्न पत्र में अव्ययीभाव समास को केन्द्रित करके उसके ज्ञान, अर्थग्रहण एवं प्रयोग पर आधारित प्रश्न बनाए गए हैं। निदानात्मक परीक्षण के बाद जिस प्रकार की कमजोरी छात्र में अनुभव की जाए, उसका वैयक्तिक रूप से उपचारात्मक शिक्षण किया जाए। उपचारात्मक शिक्षण के बाद पुन: निदानात्मक परीक्षण कर लिया जाए। यहाँ उपचारात्मक शिक्षण हेतु कुछ अभ्यास चारिकाएँ नमूने के रूप में दी जा रही हैं जिससे आवश्यकतानुसार छात्रों की उपलब्धि के अनुसार ऐसी अन्य अभ्यास चारिकाएँ स्वयं बनाएँ और शिक्षण करें।

अभ्यास चारिका-1

कारण- छात्र अव्ययीभाव समास की परिभाषा तथा उदाहरणों को ठीक से समझ नहीं पाते हैं।

उपचार- (क) अध्यापक श्यापट पर निम्नांकित परिभाषा लिखेगा-

'जिस समास में दोनों पदों में से कोई एक पद अव्यय हो, और वह क्रिया विशेषण का कार्य करता हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।'

(ख) अध्यापक उपयुक्त परिभाषा को तीन बार लिखने हेतु छात्र को कहेगा। कॉपी में लिखने के बाद कोई बिन्दु स्पष्ट नहीं हो रहा है, तो प्रश्नों द्वारा शंका का समाधान किया जाएगा।

अभ्यासचारिका-2

कारण- अव्ययीभाव समास की पहचान छात्र अच्छी तरह नहीं कर पाते हैं। अव्ययीभाव के भेद एवं प्रयोग को समझना।

उपचार- अध्यापक आवश्यकतानुसार श्यामपट पर कुछ उदाहरण देकर छात्रों को अव्ययीभाव के प्रयोग निम्नानुसार दिखाएगा-

(क) संज्ञा द्विरुक्ति वाले शब्द, जैसे घर-घर, क्षण-क्षण, रातों-रात, हाथों-हाथ।

(ख) अव्ययों की द्विरुक्ति वाले शब्द, जैसे बीचों-बीच, धीरे-धीरे, पहले-पहल।

(ग) अव्यय+संज्ञा शब्दों का उदाहरण-प्रत्यक्ष, भरपेट।

(घ) अव्यय+विशेषण शब्दों का उदाहरण-प्रत्येक, यथाशक्ति।

(ङ) अव्यय+क्रिया शब्दों का उदाहरण-भरसक, यथाविधि।

आवश्यकतानुसार इन शब्दों के उदाहरण निम्नानुसार प्रारूप बनाकर कॉपी में लिखने को

भी कहेगा–

संज्ञा द्विरुक्ति (अव्यय+विशेषण) | अव्ययों की द्विरुक्ति (अव्यय+क्रिया) | अव्यय+संज्ञा

अभ्यासचारिका–3

कारण– अधिकांश छात्र वाक्यों में अव्ययी भाव समास की पहचान करने में असमर्थ रहते हैं।

उपचार–1 शिक्षक निम्नांकित चार्ट द्वारा कुछ वाक्यों को छात्रों से मौन वाचन करने को कहेगा।

(क) उसने भरपेट भोजन किया

(ख) उसका सामान हाथों–हाथ बिक गया।

(ग) उसे आजन्म कैद की सजा सुनाई गई।

उपचार–2 शिक्षक एक तालिका द्वारा समास विग्रह के आधार पर अव्ययीभाव की रचना को छात्रों के समक्ष स्पष्ट करेगा, तथा कर्मधारय समास के प्रयोग को भी स्पष्ट करेगा।

अव्ययी भाव समास की रचना

(क) उसने भरपेट भोजन किया

भरपेट में प्रथम पद भर अव्यय है, तथा पेट शब्द संज्ञा है।

(ख) मैंने इस काम को सालभर करने का प्रयत्न किया।

(यहाँ सालभर का अर्थ पूरे साल तक। साल शब्द में भर शब्द द्वितीय पद के रूप में अव्यय का प्रयोग हुआ, जिससे सालभर शब्द बना है। क और ख दोनों उदाहरणों में भर शब्द क्रिया विशेषण का सूचक है।)

उपचार–3 शिक्षक अव्ययी भाव के अन्य शब्दों को लिखकर अभ्यास करवाएगा।

संज्ञा द्विरुक्ति	अव्ययों की द्विरुक्ति	अव्यय+संज्ञा	अव्यय+विशेषण	अव्यय+क्रिया

04

परिशिष्ट

स्व-मूल्यांकन/परीक्षोपयोगी प्रश्न

इकाई-1 शब्द परिचय

1. शब्द किसे कहते हैं?
2. पद किसे कहते हैं?
3. शब्द कब पद कहलाता है?
4. व्याकरणिक शब्द किसे कहते हैं? उदा. सहित स्पष्ट करें।
5. कोशीय शब्द किसे कहते हैं? उदा. सहित स्पष्ट करें।
6. व्याकरणिक शब्द तथा कोशीय शब्द में अन्तर बताइए।
7. पद के कितने भेद है?
8. पद-बंध किसे कहते हैं?

इकाई-2 शब्द-उत्पत्ति

1. तत्सम शब्द किसे कहते हैं? उदा. सहित स्पष्ट कीजिए।
2. तद्भव शब्द किसे कहते हैं? उदा. सहित स्पष्ट कीजिए।
3. देशज शब्द किसे कहते हैं? उदा. सहित स्पष्ट कीजिए।
4. विदेशी शब्द किसे कहते हैं? उदा. सहित स्पष्ट कीजिए।
5. संकर शब्द किसे कहते हैं? उदा. सहित स्पष्ट कीजिए।
6. निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए।
   (क) वार्ता.................
   (ख) दिवस.................
   (ग) पक्षी.................
   (घ) घृत.................
   (ड) जिह्वा.................
7. निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।
   (क) आग.................
   (ख) सूरज.................

(ग) दूध.................

(घ) गाँव.................

(ङ) रात.................

8. निम्नलिखित में से तद्भव, तत्सम, देशी, विदेशी और संकर शब्द छाँटिए।
अंगुष्ठ, कुम्हार, पेट, बोतल, गरीब, गाड़ी, ऊँचा, चन्द्र, कटु, आँख, थैला, आलपीन, तूफान, अक्ष, कडुआ, पगड़ी,

इकाई-3 शब्द-रचना

रूढ़-यौगिक-

1. रूढ़ शब्दों की परिभाषा देते हुए उनके पाँच उदा. दीजिए।
2. मूल शब्द तथा रूढ़ शब्द में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
3. यौगिक और योगारूढ़ शब्दों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
4. निम्नलिखित शब्दों में से रूढ़, यौगिक और योग रूढ़ शब्दों को छाँटिए-

(क) राष्ट्राध्यक्ष..

(घ) आदमी..

(ख) अनाथालय..

(ङ) दूध वाला..

(ग) नीलकंठ...

उपसर्ग-

1. उपसर्ग की परिभाषा देते हुए दो उदा. द्वारा अपनी बात स्पष्ट कीजिए।
2. शब्द रचना में उपसर्ग की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
3. दो उपसर्गों का एक साथ प्रयोग हुआ हो, ऐसे चार शब्द बताइए।
4. निम्नलिखित उपसर्ग से दो-दो शब्द बताइए।
परा, प्रति, भर, सह
5. निम्नलिखित शब्दों के साथ कोई उपसर्ग लगाइए तथा उनके अर्थ भी लिखिए-
होनी, खिल, गुन शासन,
6. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग को अलग करके खाली स्थान भरो।

शब्द	**उपसर्ग**
अनाचार	....
अनुरूप	....
निर्गुण	....
कमजोर	....
पुरस्कार	....

प्रत्यय-

1. प्रत्यय किसे कहते हैं? उदा. सहित समझाइए।

2. शब्द निर्माण में प्रत्ययों की भूमिका उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
3. उपसर्ग तथा प्रत्यय में अन्तर उदा. सहित स्पष्ट कीजिए।
4. दो प्रत्ययों का एक साथ प्रयोग हुआ हो, ऐसे चार शब्द लिखिए।
5. कृत तथा तद्धित प्रत्यय का अन्तर स्पष्ट कीजिए।
6. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय छाँटिए।

शब्द	**प्रत्यय**
भारतीयता	भारत+
सुनहरा	....
क्रोधी	....
ससुराल	....

7. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाकर नया शब्द बनाइए।

लोहा	....	भला	....
बूढ़ा	....	हँस	....

8. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्ययों को अलग कीजिए।

	मूल शब्द	**प्रत्यय**
खिलाड़ी	....	....
दूसरा	....	....
सुंदरता	....	....
बपौती	....	....

9. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग तथा प्रत्यय छाँटिए-

समास

1. समास किसे कहते हैं?
2. संधि और समास में अन्तर बनाइए।
3. समास के कितने भेद होते हैं, उदा. सहित समझाइए।
4. कर्मधारय तथा बहुब्रीहि समास में अन्तर बताइए।
5. द्विगु और द्वंद्व समास में अन्तर बताइए।

इकाई-4

1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ लिखते हुए उन्हें वाक्य में प्रयोग कीजिए-
   अलि, विधि, भाग, हार, उत्तर, तीर
2. नीचे दिए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।
   पृथ्वी, कपड़ा, असुर, वायु, मित्र
3. नीचे लिखे शब्दों के दो-दो विलोम शब्द लिखिए।
   आदर, अनुकूल, पंडित, बलवान, जय
4. नीचे लिखे वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए।

1 जिसने ऋण चुकाया हो। ....

2 जानने की इच्छा। ....

3 जो किसी का पक्ष न ले। ....

4 जो पहले न पढ़ा हो। ....

5 आँख के सामने होने वाला ....

5. निम्नलिखित शब्दों-युग्मों के अन्तर स्पष्ट कर वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) पर्याय युग्म

काम-काज मार-पीट

बाल-बच्चे थका-माँदा

(ख) विपरीतार्थक युग्म

आना-जाना हानि-लाभ

आय-व्यय यश-अपयश

(ग) सार्थक निरर्थक युग्म

झूठ-मूठ चुप-चाप

कागज-वागज मिठाई-विठाई

(घ) पुनरुक्त शब्द युग्म

गाँव-गाँव काले-काले

चलते-चलते कोई-न-कोई

(ङ) श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

अंश-अंस तरंग-तुरंग

चपल-चपला अपेक्षा-उपेक्षा

इकाई-5

1. विकारी शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।
2. अविकारी शब्दों से उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

इकाई-6

1. पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता एवं महत्व बताइए।
6. निम्नलिखित शब्द युग्मों का आशय स्पष्ट कर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए?

वर्ष 2009

अज्ञ-विज्ञ	कोश-कोष
राग-विराग	भूत-प्रभूत
प्रदर्शनी-प्रियदर्शनी	विलक्षण-विचक्षण
सम्मति-सहमति	प्रवेश-परिवेश
सूचना-अधिसूचना	विरोध-प्रतिरोध

वर्ष 2008

अस्मत–अस्मिता	चिर–चीर
बहार–बाहर	दिया–दीया
सड़क–सरक	उत्पात–उत्पा
अनुभूति–अनुमति	विलग–विकल
प्रमाण–परिणाम	अंक–अंग
संताप–संतान	

वर्ष 2006

अथक–अकथ	अतुल–अतल
कंकाल–कंगाल	दमन–दामन
निशा–नशा	उपेक्षा–अपेक्षा
धरा–धारा	उद्धार–उधार
प्रसाद–प्रासाद	बहु–बहू

वर्ष 2005

अनल–अनिल	कृतज्ञ–कृतघ्न
अविराम–अभिराम	कुल–कूल
तरिन–तरणी	क्षति–क्षिति
परिषद–पारषद	नियत–नियति
जलद–जलधि	अस्तु–अस्त

वर्ष 2004

आवृत्ति–पुनरावृत्ति	अवस्था–आयु
विज्ञान–ज्ञान	श्रम–श्रमिक

वर्ष 2003

अपकार–उपकार	अन्न–अन्य
अवधि–अवधी	कान्ति–क्रांति
चरम–चर्म	चिर–चीर
ओर–और	प्रसाद–प्रासाद
सुन–सून	धरा–धारा

वर्ष 2002

प्रेषित–प्रोषित	सवर्ग–सुवर्ग
अपमान–उपमान	अतल–अतुल
किला–कीला	चिता–चिंता
तरणी–तरुणी	ढलाई–ढिलाई
पवन–पावन	आधि–आधी

वर्ष 2000

नारी–नाड़ी	.....

वर्ष 1998

मान–अपमान	मुख–आमुख
सज्जन–साजन	मूल्य–मूल्यांकन
प्राचीन–नवीन	झूठा–जाली
पृष्ठांकन–अनुमति	अनुशासन–प्रशासन
श्रद्धा–दया	भाई–बहन

वर्ष 1997

अपेक्षा–उपेक्षा	उदार–उधार
मौन–मान	घर–मकान
सज्जन–साजन	वाद–अपवाद
प्रिय–प्रिया	मुख–आमुख
मर्त्य–मृत्यु	चरण–चारण

वर्ष 1996

अनुशासन–प्रशासन	संगठन–समुदाय
राज भाषा–	आवेदन–प्रतिवेदन

हिंदी व्याकरण : पद व्यवस्था एवं व्यवहार

01

भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

I भाषा

किसी समारोह में संस्कृत के एक विद्वान से मेरी भेंट हुई। भारत की विशेषताओं पर चर्चा करते हुए उन्होंने 'भारत' शब्द की विवेचना इस प्रकार की–

'भा+रत अर्थात् जो ज्ञान (भा) में 'रत' है, वही भारत है।' उनकी बात सुनकर मुझे अचानक ध्यान में आया कि क्यों न इसे इस प्रकार से कहा जाए।

'भा+रत अर्थात् जो भाषा में 'रत' है, वही भारत है।' संस्कृत हमारी पूर्वजों की दी हुई भाषा है। कहना अत्युक्ति नहीं कि विश्व को भाषा की पहचान सर्वप्रथम भारत ने ही कराई है। ज्ञान का सूर्योदय सर्वप्रथम इसी देश से हुआ है।

भाषा के संदर्भ में 'भारत' शब्द की नई व्याख्या सुनकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई, और वे चर्चा को आगे बढ़ाते हुए कहने लगे–

भाषा का शब्द कोशीय अर्थ है– मुख से उच्चरित होने वाली वाणी, बोली, वाक्य। 'वाक्' शब्द भी वाणी और मुख से संबंधित है जिससे बोलने की क्रिया होती है। वह भी 'भाषा' का पर्यायवाची शब्द माना गया है।

अतः जब मनुष्य ने अपने मन के भावों को दूसरों पर प्रकट करने के लिए सर्वप्रथम वाणी का प्रयोग किया होगा, तो उसे ही **भाषा** कहा गया होगा। 'भाषा' शब्द संस्कृत के भाष् शब्द से बना है जिसका अर्थ है–वाणी को व्यक्त करना। मनुष्य के बीच परस्पर भावों, विचारों और इच्छाओं की अभिव्यक्ति के साधन के रूप में हमारे पूर्वजों की यह अपूर्व देन है। लगता है जिस प्रकार 'ब्रह्म' ने अव्यक्त रूप से पुरुष एवं व्यक्त रूप से प्रकृति का रूप धारण कर इस संसार को उत्पन्न किया है, उसी प्रकार कर्ता और क्रिया ने मिलकर 'शब्द ब्रह्म' की सहायता से भाषा का अनोखा संसार रचा है। भाषा के आधार पर ही हम ईश्वर द्वारा रचे गए संसार को समझने का प्रयत्न करते हैं।

ज्यों–ज्यों संस्कृति और सभ्यता का विकास होता जाता है, त्यों–त्यों भाषा का भी विकास होता जाता है। आज हमें भारतीय संस्कृति और सभ्यता के विकास का जो रूप दिखाई दे रहा है, उससे भाषा के विकास की कहानी भी सहज रूप से जुड़ी हुई है।

कोई वस्तु लेना हो, या देना हो, कोई शिकायत करना हो, या सुझाव देना हो, अध्ययन करना हो, या अध्यापन–कार्य, किसी कार्य में सहमति देना हो, या असहमति, सर्वत्र भाषा की आवश्यकता पड़ती है।

रोचक तथ्य–

1. कोई भी भाषा केवल वर्ण, शब्द अथवा वाक्य का मात्र संग्रह नहीं होती, वह एक सांस्कृतिक–यात्रा का प्रतीक भी होती है। हमारी संस्कृति आज जो विश्व में सर्वोपरि मानी जाती है, उसमें भाषा ही मुख्य घटक है।
2. धूमिल ने कहा हैं–भाषा आदमी होने की तमीज हैं। इस वाक्य को यदि ठीक से समझना है तो इसे इस प्रकार पढ़ें– बदतमीज आदमी की भाषा बदतमीज होती है।

II भाषा और बोली

भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। हमारे देश में सैकड़ों बोलियाँ हैं। बोलियाँ भाषा के विकास में कारगर भूमिका निभाती हैं।

बोलना भाषा का पहला मौखिक रूप है। बोलते समय हम अपने मनोभावों को मुख से प्रकट हैं। इससे स्पष्ट होता है कि जिस भाषा के लिए केवल मुख का ही उपयोग किया जाता है, उसे मौखिक भाषा कहते हैं। हर बच्चा सर्वप्रथम मौखिक भाषा का ही उपयोग करता है। जन्म से वह किसी भाषा का उच्चारण नहीं करता। प्राय: प्रत्येक घर में माता ही प्रथम गुरु के रूप में बच्चों को भाषा बोलना सिखाती है। इसलिए भाषा मातृभाषा भी कहलाती है। जिस क्षेत्र में जिस भाषा का प्रयोग होता है, उस क्षेत्र की वही मातृभाषा बन जाती है, जैसे–

करमबेलकर मराठी बोलते हैं।
नायडू तमिल बोलते हैं।
अमृत कौर पंजाबी बोलती है।
सेठ नथमल राजस्थानी बोलते हैं।
इंदुमती गुजराती बोलती है।
ममता बंगाली बोलती है।
रामचंदानी सिंधी बोलता है।
रामप्रसाद उड़िया बोलता है।
लालू बिहारी बोलता है।

इस प्रकार संसार में अनेक प्रकार की भाषाएँ बोली जाती है। भारत में भी अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। हिंदी भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली, और समझी जाने वाली भाषा है।

रोचक तथ्य–

1. मौखिक शब्द– मुख+इक (प्रत्यय) से मिलकर बना है।
2. भारत में लगभग 600 से अधिक बोलियाँ बोली जाती हैं।
3. हर बोली के लोग दूसरी बोली के लोगों के सम्पर्क में आते हैं।
4. बोली व्यक्ति को जड़ों की ओर अर्थात् जमीन से जोड़ती है, जबकि भाषा माध्यम बनकर दूसरी बोलियों एवं भाषा से जोड़ती है।

कोई भी बोली कालान्तर में विकसित होकर भाषा का रूप ग्रहण कर सकती है। हिंदी भाषा जिसे हम आज बोलते हैं, वह एक समय बोली ही थी। इसका विकास खड़ी बोली के रूप

में हुआ है।

जब एक बोली के लोग, दूसरी बोली के लोगों से सम्पर्क में आते हैं, तो उनको एक सम्पर्क भाषा की आवश्यकता है। यह व्यवहार-भाषा ही मातृभाषा के निकट होती है। हिंदी भाषा को व्यवहार-भाषा कहा जा सकता है। हिंदी का प्रयोग करने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने क्षेत्र में अपनी मातृभाषा (बोली) तथा व्यवहार-भाषा (हिंदी) दोनों से जुड़ा है। शिक्षा के क्षेत्र में मानक भाषा का ही उपयोग होता है। चूँकि हिंदी विभिन्न बोली-समूहों के बीच एक व्यवहार भाषा है, इसलिए इसे मानक भाषा का रूप प्राप्त है।

14 सितम्बर 1949 में हिंदी को संविधान सभा द्वारा संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया है, इसलिए प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है।

अब तक अनेक राज्यों ने हिंदी को राजभाषा घोषित किया है जिनमें प्रमुख हैं- उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, चंडीगढ़ (संघ शासित क्षेत्र), मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, बिहार, झारखण्ड, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश।

हिंदी का व्यवहार क्षेत्र इन राज्यों तक ही सीमित नहीं है। पूरे भारत की यह सम्पर्क भाषा तो है ही, इसे बोलने-समझने वाले अनेक देश भी है, जिनमें प्रमुख हैं-मारीशस, फिज़ी, ट्रिनिडाड, गुआना, सूरीनाम, नेपाल, बंगलादेश, अफगानिस्तान तथा खाड़ी प्रदेश। इन देशों की लगभग पचास प्रतिशत आबादी हिंदी समझती है, और बोलती है।

विश्व के 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। हजारों विदेशी हिंदी सीखने प्रतिवर्ष भारत आते हैं। इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने का प्रयास भी चल रहा है।

III भाषा और लिपि

जिस प्रकार किसी भाषा का उच्चारण ध्वनि पर आधारित होता है, उसी प्रकार भाषा का लेखन, लिपि पर आधारित होता है। कोई भी भाषा बिना लिपि के जीवित नहीं रह सकती।

जब हम अपने विचार दूरवर्ती मनुष्यों के पास पहुँचाना चाहते हैं, अथवा भविष्य के लिए संग्रह करना चाहते हैं, तो भाषा के लिए लिपि की आवश्यकता होती है। भाषा के अभाव में कोई भी लिपि रेखा और बिन्दुओं के अतिरिक्त कुछ नहीं। आड़ी-टेढ़ी रेखाएँ मात्र हैं। इस प्रकार भाषा के दो रूप हैं-एक कान की भाषा, जो उच्चारण (ध्वनि) की भाषा है, और एक आँख की भाषा, जो लिपि पर निर्भर होती है।

पुस्तकें, दस्तावेज, पत्रिकाएँ भाषा के लिखित रूप ही हैं। उनका उपयोग लम्बे समय तक किया जा सकता है। आजकल फैक्स, कम्प्यूटर आदि को भी भाषा का लिखित रूप कहा जा सकता है।

हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है। यह वैज्ञानिक तथा निर्दोष लिपि मानी गई है।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि विश्व में ऐसी अनेक भाषाएँ हैं, जो बोली तो जाती हैं किंतु उनका लिखित रूप उपलब्ध नहीं है। ठीक इसके विपरीत विश्व में ऐसी कोई भाषा नहीं है, जिसका लिखित रूप तो है किंतु उच्चारित रूप न हो।

प्रत्येक भाषा की अपनी-अपनी लिपियाँ हैं। भारत की प्रमुख भाषाएँ तथा उनकी

लिपियों के नाम इस प्रकार है–

भाषा	लिपि	भाषा	लिपि
संस्कृत	देवनागरी	पंजाबी	गुरुमुखी
हिंदी	देवनागरी	उर्दू	फारसी
नेपाली	देवनागरी	अंग्रेजी	रोमन
मराठी	देवनागरी		

रोचक तथ्य–

1. लिपि शब्द 'लिप्' धातु से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है लीपना।
2. एक ही शब्द को विभिन्न लिपियों में लिखा जा सकता है।
3. लिखित रूप में उपलब्ध प्राचीन ग्रंथों से किसी भी देश के इतिहास, संस्कृति तथा सभ्यता का परिचय प्राप्त किया जा सकता है।
4. लेखन के लिए वर्तनी का ज्ञान आवश्यक है।

IV भाषा और व्याकरण

भाषा संबंधी वह शास्त्र जिसके द्वारा किसी भाषा का शुद्ध बोलना और लिखना सीखा जाता है, व्याकरण कहलाता है। इस प्रकार भाषा और व्याकरण का परस्पर संबंध अटूट है। बिना व्याकरण के नियमन के भाषा का शुद्ध प्रयोग हम नहीं कर सकते, जैसे– 'मैंने चाय पीया।' हिंदी भाषा में यह वाक्य– प्रयोग अशुद्ध माना जाएगा। 'मैंने चाय पी' वाक्य ही शुद्ध है। क्योंकि यहाँ क्रिया का पीया रूप अशुद्ध है। स्त्रीलिंग 'चाय' के साथ क्रिया का रूप 'पी' होगा। 'दूध' पुल्लिंग है, अत: हम कह सकते हैं कि 'मैंने दूध पिया।' ऐसे नियमों की व्याख्या करना व्याकरण का कार्य है।

प्राचीन भारत में व्याकरण शब्द से भाषा के सम्पूर्ण क्षेत्र का अध्ययन किया जाता था। उदाहरण के लिए भाषिक प्रयोगों की शुद्धता और शब्दों की उत्पत्ति आदि से ऊपर उठकर विश्व के पीछे विद्यमान प्रकाश सत्ता का अध्ययन भी व्याकरण के अंतर्गत होता था किंतु वर्तमान में पाश्चात्य व्याकरण की परंपरा को स्वीकार करते हुए केवल वर्ण, शब्द तथ वाक्य से संबंधित विषयों तक ही व्याकरण का अध्ययन सीमित हो गया है।

व्याकरण के विभाग

वर्ण विभाग : भाषा में ध्वनियाँ होती हैं। ध्वनियों के लिखित रूप को वर्ण कहते हैं। व्याकरण में उनके उच्चारण, उच्चारण स्थान आदि पर विचार किया जाता है। इसे वर्ण विचार कहते हैं।

शब्द विभाग : वर्णों से शब्दों की रचना होती है। शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होते हैं, तो उन्हें पद कहते हैं। शब्द और पद का विचार शब्द–विभाग में अध्ययन का मुख्य अंग है।

वाक्य विभाग : शब्दों से वाक्यों की रचना होती है। अत: वाक्य रचना, वाक्य भेद, वाक्यांश, वाक्य संश्लेषण एवं विश्लेषण तथा विराम चिह्नों के प्रयोग आदि को वाक्य विचार के अंतर्गत लिया जाता है।

जैसा कि उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि वाक्य की रचना व्याकरण के नियमों पर आधारित है। प्रत्येक वाक्य की रचना के आठ वाग्भाग हैं। आगे हम इन्हीं पर अध्ययन करेंगे। वे आठ भाग हैं- 1. संज्ञा, 2. सर्वनाम, 3. विशेषण, 4. क्रिया, 5. क्रिया विशेषण, 6. संबंधबोधक अव्यय, 7. समुच्चय बोधक अव्यय, 8. विस्मयादि बोधक।

रोचक तथ्य-

1. वेदों को समझाने के लिए वेदांगों की रचना की गई है, जिनमें छः प्रमुख हैं-शिक्षा, छंद, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और कल्प।
2. भर्तहरि के अनुसार इन वेदांग में व्याकरण प्रमुख है। अत: यह कहना गलत है कि व्याकरण रचना की परंपरा अंग्रेजों से प्रारंभ हुई।
3. आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जिस तरह की यह हमारी दुनिया है, उसी तरह शब्दों की भी दुनिया है। जिस तरह हम हमारे नाम से पहचाने जाते हैं, उसी तरह शब्दों की दुनिया में भी आठ परिवार हैं, जिन्हें हम—

1. संज्ञा	2. सर्वनाम
3. विशेषण	4. क्रिया
5. क्रिया-विशेषण	6. संबंध बोधक
7. समुच्चय बोधक	8. विस्मयादि बोधक

कहते हैं। इस परिवार में जितने व्यक्ति, स्थान, वस्तु अथवा भाव हैं, उनके सबके अलग-अलग नाम हैं। जिस प्रकार हम में स्त्री-पुरुष हैं, शब्दों में भी स्त्री-पुरुष हैं। इसी प्रकार घर में एक सदस्य है, या एक से अधिक सदस्य हैं, उसी प्रकार शब्दों की संख्या बताने के लिए वचन होते हैं।

परिवार में एकता रखने का काम सर्वनाम का है। व्यक्ति जब अपने नाम का प्रयोग छोड़कर एक-दूसरे से संवाद करता है, तो बोलते समय अपने को 'मैं' कहता है, जिससे बात करते हैं, उसे 'तुम', और जिसके विषय में बात करते हैं, उसे 'वह' कहते हैं। इस प्रकार परिवार में सर्वनाम सामाजिक भावना का विकास करता है।

परिवार में कुछ सदस्य सद्गुणी तथा कुछ दुर्गणी भी होते हैं। उनकी पहचान उनके गुणों की विशेषता से होती है, जिसे विशेषण कहते हैं। किंतु घर में क्रिया कभी किसी काम को अकेले भी करती है, और कभी साथ मिलकर। दूसरे के साथ मिलकर काम करते समय क्रिया में इस प्रकार कुछ विशेषता आ जाती है जिसे क्रिया-विशेषण कहते हैं।

इस परिवार में आपसी सहयोग बनाए रखने का काम संबंध बोधक एवं समुच्चय बोधक का है। परिवार के समाचार लेना और देना विस्मयादि बोधक का काम है।

आइए, अब हम इस परिवार के विषय में और भी कुछ जानने का प्रयास करें।

‖02‖

विकारी शब्द

I संज्ञा

व्याकरण पर विचार करते समय सर्वप्रथम 'संज्ञा' शब्द का परिचय मिलता है। (संसार की प्राय: सभी भाषाओं में संज्ञा शब्दों की भरमार है। बता सकते हैं क्यों? क्योंकि नाम के बिना संसार का व्यवहार नहीं चल सकता।) अच्छा, ऐसी कोई वस्तु सोचकर बताओ जिसका नाम नहीं हो।

व्याकरण की भाषा में नाम को ही संज्ञा कहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव का कोई न कोई नाम अवश्य होता है किंतु आश्चर्य है, स्वयं के लिए हम अपने नाम का उपयोग नहीं कर पाते। हमारे नाम का प्रयोग सदैव दूसरे ही करते हैं। हाँ! यदि कोई पूछे- आपका नाम क्या है? तो उत्तर में हम उसका प्रयोग अवश्य करते हैं।

संसार में जितने भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष पदार्थ एवं भाव हैं, प्राय: सभी को किसी न किसी नाम से ही जाना जा सकता है। कोई ऐसा पदार्थ या भाव नहीं, जिसका नाम न हो, किंतु ध्यान रहे संज्ञा स्वयं में वस्तु नहीं, उसका नाम बताने वाला शब्द है। यही कारण है कि जिन वस्तुओं को हम देख नहीं सकते, किंतु अनुभव करते हैं, उनके भी हम नाम बता सकते हैं। उदाहरण के लिए कठोरता व्यक्ति में भी हो सकती है, और पदार्थ में भी। वह दोनों में हो सकती है किंतु पदार्थ की कठोरता को तो हम अनुभव कर सकते हैं, व्यक्ति की कठोरता का अनुभव हम नहीं कर सकते। व्यक्ति की कठोरता एक भाव है, जो कि अमूर्त है। उसे हम न तो देख सकते हैं, और न स्पर्श कर सकते हैं। अपने मन में केवल उसका अनुभव कर सकते हैं। कठोरता धर्म रखने वाले प्राणी अथवा पदार्थ को भले ही हम देख सकते हैं, तथा स्पर्श कर सकते हैं। अत: कठोरता से जिस भाव का बोध होता है, उसे हमने कठोरता नाम दिया।

एक अन्य उदाहरण से यह बात और अधिक स्पष्ट हो सकती है। 'पुस्तक' के नाम से हम सभी परिचित हैं। वह जिस वस्तु से बनी है, उसको हम संज्ञा नहीं कहते हैं, हम केवल उसके नाम को ही संज्ञा कहते हैं।

परिभाषा-संज्ञा शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- सम्+ज्ञा। सम् का अर्थ है-सम्यक् अर्थात् सम्पूर्ण तथा 'ज्ञा' का अर्थ है-ज्ञान। अत: जिससे किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु अथवा भाव की सम्पूर्णता का ज्ञान (बोध) हो, उन शब्दों को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के तीन भेद हैं-

1. व्यक्तिवाचक, 2. जातिवाचक, 3. भाववाचक

विशेष–

1. लगता है, सर्वप्रथम संसार में एक व्यक्ति ने ही जन्म लिया होगा। वह जन्म किसी एक स्थान पर लिया होगा तथा सर्वप्रथम उसने किसी एक वस्तु का ही प्रयोग किया होगा। व्यक्ति के रूप में व्यक्तिवाचक संज्ञा यही कुछ कहती है। बाद में स्त्री–पुरुष का भेद सामने आया। इसलिए पुरुषलिंग–स्त्रीलिंग की कल्पना की गई। कई पुरुष–स्त्री मिलकर मनुष्य जाति बने। इसलिए जातिवाचक संज्ञा अस्तित्व में आई। जाति में परस्पर भावों के आदान–प्रदान के कारण भाववाचक संज्ञा की पहचान हुई। इसलिए संज्ञा के तीन भेदों में सर्वप्रथम व्यक्तिवाचक फिर जातिवाचक एवं उसके पश्चात भाववाचक संज्ञा का क्रम निर्धारित हुआ है।
2. कुछ लोग शब्द और संज्ञा दोनों को एक ही मानते हैं किंतु यह ठीक नहीं क्योंकि शब्द, सार्थक भी होते हैं, तथा निरर्थक भी, जबकि संज्ञा सार्थक शब्दों का नाम है, उससे निरर्थक शब्दों का बोध नहीं होता।
3. अंग्रेजी के प्रभाव के कारण कुछ विद्वान संज्ञा के पाँच या छह भेद मानते हैं–

   1. व्यक्ति वाचक 2. जाति वाचक

   3. भाव वाचक 4. समुदाय वाचक

   5. द्रव्य वाचक 6. क्रियार्थक संज्ञा

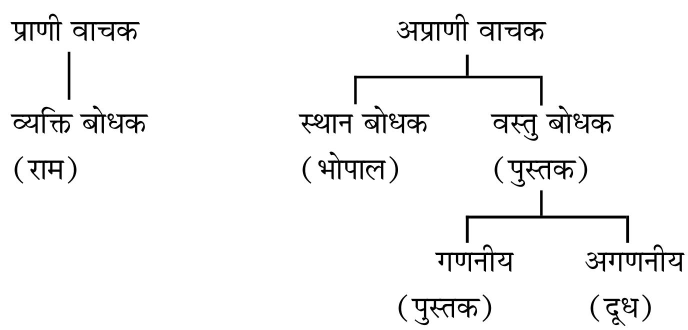
   हिंदी व्याकरण में समुदाय वाचक तथा द्रव्य वाचक संज्ञा को जाति वाचक के अंतर्गत ही माना गया है। इसे अलग से भेद मानना व्यर्थ है।
4. क्रियार्थक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होने वाले भ्रमण, लिखना आदि शब्दों का अध्ययन पृथक से किया जाना चाहिए, जबकि इन्हें भाव वाचक संज्ञा के अंतर्गत माना जाता है। अतः प्रमुखता से संज्ञा के तीन भेद ही स्वीकार किए जाते हैं–

   1. व्यक्तिवाचक, 2. जातिवाचक, 3. भाववाचक

(अ) व्यक्तिवाचक संज्ञा

जो शब्द किसी विशेष व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु का बोध कराते हैं, उन्हें व्यक्ति वाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे राम (व्यक्ति), भोपाल (स्थान), पुस्तक (वस्तु), दूध (वस्तु)

पहचान-व्यक्तिवाचक संज्ञा



व्यक्ति बोधक ● राम, सीता, कृष्ण, राधा, गांधी आदि।

स्थान बोधक ● भोपाल, इलाहाबाद, गंगा, हिमालय, भारत (नदी-पर्वत समुद्र आदि के नाम)

● पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण, दिशाओं के नाम

वस्तु बोधक -

क) गणनीय 1. रामचरित मानस, गीता, महाभारत आदि (पुस्तकों के नाम)

2. सोमवार, मंगलवार, बुधवार आदि (दिनों, महीनों के नाम)

ख) अगणनीय 1. पानी, दूध, नमक, शक्कर, तेल आदि।

रोचक तथ्य-

1. एक कक्षा में जितने छात्र हैं, उनके नाम पृथक-पृथक हैं। अत: उन सभी के नाम व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाएँगे, किंतु सम्पूर्ण कक्षा जाति वाचक संज्ञा कहलाएगी।
2. सभी व्यक्ति वाचक संज्ञाएँ एक वचन में होती है।

(ब) जातिवाचक संज्ञा

जो शब्द किसी विशेष व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु की सम्पूर्ण जाति का बोध कराते हैं, उन्हें जाति वाचक संज्ञा कहते हैं। ऐसे संज्ञा शब्दों से एक ही प्रकार की बहुत सी वस्तुओं का बोध होता है, जैसे मनुष्य कहने से सभी प्रकार के व्यक्तियों का बोध होता है।

तुलना

व्यक्तिवाचक	राम	सीता	हिमालय	गंगा	गीता	आम
जातिवाचक	मनुष्य	स्त्री	पर्वत	नदी	पुस्तक	फल

पहचान जातिवाचक संज्ञा

- प्राणी वाचक
- स्थान वाचक
- पदार्थ वाचक (द्रव्य वाचक)
- समूह वाचक

1. **प्राणी वाचक** -

- संबंधियों के नाम- जैसे- माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी आदि।
- पशु-पक्षियों के नाम- जैसे- गाय, बैल, भैंस, तोता, कौआ आदि।
- व्यवसाय के नाम- जैसे- शिक्षक, जुलाहा, मैनेजर आदि।

2. **स्थान वाचक-**

जैसे- ● घर, पार्क, होटल, क्लब, स्टोर आदि।

● नदी, वन, पर्वत, देश आदि।

3. पदार्थ वाचक (अगणनीय) -

जिन शब्दों से किसी धातु (पदार्थ) या द्रव्य का बोध होता है,

जैसे- ● पीतल, लोहा, सोना-चाँदी आदि।

● दूध, पानी आदि।

विशेष- द्रव्यवाचक संज्ञाओं का प्रयोग प्राय: एकवचन में ही किया जाता है, क्योंकि ये गणनीय नहीं है।

4. समूह वाचक (गणनीय) -

जिन शब्दों से किसी जाति, व्यक्ति एवं वस्तुओं के समूह का बोध होता है, उन्हें समूह वाचक या समुदाय वाचक संज्ञा कहते हैं,

जैसे- ● सेना, कक्षा, झुंड, भीड़, जुलूस आदि।

● फल-केले, अमरूद, पपीता आदि।

विशेष-

1. समूह वाचक संज्ञा का प्रयोग भी प्राय: एक वचन में ही किया जाता है, क्योंकि ये एक ही जाति के सदस्यों के समूह की इकाई के प्रतीक होते हैं।
2. फल को **गिना जा सकता** है। अत: फल जातिवाचक संज्ञा है।

रोचक तथ्य-

1. क) सभी व्यक्तिवाचक संज्ञा सदैव एक वचन होती है। यदि वह अनेकता का बोध कराती है, तो जातिवाचक हो जाती है,

यथा- ● देश में जयचंदों से सावधान रहने की आवश्यकता है।

● घर-घर में विभीषण होते हैं, उनसे बचना चाहिए।

इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में हुआ है।

ख) खंड (क) में जैसे व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक के रूप में हुआ है, वैसे ही जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग व्यक्ति वाचक के रूप में भी होता है,

यथा- **नेताजी** ने आजाद हिंद फौज बनाई थी। (यहाँ नेताजी शब्द का प्रयोग सुभाषचन्द्र बोस के लिए हुआ है।)

2. समूहवाची संज्ञा शब्दों का प्रयोग एक निश्चित अर्थ में ही होता है। यह ध्यान रखना चाहिए, जैसे-टोला (गायों का), दल (टिड्यों का), गुच्छा (अंगूरों का), जमात (साधुओं का), संघ (छात्रों का), काफिला (ऊँटों का), झुंड (गायों का), ढेर (अनाज का), जत्था (सैनिकों का) आदि।

3. शेर और वृक्ष जातिवाचक संज्ञाएँ हैं, क्योंकि इन शब्दों से संपूर्ण जाति का बोध होता है।

अन्य उदाहरण

(क) जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा में प्रयोग

जातिवाचक	उदाहरण-जातिवाचक संज्ञा	व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग
1. विभीषण	आजकल **विभीषणों** की कमी नहीं।	**विभीषण** रावण का भाई था।
2. भीम	तुम कलयुगी **भीम** हो।	पाँच पाण्डवों में **भीम** शारीरिक रूप से अत्यंत बलवान थे।
3. महात्मा	इस देश में कई **महात्मा** जन्म धारण कर चुके हैं।	**महात्मा** (गांधी) सत्य और अहिंसा के पुजारी थे।
4. पंडित	**पंडित जी** ने प्रसाद वितरण किया।	**पंडित जी** (जवाहरलाल नेहरू) भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे।
5. नेता	**नेताजी** का भाषण सुनने को भीड़ इकट्ठी हो रही है।	**नेताजी** ने कहा था–'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।'

(ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा में प्रयोग

व्यक्तिवाचक संज्ञा	उदाहरण-व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग
1. लक्ष्मी	विष्णु की पत्नी का नाम **लक्ष्मी** है।	यशोदा हमारे घर की **लक्ष्मी** है।
2. कंस	कंस अत्याचारी था।	यह तो मामा **कंस** है।
3. जयचन्द	**जयचन्द** पृथ्वीराज चौहान का शत्रु था।	आजकल **जयचंदों** की कमी नहीं।
4. गोस्वामी	**गोस्वामी** तुलसीदास को कौन नहीं जानता?	वृन्दावन में **गोस्वामी** अधिक हैं।
5. हरिश्चन्द्र	**हरिश्चन्द्र** सत्यवादी राजा थे।	**हरिश्चन्द्रों** की कमी से देश में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है।

(स) भाववाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के गुण–दोष, शील, भाव, अवस्था आदि अमूर्त संकल्पना का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

पहचान भाववाचक संज्ञा

मूल **रूप में भाववाचक** संज्ञाएँ
जैसे–दया, क्रोध, पीड़ा, जन्म, मृत्यु,
प्रेम, सत्य, ठंड आदि

यौगिक (अन्य शब्दों से बनने वाली)
भाववाचक संज्ञाएँ

जातिवाचक संज्ञाओं से	**सर्वनामों से**	**विशेषणों से**	**क्रियाओं से**	**अव्ययों से**
●लड़का से लड़कपन	●अहं से अहंकार	●नीला से नीलिमा	●पढ़ना से पढ़ाई	●निकट से निकटता
●मनुष्यसे मनुष्यता	●अपना से अपनापन	●सुन्दर से सुन्दरता	●घबराना से घबराहट	●समीप समीपता
●नारी से नारीत्व	●मम से ममता	●चतुर से चतुराई	●चढ़ना से चढ़ाई	●निकट से निकटता
●पंडित से पंडिताई	●निज से निजता	●गर्म से गर्मी	●दौड़ना से दौड़	●ऊपर से ऊपरी
●मित्र से मित्रता	●स्व से स्वत्व	●मीठा से मिठास	●मारना से मार	●शीघ्र से शीघ्रता

रोचक तथ्य–

1. भाववाचक संज्ञाओं का अनुभव हमारी इंद्रियों से होता है और इनका बहुवचन नहीं होता, जैसे–मिठास, सुंदरता, बुढ़ापा आदि।
2. भाववाचक संज्ञाओं का प्रयोग भी प्राय: एकवचन में होता है किंतु जब उनका प्रयोग बहुवचन में होता है, तब वे जातिवाचक संज्ञाएँ कहलाती हैं, जैसे–यह कैसी मानवता है। यहाँ 'मानवता' भाववाचक संज्ञा है किंतु उसका प्रयोग जातिवाचक के अंतर्गत हुआ है।
3. भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण मूलत: जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय से होता है। इन्हें यौगिक भाव वाचक संज्ञाएँ कहते हैं।
4. जो शब्द क्रियाओं से भाववाचक संज्ञा के रूप में बनाए गए हैं। उन्हें ही **क्रियार्थक संज्ञा** कहा जाता है।

क्रियार्थक संज्ञा

बहुत कम लोग जानते हैं कि हिंदी में सामान्य क्रिया का प्रयोग संज्ञा के अर्थ में भी किया जाता है। आइए, इसे जाने। यह प्रयोग दो प्रकार से होता है–

1. कर्ता (कारक) के रूप में–

1. प्रात: **भ्रमण** श्रेष्ठतम व्यायाम है।
2. सड़क पर कूड़ा **फेंकना,** सार्वजनिक स्थान पर धूम्रपान **करना** अच्छे नागरिक के लक्षण नहीं है।
3. राष्ट्र के लिए **मरना** कोई आसान बात नहीं।
4. कुछ काम ऐसे होते हैं, जिन्हें **करना** कठिन है।
5. लेन-देन सोच समझकर **करना** चाहिए।

2. कर्म (कारक) के रूप में

1. मुझे पुस्तक **पढ़ना** अच्छा लगता है।
2. मेरे साथ **रहने** से आपको कोई परेशानी नहीं होगी।
3. भक्ति में भावविभोर होकर **गाना** कोई आपसे सीखे।
4. मैं मंदिर का चित्र **बनाना** जानता हूँ।

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि रेखांकित शब्दों का प्रयोग कियार्थक होते हुए भी संज्ञा के स्थान पर किया गया है। अत: ये सभी शब्द क्रियार्थकता का बोध कराते हुए भी संज्ञा है। इन्हें भाव वाचक संज्ञा के अंतर्गत रखा गया है।

(द) लिंग

गर्मी का मौसम था। एक बंगाली सज्जन मेरे घर मिलने आए। वे बोले–'पंखा क्यों नहीं चल रही है?'

मैंने कहा–आप हिंदी में लिंग का प्रयोग अशुद्ध रूप से कर रहे हैं–आपको कहना चाहिए–'पंखा क्यों नहीं चल रहा है?'

वे कहने लगे लिंग का अर्थ है–'चिह्न' अर्थात् संज्ञा का वह लक्षण जो संज्ञा के पुरुषवाची अथवा स्त्रीवाची होने का बोध कराता है, लिंग कहा जाता है। सजीव वस्तुओं के लिंग तो हम सरलता से पहचान लेते हैं किंतु निर्जीव वस्तुओं जैसे–पंखा के लिंग जानने का आधार क्या है? कृपया कर बताइए ताकि मैं इस प्रकार की अशुद्धियाँ दुबारा न करूँ।

उन सज्जन की कठिनाई को समझकर मैंने उन्हें केवल इतना कहा–निर्जीव वस्तुओं के लिंग जानने के तीन उपाय हैं–

1. ऐसी वस्तुओं को व्यवहार और परंपरा के आधार पर पुल्लिंग अथवा स्त्रीलिंग माना जाता है। शब्दकोश की सहायता से इसे जानें।
2. उन वस्तुओं के साथ जो क्रिया प्रयोग में आ रही है उस आधार पर भी हम लिंग की पहचान कर सकते हैं, जैसे–

   (क) मैंने आम **खाया**।

   (ख) मैंने ककड़ी **खाई**।

   यहाँ खाया क्रिया से आया (पुल्लिंग), तथा खाई क्रिया से 'ककड़ी' (स्त्रीलिंग) है।

इसका बोध हो रहा है।

3. विशेषण के आधार पर भी हम लिंग पहचान सकते हैं, जैसे- यह आम **मीठा** है। यह ककड़ी **मीठी** है।

उपरोक्त दोनों उदाहरणों में मीठा से (पुल्लिंग), तथा मीठी से (स्त्रीलिंग) का बोध हो रहा है। मीठा, मीठी दोनों विशेषण हैं।

उन्होंने पुनः प्रश्न किया- एक ही वस्तुओं के भिन्न-भिन्न नाम (पर्यायवाची) होते हैं, ऐसे में क्या लिंग भी भिन्न-भिन्न हो जाते हैं? जैसे-ग्रंथ पुल्लिंग है किंतु पुस्तक स्त्रीलिंग। इस संबंध में उन्होंने अन्य उदाहरण भी दिए, जो यहाँ यथावत दिए जा रहे हैं-

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**
चित्र	तस्वीर	गन्ना	ईख	शरीर	देह
छाता	छतरी	नेत्र	आँखें	पैर	टाँग
कपड़ा	पोशाक	पत्र	चिट्‌ठी	हाथ	भुजा

मैंने कहा-हिंदी में निश्चय ही अप्राणीवाचक के लिंग निर्धारण में कठिनाई आती है। विशेषकर, पर्यायवाची शब्दों के साथ ही अंग्रेजी के कुछ शब्दों (विदेशी शब्दों) के लिंग निर्धारण में कठिनाई आती है, जैसे-स्कूल, कॉलेज, रेडियो, स्टेशन, पेन, ग्राउण्ड आदि पुल्लिंग हैं किंतु ट्रेन, ट्राय, बोतल आदि शब्द स्त्रीलिंग हैं। फिर भी किसी अप्राणीवाचक संज्ञाओं में लिंग की पहचान निम्नलिखित ढंग से की जा सकती है—

पुल्लिंग की पहचान

1. अप्राणीवाचक पदार्थों में अकारान्त संज्ञा शब्दों के नाम पुल्लिंग होते हैं- जैसे नगर, पर्वत, देश, जल, पुण्य आदि।

2. निम्नलिखित प्रत्यय युक्त संज्ञाएँ अधिकतर पुल्लिंग होती हैं-
   आ- घड़ा, कपड़ा
   आपा- बुढ़ापा, मोटापा
   आव- बचाव, खिंचाव
   आर- सुनार, लोहार
   ऐरा- चचेरा, सपेरा
   त्व- स्वामित्व, अपनत्व

स्त्रीलिंग पहचान

1. अप्राणीवाचक पदार्थों में संज्ञा शब्दों के अंत में 'इ' या 'ई' आने पर वह संज्ञा स्त्रीलिंग होती है, जैसे-नदी, रोटी, बोली (किन्तु इसके कुछ अपवाद भी हैं- जैसे- पानी, घी)

2. निम्नलिखित प्रत्यय युक्त संज्ञाएँ अधिकतर स्त्रीलिंग होती हैं-
   ई- गोली, खिड़की
   आवट- थकावट, लिखावट
   आहट- चिकनाहट, कड़वाहट
   आई- उतराई, चटाई,
   इमा- गरिमा, कालिमा
   इया- कुटिया, गुड़िया

पन- बचपन, बड़प्पन	ता- एकता, कटुता
न- पालन, चालन	आस- भड़ास, छपास
य- भवदीय, शिष्य	री- गारी
3. शरीर के कुछ अंग पुल्लिंग होते हैं। जैसे-कान, गला, सिर, मुँह, हाथ, दाँत, बाल, नाखून।	3. शरीर के कुछ अंग स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे- अँगुली, कमर, नाभि, पलक, जीभ, आँख, नाक।
4. पर्वतों तथा समुद्रों के नाम पुल्लिंग होते हैं।	4. नदियों तथा झीलों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं।
5. महीनों व दिनों के नाम पुल्लिंग होते हैं।	5. तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं।
6. समूह के द्योतक-समाज, कुटुम्ब-दल, परिवार, समाज, संघ आदि।	6. समूह द्योतक-कमेटी, टोली, परिषद, सभा, संसद, सरकार, सेना आदि।
7. वर्णमाला के वर्ण	7. भाषा, बोली, लिपि
8. ग्रह, धातु, पेड़, रत्न, द्रव आदि।	8. नक्षत्र
9. उल्लू, कौआ, खटमल, मगरमच्छ, बिच्छू, कीड़ा, कछुआ, भेड़िया, खरगोश आदि नित्य पुल्लिंग होते हैं।	9. कोयल, मक्खी, मकड़ी, दीमक, तितली, सवारी आदि नित्य स्त्रीलिंग होते हैं।

विशेष-

अकारांत (अकार+अंत) का अर्थ है-जिसमें अंत में 'अ' अक्षर हो, जैसे- नगर।

लिंग रूपांतरण के आधार

हिंदी में अधिकांश संज्ञाएँ पुल्लिंग हैं, उन्हें स्त्री प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग में रूपांतरित किया जा सकता है, जैसे-

	पुल्लिंग शब्द	प्रत्यय	स्त्रीलिंग	नियम
1.	छात्र	आ	छात्रा	अकारांत शब्दों में
	शिष्य	आ	शिष्या	'अ' को 'आ' करके
2.	हिरन	ई	हिरनी	अकारांत शब्दों में
	पुत्र	ई	पुत्री	'अ' को 'ई' करके
3.	चाचा	ई	चाची	आकारांत शब्दों में
	बेटा	ई	बेटी	'आ' को 'ई' करके
4.	श्रीमान्	अती	श्रीमती	अकारांत शब्दों में
	ज्ञानवान	अती	ज्ञानवती	'आन' को 'अती' करके
5.	शिक्षक	इका	शिक्षिका	अकारांत शब्दों में
	लेखक	इका	लेखिका	'अक' को 'इका' करके
6.	बंदर	इया	बंदरिया	अकारांत शब्दों में

	बूढ़ा	इया	बुढ़िया	'अ/आ' को 'इया' करके
7.	पुजारी	इन	पुजारिन	व्यवसायावादी संज्ञाओं में
	माली	इन	मालिन	'इन' जोड़कर
8.	ठाकुर	आइन	ठकुराइन	उपनामों में 'आइन'
	पंडित	आइन	पंडिताइन	लगाकर
9.	सिंह	नी	सिंहनी	'नी' प्रत्यय जोड़कर
	मोर	नी	मोरनी	
10.	देवर	आनी	देवरानी	'ना' को 'नी' करके
	सेठ	आनी	सेठानी	
11.	नेता	त्री	नेत्री	'ता' को 'त्री' करके
	दाता	त्री	दात्री	

विशेष-

1. कुछ पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग निश्चित होते हैं, जैसे-पिता-माता, पुत्र-पुत्री, वर-वधू, राजा-रानी, पति-पत्नी आदि।
2. कुछ स्त्रीलिंग शब्दों के निश्चित पुल्लिंग होते हैं, जैसे-मौसी-मौसा, सास-ससुर, बहन-भाई, युवती-युवक, बुआ-फूफा आदि।
3. हिंदी पदनामवाची संज्ञाएँ द्वि-लिंगी होती हैं, जैसे-राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, न्यायाधीश, प्रोफेसर, अधिकारी, कलाकार आदि।
4. कुछ शब्दों के स्त्रीलिंग संज्ञाओं से भिन्न भी है, जैसे- तेरा-तेरी, नीचा-नीची, चला-चली, थोड़ा-थोड़ी आदि।

रोचक तथ्य-

1. (क) पुल्लिंग शब्द-पुं+लिंग दोनों के मेल से बना है। पुं-शब्द से पुरुष होने का संकेत मिलता है। व्याकरण में पुलिंग को पुल्लिंग कहा जाता है।

   (ख) स्त्रीलिंग शब्द-स्त्री+लिंग दोनों के योग से बना है। यह शब्द स्त्रीवाचक है। अत: जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री होने का बोध होता है, उन्हें व्याकरण में 'स्त्री लिंग' कहा जाता है।

   सृष्टि में इन दोनों लिंगों के आधार पर सम्पूर्ण जड़ चेतन की पहचान की जाती है।
2. भाषा में लिंग निर्धारण के लिए कोई ठोस आधार नहीं है। इसलिए लिंग निर्धारण संबंधी व्यापक और पूर्ण नियम बनाना कठिन है। अच्छा हो, संदेह की स्थिति में हम परंपरा अथवा शब्द-कोश का सहारा लेकर अपनी समस्या को हल कर लें।
3. जो प्राणिवाचक संज्ञाएँ पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग में समान रूप से प्रयुक्त होती है, उनके लिंग की पहचान नर अथवा मादा लगाकर की जाती है, जैसे- नर छिपकली, मादा छिपकली
4. जड़ पदार्थों में नर वाची शब्दों की तरह प्रयुक्त होने वाले जड़ पदार्थ पुल्लिंग तथा इसके

विपरीत स्त्रीवाची शब्दों की भाँति प्रयुक्त होने वाले शब्द स्त्रीलिंग माने जाते हैं, जैसे- डिब्बा-बोरा (पुल्लिंग), डिब्बी-बोरी (स्त्रीलिंग)।

(य) वचन

एक समारोह में कुछ लोग आपस में चर्चा कर रहे थे। तभी एक सज्जन और आए, और किसी परिचित व्यक्ति से कहने लगे-'उसके चार चाचे हैं।'

इस वाक्य को सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। इस वाक्य में अशुद्धि की ओर उनका ध्यान दिलाया तो वे कहने लगे। इसमें क्या अशुद्धि है: 'चाचा' एक वचन है, 'चाचे' बहुवचन है। अब बताइए, इसमें क्या अशुद्ध है।

मैंने उन्हें अशुद्धि के विषय में बहुत विस्तार से न बताते हुए इतना कहा कि वचन का प्रयोग बहुधा हम ठीक से नहीं कर पाते। वचन का प्रयोग करते समय कुछ नियम हैं, जिन पर हमारा ध्यान अवश्य जाना चाहिए। इस संबंध में फिर कभी चर्चा करेंगे। यह उपर्युक्त अवसर नहीं है।

कुछ दिनों पश्चात वे मेरे घर पर आए, और 'वचन' के विषय में उन नियमों को बताने का आग्रह करने लगे।

सर्वप्रथम मैंने उन्हें वचन का अर्थ बताया।

अर्थ- वचन का अर्थ है-बोलना। किंतु व्याकरण में वचन का अर्थ है-संख्या। इस दृष्टि से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के संख्याबोधक विकारी रूप को वचन कहते हैं।

भेद- संस्कृत में तीन प्रकार के वचन होते हैं-

1. एकवचन- एक की संख्या का बोधक
2. द्विवचन- दो की संख्या का बोधक
3. बहुवचन- दो से अधिक संख्या का बोधक

हिंदी में दो ही वचन हैं-

1. एकवचन
2. बहुवचन

'द्विवचन' का प्रचलन हिंदी में नहीं होता है। वह बहुवचन में ही समाहित हो गया है।

पहचान-

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया में वचन के कारण विकार आता है। अत: वाक्य में इन चारों के आधार पर वचन की पहचान होती है, जैसे-

(क) संज्ञा- **लड़का** खेल रहा है। (लड़का-एकवचन), **लड़के** खेल रहे हैं। (लड़के-बहुवचन)

(ख) सर्वनाम- **वह** पुस्तक पढ़ रहा है। (वह- एकवचन), **वे** पुस्तकें पढ़ रहे हैं। (वे-बहुवचन)

(ग) विशेषण- **पीला** फूल सुंदर है। (पीला-एकवचन), **पीले** फूल सुंदर हैं। (पीले-बहुवचन)

(घ) क्रिया- छात्र **पढ़ रहा** है। (रहा है-एकवचन), छात्र **पढ़ रहे** हैं। (रहे हैं-बहुवचन)

अत: स्पष्ट है कि शब्द के जिस रूप से एक की संख्या का बोध होता है, उसे एकवचन तथा जिससे एक से अधिक संख्या का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।

विशेष

(क) सदा एकवचन में रहने वाले शब्द-

1. जनता, आग, वर्षा, पानी, दूध, सोना, लोहा।

जिन शब्दों के साथ जाति, दल, सेना, समूह आदि प्रयुक्त होता है उनका प्रयोग एकवचन में होता है, जैसे-

1. **जनता** आ रही है। (जनता एक वचन, जाति वाचक संज्ञा)

(ख) सदा बहुवचन में रहने वाले शब्द-

हस्ताक्षर, प्राण, बाल, आँसू, दर्शन, लोग, होश आदि, जैसे—

1. कृपया, यहाँ **हस्ताक्षर** करें।
2. आज कल **लोग** किसी पर विश्वास नहीं करते।
3. प्रात: नीलकंठ के **दर्शन** हुए।
4. उसके **आँसू** थम नहीं रहे थे।
5. तुम्हारे **बाल** घुँघराले हैं।

(ग) एक वचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग-

(क) सम्मान सूचक- पुरुषोत्तम दास टण्डन हिंदी के समर्थक थे। यहाँ '**थे**' क्रिया बहुवचन है।

पिताजी आज आएँगे। (आएँगे क्रिया बहुवचन है।)

(ख) लोक व्यवहार- तुम अब पढ़ सकते हो। (यहाँ '**तू**' के स्थान पर तुम का प्रयोग हुआ है)

(ग) समूह वाचक- छात्रवृंद, संतसमुदाय, श्रमिक वर्ग, प्रजा जन, शिक्षकगण।

(घ) बड़प्पन प्रकट करने के लिए-यहाँ बुलाकर आपने **हमारा** अपमान किया है। (यहाँ '**मैं**' के स्थान पर 'हमारा' का प्रयोग बड़प्पन दिखाने के लिए हुआ है।)

विशेष-

बहुवचन के स्थान पर एकवचन का प्रयोग-

(क) धातु एवं द्रव्य पदार्थ (जातिवाचक संज्ञाएँ), जैसे—

- आजकल **सोना** बहुत कीमती है।

(ख) जातिवाचक शब्द बहुवचन होने पर भी एक वचन में प्रयुक्त होते हैं, जैसे—

- भारतीय **नारी** को विदेशी संस्कृति से बचना चाहिए।

(ग) ईश्वर, समय, भाग्य, आकाश, पानी, वर्षा, जनता, सत्य, क्षमा, झूठ, सामान, सहायता आदि शब्द एक वचन में प्रयुक्त होते हैं, जैसे—

- **समय** बहुत प्रतिकूल है।

वचन रूपांतरण के आधार

1. अकारान्त, आकारान्त तथा उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में 'एँ' जोड़कर–

एकवचन		बहुवचन
गेंद	अकारान्त शब्द	गेंदें
गाय		गाएँ
लता	आकारान्त शब्द	लताएँ
शाखा		शाखाएँ
वस्तु	उकारान्त शब्द	वस्तुएँ
बहु		बहुएँ

2. इकारान्त तथा ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम इ/ई को ह्रस्व 'इ' में बदलकर 'याँ' जोड़कर–

एकवचन		बहुवचन
शक्ति	(इकारान्त शब्द)	शक्तियाँ
रोटी	(ईकारान्त शब्द)	रोटियाँ

3. 'इया' अंतवाले स्त्रीलिंग शब्दों को 'याँ' करके–

एकवचन	बहुवचन
कुटिया	कुटियाँ
गुड़िया	गुड़ियाँ

विशेष–

1. इस प्रकार अनुनासिक शब्दों द्वारा प्राय: बहुवचन बनाया जाता है।
2. संज्ञा शब्दों के साथ ने, मे, को, से–परसर्ग आने पर 'यों' अथवा 'ओं' जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है, जैसे–

   (क) **लड़के** ने पानी पीया।
   लड़कों ने पानी पीया। ('ओं' का प्रयोग)

   (ख) **लड़की** ने खाना खाया।
   लड़कियों ने खाना खाया। ('यों' का प्रयोग)

रोचक तथ्य–

1. व्यक्ति वाचक तथा भाव वाचक संज्ञाएँ सदा एक वचन में प्रयुक्त होती हैं।
2. जाति वाचक संज्ञाएँ दोनों वचनों में प्रयुक्त होती हैं। प्रयोग के आधार पर इनका निर्णय करना चाहिए, जैसे–

(क) **आदमी** जा रहा है। (एक वचन)

(ख) **आदमी** जा रहे हैं। (बहुवचन)

3. युग्म शब्दों के केवल अंतिम शब्द को बहुवचन बनाया जाता है-

एकवचन	**बहुवचन**
हाथी-घोड़ा	हाथी-घोड़े
बैल-गाड़ी	बैल-गाड़ियाँ
भेड़-बकरी	भेड़-बकरियाँ

4. संबोधन करते समय 'ओं' तथा 'यों' के स्थान पर 'ओ' तथा 'यो' हो जाता है, जैसे-

- मित्रो! आओ, अब हमें चलना चाहिए।
- भाइयो! देश के लिए बलिदान देने का समय आ गया है।

5. कहीं-कहीं पर एक वचन के आगे वर्ग, गण या लोग इत्यादि शब्द लगाने पर बहुवचन का अर्थ निकलता है, जैसे—

1. छात्रगण मंच की ओर जा रहे हैं।
2. शिक्षक वर्ग।
3. साधु लोग।

6. परसर्ग रहित तथा परिसर्ग सहित वाक्यों में वचन के रूप निम्नलिखित अनुसार पहचाने जाते हैं, जैसे-

1. यदि परसर्ग नहीं हो तो-

एक वचन- **घोड़ा** दौड़ रहा है।

बहुवचन- **घोड़े** दौड़ रहे हैं।

2. यदि परसर्ग हो तो-

एक वचन- **घोड़े** को दाना खाने दीजिए।

बहुवचन- **घोड़ों** को दाना खिला दो।

इस प्रकार एकवचन के दो रूप हुए- घोड़ा, घोड़े,

बहुवचन के भी दो रूप हुए- घोड़े, घोड़ों

7. कुछ सम्बन्ध सूचक शब्दों के एक वचन तथा बहुवचन रूप एक जैसे रहते हैं, अर्थात् इनका बहुवचन रूप नहीं होता, जैसे—

उसके चार चाचा हैं। (उसके चार चाचे हैं-अशुद्ध है।)

(र) कारक

मैं प्रात: घूमने अवश्य जाता हूँ। रास्ते में एक मंदिर है। वहाँ एक दिन मुझे किसी मधुर कंठ से निम्नलिखित पंक्तियाँ सुनने को मिलीं-

जिस **राम ने** दुष्ट रावण को मारा,

उस **राम को** नित्य भजूँ मन यह कहता।
उस **राम से** कष्ट मेरे मिटेंगे,
राम के लिए ही अब जीता और मरता।
उस **राम से** मेरा नाता न टूटे,
अत: **राम के** नाम की माला जपता।
उसी **राम में लीन** हो चित्त मेरा,
हे राम! हे राम!! कहते न थकता।।

ये पंक्तियाँ निश्चय ही राम-भक्त के मुँह से निकलते ही हमें राम का स्मरण कराती हैं। किंतु मैं सदैव व्याकरण के उदाहरण ढूँढा करता हूँ। अत: इन पंक्तियों को सुनकर मुझे कारक और उनके प्रत्ययों (परसर्ग) का स्मरण हो आया।

मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि कारक शब्द का आशय है-करने वाला। जब कोई कर्त्ता (करने वाला कोई) क्रिया करता है तो उसकी शक्ति का द्योतक ही कारक कहलाता है।

उपरोक्त गीत की पंक्तियों में भक्त राम की महिमा बखान रहा है। किंतु उनकी महिमा का वर्णन वह कारकों की सहायता लिए बिना नहीं कर सकता। इसलिए भक्त ने कहीं राम ने, कहीं राम को, कहीं राम से आदि परसर्ग लगाकर उनकी आठ प्रकार से महिमा गाई है। हमें भी दैनिक जीवन में अपने व्यवहार का पालन करने के लिए इन कारकों की आवश्यकता रहती है। इनके प्रयोग से वाक्य के शब्दों का परस्पर संबंध स्पष्ट हो जाता है।

(ग) कारक/विभक्ति/परसर्ग

भाषा शिक्षक के नाते एक समय मुझसे एक कठिनाई हल करने को कहा गया कि कारक/विभक्ति तथा परसर्ग के विषय में धारणा स्पष्ट नहीं होती है कि ये एक ही शब्द के पर्याय हैं अथवा अलग-अलग शब्द हैं। वाक्य रचना इन तीनों के बिना हो ही नहीं सकती। कृपया इस सम्बन्ध में कुछ स्पष्ट करें कि इन तीनों शब्दों के अर्थ क्या हैं?

मैंने कहा सर्वप्रथम आपको कारक शब्द स्पष्ट करता हूँ। **कारक** शब्द का अर्थ है- करने वाला/करने वाली। जब कोई क्रिया करता है, तो उसकी कर्तव्य शक्ति का द्योतक 'कारक' होता है।

अधिक स्पष्ट करने के लिए हम कह सकते है कि संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस शब्द रूप से क्रिया से संबंध स्पष्ट हो, उसे कारक कहा जाता है। उदाहरण के लिए-राम ने पत्र लिखा।

इस वाक्य में लिखने की क्रिया राम करता है। क्रिया करने वाले को व्याकरण की भाषा में कर्त्ता कहते हैं। उसकी कर्तव्य शक्ति का द्योतक 'ने' शब्द है। इस 'ने' शब्द से ही वाक्य में मुख्य क्रिया से उसकी स्थिति स्पष्ट होती है। अत: 'ने' प्रत्यय लगाने पर ही वाक्य में कर्त्ता और क्रिया के बीच संबंध की स्थिति स्पष्ट होती है। इन प्रत्यय शब्दों को ही कारक कहते हैं। दैनिक जीवन में अपनी बात स्पष्ट करने के लिए ऐसे शब्दों की आवश्यकता होती है।

हिंदी में ऐसे कारक आठ बताए गए हैं। उनके आगे जो प्रत्यय (चिह्न) लगाए जाते

हैं, उन्हें व्याकरण में **विभक्तियाँ** कहते हैं। इन प्रत्ययों को विभक्तियों के चिह्न इसलिए कहा जाता है कि स्वनिम रूप से ऐसे प्रत्ययों का शाब्दिक अर्थ नहीं होता है। इनकी उपस्थिति से मात्र कर्त्ता और क्रिया के मध्य संबंध स्पष्ट होता है। यही कारण है कि कुछ लोग विभक्ति के स्थान पर 'परसर्ग' लिखते हैं। लगता है, जैसे- उपसर्ग शब्द का अनुसरण करते हुए परसर्ग शब्द रख दिया गया हो। उपसर्ग शब्द के पूर्व लगता है, जबकि परसर्ग शब्दों के बाद। अत: विभक्ति अथवा परसर्ग वे कारक चिह्न हैं जो संज्ञा या सर्वनाम का संबंध अन्य पदों से जोड़ते है। इन परसर्गों के बिना वाक्य बन नहीं सकते।

ध्यान दें-कर्ता कारक और संबंधकारक का परसर्ग 'ने' है, कर्म कारक और संप्रदान कारक का परसर्ग 'को' है, करण कारक और संप्रदान कारक का परसर्ग 'से' है। इनके अंतर को कैसे पहचानें, यह प्रत्येक परसर्ग के साथ दिया गया है। उसे ध्यान पूर्वक समझने का प्रयास करें।

कारक आठ होते हैं। यहाँ सर्वप्रथम यह जानने का प्रयास करेंगे कि इन कारकों के परसर्गों की पहचान हम सरलता से कैसे कर सकते हैं। सुविधा के लिए यहाँ क्रिया के साथ पूछे जाने वाले प्रश्नों के आधार पर हम वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ (संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ) उसका संबंध क्या हैं, यह समझने के लिए कुछ वाक्य दे रहे हैं-

क्र.	**कारक**	**परसर्ग (विभक्ति)**	**क्रिया के साथ पूछे जाने वाले का नाम प्रश्नों द्वारा पहचान**
1.	कर्त्ता	'ने' (कोई/चिह्न नहीं)	कौन? किससे? किन्होंने?
2.	कर्म	'को' (कोई/ चिह्न नहीं)	किसे? क्या? किसको? किनको? कहाँ?
3.	करण	'से' द्वारा	किससे? किसके द्वारा? किनके द्वारा
4.	संप्रदान	'को' के लिए	किसे? किसको? किनको? किसके लिए? किनके लिए?
5.	अपादान	'से'(पृथक होने के अर्थ में)	कहाँ से? किससे? किन से?
6.	संबंध	का, के, की/ रा रे री ना 'ने' नी	किसका? किसके? किसकी? किनकी किनके? किनकी?
7.	अधिकरण	में/पर	किसमें? किनमें? किस पर? किन पर?
8.	संबोधन	हे/अरे	जिसे पुकारा (संबोधित) जाए

विशेष-

संस्कृत में कारकों की संख्या छ: है। वहाँ संबोधन को कर्त्ता के साथ रखा जाता है। संबंध कारक का क्रिया से संबंध नहीं होने से उसे भी कारक के अन्तर्गत नहीं गिना जाता है। किन्तु हिंदी में कारक आठ ही माने गए है। यहाँ हम संबोधन कारक परसर्ग नहीं दे रहे हैं क्योंकि इसे प्रकट करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग होता है, वे शब्द हैं, परसर्ग नहीं, जैसे- हे! अरे! आदि। ये परसर्ग नहीं

हैं संबोधन हैं। अब हम प्रत्येक परसर्ग पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

1. परसर्ग 'ने'

क्र.	वाक्य	क्रिया के साथ प्रश्न	उत्तर (कर्त्ता कारक)
1.	राम 'ने' धनुष तोड़ा।	धनुष किसने तोड़ा?	राम (ने)
2.	राम धनुष तोड़ता है।	धनुष कौन तोड़ता है?	(राम)
3.	राजाओं 'ने' धनुष को टूटते देखा।	किन्होंने देखा?	(राजाओं ने)

विशेष–

1. प्रथम एवं तृतीय वाक्य में 'ने' का प्रयोग हुआ है किन्तु द्वितीय वाक्य में नहीं। अतः परसर्ग **ने** का प्रयोग सकर्मक क्रियाओं के साथ तथा भूतकाल में किया जाता है। जिन सकर्मक क्रियाओं के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता है, वे हैं– बोलना, समझना, ले जाना, लाना, भूलना आदि, जैसे– आप क्या समझे? आपने क्या बोला? राम पुस्तक लाया है? आदि।
2. सामान्यतः अकर्मक क्रियाओं में 'ने' परसर्ग का प्रयोग नहीं होता है किन्तु कुछ ऐसी अकर्मक क्रियाएँ भी हैं जिनके साथ 'ने' का प्रयोग होता है, जैसे– नहाना, थूकना, खाँसना, छींकना आदि।

   उसने नहाया। मैंने थूका।
3. 'ने' का प्रयोग वर्तमान काल तथा भविष्यकाल में बिल्कुल नहीं होता, जैसे– कुसुम गाना गा रही है। (वर्तमान काल)

   भाई साहब कल चर्चा करेंगे। (भविष्य काल)
4. जिन वाक्यों में लगना, चुकना, सकना, जाना, रोना, पढ़ना आदि क्रियाओं का (सहायक क्रियाओं का) प्रयोग होता है, वहाँ—

   'ने' का प्रयोग नहीं होता है–
   - 'राम' पढ़ता है।
   - 'मैं' जाता हूँ।
   - 'राम' पढ़ेगा।
   - 'मैं' जाऊँगा।
5. कर्म वाच्य तथा भाववाच्य की क्रिया के साथ 'ने' के स्थान पर 'से' परसर्ग आता है, जैसे–
   - आज लड़के **से** पढ़ा नहीं गया। (कर्म वाच्य) 'ने' के स्थान पर 'से'
   - अभी **उससे** उठा नहीं जाता। (भाव वाच्य)
6. कभी-कभी कर्त्ता कारक में 'ने' परसर्ग को छोड़कर अन्य परसर्ग भी आते हैं, जैसे–

राम ‘को’ अयोध्या जाना है। (‘को’ परसर्ग का प्रयोग)

राम ‘के द्वारा’ रावण मारा गया। (के द्वारा परसर्ग का प्रयोग)

7. सर्वनाम में परसर्ग ‘ने’ लगाने पर विकार आता है, जैसे–

यह+ने = इसने (यहाँ ‘यह’ सर्वनाम ‘इस’ में बदल गया है)

वह+ने = उसने (‘वह’ ‘उस’ में बदल गया है)

रोचक तथ्य—

- क्रिया को करने वाला कर्ता कहलाता है। इसका कारक चिह्न (परसर्ग) **ने** है। विशेष रूप से कर्ता संज्ञा या सर्वनाम होता है। इसका सीधा संबंध क्रिया से रहता है।

2. परसर्ग– ‘को’

क्र.	वाक्य	क्रिया के साथ प्रश्न	उत्तर (कर्म कारक)
1.	राम को बुलाओ।	किसको बुलाओ?	राम को (प्राणी वाचक)
2.	मैंने गीता पढ़ी।	मैंने क्या पढ़ी?	गीता(अप्राणी वाचक)
3.	राम आम खाता है।	राम क्या खाता है?	आम (अप्राणी वाचक)
4.	हरि मोहन को रुपए देता है।	हरि किसको रुपए देता है?	मोहन को (प्राणी वाचक)

विशेष–

1. प्राणिवाचक कर्म के साथ ‘को’ का प्रयोग होता है किन्तु अप्राणी वाचक कर्म के साथ प्राय:को नहीं लगता, जैसे– दूसरे तथा तीसरे वाक्य में गीता, तथा आम के साथ ‘को’ का प्रयोग नहीं हुआ है।
2. चतुर्थ वाक्य में ‘को’ का प्रयोग अवश्य हुआ है किन्तु यह सम्प्रदान कारक का परसर्ग है, क्योंकि यहाँ देने की बात स्पष्ट कही गई है। अत: जहाँ किसी के लिए कुछ करने या देने का बोध होता है, वहाँ सम्प्रदान परसर्ग लगाया जाता है।
3. अनिवार्यता, कर्त्तव्य आदि बताने के लिए, चाहिए, करना पड़ना, आदि क्रिया के रूप में रहने पर कर्त्ता के साथ ‘को’ का प्रयोग होता है, जैसे–

   श्याम **को** कुछ रुपए **चाहिए**। (चाहिए)

   प्रीति **को** ऑफिस जाना **पड़ सकता** है। (पड़ना)

   प्रत्येक राष्ट्रभक्त **को** राष्ट्रकी रक्षा करना चाहिए। (कर्त्तव्य)
4. निश्चित समय बताने के लिए समय सूचक संज्ञाओं के साथ ‘को’ का प्रयोग होता है, जैसे–

   मैं मंगलवार **को** दिल्ली जा रहा हूँ।

   मैं दो तारीख **को** घर पर ही मिलूँगा।

राम आज दोपहर **को** भोपाल आ रहा है।

5. यदि विशेषण संज्ञा के रूप में प्रयुक्त हो तो कर्म में 'को' अवश्य लगता है, जैसे-
बड़ों 'को' सम्मान दो।

6. मारना क्रिया का अर्थ जब पीटना होता, तो कर्म के साथ 'को' का प्रयोग होता है। किन्तु मारने का अर्थ हत्या से लिया गया है तो 'को' का प्रयोग नहीं होता।
जैसे- पिता ने अपने पुत्र को मारा। -(पीटना)
- राम ने हिरण मारा। (वध करना)

7. कहीं-कहीं परसर्ग 'को' का लोप भी होता है, जैसे-कृष्ण ने पत्र लिखा। यहाँ पत्र कर्म कारक है किंतु परसर्ग रहित है।

8. कहीं-कहीं दो कर्म भी पाए जाते हैं। ऐसे में मुख्य कर्म के साथ **को** नहीं लगता है। गौण कर्म के साथ 'को' लगता है, जैसे—
कृष्ण ने पिताजी को पत्र लिखा। (यहाँ पत्र मुख्य कर्म है। पिताजी गौण कर्म। अत: पत्र के साथ **को** नहीं लगा।)

9. कुछ विशेष क्रियाओं के साथ रहते भी कर्त्ता के साथ 'को' का प्रयोग होता है,
जैसे-
   - सोहन **को** हिंदी नहीं आती।
   - यह काम राम **को** ही करना होगा।
   - उस**को** यह पुस्तक पसंद है।
   - यह बात सब**को** बुरी लगी।

10. यदि कर्म के साथ कोई परसर्ग हो तो क्रिया सदैव एकवचन पुल्लिंग में ही होती है,
जैसे—
   - राम ने सीता **को** देखा।
   - शिक्षिका ने छात्रों **को** डाँटा।

   (पहले वाक्य में कर्म सीता स्त्रीलिंग एक वचन है किंतु क्रिया 'देखा' एकवचन पुल्लिंग है। दूसरे वाक्य में कर्म **छात्रों** पुल्लिंग बहुवचन है, फिर भी क्रिया 'डाँटा' एक वचन पुल्लिंग ही है। इसका कारण है- कर्म के साथ परसर्ग 'को' का प्रयोग किया जाना।)

11. 'को' का प्रयोग चाहे कर्त्ता के साथ हो, या कर्म के साथ, ऐसे कर्त्ता और कर्म के लिंग और वचन का प्रभाव क्रिया के लिंग और वचन पर नहीं पड़ता, जैसे—
   - राम ने लड़की को **बुलाया**।
     (यहाँ लड़की को बुलाई नहीं कहा गया है। बुलाया कहा गया है)
   - सीता ने लड़की को **बुलाया**।

रोचक तथ्य—

1. संज्ञा अथवा सर्वनाम द्वारा की गई क्रिया का फल या प्रभाव जिस पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।
2. 'को' के पूर्व आने वाले शब्द अपने विकारी रूपों में ही आते हैं, जैसे— शिक्षक ने लड़के को देखा।
   (इस वाक्य में 'लड़के' शब्द 'लड़का' का विकारी रूप है।)

3. परसर्ग 'से'/'द्वारा'

क्र.	वाक्य	क्रिया के साथ प्रश्न	उत्तर (करण अथवा अपादान कारक)
1.	मोहन चाकू **से** आम काट रहा है।	मोहन किससे आम काट रहा है?	चाकू से (करण कारक)
2.	पेड़ **से** पत्ते गिरे	पत्ते कहाँ से गिरे?	पेड़ से (अपादानकारक)

विशेष–

1. करण तथा अपादान दोनों कारकों का परसर्ग 'से' है किन्तु दोनों के प्रयोग में अन्तर है, जैसा कि उपरोक्त दोनों वाक्यों से स्पष्ट किया गया है। पहले वाक्य में 'से' के द्वारा सहायता का बोध हो रहा है, जबकि दूसरे वाक्य में 'से' पृथकता का सूचक है।
2. 'से' परसर्ग का **करण कारकीय प्रयोग** छह प्रकार से देखने को मिलता है, जैसे–
   1. साधन– **आँखों से** देखना (मैंने राम को बाजार जाते हुए अपनी आँखों से देखा।)
   2. रीति– ठीक ढंग **से** पढ़ना।
   3. कारण– वह कैंसर **से** मर गया
   4. तुलना– वह तुम**से** अच्छा पढ़ता है।
   5. भाववाच्य के साथ– मुझ **से** पढ़ा नहीं जाता।
   6. कर्मवाच्यक के साथ– मोहन के **द्वारा** रामायण पढ़ी गई।
3. कहना, पूछना, बनाना, प्रार्थना करना, लड़ना, मिलना, माँगना आदि क्रियाओं में कर्म के साथ 'से' का प्रयोग होता है, जैसे–
   – मोहन ने राम **से** कहा।
   – मैं आप **से** प्रार्थना करता हूँ कि–
4. भूख प्यास, आँख, कान, हाथ, पांव आदि जब एकवचन में प्रयुक्त होते हैं, तो 'से' का प्रयोग होता है। बहुवचन में 'से' का प्रयोग नहीं होता है, जैसे–
   वह भूख **से** बैचेन है। (एक वचन)
   वह **भूखों** मर रहा है। (बहुवचन)

5. 'से' परसर्ग के **अपादानी प्रयोग** भी हैं, जैसे-

1. तुलना करते समय
   राधा सीता से सुन्दर है।
2. उद्देश्य सूचक के साथ-
   आप किस काम **से** दिल्ली जा रहे हैं।
3. समय सूचक के साथ-
   2 अक्टूबर **से** 10 अक्टूबर तक कालेज बंद रहेगा।
4. स्थान सूचक के साथ-
   वह इलाहाबाद से आ रहा है।
5. रीति सूचक के साथ-
   ध्यान **से** पढ़ना चाहिए।
6. कारण सूचक के साथ-
   वह भूत **से** नहीं, शेर से डरता है।

विशेष-

करण और अपादान दोनों का परसर्ग 'से' है।

1. करण का अर्थ है-साधन। 'से' परसर्ग साधन की ओर इंगित करता है।
2. करण कारक के परसर्ग अन्य कारक परसर्गों की अपेक्षा अधिक विस्तृत रूप में प्रयुक्त होते हैं।
3. कहीं-कहीं 'से'/'द्वारा' परसर्ग प्राय: एक ही भाव में प्रयुक्त होते हैं, जैसे- यह काम मुझ**से** नहीं हो सकेगा। इस वाक्य को इस प्रकार भी कह सकते है- यह काम मेरे **द्वारा** नहीं हो सकेगा।
4. कहीं-कहीं करण कारक 'से' परसर्ग लुप्त रहता है, जैसे- 'न' आँखों देखा, न कानों सुना।
5. अपादान का अर्थ है— अलग होना। जिसमें किसी व्यक्ति या वस्तु का अलगाव या दूरी दिखाई जाती है, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका परसर्ग भी 'से' है। जहाँ 'साधन' के अतिरिक्त 'से' का प्रयोग हो, वहाँ अपादान कारक होता है।

4. परिसर्ग 'को' / 'के लिए'

क्र.	**वाक्य**	**क्रिया के साथ प्रश्न**	**उत्तर (संप्रदान कारक)**
1.	माँ अपने बेटे **के लिए** मिठाई खरीद रही है।	माँ किसके लिए मिठाई खरीद रही है?	बेटे के लिए
2.	वह घूमने क्यों नहीं जाता?	वह कहाँ नहीं जाता?	घूमने

विशेष–

1. **के लिए** का प्रयोग उद्देश्य सूचक के रूप में किया जाता है, जैसे– प्रथम वाक्य में 'माँ' (संज्ञा के लिए) तथा दूसरे वाक्य में **घूमने** (क्रियार्थक संज्ञा) **के लिए** का प्रयोग किसी उद्देश्य को बताने के लिए किया गया है।
2. कर्म कारक तथा सम्प्रदान कारक का 'को' चिह्न एक ही है। इसके अन्तर को पहचानने के लिए ध्यान में रखें–

   सम्प्रदान कारक में 'को' का प्रयोग उस समय किया जाता है जब किसी के लिए कुछ करने का उद्देश्य रहता है, जैसा कि उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है। माँ का उद्देश्य पुत्र के लिए मिठाई खरीदना है, किन्तु कर्म कारक में परसर्ग 'को' का प्रयोग किसी उद्देश्य के लिए नहीं होता है, जैसे–

   – माँ ने बच्चे **को** गोद में उठा लिया। (कर्म कारक)

   – माँ ने बच्चे **को** खिलौने दिए (संप्रदान कारक)
3. जहाँ एक ही वाक्य में सम्प्रदान कारक में दो संज्ञाएँ अथवा सर्वनाम होते हैं, वहाँ पहले के बाद 'को' तथा दूसरे के बाद के लिए का प्रयोग होता है, जैसे–

   माँ ने मुझ**को** पैसे दिए और तुम्हारे **लिए** मिठाई रखी है।
4. **को** परसर्ग का प्रयोग एक से अधिक कारकों में होता है, जैसे—
   1. राम **को** बहुत श्रम करना पड़ा।
      (कर्त्ता कारक के साथ)
   2. अध्यापक ने राम **को** अपने पास बुलाया।
      (कर्म कारक के साथ)
   3. निर्धनों **को** वस्त्र दो।
      (संप्रदान कारक के साथ)
   4. तुम शाम **को** घर आना।
      (अधिकरण कारक के साथ)

रोचक तथ्य—

1. 'संप्रदान' का अर्थ है– देना। वाक्य में जिसके लिए कुछ कार्य किया जाए अथवा जिसे कुछ दिया अथवा जिससे कुछ लिया जाए– वे शब्द संप्रदान कारक होते हैं। इसमें 'को' 'के लिए' परसर्गों का प्रयोग होता है।
2. कर्म कारक तथा संप्रदान कारक दोनों में परसर्ग 'को' का प्रयोग होता है। अतः देने अथवा उपकार करने की क्रिया में 'को' संप्रदान कारक प्राणिवाचक का बोध कराता है। अप्राणीवाचक में कर्म कारक का प्रयोग होता है, जैसे— गरीबों को भोजन दे दो। इस वाक्य में गरीबों <u>को</u> में सम्प्रदान, तथा भोजन (को) में कर्म कारक है।

3. निमित्त, अवधि, देना, चाहने आदि के साथ 'के लिए' परसर्ग का प्रयोग होता है, जैसे—
   1. वह जाने के लिए खड़ा था। (निमित्त)
   2. शाम तक के लिए बाहर जा रहा हूँ। (अवधि)
   3. संतों के लिए कुछ दान कर दो। (देना)
   4. मैं देश के लिए अपने प्राण न्योछावर करना चाहता हूँ। (चाहना)
   5. अपादान कारक का प्रयोग करण कारक के साथ समझा दिया गया है।

6. परसर्ग 'का'/'की'/'के'

क्र.	**वाक्य**	**क्रिया के साथ प्रश्न**	**उत्तर (संबंध कारक)**
1.	महारानी लक्ष्मी बाई का नाम सदैव अमर रहेगा।	किसका नाम सदैव अमर रहेगा?	लक्ष्मीबाई का।
2.	महारानी लक्ष्मी बाई के कोई संतान नहीं थी।	किसके संतान नहीं थी?	लक्ष्मी बाई के

विशेष-

1. संबंध कारक **के** परसर्ग सम्बन्ध बताने का काम करते हैं,
   जैसे- दशरथ **के** चार पुत्र थे। (सामान्य वाक्य के रूप में)
   अयोध्या के राजा दशरथ **के** चार पुत्र थे। (पद-बंध के रूप में) इन वाक्यों में 'दशरथ' **के** का संबंध पुत्र से है।
2. **की** का प्रयोग केवल एक वचन/बहुवचन और सभी स्त्रीलिंग संज्ञाओं के साथ होता है, जैसे-
   कृष्ण **की** राधा। (एक वचन-स्त्रीलिंग)
   यह पुस्तक चार रुपये **की** है। (बहुवचन स्त्रीलिंग)
3. सर्वनाम की स्थिति में संबंध कारक का प्रयोग रा-रे-री तथा ना-ने- नी- हो जाता है, जैसे-

मेरा लड़का	मेरी लड़की	मेरे लड़के
अपना घर	अपने सपने	अपनी नौकरी

ध्यान दें—

1. संबंध कारक का जिस शब्द से संबंध होता है उसका लिंग और वचन उसके

साथ बदल जाता है।

2. संबंध कारक का परसर्ग **ने** कर्त्ता कारक के परसर्ग **ने** से भिन्न है। कर्त्ता कारक का 'ने' सर्वत्र प्रयुक्त होता है किंतु संबंध बोधक 'ने' केवल आप के विकारी रूप के साथ (अपने) प्रयुक्त होता है, जैसे— आप सब तो अपने हैं।

4. संबंध वाचक परसर्ग का प्रयोग पाँच स्थितियों में देखने को मिलता है, जैसे-
   1. यह कृष्ण की द्वारका है। (अधिकार के रूप में)
   2. रामचरित मानस तुलसी की रचना है। (कर्त्ता/कर्म के रूप में)
   3. यह रेशम का कुर्त्ता। (कार्य कारण के रूप में)
   4. पाँच रुपये की सेव। (मोलभाव के रूप में)
   5. मेरे पास चार फुट की रस्सी है। (परिमाण के रूप में)

7. परसर्ग 'में/'पर'

क्र.	वाक्य	क्रिया के साथ प्रश्न	उत्तर (अधिकरण कारक)
1.	कक्षा **में** मोहन सदैव प्रथम आता है।	मोहन किसमें प्रथम आता है?	कक्षा में
2.	आज शहर **में** सन्नाटा पसर रहा है।	सन्नाटा किसमें पसर रहा है?	शहर में
3.	पेड़ **पर** कोयल बैठी है।	कोयल कहाँ बैठी है?	पेड़ पर

विशेष-

अधिकरण का अर्थ है- आधार या आश्रय। जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द से क्रिया के आधार या उसके आश्रय का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

1. अधिकरण कारक का परसर्ग में/ पर है। स्थान तथा समय सूचक क्रिया विशेषण के लिए इन दोनों परसर्गों का प्रयोग होता है।

   स्थान सूचक- पिताजी घर में नहीं है। दुकान पर भीड़ है।

   समय सूचक- वह दो दिन में लोटेगा। बस ठीक समय पर आएगी

2. इसके अतिरिक्त इन दोनों परसर्गों (में/पर) का प्रयोग अन्य रीति से भी देखा गया है।

क. 'में' का प्रयोग

तुलना करते समय— इन दोनों में श्याम सुन्दर है।

भीतरी अर्थ में—हम कमरे **में** सोते हैं। घड़े **में** पानी है।

विषय के रूप में- इतिहास **में** भूगोल में।

मोलभाव करने में- कितने रुपये में, दो रुपये में।

विशिष्ट प्रयोग-

1. सात बजने में पाँच मिनिट। (समय बताने में)
2. संक्षेप में
3. आपस में
4. के बीच के अर्थ में, जैसे-बहनों में इस समय अनबन चल रही है।

ख. 'पर' का प्रयोग

शैतानी करने पर दंड मिलेगा। (कारण सूचक क्रिया विशेषण पद शब्द में)
वह छत पर बैठा है। (बाहरी अर्थ में)
भिखारी द्वार पर खड़ा है। (समीपता के अर्थ में)
विद्यालय दो किमी. पर है। (दूरी के अर्थ में)
किसी बात पर दोनों झगड़ पड़े। (कारण के अर्थ में)
मैंने उसे चाय पर बुलाया है। (निमित्त के अर्थ में)

ग. इसके अलावा पर परसर्ग के अन्य प्रयोग भी है,
जैसे-
दिन पर दिन राम कमजोर होता जा रहा है।
दिनरात पढ़ने पर भी मोहन उत्तीर्ण नहीं हो सकता।

3. कभी-कभी 'में' अर्थ में पर, तथा पर के स्थान पर 'में' का प्रयोग भी हो जाता है, जैसे-
वह घर में नहीं है।
वह घर पर नहीं है।
मैं भाग्य में विश्वास करता हूँ।
मैं भाग्य पर विश्वास करता हूँ।

4. कभी-कभी में/ पर 'का' से 'के' साथ भी प्रयोग होता है, जैसे- पुस्तक टेबुल **पर से** गिर गई। प्राय: ऐसे प्रयोग करना ठीक नहीं।

5. परसर्ग (विभक्ति) रहित अधिकरण- कई स्थानों पर अधिकरण कारक की विभक्ति का लोप भी हो जाता है, जैसे—
   - क. घर-घर संपर्क करने से कोई लाभ नहीं।
   - ख. सब जगह परमात्मा हैं।
   - ग. आज मैं तुम्हारे घर अवश्य आऊँगा।

रोचक तथ्य—

1. परसर्ग (विभक्ति) रहित शब्द को मूल शब्द कहते हैं, जैसे—
   लड़का।
2. परसर्ग (विभक्ति) सहित शब्द को तिर्यक् शब्द कहते हैं, जैसे—
   लड़के ने पीछे देखे।

3. सभी कारक परसर्ग कहलाते हैं, किंतु सभी परसर्ग कारक नहीं होते।

4. हिंदी में इन कारक परसर्गों के अतिरिक्त अन्य परसर्गों का प्रयोग भी होता है। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

   1. कुत्ता कुर्सी के ऊपर रखा है।(स्थान बोध)
   2. खिड़की तक जाओ। (सीमा बोध)
   3. किसके साथ आओगे। (संगबोध)
   4. मैं किसके पीछे चलूँगा। (स्थान अथवा समय बोध)
   5. वह राम से आगे है। (स्थान/समय बोध)

II सर्वनाम

(सर्वनाम शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। सर्व+नाम। सर्व का अर्थ है- सबका। अत: सर्वनाम का अर्थ है- सबका नाम।)

भगवान कृष्ण ने गुरु सान्दीपनि से पूछा-'परमात्मा का चिंतन कैसे किया जाए?'

गुरुदेव ने कहा- 'मैं, तू, वह- इन तीन रूपों में हमें परमात्मा का चिंतन करना चाहिए।'

संसार में परमात्मा के विषय में चिंतन को आधार बनाकर किसी गुरु द्वारा दिया गया यह सबसे संक्षिप्त उत्तर है।

गुरु के बताए गए इन तीन शब्दों को आधार बनाकर भिन्न-भिन्न विद्वानों ने अपनी-अपनी चेतना के स्तर पर इनकी व्याख्याएँ की हैं। गुरुदेव ने 'वह' शब्द से परमात्मा के विराट रूप की व्याख्या की है। विराट रूप से उस परमात्मा का कण-कण में वास है।

मुझमें तथा तुझमें भी 'वह' परमात्मा ही समान रूप से सर्वत्र व्याप्त है। परमात्मा के इस रूप से अधिक निकटता का अनुभव वह व्यक्ति करता है, जो 'तू' रूप में उसका चिंतन करता है। ऐसा व्यक्ति मानता है कि, हे परमात्मा 'तू' सबमें है, और सब 'तुझमें' हैं, किंतु ऐसे चिंतन में व्यक्ति परमात्मा से अपना द्वैत बनाए रखता है, इसलिए अद्वैत रूप में वह उसका अनुभव नहीं कर पाता। ऐसा अनुभव केवल 'मैं' के रूप में होता है। यह चिंतन की श्रेष्ठ एवं उत्तम अवस्था है।

इस संवाद में 'मैं' को प्रमुखता देते हुए 'मैं' सबमें हूँ तथा सब मुझमें है का भाव ही प्रमुखता से लिया जा सकता है। शायद इसीलिए परमात्मा के नाम का स्मरण करने के स्थान पर सोऽह्म, अहं ब्रह्मास्मि, ततत्वम् असि के अनुभव करने की बात भी वेदांत में आती है। कहने का आशय यह कि 'मैं', 'तू', 'वह': ये तीन ऐसे शब्द हैं, जो सभी के नाम के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। ये शब्द किसी उपस्थित या अनुपस्थित व्यक्ति के लिए आते हैं।

उपरोक्त संवाद में प्रत्यक्षत: भाग लेने वाले दो हैं-कृष्ण एवं गुरु वार्तालाप के समय उनकी भूमिकाएँ बदल गई हैं। पहले वाक्य में कृष्ण वक्ता हैं, गुरु श्रोता, दूसरे वाक्य में गुरु वक्ता हैं, तथा कृष्ण श्रोता।

वक्ता द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों को सुनने वाला श्रोता जब उत्तर देता है, तो स्वयं वक्ता बन जाता है, और प्रश्न करने वाले को उत्तर प्राप्त करने के लिए श्रोता बनना पड़ता है।

अप्रत्यक्ष रूप से उक्त संवाद के मध्य परमात्मा की चर्चा की गई है। जिनकी चर्चा श्रोता तथा वक्ता के मध्य होती है, वे भी संवाद में अप्रत्यक्ष भागीदार होते हैं। ऐसे तत्व मानव एवं मानवेतर दोनों प्रकार के हो सकते हैं। अत: 'मैं' और 'तू' सदैव उपस्थित रहते हैं, किंतु 'वह' शब्द का प्रयोग प्राय: उपस्थित एवं अनुपस्थित दोनों के लिए किया जाता है।

इस प्रकार संवाद को आधार बनाकर प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष इन दो वर्गों को हम सभी सर्वनामों को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं-

सर्वनाम

प्रत्यक्ष वर्ग		अप्रत्यक्ष वर्ग
वक्ता	श्रोता	विषय वस्तु वर्ग
उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	(जिनके विषय में चर्चा की जाती है)
मैं-हम	तू- तुम	अन्य पुरुष

निश्चय वाचक		अनिश्चय वाचक		
संकेत वाचक (यह-वह ये-वे)	निजवाचक (आप)	अनिश्चय वाचक (कोई-कुछ)	प्रश्नवाचक वाचक (कौन-क्या)	संबंध वाचक (जो-सो)

उपरोक्त वर्गीकरण के आधार पर सर्वनाम छ: प्रकार के होते हैं-

1. पुरुष वाचक सर्वनाम
2. निश्चय वाचक सर्वनाम (संकेत वाचक सर्वनाम)
3. अनिश्चय वाचक सर्वनाम
4. प्रश्न वाचक सर्वनाम
5. संबंध वाचक सर्वनाम
6. निज वाचक सर्वनाम

रोचक तथ्य-

1. सर्वनाम का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर होता है। अत: सर्वनाम सभी संज्ञाओं के नाम हैं। इनका प्रयोग किसी भी संज्ञा के स्थान पर किया जा सकता है।
   प्रत्येक भाषा में इनकी संख्या सीमित होती है।
2. हिंदी भाषा में सर्वनाम की संख्या 12 मानी गई है।
   (मैं, हम, तू, तुम, आप, यह, वह, कोई, कुछ, कौन, क्या, जो)
3. निज वाचक सर्वनाम पुरुष वाचक सर्वनाम का ही एक भेद है किंतु कुछ विद्वान इसकी पृथक से गणना करते हैं।

4. पुनरावृत्ति के कारण सर्वनाम का विशेष अर्थ हो जाता है, जैसे–
   (क) मंदिर में कौन–कौन थे?
   (ख) कोई–कोई दिन बड़ा मनहूस होता है।
   (ग) मैंने तुम्हारे लिए क्या–क्या नहीं किया!

सर्वनाम के भेद

1. पुरुष वाचक सर्वनाम–

जो सर्वनाम वक्ता, श्रोता तथा जिसके विषय में बात की जाए, उसका बोध कराते हैं, उन्हें पुरुष वाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे–

मैं	तुमसे पूछ रहा हूँ	वह कौन है?
(वक्ता)	(श्रोता)	(अन्य विषय)

उपरोक्त आधार पर पुरुष वाचक सर्वनाम के तीन भेद किए जाते हैं–

(क) उत्तम पुरुष (वक्ता)– मैं
(ख) मध्यम पुरुष (श्रोता)– तुम
(ग) अन्य पुरुष (जिसके विषय में चर्चा होती है)– वह

पहचान– मैं, हम, तू, तुम, वह, वे–

उदाहरण–

(क) उत्तम पुरुष (बात कहने वाला) (मैं, मेरा, हम, हमारा आदि।)
- **मैं** घर जा रहा हूँ (एक वचन) **हम** घर जा रहे हैं। (बहुवचन)
- मुझे घर जाना है। (एक वचन) **हमें** घर जाना है। (बहुवचन)

(ख) मध्यम पुरुष (बात सुनने वाला) (तू, तेरा, तुम, तुम्हारा आदि)
- **तुम** घर आना। (एकवचन)
- **आपका** नाम क्या है? (एकवचन)

(ग) अन्य पुरुष (जिसके विषय में बात की जाए, और वह वहाँ उपस्थित न हो) (वह, वे, उसे आदि)
- **वे** ही उसके विषय में चर्चा करेंगे।
- **उनका** घर कहाँ है?

रोचक तथ्य–

1. यदि एक ही वाक्य में तीनों पुरुषों का प्रयोग हो जाए, तो सही क्रम होगा–
   तुम, वह और मैं घर चलेंगे।
   (मध्यम पुरुष)(अन्य पुरुष)(उत्तम पुरुष)
2. आदर प्रकट करने के लिए 'तू' के स्थान पर 'तुम' का प्रयोग एकवचन में किया जाता है।

3. 'तू' का प्रयोग निम्नलिखित अर्थों में किया जाता है।

(क) आयु तथा संबंध मे छोटों के लिए

(ख) तिरस्कार, अपमान तथा क्रोध करते समय

(ग) आत्मीयता दर्शन के लिए

(घ) ईश्वर के लिए।

2. निश्चय वाचक सर्वनाम-

जो सर्वनाम शब्द किसी पास या दूर के किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु की ओर संकेत करें, वे **निश्चयवाचक सर्वनाम** होते हैं। संकेत करने के कारण इन्हें **संकेत वाचक सर्वनाम** भी कहते हैं।

पहचान-दूर की वस्तु के लिए- वह, वे।

निकट की वस्तु के लिए- यह, ये।

उदाहरण- यह, वह

- **वह** मेरी पुस्तक है। (दूरवर्ती के लिए)
- **यह** तेरी पुस्तक है। (समीपवर्ती के लिए)

रोचक तथ्य-

1. पूर्व कथित पुस्तक में प्रथम के लिए 'वह', और दूसरी के लिए यहाँ आया है। किंतु यह प्रयोग सदैव ऐसा ही रहता है, यह आवश्यक नहीं। जैसा कि निम्नलिखित उदाहरणों से स्पष्ट हाता है-

(क) वाल्मीकि रामायण और तुलसीकृत रामायण में अंतर इतना ही है कि वह घटना-प्रधान है, और यह चरित प्रधान।

(ख) तुम्हारी पुस्तक यह नहीं, वह है।

2. 'यह' का प्रयोग कभी-कभी क्रिया विशेषण के रूप में भी होता है। इस अंतर को पहचानें-

(क) यह मेरी पुस्तक है। (सर्वनाम)

(ख) यह तो आप मेरी पुस्तक ले जा रहे हैं। (क्रिया विशेषण)

वह, वे, वो सर्वनाम शब्दों का प्रयोग अन्य पुरुष वाचक तथा निश्चय वाचक दोनों में होता है किंतु दोनों में अंतर है। अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम का प्रयोग उस **व्यक्ति** के लिए आता है, जो वहाँ उपस्थित नहीं होता, जबकि निश्चय वाचक सर्वनाम में पास या दूर की वस्तु, व्यक्ति या स्थान अर्थात् संज्ञा की ओर संकेत करता है। संकेत द्वारा निश्चय के साथ अपनी बात कही जाती है।

3. अनिश्चय वाचक सर्वनाम-

जो सर्वनाम शब्द किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं कराते, उन्हें अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं।

पहचान- कोई, कुछ, किसी आदि।

उदाहरण- हम **किसी** का **कुछ** नहीं बिगाड़ सकते।

- गिलास में **कुछ** गिरा है।
- इस घर में पहले **कोई** रहता था।

रोचक तथ्य-

1. 'कोई' तथा 'किसी' का प्रयोग प्राणिवाचक तथा अप्राणिवाचक दोनों के लिए होता है किंतु 'कुछ' शब्द का प्रयोग केवल पदार्थों के लिए होता है।
2. अनिश्चय की अधिकता होने पर **कोई** के साथ **एक** जोड़ दिया जाता है,
   जैसे-आप में से **कोई एक** वहाँ जाएगा।
3. कोई-कोई का युग्म में प्रयोग बहुवचन के अर्थ में होता है,
   जैसे-कोई-कोई ईश्वर पर विश्वास नहीं करते।
4. कोई का प्रयोग विशेषण के पहले परिमाण वाचक क्रिया विशेषण की तरह होता है। इस अंतर पर ध्यान दें-
   (क) इस घर में पहले **कोई** और रहता था। (अनिश्चयवाचक)
   (ख) **कोई पचास** लोग उस सभा में उपस्थित थे। (परिमाण वाचक क्रिया विशेषण)
5. **कुछ** का दो बार प्रयोग समुच्चय बोधक के समान दो वाक्यों को जोड़ने में होता है,
   जैसे- **कुछ** मैंने सहायता की, और **कुछ** उसने की

4. प्रश्न वाचक सर्वनाम-

जिस सर्वनाम शब्द से किसी प्रश्न का बोध हो, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

पहचान- कौन, कब, किसने, किसे, किससे, क्या आदि।

उदाहरण- बाहर कौन खड़ा है?

- तुम्हें क्या चाहिए?
- तुम कब आओगे?
- यह बात तुमसे किसने कही?
- तुम किससे बात कर रहे थे?
- आप किसे बुला रहे हैं?

विशेष

यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि **कौन** का प्रयोग चेतन पदार्थों के लिए, तथा **क्या** का प्रयोग जड़ पदार्थों के लिए होता है।

रोचक तथ्य-

1. कौन, कब, किसने, किससे, किसे-प्राणी (चेतन पदार्थ) के संबंध में, तथा 'क्या' शब्द वस्तु के (जड़ पदार्थ) संबंध में आता है।

2. **कौन** तथा **क्या** का प्रयोग कभी-कभी तिरस्कार के अर्थ में भी होता है, जैसे—
   (क) तू **कौन** होता है, मुझे मना करने वाला।
   (ख) आपने यह **क्या** कर डाला?
3. कभी-कभी निश्चितता का बोध कराने के लिए 'कौन' के साथ सा, सी, से का प्रयोग विशेषण के रूप में होता है। इसके अंतर को जाने, जैसे-
   - तुमने कौनसी पुस्तक पसंद की है। (विशेषण)
   - तुम्हारी घड़ी कौन-सी है? (सर्वनाम)
4. कभी-कभी कौन का प्रयोग क्रिया-विशेषण के रूप में भी होता है, जैसे-वीर को **कौन** चुनाती दे सकता है? (क्रिया विशेषण)
6. **क्या** का प्रयोग असमर्थता एवं पश्चात्ताप के अर्थ में भी होता है, जैसे-
   (क) आप मेरा क्या बिगाड़ लेंगे? (असमर्थता)
   (ख) हाय! यह क्या हो गया? (पश्चात्ताप)
5. **क्या** का प्रयोग क्रिया-विशेषण के रूप में भी होता है। इस अंतर को पहचानें, जैसे- वे वहाँ क्या जाएँगे? (क्रिया विशेषण)
7. **क्या** का युग्म प्रयोग समुच्चय बोधक के रूप में होता है। इस अंतर को भी जानें, जैसे- **क्या** तुम और **क्या** तुम्हारे मित्र, इसका अर्थ कोई नहीं बता सकता।

5. संबंध वाचक सर्वनाम-

जो सर्वनाम शब्द वाक्य में आए दो ऐसे शब्दों से संबंध स्थापित करते हैं, जिनका स्वर संबंध हो, उन्हें संबंध वाचक सर्वनाम कहते हैं।

पहचान - जो-सो, जिसे-उसे, जिसे-वही, वह-जो, जिसकी-उसकी, जैसा-वैसा, जैसी-वैसी, जिसने-उसने आदि।

उदाहरण- **जिसकी** लाठी **उसकी** भैंस।
- **जैसा** करोगे, **वैसा** भरोगे।
- **जैसी** करनी, **वैसी** भरनी।
- आपने **जिसे** पढ़ाया, **उसे** ही सफलता मिली।

रोचक तथ्य-
1. संबंध वाचक सर्वनाम का प्रयोग युग्म रूप में होता है, जैसे- यह पुस्तकें **जिस-जिस** की हों, आकर ले लें।
2. जो के साथ सो, जिसे के साथ उसे, जैसा-वैसा, जैसी-वैसी, जिसने-उसने आदि का प्रयोग साथ-साथ होता है। यह संबंध नित्य बना रहने से इनको **नित्य संबंधी सर्वनाम** भी कहते हैं।

6. निज वाचक सर्वनाम-

'निज' का अर्थ है-स्वयं। जो सर्वनाम शब्द स्वयं के लिए प्रयुक्त होता है, उसे निज

वाचक सर्वनाम कहते हैं।

- हमें अपना काम **स्वयं** करना चाहिए।

- हम देश के लिए **अपने** प्राण भी न्यौछावर कर सकते हैं।

- कवि ने **अपनी** कविता स्वयं सुनाई।

यहाँ पर आए अपना, अपने, अपनी, स्वयं- निजवाचक सर्वनाम है।

विशेष-

1. कभी-कभी 'आप' शब्द का प्रयोग 'स्वयं' के लिए भी होता है, जैसे- मैं अपने **आप** अपना पाठ पढ़ लूँगा।

   यहाँ 'आप' शब्द मध्यम पुरुष वाचक 'आप' से भिन्न है। यह स्वयं के लिए आया है। अत: निज वाचक सर्वनाम है, जबकि मध्यम पुरुष 'आप' 'तू' का बहुवचन है।

2. 'अपना' शब्द सर्वनाम के साथ-साथ संज्ञा तथा विशेषण का अर्थ भी देता है। इस अंतर पर ध्यान दें-

   (क) जब 'अपना' के आगे कोई संज्ञा या सर्वनाम शब्द (विशेष्य) आता है, तब 'अपना' विशेषण बनता है, जैसे- मेरा **अपना** मित्र कोई नहीं।

   (ख) 'अपना' शब्द के साथ जब विभक्ति रहती है, (विशेष कर संबंध कारक की विभक्ति) तब 'अपना' संज्ञा बनता है, जैसे- सभी **अपनों** को चाहते हैं। ('को' विभक्ति)

   (ग) पुरुषवाचक सर्वनाम के मध्यम पुरुष वाले 'आप' और निजवाचक सर्वनाम के 'आप' को समान मानने का भ्रम प्राय: उत्पन्न हो जाता है, किंतु पुरुषवाचक में 'आप' कर्त्ता का बोधक है परंतु स्वयं काम नहीं करता, जबकि निजवाचक में वह स्वयं अपना काम करता है।

III विशेषण

एक समय मैंने हिंदी-प्रशिक्षण में विषय प्रतिपादन के रूप में प्रश्न किया कि-ऐसा वाक्य बताइए, जिसमें संज्ञा तथा सर्वनाम एक साथ आए हों। सभी लोग सोचते रहे, किंतु मैंने जो प्रश्न पूछा, उसका ठीक-ठीक उत्तर देने में वे असमर्थ रहे।

मैंने कहा- **वह पुस्तक मुझे** दीजिए।

फिर प्रश्न किया। इस वाक्य में वह क्या है? सर्वनाम/ और पुस्तक-संज्ञा। अब आप ही सोचकर बताइए यह वाक्य अशुद्ध है क्या?

सभी ने एक स्वर से कहा-नहीं।

अत: हम कह सकते हैं कि जहाँ संज्ञा तथा सर्वनाम एक साथ आएँ, ऐसी स्थिति विशेषण में ही बनती है। तो आइए, संज्ञा, सर्वनाम के बाद अब हम विशेषण के बारे में भी जानें।

तभी एक सज्जन मोबाइल पर बातचीत संबंधी एक वाक्य का उदाहरण देते हुए बोले-

'**मैं श्रीराम** बोल रहा हूँ।'

फिर उन्होंने प्रश्न किया कि यहाँ श्रीराम संज्ञा है, तथा उसके पूर्व मैं सर्वनाम आया है। क्या यह भी आपके बताए वाक्य के अनुसार संज्ञा व सर्वनाम एक साथ आने वाले विशेषण वाक्य का उदाहरण नहीं है?

प्रश्न उनका सही था। मैंने कहा-इस प्रश्न का उत्तर भी आगे देंगे।

विशेषण

अर्थ- विशेषण शब्द का कोशीय अर्थ है- किसी संज्ञा की विशेषता बताने वाला शब्द।

परिभाषा-

संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता प्रकट करने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं, जैसे—पीला फूल।

यदि हम 'पीला फूल' कहें तो हम कह सकते हैं कि संसार में जितने फूल हैं-वे चाहे किसी भी स्थान, किसी रंग, किसी भी सुगंध अथवा आकार के हों, तो उनमें वे सारे 'फूल' अलग हो गए, जो पीले रंग के नहीं है। इस प्रकार 'फूल' शब्द की व्यापकता 'पीले' शब्द तक सीमित हो गई।

किंतु इस कथन के दो अपवाद है-

1. **आचार्य चाणक्य** - तो इसमें चाणक्य की व्यापकता सीमित नहीं होती। जो चाणक्य है, वही आचार्य है। इस प्रकार व्यक्ति वाचक संज्ञा में संज्ञा की व्यापकता सदैव बनी रहती है, सीमित नहीं होती, जैसे-सती सावित्री, माँ आनंदमयी।
2. **काली भैंस**- यहाँ 'काली' शब्द कहने से, भैंस की, व्यापकता नहीं घटती क्योंकि सभी भैंसे काली होती है।

पाणिनि ने इसीलिए विशेषणों की गणना नाम, पदों (संज्ञा और सर्वनाम) के अंतर्गत की है। उनका तर्क है कि संज्ञा और विशेषण में विशेष अंतर नहीं। कभी संज्ञा विशेषण के रूप में तथा कभी विशेषण संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होता है, फिर भी विशेषण की सत्ता पृथक रूप से आज भी बनी हुई है।

रोचक तथ्य-

1. किसी संज्ञा पद में यदि परस्पर विरोधी गुण दिए जाएँ, और उसका कोई अर्थ नहीं हो, तो ऐसे विशेषणों का प्रयोग सार्थक नहीं होता है, जैसे-मीठा नमक।
2. विशेषण विकारी शब्द होते हैं। इनका रूप, लिंग, वचन तथा कारक विशेषण के साथ बदलता है, जैसे-

   (क) लिंग- काला कुत्ता (पुल्लिंग)
   काली कुतिया (स्त्रीलिंग)

   (ख) वचन- काले कुत्ते (बहुवचन)

   (ग) कारक- काले कुत्तों ने (कर्त्ताकारक)
3. कुछ संदर्भों में विशेषण का संज्ञा की भाँति प्रयोग किया जाता है। ऐसी स्थिति में वह

परसर्गों को ग्रहण कर लेता है-

- अंग्रेजों की अपेक्षा भारतीय युद्ध में अधिक साहसी देखे गए हैं।

- बड़ों का आदर करो।

यहाँ रेखांकित शब्द परसर्ग है। अतः विशेषणों ने संज्ञा का स्थान ले लिया है।

4. विशेषण संज्ञा के अतिरिक्त सर्वनामों की भी विशेषता बताते हैं, जैसे-उसने कई पुस्तकें पढ़ी हैं।

5. कुछ संज्ञाओं तथा क्रियाओं के साथ वाला प्रत्यय लगाकर कृदन्त विशेषण भी बनाए जाते हैं, जैसे- दूधवाला, कल दूधवाला नहीं आया था। ध्यान रहे- वाला प्रत्यय के आगे यदि संज्ञा शब्द नहीं है, तो वह विशेषण न रहकर संज्ञा की तरह प्रयुक्त माना जाएगा, जैसे—

   (क) राम का दूधवाला कल नहीं आया था।

   (ख) दूधवाले पानी तो मिलाते ही हैं।

6. विशेषण शब्द जिसकी विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं, जैसे-मैंने गुलाबी फूल देखा।

   यहाँ गुलाबी विशेषण है, और फूल विशेष्य। विशेष्य शब्द संज्ञा या सर्वनाम होते हैं, जैसे- **फूल** शब्द यहाँ संज्ञा है।

विशेषण संज्ञा के अतिरिक्त सर्वनामों की भी विशेषता बताते हैं, जैसे-वह चतुर है। यहाँ 'चतुर' वह का विशेषण है। (विशेषण विशेष्य (संज्ञा सर्वनाम) से पहले भी आ सकता है और बाद में भी।) जैसा कि उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है।

इस दृष्टि से विशेषण का प्रयोग दो प्रकार से देखने को मिलता है-

(क) उद्देश्य विशेषण (विशेष्य-विशेषण)

जब विशेषण संज्ञा या सर्वनाम से पूर्व आता है, तो उद्देश्य विशेषण कहलाता है, जैसे-

कुछ **पौधे** यहाँ लगाना है।

(विशेषण) (संज्ञा) यहाँ 'कुछ' का प्रयोग उद्देश्य विशेषण के रूप में हुआ है क्योंकि वह संज्ञा (पौधे) के पूर्व आया है।

(ख) जब 'वह' विशेषण के पश्चात आता है, तो उसे विधेय-विशेषण कहते हैं, जैसे-

फूलों के **कुछ** पौधे यहाँ लगाना है।

यहाँ 'कुछ' विशेषण फूलों के पश्चात आया है। अतः इसे विधेय विशेषण कहेंगे।

रोचक तथ्य-

1. विधेय-विशेषण समानाधिकरण होते हैं, अर्थात् सामान्य गुण को ही प्रकट करते हैं; कोई नई बात नहीं बताते।

   जैसे- मोटे छात्र प्रायः मंद बुद्धि होते हैं।

   यहाँ 'मोटे' उद्देश्य विशेषण है, और 'मंद बुद्धि' विधेय विशेषण। क्योंकि मोटे कहने से

छात्रों की व्यापकता घटकर कुछ सीमित छात्रों तक घट जाती है। मंद बुद्धि कहने से और नहीं घटती। केवल 'मोटे छात्रों' के विषय में एक और जानकारी मिल जाती है। कोई नई जानकारी नहीं मिलती।

पहचान–

किसी संज्ञा या सर्वनाम से पूर्व अथवा पश्चात् आए शब्द के आधार पर कैसी, कितना, कौन सा जैसे प्रश्न उठाकर विशेषण को पहचाना जा सकता है, जैसे–

(क) उसके हाथ में मोटी पुस्तक है। (कैसी पुस्तक?.... मोटी–आकार)

(ख) मेरे पास दो पुस्तकें हैं। (कितनी पुस्तकें? .... दो–संख्या)

(ग) थोड़ा पानी पिला दो। (कितना पानी? .... थोड़ा–परिमाण)

(घ) यह दरवाजा बंद कर दो। (कौन सा दरवाजा? ...... यह–संकेत)

गर्मी का मौसम था। दादी माँ ने शीला से कहा–'बेटी, मुझे नीबू–पानी पीना है।' दादी माँ पहले यह बताओ– 'क्या–क्या चीजें मिलाकर उसे तैयार करूँ?'

दादी माँ ने कहा–आ मैं तुझे समझाती हूँ। अपनी कॉपी ला, और लिख ले। आगे भी काम आएगा–

(क)	**(ख)**	**(ग)**
नीबू	पीला (कैसा?)	गुणवाचक विशेषण (रंग)
पानी	एक गिलास (कितना)	संख्यावाचक विशेषण (दो संख्या)
चीनी	दो चम्मच (कितनी)	परिमाणवाचक विशेषण
साधारण	चुटकी भर (कौन–सा)	सार्वनामिक विशेषण
नमक नहीं		
सेंधा नमक		

उसने उक्त विवरण को 'क' 'ख' शीर्षक में बाँटा, और उसमें सारे विवरण को लिखकर आगे 'ग' शीर्षक में लिखने लगी– गुणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण तथा 'साधारण नमक नहीं, <u>वह</u> सेंधा नमक चुटकी भर'–सार्वनामिक और इस प्रकार उसने लिखकर दादी से कहा–'वाह दादी आपने तो मुझे विशेषण के प्रकार अच्छी तरह याद करवा दिए।'

इस प्रकार आकार, संख्या, परिमाण और संकेत के आधार पर विशेषण के चार भेद होते हैं।

(क) गुणवाचक विशेषण

(ख) संख्यावाचक विशेषण

(ग) परिमाण वाचक विशेषण

(घ) संकेत वाचक अथवा सार्वनामिक विशेषण

कुछ व्याकरणविद विशेषण का एक और प्रकार बताते हैं–**प्रविशेषण**। उनके मतानुसार जो शब्द विशेषण के विशेषण होते हैं वे प्रविशेषण कहलाते हैं, जैसे–

(क) लक्ष्मीबाई **बहुत** बहादुर थी।

(ख) छुरी कम धारदार है।

इन वाक्यों में 'बहुत' शब्द 'बहादुर' विशेषण की तथा 'कम' शब्द 'धारदार' विशेषण की विशेषता बता रहे हैं। अत: ये प्रविशेषण के उदाहरण हैं।

रोचक तथ्य-

1. प्रविशेषण कोई अलग शब्द वर्ग से चुनकर नहीं बनते अपितु ये विशेषण और क्रिया विशेषण वर्ग से ही संबंधित होते हैं।

विशेषण के भेद

(क) गुणवाचक विशेषण

जो शब्द संज्ञा/ सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, आकार, दशा, रूप आदि का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं, जैसे-

1. रमेश बुद्धिमान है। (गुण)
2. तुम झूठे हो। (दोष)
3. वह गोरा है। (रंग/रूप)
4. यह टेबल गोल है। (आकार)
5. वह जवान है। (दशा)

पहचान-

गुणवाचक विशेषणों की संख्या सबसे अधिक है। इनकी पहचान के लिए कुछ विशेषण शब्दों का वर्गीकरण किया जा रहा है-

1. गुण-चतुर, योग्य, अच्छा, दयालु, शांत, सज्जन, सुशील आदि।
2. दोष-अधम, खल, कुटिल, क्रोधी, दुष्ट, झूठा, नीच, लुच्चा आदि।
3. रंग-रूप-गोरा, काला, सुंदर, आकर्षक, चटक, लाल, हरा, बेगनी आदि।
4. आकार- गोला, टेढ़ा, चौड़ा, लम्बा, तिरछा, नुकीला, ठिगना, पतला आदि।
5. दशा-बलवान, कमजोर, रोगी, दरिद्र, जवान, बूढ़ा, अमीर आदि।
6. भार-हल्का, भारी, वजनी आदि।
7. गति-तेज, मंद, तीव्र आदि।
8. समय-दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक।
9. स्थान-देशी, विदेशी, भारतीय, रूसी, चीनी, ऊँचा, नीचा, गहरा आदि।
10. दिशा-पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी, दक्षिणी।
11. गंध-सुगंधित, सोंधी, बदबूदार।
12. स्वाद-कड़ुआ, कसेला, खट्टा, चटपटा, नमकीन, मीठा, फीका आदि।
13. स्पर्श-नरम, कठोर, कोमल, चिकना, खुरदरा, ठंडा, गरम आदि।
14. दृश्यता- आकर्षक, मनोहर, सुंदर, सलोना, साफ, मैला, गंदा आदि

रोचक तथ्य-

1. कभी-कभी विशेष्य के लुप्त होने पर विशेषण ही विशेष्य का कार्य करते हैं, जैसा कि पाणिनि ने कहा है। ऐसे विशेषण गुणवाचक विशेषण होते हैं, जैसे- **गरीबों** को मत सताओ, (यहाँ गरीबों विशेषण है किंतु विशेष्य का कार्य कर रहा है।)
2. गुणवाचक विशेषण में 'सा' प्रत्यय जोड़कर गुणों को अधिक या कम भी किया जा सकता है, जैसे-बड़ा सा, छोटा सा, ऊँचा सा, नाटा सा आदि।

(ख) संख्या वाचक विशेषण

जो शब्द किसी संज्ञा/सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता बताते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं, जैसे- टेबल पर दो पुस्तकें हैं।

'दो' निश्चित संख्या को बताता है अर्थात पुस्तकें **दो** से अधिक नहीं हैं। किंतु यह कहें कि टेबल पर **थोड़े** बादाम रखे हैं, उन्हें तुम खा लो। यहाँ 'थोड़े' शब्द से संख्या का निश्चय नहीं हो पाता है।

इसी आधार पर संख्या वाचक विशेषण के दो भेद हैं।

(क) निश्चित संख्या वाचक विशेषण

(ख) अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण

पहचान-

(क) निश्चित संख्या वाचक विशेषण-

1. अंक बोधक- पूर्ण- एक, दो, तीन, सौ, हजार।
   अपूर्ण/अंश- चौपाई, आधा, पौना।
2. क्रम बोधक- पहला, दूसरा, तीसरा आदि।
   (जो क्रम का ज्ञान कराते हैं।)
3. समूह वाचक- दोनों, तीनों, सातों, सैकड़ों, हजारों आदि।
4. प्रत्येक वाचक-हरेक, प्रत्येक, प्रतिदिन, प्रतिमाह, प्रतिवर्ष आदि।
5. आवृत्ति वाचक- दुगना, तिगुना, चौगुना आदि।
6. समुच्चय बोधक- शतक, सतसई, चालीसा, पचीसी आदि।

विशेष- सभी निश्चित संख्यावाचक विशेषणों के मूल में संख्या होती है।

(ख) अनिश्चित वाचक विशेषण-

कुछ आदमी, बहुत नारंगी, सैकड़ों लोग, थोड़े आम, कई बच्चे।

रोचक तथ्य-

1. कभी-कभी संख्या वाचक विशेषण भी संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होते हैं।
2. गणनात्मक संख्या वाचक विशेषणों की पुनरुक्ति से प्रत्येक या सबका बोध होता है, जैसे- एक-एक को देख लूंगा।
   - अच्छे-अच्छे लोग इस बात पर ध्यान नहीं देते हैं।

(ग) परिमाण वाचक विशेषण

जो विशेषण शब्द संज्ञा/सर्वनाम की माप-तौल (परिमाण) का बोध कराते हैं, उन्हें परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं;

जैसे- माप-दो मीटर कपड़ा

यहाँ दो मीटर/लीटर कपड़े का तथा दो लीटर दूध का माप (तौल) है जो कपड़े तथा दूध की निश्चित मात्रा बताता है। किंतु यह कहें कि-थोड़ा सा दूध देना, तो यहाँ दूध की मात्रा का निश्चय नहीं हो पाता है।

इसी आधार पर परिमाण वाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं-

(क) निश्चित परिमाण वाचक विशेषण; जैसे- पाँच किलो, ढाई मीटर।

(ख) अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण; जैसे- थोड़े, कुछ, सब, बहुत।

पहचान- (क) निश्चित परिमाण वाचक विशेषण-

एक किलो, चार लीटर, दो गज, पाँच बीघा, तीन मीटर।

(ख) अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण-

थोड़ा, कम, हल्का, तनिक, पूरा, अधूरा (इतना, उतना, जितना, ढेर-सा, थोड़ा-सा, बहुत-सा)

रोचक तथ्य-

1. निश्चित परिमाण वाचक विशेषण बहुवचन बनाकर अनिश्चित परिमाण वाचक बना लिए जाते हैं; जैसे-सैकड़ों लोग, पचासों बीघा।
2. परिमाण वाचक और संख्या वाचक विशेषण में अंतर-

   यदि विशेषण शब्द संज्ञा/सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता बताते हैं, तो उन्हें संख्या वाचक विशेषण कहते हैं, और यदि माप-तौल (परिमाण) संबंधी विशेषता बताते हैं, तो उन्हें परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं; जैसे-

   - राम दस केले खा गया। (संख्या वाचक)
   - राम दस किलो दूध पी गया। (परिमाण वाचक)

विशेष- यहाँ दस की संख्या का प्रयोग संख्या वाचक/परिमाण वाचक दोनों में हुआ है किंतु केले संख्या में गिने जा सकते हैं, दूध नहीं। अत: दूध के साथ दस किलो का प्रयोग माप बताता है। यह दोनों में अंतर है।

(घ) संकेतवाचक अथवा सार्वनामिक विशेषण

जो सर्वनाम शब्द विशेषण की तरह संज्ञा की विशेषता बताते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं; जैसे- यह फूल सुन्दर है।

यहाँ 'यह' सार्वनामिक विशेषण है, क्योंकि यह फूल (संज्ञा) की विशेषता बताता है।

ध्यान रहे-

1. सर्वनाम आमतौर पर संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं किंतु यहाँ 'यह' सर्वनाम (संज्ञा)

की विशेषता बता रहा है। अत: वह **सार्वनामिक विशेषण** है। यहाँ संज्ञा (फूल) है, और उसी के लिए सर्वनाम (यह) का प्रयोग हुआ है। अत: संज्ञा के साथ प्रयोग होने में यह सार्वनामिक विशेषण है।

2. पुरुषवाचक सर्वनाम (मैं-हम, तू-तुम) और निजवाचक सर्वनाम (आप) को छोड़कर शेष सभी सार्वनामिक विशेषणों की तरह प्रयुक्त होते हैं।

पहचान- सार्वनामिक विशेषण दो प्रकार के होते हैं-

(क) मूल सार्वनामिक-

यह पुस्तक, वह आदमी, कोई फूल, कुछ तितलियाँ।

यहाँ यह, वह, कोई, कुछ सर्वनामों का प्रयोग मूल सार्वजनिक विशेषण के रूप में है; अर्थात् इनमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

विशेष- मूल सर्वनामों का प्रयोग सार्वनामिक (संकेतवाचक) विशेषण के रूप में होता है।

(ख) यौगिक सार्वनामिक-

जो मूल सर्वनामों में प्रत्यय आदि लगाने से बनते हैं, जैसे-

'यह' से- इतना, इतने, इतनी, ऐसे, ऐसी, ऐसा।

'वह' से- उतना, उतने, उतनी, वैसे, वैसी, वैसा।

'जो' से- जितना, जितने, जितनी, जैसे, जैसी, जैसा।

'कौन' से- कितना, कितने, कितनी, कैसे, कैसी, कैसा।

उदाहरण- इतना दूध, कैसे घोड़े आदि।

विशेष- कुछ विद्वानों ने सार्वनामिक विशेषण के चार भेद माने हैं-

(क) निश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण, जैसे- यह चिड़िया बहुत सुंदर है। (यह, वह, इस, उस निश्चय वाचक सर्वनाम के उदाहरण हैं।)

(ख) अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण- कोई नेताजी यहाँ आए थे। (कोई, कुछ अनिश्चय वाचक सार्वनाम के उदाहरण हैं।)

(ग) प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषण-किस मूर्ख ने मेरा विरोध किया है? (कौन, क्या, किस प्रश्नवाचक सर्वनाम के उदाहरण हैं)

(घ) संबंधवाचक सार्वनामिक विशेषण- वह बालक भाग गया जो शोर कर रहा था। (जो, मेरी, तेरा, उसका, हमारा, तुम्हारा, इसका, उनका, संबंधवाचक सर्वनाम के उदाहरण हैं)

ध्यान रहे, ये चारों भेद सर्वनाम के भेदों पर आधारित हैं। इनमें सर्वनाम के वे दो भेद नहीं हैं जिन्हें व्यक्तिवाचक सर्वनाम तथा निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसा कि प्रारंभ में कहा गया है- 'मैं श्रीराम' बोल रहा हूँ। वाक्य में 'मैं' व्यक्तिवाचक विशेषण है। अत: यह सार्वनामिक विशेषण की कोटि में नहीं आता है।

रोचक तथ्य-

अनिश्चित संख्या वाचक तथा अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण में पहचान कैसे करें-

(क) सब, कुछ, अधिक, बहुत, थोड़ा आदि विशेषणों के विशेष्य (संज्ञा) यदि बहुवचन में हो; तथा गिनने के योग्य हो तो अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण होंगे।

(ख) यदि सब कुछ, अधिक, बहुत, थोड़ा आदि विशेषणों में विशेष्य (संज्ञा) यदि एक वचन में हो, और गिनने अथवा मापने योग्य न हो तो अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण होंगे; जैसे–

अनिश्चित संख्यावाचक	**अनिश्चित परिमाणवाचक**
थोड़े फल	थोड़ा पानी
कुछ केले	कुछ दूध
बहुत पुस्तकें	बहुत धन
कम पुस्तकें	कम वर्षा
सब आम	सब मिठाई

विशेषणों की रचना का आधार

प्रत्यय तथा उपसर्ग द्वारा विशेषणों की रचना होती है–

संज्ञा शब्द	**प्रत्यय**	**विशेषण**
वर्ष	इक	वार्षिक
सेना	इक	सैनिक
शिक्षा	इत	शिक्षित
सम्मान	इत	सम्मानित
अंत	इम	अंतिम
स्वर्ण	इम	स्वर्णिम
स्नेह	इल	स्नेहिल
धूम	इल	धूमिल
जयपुर	इया	जयपुरिया
नागपुर	इया	नागपुरिया
रोग	ई	रोगी
पंजाब	ई	पंजाबी
रंग	ईन	रंगीन
नमक	ईन	नमकीन
पर्वत	ईय	पर्वतीय
रस	ईला	रसीला
पानी	ईला	पनीला
विष्णु	अव	वैष्णव
पाण्डु	अव	पाण्डव
उपासना	अक	उपासक

हिंसा	अक	हिंसक
सुख	अंत	सुखान्त
प्राण	अंत	प्राणान्त
पूजा	अय	पूज्य
मान	अय	मान्य
दया	आलू	दयालु
कृपा	आलू	कृपालु
भूख	आ	भूखा
प्यास	आ	प्यासा
पेट	ऊ	पेटू
अकड़	ऊ	अकड़ू
विष	ऐला	विषैला
लूट	ऐरा	लुटेरा
चाचा	ऐरा	चचेरा
तुम	सा	तुम-सा
मैं	सा	मुझ-सा
यह	सा	ऐसा
कौन	सा	कैसा

उपसर्ग	**विशेषण**
अ	अ+टल = अटल
निर/नि	नि:+आकार = निराकार
प्र	प्र+बल = प्रबल
सु	सु+शील = सुशील

क्रिया	**विशेषण**
कमाना	कमेरा
चलाना	चालक
तैरना	तैराक
बिकना	बिकाऊ
भागना	भगोड़ा
भूलना	भुलक्कड़
लड़ना	लड़ाकू
लुटना	लुटेरा
हँसना	हँसोड़

विशेषण की अवस्थाएँ

विद्यालयों के वार्षिकोत्सव के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि ने पुरस्कार वितरण करते हुए अपना आशीर्वाद कुछ इस प्रकार दिया—

आप में से कुछ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हैं, यह एक अच्छी बात है किंतु ध्यान रहे, हमें अपने साथी से अधिक अंक लाना होगा तो अधिक अच्छी बात होगी; और मैं चाहूँगा, जो छात्र पूरे विद्यालय के छात्रों से सर्वाधिक अंक लाएगा, वह सबसे अच्छी बात होगी।

उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि रेखांकित पंक्तियों में तीन प्रकार के शब्दों का प्रयोग उन्होंने आशीर्वाद देते समय किया। सर्वप्रथम उन्होंने **अच्छी बात** है, कहा। यह विशेषण की मूल अवस्था है। दूसरी बार उन्होंने **अधिक अच्छी बात होगी** कहकर विशेषण की एक दूसरे से तुलनात्मक श्रेष्ठता दिखाई। यह विशेषण की उत्तरावस्था कही जाती है। तीसरी बार उन्होंने **सबसे अच्छी बात होगी** कहकर विशेषण की उत्तम अवस्था दिखाई। इससे लगता है कि मनुष्य को अपने जीवन में सद्‌गुण को मूल से उत्तर, और उत्तर से उत्तम स्थिति तक पहुँचाने का लक्ष्य रखना चाहिए।

संभवत: विशेषण की ये तीनों अवस्थाएँ हमें यही संदेश देती हैं। तीनों अवस्थाओं को स्पष्ट समझने का प्रयास करें-

1. मूलावस्था-

जब एक ही व्यक्ति, प्राणी या वस्तु के गुणों की तुलना किसी अन्य से नहीं की जाती हो, तो वह विशेषण की मूल अवस्था होती है; जैसे-

यह आम बहुत मीठा है।

विशेष- जब दो वस्तुओं अथवा व्यक्तियों में किसी विशेषता में समानता दिखाई दे तो वहाँ भी मूलावस्था का ही प्रयोग होता है।

राम श्याम के समान सुंदर है।

2. उत्तरावस्था-

जब दो वस्तुओं अथवा व्यक्तियों के गुण-दोषों की तुलना की जाती है, तथा एक की अधिकता तथा दूसरे की न्यूनता बनाई जाती है, तो उसे उत्तरावस्था कहते हैं; जैसे- तुम तो राम से अधिक सुंदर हो।

3. उत्तम अवस्था-

जब दो से अधिक वस्तुओं और व्यक्तियों के गुण-दोषों की तुलना की जाती है, और उनमें किसी को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया जाता है, तो वह उत्तमावस्था होती है; जैसे-कृष्ण सबसे सुंदर है।

किंतु ध्यान रहे-

(क) तुलनात्मक अवस्थाएँ केवल गुणवाचक विशेषणों में ही होती है, संख्यात्मक तथा मात्रात्मक विशेषणों में नहीं। हम संख्या और मात्रा की तुलना तो कर सकते हैं किंतु

उनकी गुणवत्ता की तुलना नहीं कर सकते।

(ख) गुणवाचक विशेषणों में भी कुछ ऐसे विशेषण है, जिनमें तुलनात्मक अवस्थाएँ होती ही नहीं-

(क) नकारात्मक अवस्था- अशिक्षित, असभ्य, अप्रिय, अक्षम्य आदि।

(ख) अभावात्मक अवस्था- अंधा, लूला, लँगड़ा आदि।

विशेषण की अवस्थाओं की रूप-रचना

हिंदी में विशेषण की अवस्थाओं की रूप-रचना दो प्रकार से देखने को मिलती है-

1. संस्कृत से आए तत्सम शब्दों में
2. हिंदी के शब्दों में

1. तत्सम शब्दों में- (तर तथा तम लगाकर); जैसे—

मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
सुंदर	सुंदरतर	सुन्दरतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम

2. हिंदी शब्दों में विशेषण के पूर्व 'अधिक' अथवा 'सबसे' शब्द जोड़कर; जैसे—

मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
अच्छा	अधिक अच्छा	सबसे अच्छा
बुरा	अधिक बुरा	सबसे बुरा
पतला	अधिक पतला	सबसे पतला
सरल	अधिक सरल	सबसे सरल
दयालु	अधिक दयालु	सबसे दयालु

IV क्रिया

क्रिया- पर विचार करने के पूर्व हमें कार्य, काम, व्यापार, कर्म, कृत्य, धंधा, फल आदि पर्यायवाची शब्दों पर विचार अवश्य करना चाहिए। अन्यथा भ्रम बना रहता है।

सर्वप्रथम कार्य और क्रिया के अंतर को समझें। क्रिया की परिभाषा में कहा गया है कि- 'जिन शब्दों से किसी कार्य के होने अथवा करने का पता चलता है, उसे क्रिया कहते हैं।'

उपरोक्त परिभाषा में क्रिया की पहचान कार्य के होने अथवा करने से है। एक

उदाहरण द्वारा इसे यूँ स्पष्ट किया जा सकता है। 'खेलना' कार्य है। लेकिन-राम खेल रहा है। इस वाक्य में खेल रहा है- क्रिया है क्योंकि इससे कार्य (खेलने) के होने अथवा करने का पता चल रहा है।

कार्य को लक्ष्य करके ही कर्ता क्रिया करता है। प्रत्येक कार्य का फल अथवा परिणाम भी प्राप्त होता है। अत: कार्य और फल दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

कर्म के विषय में शब्दकोश में बताया गया है कि कर्म वह कार्य अथवा क्रिया है जिसका करना कर्तव्य हो; जैसे- विद्यार्थी का कर्तव्य है स्वाध्याय करना। यहाँ विद्यार्थी के लिए स्वाध्याय **कर्म** है।

इस प्रकार कार्य, कर्म, क्रिया और फल: ये चार ही शब्दों का अध्ययन 'क्रिया' के संदर्भ में किया जाता है। शेष सभी शब्द इन्हीं संदर्भों के अंतर्गत पर्यायवाची के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

जीवन में हम सभी का अनुभव है कि कुछ काम तो स्वयं हो जाते हैं, और कुछ करने से होते हैं; जैसे-

पेड़ से पत्ते गिर रहे हैं। (क्रिया स्वयं हो रही है।)

बच्चे पेड़ से पत्ते तोड़ रहे हैं। (क्रिया बच्चों द्वारा की जा रही है।)

खेतों में फसल उग रही है। (क्रिया स्वयं हो रही है।)

किसान फसल उगा रहा है। (क्रिया किसान द्वारा की जा रही है।)

उपरोक्त वाक्यों द्वारा किसी काम के होने अथवा करने का पता चल रहा है। अत: क्रिया दोनों प्रकार से हो सकती है।

इसलिए जिन शब्दों से किसी कार्य के होने अथवा करने का पता चलता है, वे शब्द क्रिया कहलाते हैं। उपरोक्त उदाहरणों में पत्ते गिरना एक कार्य है, यह कार्य दो प्रकार से हो रहा है- स्वयं से होना अथवा किसी के करने से होना। क्रिया इन दो प्रकारों से सम्पन्न होती है।

क्रिया और धातु-

क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। 'धातु' में 'ना' का योग होने पर प्राय: क्रिया के सभी शब्दकोशीय रूप बनते हैं। क्रिया का यह सामान्य रूप है; जैसे-

धातु	**क्रिया**	**प्रयुक्त रूप**
सुन	सुन+ना = सुनना	सुनना, सुना, सुनेंगे
दौड़	दौड़+ना = दौड़ना	दौड़ता, दौड़ा, दौड़ेंगे
पढ़	पढ़+ना = पढ़ना	पढ़ता, पढ़ा, पढ़ेंगे

क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर		प्रयोग/संरचना के आधार पर
अकर्मक क्रिया	सकर्मक क्रिया	1. सामान्य क्रिया
एककर्मक	द्विकर्मक	2. संयुक्त क्रिया
		3. प्रेरणार्थक क्रिया
		4. नामधातु क्रिया
		5. पूर्वकालिक क्रिया
गौणकर्म (सम्प्रदान कारक)	मुख्यकर्म (कर्मकारक)	

रोचक तथ्य-

1. हिंदी वाक्यों में क्रिया वाक्य के अंत में आती है।
2. क्रिया के बिना वाक्य की रचना नहीं हो सकती।
3. क्रिया से कर्ता के लिंग व वचन का पता लगाया जा सकता है।
4. क्रिया से वाक्य के काल का पता चलता है।
5. क्रिया में 'ना' निकाल देने से क्रिया का धातु रूप शेष रहता है।

कर्म के आधार पर क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर क्रिया दो प्रकार की होती है-

1. सकर्मक क्रिया
2. अकर्मक क्रिया

1. सकर्मक क्रिया-

स (साथ)+ कर्मक (कर्म कारक के साथ) होने वाली क्रिया।

यहाँ क्रिया तथा कर्म के आशय को सर्वप्रथम जानना होगा।

जैसा कि पूर्व में बताया गया है, जिन शब्दों से किसी काम के होने या करने का पता चलता है, वे शब्द क्रिया कहलाते हैं। काम के करने वाले को कर्त्ता कहते हैं। जिस वाक्य में क्रिया का फल कर्त्ता पर नहीं, कर्म पर पड़ता है, उस वाक्य की क्रिया सकर्मक होती है; जैसे-

बच्चे पत्ते तोड़ रहे हैं।

बच्चे-	कर्त्ता
पत्ते (संज्ञा)-	कर्म
तोड़ रहे हैं-	क्रिया

(यहाँ बच्चे पत्ते तोड़ने का काम कर रहे हैं। क्रिया का संबंध पत्ते (कर्म) के साथ होने से सकर्मक क्रिया कहलाती है।)

2. अकर्मक क्रिया-

अ (नहीं)+ कर्मक (कर्म के बिना होने वाली क्रिया)।

जिस वाक्य में क्रिया का फल कर्त्ता पर पड़ता है, कर्म पर नहीं; उस वाक्य की क्रिया अकर्मक होती है। वे अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।

जैसे-

विनय दौड़ रहा है।

विनय- (कर्त्ता)

दौड़ रहा है- (क्रिया)

उपरोक्त वाक्य में केवल कर्त्ता व क्रिया का प्रयोग हुआ है। यहाँ कर्म (संज्ञा) नहीं है। अत: जिस क्रिया का फल कर्त्ता पर पड़े, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। यहाँ विनय स्वयं क्रिया कर रहा है।

पहचान-

1. सकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया में कर्म की पहचान करने के लिए वाक्य की क्रिया में 'क्या' अथवा 'किसको' लगाकर प्रश्न करते हैं। जो पद उत्तर में आता है, वहीं कर्म होता है; जैसे-

बच्चे पत्ते तोड़ रहे हैं।

प्रश्न- बच्चे क्या तोड़ रहे हैं?

उत्तर- पत्ते। (पत्ते ही कर्म हैं)

सकर्मक क्रिया भी दो प्रकार की होती है।

1. एक कर्मक क्रिया
2. द्विकर्मक क्रिया

(क) एक कर्मक क्रिया-

बच्चे पत्ते तोड़ रहे हैं।

कर्त्ता कर्म क्रिया

(यहाँ क्रिया के साथ एक प्रधान-कर्म (कर्मकारक) का प्रयोग हो रहा है। अत: यह एककर्मक क्रिया है।)

(ख) द्विकर्मक क्रिया-

बच्चे पेड़ से पत्ते तोड़ रहे हैं।

कर्त्ता कर्म कर्म क्रिया

(यहाँ क्रिया के साथ दो कर्मों का प्रयोग हो रहा है, जिसमें एक गौण कर्म (सम्प्रदानकारक) पेड़ से, तथा एक प्रधानकर्म (कर्मकारक) पत्ते हैं। अत: यह द्विकर्मक क्रिया है।)

2. अकर्मक क्रिया-

जहाँ वाक्य में 'क्या' प्रश्न के उत्तर के स्थान पर 'कब' 'कैसे' 'कौन' प्रश्न का उत्तर

मिलता है, वह अकर्मक क्रिया कहलाती है; जैसे–सोना, भागना, हँसना, रोना आदि ये क्रियाएँ कर्ता स्वयं करता है।

विवेक दौड़ रहा है
कर्त्ता क्रिया
प्रश्न–'कौन' दौड़ रहा है?
उत्तर– विवेक

मैं प्रातः उठता हूँ
कर्त्ता क्रिया
प्रश्न– मैं कब उठता हूँ?
उत्तर– प्रातः

उपरोक्त वाक्य 'अकर्मक क्रिया' के उदाहरण है। यहाँ क्रिया का फल कर्त्ता पर पड़ रहा है जिसका कोई प्रधानकर्म (कर्मकारक) नहीं है।

रोचक तथ्य–

- राम ने चाय पी ली।
- राम ने दूध पिया।
- रमा ने चाय पी ली।
- रमा ने दूध पिया।

उपर्युक्त चारों वाक्यों को ध्यान से पढ़ें तो स्पष्ट होगा कि प्रथम दो वाक्य पुल्लिंग राम से संबंधित हैं; तथा बाद के दो वाक्य स्त्रीलिंग रमा से। कर्ता के लिंग के कारण क्रिया में विकार नहीं आ रहा है। बल्कि गर्म चाय स्त्रीलिंग तथा दूध (पुल्लिंग) के कारण क्रिया में विकार (परिवर्तन) हुआ है अर्थात् जब कर्म के कारण क्रिया में विकार आए, तब क्रिया सकर्मक होती है। यहाँ पीना क्रिया का प्रयोग चाय के साथ 'पी ली' तथा दूध के साथ 'पिया' के रूप में परिवर्तित हुआ है।

2. कुछ वाक्यों में एक ही क्रिया कभी सकर्मक होती है; और कभी अकर्मक। यह उनके प्रयोग पर निर्भर करता है; जैसे–

क्रिया	**अकर्मक**	**सकर्मक**
खेलना	वह खेलता है।	वह फुटबाल खेलता है।
पढ़ना	मैं पढ़ रहा हूँ।	मैं रामायण पढ़ रहा हूँ।

3. * **सकर्मक क्रियाएँ**– पढ़ना, लिखना, लेना, देना, बोना, खाना, पीना, कोसना, करना, धोना, खोना–पाना, कहना, लाना आदि।
   * **अकर्मक क्रियाएँ**– आना, जाना, सोना, जगना, उठना, बैठना, जीना, मरना, रोना, हँसना, उड़ना, जलना, लेटना, फिरना, मिलना, गिरना, सम्हलना, रहना आदि क्रियाएँ कर्ता स्वयं करता है।

प्रयोग/संरचना के आधार पर क्रिया के भेद

संरचना के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित चार भेद होते हैं–

1. संयुक्त क्रिया
2. प्रेरणार्थक क्रिया
3. नामधातु क्रिया (संज्ञार्थक क्रिया)
4. पूर्वकालिक क्रिया

इन चारों क्रियाओं को यौगिक क्रियाएँ भी कहते हैं क्योंकि ये क्रियाएँ कई शब्दों के मेल से बनती हैं; जैसे–

1. संयुक्त क्रिया–

संयुक्त क्रिया में दो या दो से अधिक क्रियाओं का एक साथ प्रयोग होता है; जैसे– छोटा बच्चा आज रात भर रोता रहा।

रोता + रहा

(मुख्य क्रिया + सहायक क्रिया)

2. प्रेरणार्थक क्रियाएँ–

क्रिया से इस बात का बोध होता है कि कर्त्ता स्वयं काम न करके किसी दूसरे से करवाता रहा है; जैसे–सास बहू से रोटी बनवाती है।

मूल क्रिया	**प्रेरणार्थक क्रिया**
बनाना	बनवाना

(प्रेरणार्थ क्रिया बनाने के लिए धातु के अंत में 'वाना' जोड़ देते हैं)

3. नामधातु क्रिया–

ये क्रियाएँ संज्ञा/सर्वनाम/विशेषण शब्दों से बनती है; जैसे– मैंने दूध गरमा लिया।

शब्द	**नामधातु**	**क्रिया का सामान्य रूप**
गरम	गरमा	गरमाना
विशेषण	गरम+अन	

4. पूर्वकालिक क्रिया–

जिस क्रिया के समाप्त होने के बाद ही मुख्य क्रिया का होना पाया जाए, ऐसी क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। यह क्रिया के बाद 'कर'/'करके' लगाने से बनती है। जैसे– वह अभी सोकर उठा है।

सो+कर = सोकर

(यहाँ 'सो' क्रिया के बाद 'कर' लगाकर सोकर शब्द बना है।)

आइए, हम इन्हीं क्रियाओं को विस्तार से जानें।

1. संयुक्त क्रिया

मैंने पत्र लिखा– इस वाक्य में 'लिखा'– सामान्य क्रिया का एक शब्द में प्रयोग हुआ है।

'रेल चलने लगी' इस वाक्य में चलने + लगी = यहाँ रेखांकित दो शब्द (दो क्रियाएँ) मिलकर एक कार्य पूरा कर रही हैं, इसलिए इन्हें संयुक्त क्रियाएँ कहते हैं।

संयुक्त क्रिया में पहली क्रिया मुख्य क्रिया होती है। दूसरी सहायक क्रिया होती है। दूसरे वाक्य में चलने (प्रमुख क्रिया), और लगी (सहायक क्रिया) हैं। इस प्रकार मुख्य क्रिया में सहायक क्रिया जोड़ने पर संयुक्त क्रिया का निर्माण होता है। दोनों ही क्रियाएँ मिलकर संयुक्त क्रियाएँ कहलाती हैं।

उदाहरण– उसका हृदय दु:ख से भर गया। (भर+गया)
कौआ पेड़ पर जा बैठा। (जा+बैठा)

उपरोक्त उदाहरण में 'भर गया' में भर और गया: दो क्रियाओं के मेल से एक क्रिया बनी है। इसी प्रकार जा बैठा में भी 'जा' और 'बैठा' दो क्रियाएँ मिली हुई हैं।

रंजक क्रिया–

कुछ सहायक क्रियाएँ मुख्य क्रिया के अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर मुख्य क्रिया के प्रभाव को बढ़ाती हैं, उन्हें रंजक क्रिया कहते हैं। अर्थ का रंजन करने से इनको रंजक क्रिया कहते हैं। इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं होता है। ये संयुक्त क्रियाओं के साथ ही प्रयुक्त होती है। जैसे–

1. धातु+रंजक क्रिया	देख+लेना
2. धातु+ना (रंजक क्रिया) पड़ना	करना पड़ता है।
3. धातु+ने (रंजक क्रिया) लगना	पढ़ने लगना।
4. धातु+ता/आ (रहना)(रंजक क्रिया)	आता रहा।
5. धातु+आ/या (जाना) (रंजक क्रिया)	गाया जाता।

रोचक तथ्य–

जब रंजक क्रियाओं का प्रयोग अकेले होता है, तब ये मुख्य क्रियाओं के समान ही कार्य करती हैं; जैसे–

रंजक क्रिया	**मुख्य क्रिया**
1. वह दिन भर सोता रहता है।	वह दिल्ली में रहता है।
2. उसे जाना पड़ा।	
3. वह रोने लगा।	
4. निशाना सही लगा।	

2. प्रेरणार्थक क्रिया

जिस क्रिया को कर्त्ता स्वयं कार्य न करके दूसरे को करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे– राम मोहन से पत्र लिखवाता है।

इस वाक्य में मोहन पत्र लिखने का कार्य स्वयं की इच्छा से नहीं कर रहा है। उसे इस कार्य को करने के लिए राम प्रेरित कर रहा है। अत: 'लिखवाना' प्रेरणार्थक क्रिया है।

प्रेरणार्थक क्रिया दो प्रकार की होती है।

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया–

जब कर्त्ता स्वयं भी कार्य में सम्मिलित होता हुआ दूसरे को प्रेरणा देता है, तब उसे प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया कहा जाता है; जैसे–माँ बच्चे को दूध पिलाती है।

इस वाक्य में दूध पीने के लिए माँ बच्चे को प्रेरित कर रही है। यह प्रत्यक्ष प्रेरणार्थक क्रिया है।

द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया–

जब कर्त्ता स्वयं कार्य न करके दूसरे को कार्य करने की प्रेरणा देता है, तब वह द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है; जैसे–माँ सेवक से बच्चे को दूध पिलवाती है।

इस वाक्य में माँ सेवक को प्रथम प्रेरित करती है, फिर सेवक बच्चे को दूध पिलाता है। इसे अप्रत्यक्ष प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

रोचक तथ्य–

1. सभी प्रेरणार्थ क्रियाएँ सकर्मक होती है।
2. मूल अकर्मक क्रिया में 'ना' जोड़कर प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया बनती है; जैसे– पढ़ना–पढ़ाना
3. मूल सकर्मक क्रिया में 'वाना' जोड़कर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया बनती है; जैसे– पढ़ना–पढ़वाना

रोचक तथ्य

1. माँ सेवक से बच्चे को दूध पिलवाती है। (यहाँ सेवक कर्म कर रहा है। अतः कर्म करने वाले सजीव के लिए 'से' का प्रयोग हुआ है।)
2. मैंने घर से सेवक को बुलाया। (यहाँ सेवक सजीव कर्म पर क्रिया का फल पड़ रहा है, अतः को का प्रयोग हुआ है। निर्जीव कर्म के साथ 'से' आता है, 'को' नहीं; जैसे– घर से (यहाँ घर निर्जीव कर्म है। अतः उसके साथ 'से' आया है।) अतः 'से' और 'को' का प्रयोग ध्यानपूर्वक करें।)

3. नामधातु क्रिया (संज्ञार्थक क्रिया)

नामधातु शब्द नाम+धातु दो शब्दों से मिलकर बना है। इस क्रिया में नाम (संज्ञा या सर्वनाम) का प्रयोग धातु अर्थात् क्रिया की तरह किया जाता है; जैसे–श्यामा बहुत शरमाती है।

इस वाक्य में शर्म से शरमाना नाम धातु क्रिया का उदाहरण है, क्योंकि शरमाती क्रिया शरम (संज्ञा) से बनी है।

नामधातु क्रियाएँ चार प्रकार से बनती है।

1. संज्ञा से	संज्ञा	नाम धातु क्रिया
	हाथ	हथियाना
	लालच	ललचाना

पराए धन को देखकर ललचाना नहीं चाहिए।

2. सर्वनाम से

सर्वनाम	नाम धातु क्रिया
अपना	अपनाना

कृष्ण ने सुदामा को अपना लिया।

3. विशेषण से

विशेषण	नाम धातु क्रिया
गरम	गरमाना
ठंडा	ठंडाना

मैंने पानी गरमा लिया।

4. अनुकरण वाची शब्दों से

अनुकरणवाची शब्द	**नाम धातु क्रिया**
खटखट	खटखटाना
थरथर	थरथराना

वह बड़ी देर से दरवाजा खटखटा रही थी।

रोचक तथ्य-

1. नामधातु क्रियाएँ संयुक्त क्रियाएँ नहीं है। संयुक्त क्रियाएँ दो क्रियाओं के योग से बनती है, जबकि नाम धातु क्रियाएँ संज्ञा अथवा विशेषण के मेल से बनती है।
2. नाम धातु क्रियाओं को संज्ञार्थक क्रियाएँ भी कहा जाता है।

4. पूर्व कालिक क्रिया

किसी मुख्य क्रिया से पूर्व आने वाली क्रिया को पूर्व कालिक क्रिया कहते हैं; जैसे-
वह अभी नहाकर आया है।

इस वाक्य में 'आया है' क्रिया के पूर्व 'नहाकर' क्रिया का प्रयोग हुआ है। अत: 'नहाकर' पूर्व कालिक क्रिया है। पूर्व कालिक क्रिया 'कर' शब्द से पहचानी जाती है; जैसे- नहाना क्रिया में 'कर' लगने से वह नहाकर हो गया।

क्रिया संबंधी रोचक तथ्य-

1. क्रिया का प्रयोग करते समय विशेष सावधानी रखना चाहिए; जैसे-
   - तूफान आता है।
   - कष्ट भोगा जाता है।
   - लड़ाई लड़ी जाती है।
   - अभियोग लगाया जाता है।
   - दूध जमाया जाता है।
   - भांग छानी जाती है।
   - गीत गाया जाता है।
   - पानी बरसता है।

- बादल गरजते हैं।
- फाँसी पर लटकाया जाता है।
- कील ठोंकी जाती है।

2. साथ-साथ आने वाली दो क्रियाओं को क्रिया-युग्म कहा जाता है; जैसे-
   - कहा-सुना माफ करो।
   - बच्चे तो लड़ते-झगड़ते रहते हैं।
   - मरीज को हिलना-डुलना नहीं चाहिए।
   - वे खाते-पीते घर के हैं।
   - नौकरों को बहुत अधिक डाँटना-फटकारना ठीक नहीं।
   - हमें मिल-जुलकर रहना चाहिए।
   - पहले लिख-पढ़ लो, बाद में गाना-बजाना।
   - आना-जाना तो संसार का नियम है।
3. क्रिया के सामान्य रूप को संज्ञा की तरह भी प्रयोग किया जाता है; जैसे-प्रात: भ्रमण स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।

क्रिया का रूपांतरण

संज्ञा, सर्वनाम की भाँति क्रियाओं का रूपांतरण लिंग, वचन, काल आदि के आधार पर निम्नांकित रूप में होता है-

1. लिंग के अनुसार- वह खाता है। (पुल्लिंग) वह खाती है। (स्त्रीलिंग)
2. वचन के अनुसार- वह पढ़ता है। (एकवचन) वे पढ़ते हैं। (बहुवचन)
3. पुरुष के अनुसार- मैं गाता हूँ। (उत्तम पुरुष) तू गाता है। (मध्यम पुरुष) वे गाते हैं। (अन्य पुरुष)
4. अर्थ के अनुसार- वह जाएगा। (निश्चित अर्थ में) शायद वह जाए। (संभावना के अर्थ में)। तुम जाओ। (आज्ञा के अर्थ में)
5. काल के अनुसार- मैं जा रहा हूँ। (वर्तमान काल) मैं गया था। (भूत काल) मैं जाऊँगा। (भविष्य काल)
6. कृदन्त के अनुसार-धातु में प्रत्यय के योग से जो क्रिया रूप बनते हैं, उन्हें कृदन्त कहते हैं; जैसे-पढ़ना, पढ़ाना, पढ़ा, पढ़ेगा, पढ़ चुका, पढ़ सकता, पढ़ेगी, पढ़ना चाहिए, पढूँगा, पढ़ा रहा पढ़ पाना, पढ़वाना, पढ़ाया, पढ़ रहा।

क्रिया-काल, पक्ष, वृत्ति एवं वाच्य

क्रिया पर चर्चा करते हुए एक जिज्ञासु ने मुझसे कहा-'क्रिया के काल संबंधी भेद

तथा वाच्य संबंधी प्रकरण तो परंपरागत हिंदी व्याकरण में स्पष्ट दिए रहते हैं किंतु पक्ष और वृत्ति: ये दो उपांग क्रिया के अंतर्गत वर्तमान में धीरे-धीरे स्वतंत्र रूप से पढ़ाए जाने लगे हैं।

कृपया क्रिया के इन चारों उपांगों-काल, पक्ष, वृत्ति एवं वाच्य के विषय में समझाने का कष्ट करें। साथ ही काल और समय में क्या अंतर है, यह भी स्पष्ट करें। क्या यह दोनों एक ही हैं?'

जिज्ञासु का प्रश्न सहज एवं गंभीर था। सर्वप्रथम मैंने उन्हें बताया कि सहायक क्रिया काल, पक्ष, वृत्ति एवं वाच्य को प्रकट करती है। इन चारों को सहायक क्रिया के चार भेद भी कह सकते हैं। अत: इन्हें भी समझें।

काल (Tense)

काल-बोध के दो आयाम हैं— 'काल और समय, जिनमें क्रिया सम्पन्न होती है।'

संसार में काल को समय का पर्याय माना जाता है। समय को आधार बनाकर काल को भूत, वर्तमान और भविष्य काल इन तीन काल-खण्डों में कृत्रिम रूप से विभाजित किया जाता है, जबकि समय एक अखंडित धारा है, जिसमें जो वर्तमान है, वही थोड़े ही क्षणों में भूत-काल बन जाता है; और आने वाला समय भविष्य काल। इसके अन्य उदाहरण हैं- प्रात:काल, सायंकाल, बाल्यकाल, युवाकाल, शीतकाल, ग्रीष्मकाल, वर्षाकाल आदि ये सभी काल-खंडों के प्रतीक हैं।

पक्ष (Aspect)

हर कार्य (व्यापार) का अपना एक आंतरिक काल क्षेत्र (क्रिया के आरंभ से अंत तक का समय-विस्तार) होता है। इस आंतरिक काल क्षेत्र को ही व्याकरण में पक्ष (Aspect) कहते हैं।

कार्य की पूर्णता या अपूर्णता का बोध केवल पक्ष द्वारा ही होता है किंतु उससे यह स्पष्ट नहीं होता कि कार्य लौकिक धरातल पर किस समय पर घटित हुआ है। उदाहरणार्थ- 'श्याम ने पत्र लिखा।' वाक्य में 'लिखा' कार्य व्यापार की पूर्णता का बोध है, किंतु भ्रमवश हम इसे भूतकाल का वाक्य मान लेते हैं, जबकि इसमें भूतकाल का काल-चिह्न 'था' का प्रयोग नहीं हुआ है। अत: पक्ष का संबंध किसी घटना के समय विस्तार (आरंभ से अंत तक) से है; अर्थात् कोई भी क्रिया कितने समय सीमा के बीच पूरी या अधूरी रही, पक्ष इसी को व्यक्त करता है।

वृत्ति (Mood)

जो क्रिया लौकिक जगत में घटित न हो और जो वक्ता के मस्तिष्क में ही इच्छा, अभिवृत्ति, संभावना आदि के रूप में निहित हो, उसका संबंध वृत्ति (Mood) से होता है, पक्ष से नहीं।

कहने का आशय यह कि पक्ष से कार्य व्यापार की भौतिक अवस्था का बोध होता है, जबकि वृत्ति के कार्य व्यापार से मनोवैज्ञानिक अवस्था का। अत: वृत्ति वक्ता/कर्त्ता के कार्य व्यापार के प्रयोजन की सूचक है। इससे वह कार्य के प्रति अपना दृष्टिकोण व्यक्त करता है।

वाच्य (Voice)

वाच्य द्वारा हमें यह बोध होता है कि क्रिया को मुख्य रूप से करने वाला कौन है? कर्त्ता, कर्म अथवा भाव। इन तीनों में से क्रिया व्यापार सम्पन्न होने में किसकी प्रधानता है?

अब हम इन चारों उपांगों पर विस्तार से चर्चा करते हैं।

(अ) काल

जैसा कि पूर्व में कहा गया है। काल समय नहीं, वह समय संदर्भ का एक संकेतक मात्र है। इसका आधार मनोभाषिक जगत है। काल के विषय में मुख्य रूप से दो बातें जानना आवश्यक है।

1. क्रिया के होने का समय अर्थात् संकेत।
2. क्रिया के होने की पूर्णता या अपूर्णता का बोध।

अतः काल क्रिया का वह रूप है, जिससे क्रिया के होने का समय तथा उसकी पूर्णता तथा अपूर्णता का बोध हो।

सामान्यतः काल के तीन भेद हैं-

भूतकाल	**वर्तमान काल**	**भविष्य काल**
(बीते काल में पूरी हुई क्रिया)	(वर्तमान में हो रही क्रिया)	(भविष्य में पूर्ण होने वाली क्रिया)
क. सामान्य भूत	क. सामान्य वर्तमान	क. सामान्य भविष्यत्
ख. आसन्न भूत	ख. तात्कालिक वर्तमान	ख. संभाव्य भविष्यत्
ग. पूर्ण भूत	ग. संदिग्ध वर्तमान	ग. हेतु हेतुमद् भविष्यत्
घ. अपूर्ण भूत		
ङ. संदिग्ध भूत		
च. हेतु हेतु मद्भूत		

1. भूतकाल-

जिस क्रिया का बीते हुए समय में कार्य के पूर्ण होने का पता चलता है, उसे भूतकाल कहते हैं; जैसे-1. मैं पढ़ रहा था। 2. राम बाजार गया था।

2. वर्तमान काल-

जिस क्रिया से यह पता चले कि क्रिया इस समय हो रही है, उसे वर्तमान काल कहते हैं; जैसे-1. मैं पुस्तक पढ़ रहा हूँ। 2. पुजारी भगवान की पूजा कर रहा है।

3. भविष्य काल-

भविष्यत् काल का अर्थ है, आने वाला समय। जिस क्रिया से उसके भविष्य में होने का पता चले, उसे भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे-1. मैं शायद कल दिल्ली जाऊँ। 2. शायद! मुझे कल तुम्हारे घर आना पड़े।

काल-संकेतक प्रत्यय

भूतकाल	वर्तमान काल	भविष्य काल
था+आ/ए/ई	है+ता	+एगा

इन संकेतकों के आधार पर तीनों कालों के उदाहरण यहाँ दिए जा रहे हैं-

भूतकाल-

भूतकाल के छः भेद हैं-

1. **सामान्य भूत**-क्रिया के सम्पादन काल का जिससे निश्चित बोध हो।
2. **आसन्न भूत**-क्रिया के सम्पन्न होने का काल निकट (आसन्न) हो।
3. **पूर्ण भूत**-क्रिया को सम्पन्न हुए बहुत समय बीत गया हो।
4. **संदिग्ध भूत**-क्रिया के होने में संदेह हो।
5. **अपूर्ण भूत**-क्रिया भूत काल में प्रारंभ हुई थी किंतु अभी तक समाप्त नहीं हुई हो।
6. **हेतु हेतु मद् भूत**- क्रिया का भूतकाल में होना किसी अन्य क्रिया पर निर्भर हो।

भूतकाल के भेद

1. सामान्य भूतकाल-

सामान्य भूतकाल बीते हुए समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध कराता है; जैसे-

1. राम ने परीक्षा दी। ('ने' के साथ क्रिया 'परीक्षा' कर्म के अनुसार है।)

2. श्याम परीक्षा देने गया।

2. आसन्न भूतकाल-

आसन्न भूतकाल से कार्य कुछ समय पूर्व ही समाप्त होने का बोध होता है। आसन्न का अर्थ, निकटता है; जैसे-

1. हम ने अपना पाठ पढ़ लिया है। (निकट समय)

2. रमेश विद्यालय गया है। (दूर समय)

3. पूर्ण भूतकाल-

पूर्ण भूतकाल से क्रिया को समाप्त हुए बहुत समय हो चुका है, इसका बोध होता है; जैसे- 1. मैंने तुम्हें पत्र लिखा था।

2. मैं दिल्ली गया था।

4. अपूर्ण भूतकाल-

अपूर्ण भूतकाल से ज्ञात होता है कि कार्य भूतकाल में प्रारंभ हुआ था पर अभी समाप्त नहीं हुआ है; जैसे-

1. मैं पुस्तक पढ़ रहा था।

2. वह गा रहा था।

5. संदिग्ध भूतकाल–

संदिग्ध भूतकाल से ज्ञात होता है कि कार्य के भूतकाल में होने में संदेह है; जैसे–

1. राम दिल्ली गया होगा।
2. घर पर ताला लगा होगा।

6. हेतु हेतु मद् भूतकाल–

हेतु हेतु मद् भूतकाल से ज्ञात होता है कि भूतकाल में पूरी होने वाली क्रिया का होना किसी अन्य क्रिया पर निर्भर है; जैसे–1. यदि वर्षा नहीं होती, तो अकाल पड़ जाता।

2. यदि तुम वहाँ आते तो मैं भी साथ चलता।

विशेष–

1. हेतु हेतु मद भूतकाल से यह पता चलता है कि क्रिया केवल शर्त पर आधारित है। यदि वह शर्त पूरी हो तो दूसरी क्रिया भी पूरी हो जाती। इस प्रकार के वाक्य में दो उपवाक्य होते हैं। दोनों की क्रियाएँ एक जैसी होती हैं।

सामान्य भूत और वर्तमान भूत में अंतर–

सामान्य भूत काल में था, थी, थे जोड़ देने पर पूर्ण भूत बन जाता है; जैसे–

1. राम ने परीक्षा दी। (सामान्य भूत)
2. राम ने परीक्षा दी थी। (पूर्ण भूत)

वर्तमान काल के भेद

वर्तमान काल के तीन भेद हैं–

1. सामान्य वर्तमान काल–

सामान्य वर्तमान काल में क्रिया सामान्य रूप से होती है; जैसे–1. पुजारी पूजा करता है।

2. महिलाएँ लोकगीत गाती हैं।

2. अपूर्ण वर्तमान काल–

जिस क्रिया से यह पता चलता है कि वर्तमान काल में प्रारंभ की गई क्रिया अभी पूरी नहीं हुई है, चल रही है। उसे अपूर्ण अथवा तात्कालिक वर्तमान काल कहते हैं; जैसे–1. पुजारी पूजा कर रहा है।

2. महिलाएँ लोकगीत गा रही हैं।

(यहाँ पूजा पूरी नहीं हुई है, चल रही है। इस बात का संकेत कर रहा, गा रही से मिल रहा है।)

3. संदिग्ध वर्तमान काल–

क्रिया के जिस रूप में उसके वर्तमान समय में पूरी होने में संदेह हो, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं; जैसे–

1. पुजारी पूजा कर रहा होगा।
2. महिलाएँ लोकगीत गा रही होंगी।

(यहाँ 'होगा' शब्द से क्रिया के होने में संदेह बना हुआ है।)

भविष्यकाल के भेद

भविष्यत् काल के तीन भेद है-

1. सामान्य भविष्य काल-

क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में सामान्य रीति से होने का पता चलता है, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे-

1. पुजारी पूजा करेगा।
2. महिलाएँ लोकगीत गाएँगी।

(यहाँ पुजारी के द्वारा पूजा करना निश्चित है।)

2. संभाव्य भविष्यत् काल-

क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में होने की संभावना का पता चले, उसे संभाव्य भविष्य काल कहते हैं; जैसे-

1. शायद पुजारी आएगा।
2. महिलाएँ शायद लोकगीत गाएँ।

(यहाँ पुजारी के आने की संभावना है, निश्चितता नहीं। संभव है आए, नहीं भी आए)

3. हेतु हेतु मद् भविष्य काल-

क्रिया के जिस रूप से उसका भविष्य में पूरा होना दूसरी क्रिया पर निर्भर हो, उसे हेतु हेतु मद् भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे-

1. वह आए तो मैं जाऊँ।
2. वह पढ़े तो उत्तीर्ण हो।

(यहाँ 'जाना' तथा 'उत्तीर्ण' होना किसी 'आने' तथा 'पढ़ने' पर निश्चित है।)

रोचक तथ्य-

* वैसे तो भविष्य अनिश्चित होता है किंतु सामान्य भविष्य काल की क्रिया में निश्चितता की मात्रा अधिक रहती है।

(ब) पक्ष

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है। कोई भी क्रिया किसी समय-सीमा में पूर्ण होती है। निश्चित समय अवधि में पूर्ण अथवा अपूर्ण क्रिया को होते देखना ही पक्ष कहलाता है। यह कार्य व्यापार की भौतिक अवस्था का बोधक है।

हिंदी में चार प्रकार के पक्ष स्वीकार किए गए हैं-

1. नित्य अपूर्ण पक्ष-

इसे व्यक्त करने के लिए 'है' क्रिया का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

- वह पढ़ता है।
- मेरी माँ अध्यापिका है।

2. पूर्ण पक्ष–

इससे कार्य के पूरा होने का बोध होता है; जैसे–

– हमने पढ़ लिया।

– माँ ने पूजा कर ली।

3. निरंतरता पक्ष–

यह क्रिया के निरंतर होते रहने का बोध कराता है; जैसे–

– हम पढ़ रहे हैं।

– राम वन जा रहे थे।

(इसमें 'रह' धातु से निरंतरता का बोध हो रहा है।)

4. आवृत्ति मूलक पक्ष–

यह क्रिया के बार–बार होने का सूचक है; जैसे–

– पक्षी आकाश में उड़ता है।

– रात्रि को चंद्रमा निकलता है।

(इसमें 'ता' आवृत्ति को सूचित करता है।)

(स) वृत्ति

वृत्ति का अर्थ है–भाव या अर्थ। क्रिया करने के अनेक प्रयोजन हो सकते हैं। अत: कथ्य के प्रति वक्ता की मानसिक अभिवृत्ति को वृत्ति कहते हैं। इससे वक्ता के भाव या प्रयोजन की ओर संकेत मिलता है। यह व्यक्ति की मनोवृत्ति का बोधक है। वृत्ति के मुख्य पाँच भेद हैं–

1. आज्ञार्थक–

इसमें क्रिया के द्वारा आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश, निषेध आदि के भाव प्रकट होते हैं; जैसे–

1. तुम अपना काम करो। (आज्ञा)
2. मेरा अपराध क्षमा कर दीजिए। (प्रार्थना)
3. अहिंसा परम धर्म है। (उपदेश)
4. तुम्हें वहाँ नहीं जाना है। (निषेध)

2. इच्छार्थक–

इसमें वक्ता की इच्छा, शाप, वरदान, आशीर्वाद आदि के भाव प्रकट होते हैं; जैसे–

1. प्रसन्न रहो। (आशीर्वाद)
2. ईश्वर तुम्हें सद्बुद्धि दे। (इच्छा)
3. आप दीघार्यु हों। (वरदान)

3. संभावनार्थक–

इसमें कार्य के होने में संदेह या संशय बना रहता है; जैसे–

1. शायद आज वर्षा हो।
2. संभवत: कल मैं दिल्ली जाऊँ।

3. हो सकता है, मैं कल ही लौट आऊँ।

4. **निश्चयार्थक**-

इसमें वक्ता का कथन सूचनात्मक होता है; जैसे-

1. राम ने रोटी खा ली है।
2. मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।
3. सूरज पूर्व में उदय हो रहा है।
4. वह डर गया था।

5. संकेतार्थक-

इसमें क्रिया का रूप सशर्त प्रकट होता है। एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर रहता है; जैसे-

1. जैसा करोगे, वैसा भरोगे।
2. यदि तुम नृत्य करो तो मैं गाना गाऊँ।

रोचक तथ्य-

1. हिंदी में इच्छार्थक और आज्ञार्थक प्रत्यय शुद्ध रूप से वृत्ति के बोधक है।
2. इसके अतिरिक्त कुछ मूल धातुएँ भी हैं, जो वृत्ति का ज्ञान कराती हैं; जैसे-चाहिए, आदि।
3. कुछ ऐसे अव्यय भी है, जो वृत्ति को प्रकट करते हैं। ये अव्यय वाक्य स्तर पर संयोजक के रूप में आते हैं; जैसे-

   - राम आ गया (निश्चयात्मक वृत्ति, भूतकाल, पूर्ण पक्ष)
   - यदि राम आ गया (तो मैं उसे वापस भेज दूँगा) (संदेहात्मक वृत्ति, भविष्य काल, अपूर्ण पक्ष)। यहाँ 'यदि' तथा 'तो' अव्यय वृत्ति को प्रकट कर रहे हैं।

   उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि 'तो' के प्रयोग से वृत्ति बदल गई है।

(द) वाच्य

वाच्य द्वारा हमें यह बोध होता है कि क्रिया को मुख्य रूप से करने वाला कर्त्ता, कर्म अथवा भाव में प्रमुख कौन है, उसे वाच्य कहते हैं। वाच्य शब्द वाच् से बना है जिसका अर्थ है- कहने योग्य अथवा वाच् (वाणी) द्वारा जिसका बोध हो। यह बोध तीन प्रकार से होता है-

1. कर्तृ वाच्य- कर्त्ता (स्वयं) के संबंध में बोध कराने वाला।
2. कर्म वाच्य- कर्म का बोध कराने वाला।
3. भाव वाच्य- भाव की प्रधानता का बोध कराने वाला।

परिभाषा

वाक्य में कर्त्ता, कर्म अथवा भाव के विषय में किए गए क्रिया के रूपांतर को वाच्य कहते हैं। वाच्य के तीन प्रकार हैं—

1. **कर्त्तृ वाच्य–**

राम पुस्तक पढ़ता है।

इस वाक्य में राम पढ़ने की क्रिया करने वाला अर्थात् कर्त्ता है। जो पुस्तक (कर्म) को पढ़ने का कर्म स्वयं करता है। कर्म के चयन का अधिकार 'राम' को है अर्थात् पत्र, पुस्तक, समाचार-पत्र, पत्रिका आदि पढ़ने की सामग्री में से वह पुस्तक पढ़ने के कर्म का चयन करना है। अत: **जिस वाक्य में क्रिया के चयन करने में कर्त्ता की ही मुख्य प्रधानता रहे, उसे कर्तृ वाच्य कहते हैं**।

पहचान–

कर्तृ वाच्य– अकर्मकएवं सकर्मक दोनों क्रियाओं में होता है। तथा कर्त्ता बिना विभक्ति के होता है, अथवा कर्त्ता के साथ 'ने' विभक्ति होती है।

अकर्मक, कर्तृ वाच्य– राम मेरी बात पर हँसता है।

सकर्मक कर्तृ वाच्य– राम हम सबको हँसाता है।

2. **कर्म वाच्य–**

यदि वक्ता की दृष्टि कर्त्ता की भूमिका के रूप में न होकर केवल कर्म पर हो अर्थात् वह अपने स्थान पर कर्म को ही ध्यान में रखकर अपनी बात कहना चाहे तो इस प्रकार कहेगा— पुस्तक आकर्षक है।

यहाँ पुस्तक को केन्द्र में रखकर अपनी बात कही गई है। अत: पुस्तक (कर्म) की प्रधानता होने से इस वाक्य को कर्म वाच्य कहते हैं। अत: **जिस वाक्य में कर्म की ही मुख्य प्रधानता रहे, उसे कर्म वाच्य कहते हैं**।

पहचान–

* कर्त्ता के साथ 'से'/'के' द्वारा विभक्ति होती है।
* कर्मवाच्य में कर्त्ता और कर्म दोनों रहते हैं किंतु कर्म प्रधान होता है।
* कर्मवाच्य केवल सकर्मक क्रियाओं में होता है।
* कर्मवाच्य (विभक्ति रहित) भी होते हैं; जैसे– पुस्तक पढ़ी जाए।
* कर्मवाच्य में कभी-कभी कर्त्ता प्रकट नहीं होता; जैसे– रोटी खाली। (इस वाक्य में केवल रोटी (कर्म) का ही प्रयोग हुआ है)
* द्विकर्मक क्रियाओं के कर्मवाच्य में मुख्य कर्म उद्देश्य होता है, और गौण कर्म ज्यों का त्यों रहता है; जैसे– राम को पुस्तक दी गई।

  राम– मुख्य कर्म

  पुस्तक– गौण कर्म

3. **भाव वाच्य–**

जिस वाक्य का उद्देश्य कर्त्ता अथवा कर्म को छोड़कर केवल भाव को प्रधानता देना हो, उसे भाव वाच्य कहते हैं। ऐसे वाक्य केवल अकर्मक क्रियाओं में होते हैं; जैसे–

क. यहाँ कैसे बैठा जाएगा?

ख. मुझसे चला नहीं जाता?

उपरोक्त वाक्यों में क्रमशः बैठा, तथा चला क्रियाएँ ही प्रमुख हैं।

पहचान–

1. भाव वाच्य में कर्त्ता और कर्म प्रधान नहीं होते हैं, गौण रहते हैं।
2. भाव वाच्य की क्रिया नित्य एक वचन, पुल्लिंग और अन्य पुरुष में होती हैं; जैसे– यहाँ बैठा नहीं जाता।
3. हिंदी में भाव वाच्य का प्रयोग बहुधा 'नहीं' निषेधात्मक अव्यय के साथ होता है।

वाच्य रूपांतर के आधार

1. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने में कर्त्ता कारक में करण कारक की विभक्ति 'से/के द्वारा/द्वारा' लगा देते हैं।

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
राम पढ़ता है।	राम से पढ़ा नहीं जाता। राम के द्वारा पुस्तक नहीं पढ़ी जाती है।
राम पुस्तक पुस्तक पढ़ता है।	राम के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।
मैं रात भर नहीं जाग सकता।	मुझसे रात भर नहीं जागा जाता।
लड़के ने पत्र लिखा।	लड़के से पत्र लिखा जाता है। लड़के द्वारा पत्र लिखा जाता है।

2. कर्मवाच्य	**कर्तृवाच्य**
राम से मेरा पत्र पढ़ा जाता है।	राम पत्र पढ़ता है
तुलसीदास द्वारा रामचरित मानस लिखा गया।	तुलसीदास ने रामचरित मानस लिखा।
3. कर्मवाच्य	**भाववाच्य**
बीमार नहीं चलता है।	बीमार से चला नहीं जाता।
रमेश दिन भर नहीं पढ़ता।	रमेश से दिनभर पढ़ा नहीं जाता।
4. भाववाच्य	**कर्मवाच्य**
मनीष से पत्र नहीं लिखा जाता।	मनीष पत्र नहीं लिखता है।
तुमसे खाया जाएगा।	तुम खाओगे।
5. कर्तृवाच्य	**भाववाच्य**
मैं नहीं जाता।	मुझसे जाया नहीं जाता।
हम वहाँ नहीं रहे।	हमसे वहाँ नहीं रहा गया।

विशेष–

1. कर्त्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाते समय क्रिया का आ/या/जा का रूप हो जाता है; जैसे– पढ़ना, पढ़ा जाता
2. द्विकर्मक क्रिया में प्रधानकर्म को कर्त्ता कर देते हैं, तथा गौण कर्म ज्यों का त्यों रहता है; जैसे–
   - राम ने मोहन को पुस्तक दी।
   - राम से पुस्तक मोहन को दी गई।
3. क्रिया कर्म के लिंग/वचन के अनुसार रहती है।
4. दोनों वाच्यों में काल यथावत रहता है, जैसे–

काल	**कर्त्तृवाच्य**	**कर्मवाच्य**
वर्तमान काल	राम देर तक पढ़ता है।	राम द्वारा देर तक पढ़ा जाता है।
भूत काल	राम ने देर रात तक पढ़ा था।	राम से देर रात तक पढ़ा गया था।
भविष्य काल	राम देर रात तक सोएगा।	राम से देर रात तक सोया जाएगा।

03

अविकारी शब्द : अव्यय

(क्रिया विशेषण, संबंध बोधक, समुच्चय बोधक, विस्मयादि बोधक, निपात)

संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से वे शब्द जो विभिन्न स्थितियों में प्रयोग होने पर भी अपना रूप परिवर्तन करने में अपनी शक्ति का अपव्यय नहीं करते, अर्थात् अपना रूप यथावत रखते हैं, उन्हें अव्यय कहा जाता है। अव्यय एक सामासिक शब्द है। उसका विग्रह इस प्रकार किया जाता है– न व्यय: इति अव्यय:। अत: संस्कृत में जो शब्द लिंग, वचन और कारक सभी अवस्थाओं में समान रहते हैं, वे अव्यय कहे जाते हैं। आचार्य किशोरीदास वाजपेयी जी ने हिंदी व्याकरण में इसी आधार पर अव्यय की परिभाषा इस प्रकार दी है– 'जो सब लिंगों में एक सा रहे, तथा सभी विभक्तियों तथा वचनों में जो रूपांतरित न हो, वह अव्यय है किंतु हिंदी में यह नियम लागू नहीं होता।'

संस्कृत में अव्यय की परिभाषा रूप पर आधारित है, जबकि हिंदी में उसकी परिभाषा कार्य पर आधारित है। हिंदी में अव्यय की परिभाषा भी इसीलिए उनके कार्य के आधार पर निर्धारित की गई है। इसके अनुसार अव्यय वे शब्द होते हैं, जो वाक्य में प्रयुक्त होकर निम्नलिखित कार्य करते हैं–

1. क्रिया की विशेषता बताने हेतु प्रयुक्त होने वाले अविकारी शब्द **(क्रिया विशेषण)**
2. संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होकर उनका वाक्य के अन्य संज्ञा, सर्वनाम शब्दों से संबंध का बोध कराने वाले शब्द। (संबंध बोधक)
3. दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को जोड़ने हेतु प्रयोग किए जाने वाले अविकारी शब्द **(समुच्चय बोधक)**
4. हर्ष, शोक, विस्मय आदि विविध भावों की अभिव्यक्ति हेतु प्रयोग में आने वाले अविकारी शब्द (विस्मयादि बोधक)

कुछ पुस्तकों में संस्कृत और अंग्रेजी दोनों प्रकार के सिद्धांतों का आधार बनाकर अव्यय के 10 भेद किए गए हैं–

1. क्रिया विशेषण अव्यय
2. सम्बन्ध बोधक अव्यय
3. समुच्चय बोधक अव्यय
4. विस्मयादि बोधक अव्यय

5. स्थान बोधक अव्यय
6. काल बोधक अव्यय
7. परिमाण बोधक अव्यय
8. प्रश्नवाचक अव्यय

रेखांकित तीन (क्रमांक 5 से 7 तक) क्रिया, विशेषण के अंतर्गत आते हैं।

9. प्रादि अव्यय (प्रादि अव्ययों की संख्या कुल 22 है जो इस प्रकार है— प्र, अय, अनु, निस्, दुस, वि, नी, अपि, सु, अभि, परि, उप, परा, सम, अव, निर्, दुर, आ, अधि, अति, उह्, प्रति)
10. निपात अव्यय

उपरोक्त सभी भेदों को आधार बनाकर निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि हिंदी में अव्यय के अंतर्गत पाँच प्रकरण ही मुख्य रूप से लिए गए हैं-

1. क्रिया विशेषण
2. संबंध बोधक
3. समुच्चय बोधक
4. विस्मयादि बोधक
5. निपात

विशेष-

कुछ विद्वान निपात को अव्यय के अंतर्गत नहीं मानते किंतु हम इस विवाद में न जाते हुए निपात पर स्वतंत्र चर्चा अवश्य करेंगे। जिस प्रकार विस्मयादि बोधक का संबंध वाक्य के पदों से नहीं होता, वैसे ही निपात को वाक्य का अंग नहीं माना जाता। केवल इस आधार पर उसका अध्ययन न करें, यह ठीक नहीं।

I क्रिया विशेषण

संसार में क्रिया बिना एक क्षण रुके निरंतर कार्य करती रहती है। वह कभी विश्राम नहीं लेती। एक दिन क्रिया कुछ उदास भाव से बैठी चिंतन कर रही थी कि उसकी प्रशंसा कोई नहीं करता। सभी कार्य की प्रशंसा करते हैं। तभी उसे ब्रह्मा जी आते हुए दिखाई दिए। उसने उन्हें मार्ग में रोककर पूछा-'आपने मुझे सदैव कार्य करने की आज्ञा देकर संसार में भेजा है। मैं यहाँ अपना कार्य तभी से अच्छी तरह से कर रही हूँ किंतु मेरे कार्य की कोई प्रशंसा ही नहीं करता।'

ब्रह्माजी मुस्कराते हुए कहने लगे- 'ठीक कहा तुमने! कार्य की प्रशंसा के साथ-साथ क्रिया की प्रशंसा भी होना चाहिए। अत: मैं तुम्हें एक साथी क्रिया-विशेषण के रूप में देता हूँ, जो सदैव तुम्हारी विशेषता का वर्णन करता रहेगा।'

यह कहकर ब्रह्माजी अंतर्धान हो गए। कहा जाता है- तभी से व्याकरण की दुनिया में क्रिया-विशेषण की अलग से पहचान हुई। आइए, उसके विषय में और भी जानें।

परिभाषा-

जिस प्रकार संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं, उसी प्रकार क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रिया-विशेषण कहते हैं।

पहचान-

चार प्रकार के प्रश्नों के आधार पर क्रिया-विशेषण के भेदों की पहचान सरलता से हो जाती है।

उदाहरण	प्रश्न	क्रिया विशेषण के भेद
1. ध्यान से काम करो	काम कैसे करो? (ध्यान से)	रीति वाचक क्रिया-विशेषण
2. तुम सब यहाँ बैठो	कहाँ बैठो? (यहाँ)	स्थान वाचक क्रिया-विशेषण
3. दूधवाला सात बजे आएगा	कब आएगा? (सात बजे)	काल वाचक क्रिया-विशेषण
4. वह थोड़ा लँगडाता है।	कितना लँगडाता है? (थोड़ा)	परिमाण वाचक क्रिया-विशेषण

उपरोक्त वाक्यों से पता चलता है कि काम कैसे करना चाहिए। कहाँ बैठने को कहा गया है; दूधवाला कब आएगा; तथा वह कितना लंगडाता है; अतः क्रिया की विशेषता इन चार प्रकार के प्रश्नों के उत्तर से पता चल जाती है। आगे हम इन चारों भेदों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

क्रिया विशेषण संबंधी कुछ रोचक तथ्य-

1. एक ही वाक्यों में अनेक क्रिया विशेषणों का प्रयोग हो सकता है किंतु उनका क्रम कुछ इस प्रकार होगा- सबसे पहले काल वाचक, उसके बाद स्थान वाचक तथा उसके बाद रीतिवाचक विशेषण आएगा; जैसे-
   आज सबेरे-सबेरे (काल वाचक) मेरे घर की छत पर (स्थान वाचक)एक तोता पंख फैलाकर (रीति वाचक) धूप सेवन कर रहा था।
2. कुछ संस्कृत क्रिया विशेषण- अन्यत्र, अकस्मात, कदाचित्, प्रायः, बहुधा, पुनः, वृथा, वस्तुतः, सम्प्रति, शनैः, सहसा, सर्वत्र, सर्वथा, साक्षात् आदि हैं।
3. कुछ उर्दू क्रिया-विशेषणः-शायद, ज़रूर, बिल्कुल, अक्सर, फौरन, बाला-बाला, हमेशा, सही, खूब, आखिर आदि हैं।
4. कुछ क्रिया विशेषणों की रचना संज्ञा, सर्वनाम आदि में प्रत्यय लगाने से होती है। इसे भी जानें; जैसे—
   - संज्ञा से- क्षण भर, आजन्म, शांतिपूर्वक, सुबह से आदि।
   - विशेषण से- पहले से, चुपके से आदि।
   - क्रिया से- सोते-जागते, उठते-बैठते, हँसते-गाते आदि।
   - उपसर्गों से- प्रतिदिन, हर पल आदि।
   - परसर्ग से- लिखने से, पढ़ने से, हँसने से।
5. कुछ व्याकरणाचार्यों ने क्रिया-विशेषण के दो रूप और बताए हैं-
   क) स्वीकार बोधक- अवश्य, अच्छा, हाँ।
   ख) अस्वीकार बोधक- न, मत, नहीं।
   (इनकी चर्चा 'निपात' शीर्षक के अंतर्गत की गई है।)

क्रिया विशेषण के भेद–

क्रिया विशेषण चार प्रकार के होते हैं—

1. रीतिवाचक क्रिया विशेषण।
2. स्थान वाचक क्रिया विशेषण।
3. कालवाचक क्रिया विशेषण।
4. परिमाणवाचक क्रिया विशेषण।

1. रीतिवाचक क्रिया विशेषण–

रीति शब्द का शब्दिक अर्थ है–विधि या कार्य करने की प्रणाली। जो शब्द किसी क्रिया की रीति संबंधी विशेषता का बोध कराते हैं, उन्हें रीति वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

उदाहरण–1. वह तेज दौड़ता है।

2. वे बस स्टेण्ड पैदल ही गए।

3. छात्र शिक्षक को ध्यानपूर्वक सुन रहे हैं।

कैसे? प्रश्न द्वारा इन वाक्यों में रेखांकित शब्द उत्तर के रूप में प्राप्त होते हैं। जैसे– वे चलकर कैसे गए? पैदल। अतः रेखांकित शब्द तेज, पैदल और ध्यान पूर्वक क्रियाओं की रीति अर्थात् क्रिया किस प्रकार हो रही है, का बोध करा रहे हैं। अतः ये रीतिवाचक क्रिया विशेषण हैं।

पहचान–

रीतिवाचक क्रिया विशेषण को पहचानने के लिए क्रिया के साथ 'कैसे' या 'किस प्रकार' प्रश्न करना चाहिए। जो उत्तर आए, वह रीतिवाचक क्रिया विशेषण होगा।

जिन शब्दों से क्रिया के निश्चय, अनिश्चय, कारण, स्वीकार, निषेध, प्रश्न, प्रकार अथवा आकस्मिकता का पता चले, वे हैं– रीतिवाचक विशेषण; जैसे—

निश्चय– अवश्य, अनिवार्य, निस्संदेह, ठीक, वास्तव में आदि।

अनिश्चय–शायद, संभवतः, बहुत करके, कदाचित आदि।

कारण– क्यों, के कारण, इसलिए, अतएव आदि।

स्वीकार– जी, हाँ, अवश्य, ठीक, सच आदि।

निषेध– न, ना, नहीं, मत, कभी नहीं, कदापि नहीं आदि।

प्रश्न– क्यों, कहाँ, कब, कौन, कैसे, किसलिए आदि।

प्रकार– ऐसे, कैसे, वैसे, धीरे-धीरे, शीघ्रता से आदि।

आकस्मिकता–यकायक, अचानक, सहसा, एकाएक आदि।

2. स्थानवाचक क्रिया विशेषण

स्थान शब्द का शब्दिक अर्थ है– जगह। जो शब्द किसी क्रिया के होने के स्थान का बोध कराते हैं, उन्हें स्थान वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

1. श्याम बाहर गया हुआ है। (स्थिति बोधक)
2. गर्दन बाईं ओर घुमाओ। (दिशा बोधक)
3. यहाँ से वहाँ तक संतरे के बगीचे हैं। (विस्तार बोधक)

पहचान–

स्थान वाचक क्रिया विशेषण पहचानने के लिए क्रिया के साथ 'कहाँ' लगाकर प्रश्न करना चाहिए। जो उत्तर आए, वह स्थान वाचक क्रिया विशेषण का होगा।

मुख्य शब्द–

स्थिति– बाहर, भीतर, यहाँ, कहीं, कहाँ, जहाँ, वहाँ, आमने-सामने, नीचे-ऊपर, आगे-पीछे आदि।

दिशा– इधर-उधर, दाएँ-बाएँ, की ओर, चारों ओर, सर्वत्र।

विस्तार–यहाँ से वहाँ तक, इधर से उधर तक, कहाँ तक, जहाँ तक, दक्षिण से उत्तर तक, सर्वत्र।

प्रयोग–

यहाँ उन कतिपय स्थान वाचक क्रिया विशेषण का शब्दों पर विचार करना आवश्यक है, जिनके प्रयोगों में कुछ विशेषता रहती है—

1. कभी अनिश्चित स्थान के रूप में है; जैसे- आप रोज कहीं जाते हैं?
2. कभी-कभी यह शब्द विरोध का सूचक होता है; जैसे- कहीं धूप, कहीं छाया
3. कभी आश्चर्य के रूप में- कहीं आप रेत में से तेल तो नहीं निकाल रहे हैं!

3. काल वाचक क्रिया विशेषण

काल का शब्दिक अर्थ है- समय। जो शब्द क्रिया की काल संबंधी विशेषता का बोध कराते हैं, उन्हें काल वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। उदाहरण-

1. राम कल भोपाल आ रहा है। (समय वाचक)
2. आजकल पानी का संकट है। (अवधि वाचक)
3. मैं प्रतिदिन समाचार पत्र पढ़ता हूँ। (बारंबारता वाचक)

पहचान–

काल वाचक विशेषण को पहचानने के लिए क्रिया के साथ 'कब' लगाकर देखना चाहिए। उत्तर में जो आए, वह काल वाचक क्रिया विशेषण है।

मुख्य शब्द–

समय वाचक-कल, परसों, आज, प्रातः, पहले, अब, तब, जब, कब आदि।

अवधि वाचक-हमेशा, लगातार, दिनभर, सुबह-शाम, नित्य, आजकल, आगे-पीछे आदि।

बारंबारता वाचक-प्रतिदिन, कईबार, बार-बार, बहुधा, हर बार, पुनः आदि।

विशेष–

आगे-पीछे, आदि कुछ शब्द स्थान वाचक तथा काल वाचक दोनों होते हैं।

4. परिमाण वाचक क्रिया विशेषण

परिमाण का शाब्दिक अर्थ है- मात्रा। जो शब्द क्रिया की मात्रा (परिमाण) का बोध कराते हैं, उन्हें परिमाण वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसे-

1. अधिक खाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। (अधिकता बोधक)
2. कम खाओ, सुखी रहो। (न्यूनता बोधक)
3. वह केवल दो रोटी खाता है। (पर्याप्त बोधक)
4. मेरा भाई अधिक खाता है। (तुलना बोधक)
5. सभी पाठों को क्रमशः दोहराना है। (श्रेणी बोधक)

पहचान-

परिमाण वाचक क्रिया विशेषण को पहचानने के लिए क्रिया के साथ 'कितना, कितनी, कितने' लगाकर प्रश्न करना चाहिए। उत्तर में जो प्राप्त हो, वह परिमाण वाचक क्रिया विशेषण होगा।

मुख्य शब्द-

1. **अधिकता बोधक**-अति, अत्यंत, अधिक, अत्यधिक, बहुत, बड़ा, भारी आदि।
2. **न्यूनता बोधक**- थोड़ा, कम, जरा सा, कुछ अल्प, तनिक आदि।
3. **पर्याप्त बोधक**- केवल, पर्याप्त, बस, ठीक, यथेष्ट आदि।
4. **तुलना बोधक**- इतना, अधिक, उतना, कम, जितना आदि।
5. **श्रेणी बोधक**-क्रमशः, क्रम-क्रम से, बारी-बारी से, थोड़ा-थोड़ा आदि।

रोचक तथ्य-

1. कुछ क्रिया-विशेषण ऐसे हैं, जिनका प्रयोग युग्म (जोड़े) रूप से होता है; जैसे- यद्यपि-तथापि, जितना-उतना, जैसी-वैसी, यदि-तो आदि।

II सम्बन्ध बोधक अव्यय

एक यात्री ने उज्जैन पहुँचकर महाकालेश्वर मंदिर का पता किसी से पूछा। पता बताने वाले व्यक्ति ने कहा-

आप अभी स्टेशन के सामने खड़े हैं। यहाँ से आगे चलने पर एक चौराहे से गुजरेंगे। चौराहे के चारों ओर चार मार्ग दिखेंगे। आपको बाईं ओर के मार्ग से जाना होगा। यह रास्ता नगरपालिका के निकट समाप्त होगा। वहाँ अत्यधिक भीड़ के कारण आपको नगरपालिका के पीछे वाली सड़क पर जाना होगा। वहाँ पानी की टंकी मिलेगी जिसके दाईं ओर एक रास्ता मिलेगा। उस रास्ते से कुछ दूरी पर आपको मंदिर का ऊपरी भाग दिखेगा। वहाँ और भी मंदिर हैं। अतः जिस मंदिर का ऊपरी भाग सबसे ऊँचा हो, उसकी ओर ही आपको बढ़ना है। वहाँ कुछ दर्शनार्थी आपको हाथ में फूलों की डलिया लेकर दर्शन के निमित्त जाते हुए दिखेंगे। उनके साथ ही आपको जाना है। आप सीधे मंदिर पहुँच जाएँगे। मंदिर पहुँचने का इसके सिवाय कोई अन्य तरीका नहीं है।

लगता है! यह सुनकर पाठक भी उज्जैन स्टेशन से सीधे महाकाल मंदिर पहुँच जाएँगे। रेखांकित शब्दों का प्रयोग किए बिना वह व्यक्ति मंदिर का पता नहीं बता सकता था। अतः जिन शब्दों का सहारा लेकर हमें किसी स्थान (संज्ञा) का पता बताना हो तो **कह सकते हैं कि संज्ञा अथवा सर्वनाम से संबंध स्थापित करने वाले रेखांकित शब्दों का प्रयोग किए बिना हम**

ऐसा नहीं कर सकते। अतः ऐसे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों से स्थापित करते हैं, उन्हें संबंध बोधक अव्यय कहते हैं। इन शब्दों को संबंध बोधक परसर्ग भी कहते हैं क्योंकि ये परसर्ग संज्ञा/सर्वनाम के बाद में आकर उनका संबंध वाक्य के दूसरे संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों से स्थापित करते हैं।

पहचान-

निम्नलिखित शब्दों द्वारा संबंध बोधक अव्यय की पहचान करें; तथा प्रयोग, अर्थ, व्युत्पत्ति के आधार पर उन्हें सीखने का प्रयत्न करें।

प्रमुख संबंध बोधक-

भेद	संबंध बोधक शब्द
1. कालवाचक	- के आगे, के पीछे, के पूर्व, से पूर्व आदि।
2. स्थान वाचक	- के पास, के नीचे, के ऊपर, के भीतर, के बाहर, से दूर आदि।
3. दिशा वाचक	- की ओर, के चारों ओर, के पूर्व में आदि।
4. संप्रदानात्मक (उद्देश्यवाचक)	- के लिए, के निमित्त
5. विरोध वाचक	- के विरुद्ध, के प्रतिकूल, के विपरीत
6. कारण वाचक	- के कारण, के लिए, के चलते, के हेतु आदि।
7. साधन वाचक	- के द्वारा, के माध्यम से, के सहारे आदि।
8. तुलनात्मक (सादृश्य वाचक)	- के समान, के जैसा, के अनुरूप, के तुल्य, की तरह, की अपेक्षा आदि।
9. संगतिबोधक (साहचर्य वाचक)	- के साथ, के संग, के सहित।
10. अभाव बोधक (व्यतिरेक वाचक)	- के अतिरिक्त, के बिना, के सिवाय
11. पार्थक्य वाचक	- से, से दूर, से परे, से हटकर, बचकर
12. संबंधात्मक	- के विषय में
13. व्यापकता बोधक	- से लेकर/तक, पर्यन्त

रोचक तथ्य-

1. संबंध बोधक शब्दों का प्रयोग संबंध कारक परसर्ग सहित तथा परसर्ग रहित भी होता है। कभी-कभी एक साथ दोनों प्रकार से भी होता है।
   1. परसर्ग सहित- पेड़ के सामने
   2. परसर्ग रहित- जीवनभर
   3. दोनों प्रकार से- क. पत्र के द्वारा, ख. पत्र द्वारा
2. संबंध बोधक अव्यय से जुड़े शब्द आगे या पीछे कहीं भी प्रयुक्त हो सकते हैं; जैसे- मोहन के पीछे सोहन खड़ा है।

सोहन मोहन के पीछे खड़ा है।

3. कहीं-कहीं वाक्यों में संबंध बोधक शब्द तथा क्रिया विशेषण के रूप में प्रयोग में आने वाले शब्द लगभग समान होते हैं किंतु अभ्यास द्वारा उनके अंतर को समझने का प्रयास करें।

इस संबंध में कुछ शब्दों का अध्ययन करते समय यह बात भी ध्यान में रखें कि वे अपना रूप पद के अनुसार बदलते रहते हैं। कभी संज्ञा बन जाते हैं, कभी विशेषण, कभी क्रिया विशेषण और कभी संबंधबोधक बन जाते हैं। एक उदाहरण से इस बात को समझने का प्रयास करें-

1. उसके पीठ पीछे बुराई करना ठीक नहीं है। (यहाँ 'पीछे' शब्द विशेषण है।)
2. ये सब बातें पीछे होती रहेंगी। (यहाँ 'पीछे' शब्द विशेषण है।)
3. घर के पीछे एक मंदिर है। (यहाँ के पीछे संबंध बोधक है।)
4. अपने सामने ही अपना मकान बनवा जाऊँ, पता नहीं 'पीछे' कौन बनवाएगा। (यहाँ 'पीछे' क्रिया विशेषण है।)

उपरोक्त चारों वाक्यों में पहले एवं दूसरे वाक्य में पीछे शब्द बातों (संज्ञा) की विशेषता बना रहा है। तीसरे, वाक्य में के पीछे का संबंध घर से है क्योंकि यह घर (संज्ञा) के बाद आकर उसका संबंध अन्य शब्दों से जोड़ रहा है। चौथे वाक्य में पीछे काल वाचक क्रिया विशेषण है।

अत: ध्यान रहे-

संबंध बोधक शब्दों के बाद प्राय: संज्ञा या सर्वनाम आते हैं, जबकि क्रिया विशेषण शब्दों का प्रयोग क्रिया के पहले होता है; जैसे-

(क) कमरे के भीतर आओ। (वाक्य में 'के भीतर' का संबंध कमरे से जोड़ा गया है। अत: यह विशेषण है।)

(ख) भीतर आओ। (वाक्य में 'आओ' क्रिया के पहले भीतर आया है। अत: यह क्रिया विशेषण है।) दोनों के अंतर को इस प्रकार पहचानें—

वाक्य प्रयोग में जब संज्ञा या सर्वनाम के साथ का, की, के संज्ञा शब्दों में अथवा रा, रे, री सर्वनाम शब्दों में परसर्ग आए तो वहाँ संबंध बोधक अव्यय होगा, जबकि क्रियाविशेषण अव्यय परसर्ग-रहित प्रयुक्त होते हैं।

III समुच्चय बोधक अव्यय

समुच्चय बोधक शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। समुच्चय+बोधक: जिसका अर्थ है- समुच्चय अर्थात् समूह का बोधक अर्थात् ज्ञान कराने वाले। अत: **वे शब्द जो दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें समुच्चय बोधक अव्यय कहते** हैं। समुच्चय बोधक अव्ययों को योजक (जोड़ने वाला) भी कहते हैं। उदाहरण-

- माता और पिता (शब्द समुच्चय)
- कृष्ण और सुदामा (शब्द समुच्चय)
- कृष्ण राजा थे किंतु सुदामा एक निर्धन ब्राह्मण था। (वाक्यांश योजक)
- खूब पढ़ो अन्यथा अनुत्तीर्ण हो जाओगे। (वाक्यांश योजक)

– स्नान कर लो और भोजन कर लो। (वाक्य-योजक)

उपरोक्त वाक्यों को ध्यान से पढ़ें तो आप स्वयं समझ जाएँगे कि रेखांकित शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों को जोड़ने का कार्य कर रहे हैं।

समुच्च बोधक के भेद-

- समानाधिकरण
  - संयोजक
  - विरोध
  - विकल्प बोधक
  - परिणाम बोधक
- व्यधिकरण
  - कारण बोधक
  - संकेत बोधक
  - स्वरूप बोधक
  - उद्देश्य बोधक

1. समानाधिकार समुच्चय बोधक-

समानाधिकार समुच्चय बोधक शब्दों को सजातीय समुच्चय बोधक भी कहा जाता है। ये दो समान घटकों एवं स्वतंत्र घटकों (शब्दों, वाक्याशों अथवा वाक्यों) को चार प्रकार से परस्पर मिलाते हैं।

पहचान-

समानाधिकरण- समुच्चय बोधक शब्दों की पहचान निम्नलिखित शब्दों के आधार पर करें-

	पहचान	उदाहरण
1. संयोजक (दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द)	और, तथा, एवं, व, ताकि आदि	राम, सीता और लक्ष्मण वन को गए।
2. विरोध प्रकट करने वाले शब्द	किन्तु, परन्तु, लेकिन, मगर, पर	दुर्योधन को कृष्ण ने बहुत समझाया मगर वह नहीं माना।
3. विकल्प बनाने वाले शब्द	अथवा, चाहे, या, वा	तुम भारत में रहो या विदेश में; मेरा आशीर्वाद सदैव तुम्हारे साथ है।
4. परिणाम सूचक शब्द (दूसरी बात पहली बात का परिणाम हो)	अत:, इसलिए, अतएव, सो	मैं अस्वस्थ हूँ। इसलिए विद्यालय नहीं जाऊँगा।

2. व्यधिकरण समुच्चय बोधक-

ये शब्द भिन्न आधार वाले दो घटकों (शब्दों, वाक्यांशों, वाक्य) को मिलाते हैं। व्यधिकरण समुच्चय बोधक शब्दों की पहचान निम्नलिखित शब्दों के आधार पर करें-

1. **कारण बोधक**- जिन दो उपवाक्यों में कार्य और कारण का संबंध हो, उन्हें कारण बोधक से जोड़ा जाता है; जैसे— क्योंकि, चूँकि, इसलिए, ताकि, इस कारण; जैसे— राम बीमार है, इसलिए वह मेरे साथ नहीं आ सका।
2. **संकेत बोधक पहचान**-जो अव्यय शब्द एक वाक्य में परस्पर संबंध रखते हुए प्रयुक्त

हों; जैसे- यदि, तो, यद्यपि...तथापि, जो-तो, यद्यपि...परन्तु। इनमें से एक के आने के बाद दूसरे का संकेत हो जाता है। प्राय: ये संकेत शर्त सूचक होते हैं; जैसे—
यदि तुम परीक्षा में अच्छे अंक लाना चाहते हो, तो खूब पढ़ाई करो।

3. **स्वरूप बोधक**-जिन अव्यय शब्दों से पहले उपवाक्य का कथन दूसरे उपवाक्य से स्पष्ट हो; जैसे- अर्थात्, यानि, मानो, जैसे, जैसा कि आदि। उदाहरण- मुझे वैसा ही पेन चाहिए जैसा कि तुमने मुझे दिलाया था।
4. **उद्देश्य वाचक**-जिन अव्यय शब्दों से एक वाक्य का उद्देश्य दूसरे वाक्य से प्रकट हो; जैसे प्रात:, ताकि, जिससे, कि आदि।
   जैसे— प्रात: भ्रमण के लिए जाना चाहिए, ताकि स्वस्थ रह सके।

रोचक तथ्य-

1. व्यधिकरण समुच्चय बोधक शब्द किसी वाक्य के एक या अधिक आश्रित उपवाक्यों को जोड़ते हैं, शब्दों को नहीं।
2. ये सदा दो खंडों के रूप में ही अपना भाव स्पष्ट करते हैं: एक मुख्य खंड, दूसरा आश्रित खंड।
3. संकेत बोधक व्यधिकरण का प्रयोग वाक्य में संयुक्त रूप से न होकर, एक का प्रयोग वाक्य के प्रारंभ में तथा दूसरे का प्रयोग दूसरे वाक्य के आरंभ में किया जाता है; जैसा कि उदाहरण क्रमांक 2 में दिया गया है। (यदि... तो)
4. उद्देश्य वाचक व्यधिकरण प्राय: बाद में आकर पहले वाक्य का उद्देश्य स्पष्ट करते हैं। उपरोक्त उदाहरणों द्वारा यह स्पष्ट किया गया है। उन्हें ध्यान से पढ़ें।

विशेष

समुच्चय बोधक शब्दों का प्रयोग सोच समझकर करना चाहिए; जैसे-

1. 'तो' यह निश्चय वाचक का बोध कराने वाला शब्द है। इसका प्रयोग किसी भी शब्द भेद के साथ हो सकता है किंतु समुच्चय बोधक के रूप में इसका प्रयोग करने के दो नियम हैं; जैसे-
   (क) जब 'तो' के साथ 'नहीं' अथवा 'भी' आए; जैसे-
   तुम स्वयं वहाँ जाओ, नहीं 'तो' काम पूरा नहीं होगा।
   तुम भी वहाँ जाओ नहीं तो काम पूरा नहीं होगा।
   (ख) 'यदि' के साथ 'तो' आने पर; जैसे-
   (यदि) पानी नहीं बरसा, तो फसल चौपट हो जाएगी।
2. 'इसलिए' समुच्चय बोधक भी है, और क्रिया विशेषण भी। अत: इस अंतर को भी प्रयोग के आधार पर जानें-
   (क) वह इसलिए प्राणायाम करता है कि शरीर स्वस्थ बना रहे। (यहाँ 'इसलिए' का क्रिया विशेषण के रूप में प्रयोग हुआ है। कारण सूचक होने से यह रीति वाचक क्रिया विशेषण है।)

(ख) वह घमण्डी है, <u>इसलिए</u> वह उससे घृणा करता है। (इस वाक्य में 'इसलिए' योजक का कार्य कर रहा है। अत: समुच्चय बोधक है।)

IV विस्मयादि बोधक (द्योतक)

विस्मय+आदि- दो शब्दों से मिलकर विस्मयादि शब्द बना है। व्याकरण की भाषा में जो शब्द विस्मय (आश्चर्य), हर्ष, शोक, घृणा, ग्लानि आदि तीव्र मनोभावों को व्यक्त करते हैं, उन्हें विस्मयादि बोधक कहते हैं।

विस्मयादि बोधक के सम्बन्ध में दो बातें ध्यान देने योग्य हैं-

1. इनकी संख्या बहुत सीमित है।

2. विस्मय का भाव कभी-कभी बिना, विस्मयादि बोधक शब्दों के भी वाक्य स्तर पर दो प्रकार से प्रकट किया जा सकता है।

(क) मौखिक भाषा में ऊँची आवाज करके।

(ख) लिखित भाषा में इसका चिह्न (!) लगाकर।

<u>**प्रमुख मनोभाव और उन्हें प्रकट करने वाले विस्मयादि बोधक शब्द**</u> भिन्न भावों को सूचित करने के लिए भिन्न-भिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

1. **हर्ष बोधक**-आहा! धन्य-धन्य! वाह-वाह! शाबाश! बहुत खूब आदि।
   वाह! कितना मनमोहक नृत्य किया आपने।
2. **शोक बोधक**-हाय-हाय! हा-हा! आह! बाप रे! दैया रे! राम राम आदि।
   हाय-हाय! मैं लुट गया।
3. **आश्चर्य बोधक (विस्मयादि बोधक)**-है! अरे! क्यों! ओ हो! आदि।
   ओ हो! आप आ गए।
4. **अनुमोदन बोधक (स्वीकार बोधक)**-अच्छा! जी हाँ! ठीक आदि।
   जी हाँ! मैं आपके साथ अवश्य चलूँगा।
5. **तिरस्कार बोधक**-हट!
   हट! बेइमान कहीं के।
6. **भय बोधक**-बाप रे! हाय अल्लाह! उई माँ आदि।
   बाप-रे-बाप! इतना लंबा साँप।
7. **सम्बोधन बोधक**-लो! जी! अजी आदि।
   अजी! सुनते हो।
8. **आशीष बोधक**-जीते रहो! चिरायु हो! चिरंजीव हो! जय हो आदि।
   चिरंजीव हो।
9. **घृणा बोधक**-छि: छि:! धिक धिक आदि।
   छि: छि:! घर में चारों ओर सामान बिखरा पड़ा है।
10. **विवशता बोधक**-काश! कदाचित आदि।

काश! मैं चुनाव में खड़ा होता।

11. **विदा बोधक**-टाटा! बाई-बाई! अच्छा!
    टाटा! अब हम चलते हैं।

12. **चेतावनी बोधक**-सावधान! चुप! खबरदार!
    सावधान! आगे खतरनाक मोड़ है।

पहचान-

1. विस्मयादि बोधक अव्यय प्राय: वाक्य के प्रारंभ में आते हैं।
2. इन शब्दों का संबंध वाक्य के अन्य पदों से बिल्कुल नहीं होता है। इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से ही किया जाता है। इनके प्रयोग से भावों की तीव्रता का अनुभव होता है।
3. प्रत्येक प्रकार के भावों को प्रकट करने के लिए अलग-अलग शब्दों का प्रयोग किया जाता है।
4. विस्यादि बोधक शब्दों के आगे (!) चिह्न लगाया जाता है।

प्रयोग-

कभी-कभी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि शब्द भी विस्मयादि बोधक के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे-

	शब्द	**उदाहरण**
1.	राम-राम	हे राम! अब क्या होगा। (संज्ञा)
2.	क्या	क्या, तुमने कुछ नहीं सुना। (सर्वनाम)
3.	अच्छा	अच्छा! तो आप आ गए। (विशेषण)
4.	जा जा	अपना काम कर। (क्रिया)

रोचक तथ्य-

1. कभी-कभी पूरा वाक्य ही विस्मयादि बोधक प्रयुक्त होता है; जैसे-
   (क) क्या बात है! (ख) सर्वनाश हो गया!
2. व्याकरण में विस्मयादि बोधक अव्ययों से वाक्य में कोई विशेष सहायता नहीं मिलती है। इनका प्रयोग केवल भावों को तीव्र रूप में प्रकट करने के लिए होता है।

V निपात

निपात शब्द का शाब्दिक अर्थ है- विशेष बल। हिंदी में कुछ ऐसे अव्यय होते हैं, जो वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण या क्रिया विशेषण के साथ जुड़कर वाक्य के अर्थ में विशेष बल उत्पन्न करते हैं, उन्हें निपात कहते हैं। निपात का प्रयोग अधिकतर शब्द समूह के बाद होता है। इन्हें वाक्य का अंग नहीं माना जाता है।

मात्र- दस रुपये मात्र मिले।

भर- खाने में केवल रोटी सब्जी भर है।

इन दोनों वाक्यों में मात्र एवं भर (निपात) शब्दों का प्रयोग सीमित अर्थ में हुआ है।

प्रयोग विश्वभर में गांधी जी का नाम है। इस वाक्य में निपात **भर** का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है।

ही– वह घर में ही रहेगा। वह घर ही में रहेगा।

भी– तुम भी मेरे साथ पढ़ना। तुम मेरे साथ पढ़ना भी।

तो– वह तो घर चला गया। वह घर चला तो गया।

तक– पिताजी वहाँ गए तक नहीं। पिताजी वहाँ तक गए नहीं।

उपरोक्त उदाहरणों पर ध्यान दें, और देखें कि—

- **मात्र** का प्रयोग सम्पूर्णता के लिए होता है, जबकि **भर** का प्रयोग सीमितता तथा विस्तार दोनों के लिए होता है।
- **ही**– का प्रयोग किसी व्यक्ति, स्थान या बात पर विशेष बल देने के लिए होता है, जबकि **भी** का प्रयोग किसी व्यक्ति, स्थान, या वस्तु के साथ अन्य को जोड़ने के अर्थ में किया जाता है।
- **तो**– का प्रयोग प्राय: क्रिया के साथ उसका परिणाम या मात्रा को स्पष्ट करता है, जबकि **तक** का प्रयोग किसी कार्य की सीमा निश्चित करता है।

पहचान–

निपात का प्रयोग निम्नलिखित स्थानों पर देखने को मिलता है–

1. प्रश्न करने में
2. अस्वीकृति प्रकट करने में
3. किसी शब्द पर बल देने के लिए
4. विस्मय प्रकट करने के लिए।

उपरोक्त आधार पर निपात के निम्नलिखित भेद माने जाते हैं–

1. स्वीकारात्मक निपात	हाँ, जी	हाँ, मेरा ही नाम रमेश है।
2. नकारात्मक निपात (निषेधात्मक निपात)	नहीं, न, मत	उसको वहाँ से चले जाना मुझे अच्छा नहीं लगा।
3. प्रश्नबोधक निपात	क्या, क्यों	क्या तुम मेरे साथ चलोगे?
4. आदरबोधक निपात	जी, हाँ	पिता जी आ रहे हैं।
5. तुलना बोधक निपात	सा, सी, से	मुझ सा सेवक और कहाँ मिलेगा?
6. अवधारणा बोधक निपात	लगभग, ठीक	वह यहाँ से लगभग चार बजे रवाना हुआ।
7. बलप्रदायक निपात (सीमार्थ निपात)	केवल, ही, तो, भी, तक	उससे अच्छा चित्र तो मैं बना देता।
8. विस्मयादि बोधक निपात	काश, क्या, है	काश! मैं थोड़ी मेहनत और कर लेता।

रोचक तथ्य–

1. निपात का प्रयोग अव्यय के रूप में होता है, क्योंकि इनका रूप अविकारी है।

2. इन पर लिंग वचन का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
3. आवश्यकतानुसार इनका प्रयोग वाक्य में किसी भी स्थान पर एक शब्द अथवा शब्द समुदाय पर विशेष बल देने के लिए किया जाता है।
4. 'नहीं', 'न', 'मत' ये तीनों ही निषेध वाचक निपात हैं। इनके प्रयोग सावधानी पूर्वक करें।
   (अ) किसी प्रश्न के उत्तर में 'नहीं' का प्रयोग किया जाता है; जैसे- वह नहीं जाता।
   (ब) दो या अधिक में निषेध बताने के लिए 'न' का प्रयोग होता है; जैसे- राम ने न पढ़ा, न लिखा।
   (स) विधि (आज्ञा सूचक) वाक्य में भी 'न' का प्रयोग होता है; जैसे- मेरी पुस्तक न लेना।
   (द) 'मत' का प्रयोग निषेध के अर्थ में केवल विधि क्रिया (आज्ञा रूप) में होता है; जैसे- वहाँ मत जाना।

विशेष-

ध्यान रखें बहुधा 'न' का प्रयोग केवल निषेध के अर्थ में, तथा नहीं का प्रयोग निषेध की निश्चयता के अर्थ में होता है।

||01||

परिशिष्ट

पद-व्यवस्था में शब्दों की पहचान कैसे करें?

एक सज्जन ने मुझसे पूछा कि पद-व्यवस्था के अंतर्गत कभी-कभी हम यह निर्णय नहीं कर पाते कि अमुक शब्द का प्रयोग किस पद के अंतर्गत हुआ है। एक उदाहरण से उन्होंने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा कि सीधा शब्द लें। इस शब्द का प्रयोग तीन प्रकार से देखने को मिलता है; जैसे-

1. आजकल सीधों को कोई नहीं पूछता।
2. श्याम सीधा लड़का है।
3. सीधे खड़े रहो।

उनकी कठिनाई को समझकर मैंने इस विषय को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया; और बताया कि किसी भी शब्द के पद की पहचान करते समय यह अनुमान लगाना चाहिए कि वह किस पद से संबंधित होगा; जैसे- 'सीधा' शब्द को ही लें।

1. पहले वाक्य में 'सीधों' का प्रयोग कर्त्ता के रूप में हुआ है, अत: यह संज्ञा है।
2. दूसरे वाक्य में 'सीधा' का प्रयोग श्याम की विशेषता बता रहा है, अत: यह विशेषण है।
3. तीसरे वाक्य में 'सीधे' शब्द का प्रयोग 'खड़े रहो' क्रिया की विशेषता बताने के लिए किया गया है। अत: यहाँ सीधे क्रिया विशेषण है।

इस प्रकार शब्द किस स्थान पर प्रयुक्त हुआ है, उसी को आधार बनाकर हमें उसके पद का निर्णय करना होगा। फिर मैंने एक तालिका के माध्यम से कुछ शब्दों के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, संबंध बोधक, समुच्चय बोधक, अव्यय आदि के रूप में प्रयोग को विस्तार से स्पष्ट करने की चेष्टा की।

अत: उपरोक्त प्रकरण को शिक्षक ध्यान से पढ़ें तथा छात्रों को भी स्पष्ट करें। इससे उनके व्याकरण संबंधी शब्दों के पदों के ज्ञान को समझने में सहायता मिलेगी।

पदों संबंधी तालिका

	(क)	(ख)	(ग)
शब्द	**संज्ञा/सर्वनाम**	**विशेषण**	**अव्यय**
कोई	ऊपर 'कोई' गया है। (सर्वनाम)	कोई पुस्तक दिखाओ। (विशेषण)	–
कुछ	दूध में कुछ है। (सर्वनाम)	कुछ बच्चे बैठे हैं कुछ खड़े हैं (विशेषण)	वह कुछ तेजी से चल रहा है (क्रिया विशेषण)
बहुत	बहुतों ने ऐसा कहा है। (संज्ञा)	बहुत काम करना शेष है।	बहुत मत पढ़ो। (क्रिया-विशेषण)
और	औरों से भी पढ़वाएँ। (संज्ञा)	और लोग कहाँ गए। (विशेषण)	तनिक और साफ धोइये। राम और श्याम पढ़ रहे हैं। (समुच्चय बोधक)
अच्छा	सदैव अच्छों का साथ दो। (संज्ञा)	श्याम अच्छा खिलाड़ी है। (विशेषण)	श्यामा अच्छा लिखती है। (क्रिया विशेषण) अच्छा! तुमने अभी तक पढ़ना शुरू नहीं किया। (विस्मयादिक बोधक)
वह	वह दौड़ रहा है। (सर्वनाम)	वह बच्चा दौड़ रहा है। (विशेषण)	–
सीधा	आजकल सीधों को कोई नहीं पूछता। (संज्ञा)	श्याम सीधा लड़का है। (विशेषण)	सीधे खड़े रहो। (क्रिया विशेषण)
आगे	आगे की तैयारी करो। (संज्ञा)	–	राम आगे चल रहा था। (क्रिया विशेषण) तुम्हारे आगे ही वह आया था। (संबंध बोधक)
एक	मैं इनमें से एक को भर नहीं जानता हूँ। (सर्वनाम)	वह एक भला आदमी है। (विशेषण)	इन्हें एक-एक कर बुलाओ। (क्रियाविशेषण)
ऐसा	ऐसों के पास मत जाओ। (सर्वनाम)	ऐसा पढ़ने वाला मैंने नहीं देखा। (विशेषण)	वह ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करना चाहता है; जैसा पहले कभी न दिया गया हो (संबंध बोधक)
केवल	–	मुझे केवल आपसे चर्चा करना है। (विशेषण)	1. वह लड़की केवल तेज दौड़ती है। (क्रिया विशेषण) 2. उसकी सब सम्पत्ति चली गई, केवल रहने को घर बचा है। (समुच्चय बोधक)

उपरोक्त तालिका के अनुसार 'कोई' के संबंध में अधिक स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि-

1. क. खण्ड में 'कोई' का प्रयोग अनिश्चय वाचक सर्वनाम के रूप में हुआ है। सर्वनाम के रूप में यह मानव बोधक है। किंतु ठीक से नहीं कहा जा सकता है कि वह कौन है? ख. खण्ड में 'कोई' का प्रयोग मानवेतर (वस्तु) रूप में हुआ है।

विशेष-विशेषण के रूप में कोई का प्रयोग मानव एवं मानवेतर दोनों ही रूपों में हो सकता है।

जैसे-

कोई लड़का गिरा है। (मानव रूप में)

कोई चीज गिरी है। (मानवेतर रूप में अर्थात् वस्तु रूप में)

इन दोनों वाक्यों में कोई का प्रयोग सार्वनामिक विशेषण के रूप में हुआ है।

2. ख खण्ड में 'कुछ' का प्रयोग परिमाण वाचक विशेषण (अनिश्चित संख्या) के रूप में है, जो न एक का अर्थ देता है, और न बहुत का। यह एक से अधिक किंतु स्वल्प अथवा एक के भी स्वल्पांश का बोधक शब्द है। खण्ड 'क' में इसका प्रयोग सर्वनाम की तरह हुआ है। सर्वनाम के रूप में प्राय: यह मानवेतर (वस्तु) प्रयोगों के रूप में हुआ है। 'स' खण्ड में 'कुछ' का प्रयोग क्रिया विशेषण रूप में हुआ है। वह चलने की विशेषता बता रहा है।

02

परिशिष्ट

स्व-शिक्षण एवं स्व-परीक्षण

निर्देश

अभिक्रमित अधिगम के अंतर्गत अभ्यास के लिए यहाँ एक प्रश्नावली दी जा रही है, जिसमें क्रिया संबंधी प्रश्न पूछे गए हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए; तथा प्रत्येक प्रश्न का उत्तर क्रम से (✓) टिक करते जाएँ। यदि आपका उत्तर गलत है, तो उसे काटिए नहीं। प्रश्न को दुबारा पढ़िए, तथा सही उत्तर समझ कर टिक (✓) करने का प्रयास करें। अपने पास एक कागज की पट्टी अवश्य रखें। कागज की पट्टी से अगला प्रश्न ढक कर रखें। अगले प्रश्न के बाईं ओर आप जिस प्रश्न को पढ़ रहे हैं, उससे पहले प्रश्न का उत्तर लिखा हुआ है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर उससे अगले प्रश्न की बाईं ओर लिखा है। उस प्रश्न का सही उत्तर देने के बाद अगले प्रश्न को पढ़ने के लिए कागज की पट्टी को नीचे सरकाते जाइए।

ध्यान रहे, यह आपकी परीक्षा नहीं है। यह आपकी ईमानदारी की परीक्षा है। इस प्रकार इस 'स्व-परीक्षण' के द्वारा 'स्वयं सीखें' का उद्देश्य भी पूरा हो रहा है।

क्रिया पर आधारित प्रश्न-माला

1.	यदि हम 'लता' कहें, तो एक लड़की की छबि हमारे मन में उतरती है, और यदि हम कहें- लता ने मनमोहक नृत्य किया, तो 'लता' की नृत्य करने की मन मोहक क्रिया मन में अंकित होती है। इसी प्रकार यदि हम कहें 'आज वर्षा होने वाली है।' तो वर्षा होने की क्रिया हमारे मानस में उतरेगी। अतः वाक्य का सबसे महत्वपूर्ण अंग क्रिया है। क्रिया के बिना वाक्य अधूरा रहता है। (प्रश्न नहीं)
2.	1. यह एक बगीचा है। 2. यहाँ कई लोग हैं। 3. बगीचे में कई पेड़ हैं। उपरोक्त वाक्यों से बगीचा, लोग, तथा पेड़ के होने का बोध हो रहा है। अतः जिस शब्द में कार्य के होने का बोध होता है, उसे............. कहते हैं।
3. क्रिया	1. बगीचे में कुछ लोग टहल रहे हैं। 2. कुछ लोग व्यायाम कर रहे हैं।

	3. पेड़ों पर पक्षी बैठे हैं। उपरोक्त रेखांकित वाक्यों से टहलने, करने तथा बैठे रहने का बोध हो रहा है। अत: जिन शब्दों से कार्य करने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं। (ठीक है/नहीं)
4. ठीक है	1. धूप निकल रही है। 2. पुस्तक आलमारी में है। 3. आप हँस क्यों रहे हैं? उपरोक्त वाक्यों से कार्य के होने का बोध हो रहा है। (ठीक है/नहीं)
5. ठीक है	1. वंदना पढ़ रही है। 2. वह पढ़कर खेलने जाएगी। 3. खेलने के बाद दादी से कहानी सुनेगी। उपरोक्त वाक्यों से वंदना द्वारा किए जाने वाले कार्यों के करने का बोध हो रहा है। (ठीक है/नहीं)
6. ठीक है	व्याकरण की भाषा में किसी कार्य के होने या करने का बोध कराने वाले शब्दों को क्रिया कहते हैं। क्रिया की पहचान दो प्रकार से होती है। होने तथा करने के रूप में। राम– तुम्हें यह चित्र कैसा लगा? श्याम– बहुत अच्छा! यहाँ पहले वाक्य में 'लगा' प्रत्यक्ष क्रिया है किंतु दूसरे वाक्य में 'बहुत अच्छा' कहने से क्रिया के प्रत्यक्ष होने का बोध नहीं होता है। वास्तव में क्रिया के प्रत्यक्ष रूप को प्रदर्शित करने के लिए यह वाक्य इस प्रकार होगा,.......... बहुत अच्छा लगा। अत: यहाँ क्रिया प्रत्यक्ष नहीं, ... है।
7. अप्रत्यक्ष अथवा परोक्ष	क्रिया के संबंध में एक विशेषता यह भी है कि क्रिया कभी केवल एक शब्द से व्यक्त होती है, कभी दो से, कभी तीन से किंतु तीनों ही अवस्थाओं में मुख्य क्रिया समान रहती है, जो कि अलग-अलग रूपों में होती है; जैसे— 1. माँ ने खाना बनाया। 2. माँ खाना बनाती है। 3. माँ खाना बना चुकी होगी। उपरोक्त वाक्यों में मुख्य क्रिया है........................
8. बनाना	जब क्रिया एक शब्द से अधिक शब्दों में होती है, तो उसे क्रिया पद बंध कहते हैं; जैसे— मोहन तुमसे मित्रता करना चाहता है।

	यहाँ मुख्य क्रिया 'करना' है और दो सहायक क्रियाएँ हैं- 'चाहता' है। इन सहायक क्रियाओं को ही.................... कहते हैं।
9. क्रिया पदबंध	क्रिया का निर्माण तीन प्रकार से होता है— 1. धातुओं से 2. संज्ञा से 3. विशेषण से क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है। मूल धातु में 'ना' प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया का सामान्य रूप बनता है; जैसे- 'आ' से आना। संज्ञा शब्द से बनने वाले शब्दों को 'नाम धातु' कहते हैं। जैसे- बात (संज्ञा) बतियाना (क्रिया) विशेषण शब्दों से भी नाम धातु 'क्रियाएँ' बनती हैं। जैसे- गरम (विशेषण) गरमाना (क्रिया) अधिक चाय नहीं............. चाहिए। उपरोक्त वाक्य में रिक्त स्थान की पूर्ति क्रिया के सामान्य रूप से करिए।
10. पीना	क्रिया का निर्माण तीन प्रकार से होता है। संज्ञा तथा विशेषण शब्दों से बनने वाली क्रियाओं को................ क्रियाएँ कहते हैं।
11. नाम धातु	क्रिया दो प्रकार की होती है— 1. मुख्य क्रिया 2. सहायक क्रिया मैंने सारी वस्तुएँ यथा स्थान रख दी हैं। उपरोक्त वाक्य में मुख्य क्रिया................... है।
12. रखना	जब क्रिया एक से अधिक शब्दों में होती है तो उसे क्रिया-पदबंध कहते हैं- पतंग उड़ रही है। इस वाक्य में उड़ रही है क्रिया-पदबंध है। (ठीक है/नहीं)
13. ठीक है	मैं आपके साथ चलूँगा। इस वाक्य में रेखांकित क्रिया-पद की मूल धातु है.......।
14. चलना	वाक्य में क्रिया की स्थिति के आधार पर क्रिया के दो प्रमुख भेद हैं— 1. अकर्मक क्रिया। 2. सकर्मक क्रिया। सकर्मक क्रिया के पहचान की सरल विधि है- क्रिया के साथ 'क्या' या 'किसे' लगाकर प्रश्न करना। यदि उत्तर 'हाँ' में मिले तो क्रिया सकर्मक होगी अन्यथा अकर्मक।

	बच्चा सो रहा है। यह वाक्य........ क्रिया का उदाहरण है।
15. अकर्मक	सकर्मक क्रिया में कभी-कभी कर्म प्रत्यक्ष नहीं रहता है। उसे भी जानें; जैसे— शीला खाती है। यहाँ 'क्या' खाती है? का उत्तर स्पष्ट नहीं है किंतु कुछ न कुछ तो 'खाती' ही है। अत: यह वाक्य सकर्मक क्रिया का उदाहरण है। (हाँ/नहीं)
16. हाँ	बच्चा घर जा रहा है। इस वाक्य में घर संज्ञा कर्म न होकर स्थानवाची क्रिया विशेषण है। 'जाना' क्रिया अकर्मक क्रिया है क्योंकि 'क्या' जा रहा है; यह प्रश्न करना यहाँ उचित नहीं है। अत: हर संज्ञा को देखकर यह नहीं समझ लेना चाहिए कि वह संज्ञा कर्म ही होगी; जैसे— हम भोपाल पहुँच रहे हैं। यहाँ 'पहुँचना' क्रिया अकर्मक है क्योंकि क्या पहुँच रहा है। यह प्रश्न यहाँ नहीं कर सकते। अत: 'जाना' और पहुँचना क्रियाएँ अकर्मक क्रियाएँ हैं। (ठीक है/नहीं)
17. ठीक है	कुछ क्रियाएँ संदर्भ के अनुसार कभी सकर्मक तथा कभी अकर्मक होती हैं; जैसे— पढ़ना- वह पुस्तक पढ़ रहा है। (सकर्मक) वह इसी विद्यालय में पढ़ता है। (अकर्मक) घिसना- भक्त चंदन घिस रहा है। कार के टायर घिस चुके हैं। यहाँ घिस चुके हैं क्रिया....................... क्रिया है।
18. अकर्मक	कुछ धातुएँ मूलत: सकर्मक होती है किंतु उनसे अकर्मक धातुएँ भी बनती हैं; जैसे— सिलना। 1. कपड़े सिल गए। (अकर्मक) 2. दर्जी ने कपड़े सी दिए। (सकर्मक) पहले वाक्य में यद्यपि कर्म का लोप है किंतु कपड़े सिलने वाला अवश्य होगा तभी तो कपड़े सिल गए, कहा गया है। देखना, बाँधना भी ऐसी ही सकर्मक क्रियाएँ हैं। 1. मैंने सामान बाँध लिया। (सकर्मक) 2. सामान बँध गया। इस वाक्य से........... क्रिया का बोध होता है।
19. अकर्मक	क्रिया के भेद में पूर्वकालिक क्रिया तथा तात्कालिक क्रिया का उल्लेख भी मिलता है। उसको पहचानने के लिए एक उदाहरण यहाँ दिया जा रहा है। - राम पढ़कर सो गया। - राम आते ही सो गया।

पहले वाक्य में मुख्य क्रिया से पूर्व होने वाली क्रिया धातु में 'कर' लगाकर बनाई गई है। जैसे- मूल क्रिया, पढ़ना में पढ़कर, इसलिए, इसे पूर्वकालिक क्रिया कहा जाता है। इसकी पहचान 'कर' लगने से सरलता से हो जाती है। दूसरे वाक्य में भी मुख्य क्रिया से पूर्व 'आते ही' लगा है पर इससे मुख्य क्रिया और पूर्व क्रिया में समय का अंतर पता नहीं लगता है। केवल क्रम का अंतर होता है। इसलिए इसे तात्कालिक क्रिया कहते हैं। एक और उदाहरण देखिए-

1. राम फोन सुनकर कार्यालय गया।

2. राम फोन सुनते ही कार्यालय चला गया।

उपरोक्त उदाहरण में दूसरे वाक्य से............. क्रिया का बोध होता है।

---

20. तात्कालिक क्रिया

समापिका तथा असमापिका-क्रियाएँ

जो क्रियाएँ वाक्य के अंत में हो उसे समापिका क्रिया कहा जाता है, तथा जो क्रिया वाक्य को समाप्त नहीं करती बल्कि अन्यत्र प्रयुक्त होती हैं, उन्हें असमापिका क्रिया कहते हैं; जैसे—

1. बच्चे खेल रहे हैं। (समापिका क्रिया)

2. खेलते हुए बच्चे कितने अच्छे लग रहे हैं! (असमापिका क्रिया)।

पहले वाक्य में 'खेलना' क्रिया वाक्य के अंत में प्रयुक्त हुई है, तथा दूसरे वाक्य में वाक्य के अंत में प्रयुक्त नहीं हुई है; अन्य उदाहरण—

1. बच्चा सो रहा है।

2. सोते हुए बच्चे को क्यों जगा रहे हो!

पहला वाक्य में 'सोना' क्रिया................... क्रिया है, जबकि दूसरे वाक्य में असमापिका क्रिया है।

---

21. समापिका

सकर्मक क्रियाओं की एक विशेषता यह भी है कि ये क्रियाएँ अपने अर्थ को पूर्णतः व्यक्त करने में समर्थ होती हैं। ये पूर्ण सकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं। ये दो प्रकार की होती हैं-

1. एककर्मक

2. द्विकर्मक

कालिदास ने 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' लिखा।

यह एककर्मक का उदाहरण है। यह वाक्य पूर्ण अर्थ देने में समर्थ है। ऐसे वाक्यों में एक कर्म की अपेक्षा रहती है। उपरोक्त उदाहरण में कालिदास ने लिखा है—आभिज्ञान शाकुंतलम्, किंतु जो क्रियाएँ एक नहीं, दो कर्मों के संयुक्त होने पर पूर्ण अर्थ प्रदान करती हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रियाएँ कहा जाता है। जैसे— राम ने श्याम की सहायता की।

इस वाक्य में प्रयुक्त क्रिया के दो-दो कर्म है— श्याम और सहायता। अतः ये.................. क्रियाएँ हैं।

---

22. द्विकर्मक

जो सकर्मक क्रियाएँ कर्म के होते हुए भी किसी पूरक के बिना अपना अर्थ पूर्णरूप से व्यक्त नहीं कर पाती, उन्हें अपूर्ण सकर्मक क्रियाएँ कहते हैं; जैसे—

मैं उसे मानता हूँ। मैं उसे चतुर मानता हूँ।

(पूरक रहित) (पूरक सहित)

प्राय: लिखना-दिखाना, चुनना, मानना, बनाना, समझना ऐसी क्रियाएँ हैं, जिनमें कर्म के अतिरिक्त एक पूरक की भी आवश्यकता रहती है; जैसे—

तुम मुझे अवश्य लिखना। (पूरक रहित)

तुम मुझे पत्र अवश्य लिखना। (पूरक सहित)

द्वितीय वाक्य में पूरक क्रिया...................... है।

---

23. पत्र

वाक्य में जब एक से अधिक क्रियाएँ मिलकर पूर्ण समापिका क्रिया बनाती हैं, तब उन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे—

श्याम विद्यालय जा चुका है।

इस वाक्य में क्रिया में एक से अधिक शब्द हैं। पहली क्रिया मूल या मुख्य क्रिया है-जा। यह क्रिया ही वाक्य को मुख्य अर्थ दे रही है। इस मुख्य क्रिया के साथ चुका है क्रिया संयुक्त क्रिया है, जो अपना अर्थ खोकर मुख्य क्रिया में ही एक नई विशेषता या नयापन ले आने में सहायक हो रही है। इस नई विशेषता द्वारा वाक्य में नया रंजन गुण (रंग भरने का गुण) के कारण ये क्रियाएँ रंजक क्रियाएँ कहलाती हैं। ऐसी प्रमुख रंजक क्रियाएँ हैं- लेना, देना, आना, जाना, उठना, बैठना, मरना, मारना, करना, चलना, खाना, पड़ना, टपकना, डालना, बनना, रहना, लगना, निकलना, बसना।

जैसे— उसे जाने दो।

इसमें दो रंजक क्रियाएँ हैं। जाना मुख्य क्रिया तथा .... रंजक क्रिया।

---

24. दो

रंजक क्रिया की कुछ विशेषताएँ हैं-

1. रंजक क्रिया के रूप में आने पर ये क्रियाएँ अपने मूल अर्थ की द्योतक नहीं होतीं। जैसे जाने दो में दो का अर्थ देना (किसी वस्तु का) नहीं है।

2. कुछ रंजक क्रियाओं के नकारात्मक रूप नहीं बन सकते।

3. रंजक क्रिया का प्रयोग संदर्भ अनुसार ही होता है; जैसे- आ धमकना के स्थान पर लिख धमकना नहीं हो सकता।

- गाड़ी चल दी।

वाक्य का अर्थ है- गाड़ी का चले जाना। चल दी का अर्थ यह नहीं है कि पहले गाड़ी चली, फिर उसे किसी को दी। अत: इस वाक्य में दी...................... क्रिया है।

---

25. रंजक

कभी-कभी दो क्रियाएँ एक साथ आकर दोनों ही मुख्य क्रिया का काम करती

	हैं। तब पहली क्रिया पूर्णकालिक होती है किंतु प्रयोग में 'कर' का लोप हो जाता है। जैसे— परीक्षा सिर पर आ पहुँची। अत: इन्हें यौगिक क्रियाएँ कहते हैं। वह पुस्तकें रख गया। (यहाँ रखकर गया में कर का लोप है।) इस वाक्य में 'रख गया'...................... क्रिया है।
26. यौगिक	– बच्चा चला गया। – वह पुस्तकें रख गया। इसमें पहला वाक्य में रेखांकित अंश चला (मुख्य क्रिया) की सहायक क्रिया है। द्वितीय वाक्य में रेखांकित अंश यौगिक क्रिया है। सहायक क्रिया से व्याकरणिक अर्थ की सूचना मिलती है जबकि यौगिक क्रिया में दोनों ही क्रिया सूचक शब्द मुख्य क्रिया का काम कर रहे हैं। यहाँ 'गया' शब्द का अर्थ जाना नहीं है, उसका अर्थ भी रखना ही है। 'रखकर' गया में 'कर' शब्द का लोप होने से यह यौगिक क्रिया कहलाई। राम ने बड़ी बहादुरी से चोर को मार भगाया। यह वाक्य उदाहरण है......................... क्रिया का।
27. यौगिक	– मोहन पंतग उड़ा रहा है। – मोहन चिड़िया उड़ा रहा है। इन दोनों वाक्यों पर ध्यान दें। पहले वाक्य में मोहन डोरी से बाँध कर पतंग उड़ा रहा है किंतु चिड़िया को डोरी से बाँध कर नहीं उड़ाया जा सकता। चिड़िया तो स्वयं उड़ती है। उसे पत्थर मारकर अथवा ताली बजाकर या शोर मचा कर उड़ाया जा सकता है। पहले वाक्य में पतंग उड़ने का काम स्वयं नहीं कर रही है। दूसरे वाक्य में चिड़िया स्वयं उड़ने का काम कर रही है। ध्यान दें पहले वाक्य में उड़ाना क्रिया सकर्मक क्रिया है क्योंकि 'पतंग' उसका कर्म है। वहाँ निर्जीव संज्ञा है। दूसरे वाक्य में 'उड़ाना' क्रिया का कर्म चिड़िया नहीं है क्योंकि वह 'सजीव' संज्ञा है। यहाँ मोहन चिड़िया को उड़ने के लिए प्रेरित कर रहा है। अत: यह प्रेरणात्मक क्रिया है। यहाँ उड़ाना मूल क्रिया नहीं है। यह तो मूल क्रिया 'उड़कर' में 'आ' प्रत्यय लगाकर बनी है। – मैं हँसा। (अकर्मक प्रयोग) – मैं बच्चों को हँसाता हूँ। (सकर्मक प्रयोग) द्वितीय वाक्य में 'हँसाना' .... क्रिया है।
28. प्रेरणार्थक	'हँसाना' शब्द हँसना (मूल क्रिया) में 'आ' प्रत्यय लगाकर बना है। अत: इसे प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं किंतु जब एक से अधिक प्रक्रियाएँ सम्पन्न होती हैं तो ऐसी दशा में द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया भी होती है; जैसे— मैं बच्चों को जोकर से हँसवाता हूँ।

यहाँ हँसवाना द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया है। प्रथम प्रेरणात्मक क्रिया में प्रेरणा (अर्थात् दूसरे से काम करवाना) स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देता; जैसे— मैं बच्चों को हँसाता हूँ। (अर्थात् बच्चों को हँसने की प्रेरणा देता हूँ) किंतु द्वितीय प्रेरणार्थक वाक्य में 'हँसवाना' शब्द से जोकर की स्थिति स्पष्ट पता लगती है।

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया	द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया
हँसना	हँसाना	हँसवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना

(रिक्त स्थान की पूर्ति करें)

---

29. पिलवाना

- वह प्रतिदिन संध्या को मेरे घर आ जाया करता है।
- मैं कभी-कभी चित्र बना लिया करता हूँ।

उपरोक्त दोनों वाक्यों की संयुक्त क्रियाओं की रचना एकाधिक सहायक क्रियाओं के योग से हुई है। आ+जाना=आना जाना शब्दों के संयोग से बना है। यहाँ पहली क्रिया आना ही पूरे पद का अर्थ प्रदान करती है, दूसरी क्रिया जाना गौण है। आ जाया का अर्थ 'आना' ही है, जो संयुक्त क्रिया की पहली क्रिया के द्वारा बताया जा रहा है। स्पष्ट है कि संयुक्त क्रिया एकाधिक क्रिया पद के योग से बनती है।

यहाँ संयुक्त क्रिया में पहली क्रिया मुख्य है। दूसरी .... क्रिया के रूप में मुख्य क्रिया में विशेषता ला रही है।

---

30. सहायक

मैं प्राय: आ जाया करता हूँ।

यहाँ मुख्य व्यापार (कार्य) आना है। क्रिया-पदों में यही सर्वप्रथम आया है। अत: मुख्य क्रिया के निर्धारण में प्रमुख चार बातें होती हैं—

- कर्त्ता या कर्म के मुख्य व्यापार (कार्य) को देखकर
- क्रियापद के अर्थ को देखकर
- हुआ क्या है? प्रश्न करके
- प्राय: मुख्य क्रिया पहले आती है, शेष सहायक क्रियाएँ बाद में।

उपरोक्त वाक्य में मुख्य व्यापार है 'आना'। प्रश्न करके कौन सी क्रिया हुई? उत्तर है आने की। 'आ' शेष क्रिया पदों में सर्वप्रथम आया है।

इस प्रकार इस वाक्य में--------- मुख्य क्रिया है।

---

31. आ

क्रिया पर लिंग, वचन तथा कारक का प्रभाव पड़ता है।

जैसे— कुत्ते ने रोटी खाई।
कुत्ता रोटी खाता है।

- पहले वाक्य में कर्ता (कुत्ते) के साथ विभक्ति लगी है। इसलिए क्रिया कर्म कारक (रोटी) के अनुसार स्त्रीलिंग एक वचन है।

	- दूसरे वाक्य में कर्त्ता (कुत्ता) विभक्ति रहित है, इसलिए क्रिया कर्ता के अनुरूप पुल्लिंग एक वचन है। उपरोक्त दोनों वाक्यों में लिंग तथा वचन में परिवर्तन का मुख्य कारण................ चिह्न है।
32. विभक्ति	क्रिया के भेद दो आधारों पर किए जाते हैं— 1. कर्म के आधार पर (क) अकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया 2. प्रयोग के आधार पर (क) संयुक्त क्रिया (ख) नाम धातु क्रिया (ग) पूर्वकालिक क्रिया (घ) प्रेरणार्थक क्रिया इन सबके भेदों को हमने जान लिया। क्रिया के प्रयोग के आधार पर........................ भेद है।
33. चार	- श्याम भागा। - श्याम आया। - श्याम भाग आया। यहाँ पहले तथा दूसरे वाक्य में एक-एक क्रिया है। भागा और आया किंतु तीसरे वाक्य में भाग+आया दो क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं..................... क्रिया कहते हैं।
34. संयुक्त	संयुक्त क्रिया में एक मुख्य क्रिया होती है, एक सहायक क्रिया। यह सहायक क्रिया ही मुख्य क्रिया के अर्थ में नवीनता या विस्तार लाती है। यह सहायक क्रिया ही रंजक क्रिया कहलाती है। यह अपने मूल अर्थ की द्योतक नहीं होती। - बालक चिल्ला उठा। - बालक चिल्ला उठा। (यहाँ उठा मूल अर्थ की द्योतक नहीं है।) पहला वाक्य संयुक्त क्रिया का उदाहरण है और दूसरा वाक्य .... क्रिया का।
35. रंजक	(क) (ख) (संज्ञा) लालच = ललचाना (संज्ञा) लूट = लूटना (सर्वनाम) अपना = अपनाना (विशेषण) चमक = चमकाना उपरोक्त शब्दों में 'क' वर्ग के शब्द संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण हैं। इनमें

	'आना' प्रत्यय लगाकर बनी क्रियाओं को............................ क्रिया कहते हैं।
36. नामधातु	खेलकूद कर जवाब दिया खाते ही चल पड़ी इनमें- पूर्वकालिक क्रिया है।
37. खेलकूदकर खाते ही	चलाना चलवाना लिखाना लिखवाना उपरोक्त शब्दों में से— प्रथम प्रेरणार्थक तथा— द्वितीय .... प्रेरणार्थक क्रिया है।
38. प्रथम- चलाना, लिखाना द्वितीय-चलवाना लिखवाना	निम्नलिखित वाक्यों में क्रियापद रेखांकित कीजिए। 1. दुकानें खुल चुकी है। 2. वह मेहनत से पढ़ रहा है।
39. खुल चुकी पढ़ रहा	आपने जान लिया है कि क्रिया-पदबंध में मुख्य क्रिया को छोड़कर जो अंश शेष रहता है, उसे सहायक क्रिया कहते हैं। सहायक क्रिया का निर्माण काल, वृत्ति, पक्ष और वाच्य के द्वारा होता है। काल की पहचान- 'है', 'था' और 'गा' काल-सूचक चिह्नों से होती है। किसी काल की कालावधि को पक्ष कहते हैं। वृत्ति कर्त्ता के कार्य करने की मानसिक स्थिति को बताती है। क्रिया के विधान में कर्त्ता, कर्म अथवा भाव की प्रधानता को वाच्य कहते हैं। इस प्रकार जिस वाक्य में मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रिया का प्रयोग होता है, उसमें इन चार में से कोई न कोई रूप अवश्य रहता है। सहायक क्रिया के......................... भेद होते हैं।
40. चार	प्राय: हम काल और समय में अंतर नहीं कर पाते हैं। ध्यान रहे, काल और समय एक नहीं है। समय एक भौतिक इकाई है और काल व्याकरणिक इकाई। समय निरंतर प्रवाहित रहता है। कोई भी क्रिया समय में ही घटित होती है। वही उसका वर्तमान काल कहलाता है। इसके पूर्व जो घटित होता है, वह भूतकाल तथा जो भविष्य में घटित होगा, वह भविष्यकाल कहलाएगा। इसके लिए 'है', 'था' तथा 'गा' काल सूचक चिह्नों का प्रयोग होता है। इस प्रकार काल के मुख्य रूप से........... भेद माने गए हैं।
41. तीन	- बसंत ऋतु आने पर कोयल कूकती हैं।

- कृष्ण ने कंस का वध किया था।
- शायद वह कल आएगा।
उपरोक्त वाक्यों में काल के भेद (भूत/भविष्य/वर्तमान) क्रम से आए हैं। (हाँ/नहीं)

42. नहीं — पक्ष द्वारा क्रिया की कालावधि का बोध होता है। **वृत्ति** द्वारा क्रिया के प्रति कर्त्ता के मानसिक प्रयोजन का पता चलता है। इसे यूँ समझें—

- मैं कक्षा पढ़ाता था।
- आप कक्षा पढ़ा सकते हैं।

पहले वाक्य से क्रिया की कालावधि का बोध हो रहा है कि क्रिया नित्य होती थी; और दूसरे वाक्य से कर्त्ता के सामर्थ्य का बोध होता है। यह सामर्थ्य बोध उसकी मानसिक स्थिति का द्योतक है, अत: प्रश्न.............. से जुड़ा है, जबकि वृत्ति मानसिक स्थिति से जुड़ी है।

43. कालावधि — प्रत्येक कार्य किसी कालावधि में पूर्ण होता है। कार्य आरंभ से लेकर पूर्णता तक जिस क्रिया की प्रक्रिया का बोध होता है, उसे पक्ष कहते हैं। यह प्रक्रिया किसी कार्य के आरंभ, सातत्य, नित्यता, आवृत्ति और अभ्यास और पूर्णता आदि की सूचक है। अत: पक्ष में इन्हीं घटकों का अध्ययन किया जाता है; जैसे—

- मैंने गीता पढ़ ली। (पूर्णता)।
- अब वह गीता पढ़ने लगा है। (आरंभ)।
- वह गीता पढ़ रहा है। (सातत्य)।
- सूरज पश्चिम में अस्त होता है। (नित्यता)।
- अब वह गीता प्रतिदिन पढ़ता है। (आवृत्ति)।
- अब वह प्रात: उठकर गीता के श्लोक याद करता है। (अभ्यास)।

इन उदारहणों में कर्त्ता की छह प्रक्रियाओं का ज्ञान हो रहा है। ये सभी प्रक्रियाएँ कालावधि की सूचक हैं। अत: जिससे क्रिया की प्रक्रिया सम्पन्न होने की कालावधि का बोध होता है। उसे......................... कहते हैं।

44. पक्ष — क्रिया की जिस स्थिति से वक्ता या लेखक की मन:स्थिति का ज्ञान हो, उसे वृत्ति कहते हैं। वृत्ति प्राय: सात प्रकार से प्रकट होती है। आज्ञा, इच्छा, निश्चय, संभावना, प्रश्न, संकेत और सामर्थ्य- प्राय: ये वृत्तियाँ ही व्याकरण के घटक के रूप में अध्ययन की जाती हैं-

1. तुम घर जाओ। (आज्ञा)।
2. ईश्वर सबका कल्याण करे। (इच्छा)।
3. अब मैं कभी दिल्ली नहीं जाऊँगा। (निश्चय)
4. शायद, कल वर्षा हो। (संभावना)

5. अब क्या होगा? (प्रश्न)
6. पानी बरसेगा, तो खूब फसल होगी। (संकेत)
7. वह कक्षा में पढ़ा सकता है। (सामर्थ्य)
इन उदाहरणों से कर्त्ता की मन:स्थिति की ठीक से पहचान होती है। अत: क्रिया के जिस रूप से मन:स्थिति का ज्ञान हो, उसे...................... कहते हैं।

45. वृत्ति
लड़का दूध पीता है।
लड़के के द्वारा दूध पिया जा रहा है।
प्रथम वाक्य से लड़का (कर्त्ता) दूध पीता है; का बोध होता है; तथा द्वितीय वाक्य से दूध (कर्म) का बोध होता है। कहने के ये दो प्रकार हुए- एक कर्त्ता को प्रधानता देकर, तथा दूसरे कर्म को प्रधानता देकर। प्रथम कर्तृवाच्य का उदाहरण है; द्वितीय कर्म वाच्य का।
नानी द्वारा कहानी सुनाई जा रही है।
यह वाक्य............... वाच्य का उदाहरण है।

46. कर्म वाच्य
बच्चे से दूध पिया नहीं जाता।
बच्चों से दूध पिया नहीं जाता।
यहाँ दोनों वाक्यों में कर्त्ता तथा कर्म को प्रधानता देकर क्रिया नहीं बदली है। एक वचन तथा बहुवचन (कर्त्ता) में भी क्रिया अपरिवर्तित है। अत: जिसमें कर्त्ता तथा कर्म दोनों में क्रिया नहीं बदलती, वह भाव वाच्य वाक्य होता है। भाव वाच्य में क्रिया सदैव अकर्मक होती है; जैसे—
उनसे अब चला नहीं जाता।
यह वाक्य .... वाच्य का उदाहरण है।

47. भाव वाच्य
वाक्य में क्रिया को करने वाली संज्ञा कर्त्ता कही जाती है। कर्त्ता कारक से जुड़ा परसर्ग 'ने' है; जैसे—
- बच्चे ने पतंग उड़ाई।
इस वाक्य में बच्चा (कर्त्ता) के साथ परसर्ग 'ने' लगा है। किंतु कर्त्ता कारक का प्रयोग परसर्ग रहित स्थिति में भी होता है, जिसे परसर्ग-शून्य कहा जाता है।
जैसे— - बच्चा पतंग उड़ा रहा है।
जब कर्म भी परसर्ग शून्य होता है, और कर्त्ता के साथ 'ने' परसर्ग का प्रयोग होता है, तो क्रिया सकर्मक होती है; जैसे— बच्चा गाना गा रहा है।
यहाँ 'गाना' (संज्ञा-कर्म) है, जो क्रिया के 'क्या?' के उत्तर के निर्जीव संज्ञा के रूप में प्राप्त है। इसको प्रत्यक्ष कर्म कहते हैं।
- श्याम, राम को पुस्तक देता है। (सकर्मक क्रिया)
इस वाक्य को 'ने' परसर्ग का प्रयोग करते हुए बदलिए।

48. श्याम ने राम को पुस्तक दी

- बच्चे, मैदान, फुटबाल
- देव, रोटी, खाना

'ने' परसर्ग का प्रयोग करते हुए दूसरा वाक्य बनाइए; जैसे- बच्चे ने मैदान में फुटबाल खेली। (प्रथम वाक्य)

49. देव ने रोटी खाई

- बच्चे खेल रहे हैं।
- वहाँ खेलते हुए बच्चे बहुत खुश हैं।

पहले वाक्य में क्रिया वाक्य के अंत में आकर वाक्य को समाप्त कर रही है। दूसरे वाक्य में क्रिया वाक्य को समाप्त नहीं कर रही है। इस प्रकार की क्रिया के रूप को............ क्रिया कहा जाता है।

50. असमापिका

यदि कर्त्ता के साथ 'ने' परसर्ग है, और कर्म के साथ भी परसर्ग जुड़ा है, तो क्रिया सदैव अन्य पुरुष, पुल्लिंग एवं एक वचन में होती है; जैसे—
राम ने रावण को मारा।
क्या निम्नलिखित वाक्य में कर्त्ता के साथ 'ने' का प्रयोग हो सकता है।
वह विद्यालय जाता है। (हाँ/नहीं)

51. नहीं

यदि अकर्मक क्रिया के साथ 'ने' का प्रयोग करना हो तो क्रिया को सकर्मक बनाना पड़ता है; जैसे— - राम तेजी से दौड़ा। (अकर्मक क्रिया)
- राम ने तेजी से दौड़ लगाई। (सकर्मक क्रिया)

क्या निम्नलिखित वाक्य को सकर्मक क्रिया लगाकर बदला जा सकता है।
बच्चे लड़े।
(हाँ/नहीं)

52. हाँ

कर्त्ता के साथ 'ने' लगने पर सकर्मक क्रिया भूतकाल में बदल जाती है, चाहे वह किसी भी काल में हो; जैसे—
- बच्चों ने लड़ाई की।

इस वाक्य का 'ने' परसर्ग हटाकर प्रयोग कीजिए।

53. बच्चे लड़ाई कर रहे हैं

जहाँ वाक्य में कर्त्ता कारक के साथ 'ने' का प्रयोग होता है, वहाँ प्रेरणार्थक क्रियाएँ भूतकालिक होती हैं।
- बच्चा पतंग उड़ा रहा है।
- उसने पतंग उड़ाई।

निम्नलिखित वाक्य में क्रिया के साथ उचित कर्त्ता का प्रयोग कीजिए.................
माली से फूल तुड़वाए।

54. मालिक ने

कर्म वाच्य की क्रिया को 'ने' परसर्ग का प्रयोग करके कर्तृ वाच्य में बदला जा सकता है; जैसे—
- राम द्वारा गिलास तोड़ा गया। (कर्म वाच्य)
- राम ने गिलास तोड़ दिया। (कर्तृ वाच्य)

निम्नलिखित वाक्य को 'ने' परसर्ग का प्रयोग करके कर्तृवाच्य में बदलिए
.................सीता द्वारा कार चलाई गई।

55. सीता ने कार चलाई

हिंदी में कर्म वाच्य का प्रयोग अधिकता अधिकार, असमर्थता या कानून की भाषा में किया जाता है; जैसे—

- अपराधी को पेश किया जाए। (अधिकार)
- आज देर तक नहीं पढ़ा जा सकेगा। (असमर्थता)
- अच्छे कर्मचारियों को सरकार द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा।(कानून/कार्यालय की भाषा)

निम्नलिखित वाक्य में प्रयुक्त वाच्य का नाम बताइए-
अब तो आम नहीं खाया जाता। ....

56. कर्म वाच्य

भाव वाच्य का प्रयोग निषेध के अर्थ में अथवा अनुमति प्राप्त करने के लिए किया जाता है; जैसे—

- अब तो मुझसे चला भी नहीं जा रहा है। (निषेध)
- आज घूमने चला जाए।

निम्नलिखित वाक्य में प्रयुक्त वाच्य का नाम बनाइए-
अब तो मुझसे हँसा भी नहीं जाता। ....

57. भाव वाच्य

इस प्रकार वाच्य तीन प्रकार से बनाए जाते हैं-
1. कर्तृ वाच्य, 2. कर्म वाच्य, 3. भाव वाच्य
वाच्य परिवर्तन............ प्रकार से किया जा सकता है।

58. चार

दु:ख = दुखाना
अपना = अपनाना
गरम = गरमाना

दु:ख (संज्ञा), अपना (सर्वनाम), गरम (विशेषण) है; तथा दुखाना, अपनाना, गरमाना 'नामधातु' क्रिया। इस प्रकार नाम धातु क्रिया तीन प्रकार से बनाई जाती है।

निम्नलिखित वाक्य को नाम धातु क्रिया का प्रयोग करके पूरा कीजिए-
मेरी बात को............ की कोशिश मत करो। (झूठ)

59. झुठलाने

किसी क्रिया से प्रत्यय जुड़ने पर क्रिया का नया रूप बने तो उसे कृदंत क्रिया कहते हैं; जैसे—
वह आगे बढ़ता गया। बढ़+ता (प्रत्यय)

निम्नलिखित में कृदंत क्रिया का प्रयोग करके पूरा करें—
उसने घड़े में पानी..............। भर+आ (प्रत्यय)

60. भरा

धातु क्रिया में लगने वाले प्रत्ययों को 'कृत' प्रत्यय कहते हैं। कृत प्रत्ययों से बनने वाले क्रियापद कृदंत कहलाते हैं। (प्रश्न नहीं)

03

परिशिष्ट

निदानात्मक-परीक्षण

कक्षा-नवम् **विषय-हिंदी**

प्रकरण- संख्यावाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण।

निर्देश- 1. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

2. प्रत्येक प्रश्न स्वतंत्र है, अत: प्रत्येक प्रश्न पढ़ते जाइए और सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाते जाइए।

प्रश्न-1 निम्नांकित में से संख्यावाचक विशेषण की पूर्ण परिभाषा जिस वाक्य से स्पष्ट हो, उसके आगे (✓) सही का निशान लगाइए-

(क) संख्यावाचक विशेषण में संख्या प्रधान होती है।

(ख) जिन शब्दों से किसी संज्ञा/सर्वनाम की निश्चित संख्या मिलती है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

(ग) जिन शब्दों से किसी संज्ञा/सर्वनाम की अनिश्चित संख्या मिलती है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

(घ) विशेष्य (संज्ञा/सर्वनाम) की संख्या से संबंधित विशेषता बताने वाले विशेषण 'संख्या वाचक' विशेषण होते हैं।

प्रश्न-2 निम्नलिखित कथनों में सत्य कथन के आगे (✓) चिह्न लगाइए-

(क) विशेष्य की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

(ख) संख्या वाचक सर्वनाम से पूर्ण संख्या का बोध होता है।

(ग) संख्या वाचक सर्वनाम से संख्या की क्रम वाचकता का बोध होता है।

(घ) 'प्रत्येक' बोधक शब्द संख्यावाचक विशेषण नहीं होता।

(ङ) संख्यावाचक विशेषण से अगणनीय संख्याओं का बोध होता है।

(च) संख्यावाचक संख्याएँ अनिश्चित संख्याएँ भी होती है।

(छ) संख्यावाचक विशेषण प्राय: जातिवाचक संज्ञाएँ होती है।

प्रश्न-3 निम्नलिखित संख्याओं में से संख्यावाचक विशेषण वाले पदों को रेखांकित करो-

(क) इस कक्षा में पन्द्रह छात्र हैं।

(ख) मेरा भाई कक्षा चार में पढ़ रहा है।

(ग) उसने परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

(घ) कुछ बच्चे चंदा माँगने आए हैं।

(ङ) रैली में हजारों लोग शामिल हुए थे।

(च) कुछ दूध मेरे लिए छोड़ देना।

प्रश्न–4 निम्नलिखित शब्दों में से जो शब्द संख्यावाचक विशेषण का हो, उसको गोला लगायें–

एक तोला सोना, दस मीटर कपड़ा, पचास एक संतरे, सैकड़ों दुकानें, कुछ दूध, थोड़ा घी, पाँच किलो दूध, एक किलो घी, अधिक केले, थोड़े बच्चे, तनिक अचार, जरा सा पापड़।

प्रश्न–5 संख्या वाचक विशेषण के भेदों के नाम उदाहरण सहित लिखिए।

प्रश्न–6 निम्नांकित उदाहरणों के आगे संख्यावाचक विशेषण के भेदों के नाम लिखिए–

(क)	चार	(ङ)	पाँच गुना
(ख)	तीसरा	(च)	कुछ
(ग)	दर्जन	(छ)	सब
(घ)	थोड़े	(ज)	बहुत

प्रश्न–7 संख्यावाचक विशेषण की परिभाषा लिखिए।

प्रश्न–8 निश्चित संख्यावाचक विशेषण की पहचान बताइए।

प्रश्न–9 निश्चित संख्यावाचक विशेषण और अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण में मुख्य अंतर क्या है?

प्रश्न–10 दो वाक्य लिखो, जिससे संख्या वाचक विशेषण के भेद स्पष्ट हों।

प्रश्न–11 जातिवाचक संज्ञाओं में कौन से वचन का प्रयोग किया जाता है?

प्रश्न–12 आवृत्ति बोधक संख्यावाचक विशेषण–विशेषण के किस भेद के अंतर्गत आता है?

प्रश्न–13 संख्यावाचक विशेषण में अस्पष्ट अनुमान किस भेद के अंतर्गत आता है?

प्रश्न–14 संख्यावाचक विशेषण तथा परिमाणवाचक विशेषण में क्या अंतर है?

प्रश्न–15 संख्यावाचक विशेषण तथा परिमाणवाचक विशेषण के दो–दो उदाहरण निम्नलिखित भेदों के अंतर्गत लिखिए–

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण (क) निश्चित परिमाण वाचक विशेषण

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण (ख) अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण

उत्तर तालिका–

1. (घ) 2. (क)(ख)(ग)(च)(छ)
3. (क) पन्द्रह छात्र, कक्षा चार, प्रथम स्थान, कुछ बच्चे, हजारों लोग।
4. पचास एक संतरे, सैकड़ों दुकानें, अधिक केले, थोड़े बच्चे।
5. निश्चित संख्यावाचक विशेषण, अनिश्चित वाचक संख्या वाचक विशेषण।
6. निश्चित– चार, तीसरा, दर्जन, पाँच गुना।
   अनिश्चित– थोड़े, कुछ, सब, बहुत।

7. 1 (घ) के अनुसार।
8. गणनी।
9. निश्चित संख्यावाचक विशेषण गणनीय होते हैं जबकि अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण अगणीय होते हैं।
10. (क) दो लड़के खेल रहे हैं। (ख) कुछ लड़के खेल रहे हैं।
11. बहुवचन।
12. निश्चित संख्यावाचक
13. अनिश्चित संख्यावाचक
14. संख्यावाचक विशेषण गणनीय होते हैं तथा परिमाणवाचक विशेषण मात्रा बोधक होते हैं। वे प्राय: द्रव्यवाचक संज्ञाएँ होती हैं, जिनका माप-तौल किया जाता है।

15. विशेषण	निश्चयवाचक	अनिश्चयवाचक
संख्यावाचक	दो लोग अभी-अभी आये हैं	चाय में कुछ शक्कर और चाहिए
परिमाणवाचक	मैंने दो किलो शक्कर खरीद ली है।	इतना क्यों पढ़ती हो?

प्रश्न पत्र विश्लेषण

प्रश्न संख्या	विषय	उद्देश्य	अपेक्षित परिवर्तन
1.	परिभाषा	ज्ञान/प्रत्यास्मरण	अंतर समझकर तुलना करेगा।
2.	परिभाषा	ज्ञान/अर्थग्रहण	महत्वपूर्ण बिन्दुओं को समझेगा।
3.	उदाहरण	प्रत्यभिज्ञान/अर्थ गहन	वाक्य में संख्यावाचक विशेषण का प्रत्यभिज्ञान करेगा।
4.	उदाहरण	प्रत्यभिज्ञान	संख्यावाचक विशेषण के उदाहरणों को पहचानेगा।
5.	परिभाषा/भेद	ज्ञानात्मक प्रत्यास्मरण	प्रत्यास्मरण कर भेद व उदाहरण लिख सकेगा।
6.	विशेषण/भेद	प्रत्यभिज्ञान (पहचान)	संख्यावाचक विशेषण के भेदों के उदाहरणों का प्रत्यभिज्ञान करेगा।
7.	परिभाषा	ज्ञानात्मक	संख्यावाचक विशेषण की पूरी परिभाषा लिख सकेगा।
8.	परिभाषा	प्रत्यास्मरण	संख्यावाचक विशेषण के भेदों की विशेषता को समझ सकेगा।
9.	संख्यावाचक के भेदों का अंतर	अर्थग्रहण	प्रत्यास्मरण-दोनों भेदों में अंतर समझ सकेगा।
10.	उदाहरण	अर्थग्रहण/अभिव्यक्ति	संख्यावाचक विशेषण के दोनों उदाहरण दे सकेगा।
11.	जातिवाचक	संज्ञा (प्रत्यास्मरण)	विशेषता का प्रत्यास्मरण करेगा।
12.	भेद	प्रत्यास्मरण	विशेषता को समझेगा।
13.	अनिश्चित संख्या वाचक	प्रत्यास्मरण	पहचान कर सकेगा।

14.	विशेषणों में अंतर	अर्थग्रहण	अंतर कर सकेगा।
15.	उदाहरण	ज्ञान/अभिव्यक्ति	भेदों के उदाहरण दे सकेगा।

विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष

इस प्रश्नपत्र में संख्यावाचक विशेषण और उसके भेदों को परिमाण वाचक विशेषण से अंतर को केन्द्रित कर ज्ञान, उद्देश्य, अर्थग्रहण और अभिव्यक्ति पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। परीक्षण के बाद छात्रों की कमजोरी किस स्तर पर है, उसे व्यक्तिगत रूप से जानकर प्रत्येक छात्र का उपचारात्मक शिक्षण कराया जाए। उपचारात्मक शिक्षण के बाद पुनः निदानात्मक परीक्षण होना चाहिए। सभी प्रश्न हल करने पर ही अगला प्रकरण प्रारंभ करें।

यह प्रश्न पत्र केवल प्रादर्श रूप में है। शिक्षक स्वयं अपने स्तर पर इस प्रकार प्रश्न पत्र तैयार कर सकते हैं।

इसी प्रकार उपचारात्मक शिक्षण हेतु अभ्यास चारिका का एक प्रादर्श यहाँ दिया जा रहा है। शिक्षक चाहे, तो इस आधार पर अन्य अभ्यास चारिकाएँ बना सकता है।

अभ्यास चारिका

कारण– छात्रों को संख्यात्मक विशेषण का पर्याप्त बोध नहीं है।

उपचार– अध्यापक संख्यावाचक विशेषण की परिभाषा श्यामपट्ट पर लिखेगा, तथा तीन बार छात्रों से मौनवाचन करने को कहेगा। संख्यावाचक विशेषण के दोनों भेदों को लिखकर उनके अंतर को स्पष्ट करेगा। आवश्यकता हुई तो उन्हें लिखने को कहेगा। भेद स्पष्ट करने के लिए मुख्य बिन्दुओं को श्याम पट्ट पर लिखेगा। उसे भी उन्हें लिखने को कहेगा।

मुख्य बिन्दु–

निश्चित संख्यावाचक विशेषण– अंक बोधक

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण– कुछ, सब, थोड़ा, बहुत आदि शब्द

हिंदी वाक्य-रचना और विधान

01

वाक्य परिचय

क. वाक्य किसे कहते हैं?

एक विद्वान अपने विचारों को बड़े ही शोधपरक रूप में प्रस्तुत करते थे। एक समय उनसे भेंट हुई। वे कहने लगे-(''अक्षर, शब्द और वाक्य: ये तीनों ही ज्ञान के भौतिक रूप हैं, जिसमें अपने या समाज के लिए ज्ञान सुरक्षित रहता है।

गणपत्यर्थ शीर्ष के अनुसार लिपि का प्रारंभ श्री गणेश ने किया था जिसका उल्लेख ऋग्वेद (2/23,10/155) में मिलता है। यह ब्रह्मा के निर्देश से हुआ था। उसके बाद गुरु बृहस्पति ने पदक्रम से उसकी व्याख्या की।

प्रत्येक शब्द के लिए अलग-अलग चिह्नों की व्यवस्था अभी भी चीन और जापान की लिपि पद्धति में है। गुरु शुक्राचार्य ने इसके सुधार के लिए इन्द्र से कहा। इन्द्र ने वायु से मिलकर शब्दों को अक्षरों में विभाजित किया, और प्रकृति प्रत्यय द्वारा शब्द निर्माण में विभाजित किया। वाक्‌य के उच्चारण पर आधारित होने के कारण यह व्याकरण कहा गया।)

वे अपनी बात शायद और भी आगे बढ़ाने को उत्सुक थे किन्तु मैंने उनसे अनुरोध किया- ''आपने बहुत अच्छी जानकारी दी है। इसके लिए आपको बधाई देता हूँ। मैं वाक्य पर आपके विचार सुनकर प्रसन्न हूँ किन्तु एक बात और स्पष्ट करें। शब्दकोश में वाक् शब्द का अर्थ वाणी, सरस्वती तथा बोलने की इंद्रिय बताया गया है। अत: इस पर भी थोड़ा प्रकाश डालें।''

उन्होंने बताया- (''शब्दों का भाव या रस सरस्वती है। अत: वाक्य में भाव और रस भी होना चाहिए। जिस वाक्य में जितना रस होगा, वह रचना उतनी ही सशक्त होगी।) राम चरितमानस में इसीलिए गणेश तथा सरस्वती दोनों की वंदना करते हुए संत तुलसी ने सर्वप्रथम यह दोहा कहा है-

वर्णानामर्थसंघनां रसानां छन्दसामपि।
मंगालानांच कर्त्तारौ, वन्दे वाणी विनायकौ।।

(रामचरित मानस का प्रथम श्लोक)

अर्थात् भाषा में वर्ण तथा अर्थों का संघ विशेष है, तथा भाव रस भी है जिसकी माप छन्द से होती है।''

उनके इन विचारों को सुनकर मैं उनके ज्ञान से बड़ा प्रभावित हुआ, सोचने लगा, उन

सज्जन ने अपनी बात का प्रारंभ अक्षर, शब्द और वाक्य से किया था, और सचमुच शब्दों का अस्तित्व वाक्य को लेकर ही है। हम वाक्य में ही सोचते हैं, और वाक्य में ही अपने विचार बोलकर या लिखकर प्रकाशित करते हैं। श्रोता उन वाक्यों को ही धैर्यपूर्वक सुनता है, जिनमें सरसता हो। अतः सार्थक शब्दों का वह समूह जो किसी भाव या विचार को पूर्णरूप से व्यक्त करता है, वाक्य कहलाता है।

ख. लघुवाक्य

यहाँ एक बात पर हमारा ध्यान अवश्य जाना चाहिए कि आवश्यक नहीं कि अपनी बात किसी एक वाक्य में कही जाए। बात को कहने में संदर्भ भी अपना महत्व रखता है। जैसा कि निम्नलिखित संवाद से स्पष्ट होता है-

क	**ख**
पति-सुनो!	(तुम मेरी बात सुनो)
पत्नि- हूँ।	(मैं आपकी बात सुन रही हूँ)
पति- चाय बनी?	(क्या चाय बन गई?)
पत्नि- हाँ।	(हाँ, चाय बन गई है।)
पति- अखबार पढ़ लूँ?	(तो, मैं अखबार पढ़ लूँ?)
पत्नि- पढ़ लीजिए।	(हाँ, पढ़ लीजिए)

उपरोक्त वाक्यों से स्पष्ट है कि वाक्य का सम्बन्ध संदर्भ से होता है। संदर्भ से परिचित श्रोता-वक्ता द्वारा उच्चरित एक ध्वनि से भी पूरे मन्तव्य को समझ सकता है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से ऐसे वाक्य लघुवाक्य अथवा **प्रच्छन्न** वाक्य कहलाते हैं।

प्रच्छन्न वाक्य का अर्थ है- श्रोता को समझ का प्रमाण मानकर छोड़ा गया अंश अर्थात् न बोले जाने वाले अंश को छोड़कर भी श्रोता जिसे समझ सके, वह अंश। इन्हें लघु वाक्य भी कहते हैं।

लघु वाक्य के प्रकार-

1. सामाजिक सम्प्रेषण में प्रयुक्त लघुवाक्य- सामाजिक सम्प्रेषण में प्रयुक्त लघु वाक्यों का प्रयोग सामाजिक व्यवहार में सर्वाधिक रूप से होता है; जैसे-

क. अभिवादन सूचक- नमस्कार आदि।

ख. संबोधन सूचक- जी, महोदय आदि।

ग. कृतज्ञता ज्ञापन- धन्यवाद, क्षमा करें, कष्ट तो होगा, पर... आदि।

घ. सहमति/असहमति सूचक-जी हाँ, अवश्य, नहीं, जी नहीं, ठीक आदि।

ङ. ध्यानाकर्षण सूचक- सुनिए, अजी सुनते हो, क्योंजी आदि

2. उद्गारात्मक लघुवाक्य- अनेक स्थलों पर वक्ता अपने उद्गार क्रियापदों का लोप

करते हुए भी व्यक्त करता है। विज्ञापनों तथा समाचारपत्रों के शीर्षकों में इस प्रकार के वाक्यों का प्रयोग किया जाता है; जैसे- सुंदर, सस्ती, टिकाऊ। शीर्षक के लिए इस प्रकार के वाक्यों का प्रयोग किया जाता है।

- अति सुन्दर।
- खाओ तो जानो।
- घाटी में विस्फोट दस मरे।

ग. प्रोक्ति

वर्तमान में कतिपय भाषाविदों ने अपनी मान्यता को आगे बढ़ाते हुए अभिमत दिया है कि वाक्य अकेले विचारों को संवहन नहीं करते अपितु किसी विचार शृंखला से सम्बद्ध कई वाक्य विचारों का प्रकटीकरण करते हैं। इसे उन्होंने **प्रोक्ति** नाम दिया है; जैसे- (क) 'तुम्हारे पिताजी घायल अवस्था में सड़क पर पड़े हैं। यह वाक्य यदि हम व्याकरण की पुस्तक में उदाहरण के रूप में पढ़ेंगे, तो श्रोता पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होगी किन्तु यदि वाक्य किसी वक्ता के मुँह से संदेश के रूप में हम सुनेंगे तो हम पर प्रतिक्रिया होगी।

संदेश- संप्रेक्षण (प्रोक्ति) की दृष्टि से वाक्य वक्ता के पूर्ण मंतव्य या विचार को श्रोता तक पहुँचाता है। एक या एक से अधिक वाक्यों द्वारा भी संदेशना की यह इकाई एक शब्द द्वारा अथवा एक से अनेक वाक्यों द्वारा भी संप्रेषित हो सकती है।

जैसे- एक शब्द द्वारा - 'आओ।'

एक वाक्य द्वारा- यह पुस्तक ले आओ।

एक से अधिक वाक्य द्वारा भी- 'देखो! वहाँ आलमारी में एक पुस्तक रखी है। अपने साथ उसे ले जाओ।'

इस प्रकार स्पष्ट है कि संरचनात्मक दृष्टि से-

भाषा की लघुतम इकाई- ध्वनि है।

भाषा की अर्थवान इकाई- शब्द है।

भाषा की भावाभिव्यक्ति की इकाई- वाक्य है।

संप्रेषण की दृष्टि से मूल इकाई -प्रोक्ति है।

घ. शब्द और पद

वाक्य संरचना की दृष्टि से ध्वनि तथा शब्द का अध्ययन अपेक्षित नहीं है किन्तु जब कोई शब्द व्याकरणिक दृष्टि से वाक्य में प्रयुक्त होता है, तो उसे 'पद' कहा जाता है। इस प्रकार से जितने प्रकार के शब्द होते हैं, उतने ही प्रकार के पद होते हैं। संज्ञा शब्द यदि वाक्य में आता है, तो उसे संज्ञापद कहेंगे। क्रिया शब्द को क्रिया पद। शब्द और पद के इस अन्तर को समझने में दो बातें विशेष ध्यान देने योग्य हैं-

1. पद बनने से पूर्व शब्द में कोई-न कोई प्रत्यय अवश्य जुड़ा रहता है।
2. वाक्य में प्रत्येक 'पद' कोई -न कोई व्याकरणीय कार्य करता है।

अत: हम यह भी कह सकते हैं कि वाक्य का दूसरा नाम पद-समूह है।

ङ वाक्यांश (पदबन्ध) एवं उपवाक्य

दो या दो से अधिक पदों के सार्थक योग को **वाक्यांश** (पद बंध) कहते हैं। यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है कि उपवाक्य भी पद-बंध की तरह पदों का समूह है किन्तु दोनों में अन्तर स्पष्ट है। उपवाक्य में क्रिया रहती है जबकि पद-बन्ध में क्रिया का अभाव रहता है। इन दोनों पर अध्याय 3 में विस्तार से चर्चा की गई है। इस प्रकार एक शब्द, एक वाक्य, एक से अधिक वाक्यों, एक अवतरण और कभी-कभी एक पूर्ण अध्याय अथवा पुस्तक द्वारा भी अपने विचार रखे जा सकते हैं। वाक्य रचना की दृष्टि से इस प्रकार वाक्य में निम्नलिखित घटक होते हैं-

ध्वनि, वर्ण, शब्द, पद , पद-बंध, उपवाक्य, वाक्य

रोचक तथ्य

1. शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होते हैं, तो उन्हें पद कहते हैं। इस तरह वाक्य की रचना पदों से होती है।
2. लघुवाक्य, प्रोक्ति भी वाक्य हैं।

च वाक्य के गुण

एक अंग्रेज भारत भ्रमण को आया। उसने जिज्ञासावश जहाँ-जहाँ भी भ्रमण किया, वहाँ-वहाँ से भारत के संबंध में कुछ जानकारी एकत्रित करने का प्रयत्न किया। हिन्दी का सही-सही ज्ञान न होने से वह अपनी बात कुछ इस प्रकार रख रहा था-

1. ज्ञानार्जन करूँ लक्ष्य है मेरे जीवन का।
2. जहाँ कार खड़ी है आप चलिए वहाँ।

इन वाक्यों को सुनकर हमें सहज ही पता चलता है कि जो वाक्य वह बोल रहा था, उन वाक्यों की रचना का क्रम बिगड़ा हुआ था। उसे कहना चाहिए था-

1. मेरे जीवन का लक्ष्य है कि मैं ज्ञानार्जन करूँ।
2. आप वहाँ चलिए जहाँ कार खड़ी है।

अत: स्पष्ट है कि हम भी प्रतिदिन जिन वाक्यों का प्रयोग करते हैं, उनमें एक क्रमबद्धता रहना चाहिए। यह क्रमबद्धता व्याकरण के नियमानुसार हो तो वाक्य रचना निर्दोष मानी जाएगी।

संस्कृत आचार्यो ने वाक्य बोलते समय तीन बातों का विशेष महत्व बतलाया है: **आकांक्षा, योग्यता और क्रमबद्धता।** ये तीन तत्व वाक्य के साथ अनिवार्य तथा सहज समझे गए हैं। आजकल एक और तत्त्व वाक्य के लिए अनिवार्य समझा जाने लगा है, जिसे **सार्थकता** कहा जाता है। सार्थकता में उपरोक्त सभी तत्वों का समावेश हो जाता है। सार्थकता शब्द को वाक्य की मूलभूत अनिवार्यता माना गया है; अर्थात् वाक्य में प्रयुक्त शब्द सार्थक होने चाहिए। शेष तीन

के विषय में भी जान लें—

1. योग्यता- योग्यता का अर्थ है क्षमता अर्थात् जब वाक्य का प्रत्येक शब्द (पद) अर्थ स्पष्ट करने में सहायक हो तो समझ लेना चाहिए कि वाक्य में योग्यता स्वयं उपस्थित है। उदाहरण के लिए-'मैं दूध खाता हूँ। मोहन हलुआ पीता है।

इन दोनों वाक्यों पर विचार करें तो स्वयं स्पष्ट है कि दूध खाने की वस्तु नहीं है; और न हलुआ पीने की। यहाँ दोनों वाक्यों में शब्द प्रयुक्त होकर भी वाक्य का आशय स्पष्ट नहीं कर रहे हैं। अत: सार्थकता वाक्य की मूलभूत आवश्यकता है। इसे ही योग्यता भी कहते हैं।

2. आकांक्षा- आकांक्षा को इच्छा भी कहते हैं अर्थात् वाक्य के एक पद को सुनकर अगले पद को सुनने या जानने की स्वाभाविक उत्कंठा बनें, उसे ही आकांक्षा कहते हैं; जैसे-

1. हाथ सेंक रहा है।
2. सोमेश हाथ सेंक रहा है।
3. सोमेश अग्नि से हाथ सेंक रहा है।

यहाँ तीसरा वाक्य पूर्ण वाक्य है क्योंकि प्रथम दो वाक्यों में क्रमश: कौन, किसके बारे में क्या कह रहा है, यह जानने की आकांक्षा (इच्छा) बनी रहती है। इस प्रकार के वाक्य जिज्ञासा की पूर्ति नहीं कर पाते हैं। इस जिज्ञासा पूर्ति को ही आचार्यों ने आकांक्षा कहा है।

3. आसक्ति- वाक्य के शब्दों को बोलने अथवा लिखने में कालावरोधक नहीं होना चाहिए। एक शब्द (पद) बोलकर दूसरा शब्द (पद) कुछ समय बाद बोलने से अर्थात् रुक-रुक कर बोलने से या जल्दी-जल्दी बोलने से वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाता है इसी प्रकार लिखते समय भी अधिक दूरी बनाकर लिखना उचित नहीं हैं; जैसे-

मोहन - दूध - पीता - है।

इस वाक्य को हमें इस प्रकार लिखना चाहिए- मोहन दूध पीता है। इसे ही आसक्ति अथवा सन्निधि कहा जाता है। अत: आचार्यों ने उच्चारण एवं लेखन में शब्दों की निकटता को इस दृष्टि से विशेष महत्व दिया है।

अच्छे वाक्य में निम्नलिखित गुण होना चाहिए-

1. एक वाक्य में एक ही भाव प्रकट होना चाहिए।
2. वाक्य रचना में अधूरे वाक्यों को नहीं रखा जाना चाहिए।
3. वाक्य में पुनरुक्ति दोष नहीं होना चाहिए।
4. वाक्य में अप्रचलित शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।
5. वाक्य में व्यर्थ के तथा अस्पष्ट शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।
6. वाक्य में ध्वनि और अर्थ की संगति होना चाहिए।
7. जहाँ तहाँ मुहावरे तथा लोकोक्तियों का प्रयोग भी आवश्यकतानुसार होना चाहिए।

8. शब्दों का प्रयोग करते समय व्याकरण के नियमों का ध्यान सदैव रखना चाहिए।
9. एक शब्द, एक वाक्य, एक से अधिक वाक्यों, एक अवतरण तथा कभी-कभी एक पूर्ण अध्याय या पुस्तक द्वारा भी अपने विचार रखे जा सकते हैं।
10. भाषा संप्रेषण के रूप में 'प्रोक्ति' भी महत्वपूर्ण घटक है।
11. शब्द और पदों का वाक्य रचना में महत्वपूर्ण स्थान है।
12. पद बंध एवं उपवाक्य द्वारा भी वाक्य-रचना की जा सकती है।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर शिक्षक को निचली कक्षाओं से ही शुद्ध वाक्य रचना के लिए छात्रों के संस्कार निर्माण में जुट जाना होगा। अशुद्ध वाक्य रचना से बचने के लिए उन्हें पदक्रम, अन्विति और तत्संबंधी कारणों से परिचित कराना चाहिए।

उपबंध और उपवाक्य किस प्रकार वाक्य रचना को प्रभावी बना सकते हैं, कुशल अध्यापकों को, दृष्टांतों द्वारा, छात्रों को इनसे अवगत कराना चाहिए।

वाक्य के भेद, वाक्य रूपान्तरण, वाक्य विश्लेषण तथा वाक्य संश्लेषण किस प्रकार वाक्-पटुता में सहायक होते हैं, इसकी जानकारी छात्रों को होना चाहिए। तभी वे अपनी बात संक्षेप में कह सकेंगे। वाक्यों को अनावश्यक विस्तार में कहने से वाक्यगत ढाँचा बिगड़ जाता है; और अर्थ की अनुमति में बाधा पहुँचती है।

अवसरानुकूल वाक्य रचना करते समय वाक्य को बोझिलता से बचाया जाना चाहिए। आगे हम इन्हीं सब पहलुओं पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

रोचक तथ्य

1. वाक्य सार्थक शब्दों का व्यवस्थित रूप है।
2. वाक्य में व्यर्थ के पद या शब्द नहीं आते हैं।
3. मनुष्य के विचारों की पूर्णता को प्रकट करने करने वाले पद समूह को वाक्य कहते हैं।
4. विचारों और भावों के विकास के साथ-साथ वाक्यों के संगठन एवं विधान के विकास में भी वृद्धि होती जाती है।
5. साहित्यिक वाक्यों का अपना माधुर्य होता है। ये मन को आनन्दित करते हैं।
6. भारतीय न्याय दर्शन में वाक्य के तीन गुण बताए गए हैं- योग्यता, आंकाक्षा और सन्निधि।
7. योग्यता से आशय-अर्थ संगति से है।
8. आकांक्षाओ से आशय वाक्य के एक पद को सुनकर दूसरे पद की इच्छा (आंकाक्षा) से है।
9. सन्निधि से तात्पर्य वाक्य के विभिन्न घटकों के उच्चारण के बीच अभीष्ट सामीप्य है। इसे आसक्ति भी कहते हैं।

02

वाक्य विन्यास

पदक्रम और अन्विति

शिक्षकों से चर्चा करते समय मैंने वाक्य विन्यास का अर्थ पूछा। अधिकतर शिक्षकों ने अपने को इस शब्द का सही अर्थ बतलाने में असमर्थता प्रकट की। उनकी इस बात से मुझे संतोष हुआ। किसी बात को बिना समझे बताना अल्पज्ञता ही है। अत: मैंने इस विषय की अच्छी समझ बनाने के लिए चार वाक्य श्याम पट लिखे-

1. राम श्याम को पुस्तक देता है।
2. श्याम राम को पुस्तक देता है।
3. राम पुस्तक को श्याम देता है।
4. श्याम पुस्तक को राम देता है।

इन चारों वाक्यों की रचना छ: शब्दों को लेकर अवश्य हुई है किन्तु उनका अर्थ एक सा नहीं है। पहले वाक्य का कर्त्ता कारक दूसरे वाक्य में कर्म कारक बन गया है। अत: अर्थ में भिन्नता होते हुए भी वाक्य रचना ठीक है।

किन्तु तीसरे तथा चौथे वाक्य की सार्थकता ही समाप्त हो गई है। वास्तव में अपनी बात को सही ढंग से रखने के लिए वाक्य की रचना व्याकरण सिद्ध पदों को क्रम से रखने तथा उन पदों का परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट करने से होती है। अत: यह सिद्ध होता है कि शब्दों के अव्यवस्थित प्रयोग से वाक्य नहीं बनाए जा सकते।

वाक्य विन्यास के अन्तर्गत इन्हीं बातों को लेकर वाक्य रचना की चर्चा की जाती है। (विन्यास का शब्दिक अर्थ हैं- क्रमपूर्वक रखना। अत: वाक्य विन्यास का अर्थ है- वाक्य की रचना करते समय शब्दों को क्रमपूर्वक रखना। इस दृष्टि से वाक्य रचना के अन्तर्गत दो विषयों का अध्ययन करना अपेक्षित है। एक विषय है- पद-क्रम अर्थात् वाक्यों में पदों को क्रम से रखना।

दूसरा विषय है- अन्विति (अन्वय) अर्थात् पदों का परस्पर संबंध स्पष्ट करना।)

तो आइए, इस विषय को कुछ उदाहरणों द्वारा समझने का प्रयत्न करें।

(क) पदक्रम

एक स्थान पर संस्कृत के एक विद्वान ने पद क्रम सम्बन्धी टिप्पणी देते हुए कहा कि

संस्कृत में पद क्रम जैसी व्यवस्था नहीं है। यह तो हिंदी भाषा एवं अँग्रेजी भाषा में ही देखने को मिलती है। पद-क्रम में अव्यवस्था होने पर अर्थ की अभिव्यक्ति में कठिनाई आती है; जैसे-

1. मैं भी दिल्ली जाने को इच्छुक हूँ।
2. मैं दिल्ली भी जाने को इच्छुक हूँ।
3. मैं दिल्ली जाने को भी इच्छुक हूँ।

आजकल जिस प्रकार की भाषा बोली जाती है, उसमें उपरोक्त तीनों वाक्यों में कोई अन्तर नहीं समझा जाता है, किन्तु इनके अन्तर को कैसे पहचाना जाए, इसकी कोई युक्ति बताइए।

मैंने कहा- आपका कथन उचित है। इस अन्तर को जानने के पूर्व हमें तीनों वाक्यों की रचना पर ध्यान देना होगा।

तीनों वाक्यों में- ''मैं दिल्ली जाने को इच्छुक हूँ- बात को समान रूप से कहा गया है किन्तु पहले वाक्य में 'भी' मैं (सर्वनाम) के साथ है, जो यह बता रहा है कि अन्य के साथ में भी जाना चाहता हूँ।

दूसरे वाक्य में 'भी' दिल्ली (संज्ञा) के साथ है, जो यह बता रहा है कि अन्य स्थान के साथ-साथ मैं दिल्ली भी जाना चाहता हूँ।

तीसरे वाक्य में 'भी' जाने (क्रिया) के साथ है जो अन्य स्थानों के भ्रमण के साथ-साथ दिल्ली भ्रमण की आकांक्षा बताता है।

इस प्रकार 'भी' तीनों वाक्यों में भिन्न-भिन्न विशेषता बता रहा है। इससे सिद्ध होता है कि परिभाषा वाक्य में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न पदों (कर्त्ता, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया विशेषण, सम्बन्ध बोधक, समुच्चय बोधक, विस्मयदिबोधक आदि) को एक सुनिश्चित क्रम में रखने का विशेष महत्व है। इसे ही पद क्रम कहते हैं। पद क्रम सही न होने पर अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

प्रमुख पदक्रम—

1. कर्त्ता (संज्ञा/सर्वनाम)
2. क्रिया
3. कारक
   (क) करण
   (ख) अधिकरण
   (ग) अपादान
   (घ) सम्प्रदान
   (ङ) संबोधन

4. विशेषण
5. क्रिया–विशेषण
6. प्रश्नवाचक पद (शब्द)
7. विस्मयादि बोधक अव्यय

मैंने पुन: कहा– पदक्रम संबंधी नियमों का अध्ययन हमें तीन चरणों में करना चाहिए–

(क) आधारभूत वाक्य साँचों में आया पदक्रम (कर्त्ता, कर्म, पूरक, क्रिया)

(ख) अव्यय पदों का वाक्य में क्रम निर्धारण (स्थान, काल, रीति वाचक)

(ग) विशिष्ट पदों का वाक्य में क्रम निर्धारण (प्रश्न, निषेध, निपात आदि)

आधारभूत वाक्य साँचों में आया पदक्रम–

1. वाक्य में कर्त्ता, क्रिया से पहले और क्रिया अंत में आती है।

   उदाहरण– बालक हँसता है।
   (कर्त्ता + क्रिया)

2. यदि कर्त्ता क्रिया है, तो कर्म का प्रयोग क्रिया से पहले अर्थात् कर्त्ता और क्रिया के बीच में उचित है।

   उदाहरण–बालक पुस्तक पढ़ता है।
   (कर्त्ता + कर्म + क्रिया)

3. द्विकर्मक क्रियाओं में गौण कर्म पहले तथा मुख्यकर्म बाद में होना चाहिए।

   उदाहरण–राम अपने भाई को पुस्तक पढ़ा रहा है।
   (कर्त्ता+गौण कर्म + मुख्यकर्म+क्रिया)

विशेष– वाक्य में क्रिया में 'क्या' लगाकर प्रश्न पूछना चाहिए, जो उत्तर मिलेगा, वही मुख्य कर्म होगा। इसी प्रकार क्रिया में 'किसको/किससे/किसे' लगाकर प्रश्न पूछिए, जो उत्तर मिलेगा, वही गौण कर्म होगा।

4. पूर्वकालिक क्रिया मुख्य क्रिया से पहले होना चाहिए।

   उदाहरण– बालक पानी पीकर पुस्तक पढ़ता है।
   (कर्त्ता+पूर्वकालिक क्रिया+मुख्य क्रिया)

5. करण, सम्प्रदाय अपादान, अधिकरण कारक प्राय: कर्म कारक के पहले प्रयोग में आते हैं।

   उदाहरण– राम ने बाण से रावण को मारा।
   (कर्त्ता +करण कारक+कर्म कारक+क्रिया)

6. सम्बोधन कारक का प्रयोग वाक्य के प्रारंभ में होना चाहिए।

   हे राम! तुम्ही मेरे रक्षक हो।

(संबंधबोधक+वाक्य)

7. विशेषण का प्रयोग विशेष्य से पहले होना चाहिए।

उदाहरण–काली गाय हरी घास चर रही है।

(विशेषण+विशेष्य + विशेषण + क्रिया)

8. सर्वनाम का विशेषण पद प्रायः सर्वनाम के बाद आता है।

उदाहरण– तुम चतुर हो

(सर्वनाम + विशेषण + क्रिया)

यहाँ 'तुम' सर्वनाम के बाद 'चतुर' विशेषण का प्रयोग हुआ है।

अव्यय पदों का वाक्य में क्रम निर्धारण–

1. क्रिया विशेषण को क्रिया से पहले स्थान दिया जाता है।

उदाहरण–राम धीरे–धीरे बोल रहा है।

(क्रिया विशेषण + क्रिया)

2. संबंधबोधक अव्यय का प्रयोग दो शब्दों अथवा वाक्य के बीच में होता है।

उदाहरण– राम और मोहन घर जा रहे थे।

रेखांकित शब्द (संबंध बोधक) अव्यय है, जिसका प्रयोग दो शब्दों के बीच हुआ है।

3. समुच्चय बोधक का प्रयोग दो शब्दों अथवा उपवाक्यों के बीच में होता है।

उदाहरण– वर्षा हो रही थी, इस कारण मैं जा न सका।

(समुच्चयबोधक)

(शब्द + समुच्चय बोधक अव्यय + शब्द)/वाक्य

4. विस्मयादि बोधक अव्यय वाक्य के प्रारंभ में आते हैं।

उदाहरण–वाह! वाह! यह भी खूब रही।

(वाह! वाह! विस्मयादिबोधक है, जो वाक्य के प्रारम्भ में आया है।)

विशिष्ट पदों का वाक्य में क्रम निर्धारण–

1. केवल सिर्फ आदि का प्रयोग संबंधित शब्द के पूर्व में ही करना उचित है। (तुम सिर्फ पढ़ो)

2. 'तक', 'मात्र', 'भी', 'ही' आदि निपातों का प्रयोग संबंधित शब्दों के बाद होना चाहिए। (मैं कल तक रहूँगा। मैं ही पढ़ने जाऊँगा।)

3. प्रश्नवाचक सर्वनाम या अव्यय का प्रयोग उस पद से पूर्व होता है, जिसके बारे में प्रश्न किया जाता है।

उदाहरण–यह किसका पेन है? (यहाँ सर्वनाम 'किसका' का प्रयोग 'पेन' के पूर्व हुआ है।)

4. निषेधवाचक अव्यय क्रिया से पूर्व आते हैं।

उदाहरण– यहाँ मत बैठो।

मैं तुम्हारी बात कभी नहीं मानूँगा। (निषेधात्मक अव्यय)

(इस नियम के कुछ अपवाद भी मिलते हैं; जैसे– न मैं जा सका, न राम।)

पदक्रम में परिवर्तन

जब वक्ता अथवा लेखक को अपनी बात का विशेष अर्थ व्यक्त करना होता है, तो वह पद क्रम में बदलाव कर देता है। किन्तु यह स्थिति सदैव नहीं रहती। विशेष परिस्थिति में ही बनती है।

जैसे– 'शराब मनुष्य को पी जाती है।' इस वाक्य में कर्त्ता तथा कर्म का पदक्रम बदल गया है। यहाँ वक्ता 'शराब पीकर मनुष्य अपने जीवन को समाप्त कर देता है' यह भाव प्रकट करना है। इसलिए अपनी बात को पदक्रम में परिवर्तन कर विशेषता से प्रकट कर रहा है।

इस प्रकार का व्यतिक्रम या परिवर्तन तीन परिस्थितियों में देखने को मिलता है–

1. **कथन का विस्तार पूर्वक वर्णन करने के लिए**

   उदाहरण– शराब पीने वाले सारे प्रतिबन्धनों से मुक्त हैं, वे जब चाहें जहाँ बैठकर, जैसे चाहें पियें।

2. **कथन पर विशेष बल देने के लिए**

   उदाहरण– ऐसा ही होता है, उनका मुस्कुराना

3. **काव्यात्मक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए**–

   उदाहरण– आए थे हरिभजन को, ओटन लगे कपास।

4. कारकों में व्यतिक्रम–

(क) जी तोड़ मेहनत हम करते हैं, और उसका लाभ लेते हैं कारखाने के मालिक। (कर्त्ता का व्यतिक्रम)

(ख) दूध मैं पियूँगा, चाय पीना तुम। (कर्म का व्यतिक्रम)

(ग) तलवार से उसने डाकू पर हमला कर दिया। (करणकारक का व्यतिक्रम)

(घ) आपके लिए ही, यहाँ ठहरने की व्यवस्था की गई है। (सम्प्रदान कारक का व्यतिक्रम)

(ङ) पेड़ से जितने आम गिरे, सब रमेश ले गया। (अपादान का व्यतिक्रम)

(च) निबंध श्याम ने ही सबसे अच्छा लिखा है। (सम्बन्ध का व्यतिक्रम)

(छ) आप पर ही मेरा जाना निर्भर है। (अधिकरण का व्यतिक्रम)

5. क्रिया का व्यतिक्रम–

वाह, यह भी खूब रही! मैंने कहा उसको, और आप बुरा मान गए।

6. विशेषण का व्यतिक्रम–

अकर्मण्य लोग ही काम करने से जी चुराते हैं।

7. **संबंधवाचक क्रिया विशेषण का व्यतिक्रम-**

जहाँ हमारे गुरुजी जाएँगे, वही हम जाएँगे।

रोचक तथ्य-

(1) पदक्रम में परिवर्तन संभव है किन्तु इस प्रकार के परिवर्तन से उस वाक्य विशेष में एक विशेष प्रकार का अर्थगत गुण आ जाता है।

(2) वाक्य का समापक क्रियापद ही होता है।

(ख) अन्विति/अन्वय

अन्विति का शाब्दिक अर्थ है -अनुरूपता, संगति, मेल अथवा परस्पर संबंध/वाक्य में क्रिया, कर्त्ता, कर्म आदि का परस्पर संबंध उसके लिंग वचन, पुरुष एवं काल के अनुरूप होना **अन्विति** कहलाता है।

प्रमुख अन्विति

1. कर्त्ता- क्रिया अन्विति
2. कर्म- क्रिया अन्विति
3. भाववाच्य की अन्विति
4. संज्ञा सर्वनाम अन्विति
5. विशेषण- विशेष्य अन्विति
6. संबंध-संबंधी अन्विति

1. **कर्त्ता-क्रिया-अन्विति**

कर्त्ता-क्रिया-अन्विति के अन्तर्गत निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए-

क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्त्ता के अनुसार होना चाहिए; जैसे-

क. राम हँसता है। **ख.** रमा हँसती है।

1. यहाँ 'क' वाक्य में 'हँसता है' क्रिया कर्त्ता पुल्लिंग के अनुसार है, क्योंकि राम एक वचन, अन्य पुरुष, पुल्लिंग है। 'ख' वाक्य में 'हँसती है', क्रिया रमा (स्त्रीलिंग) के अनुसार रखी गई है।

2. यदि वाक्य में कर्त्ता उत्तम, मध्यम एवं अन्य तीनों पुरुषों का हो, तो क्रिया केवल उत्तम पुरुष, बहुवचन में होगी-

जैसे- मैं, तुम और राम आए हैं।

(यहाँ 'मैं' के बहुवचन 'हम' के अनुसार 'क्रिया' का प्रयोग किया गया है।)

3. यदि वाक्य में कर्त्ता मध्यम और अन्य पुरुष के रूप में हो तो क्रिया का प्रयोग मध्यम पुरुष के अनुरूप होगा।

जैसे- तुम और वह इन्दौर चले जाओ।

(यहाँ क्रिया चले जाओ - मध्यम पुरुष, 'तुम' के अनुरूप है।)

5. यदि वाक्य में एक ही लिंग, वचन और पुरुष के परसर्गरहित कई कर्त्ता हों और उनसे बहुवचन का अर्थ निकले तो क्रिया बहुवचन में होगी। एक वचन का अर्थ निकलने पर क्रिया एक वचन में होगी।

जैसे- राजा हरिश्चन्द का राज्य, स्त्री, धन सब चले गए किन्तु केवल सत्य नहीं गया।

यहाँ परसर्ग रहित कई कर्त्ता हैं अत: क्रिया भी बहुवचन में है किन्तु इनके पश्चात् एक कर्त्ता (सत्य) होने से क्रिया एक वचन में है।

6. आदर प्रकट करने के लिए एक वचन के कारण कर्त्ता के साथ बहुवचन की क्रिया प्रयोग में लाई जाती है; जैसे-गुरुजी आ रहे हैं।

(यहाँ 'गुरुजी' एक वचवन है किन्तु' आ रहे हैं क्रिया बहुवचन में है।

7. यदि वाक्य में कर्त्ता, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग दोनों हों तो क्रिया बाद वाले कर्त्ता के अनुकूल होगी।

जैसे- लड़कियाँ और लड़के चले गए।

(यहाँ क्रिया बाद वाले कर्त्ता लड़के के अनुसार 'चले गए' का प्रयोग हुआ है।)

2. कर्म क्रिया अन्विति-

कर्म प्रधान वाक्य में क्रिया का प्रयोग लिंग, वचन एवं पुरुष कर्म के अनुसार होना चाहिए; जैसे-

क. राम पुस्तक पढ़ता है। (कर्तृ वाच्य)

ख. राम के द्वारा पुस्तक पढ़ी जा रही है। (कर्म वाच्य)

(यहाँ पुस्तक (कर्म) के कारण 'क' तथा 'ख' वाक्यों में क्रिया संबंधी अन्तर स्पष्ट दिखाई दे रहा है।)

3. भाव वाच्य की अन्विति

भाव वाच्य की क्रिया का किसी से संबंध नहीं रहता; जैसे-

क. मैं चल नहीं सकता। (कर्तृवाच्य)

ख. मुझसे चला नहीं जाता। (भाव वाच्य)

(यहाँ 'क' वाक्य में 'चल' के साथ 'नहीं' का प्रयोग हुआ है। (ध्यान रहे, भाववाच्य हमेशा निषेधवाचक होता है। साथ ही क्रिया अकर्मक होती है। 'ख' वाक्य में क्रिया तथा भाव की प्रधानता होने से कर्त्ता को कर्त्ता कारक से करण कारक में बदल दिया जाता है, जैसे- मुझसे)

4. संज्ञा-सर्वनाम अन्विति-

सर्वनाम का लिंग, वचन एवं कारक उसी संज्ञा के अनुकूल होगा जिसके स्थान पर उसे प्रयोग किया गया हो; जैसे-

क. राम आया था। वह चला गया।

ख. रमा आई थी। वह चली गई

यहाँ राम तथा रमा दोनों के लिए 'वह' सर्वनाम का प्रयोग हुआ है किन्तु राम के लिए पुल्लिंग तथा रमा के लिए स्त्री लिंग का प्रयोग हुआ है।

5. विशेषण-विशेष्य अन्विति-

विशेषण का लिंग विशेष्य के लिंग के अनुसार ही होता है।

क. आकारान्त विशेषण अपने विशेष्य के अनुसार बदलते हैं; जैसे-

- मोटा भैंसा, मोटा आदमी, मोटा हाथी आदि
- मोटी भैंसे, मोटी औरत, मोटी हथनी आदि
- मोटे घोड़े, मोटे आदमी, मोटे हाथी आदि

ख. आकारान्त से भिन्न विशेषण अपने विशेष्य के अनुसार नहीं बदलते हैं;

जैसे- मेहनती लड़का, मेहनती लड़की, मेहनती बच्चे आदि।

यहाँ 'मेहनती' विशेषण लड़का, लड़की एवं बच्चे (विशेष्य) के अनुसार बदला नहीं है।

6. संबंध संबंधी अन्विति-

संबंध के चिह्न में वही लिंग और वही वचन होता है, जो संबंधी का होता है, जैसे-

(क) यह राम की पुस्तक है।

(ख) वह श्याम का पिता है।

(ग) ये मेरे खिलौने हैं।

उपर्युक्त तीनों वाक्यों में लिंग और वचन वही है, जो संबंध और संबंधी का है।

विशेष- यदि संबंधों में कई संज्ञाएँ बिना समास के आएँ तो संबंधी का चिह्न उस संज्ञा के अनुसार होगा जिसके पहले वह रहेगा; जैसे—

(क) मेरे चाचा के लड़के, लड़कियाँ और दामाद आए हुए हैं।

(ख) सभी कक्षाओं के छात्र, छात्राएँ तथा शिक्षक कार्यक्रम में आए हैं।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में क्रिया लड़के तथा शिक्षक के अनुसार है।

03

पदबंध और उपवाक्य

महाराष्ट्र समाज के एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिकाओं को हिन्दी भाषा में व्याकरण विषय पर प्रशिक्षण देते समय एक शिक्षिका ने सहज ही प्रश्न किया कि "हिन्दी शब्द और पद पर आपकी पुस्तक देखने को मिली। उसको पढ़कर कई भ्रम दूर हुए किन्तु वाक्य संरचना पर ऐसी कोई पुस्तक पढ़ने को नहीं मिली, जो पदबंध तथा उपवाक्य में अन्तर स्पष्ट करे। कृपया इस संबंध में भ्रम दूर करें। उपवाक्य भी पदबंध की तरह पदों का समूह ही तो है।"

मैंने उनके आशय को समझकर अपनी बात इस प्रकार रखी 'यह आपने ठीक बताया कि उपवाक्य भी पदबंध की तरह पदों का समूह है किन्तु पदबंध में क्रिया नहीं होती, उपवाक्य में क्रिया रहती है। अब आप इन दोनों में अन्तर को ठीक से समझने के लिए इन उदाहरणों पर ध्यान दें–

'राम पुस्तक पढ़ता है।'

यह वाक्य का उदाहरण है क्योंकि इसमें प्रयुक्त 'राम' 'पुस्तक' 'पढ़ता है' ये तीनों शब्द पूरे वाक्य के अंश है। इसमें कर्त्ता और क्रिया दोनो ही हैं।

उदाहरण– उपवाक्य

राम आज नहीं आएगा क्योंकि वह दिल्ली गया हुआ है।

इस वाक्य में– 1. राम आज नहीं आएगा (प्रधान उपवाक्य)

क्योंकि वह दिल्ली गया हुआ है। (उपवाक्य)

इसमें प्रथम वाक्य प्रधानवाक्य है और दूसरा वाक्य उपवाक्य है। दोनों ही वाक्यों में कर्त्ता और क्रिया भी है।

उदाहरण – पदबंध

जहाँ तक पद बन्ध परिभाषा उप वाक्य की तरह पदों का समूह होता है किन्तु उसमें क्रिया नहीं होती। उससे केवल आंशिक भाव ही प्रकट होता है। अतः पदबंध को वाक्यांश भी कहते हैं; जैसे–

बाहर से आए अतिथियों में **कुछ** शाकाहारी हैं।

यहाँ बाहर से आए अतिथियों में– एक पदबंध है, किन्तु इससे पूर्ण अर्थ की प्रतीति नहीं होती। विषय को और स्पष्ट करने के लिए फिर मैंने कुछ वाक्य श्यामपट पर लिखे, तथा सभी

शिक्षिकाओं से प्रश्न पूछ-कर उनके अन्तर को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया।

1. (क) मेरे कक्ष में **एक बहुत पुराना** चित्र लगा है। (पदबंध)

(ख) मेरे कक्ष में एक ऐसा चित्र लगा है, **जो बहुत पुराना** है। (उपवाक्य)

2. (क) मैं **दक्षिणा में दिए हुए रुपए** वापस नहीं लूँगा। (पदबंध)

(ख) मैं वे रुपए वापस नहीं लूँगा, **जिन्हें मैं दक्षिणा में दे चुका हूँ।** (उपवाक्य)

3. (क) **नीली आँखों वाली** लड़की को बुलाइए। (पद बंध)

(ख) उस लड़की को बुलाइए **जिसकी नीली आँखें है।** (उपवाक्य)

अब आपको स्पष्ट हो गया होगा कि तीनों वाक्यों में समान पदों के समूह को (क) पदबंध तथा (ख) उपवाक्य के अन्तर को किस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है।

आगे हम दोनों पर पृथक-पृथक विस्तार से चर्चा करते हैं-

रोचक तथ्य

1. शब्द स्वतंत्र और सार्थक ध्वनि है। जब किसी शब्द का प्रयोग वाक्य में किया जाता है, तो वह पहले पद बनता है।
2. पदबंध शब्द 'पद' और 'बंध' दो शब्दों से मिलकर बना है। इससे एक से अधिक शब्दों का परस्परबद्ध होना प्रकट होता है। पदबंध एक शब्द का भी हो सकता है, और एक से अधिक शब्दो का भी।
3. पदबंध उपवाक्य से छोटी इकाई है जो व्याकरणिक कार्य करते हुए अपना अर्थ खो देती है, किन्तु पूरा अर्थ नहीं देती।
4. पदबंध का प्रयोग केवल वाक्य के अन्तर्गत होता है। वाक्य के बाहर नहीं।
5. सरल वाक्य में उपवाक्य नहीं होते क्योंकि वह स्वयं उपवाक्य है। इस प्रकार वाक्य और उपवाक्य में कोई भेद नहीं रहता है।
6. एक से अधिक सरल अथवा स्वतंत्र वाक्यों के मिलने से मिश्र वाक्य बनते हैं। मिश्र वाक्य में उपवाक्य होते हैं।
7. प्रत्येक उपवाक्य में कर्त्ता और क्रिया का होना आवश्यक है। इस दृष्टि से उपवाक्य

वाक्य की स्वतंत्र इकाई है, पदबंध नहीं है। पदबंध में क्रिया का होना अनिवार्य नहीं होता।

8. उपवाक्य पदबंध की अपेक्षा अधिक भाव प्रकट करते हैं क्योंकि उपवाक्य पद बंधों से मिलकर ही बनते हैं।

आइए, पदबंध तथा उपवाक्य के संबंध में विस्तार से जाने।

(क) पदबंध

पदबंध से आशय-

संस्कृत के एक विद्वान ने मुझसे अनुरोध किया कि संस्कृत व्याकरण में 'पदबंध' की धारणा नहीं रही किन्तु हिंदी में पद-बंध की अवधारणा स्वतंत्र रूप से विकसित हुई है। अतः इस संबंध में कुछ बताइए।

मैंने कहा- हिन्दी में **पदबंध शब्द का विग्रह होगा-पदों का बंध अर्थात् जब पद और उपपद अथवा दो या दो से अधिक पद इकाई के रूप में वाक्य में परस्परबद्ध होते हैं, तो उन्हें पद-बंध कहते हैं**; जैसे-

1. लड़की पुस्तक पढ़ती है।
2. सुन्दर लड़की पुस्तक पढ़ती है।
3. एक सुन्दर लड़की पुस्तक पढ़ती है।
4. कक्षा की सबसे सुन्दर लड़की पुस्तक पढ़ती है।

इन वाक्यों पर ध्यान दीजिए। पहले वाक्य में **लड़की पुस्तक पढ़ती है**- में **लड़की** एक पद है। दूसरे वाक्य में दो पद है-**सुन्दर और लड़की/सुन्दर लड़की का विशेषण** है। लेकिन काम एक साथ कर रहे है। तीसरे वाक्य में **एक सुन्दर लड़की** तीन पद है। किन्तु **एक** लड़की का पूरक है। चौथे वाक्य में **कक्षा की सबसे सुन्दर लड़की** ये पाँच पद हैं। इस पद बंध में शीर्ष पद है- लड़की। शेष पद इस पर आश्रित है।

अतः स्पष्ट है कि पद बंध में एक शीर्ष पद होता है। शेष पद उस पर आश्रित होते हैं। शीर्ष पद की पहचान के लिए देखना यह होता है कि वह पद बंध (वाक्यांश) संज्ञा का कार्य कर रहा है, या विशेषण, सर्वनाम, क्रिया अथवा क्रिया विशेषण का। इस प्रकार पद बंध पाँच प्रकार के हो सकते हैं-

1. संज्ञा पदबंध
2. सर्वनाम पदबंध
3. विशेषण पदबंध
4. क्रिया पद बंध
5. क्रिया विशेषण पद बंध

विशेष- कुछ वैयाकरण अव्यय पद बंध की अलग से चर्चा करते हैं क्योंकि कुछ ऐसे भी अव्यय पद बंध है जो पारिभाषिक दृष्टि से क्रिया विशेषण पद बंध के अन्तर्गत नहीं आते हैं।

रोचक तथ्य-

1. पारिभाषिक शब्दों में **पदों का समूह मिलकर जब वही कार्य करता है जो एक अकेला पद करता है, तो उसे पदबंध कहते हैं**।
2. प्रत्येक पद बंध में एक घटक केन्द्र या शीर्ष का काम करता है, और अन्य घटक उस पर आश्रित होते हैं; जैसे -

   सुन्दर लड़की

   (आश्रित) (केन्द्र/शीर्ष)

   यहाँ सुन्दर लड़की एक पदबंध है, जिसमें लड़की शीर्ष है, और सुन्दर उस पर आश्रित है।
3. पदबंध में आश्रित घटकों की संख्या एक से अधिक भी हो सकती है; जैसे-

   कक्षा की सबसे सुन्दर लड़की

   (आश्रित) (शीर्ष)
4. पदबंध के परस्पर घटक अर्थ की दृष्टि से परस्पर जुड़े रहते हैं।

पदबंध की संरचना-

पद बंध की संरचना के चार घटक हैं-

1. दो या दो से अधिक पदों का समूह पद बंध की रचना करता है; जैसे-

   (ख) **माध्यमिक शिक्षा मण्डल की कार्य समिति का** मैं सदस्य हूँ। (दो से अधिक पदों का समूह)

   (क) **ऊल-जलूल** बातें मत करो। (दो पद समूह)
2. यदि दो पदों के मध्य का, की, के आदि परसर्ग आएँ तो वे एक इकाई का निर्माण कर पद-बंध की रचना करते हैं; जैसे-

   (क) **पड़ोसी** का लड़का बीमार है।

   (ख) **आज के कार्यक्रम** को लोगों ने बहुत सराहा।
3. विशेषण और विशेष्य (संज्ञा) भी पद बंध का कार्य करते हैं; जैसे-

   (क) **घर से भागी** हुई लड़की दिल्ली में मिली।

   (ख) **विपत्ति काल में साथ देने वाले** बहुत कम होते हैं।
4. क्रियाओं के समूह के द्वारा भी पद-बंध की रचना की जाती है; जैसे-

   (क) सीता नृत्य **करते-करते** थक चुकी है।

(ख) फुटबाल का मैच भोपाल **जाकर खेला जाएगा**।

अब इसे उदाहरणों द्वारा विस्तार से जानें।

1. संज्ञा पदबंध

जो पद बंध वाक्य में वही कार्य करता है, जिसे अकेला 'संज्ञा पद' करता है, उसे **संज्ञा पद बंध** कहते हैं। जिस प्रकार संज्ञा शब्दों के साथ भिन्न-भिन्न कारक चिह्नों का प्रयोग होता है, उसी प्रकार संज्ञा पदबंधों को भी कारकों के प्रयोग के आधार पर आसानी से पहचाना जा सकता है; जैसे-

1. (क) **साहसी व्यक्ति** क्या नहीं कर सकता! (कर्त्ता कारक)

   (ख) **दशरथ पुत्र राम ने** रावण को मार गिराया। (कर्त्ता कारक)

2. **उस युवक ने ठंड से ठिठुरते हुए बालक को** कुछ कॉफी पीने को दी। (कर्म कारक)

3. यह पत्र मैंने **पुरस्कार में मिले पैन** से लिखा है। (करण कारक)

4. गंगा **नगराज हिमालय से** निकलती है। (सम्प्रदान कारक)?

5. **लोहे की काँच वाली अलमारी** से मेरी पुस्तक निकाल लाओ। (अपादान कारक)

6. तुम्हारी पुस्तक **लकड़ी की पुरानी कुर्सी पर** रखी है। (संबंध कारक)?

7. **भारत की राजधानी दिल्ली में** इस समय 95 लाख लोग रहते हैं। (अधिकरण कारक)

संज्ञा पद बंधों की प्रमुख विशेषताएँ-

1. संज्ञा पद बंध में विशेषण संज्ञा के पूर्व लगता है- जैसे

(क) गुणवाचक के रूप में-

(प्रथम वाक्य (क) में **साहसी** व्यक्ति

कृदन्त रूप में- **ठिठुरते हुए** बालक (द्वितीय वाक्य)

वाला/वाली रूप **काँचवाली** अलमारी (पांचवा वाक्य)

(ख) संख्या वाचक के रूप में - 95 लाख (सातवाँ वाक्य)

(ग) परिमाणवाचक के रूप में - कुछ कॉफी (द्वितीय वाक्य)

(घ) सार्वनामिक रूप में - मेरी पुस्तक/तुम्हारी पुस्तक (पाँचवा या छठा वाक्य)

(2) संज्ञा पद बंध का प्रयोग वाक्य में कर्त्ता/कर्म तथा पूरक के स्थान पर होता है; जैसे-

(क) कर्त्ता के रूप में- **मेरा मित्र** विदेश जा रहा है।

(ख) कर्म के रूप में- **तुम अपना** काम करो।

(ग) पूरक के रूप में- सुनीति **हिंदी की** व्याख्याता है।

(3) कभी-कभी कुछ विशेषण पदबंध संज्ञा के बाद भी आ जाते हैं।

जैसे- **पानी इतना गर्म है कि** पिया नहीं जाता।

रोचक तथ्य-

1. संज्ञा पद बंध वाक्य का अनिवार्य घटक है।
2. कर्त्ता और कर्म के रूप में प्रयुक्त होने वाले हिंदी संज्ञा पद बंधों के अंत में आवश्यकतानुसार 'ने' को 'से' कारक चिह्न का प्रयोग होता है।

2. सर्वनाम पद बंध

वाक्य में जब कोई पदबंध सर्वनाम पद का कार्य करता है तो उसे सर्वनाम पदबंध कहते हैं; जैसे-

1. पुरुष वाचक सर्वनाम

(क) **दिन-रात परिश्रम करने वाले** तुम अवश्य उत्तीर्ण होंगे।

(ख) **जी तोड़ मेहनत करने वाला** वह उत्तीर्ण नहीं हो सका।

2. निश्चय वाचक सर्वनाम-

(क) **जो लड़की कल आई थी,** वह भोपाल में रहती है।

(ख) **आकाश के तारे तोड़ लाने की बात करने वाला यह** बंदा आपके सामने खड़ा है।

3. अनिश्चय वाचक सर्वनाम

(क) **उसके मित्रों** में से कोई समय पर नहीं पहुँचा।

(ख) **बाहर से आए लोगों में से** कुछ बाराती है।

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम-

(क) **किसी की परवाह न करने वाला** मैं, तुमसे डरता हूँ क्या?

(ख) **शेर की तरह दहाड़ने वाले** तुम काँप क्यों रहे हो?

(ग) **मैदान में खड़ा-खड़ा** वह कर क्या रहा है?

5. संबंध वाचक सर्वनाम

(क) **है यहाँ कोई** जो मेरा सामना कर सके।

(ख) **यह वही पुस्तक है** जिसे तुम पढ़ना चाहते हो।

6. निजवाचक सर्वनाम-

(क) **सदैव व्यस्त रहने वाले आप** आज फुरसत में कैसे बैठे हैं?

(ख) **दीन-दुखियों पर दया दिखाने वाले अभय** सचमुच महान हैं।

रोचक तथ्य-

1. सर्वनाम पद बंधो की संख्या अत्यन्त सीमित होती है।
2. वाक्य विश्लेषण के संदर्भ में इन पद बंधों को संज्ञा पद-बन्ध के अन्तर्गत ही माना जाता

है क्योंकि वाक्य में दोनों पद बंधों के कार्य समान हैं।

3. विशेषण पद बंध

वाक्य में जब कोई पद समूह किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता का बोध कराए, तो उसे विशेषण पदबंध कहते हैं; जैसे–

1. **गुणवाचक विशेषण पद बंध–**
   (क) **योग करने वाले लोग** सदैव स्वस्थ रहते हैं।
   (ख) **मधुर स्वर में गाने वाली गायिका** लता मंगेशकर मुंबई में रहती है।
2. **संख्या वाचक विशेषण पद बंध**
   (क) निश्चित संख्या– **गीतों की एक** पुस्तक ला दें।
   (ख) अनिश्चित संख्या– **गीतों की कुछ** पुस्तकें ला दें।
3. **परिमाण वाचक विशेषण पद बंध–**
   (क) निश्चित परिमाण– **दस किलो शक्कर** खरीद ली है।
   (ख) अनिश्चित परिमाण– **इतना काम** क्यों करती हो।

रोचक तथ्य–

1. विशेषण पद बंध एक स्वतंत्र पद बंध के रूप में भी प्रयुक्त हो सकता है; और संज्ञा पद बंध के विशेषण के रूप में भी।

4. क्रिया पद बंध

मुख्य क्रिया के बाद सहायक क्रिया/ संयुक्त क्रिया मिलकर जब एक क्रिया पद का बोध कराए तो वहाँ क्रिया पद बंध होता है; जैसे—

- आज मुझे बहुत शोर **सुनाई पड़ रहा** है।
  (यहाँ सुनना मुख्य क्रिया है, तथा **पड़ रहा है**– सहायक क्रिया)
- वृद्ध धीरे-धीरे **चला जा रहा** था।
- मैंने एक काला कुत्ता **देखा** था।

5. क्रिया विशेषण पद बंध

जब कोई पद समूह वाक्य में अव्यय अथवा क्रिया विशेषण का काम करते हैं, तो वे क्रिया विशेषण पद बंध कहलाते हैं।

क्रिया विशेषण पद बंध की रचना संज्ञा / परसर्ग /अव्यय के योग से होती है।

1. **समय वाचक क्रिया विशेषण–**
   (क) **कितने दिनों से** मैं तुम्हारी प्रतिक्षा कर रहा हूँ। (से, परसर्ग),
   (ख) **दो बजकर बीस मिनट पर** शताब्दी एक्सप्रेस आएगी। (पर, परसर्ग)
2. **स्थान वाचक क्रिया विशेषण–**
   (क) **घर के पीछे** की ओर स्कूल है।

(ख) उस **नदी के पार** मेरा घर है।

3. **रीतिवाचक क्रिया विशेषण-**

(क) **बिना सोचे समझे** कोई **काम** नहीं करना चाहिए।

(ख) राम ने **बड़ी मेहनत** से अपना काम पूरा किया।

रोचक तथ्य-

1. क्रिया विशेषण पद बंध वाक्यों के ऐच्छिक घटक के रूप में ही प्रयुक्त होते हैं। उन्हें वाक्य से निकाल देने पर भी वाक्य की संरचना में अन्तर नहीं आता है।

6. अव्यय पद बंध

जैसा कि पूर्व में कहा गया है, कुछ ऐसे अव्यय पद बंध भी होते हैं, जो क्रिया विशेषण के अन्तर्गत नहीं आते। अतः ऐसे सभी पद बंध जो संज्ञा पद बंध, सर्वनाम पद बंध, विशेषण पद बंध, क्रिया पद बंध नहीं हों, उन्हें अव्यय -पद बंध कहा जाता है; जैसे-

1. **समुच्चय बोधक पद बंध** के अन्तर्गत 'लेकिन', 'और' 'फिर' भी 'तथापि', 'मानो' आदि शब्दों से प्रारम्भ होने वाले पद बंध आते हैं।
2. **विस्मयादि बोधक पद बंध** के अन्तर्गत आने वाले 'हाय'! क्या बात है! आदि शब्द होते हैं।

रोचक तथ्य-

- अव्यय पद बंध के अतंर्गत क्रिया विशेषण पद बंध भी आते हैं।

(ख) उपवाक्य

संस्कृत के विद्वान ने पुनः प्रश्न प्रश्न किया-

''उपवाक्यों के उदाहरणों से स्पष्ट है कि प्रत्येक उपवाक्य में कर्त्ता और क्रिया का होना आवश्यक है किन्तु कभी-कभी कुछ उपवाक्य ऐसे भी देखने में आते हैं, जिनमें वाक्य का कर्त्ता छिपा रहता है। कभी-कभी क्रिया भी किसी उपवाक्य में देखने में नहीं आती। ऐसी स्थिति में क्या किया जाए? अतः कृपया यह भी बतलाने का कष्ट करें कि इस प्रकार के वाक्यों में हम उपवाक्य कैसे पहचानेंगे?''

प्रश्न उनका सही था। इसलिए मैंने उन्हें कुछ ऐसी बातों का ध्यान रखने को कहा जिनसे वे इस समस्या का समाधान ढूँढ सकें।

कर्ता उपवाक्य

''बुरा न मानों तो एक बात कहूँ?' इस वाक्य को जैसे ही मैंने बोला- उन्होनें कहा, 'हम बुरा क्यों मानेंगे?'

मैंने हँसकर कहा- 'मैंने यह वाक्य इसलिए बोला कि इस उपवाक्य में कर्त्ता कहाँ है?'

मैंने पुनः कहा इसमें दो उपवाक्य है-

(क) आप बुरा न मानें? - उपवाक्य

(ख) तो (मैं) एक बात कहूँ- उपवाक्य

प्रथम उपवाक्य में कर्त्ता 'आप' हैं, दूसरे में मैं । यह बात उपवाक्यों को अलग-अलग करके देखना चाहिए। इस प्रकार कभी-कभी एक वाक्य में दो उपवाक्य होने पर कर्त्ता दो भी हो सकते हैं।''

फिर मैंने कहा-

(क) ''कहते हैं।

(ख) सुना जाता है।

(ग) मालूम पड़ता है।

इनमें भी कर्त्ता छिपे हुए है किन्तु इसका आशय यह नहीं कि ये उपवाक्य नहीं है।''

क्रिया उपवाक्य-

अब क्रिया संबंधी कुछ उपवाक्यों पर ध्यान दें-

1. राम पढ़ता **और** लिखता है।
2. राम न पढ़ता है, **न** लिखता है।
3. राम पढ़ता है, **या** टी.वी. देखता है।

तीनों वाक्यों में 'राम' कर्त्ता है किन्तु उसके साथ दो क्रियाएँ एक ही वाक्य में जुड़ी हैं। अत: ऐसे वाक्यों में जितनी क्रियाएँ होंगी, उतने ही उपवाक्य माने जाएँगे। अत: ऐसे वाक्यों में प्रयुक्त अलग-अलग क्रियाओं के साथ कर्त्ता का प्रयोग भी अलग अलग करके उपवाक्य की पहचान करना चाहिए; जैसे-

1.	(क)	राम पढ़ता है।	(उपवाक्य)
	(ख)	राम लिखता है।	(उपवाक्य)
2.	(क)	राम न पढ़ता है।	(उपवाक्य)
	(ख)	राम न लिखता है।	(उपवाक्य)
3.	(क)	राम पढ़ता है।	(उपवाक्य)
	(ख)	राम टी.वी. देखता है।	(उपवाक्य)

विशेष

एक बात और ध्यान में रखें- कभी-कभी लेकिन, परन्तु, इसलिए, मानो, जैसे आदि के बाद भी क्रिया छिपी रहती है। ऐसे वाक्यों में छिपी हुई क्रियाएँ प्रकट कर उपवाक्य अलग कर देना चाहिए; जैसे- राम निर्धन है, पर है ईमानदार।

(क) राम निर्धन है। (उपवाक्य)

(राम) ईमानदार है। (उपवाक्य)

रोचक तथ्य-

1. उपवाक्य वाक्य से छोटी इकाई है।
2. उपवाक्य में क्रिया का होना आवश्यक है।
3. उपवाक्य पद बंध की अपेक्षा अधिक भाव प्रकट करते हैं।
4. एक वाक्य में एक से अधिक उपवाक्य हो सकते हैं।
5. सरल वाक्य में उपवाक्य नहीं होते क्योंकि वह स्वतंत्र रूप से उपवाक्य ही है।
6. संयुक्त तथा मिश्रित वाक्य में उपवाक्य होते हैं।

उपवाक्य के भेद

2. उपवाक्य का अध्ययन करते समय निम्नलिखित आरेख का ध्यान रखें-

वाक्य

सरल वाक्य (एक उपवाक्य)

जटिल वाक्य (एक से अधिक उपवाक्य)

संयुक्त वाक्य (परस्पर स्वंतत्र उपवाक्य)

मिश्रवाक्य (परस्पर आश्रित उपवाक्य)

इस प्रकार वाक्य दो प्रकार से कहे, तथा लिखे जा सकते हैं; या तो सरल वाक्य के रूप में या जटिल वाक्य के रूप में। सरल वाक्य में प्राय: एक उपवाक्य का प्रयोग होता है। एक उपवाक्य से अधिक उपवाक्य आने पर दो स्थितियाँ देखने को मिलती हैं-

1. परस्पर स्वतंत्र दो या दो से अधिक उपवाक्य जो समुच्चय बोधक अव्यय द्वारा जुड़े हों, और एक दूसरे पर आश्रित न हों। (संयुक्त वाक्य)
2. परस्पर आश्रित उपवाक्य जिनमें एक उपवाक्य प्रधान होता है। दूसरा आश्रित वाक्य होता है। ऐसे वाक्य में प्रधान उपवाक्य एक ही होता है किन्तु आश्रित उपवाक्य एक या एक से अधिक भी हो सकता है।(मिश्र वाक्य)

1. सरल वाक्य (एक उपवाक्य)

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि सरल वाक्य में उपवाक्य नहीं होता है, फिर भी एक सरल वाक्य को स्वतंत्र रूप से उपवाक्य कहा जाता है क्योंकि उसमें एक कर्त्ता (उद्देश्य) व ,एक मुख्य क्रिया (विधेय) होती है। किन्तु आवश्यक नहीं कि प्रत्येक सरल वाक्य में मुख्य क्रिया एक ही हो। एक सरल वाक्य में मुख्य क्रिया के साथ-साथ एक से अधिक क्रियाएँ भी हो सकती हैं। इस दृष्टि से सरल वाक्य दो प्रकार के होते हैं-

1. विधायक सरल वाक्य
2. व्यापार (क्रिया) बोधक सरल वाक्य।

1. विधायक सरल वाक्य-

ऐसे सरल वाक्य अपनी संरचना में अव्यय पद (रीति वाचक क्रिया विशेषण) के रूप में एक अन्य सरल उपवाक्य में अंतर्निहित होते हैं। इन्हें सम्पुटित सरल वाक्य कहा जा सकता है। ऐसे सम्पुट (संश्लेषित) सरल वाक्य संयुक्त वाक्यों के संश्लिष्ट रूप होते हैं; जैसे-

मोहन बोलेगा तो राधा लिखेगी। (संयुक्त वाक्य)

मोहन के बोलते ही राधा लिखेगी। (संश्लेषित संयुक्त वाक्य)

इस संबंध में अधिक विस्तार से हम अगले अध्यायों में विचार करेंगे।

2. व्यापार (क्रिया) बोधक सरल वाक्य-

क्रिया बोधक सरल वाक्यों में किसी घटना को स्पष्ट किया जाता है। इन वाक्यों को तीन प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है-

(क) अकर्मक क्रिया पद वाले सरल वाक्य- ऐसे वाक्यों की क्रियाएँ कर्म प्रधान नहीं होती हैं। आवश्यकता पड़ने पर वे अव्यय पदों को ग्रहण करती हैं; जैसे - राजू **दिनभर** पढ़ता है। (अव्यय)

(ख) सकर्मक क्रिया पद वाले सरल वाक्य- ऐसे वाक्यों की क्रियाएँ कर्म प्रधान होती हैं, तथा आवश्यकतानुसार अव्यय- पदों को भी ग्रहण करती हैं। जैसे - राजू दिनभर पुस्तक पढ़ता है।

ऐसे वाक्यों को कर्म की आवश्यकतानुसार दो वर्गों में रखा जाता है-

(अ) एककर्मक- राजू पुस्तक पढ़ता है। (एक कर्मक)

(ब) द्विकर्मक- राजू मोहन की पुस्तक पढ़ता है। (द्विकर्मक)

(ग) क्रिया पद की संरचना के आधार पर बनने वाले सरल वाक्य-

1. एक क्रियापदीय सरल वाक्य- राधा ने मोहन को दूर जाने का संकेत <u>दिया</u>।
2. द्विक्रिया पदीय सरल वाक्य- वह मंदिर रोज़ <u>जाता</u> है।
3. तीन क्रिया पदीय सरल वाक्य- वह मंदिर <u>जा</u> <u>रहा</u> <u>होगा</u>।

4. चार क्रिया पदीय सरल वाक्य- वह मंदिर भागता जा रहा होगा।
5. पाँच क्रिया पदीय सरल वाक्य- वह मंदिर भागता चला जा रहा था।
6. संयुक्त क्रिया पदीय सरल वाक्य- राधा ने मोहन को दूर जाने का संकेत दिया था।

उपरोक्त सभी प्रकार के वाक्य सरल वाक्य हैं क्योंकि इनमें एक ही मुख्य क्रिया है। मुख्य क्रिया की पहचान यह है कि उससे वाक्य समाप्त होता है और अर्थ को पूर्णता मिलती है।

रोचक तथ्य-

- जिन अवयवों को मिलाकर वाक्य की रचना होती है, उन्हें वाक्य के अंग या घटक कहते हैं। वाक्य के मूल एवं अनिवार्य घटक हैं- कर्त्ता और क्रिया। इन दोनों के बिना वाक्य की रचना संभव नहीं। इसके अतिरिक्त वाक्य के ऐच्छिक घटक हैं— विशेषण, क्रिया विशेषण, कारक आदि।
- कर्त्ता तथा क्रिया पक्ष के आधार पर वाक्य के दो पक्ष होते हैं- उद्देश्य और विधेय। इनका विस्तार से अध्याय-पाँच में वर्णन किया गया है।

2. संयुक्त वाक्य

संयुक्त वाक्य में समानाधिकरण उपवाक्य होते हैं। समान अधिकरण इन दोनों शब्दों से समानाधिकरण शब्द बना है। समान का अर्थ होता है बराबर, या एक श्रेणी के अर्थात् जो उपवाक्य एक श्रेणी के होते हैं, उन्हें समानाधिकरण उपवाक्य कहते हैं। ये उपवाक्य चार प्रकार से अपना संबंध प्रमुख उपवाक्य से स्थापित करते हैं। यह संबंध समानाधिकरण समुच्चय बोधकों द्वारा होता है किन्तु कहीं-कहीं समुच्चय बोधक अव्यय लुप्त भी रहता है। हम दोनों प्रकार के उदाहरण यहाँ दे रहे हैं-

1. **संयोजक**- (और, तथा, व आदि शब्दों द्वारा)
   (अ) वह विद्वान भी है और नम्र भी
   (ब) तुम्हीं नहीं, राम भी वहाँ जाएगा। यहाँ 'और' शब्द लुप्त है।
2. **विरोधक**- (परन्तु, किन्तु शब्दों द्वारा)
   (अ) वह दिन-रात कमाई में लगा रहता है किन्तु भाग्य उसका साथ नहीं दे रहा है।
   (ब) मैं जाना चाहता था परन्तु जा न सका।
3. **विभेदक**- (या, अथवा, चाहे आदि शब्दों द्वारा)
   (अ) तुम जाओ या तुम्हारा भाई।
   (ब) पेंसिल अथवा पेन से लिख सकते हो।
4. **परिणामसूचक**- (इसलिए, अत:, अतएव आदि शब्दों द्वारा)
   (अ) उसने पढ़ना छोड़ दिया इसलिए कहीं नौकरी नहीं मिल रही है।
   (ब) उसने पढ़ना नहीं छोड़ा, अत: ऊँची नौकरी पा गया।

3. मिश्र उपवाक्य

मिश्र उपवाक्य में केवल एक ही प्रधान उपवाक्य, और एक ही आश्रित उपवाक्य होता है। यदि आश्रित उपवाक्य न रहे तो वह सरल वाक्य की कोटि में गिना जाएगा। मिश्र वाक्य की सबसे सरल पहचान यह है कि आश्रित वाक्य अपने में पूर्ण या सार्थक नहीं होने पर प्रधान वाक्य के साथ आने से उनका अर्थ या भाव स्पष्ट होता है।

जैसे- यह वही भारत है, जो सोने की चिड़िया कहलाता है।

प्रधान उपवाक्य आश्रित उपवाक्य

एक सज्जन ने प्रश्न किया कि हम प्रधान उपवाक्य तथा आश्रित उपवाक्य की पहचान किस प्रकार कर सकते हैं, इस पर भी प्रकाश डालें।

मैंने स्पष्ट किया कि यदि हम निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखेंगे, तो दोनों प्रकार के उपवाक्यों में अन्तर समझ सकते हैं।

1. प्रधान उपवाक्य में क्रिया प्रधान होती है।
2. आश्रित उपवाक्य का प्रारंभ कि, जो, जिसे, यदि, क्योंकि, आदि शब्दों से होता है। उपरोक्त उदाहरण में आश्रित उपवाक्य का प्रारंभ 'जो' शब्द से हुआ है।

आश्रित उपवाक्यों के भेद-

मिश्र वाक्य में आश्रित उपवाक्यों की संख्या तीन है-

1. संज्ञा उपवाक्य
2. विशेषण उपवाक्य
3. क्रिया विशेषण उपवाक्य

रोचक तथ्य-

मिश्र वाक्य में आश्रित वाक्य को मिलाने वाले शब्दों की पहचान इस प्रकार करें।

1. **संज्ञा उपवाक्य** बहुधा 'कि' शब्द से प्रधान उपवाक्य को मिलाते हैं।
2. **विशेषण- उपवाक्य** जो, जिसने, जिसको तथा ऐसे शब्द जो 'जो' शब्द के रूपान्तर होकर उपवाक्य को प्रधान उपवाक्य से मिलाते हैं।
3. **क्रिया विशेषण उपवाक्य**- जब-तब, ज्यों-त्यों, यहाँ-वहाँ इत्यादि शब्द जो उपवाक्य को प्रधान उपवाक्य से मिलाते हैं।
4. कुछ समुच्चय बोधक शब्द जो मिश्र वाक्य में आते हैं-

चूँकि - इसलिए
जैसे - वैसे
चाहे - परन्तु
यदि - तो

ज्यों ही - त्यों ही
ऐसे - जैसे
जैसे - वैसे
जहाँ - वहाँ
जब - तब

(क) संज्ञा उपवाक्य

जो प्रधान उपवाक्य, वाक्य की किसी संज्ञा/संज्ञा पद बंध के स्थान पर कर्म या पूरक का काम करता है, उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं।

संज्ञा उपवाक्य का प्रारंभ 'कि' शब्द से होता है, जो कर्म या पूरक का काम करता है।

जैसे—

1. मैं नहीं जानता कि वह कौन है?
   (क) मैं नहीं जानता। (प्रधान उपवाक्य)
   (ख) कि वह कौन है? (संज्ञा उपवाक्य) जानने का पूरक
2. मेरी इच्छा है कि तुम दिल्ली जाओ।
   (क) मेरी इच्छा है (प्रधान उपवाक्य)
   (ख) कि तुम दिल्ली जाओ (संज्ञा उपवाक्य) इच्छा का पूरक

रोचक तथ्य-

1. कभी-कभी सकर्मक क्रिया के बाद 'कि' छिपा रहता है, तथा 'कि' के स्थान पर अल्पविराम (,) का प्रयोग होता है। ऐसे वाक्य भी संज्ञा उपवाक्य कहे जाते हैं; जैसे- गोपियो! पता नहीं कृष्ण कब आएँगे।
   (क) पता नहीं (है) प्रधान उपवाक्य
   (ख) (कि) कृष्ण कब आएँगे। संज्ञा उपवाक्य
2. जो उपवाक्य उद्धरण चिह्नों (''-----'') के भीतर रहते हैं, वे संज्ञा उपवाक्य होते हैं क्योंकि 'कथन' संज्ञा की तरह ही कर्म अथवा पूरक का काम करते हैं।
   जैसे- किसी ने सच कहा है- 'अंतिम विजय सत्य की होती है।'
   (क) किसी ने सच कहा (प्रधान उपवाक्य)
   (ख) अंतिम विजय सत्य की होती है। (संज्ञा उपवाक्य)
3. संज्ञा उपवाक्य का प्रयोग दो प्रकार से किया जाता है; जैसे-

(क) <u>उसे पता है कि</u> <u>तुम आज घर नहीं आओगे।</u>
प्रधान उपवाक्य संज्ञा आश्रित उपवाक्य
(इस वाक्य में संज्ञा आश्रित उपवाक्य का प्रयोग वाक्य के अंत में हुआ है।)

(ख) राम नहीं पढ़ेगा, यह बात मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

(इस वाक्य में संज्ञा उपवाक्य का प्रयोग प्रारम्भ में हुआ है।)

(ग) तुम आज घर नहीं आओगे, उसे पता है

संज्ञा आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य

(इस वाक्य में 'कि' का लोप है। यहाँ संज्ञा आश्रित उपवाक्य का प्रयोग प्रारम्भ में हुआ है।)

(ख) विशेषण उपवाक्य

जो आश्रित उपवाक्य प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा/ सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेषण उपवाक्य कहते हैं। विशेषण उपवाक्य का प्रयोग सर्वनाम 'जो' अथवा इसके रूपान्तरित शब्दों (जिसने, जिसे, जिससे, जिनको , जिनके, जहाँ आदि) से होता है।

जैसे- जो करेगा वो भरेगा।

(क) वो भरेगा। (प्रधान उपवाक्य) सर्वनाम सूचक 'वो'

(ख) जो करेगा। (विशेषण उपवाक्य)

अन्य उदाहरण-

विशेषण उपवाक्यों का प्रयोग दो प्रकार से होता है-

(क) मैं उस छात्र से परिचित हूँ, जो पढ़ने में बहुत तेज है।

प्रधान उपवाक्य आश्रित विशेषण उपवाक्य

(इस वाक्य में आश्रित विशेषण उपवाक्य छात्र की विशेषता बता रहा है।) यहाँ आश्रित विशेषण उपवाक्य वाक्य के अंत में आया है।

(ख) जो पढ़ने में बहुत तेज है, उस छात्र से मैं परिचित हूँ।

आश्रित विशेषण उपवाक्य प्रधान उपवाक्य

(इस वाक्य में विशेषण उपवाक्य का प्रयोग प्रारम्भ में हुआ है।)

(ग) क्रिया-विशेषण उपवाक्य

जो आश्रित उपवाक्य प्रधान वाक्य की क्रिया की विशेषता बताता है, उसे क्रिया विशेषण उपवाक्य कहते हैं।

क्रिया- विशेषण उपवाक्य पाँच प्रकार के होते हैं-

1. कालवाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य

जब किसी उपवाक्य का प्रारंभ-जब, जब-तक, जब-जब, ज्यों ही आदि समय सूचक शब्दों से होता है, तो वह कालवाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य कहा जाता है। प्राय: ये शब्द समय का बोध कराते हैं।

जैसे-

1. **वह जब-जब आता है, तब-तब मेरे लिए कुछ लाता है।**

काल वाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य-प्रधान उपवाक्य

(यहाँ जब-जब शब्द समय सूचक है।)

2. स्थानवाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य

जब किसी उपवाक्य का प्रारंभ जहाँ अथवा जिधर से होता है, तो वह उपवाक्य स्थानवाचक क्रिया विशेषण होता है। यह शब्द स्थान का सूचक होता है।

जैसे- **जहाँ तुम रहते हो,** **वहीं मैं रहता हूँ।**

स्थान वाचक क्रिया विशेषण प्रधान उपवाक्य

(क्योंकि यहाँ 'जहाँ' शब्द स्थान का सूचक है।)

3. रीतिवाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य-

इन उपवाक्यों का प्रारंभ जिस प्रकार, मानों से होता है। ये शब्द 'तुलना' का भाव प्रकट करते हैं।

जैसे- आपको वैसा करना चाहिए, जैसा मैं करता हूँ।

प्रधान उपवाक्य रीति वाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य

4. परिमाणवाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य

इन उपवाक्यों का प्रारंभ 'ज्यों-ज्यों, जैसे-जैसे, जितना-जितना, जहाँ-जहाँ से होता है। इन शब्दों से मात्रा या अनुपात का भाव प्रकट होता है।

(क) जैसे- जहाँ तक हो सके सबकी मदद करना चाहिए।

परिमाणवाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य प्रधान उपवाक्य

(ख) जैसे-जैसे सर्दी बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे दिन छोटे होते जाते हैं।

प्रधान उपवाक्य परिमाण वाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य

जितनी तुम मुझसे अपेक्षा करते हो, उतनी मैं नहीं कर पाऊँगा।

प्रधान उपवाक्य परिमाण वाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य

5. कार्य कारण वाचक क्रिया-विशेषण उपवाक्य

इन उपवाक्यों का प्रारंभ क्योंकि, चूँकि, ताकि, यदि, यद्यपि, कितना भी, चाहे, भले ही, जिससे कि, इसलिए आदि उन शब्दों के साथ होता है, जो शर्त या उद्देश्य के भाव प्रकट करते हैं।

जैसे- मैं उससे नहीं बोलता क्योंकि वह लम्पट है।

प्रधान उपवाक्य कारण वाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य

रोचक तथ्य-

1. कार्य-कारण क्रिया-विशेषण उपवाक्य चार प्रकार के होते हैं-

(क) कारण-वाचक- मैं आज विद्यालय नहीं जाऊँगा, क्योंकि मेरे सिर में दर्द हैं।

(इस प्रकार के उप वाक्य का प्रारम्भ क्योंकि से होता है।)

(ख) परिणाम वाचक- मोहन ने सोहन को ऐसा धक्का दिया कि वह गिरते-गिरते बचा।

(इस प्रकार के उपवाक्य का प्रारम्भ 'कि' से होता है।)

(ग) संकेत वाचक- यदि तुम श्रम करोगे तो अवश्य सफल होगे।

(इस प्रकार के वाक्य का प्रारम्भ यदि से होता है। मुख्य उपवाक्य से उसका संबंध 'तो' से रहता है)

(घ) विरोध वाचक- यद्यपि उसके हाथ में चोट लगी थी तो भी वह काम करता रहा।

(इस प्रकार के वाक्य का प्रारम्भ 'यद्यपि' से होता है, तथा उसका संबंध 'तो' से होता है।)

विशेष-

1. कारण वाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य में कभी-कभी ऐसे वाक्य भी देखने में आते हैं, जिनके कारण सूचक शब्द छिपे रहते हैं किन्तु भाव स्पष्ट रहता है।

   (चाहे) ठुकरा दो या प्यार करो, मैं तुम्हें सदैव चाहता रहूँगा।

   कारण वाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य प्रधान उप वाक्य

2. (तुम) मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।

   कारण वाचक क्रिया क्रिया प्रधान उपवाक्य

   विशेषण उपवाक्य

   जो शर्त बताता है।

संज्ञा उपवाक्य तथा क्रिया विशेषण उपवाक्य में अन्तर

1. कभी-कभी 'जिससे' के पहले यदि 'कि' का प्रयोग होता है, तो उसे क्रिया विशेषण उपवाक्य की श्रेणी में रखा जाता है, संज्ञा उपवाक्य में नहीं। क्योंकि इस प्रकार के 'कि' से परिणाम या कारण का भाव प्रकट होता है।

   ऐसे वाक्यों की पहचान करने के लिए प्रधान वाक्य पर ध्यान देना चाहिए। प्रधान वाक्य में यदि उतना-जितना या ऐसा -वैसा लगा हो तो उसे क्रिया विशेषण उपवाक्य कहा जाता है।

   जैसे- वह इतना बदमाश है कि किसी की सुनता ही नहीं

   प्रधान उपवाक्य क्रिया विशेषण उपवाक्य

2. कभी-कभी 'कि', 'ज्यों ही' शब्दांशों से (समय) का बोध होता है। इसलिए इस प्रकार के उपवाक्य क्रिया विशेषण उपवाक्य होते हैं, संज्ञा उपवाक्य नहीं।

   जैसे- मैं घर से निकला ही था कि वर्षा होने लगी।

   प्रधान उपवाक्य क्रिया विशेषण उपवाक्य

   (यहाँ 'कि' समय-सूचक शब्द है

विशेष-

4. प्रयोजन वाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य

जो उपवाक्य क्रिया का प्रयोजन (उद्देश्य) प्रकट करता है, उसे प्रयोजन वाचक उपवाक्य कहते हैं। ऐसे उपवाक्य ताकि, जिसमें आदि से प्रारंभ होते हैं।

जैसे- <u>कुछ रुपए और रख लो</u> <u>ताकि कम न पड़े।</u>

प्रधान उपवाक्य (ताकि) प्रयोजन वाचक क्रिया विशेषण उपवाक्य

समानाधिकरण उपवाक्य

एक प्रतिभागी ने पूछा कि "आपने अभी हम लोगों को प्रधान और आश्रित उपवाक्यों के विषय में जानकारी दी। किन्तु कभी-कभी किसी वाक्य में एक ही तरह के अनेक उपवाक्य भी आ सकते हैं। तो हम उनकी पहचान किस प्रकार करें?"

सज्जन की कठिनाई वास्तविक थी। एक उदाहरण द्वारा मैंने इसे स्पष्ट किया।

जैसे-

मैं नहीं जानता कि वह कब पढ़ता है और कहाँ पढ़ता है?

प्रधान उपवाक्य संज्ञा उपवाक्य (प्रथम) संज्ञा उपवाक्य (द्वितीय)।

इस प्रकार, कहाँ पढ़ता है- उपवाक्य को हम दूसरा संज्ञा उपवाक्य होने से समानाधिकरण उपवाक्य कहेंगे। यह पूरा वाक्य मिश्र वाक्य का उदाहरण है क्योंकि प्रधान उपवाक्य अन्य दोनो आश्रित उपवाक्यों पर निर्भर करता है।

रोचक तथ्य—

- संयुक्त वाक्य भी समानाधिकरण उपवाक्यों से जुड़ा रहता है किन्तु उनका संबंध समानाधिकरण समुच्चय बोधको से जुड़ता है। साथ ही संयुक्त वाक्य के सभी उपवाक्य स्वतंत्र और समान स्तर के होते हैं।

जैसे—मैंने अपने साथी को पुस्तक दी, और राम को पेन दिया।

(यहाँ मैंने- पुस्तक दी और राम.... दिया दोनों वाक्य स्वतंत्र है। अतः यह संयुक्त वाक्य का उदाहरण है।)

04

वाक्य के भेद एवं रूपान्तरण

क. अर्थ के आधार पर

1. विधान वाचक वाक्य
2. निषेधात्मक वाक्य
3. प्रश्नवाचक वाक्य
4. इच्छा वाचक वाक्य
5. संदेह वाचक वाक्य
6. आज्ञा वाचक वाक्य
7. संकेत वाचक वाक्य
8. विस्मय वाचक वाक्य

ख. संरचना के आधार पर

1. सरलवाक्य
2. संयुक्त वाक्य
3. मिश्रित वाक्य

ग. वाच्य के आधार पर

1. कर्तृ वाच्य
2. कर्म वाच्य
3. भाव वाच्य

वाक्य के भेद

वाक्य भेद का निर्धारण तीन-स्तरों पर किया जा सकता है-

(1) अर्थ के आधार पर

(2) संरचना के आधार पर

(3) वाच्य के आधार पर

अब इसे विस्तार से जाने।

(क) अर्थ के आधार पर वाक्य रचना के भेद

मैंने एक कक्षा के छात्रों को अर्थ अथवा भाव की दृष्टि से कुछ वाक्यों की रचना करने को कहा। लिखने से पूर्व अपने कथन को स्पष्ट करने के लिए उनको इतना अवश्य बतलाया कि मैं उदाहरण स्वरूप एक वाक्य श्यामपट पर लिखूँगा, जिसे हम सामान्य कथन कह सकते हैं।

इसको आधार बनाकर तुम्हें कुछ ऐसे वाक्य बनाना है जिसमें नकारात्मक भाव, किसी में आज्ञा का भाव, किसी में प्रश्न पूछने का भाव, किसी में संकेत का, किसी में विस्मय (आश्चर्य) का, किसी में संदेह का किसी में इच्छा अथवा अनुमति का भाव होना चाहिए। सुविधा के लिए मैंने इन भावों को क्रमशः इस प्रकार लिख दिया-

1. विधान-वाचक- खिलाड़ी मैदान में खेल रहे हैं। (सकारात्मक वाक्य)
2. नकारात्मक (निषेधात्मक वाक्य)
3. आज्ञार्थक वाक्य
4. प्रश्नवाचक वाक्य
5. इच्छावाचक वाक्य
6. संकेत वाचक वाक्य
7. संदेह वाचक वाक्य
8. विस्मयादिबोधक वाक्य

सभी छात्रों ने अपने-अपने ढंग से वाक्य रचना की किन्तु एक छात्र ने जो वाक्य बनाए वे इस प्रकार थे-

1. बच्चे मैदान में खेल रहे हैं। (सकारात्मक वाक्य)
2. बच्चे मैदान में नहीं खेल रहे हैं। (नकारात्मक वाक्य)
3. बच्चों, मैदान में जाकर खेलो। (आज्ञार्थक वाक्य)
4. क्या, बच्चे मैदान में खेल रहे हैं? (प्रश्नवाचक वाक्य)
5. बच्चो को मैदान में खेलना चाहिए। (इच्छा वाचक वाक्य)
6. यदि अनुमति हो तो बच्चे मैदान में खेलें।(संकेत वाचक वाक्य)
7. शायद बच्चे मैदान में खेल रहे होंगे। (संदेह वाचक वाक्य)
8. अरे! बच्चे मैदान में खेलेंगे। (विस्मयादि बोधक वाक्य)

छात्र की वाक्य रचना को देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने उससे पूछा: आपको वाक्य बनाने में कोई कठिनाई तो नहीं हुई। छात्र ने कहा- नहीं, क्योंकि इन्हें मैंने रट लिया था। किसी वाक्य की पहचान करना कि यह किस प्रकार का वाक्य है, बताना मेरे वश की बात नहीं। इसका उत्तर सुनकर मुझे संतोष हुआ। यही स्थिति लगभग अधिकांश छात्रों की है।

वाक्यों की संरचना

फिर मैंने छात्रों को बतलाया कि 'अर्थ की दृष्टि से आठ प्रकार के वाक्य बनाए जा सकते हैं। उन वाक्यों के नाम आप सभी को मैंने छात्र द्वारा लिखित उदाहरणों की सहायता से लिखकर बतलाए किंतु उनकी संरचना के विषय में स्पष्ट समझ विकसित करने के लिए आज हम इन्हें जानने का प्रयत्न करेंगे। साथ ही यह भी जानेंगे कि यहाँ इन वाक्यों को जिस प्रकार से लिखकर बतलाया है, इससे यह भी सिद्ध होता है कि किसी भी वाक्य को इन आठ प्रकारों से आवश्यकतानुसार वाक्य में परिवर्तन/रूपान्तरण किया जा सकता है। एक वाक्य का इस प्रकार अन्य वाक्यों में परिवर्तन करना- वाक्यों का रूपांतर अथवा रूपांतरण कहलाता है। आइए, इस

संबंध में उदाहरण सहित, वाक्यों की संरचना करना सीखें।' श्यामपट्ट पर लिखे वाक्य को मैंने पुन: उदाहरण देकर समझाया।

1. प्राय: आधार भूत वाक्य कथनात्मक (सकारात्मक) होता है। श्यामपट्ट पर लिखा हुआ प्रथम वाक्य आधारभूत वाक्य है।
2. नकारात्मक वाक्य में नहीं, 'न' लगाकर वाक्य रूपान्तरण किया जाता है। इसे ही निषेधात्मक वाक्य कहते हैं।
3. आज्ञावाचक वाक्य दो प्रकार के होते हैं। निषेधात्मक आज्ञा में 'मत' का प्रयोग किया जाता है; जैसे- यहाँ कचरा मत डालो। सकारात्मक आज्ञा का उदाहरण हम जान चुके हैं; जैसे- बच्चो! गाय का चित्र बनाओ।
4. प्रश्नवाचक वाक्य क्या, कब, कैसे, कहाँ, क्यों, किधर, किसलिए, लगाकर बनाया जाता है, तथा वाक्य के अन्त में प्रश्नवाचक चिह्न लगाया जाता है।
5. इच्छा वाचक वाक्य में 'चाहिए' शब्द का प्रयोग होता है। कभी-कभी 'मैं चाहता हूँ कि' लिखकर भी वाक्य रचना की जा सकती है।
6. संकेत वाचक वाक्य का प्रारंभ 'यदि' शब्द से प्रारंभ किया जाना चाहिए। यदि का प्रयोग कोष्ठक में रखकर भी किया जा सकता है।
7. संदेह वाचक वाक्य की रचना 'शायद' का प्रयोग प्रारंभ में करके की जा सकती है।
8. विस्मयादि वाचक वाक्य रचना में विस्मयादि बोधक शब्दों का प्रयोग प्रारंभ में करके करना चाहिए जैसा कि वाक्य क्रमांक 8 में अरे! शब्द का प्रयोग किया गया है।

इस प्रकार हम अर्थ/भाव की दृष्टि से वाक्यों की संरचना कर सकते हैं। कुल आठ प्रकार के इन वाक्यों से ही अपने भाव को अन्य किसी के समक्ष व्यक्त कर सकते हैं।

कुछ वैयाकरणों ने अन्य दो प्रकार के वाक्य संरचना की ओर भी संकेत किया है, उसे भी यहाँ जान ले-

1. प्रार्थना- हमारी रक्षा कीजिए।
2. आग्रह - बैठिए न!

अब इन आठ प्रकार के वाक्यों को यदि आप चाहें तो आठों प्रकार से लिख सकते हैं, जैसे—

1. स्वाध्याय से जीवन सफल होता है। (सकारात्मक वाक्य)
2. जो स्वाध्याय नहीं करते, उनका जीवन सफल नहीं होता। (निषेधात्मक वाक्य)
3. स्वाध्याय करें, सफलता मिलेगी। (आज्ञार्थक वाक्य)
4. क्या स्वाध्याय से सफलता नहीं मिलती? (प्रश्नवाचक वाक्य)
5. सफलता चाहते हो, तो स्वाध्याय करो। (इच्छावाचक वाक्य)
6. स्वाध्याय करोगे, तो सफलता अवश्य मिलेगी। (संकेतवाचक वाक्य)
7. शायद स्वाध्याय से ही सफलता मिलती है। (संदेहवाचक वाक्य)
8. ध्रुवसत्य! स्वाध्याय से ही सफलता मिलती है। (विस्मयादि बोधक वाक्य)

अब इन वाक्यों को और विस्तार से जानें—

1. विधान वाचक (सकारात्मक वाक्य)

जिन वाक्यों में किसी बात या कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे विधान वाचक वाक्य कहते हैं; जैसे- सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है।

(सूर्य के उदय होने का बोध)

विशेष-

1. जहाँ किसी वाक्य में चाहिए अर्थ की प्रतीति हो, उसे विधान वाचक वाक्य कहते हैं, जैसे- तुम्हें यह काम करना चाहिए।
2. विधान वाचक वाक्य आज्ञार्थक भी होते हैं; जैसे- उसे आलस्य नहीं करना चाहिए। (मध्यमपुरुष एवं अन्य पुरुष विधान वाचक वाक्य के उदाहरण अधिक देखने को मिलते हैं।)

2. निषेधात्मक वाक्य (नकारात्मक वाक्य)

जिन वाक्यों में किसी बात या कार्य के न करने या न होने का बोध होता है, उसे निषेधात्मक वाक्य कहते हैं।

ऐसे वाक्य सकारात्मक वाक्यों में **नहीं, न, मत** लगाकार बनाए जाते हैं।

जैसे-वह पढ़ रहा है — वह नहीं पढ़ रहा है।

सकारात्मक वाक्य — नकारात्मक वाक्य

उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि क्या, क्यों, कहाँ, थोड़े ही, भला, चुका आदि प्रश्नवाचक शब्दों तथा विशेष अनुतानों के द्वारा भी निषेधात्मक अर्थ का बोध कराया जा सकता है।

विशेष- न/ नहीं दोनों ही एक ही अर्थ के बोधक हैं, फिर भी इनके प्रयोग में भिन्नता है। 'न' से निश्चय का भाव प्रकट नहीं होता है, पर नहीं से अवश्य (निश्चय) का भाव प्रकट होता है। अत: जहाँ निश्चय का भाव प्रकट करना हो, वहाँ 'न' का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

जैसे-

(क) 'न' का प्रयोग-

- राम संभवत: पढ़ने **न** जाए।
- वह कहीं भाग **न** जाए, उस पर ध्यान रखना।
- **न** मैं बोलूँ, न मेरे साथी बोले।

(यहाँ ध्यान रहे 'न' का प्रयोग प्राय: वाक्य के प्रारंभ या अंत में हो रहा है।)

(ख) नहीं का प्रयोग-

- वह तुम्हारे साथ **नहीं** पढ़ेगा।
- वह काम चोर **नहीं,** एक भला आदमी है।
- तुम पढ़ोगे **नहीं**?

(नहीं का प्रयोग प्राय: वाक्य के मध्य में अथवा अन्त में होता है। अंत में होने पर उससे प्रश्न सूचक भाव प्रकट होता है।)

(ग) मत का प्रयोग-

- मुझसे बात मत करो।
- जब दो व्यक्ति बात कर रहे है, तो बीच में मत बोलो।
- व्यर्थ के झंझट में मत पड़ो।

(मत से भी निषेध का बोध होता है। पर इसका प्रयोग आज्ञा या परामर्श का भाव प्रकट करने के लिए होता है। अत: ऐसे वाक्यों में 'न' या नहीं का प्रयोग करना ठीक नहीं। मत का प्रयोग प्राय: मध्य पुरुष श्रोता के लिए आता है।)

रोचक तथ्य-

1. नकारात्मक वाक्यों की रचना निम्नलिखित रीति से भी की जा सकती है।

(क) मैं तो अब पढ़ने से रहा। (नहीं पढूँगी)
(ख) अब तुम मुझे पुस्तक क्यों दोगे? (नहीं दोगे)
(ग) अब वह कहाँ मिलेगी? (नहीं मिलेगी)
(घ) वह तुम्हें पुस्तक अब क्या देगा? (नहीं देगा)
(ङ) मैं उनसे थोड़े ही डरता हूँ। (नहीं डरता)
(च) भला वह यहाँ आएगा? (नहीं आएगा)
(छ) वह पढ़ चुका? (नहीं पढ़ेगा)

2. आज्ञावाचक वाक्य

जिन वाक्यों में किसी बात / काम के लिए आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश, विषयक भाव रहता है, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहा जाता है; जैसे-

1. तुम अभी चले जाओ। (आज्ञा)
2. कृपया, यहाँ शोर न करें। (प्रार्थना)
3. बड़ों का कहना मानो (उपदेश)
4. प्राचार्य महोदय, आज मुझे अवकाश देने की कृपा करें। (विनय)

3. प्रश्नवाचक वाक्य-

जिन वाक्यों में वक्ता कोई प्रश्न पूछता है, उन्हें प्रश्न वाचक वाक्य कहते हैं। ऐसे वाक्य सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों ही प्रकार से बनाए जा सकते हैं। ऐसे वाक्यों के अंत में प्रश्न वाचक चिह्न अवश्य लगाया जाता है; जैसे-

1. उसका घर कहाँ है? (सकारात्मक प्रश्न वाचक वाक्य)
2. क्या तुम पढ़ने नहीं जाओगे? (नकारात्मक प्रश्नवाचक वाक्य)

विशेष- कभी-कभी प्रश्नवाचक वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्द वाक्य के प्रारंभ में आते हैं, और कभी-कभी वाक्य के मध्य में।

1. क्या तुम्हारा परीक्षा परिणाम आ गया? (प्रश्न के आरंभ में)
2. आप लोग अपना कार्य कब प्रारंभ करेंगे? (प्रश्न के मध्य में)

4. इच्छा वाचक वाक्य

जिन वाक्यों में वक्ता (अपने लिए अथवा दूसरों के लिए) किसी न किसी प्रकार की इच्छा प्रकट करता है, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे- ईश्वर करे, तुम पास हो जाओ। (दूसरों के लिए इच्छा)

2. ईश्वर करे, मैं पास हो जाऊँ। (स्वयं के लिए इच्छा)

5. संकेत वाचक वाक्य

जिन वाक्यों में किसी बात या काम का होना या न होना शर्त पर निर्भर करता है, उसे संकेत वाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे- यदि खाद-पानी समय पर दोगे तो फसल अच्छी होगी।

6. संदेह वाचक वाक्य

जिन वाक्यों से प्राय: संदेह की भावना प्रकट होती है, उन्हें संदेह वाचक वाक्य कहते हैं।

जैसे- शायद आज धूप ही नहीं निकले।

वह संभवत: पढ़ते हुए मिलेगा।

7. विस्मयादि बोधक वाक्य

जिन वाक्यों में हर्ष, विस्मय घृणा या शोक आदि भावों का प्रयोग होता है, उन्हें विस्मयादि बोधक वाक्य कहते हैं।

जैसे- वाह! कितनी अच्छी सुगंध है।

(ख) संरचना के आधार पर वाक्य के भेद

एक बालक आगरा का ताजमहल देखने की इच्छा से अपना सामान पैक कर रहा था कि उसका छोटा भाई आया और उसे कहीं जाने की तैयारी करते देखकर पूछने लगा-

''आप कहाँ जा रहे हैं?''

बालक बोला- ''मैं आगरा जा रहा हूँ।''

छोटे भाई ने पूछा- ''क्या आप अकेले आगरा जा रहे हैं?''

बालक ने कहा- ''मैं और मेरा मित्र दोनों ही आगरा जा रहे हैं।''

छोटे भाई ने पूछा- क्या मुझे भी ले चलोगे?

बालक ने कहा- ''मैं तुम्हें अवश्य ले चलता किन्तु पिताजी ने तुम्हें वहाँ जाने से मना किया है।''

इस संवाद में हमें तीन प्रकार के वाक्य देखने को मिल रहे हैं-

1. मैं आगरा जा रहा हूँ। (सरल वाक्य)
2. मैं और मेरा मित्र दोनों ही आगरा जा रहे हैं। (संयुक्त वाक्य)
3. मैं तुम्हें अवश्य ले चलता किन्तु पिताजी ने तुम्हें वहाँ जाने से मना किया है। (मिश्र वाक्य)

इससे स्पष्ट होता है कि वाक्य केवल एक उपवाक्य का भी हो सकता है, और एक से अधिक उपवाक्यों का भी। जहाँ उपवाक्य अकेला (स्वतंत्र)उपवाक्य होता है, उसे **सरल उपवाक्य** कहते हैं। यदि दो उपवाक्य स्वतंत्र उपवाक्य हों तो वह **संयुक्त वाक्य** होता है; और

यदि एक मुख्य वाक्य तथा दूसरा आश्रित उपवाक्य हो तो वह **मिश्रित उपवाक्य** होता है।

अतः संरचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं–

1. सरल वाक्य
2. संयुक्त वाक्य
3. मिश्र वाक्य

सूत्र रूप में इन तीनों भेदों को इस प्रकार बताया जा सकता है–

सरल वाक्य	△	क	△
संयुक्त वाक्य	△	क + क...	△
मिश्र वाक्य	△	क + ख ...	△

यहाँ 'क' स्वतंत्र उपवाक्य का संकेतक है; और 'ख' आश्रित उपवाक्य का। ... वाक्य पूर्ति का संकेतक है। △ चिह्न संकेतक वाक्य के प्रारम्भ और अन्त को दर्शाता है।

सरल वाक्यों की संरचना

संरचना की दृष्टि से एक छोटे तथा संक्षिप्त वाक्य को हम सरल वाक्य कह सकते हैं। इसमें एक कर्त्ता और एक क्रिया होती है, जिसे हम उद्देश्य (कर्त्ता) तथा विधेय (क्रिया) के रूप में भी पहचान सकते हैं; जैसे–

मैं	प्रतिदिन विद्यालय जाता हूँ–
(उद्देश्य)	(विधेय)

इस वाक्य में मैं उद्देश्य है, तथा शेष वाक्य विधेय हैं।

रोचक तथ्य–

1. यदि सरल वाक्य में क्रिया अकर्मक है, तो वाक्य में कर्म नहीं होगा; जैसे–
   सीता हँस पड़ी।
   (इस वाक्य में कर्म नहीं है, अतः क्रिया अकर्मक कहलाएगी)
2. यदि सरल वाक्य में क्रिया सकर्मक है तो वाक्य में कर्म अवश्य होगा। अपवाद स्वरूप कर्म छिपा भी हो सकता है।

जैसे– मैं पुस्तक पढ़ता हूँ (यहाँ पुस्तक कर्म कारक है। कर्म प्रत्यक्ष है)
राधा पढ़ती है। (यहाँ क्या पढ़ती है? कर्म छिपा हुआ है)

3. द्विकर्मक क्रिया होने पर भी वाक्य में कर्त्ता एक होने पर वह सरल वाक्य ही कहलाता है; जैसे– मैंने दुकान से पुस्तक खरीदी।
   (यहाँ खरीदना क्रिया दुकान तथा पुस्तक दोनों कर्मों से जुड़ी है किन्तु कर्त्ता 'मैं' एक ही है।)
4. यदि कर्त्ता में विशेषण जुड़ा हो या कर्त्ता के विस्तार सूचक अन्य शब्द भी हों तो उसे भी कर्त्ता के लिए माना जाएगा।

जैसे– जंगल से थका हारा आया मजदूर रोटी बना रहा है।

(यहाँ कर्त्ता मजदूर है। जंगल से थका हारा आया वाक्यांश का अंतर्भाव मजदूर में ही

समाहित है। अत: यह भी सरल वाक्य है।)

संयुक्त वाक्यों की संरचना–

दो सरल वाक्य यदि एक योजक द्वारा जोड़ दिए जाते हैं, तो वह संयुक्त वाक्य कहलाते हैं; जैसे–राम गीता पढ़ता है, और श्याम रामायण पढ़ता है।

(यहाँ और योजक है। अत: यह एक संयुक्त वाक्य है।)

रोचक तथ्य–

1. कभी–कभी संयुक्त वाक्य में अलग–अलग कर्त्ता अलग–अलग कार्य करते हैं; जैसे– राम गीता पढ़ता है, और श्याम गीता पर निबंध लिख रहा है।
2. कभी–कभी संयुक्त वाक्य कार्य कारण संबंध से जुड़ा रहता है।
   जैसे– मोहन देर रात तक पढ़ता रहा इसलिए प्रात: जल्दी नहीं उठ सका।
   (यहाँ देर रात तक मोहन का पढ़ना कारण है; और कार्य है: प्रात: जल्दी न उठना।)
3. चेतावनी देने के अर्थ में संयुक्त वाक्य का प्रयोग होता है।
   जैसे– तुम समय पर आया करो, नहीं तो मैं तुम्हें नौकरी से निकाल दूँगा।
4. बात को स्पष्ट करने के लिए भी संयुक्त वाक्य का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

– ऋण चुकाने के लिए मुझे तुमसे रुपए उधार लेने पड़े अन्यथा मैं कभी यहाँ नहीं आता।

मिश्र वाक्यों की संरचना–

मिश्र का अर्थ है मिले जुले वाक्य/व्याकरण की दृष्टि से जिस वाक्य में एक स्वतंत्र वाक्य हो, और शेष वाक्य उस स्वतंत्र (प्रधान) वाक्य के अंतर्गत (आश्रित) हो, तो ऐसे वाक्य मिश्र वाक्य कहलाते हैं; जैसे–जो व्यक्ति परिश्रमी होता है, वह अवश्य सफल होता है।

रोचक तथ्य–

1. मिश्र वाक्य में आश्रित उपवाक्य वाक्य के प्रारंभ में, मध्य में या अन्त में कहीं भी आ सकता है; जैसे–

(क) **तुम्हारे बाहर जाते ही**, वह सो गया। (प्रारम्भ में)

(ख) वह व्यक्ति, **जो कार के पास खड़ा है**, बहुत गुस्सैल है। (मध्य में)

(ग) श्यामा ने ऐसी बात कही **कि उसकी सहेली रो पड़ी**। (अंत में)

2. आश्रित उपवाक्य तब तक सार्थक नहीं होते, जब तक कि वे मुख्य वाक्य से नहीं जुड़ते; जैसे–मैं जानता था **कि तुम झूठ बोल रहे हो**।
   (यहाँ **कि तुम झूठ बोल रहे हो** आश्रित उप वाक्य अस्पष्ट है। मुख्य वाक्य मैं जानता था से जुड़कर ही वह पूर्ण अर्थ दे रहा है।)
3. मिश्र वाक्य में एक या एक से अधिक समापिका क्रियाएँ हो सकती है; जैसे– जो व्यक्ति स्वावलंबी होते हैं, वे सदा **सुखी रहते हैं**।
   (इस वाक्य में एक से अधिक रेखांकित समापिका क्रियाएँ दृष्टव्य हैं।)
   उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि संयुक्त वाक्य में और, या लेकिन, परन्तु, इसलिए, किन्तु, नहीं तो, भी शब्दों का प्रयोग होता है; तथा मिश्रित वाक्य में यद्यपि तथापि जब–

तब, यदि तो , ज्यों ही–त्यों ही, जो–तो, जहाँ–वहाँ, ऐसे जैसे, चाहे परन्तु, जैसे–वैसे, चूँकि–इसलिए शब्दों का प्रयोग होता है।

4. मिश्र वाक्य में संज्ञा उपवाक्य को बहुधा 'कि' शब्द मिलाता है।
5. विशेषण उपवाक्य को जो, जिसने, जिसको शब्द के अन्य रूपान्तर मिलाते हैं।
6. क्रिया विशेषण में जब–तब, ज्यों ही... त्यों ही इत्यादि शब्द मिलते हैं।

पहचान–

संरचना की दृष्टि से संयुक्त वाक्य **समानाधिकरण समुच्चय** बोधकों से जुड़े होते हैं, जबकि मिश्रित वाक्य **व्यधिकरण समुच्चय** बोधकों द्वारा। इसे भी समझें–

संयुक्त वाक्य–

समानाधिकरण समुच्चय बोधक शब्द एक पद अथवा उपवाक्य का संबंध दूसरे समान पदों तथा उप वाक्यों से (एक ही दशा के आधार पर) जोड़ते हैं।

समानाधिकरण समुच्चय बोधक के चार भेद हैं–

(1) **संयोजक**– मैं **और** मेरी पत्नी इलाहाबाद गए थे।
(संयोजक शब्द 'और' दो स्थितियों को जोड़ने का काम कर रहा है।)

(2) **विकल्पक**– यह पुस्तक मोहन की होगी या सोहन की।
(यहाँ दोनों उपवाक्यों में 'या' शब्द से विकल्प दिखाया गया है। यह विकल्प अथवा, न–न शब्दों से भी दिखाया जाता है।)

(3) **विरोध दर्शक**– हम आना नहीं चाहते थे **किन्तु** आपके भाई साहब नहीं माने।
(यहाँ एक उपवाक्य दूसरे उपवाक्य का विरोध जता रहा है। 'किंतु' शब्द विरोध का दर्शक है।)

(4) **परिणाम दर्शक**– वह अस्वस्थ है, इसलिए आज विद्यालय नहीं आया।
(यहाँ एक उपवाक्य से कार्य तथा दूसरे से उसके परिणाम का बोध हो रहा है। यहाँ 'इसलिए' शब्द परिणाम दर्शक है।)

मिश्रित वाक्य –

व्यधिकरण समुच्चय बोधक वे शब्द हैं, जो एक प्रधान वाक्य में एक अथवा एक से अधिक आश्रित वाक्यों को जोड़ते हैं।

व्यधिकरण समुच्चय बोधक चार प्रकार के होते हैं–

(1) **कारण दर्शक**– तुम अभी शाला नहीं जाओगे **क्योंकि** तुम अस्वस्थ हो।
(2) **संकेत दर्शक**– यदि श्रम करोगे **तो** परीक्षा में अवश्य सफल होओगे।
(3) **स्वरूप दर्शक**– वह इतनी बुद्धिमान है कि **मानों** साक्षात् सरस्वती हो।
(4) **उद्देश्य बोधक**– प्रातः भ्रमण को जाया करो ताकि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहे।

रोचक तथ्य—

संयुक्त वाक्य के अन्तर्गत वाक्य क्रमांक चार में परिणाम दर्शक, और मिश्र वाक्य के अन्तर्गत कारण दर्शक क्रिया विशेषण **इसलिए** और **क्योंकि** शब्दों में एक ही भाव प्रकट होता

है, फिर यह कैसे समझा जाए कि कौन सा वाक्य संयुक्त वाक्य है, और कौन सा वाक्य मिश्र वाक्य। इस कठिनाई को स्पष्ट करने के लिए एक शिक्षक ने उदाहरण के लिए दो वाक्य प्रस्तुत किए—

(क) मैं अस्वस्थ हूँ, **इसलिए** परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सकता।

(ख) मैं परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सकता **क्योंकि** अस्वस्थ हूँ।

मैंने स्पष्ट किया कि इसे इस प्रकार समझें। 'क' वाक्य परिणाम की सूचना देता है। मैं अस्वस्थ हूँ (मुख्य उपवाक्य), इसलिए (मैं) परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सकता। (परिणाम दर्शक उपवाक्य)। ये दोनों उपवाक्य स्वतंत्र हैं, और **इसलिए** योजक के जुड़ने पर परिणाम दिखाते हैं।

दूसरे 'ख' वाक्य में मुख्य उपवाक्य है **'मैं' परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सकता**। यह कर्त्ता के मंतव्य का सूचक है। दूसरा आश्रित उपवाक्य है- **क्योंकि अस्वस्थ** हूँ यह उपवाक्य मुख्य वाक्य का कारण बताता है।

अतः स्पष्ट है कि संयुक्त वाक्य में दोनों उपवाक्य स्वतंत्र होते हैं। दोनो उपवाक्यों के आशय अलग-अलग वाक्य बोलने पर भी स्पष्ट होते हैं किन्तु मिश्र वाक्य में मुख्य वाक्य के आश्रित उपवाक्य स्वतंत्र रूप से आशय स्पष्ट नहीं करते। मुख्य वाक्य बिना आश्रित उपवाक्य के बोला तो जा सकता है किन्तु आश्रित उपवाक्य अपने अर्थ को स्पष्ट करने के लिए मुख्य उपवाक्य की आकांक्षा करता है।

इस प्रकार दोनों वाक्यों के अन्तर को जाने।

(ग) वाच्य के आधार पर वाक्य भेद

वाच्य से अभिप्राय है क्रिया का रूप। वाच्य द्वारा हम जान सकते हैं कि क्रिया का मुख्य विषय कर्त्ता है, कर्म है या भाव। अतः वाक्य में कर्त्ता, कर्म या भाव के अनुसार क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष का होना ही वाच्य कहलाता है।

वाच्य के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं-

1. कर्तृ वाच्य
2. कर्म वाच्य
3. भाव वाच्य

1. कर्तृ वाच्य

कर्तृ वाच्य में क्रिया का मुख्य विषय कर्त्ता होता है; अर्थात् जिसमें कर्त्ता के अनुसार लिंग, वचन और पुरुष होता है, उसे कर्तृ वाच्य कहते हैं। इसमें **सकर्मक/अकर्मक** दोनों प्रकार की क्रिया का प्रयोग होता है; जैसे-1. लड़का पढ़ता है।

कर्त्ता क्रिया (पुल्लिंग एकवचन)

(यहाँ लड़का ही वाक्य का मुख्य केन्द्र बिन्दु है। लड़का-कर्त्ता है, अतः यह कर्तृ वाच्य का उदाहरण है।)

2. लड़की पढ़ती है।
कर्त्ता क्रिया (स्त्रीलिंग एक वचन)

3. लड़के पढ़ते हैं।
कर्त्ता (बहुवचन) क्रिया (बहुवचन पुल्लिंग)

4. मैं जाता हूँ।
(कर्त्ता–पुल्लिंग/एक वचन) क्रिया (पुल्लिंग/एक वचन)

5. हम जाते हैं।
(कर्त्ता पुल्लिंग/बहुवचन) क्रिया (पुल्लिंग/बहुवचन)

2. कर्म वाच्य–

जिस वाक्य में केन्द्र बिन्दु कर्त्ता के स्थान पर कर्म होता है, उसे कर्म वाच्य कहते हैं। कर्म वाच्य में प्राय: मूल कर्त्ता छिपा रहता है। कर्म वाच्य में केवल सकर्मक क्रिया का ही प्रयोग होता है, तथा लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार होते हैं–

जैसे– राम से रोटी खाई नहीं जाती।
(कर्त्ता कर्म क्रिया कर्म के अनुसार)
(यहाँ क्रिया रोटी के अनुसार स्त्रीलिंग एक वचन में है। रोटी कर्म है।)

3. भाववाच्य–

इस प्रकार के वाक्य में कर्त्ता या कर्म में नहीं (नकारात्मक भाव) की प्रधानता रहती है। नकारात्मक भाववाच्य वाक्यों का प्रयोग हिंदी में ही देखने को मिलता है; जैसे– राम से चला नहीं जाता। (इसमें चला क्रिया ही प्रमुख है; कर्त्ता या कर्म नहीं। अत: यह भाव वाच्य का उदाहरण है।)

विशेष–

ध्यान रहे, भाव वाच्य में क्रिया **अकर्मक** होती है।

जैसे– आप से बैठा जाए तो बैठिए।

रोचक तथ्य—

बैठना, डरना, जीना, मरना, सोना आदि ऐसी अनेक क्रियाएँ है जिनके आधार पर वाक्य बनाने में कर्म की संभावना न होने से कर्म वाच्य में प्रयोग हो ही नहीं सकतीं। जब इन क्रियाओं को प्रेरणार्थक रूप दे दिया जाता है, तो इनमें कर्म की संभावना रहती है; और ये भाववाच्य के स्थान पर कर्मवाच्य हो जाती है।

आइए, इन सिद्धान्तों को उदाहरण के अनुसार और भी भली भाँति जानने का प्रयत्न करें किन्तु पहले जिन शब्दों से आपको परिचित होना है, पहले उस पर विचार करें।

(क) सकर्मक क्रिया
(ख) अकर्मक क्रिया
(ग) प्रेरणार्थक क्रिया

(क) सकर्मक क्रिया का अर्थ है: कर्म के साथ क्रिया–

जैसे- राम पुस्तक पढ़ता है।
कर्त्ता कर्म क्रिया

(ख) **अकर्मक क्रिया** का अर्थ है- कर्म के बिना क्रिया-

जैसे- मैं हँसता हूँ।
कर्त्ता क्रिया
(यहाँ कर्म कारक का प्रयोग नहीं हुआ है।)

(ध्यान रखें प्राय: अकर्मक वाक्य में कर्म शब्द का अर्थ है जहाँ वाक्य में कर्म कारक का प्रयोग नहीं हुआ है।)

(ग) **प्रेरणार्थक क्रिया**- जब कर्त्ता स्वयं अपने लिए काम नहीं करता है, दूसरे के लिए करता है अथवा करवाता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

जैसे- माँ बच्चे को हिंदी **पढ़ाती है।** (माँ बच्चे के लिए काम कर रही है। स्वयं के लिए नहीं)

2. माँ बच्चे को शिक्षक **से** हिंदी **पढ़वाती** है। (यहाँ माँ स्वयं न पढ़ाकर शिक्षक द्वारा पढ़वाती है।)

(क) मूल अकर्मक धातुओं में 'आ' या 'या' लगाकर प्रथम तथा 'वा' या लवा लगाकर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया बनती है, जैसे- यहाँ मूल धातु पढ़ में पढ़ा (आ) लगाकर प्रथम तथा पढ़वा (वा) लगाकर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाई गई हैं।

(ख) सकर्मक धातुओं में 'आ' या 'वाना' लगाकर प्रेरणार्थक क्रिया बनती हैं; जैसे- मूल धातु गिरना- गिराना (प्रथम प्रेरणार्थक), गिरवाना (द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया)।

अत: उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि प्रेरणार्थक क्रियाओं के प्रयोग से भाववाच्य के स्थान पर कर्मवाच्य प्रधान वाक्य बनाए जा सकते हैं।

वाच्यों की पहचान-

1. **कर्तृवाच्य-**

   कर्त्ता बिना विभक्ति के होता है।
   अथवा
   कर्त्ता के साथ 'ने' विभक्ति होती है।

2. **कर्मवाच्य**

   - मुख्य क्रिया सकर्मक होती है, और उसके अनुसार 'जाना' क्रिया का लिंग, वचन जुड़ा रहता है। 'जाना' क्रिया के पहले क्रिया सामान्य भूतकाल में होती है।
   - कर्त्ता के साथ '**से**' या '**के द्वारा**' विभक्ति होती है।

3. **भाववाच्य**

   - मुख्य क्रिया अकर्मक होती है जो सदा एक वचन पुल्लिंग में होती है।
   - कर्त्ता के साथ 'से' अथवा 'के द्वारा' विभक्ति होती है।

रोचक तथ्य-

हिन्दी भाषा में अधिकतर कर्म वाच्यों का ही प्रयोग होता है। कुछ उदाहरणों से इसे समझे-

आपने कक्षा में बच्चों को बोलते समय कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य का प्रयोग करते अवश्य सुना होगा, या आप अपने बचपन की याद करें, तो ध्यान में आएगा कि जब बच्चा कोई अच्छा काम करता है, तो वह सदैव कर्तृवाच्य का प्रयोग करता है; जैसे-

(क) यह काम **मैंने** किया है। (कर्त्तृ वाच्य)

(ख) पिता श्री। **मैंने** आज गणित के सभी सवाल हल कर दिए। (कर्त्तृ वाच्य); और जब कोई हानि करते हैं तो कर्मवाच्य का प्रयोग करते हैं; जैसे-

(क) किताब फट गई। (कर्म वाच्य)

(ख) गणित का प्रश्न-पत्र बहुत कठिन था। (कर्म वाच्य)

इसका अर्थ यह हुआ कि व्यक्ति अहंकार प्रदर्शित करने के लिए कर्तृवाच्य का प्रयोग करता है। कर्तृवाच्य द्वारा वह यह दिखाना चाहता है कि अमुक काम का कर्त्ता वह स्वयं है। ठीक इसके विपरीत जब उसके द्वारा नकारात्मक स्थिति को प्रकट करना होता है, तो वह कर्मवाच्य का प्रयोग करता है, जहाँ उसका कर्त्ताभाव गौण हो जाता है। कर्मभाव पर अधिक जोर देकर वह अपने आपको बचाता है; जैसे- किताब फट गई। यहाँ कर्त्ता यह बताने का काम कर रहा है कि उसने स्वयं किताब नहीं फाड़ी।

अत: कर्मवाच्य का प्रयोग निम्नलिखित परिस्थितियों में किया जाता है-

(क) जब कर्त्ता को गौण कर दिया जाता है अथवा अज्ञात हो-
जैसे- पुस्तक पढ़ ली गई है।

(ख) जब कर्त्ता सरकार या समाज हो; जैसे- दानदाताओं द्वारा मंदिर का निर्माण कराया जा रहा है।

(ग) कार्यालयों अथवा न्यायालयों की भाषा में -
दस दिनों का अवैतनिक अवकाश स्वीकृत किया जाता है।

(घ) अधिकार प्रकट करते समय -
अपराधी को दंडित किया जाय।

(ङ) अशक्तता सूचित करते समय - अब अधिक दूध नहीं पिया जाता।
इसी प्रकार भाववाच्य का प्रयोग विवशता अथवा अनुमति प्राप्त करने के निमित्त अधिकतर किया जाता है; जैसे-

- आज मुझसे पढ़ा नहीं जाता। (विवशता प्रकट करने हेतु)
- अब पढ़ा जाए। (अनुमति प्राप्त करने हेतु)।

वाक्यों का रूपान्तरण

वाक्य रूपान्तरण का अर्थ है, बिना अर्थ बदले एक वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्य में परिवर्तन करना। इस प्रकार वाक्यों के प्रकार तथा संख्या में वृद्धि होती है।

वाक्यों का रूपांतरण भी तीन प्रकार से होता है—

(क) अर्थ के आधार पर गठित वाक्यों का रूपांतरण
(ख) संरचना के आधार पर गठित वाक्यों का रूपांतरण
(ग) वाच्य के आधार पर गठित वाक्यों का रूपांतरण

(क) अर्थ के आधार पर गठित वाक्यों का रूपांतरण

अर्थ की दृष्टि से वाक्यों को आठ प्रकार से परिवर्तित किया जा सकता है। इन उदाहरणों से उसे जानकर अभ्यास करने में सुविधा होगी। इनमें से सकारात्मक वाक्य को मूल आधार मानकर वाक्य रचना की गई है। किसी वाक्य में नकारात्मक भाव, किसी में आज्ञा का किसी में प्रश्न का किसी में इच्छा का भाव, किसी में संकेत का, किसी में संदेह का, किसी में विस्मय का भाव झलक रहा है।

1. राम शाला जाएगा। (सकारात्मक)
2. राम शाला नहीं जाएगा। (नकारात्मक)
3. राम शाला जाओ! (आज्ञार्थक)
4. क्या राम शाला जाएगा? (प्रश्नवाचक)
5. मेरी इच्छा है कि राम को शाला जाना चाहिए। (इच्छावाचक)
6. यदि राम शाला जाएगा तो पास होगा। (संकेतवाचक)
7. शायद राम शाला गया होगा। (संदेहवाचक)
8. अरे! राम शाला जाएगा। (विस्मयादि बोधक)

उपर्युक्त उदाहरणों को ध्यान में रखकर आठ बिन्दुओं के आधार पर हम वाक्यों का रूपान्तण कर सकते हैं। किसी भी वाक्य में किया गया लघुतम परिवर्तन वाक्य के अर्थ को ध्यान में रखकर किया जा सकता है।

अर्थ के आधार पर वाक्य रूपान्तरण के स्मरणीय बिन्दु-

1. साधारणत: सामान्य कथन पर आधारित वाक्य सकारात्मक होता है।
2. नकारात्मक वाक्य में 'न' 'नहीं' का प्रयोग होता है।
3. आज्ञार्थक वाक्य में क्रिया 'आदेशात्मक' होती है।
4. प्रश्नवाचक वाक्य बनाते समय क्या, कब, कैसे, क्यों, किसलिए आदि शब्दों का प्रयोग होता है। अंत में प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग होता है।
5. इच्छावाचक वाक्य का प्रारंभ इच्छा सूचक शब्द 'मेरी इच्छा है कि' चाहिए कहकर किया जाना है; अथवा जाए कहकर लिखना चाहिए।
6. संकेत वाचक वाक्य के प्रारंभ में 'यदि', 'अगर' लगाया जाता है। यह शर्त का सूचक होता है।
7. संदेह वाचक वाक्य का प्रारंभ **'शायद'** लगाकर किया जाता है।
8. विस्मयादि बोधक वाक्य का प्रारंभ विस्मयसूचक शब्दों; जैसे- अरे! वाह! आदि से होता है।

रोचक तथ्य–

(1) वस्तुतः अर्थ के आधार पर वाक्य परिवर्तन व्याकरण की दृष्टि से वक्ता की वृत्तिपरक मनोदशा या व्यवहार का परिवर्तन है। इसका नियंत्रण आन्तरिक भावनाओं के अनुसार होता है। इसीलिए इस परिवर्तन को भाव परक वाक्य परिवर्तन भी कहा जा सकता है।

(2) सकारात्मक वाक्य ही आदर्श और आधारभूत वाक्य रचना है। शेष वाक्य रचनाएँ भावनात्मक परिवर्तन के आधार पर होती है; जैसे–

यह लड़की सुन्दर है। (सकारात्मक वाक्य) इस वाक्य को विभिन्न मनोदशा में हम इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं।

1. नकारात्मक भावना – यह लड़की सुन्दर नहीं है।
2. आज्ञावाचक भावना – इस लड़की को सुन्दर बनाओ।
3. प्रश्नवाचक भावना – क्या यह लड़की सुन्दर है?
4. इच्छावाचक भावना – मेरी इच्छा है कि यह लड़की सुन्दर बने।
5. संकेतवाचक भावना – यदि यह लड़की सुन्दर होती तो सौंदर्य प्रतियोगिता में प्रथम आती।
6. संदेहवाचक भावना – शायद, यह लड़की सुन्दर हो।
7. विस्मयादिबोधक – अरे! यह लड़की सुन्दर है।

यहाँ हम (क) प्रश्नवाचक, (ख) इच्छावाचक, (ग) विस्मय सूचक वाक्य परिवर्तन के कुछ अन्य उदाहरण देकर अपनी बात को और अधिक स्पष्ट करना चाहते हैं।

(क) प्रश्नवाचक वाक्यों का रूपान्तरण

प्रश्नवाचक वाक्यों का परिवर्तन स्वीकारात्मक अथवा नकारात्मक दोनों प्रकार के वाक्यों में होता है। वाक्य परिवर्तन करते समय प्रश्नवाचक वाक्य का **'कौन'**, **'सब'** में बदल जाता है, तथा नकारात्मक वाक्य बनाते समय प्रश्नवाचक वाक्य को **'कोई नहीं'** शब्द में बदल देते हैं।

सकारात्मक वाक्य में परिवर्तन

(क) परीक्षा से कौन नहीं डरता? (प्रश्न वाचक वाक्य)
परीक्षा से सब डरते हैं। (सकारात्मक वाक्य)

(ख) गांधी जी का नाम किसने नहीं सुना? (प्रश्नवाचक वाक्य)
गांधी जी का नाम सबने सुना है। (सकारात्मक वाक्य)

नकारात्मक वाक्य में परिवर्तन

(क) बहरे सुन सकते हैं? (प्रश्न वाचक वाक्य)
बहरे सुन नहीं सकते? (नकारात्मक वाक्य)

(ख) उसे कौन जानता है? (प्रश्नवाचक वाक्य)
उसे कोई नहीं जानता। (नकारात्मक वाक्य)

(ख) इच्छावाचक वाक्य में परिवर्तन

क्या संसार में सब सुखी हो जाएँ? (प्रश्न वाचक वाक्य)

संसार में सब सुखी हो जाएँ। (इच्छा वाचक वाक्य)

विस्मय सूचक वाक्य में परिवर्तन

तुमने कौन सा कमाल कर दिया? (प्रश्नवाचक वाक्य)

अरे! तुमने तो कमाल कर दिया। (विस्मय सूचक वाक्य)

(ग) विस्मयादि वाचक वाक्यों का परिवर्तन

विस्मयादि बोधक वाक्यों का परिवर्तन स्वीकारात्मक (सकारात्मक) अथवा नकारात्मक वाक्यों में इस प्रकार होता है।

नियम-1. विस्मय सूचक शब्दों का लोप करके।

नियम-2. कैसा या कितना को बहुत में रूपान्तरित करके-

जैसे- अहा! यह दृश्य **कितना** सुन्दर है। (विस्मयादि वाक्य)

यह दृश्य **बहुत** सुन्दर है। (स्वीकारात्मक वाक्य)

(ख) संरचनात्मक वाक्यों का रूपान्तरण

संरचनात्मक वाक्य के रूपान्तरण के अन्तर्गत सरल वाक्य को संयुक्त वाक्य में अथवा मिश्र वाक्य में, संयुक्त वाक्य को सरल या मिश्र वाक्य में तथा मिश्र वाक्य को सरल तथा संयुक्त वाक्य में परिवर्तित करना होता है जैसे-

(क) पंखा चलते ही ठंडी हवा आने लगी। (सरल वाक्य)

(ख) पंखा चलने लगा, और ठंडी हवा आने लगी। (संयुक्त वाक्य)

(ग) जैसे ही पंखा चला, वैसे ही ठंडी हवा आने लगी। (मिश्र वाक्य)

उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि एक ही वाक्य को तीन प्रकार से कहा जा सकता है। आइए, इसके सिद्धान्तों को उदाहरणों से समझने का प्रयास करें।

(क) कई सरल वाक्यों का एक साधारण वाक्य में विश्लेषण (रूपान्तरण)

1. वह चला गया। उसे मुझसे पूछकर जाना था।	1. वह मुझसे पूछे बिना ही चला गया।
2. उसने अपने साथियों का साथ छोड़ दिया। यह उचित नहीं है।	2. उसने अपने साथियों का साथ छोड़कर उचित नहीं किया।
3. उसने उसे समझाया। उसने उसे धन दिया।	3. समझाने के अतिरिक्त उसे उसने धन भी दिया।
4. तुम्हें जलेबी अच्छी लगती है, तुम्हे चाय अच्छी लगती हैं।	4. तुम्हें जलेबी और चाय अच्छी लगती है।

(ख) सरल वाक्य का संयुक्त वाक्य में रूपान्तरण -

संयुक्त वाक्यों में 'और' योजक का प्रयोग किया जाता है। सरल वाक्य में एक क्रिया

और एक ही कर्त्ता होता है; जैसे–

(1) आप भीतर बैठकर चर्चा करें। (सरल वाक्य)
आप भीतर बैठ जाएँ, और चर्चा करें। (संयुक्त वाक्य)

(2) माँ ने बच्ची को लोरी सुनाकर सुलाया (सरल वाक्य)
माँ ने बच्ची को लोरी सुनाई, और सुला दिया। (संयुक्त वाक्य)

(3) रमा आकर पढ़ने लगी। (सरल वाक्य)
रमा आई, और पढ़ने लगी। (संयुक्त वाक्य)

(4) कहानी लिखकर समाचार पत्रों में प्रकाशित करवाओ। (सरल वाक्य)
कहानी लिखो, और समाचार पत्रों में प्रकाशित करवाओ। (संयुक्त वाक्य)

(5) वह अपनी विद्वत्ता के अभिमान में अकड़ रहा है। (सरल वाक्य)
उसे अपनी विद्वत्ता का अभिमान है, इसलिए अकड़ रहा है। (संयुक्त वाक्य)

रोचक तथ्य—

- सरल वाक्य के किसी पदबंध को सरल वाक्य में अथवा पूर्वकालिक या असमापिका को समापिका क्रिया में बदल कर 'और' एवं तथा, इसलिए, लेकिन, परंतु आदि समानाधिकरण समुच्चय बोधकों के प्रयोग से संयुक्त वाक्य की रचना होती है।

ख.1 संयुक्त वाक्य का सरल वाक्य में रूपान्तरण

1. वह यहाँ आया और शीघ्र ही भीतर चला गया। (संयुक्त वाक्य)
वह यहाँ आकर भीतर चला गया। (सरल वाक्य)
(यहाँ संयुक्त वाक्य के 'और' योजक को बदलते समय 'कर' अथवा 'पर' पूर्वकालिक क्रिया का प्रयोग किया गया है।)

2. सर्यास्त हुआ, और तारे चमकने लगे। (संयुक्त वाक्य)
सूर्यास्त होने पर तारे चमकने लगे। (सरल वाक्य)

3. एक अच्छे वक्ता होने **के कारण** नेताजी को सभी सुनते हैं। (संयुक्त वाक्य)
नेताजी एक अच्छे वक्ता हैं, **इसलिए** सब उनको सुनते हैं। (सरल वाक्य)
(यहाँ **के कारण** के स्थान पर **इसलिए** का प्रयोग कर संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य बनाया गया है।)

4. वह **केवल** अच्छा वक्ता ही नहीं, **बल्कि** अच्छा साहित्यकार भी है। (संयुक्त वाक्य)
वह वक्ता होने के **अतिरिक्त** साहित्यकार भी है। (सरल वाक्य)
(यहाँ केवल... बल्कि आने पर उसके स्थान पर 'अतिरिक्त' शब्द रखकर संयुक्त वाक्य को सरल वाक्य में बदल दिया है।)

5. लस्सी पी लेंगे या चाय पी लेंगे। (संयुक्त वाक्य)

लस्सी या चाय में से कुछ भी पी लेंगे। (सरल वाक्य)
(यहाँ पी लेंगे क्रिया का प्रयोग एक बार ही किया गया है।)

ख.2 संयुक्त वाक्य का मिश्र वाक्य में रूपान्तरण

1. धर्म का पालन करो और सुख से जीवन व्यतीत करो। (संयुक्त वाक्य)
यदि तुम धर्म का पालन करोगे, तो सुख से जीवन व्यतीत करोगे। (मिश्र वाक्य)
(यहाँ यदि ... तो का प्रयोग कर संयुक्त वाक्य का मिश्र वाक्य में रूपान्तरण किया गया है।)

2. गांधी जी सद्‌गुणी थे, इसलिए महात्मा कहे जाते थे। (संयुक्त वाक्य)
गांधीजी इसलिए महात्मा कहे जाते थे क्योंकि वे सद्‌गुणी थे।
(मिश्र वाक्य)
(यहाँ इसलिए ... क्योंकि का प्रयोग कर रूपान्तरण हुआ है।)

3. मैंने अपना सपना सच होते देखा, और नाचने लगा। (संयुक्त वाक्य)
जब मैंने अपना सपना सच होते देखा तो नाचने लगा। (मिश्र वाक्य)
(यहाँ जब... तो का प्रयोग किया गया है।)

4. सांस्कृतिक कार्यक्रम पूरा हुआ, और लोग जाने लगे। (संयुक्त वाक्य)
जैसे ही सांस्कृतिक कार्यक्रम पूरा हुआ, वैसे ही लोग जाने लगे। (मिश्र वाक्य)
(यहाँ जैसे-वैसे का प्रयोग कर वाक्य का रूपान्तरण किया गया है।)

रोचक तथ्य—

- संयुक्त वाक्य को स्वतंत्र वाक्य में से एक को छोड़कर शेष आश्रित उपवाक्य में बदलने से मिश्र वाक्य की रचना होती है। ऐसा करते समय संयुक्त वाक्य में प्रयुक्त संयोजक या विभाजक अव्ययों को नित्य संबंधी अव्ययों में बदल दिया जाता है।

ग. सरल वाक्य से मिश्र वाक्य में रूपान्तरण

(1) विज्ञ जन नम्र होते हैं। (सरल वाक्य)
जो विज्ञ होते हैं, **वे** नम्र होते हैं। (मिश्र वाक्य)
(यहाँ जो + संज्ञा को रखकर मिश्र वाक्य बनाया गया है।)

(2) इस दण्ड से बचने के लिए उसे सच-सच कहना चाहिए। (सरल वाक्य)
उसे सच-सच कह देना चाहिए **अन्यथा** वह इस दण्ड से नहीं बचेगा। (मिश्र वाक्य)

(3) लोग अब नेताओं के चरित्र को अच्छी तरह जानने लगे हैं। (सरल वाक्य)
लोग जानने लगे हैं **कि** नेताओं का चरित्र कैसा होता है। (मिश्र वाक्य)

(4) मनोहर अपनी पुत्री को सिने तारिका बनाना चाहता है। (सरल वाक्य)
मनोहर चाहता है **कि** उसकी पुत्री सिने तारिका बने (मिश्र वाक्य)

रोचक तथ्य—

- सरल वाक्यों में प्रयुक्त उद्देश्य अथवा विधेय विस्तारक में आए विशेषण पदबंध में जो 'वह' अथवा 'वे', अन्यथा, जब-तक, यदि-तो लगाकर मिश्र वाक्य बनाए जाते हैं।

ग. 1 मिश्र वाक्य का सरल वाक्य में रूपांतरण

1. जो केवल स्वाध्याय से शिक्षा प्राप्त करता है, वह विद्वान कहलाता है।
   केवल स्वाध्याय से शिक्षा प्राप्त करने वाला ही विद्वान कहलाता है। (सरल वाक्य)
2. जिसके पास विधा है, वह समाज में आदर योग्य होता है। (मिश्र वाक्य)
   विद्वान समाज में आदर योग्य होता है। (सरल वाक्य)
3. यदि आप चाहते हैं कि आपका जीवन सुखी हो तो चरित्र अच्छा रखें। (मिश्र वाक्य)
   इस संसार में जीवन सुखी होने के लिए चरित्र अच्छा रखें। (सरल वाक्य)
4. बली होने के कारण बाली किसी से नहीं डरता था। (सरल वाक्य)
   - बाली इतना बली था कि किसी से नहीं डरता था। (मिश्र वाक्य)
5. कोलकत्ता भारत का सबसे बड़ा शहर है। (सरल वाक्य)
   - भारत में जितना बड़ा शहर कोलकत्ता है, उतना बड़ा देश में और कोई दूसरा शहर नहीं है। (मिश्र वाक्य)

रोचक तथ्य—

- मिश्र वाक्य में प्रयुक्त उपवाक्यों को पदबंध के रूप में बदलकर योजक शब्दों को लुप्त करने से सरल वाक्य बनते हैं। ऐसा करते समय ध्यान रखें कि अर्थ और काल का स्वरूप न बदले।

ग. 2 मिश्रवाक्य का संयुक्त वाक्य में रूपान्तरण

1. मैं जानता हूँ कि तुम इस कार्य के योग्य नहीं। (मिश्र वाक्य)
   - तुम इस कार्य के योग्य नहीं, यह मैं जानता हूँ। (संयुक्त वाक्य)
2. **जब** घंटी बजी, **तो** छात्र कक्षा से चले गए। (मिश्र वाक्य)
   - घंटी बज गई और छात्र कक्षा में चले गए। (संयुक्त वाक्य)
3. **ज्यों** ही मामाजी घर पर आए, सारे बच्चे उनसे लिपट गए। (मिश्र वाक्य)
   - मामाजी आए और सारे बच्चे उनसे लिपट गए। (संयुक्त वाक्य)
4. **जैसे** ही कक्षा में संस्कृत शिक्षक ने प्रवेश किया, वैसे ही सभी छात्र शांत हो गए। (मिश्र वाक्य)
   - कक्षा में संस्कृत शिक्षक ने प्रवेश किया और सभी छात्र शांत हो गए। (संयुक्त वाक्य)

रोचक तथ्य—

- मिश्र वाक्य के उपवाक्य को स्वतंत्र वाक्य में बदलने से संयुक्त वाक्य बनते हैं।

ग. 3 वाच्य रूपान्तरण-कर्त्तृवाच्य रूपान्तरण

कर्त्तवाच्य में वाक्य रचना के मूल सिद्धान्तों को समझें-

1. कर्त्तृवाच्य में क्रिया की रूप रचना निम्नलिखित होती है–

वर्तमान काल

पुरुष	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
	एक वचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
उत्तम पुरुष	पढ़ता हूँ	पढ़ते हैं	पढ़ती हूँ	पढ़ती हैं
मध्यम पुरुष	पढ़ता है	पढ़ते हो	पढ़ती है	पढ़ती हो
अन्य पुरुष	पढ़ता है	पढ़ते हैं	पढ़ती है	पढ़ती हैं

2. कर्त्तवाच्य वाक्यों में कर्त्तवाचक कृदन्त का प्रयोग होता है। जिन धातु,ज शब्दों से कर्त्तव का बोध होता है, उन्हें कर्त्तवाचक कृदन्त कहते हैं। इसके बनाने के नियम को हमें जानना होगा–

मूल धातु	**प्रत्यय**	**कर्तृ वाचक कृदन्त**	**विशेष**
पढ़ना	वाला	पढ़ने वाला	इसका प्रयोग विशेषण के
	वाली	पढ़ने वाली	समान होता है।
तारना	हारा	तारन हारा	मूलधातु के अन्तिम वर्ण को ह्रस्व
जड़ना	इया	जड़िया	कर उसमें 'इया' प्रत्यय लगाकर।

कर्त्तृवाच्य का कर्म वाच्य में रूपान्तरण

कर्मवाच्य में वाक्य रचना के मूल सिद्धान्त को समझें–

1. कर्मवाच्य का प्रयोग दो प्रकार से होता है–

(क) कर्त्ता + ने + कर्म– को + क्रिया (– चिह्न का अर्थ है: कर्मकारक के चिह्न का अभाव)
जैसे– राम ने पुस्तक (को) पढ़ी।

(ख) कर्त्ता + से + कर्म+ मुख्य क्रिया + नहीं + सहायक क्रिया
जैसे– राम से पुस्तक पढ़ी नहीं जाती।

– कर्त्ता के साथ 'से', 'द्वारा' अथवा 'के द्वारा' लगाकर कर्त्तृवाच्य को कर्म वाच्य में बदला जाता है; जैसे–राम गाना गाता हैं (कर्त्तृ वाच्य)

– राम **के द्वारा** गाना गाया जाता हैं। (कर्म वाच्य)

(ग) क्रिया की धातु में 'आ' 'या' 'जा' कर्म के लिंग, वचन, पुरुष तथा काल के आधार पर जोड़ा जाता है; जैसे–

– राधा कविता पढ़ती है। (कर्तृवाच्य)

- राधा से कविता **पढ़ी जाती** है। (कर्मवाच्य)

 (यहाँ 'राधा' स्त्रीलिंग होने से 'जाती' का प्रयोग हुआ है।)

रोचक तथ्य—

- कर्त्तृवाच्य को कर्मवाच्य में रूपांतरित करते समय क्रिया का काल नहीं बदलना चाहिए परंतु मुख्य क्रिया पूर्णकृंदन्त (भूतकालिक रूप) में अवश्य बदल दी जाती है।

कर्त्तृवाच्य का भाववाच्य में रूपान्तरण

भाव वाच्य में वाक्य रचना के मूल सिद्धान्त को समझें-

1. वाक्यों में भाव वाच्य का प्रयोग तीन प्रकार से मिलता है-

 कर्त्ता + से + मुख्य क्रिया + नहीं जाता।

 जैसे- **मुझसे** अँधेरे में **पढ़ा नहीं जाता।**

 कर्त्ता (+) मुख्य क्रिया

2. कर्म के साथ कोई परसर्ग हो तो उसे हटा दिया जाता है; जैसे-

 कर्त्ता + ने + कर्म + को + क्रिया।

 जैसे- **राधा** ने **पुस्तक देखी**

 कर्त्ता (ने) कर्म (को) क्रिया

3. कर्त्ता + ने – कर्म। (कर्म कारक का अभाव)

 जैसे- **राधा** ने **देखा** (कर्म कारक का अभाव)

 कर्त्ता (ने)

4. कर्त्ता के साथ 'से' जोड़ा जाता है; जैसे-

- मैं नहीं चल सकता। (कर्तृ वाच्य)
- मुझसे चला नहीं जाता। (भाव वाच्य)

5. क्रिया पुल्लिंग अन्य पुरुष एक वचन में रहती है। ये क्रियाएँ प्राय: नकारात्मक रुप में होती हैं; जैसे-

- मैं नहीं पढ़ता। (कर्तृ वाच्य)
- मुझसे पढ़ा नहीं जाता। (भाव वाच्य)

6. कर्म वाच्य की तरह क्रिया को सामान्य भूत में बदला जाता है, और 'जाता' क्रिया का रूप जोड़ा जाता है; जैसे-

- बच्चा नहीं सोता। (कर्तृ वाच्य)
- बच्चे से सोया नहीं जाता। (भाव वाच्य)

(यहाँ 'सोता' क्रिया को सामान्य भूत 'सोया' में बदलकर 'जाता' क्रिया का रूप जोड़ा गया है।)

रोचक तथ्य-

1. कर्मवाच्य तथा भाववाच्य से कर्त्तृवाच्य बनाने की पद्धति उपरोक्त पद्धतियों के ठीक विपरीत है। सर्वप्रथम कर्मवाच्य अथवा भाव वाच्य के वाक्यों में कर्त्ता को पहचान कर, उसका परसर्ग 'से' अथवा 'के द्वारा' हटाना होता है, और क्रिया का कर्त्तृवाच्य में प्रयोग करना होता है; जैसे-
   - मुझसे पुस्तक नहीं पढ़ी गई। (कर्म वाच्य)
   - मैंने पुस्तक नहीं पढ़ी। (कर्त्तृ वाच्य)
2. स्मरण रहे भाववाच्य सदैव निषेधात्मक वाक्य होता है किंतु अपवाद स्वरूप कुछ वाक्य सकारात्मक भी हो सकते हैं; जैसे—
   - आज भ्रमण को चला जाए। (भाव वाच्य)
   - आज भ्रमण को चलें। (कर्त्तृवाच्य)

05

वाक्य विश्लेषण और वाक्य संश्लेषण

एक शिक्षक ने सहज ही प्रश्न किया- हिंदी व्याकरण में वाक्य-विश्लेषण, वाक्य संयोजन, वाक्य विग्रह, वाक्य विभाजन, वाक्य पृथक्करण, वाक्य नियोजन के विषय में चर्चा की गई है। कृपया स्पष्ट करें कि इन छः शब्दों का अर्थ क्या है? ये छः अलग-अलग प्रक्रियाएँ हैं, या एक ही प्रक्रिया के ये छः नाम अलग-अलग वैयाकरणों ने अपनी पुस्तकों में दिए हैं। इसे स्पष्ट करें।

मैंने कहा- आपकी कठिनाई उपयुक्त है। सुविधा की दृष्टि से आप वाक्य-विश्लेषण एवं वाक्य संश्लेषण को ही लीजिए। ये सभी नाम इनके अन्तर्गत आ जाते हैं।

वाक्य विश्लेषण का अर्थ है- किसी वाक्य के अंगों को पृथक-पृथक निरूपित करके उनके आपसी संबंधों का विश्लेषण अर्थात् विवेचन करना। उनके परस्पर संबंधों को बताना। इसे वाक्य विग्रह भी कहते हैं। **वाक्य संश्लेषण** की प्रक्रिया इसके ठीक विपरीत है।

वाक्य संश्लेषण की प्रक्रिया में संयुक्त एवं मिश्र वाक्यों को सरल वाक्यों में रूपान्तरित किया जाता है। कई वाक्यों के बदले एक वाक्य लिखने की रीति को ही वाक्य- विश्लेषण कहा जाता है। किन्तु ऐसी दशा में वाक्य में एक समापिका क्रिया का होना आवश्यक है।

सामान्यतः वाक्य के अंगों का यह परस्पर संबंध दो प्रकार से होता है-

1. वाक्य के सभी अंगों के उद्देश्य और विधेय के अन्तर्गत रखना। (सामान्यतः सरल वाक्यों का विश्लेषण इसी आधार पर किया जाता है।)
2. उपवाक्यों को अलग-अलग कर उनके पारस्परिक संबंधों को बताना। (मिश्रित वाक्य तथा संयुक्त वाक्यों का विश्लेषण इसी आधार पर होता है।)

अतः स्पष्ट है कि वाक्य विश्लेषण की यह क्रिया तीन प्रकार से की जाती है।

1. कई सरल वाक्यों को एक साधारण वाक्य में बदलना।
2. कई सरल वाक्यों को एक संयुक्त वाक्य में बदलना।
3. अनेक सरल वाक्यों को मिश्र वाक्य में बदलना।

क सरल वाक्यों का उद्देश्य/विधेय के आधार पर विश्लेषण संबंधी प्रक्रिया के सिद्धान्त

संरचना की दृष्टि से सरलवाक्य के प्रधान रूप से दो ही घटक होते हैं-

1. उद्देश्य
2. विधेय

किसी भी वाक्य के ये दो अनिवार्य अंग हैं।

उद्देश्य- वाक्य का वह अंग है, जिसके विषय में कहा जाता है। **विधेय**-उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए वह विधेय के अंतर्गत आता है।

इन दोनों के आधार पर सरल वाक्यों का वाक्य विश्लेषण करते समय हमें किन-किन बातों पर ध्यान देना होगा, उसे जानें।

सर्वप्रथम वाक्य में उद्देश्य को जाने। उद्देश्य जानने के लिए हमें देखना होगा कि वाक्य का कर्त्ता कौन है। कर्त्ता के साथ यदि विशेषण पदबंध आता है तो उसे विस्तार कहते हैं। तालिका में उद्देश्य के अन्तर्गत इन दोनों घटकों पर ध्यान दें।

उद्देश्य

विस्तार	पद
विश्लेषण पदबंध	संज्ञा पदबंध

उदाहरण-

झाँसी की रानी	लक्ष्मीबाई	एक वीर नारी थी
विशेषण पदबंध	संज्ञा पदबंध	विधेय

विधेय-

विधेय क्रिया प्रधान रहता है। इसके अन्तर्गत सभी प्रकार के क्रिया-भेद आ जाते हैं। जैसे-

1. घोड़ा दौड़ता है। (सामान्य क्रिया)
2. घोड़ा दौड़ रहा है। (संयुक्त क्रिया)
3. घोड़ा दौड़ता था। (अपूर्ण क्रिया)

- विधेय की रचना भी दो घटकों के अन्तर्गत होती है-

कर्म, क्रिया पद बंध तथा क्रिया विशेषण पदबंध अथवा पूरक पद/तालिका के आधार पर इसे भी जानें- एक वीर नारी थी।

विधेय

कर्म का विस्तार	कर्म पद/पदबंध	पूरक पद	क्रिया पद	क्रिया विशेषण
एक वीर	नारी	-	थीं	-

यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि कर्म- पद तथा पूरक पद के स्थान पर संज्ञा पद/ पद बंध आया है। अत: यहाँ भी कर्म या पूरक का विस्तार 'एक वीर' विशेषण पद बंध से हुआ है।

एक अन्य उदाहरण से इसे और अच्छी तरह समझें-

आचार्य चाणक्य ने	वीर चंद्रगुप्त को देखते ही देखते राजा बना दिया।
उद्देश्य	विधेय

विधेय

कर्म का विस्तार	कर्म पद/पदबंध	पूरक पद	क्रिया पद	क्रिया विशेषण पद

वीर चन्द्रगुप्त को राजा बना दिया देखते ही देखते

रोचक तथ्य-

1. कभी-कभी दो या दो से अधिक उद्देश्यों का एक ही विधेय होता है; जैसे-
- दालभात बंगालियों का भोजन है। (यहाँ 'दाल भात' बंगालियों का -दो उद्देश्य हैं।)
- राजा रानी अमीर गरीब सभी इसी को चाहते हैं।
  उद्देश्य विधेय
  (यहाँ राजा-रानी, अमीर-गरीब दो उद्देश्य हैं।)
2. वाक्यगत प्रक्षिप्त वाक्य विश्लेषण में स्थान नहीं पाते।
   जैसे- कलरात भी (क्या कहूँ) मैं सोता ही रहा।
   (यहाँ क्या कहूँ, प्रक्षिप्त वाक्य है)
3. सम्बोधन बोधक की संज्ञाएँ तथा विस्मयादि बोधक अव्यय विश्लेषण के समय छोड़ दिए जाते हैं।
4. वाक्य के लुप्त कर्त्ता को प्रकट कर देना चाहिए; जैसे-
   कहाँ जाओगे? (लुप्त कर्त्ता)
   (तुम) कहाँ जाओगे?
5. उद्देश्य के अन्तर्गत संज्ञा अथवा संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम, विशेषण, अव्यय अथवा वाक्यांशों का प्रयोग भी हो सकता है; जैसे-
   राम पढ़ता है। (संज्ञा)
   वह पढ़ता है। (सर्वनाम)
   बुड्ढा पढ़ता है। (विशेषण)
   इधर पढ़ो। (क्रिया-विशेषण)
6. प्रत्येक वाक्य में उद्देश्य विधेय स्पष्ट रहते हैं किन्तु भाव-वाच्य में उद्देश्य प्राय: क्रिया में ही अन्तर्निहित रहता है; जैसे-
   उससे चला नही जाता।
   (यहाँ चलना उद्देश्य क्रिया के अर्थ में ही सम्मिलित है।)

ख कई सरल वाक्यों का उपवाक्यों के आधार पर संयुक्त वाक्यों तथा मिश्र वाक्यों में विश्लेषण संबंधी प्रक्रिया के सिद्धान्त

फिर मैंने बताया कि सरल वाक्यों के विश्लेषण की प्रक्रिया संयुक्त एवं मिश्र वाक्यों की प्रक्रिया से भिन्न है। दोनों वाक्यों में अन्तर कैसे किया जाए, यह पहचान करना भी आना चाहिए। अत: इस संबंध में भी जाने। मिश्र एवं संयुक्त वाक्यों का निर्माण उपवाक्यों द्वारा होता है। अत: सर्वप्रथम- वाक्य के सभी उपवाक्यों को अलग-अलग करके लिख लेना चाहिए।

(1) उपवाक्यों की पहचान समापिका क्रिया (वाक्य के अंत में आने वाली क्रिया) द्वारा की जाती है। यदि किसी उपवाक्य में समापिका क्रिया का लोप हो गया हो, तो उसे कोष्ठक में लिख लेना चाहिए।

(2) पश्चात् उपवाक्यों के मध्य परस्पर संबंध को देख लेना चाहिए।

(3) यदि सभी उपवाक्य समान स्तर के हैं, तो वह संयुक्त वाक्य का उदाहरण होगा।

(4) यदि वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य है, और शेष आश्रित तो यह मिश्रवाक्य का उदाहरण होगा।

(5) उपवाक्य के नाम तथा संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

(6) योजक शब्दों को छाँटकर अलग लिख लेना चाहिए।

(7) अलग हुए उपवाक्यों का विश्लेषण सरल वाक्यों के विश्लेषण की भाँति किया जा सकता है।

(8) यह विश्लेषण तालिका बनाकर अथवा बिना तालिका बनाए भी किया जा सकता है।

आइए, इस प्रक्रिया के आधार पर दोनों प्रकार के वाक्यों का विश्लेषण करने का अभ्यास करते हैं।

संयुक्त वाक्यों का विश्लेषण संबंधी सिद्धान्त

संयुक्त वाक्यों में दो या दो से अधिक प्रधान उपवाक्य होते हैं; तथा एक या अनेक आश्रित उपवाक्य भी हो सकते हैं; जैसे-

1. (क) राम आया और चला गया।

(इस वाक्य में दोनों प्रधान उपवाक्य हैं, आश्रित कोई नहीं। राम आया। राम चला गया।)

(ख) और-योजक शब्द है। (दोनों वाक्यों का संयोजक संबंध है।)

2. शिक्षक ने कक्षा में प्रवेश किया और कहने लगे कि 'आज अवकाश है, नहीं पढ़ाऊँगा।'

(क) शिक्षक ने कक्षा में प्रवेश किया। (प्रधान उपवाक्य)

(ख) शिक्षक कहने लगे। (प्रधान उपवाक्य)

(ग) आज अवकाश है। (आश्रित उपवाक्य)

(घ) (आज) नहीं पढ़ाऊँगा। (आश्रित उपवाक्य)

(इस वाक्य में दो प्रधान उपवाक्य हैं, और दो आश्रित उपवाक्य) यह परिणामवाची संयुक्त वाक्य का उदाहरण है।

तालिका

उपवाक्य	उपवाक्य का प्रकार	योजक शब्द	पूरे वाक्य का प्रकार

मिश्र वाक्यों का विश्लेषण संबंधी सिद्धान्त

मिश्र वाक्यों में एक प्रधान उपवाक्य रहता है तथा एक या अनेक आश्रित वाक्य रहते हैं। आश्रित उपवाक्यों के तीन उप भेद होते हैं-

(क) संज्ञा उपवाक्य (ख) विशेषण उपवाक्य

(ग) क्रिया विशेषण उपवाक्य।

(क) राम ने कहा कि मैं शिक्षक हूँ।

(क) राम ने कहा (प्रधान उपवाक्य)

(ख) मैं शिक्षक हूँ। (संज्ञा उपवाक्य)

(योजक शब्द- कि)

(ख) जो मनुष्य ज्ञानी होते हैं, उन्हें नम्र होना चाहिए।

(क) उन्हें नम्र होना चाहिए (प्रधान उपवाक्य)

(ख) जो मनुष्य ज्ञानी होते हैं। (विशेषण उपवाक्य)

(योजक शब्द- जो)

(ग) जहाँ सज्जन रहते हैं, वहाँ सौहार्द्र रहता है।

(क) वहाँ सौहार्द्र रहता है। (प्रधान उपवाक्य)

(ख) जहाँ सज्जन रहते हैं। (क्रिया विशेषण उपवाक्य)

(योजक शब्द- जहाँ, वहाँ स्थान वाची)

तालिका

आश्रित	उपवाक्य का प्रकार	योजक शब्द	पूरे वाक्य का प्रकार

विशेष- यहाँ संयुक्त वाक्य तथा मिश्र वाक्यों के कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं जिसे आप तालिका के आधार पर भर कर उसे और अच्छी तरह समझने का प्रयास करें।

कई साधारण वाक्यों का एक संयुक्त वाक्य में वाक्य विश्लेषण रूपान्तरण (समानाधिकरण समुच्चय बोधक अव्ययों द्वारा)

विभक्त सरल वाक्य	संयुक्त सरल वाक्य
1. तुमने उसकी प्रशंसा की। उसके मित्रों ने भी उसकी प्रशंसा की।	1. तुमने ही नहीं उसके मित्रों ने भी उसकी प्रशंसा की।
2. हम लोग दिल्ली पहुँचे थे। वहाँ हमें तीन दिन रुकना पड़ा।	2. हम लोग दिल्ली पहुँचे, और वहाँ हमें तीन दिन रुकना पड़ा।

रोचक तथ्य—

- तालिका के आधार पर संयुक्त वाक्यों का विश्लेषण करते समय उपवाक्यों के समानाधिकरण समुच्चय बोधक योजकों को ध्यान में रखना होता है क्योंकि विभक्त सरल वाक्य को संयुक्त सरल वाक्य में ये योजक ही परिवर्तित करते हैं।

कई साधारण वाक्यों का एक मिश्र वाक्य में विश्लेषण : (व्यधिकरण समुच्चय बोधक अव्ययों द्वारा)

सरल वाक्य	मिश्र वाक्य
1. मोहन भोपाल में रहता है। यह मुझे पता है।	1. मुझे पता है कि मोहन भोपाल में रहता है।

2. यह विद्वान है। यह निर्धन है। है।	2. यह विद्वान है किन्तु निर्धन है।
3. वह कहाँ रहता है? यह कोई नहीं जानता।	3. यह कोई नहीं जानता कि वह कहाँ रहता है?
4. एक आदमी के पास बहुत धन था। वह प्रतिदिन गरीबों को भोजन कराता था।	4. एक आदमी के पास इतना धन था कि वह प्रतिदिन गरीबों को भोजन कराता था।
5. तुम मेरा एक काम कर दो। मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।	5. यदि तुम एक काम कर दोगे तो मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।

रोचक तथ्य—

- तालिका के आधार पर मिश्र वाक्यों का विश्लेषण करते समय प्रधान उपवाक्य और आश्रित उपवाक्यों के प्रकार, प्रकार्य तथा आपसी संबंध बनाने पड़ते हैं।

वाक्य संश्लेषण

वाक्य विश्लेषण के अन्तर्गत हमने संयुक्त तथा मिश्र वाक्यों को सरल वाक्यों में अलग-अलग किया था। इन अलग-अलग सरल वाक्यों को पुन: संयुक्त वाक्यों तथा मिश्र वाक्यों में बदलने की प्रक्रिया ठीक इसके विपरीत है। इसमें दो या दो से अधिक सरल वाक्यों को मिलाकर संयुक्त अथवा मिश्र वाक्य बनाया जाता है। ऐसे वाक्यों के निर्माण की विधि को ही वाक्य संश्लेषण कहते हैं।

ऐसा करते समय हमें कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए-

जैसे-

1. संश्लेषण करते समय वाक्यों का अर्थ नहीं बदलना चाहिए।
2. वाक्य में एक मुख्य क्रिया होना चाहिए।
3. अलग-अलग सरल वाक्यों की समापिका क्रियाओं को पहले कृदन्त रूपों (असमापिका क्रिया) में बदला जाता है। फिर इनको प्राय: संज्ञा, विशेषण अथवा क्रिया विशेषण बनाकर प्रयोग कर दिया जाता है। अत: ऐसे वाक्यों के **कृदन्त रूपों** का बड़ा महत्व है। (धातु+ प्रत्यय)
4. उपसर्ग तथा प्रत्यय के द्वारा नए शब्दों को भी वाक्य में समाहित किया जा सकता है।
5. ध्यान रहे- संश्लेषण अभ्यास का विषय है, नियमों का नहीं। निरन्तर अभ्यास करके ही इस विषय को आप समझ सकते हैं।

इस प्रकार संश्लेषण में वाक्यों को जोड़ने की प्रक्रिया होती है। संश्लेषण शब्द का अर्थ ही है- जोड़ना या मिलाना।

आप जानते ही है कि केवल सरल वाक्यों/ मूल वाक्यों के माध्यम से हम अपने भावों की अभिव्यक्ति नहीं कर सकते। कुछ बातें ऐसी होती है, जिन्हें हम संयुक्त अथवा मिश्र वाक्य बनाकर ही कह सकते हैं। किन्तु हम सदैव ऐसा नहीं कर सकते। कभी-कभी जटिल भावों और

विचारों की अभिव्यक्ति के लिए ऐसे वाक्यों की रचना आवश्यक है, जो अपनी बात सरल ढंग से व्यक्त कर सकें। इसलिए सरल वाक्य के साथ-साथ संयुक्त एवं मिश्र वाक्यों की रचना करना भी हमें आना चाहिए। ऐसे वाक्यों की रचना विधि का अध्ययन करके उन्हें पुन: सरल वाक्यों को संयुक्त अथवा मिश्र वाक्यों में रूपान्तरण करने की प्रक्रिया को ही वाक्य संश्लेषण कहा जाता है। ये सभी विधियाँ पद, **पदबंध वाक्य** रूपान्तर करके काम में लाई जाती है।

उदाहरण के लिए-

कंस मथुरा का राजा था। वह अत्याचारी और निरंकुश था। उसने कृष्ण को जान से मरवाने का बहुत प्रयत्न किया।

उपर्युक्त तीन सरल वाक्यों में जो बात कही गई है, उसे हम संश्लिष्ट वाक्य की दृष्टि से इस प्रकार भी कह सकते हैं-

मथुरा के अत्याचारी और निरंकुश राजा कंस ने कृष्ण को जान से मरवाने का बहुत प्रयत्न किया।

आप स्वयं देखेंगे कि संश्लेषण करते समय इस वाक्य का अर्थ यथावत् है। मुख्य क्रिया एक है।

संश्लेषण की इस प्रक्रिया में संयुक्त वाक्य अथवा मिश्र वाक्य को एक संश्लिष्ट वाक्य में बदला गया है। संक्षेपन, सार लेखन, संक्षिप्तीकरण के लिए इन प्रक्रियाओं को जानना तथा इनका अभ्यास करना आवश्यक होता है। तो आइए, इस प्रक्रिया का विस्तार से अध्ययन करें।

वाक्यों की संश्लेषण प्रक्रिया

निम्नलिखित उदाहरण पर ध्यान दें-

राम इलाहाबाद गया। (सरल वाक्य)

राम इलाहाबाद गया और संगम में स्नान करके लौटा। (संयुक्त वाक्य)

राम इलाहाबाद गया है जहाँ वह संगम में स्नान करके लौटेगा। (मिश्र वाक्य)

इस प्रकार रचना के आधार पर तीन प्रकार के वाक्यों से हम परिचित हैं। इसका अध्ययन हम पूर्व में कर चुके हैं।

आइए, इनकी विशेषताओं को फिर से ध्यान में लाएँ।

1. सरल वाक्य में एक उद्देश्य, एक विधेय तथा एक क्रिया होती है।
2. संयुक्त वाक्य में दो या दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य होते हैं।
3. मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य होता है, तथा एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, जो योजक शब्दों से जुड़े रहते हैं।

वाक्य जोड़ने की इस प्रक्रिया को निम्नांकित प्रमुख विधियों द्वारा जाने।

(अ) **समानाधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय** शब्द संयुक्त वाक्यों की रचना में चार प्रकार से सहायक होते हैं।

1. संयोजक- और, व, तथा, एवं आदि द्वारा
2. विभाजक- या, वा, अथवा, आदि द्वारा

3. विरोधक - परन्तु, लेकिन, वरन् आदि द्वारा
4. परिणाम दर्शक- इसलिए, अत:, आदि द्वारा

(ब) **व्यधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय** शब्द मिश्र वाक्यों की रचना में चार प्रकार से सहायक होते हैं।

1. संकेतवाचक- जो-तो, यदि, तो, यद्यपि, तथापि आदि
2. कारण वाचक- क्योंकि, जो कि, इसलिए आदि
3. उद्देश्य वाचक- कि, जो, ताकि, तो आदि
4. स्वरूप वाचक- मानो, अर्थात्, जो, याने आदि

(स) कृदन्त द्वारा

1. अपूर्ण कृदन्त या वर्तमानकालिक कृदन्त

राम कमरे में सो रहा था। राम को मैंने देखा

राम को मैंने कमरे में सोते हुए देखा।

2. पूर्ण कृदन्त या भूतकालिक कृदन्त

मेरा भाई मोटर साइकिल पर बैठा था। वह दिल्ली गया।

मेरा भाई मोटर साइकिल पर बैठे-बैठे दिल्ली गया।

3. पूर्ण कालिक कृदन्त (धातु+कर/करके)

राम अपने साथियों के साथ विद्यालय गया।

राम वहाँ आठ घंटे पढ़ता रहा।

राम अपने साथियों के साथ विद्यालय से लौट आया।

राम अपने साथियों के साथ विद्यालय जाकर वहाँ आठ घंटे पढ़कर विद्यालय से लौट आया।

इस प्रकार संयुक्तीकरण विधि द्वारा संश्लेषण करना संश्लेषण वाक्य रचना करने की एक विधि है जिसमें एकाधिक वाक्य परस्पर संबंध स्थापित करते हुए जुड़ जाते हैं; और एक सरल वाक्य का गठन करते हैं।

वाक्य संश्लेषण की एक दूसरी प्रक्रिया भी है, जो वाक्यों को पदबंध के रूप में संक्षिप्त एवं संश्लिष्ट करने से संबंधित है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत निम्नलिखित नियमों को ध्यान में रखना आवश्यक है-

1. क्रिया + पूर्णकालिक कृत प्रत्यय (कर) लगाकर
2. क्रिया + भूतकालिक कृत प्रत्यय (उस + हुआ) लगाकर
3. क्रिया + तात्कालिक कृत प्रत्यय (ता+हुआ) लगाकर
4. क्रिया / संज्ञा- कर्तृ बोधक प्रत्यय (ने, वाला) लगाकर
5. समाहारात्मक संबंध वाचक शब्द लगाकर - के अलावा आदि।

इन नियमों को ध्यान में रखकर सरल वाक्यों को पदबन्ध के रूप में सीमित किया जा सकता है; तथा संयुक्त एवं मिश्र वाक्यों को संश्लेषित वाक्यों में रूपान्तरित किया जा सकता है।

इस संदर्भ में आगे विस्तार से बताया जा रहा है।

अनेक सरल वाक्यों की संयुक्त वाक्यों में संश्लेषण प्रक्रिया

संयुक्त वाक्य में कम से कम दो प्रधान उपवाक्य रहते हैं। दो प्रधान उपवाक्यों में यह आवश्यक नहीं कि आश्रित उप वाक्य हो। एक से अधिक प्रधान उपवाक्य भी हो सकते हैं। इसका सीधा सा अर्थ यह है कि संयुक्त वाक्य में आश्रित उपवाक्य रह भी सकते हैं, और नहीं भी।

समानाधिकरण- संयुक्त वाक्य की सबसे सरल पहचान यह है कि दो या दो से अधिक समानाधिकरण उपवाक्य किसी समुच्चय बोधक अव्यय से जुड़े रहते हैं। यदि एक या दो अधिक सरल वाक्यों को योजक शब्दों से जोड़ दिया जाए, तो एक संयुक्त वाक्य बन जाएगा।

समुच्च बोधक समानाधिकरण अव्यय के अनुसार अर्थ की दृष्टि से संयुक्त वाक्य के चार भेद किए जा सकते हैं; जैसे-

1. योजक संयुक्त वाक्य

जो उपवाक्य और/तथा/बल्कि/एवं/अपितु आदि शब्दों से जुड़े रहते हैं, वे योजक संयुक्त वाक्य होते हैं; जैसे-

मैं नित्य योग करता हूँ।

मैं नित्य स्नान करता हूँ।

मैं नित्य योग करता हूँ और स्नान करता हूँ। (संयुक्त संश्लिष्ट वाक्य)

2. विभाजक संयुक्त वाक्य

या/चाहे/ना/कि आदि शब्दों द्वारा जो दो उपवाक्य विकल्प सूचक अव्यय से जुड़े रहते हैं, वे विभाजक संयुक्त वाक्य कहलाते हैं; जैसे-

(मैं घर पर रहूँगा। तुम घर पर रहोगे।)

1. मैं घर पर रहूँगा या तुम।
   (संयुक्त संश्लिष्ट वाक्य)
2. चाहे मैं रहूँ, चाहे तुम रहो।
   न, मैं घर पर रहूँ, न तुम घर पर रहोगे।
   (संश्लिष्ट संयुक्त वाक्य)

3. विरोधक संयुक्त वाक्य

जब किंतु/परन्तु/लेकिन/मगर/पर/बल्कि/प्रत्युत आदि शब्दों से दो उपवाक्य जुड़े रहते हैं, तो वे विरोधक संयुक्त वाक्य कहलाते हैं; जैसे-

1. मैंने रमेश की बहुत प्रतीक्षा की।
2. (वह) नहीं आया
   मैंने रमेश की बहुत प्रतीक्षा की किन्तु वह नहीं आया। (संश्लिष्ट संयुक्त वाक्य)

4. परिणामवाची संयुक्त वाक्य

जब इसलिए अतः आदि से दो वाक्य जुड़े रहते हैं, तो वे परिणाम वाची संयुक्त वाक्य

कहलाते हैं; जैसे –

1. मैं आना नहीं चाहता था।
2. (मैं) बाहर चला गया था।

मैं आना नहीं चाहता था, इसलिए बाहर चला गया था। (संश्लिष्ट संयुक्त वाक्य)

इस प्रकार चार प्रकार से हम अनेक सरल वाक्यों को जोड़कर संश्लिष्ट संयुक्त वाक्य बना सकते हैं।

अनेक सरल वाक्यों की मिश्रित वाक्यों में संश्लेषण की प्रक्रिया–

मिश्रित वाक्य बनाने के लिए एक प्रधान उपवाक्य तथा एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं। ये उपवाक्य संज्ञा, विशेषण या क्रिया विशेषण उपवाक्य हो सकते हैं। सरल वाक्यों को मिश्रित वाक्य में रूपांतरित करते समय व्यधिकरण समुच्चय बोधक शब्दों का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

(क) राम ने कहा। मैं सच–सच बताता हूँ। (सरल वाक्य)
राम ने कहा कि मैं सच–सच बताता हूँ। (संज्ञा उपवाक्य)

(ख) मैं एक व्यक्ति को जानता हूँ। वह बहुत अच्छा पढ़ाता है।(सरल वाक्य)
मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो बहुत अच्छा पढ़ाता है। (विशेषण उपवाक्य)

(ग) कठिन परिश्रम करो। इस बार तुम अवश्य उत्तीर्ण होओगे। (सरल वाक्य)
कठिन परिश्रम करने पर इस बार तुम अवश्य उत्तीर्ण होओगे। (क्रिया विशेषण उपवाक्य)

रोचक तथ्य–

1. संज्ञा उपवाक्य 'कि' से जुड़े रहते हैं।
2. विशेषण उपवाक्य जिसे, जिसने, जिसको, जिन्हें, जिनको, जो आदि योजक शब्दों द्वारा जुड़े रहते हैं।
3. क्रिया विशेषण उपवाक्य में क्रिया की रीति, स्थान, काल आदि का ज्ञान होता है। अत: ऐसे वाक्य जब, ज्यों ही, जहाँ, जिधर, जितना आदि योजक शब्दों से जुड़े रहते हैं।

– व्यधिकरण समुच्चय बोधक शब्द चार प्रकार के होते हैं–

(क) संकेत वाचक - जैसे

यदि तुम ठीक से पढ़ाई करते, तो उत्तीर्ण हो जाते।
(यदि तो, जो–तो, यद्यपि–तथापि आदि अन्य शब्द इसके उदाहरण हैं।)

(ख) कारण वाचक- जैसे

छाता ले लो क्योंकि वर्षा होने की संभावना है।
(क्योंकि , ताकि, कि, चूँकि, इसलिए, आदि अन्य शब्द इसके उदाहरण है।)

(ग) उद्देश्य वाचक - जैसे–

पुस्तक खरीद ली है, ताकि पढ़ सकूँ।
(ताकि, जिससे कि आदि शब्द इसके अन्य उदाहरण हैं।)

(घ) स्वरूप वाचक- जैसे

सत्यवादी गांधी मानो हरिश्चन्द के अवतार थे।
(मानो, अर्थात् आदि शब्द इसके अन्य उदाहरण हैं।)

06

वाक्य रचनागत अशुद्धियाँ

वाक्य अशुद्धि का प्रमुख कारण वाक्य गठन के नियमों को ध्यान में नहीं रखना है; अर्थात् वाक्य अशुद्धि का मूल कारण व्याकरणिक नियमों की ठीक से जानकारी नहीं होना है। अशुद्धियाँ ठीक करते समय उसका कारण भी जानना चाहिए अन्यथा एक ही प्रकार की गलती बार-बार होती रहेगी।

वाक्य रचना संबंधी अशुद्धियों को यहाँ हम चार प्रमुख वर्गों में बाँट सकते हैं-

1. पदक्रम संबंधी अशुद्धियाँ
2. अन्विति संबंधी अशुद्धियाँ
3. वाक्य परिवर्तन (रूपान्तरण) संबंधी अशुद्धियाँ
4. अन्य अशुद्धियाँ; जैसे- परसर्ग संबंधी, पुनरुक्ति संबंधी, पद रचना, संबंधी, पदबंध संबंधी।

यहाँ हम अशुद्धियाँ ठीक करने के संबंध में पदक्रम संबंधी अशुद्धियों के नियमों का पुन: उल्लेख करते हुए कुछ उदाहरण देंगे जिससे यह समझ बैठें कि नियमों को ध्यान में रखकर अशुद्धियाँ कैसे दूर हो सकती हैं। शेष प्रकरणों में आप पुस्तक में प्रकरण के अंतर्गत दिए गए नियमों को पुन: पढ़कर अशुद्धियाँ दूर करने का प्रयत्न करें ताकि विषय-वस्तु का दोहराव न हो। किन्तु ध्यान रहे, बिना नियमों को ध्यान में रखकर भले ही आप वाक्य की अशुद्धि दूर कर दें किन्तु यह विधि अवैज्ञानिक ही होगी।

पदक्रम संबंधी अशुद्धियों को शुद्ध करना-

पदक्रम संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के लिए पद क्रम संबंधी नियमों को ध्यान में रखना होगा।

1. वाक्य में पहले कर्त्ता फिर कर्म और अंत में क्रिया (सकर्मक) आते हैं; जैसे-
   मैं दूध पीता हूँ। (यहाँ दूध सकर्मक क्रिया है। यह क्रिया के पहले आई)
2. यदि क्रिया अकर्मक है, तो वाक्य में पहले कर्त्ता फिर क्रिया आती हैं; जैसे राम पढ़ता है। (यहाँ राम (कर्त्ता) पहले आया फिर क्रिया पढ़ता है आई।)
3. संबंध कारक बनाने वाले परसर्ग (का, की, के/ रा, री, रे) संज्ञा के पूर्व आते हैं; जैसे-
   राम ने मोहन को पुस्तक दी।
   (यहाँ 'को' परसर्ग पुस्तक (संज्ञा) से पहले आया है।)

4. प्रश्नवाचक वाक्यों में 'क्या' वाक्य के प्रारम्भ में आता है; जैसे–
क्या आप चाय लेंगे?
शेष प्रश्नवाचक शब्द वाक्य के मध्म में आते हैं; जैसे–
आप वहाँ कैसे पहुँचेंगे?
वहाँ कौन है?

5. क्रिया विशेषण सदैव क्रिया के पूर्व आते हैं; जैसे–
वह धीरे–धीरे जा रहा है।
(यहाँ धीरे–धीरे क्रिया विशेषण क्रिया 'जाने' के पूर्व आया है।)

6. विस्मयादि बोधक शब्द वाक्य के प्रारम्भ में आते हैं; जैसे–
अरे! यह कैसे हुआ?

7. न अव्यय का प्रयोग वाक्य के अंत में होता है; जैसे–
तुम भी साथ चलोगे न।

2. अन्विति संबंधी

अन्विति के अन्तर्गत लिंग, वचन, पुरुष, और काल के अनुसार वाक्य के विभिन्न शब्दों का परस्पर संबंध प्रदर्शित किया जाता है।

यह संबंध तीन रूपों में होता है

1. कर्त्ता और क्रिया संबंधी
2. कर्म और क्रिया संबंधी
3. संज्ञा और सर्वनाम संबंधी
4. विशेषण–विशेष्य संबंधी

इस प्रकार कुछ बिंदु तैयार कर अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध वाक्य करने संबंधी अभ्यास करके ही आप वाक्य रचना के संबंध में जान सकेंगे। तत्संबंधी प्रचुर अभ्यास परिशिष्ट के अंतर्गत, आगे दिए गए हैं। उसकी सहायता से अभ्यास कर अपने ज्ञान और समझ का स्वयं परीक्षण करें। सुविधा के लिए परिशिष्ट के अंतर्गत ही कुछ परीक्षोपयोगी प्रश्न भी हल सहित दिए गए हैं। उनका भी ध्यान पूर्वक अध्ययन करें।

01

परिशिष्ट

वाक्यगत अशुद्धियाँ

विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गए इन अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए-

1. रोगी को एक गरम कप दूध दीजिए।
2. हम यह काम किए हैं।
3. आप आ जाओ।
4. उसने अनेकों बड़े-बड़े काम किए।
5. डाकुओं ने बस लूटी गई।
6. वह स्थान केवल मात्र महिलाओं के लिए आरक्षित है।
7. मुझे उस परमात्मा पर आत्मविश्वास है।
8. भारतीय सेना ने गोले और तोपों से आक्रमण किया।
9. मेरा तो प्राण ही निकल गया।
10. मुझे एक फूल की माला चाहिए।
11. तुम्हारी बकझक सुनते-सुनते कान पक गया।
12. शिक्षक ने मुझे आज्ञा दिया।
13. गुणवान नारी सर्वत्र पूजी जाती है।
14. मैंने नरेश को, कमल को और रमेश को आज साथ-साथ देखे हैं।
15. जयपुर में अनेक दर्शनीय स्थल देखने योग्य हैं।
16. मुझे उनके असफल हो जाने का संदेह है।
17. उसने यह काम करना है।
18. मेरे को प्यास लगी है।
19. उन्होंने एक कविता अंग्रेजी से अनुवाद किया है।
20. क्या आप देर में सोकर उठते हैं?
21. कृपया करके मेरे साथ नीचे चलिए।
22. मोहन कल सुबह को यहाँ आएगा।
23. माता-पिता आ गया है।
24. उधर जाकर उधर कुर्सी पर बैठ जाओ।

25. मेरे को अभी मुंबई जाना है।
26. कृपया करके इधर आइए।
27. इस काम के हो जाने की मेरी आशा है।
28. यह कविता तुलसी ने लिखा है।
29. यहाँ कोई लगभग बीस व्यक्ति खड़े थे।
30. यह पुस्तक में लेखक ने भारत की समस्याओं पर विचार किया है।
31. कृष्णकांत जानता है कि शायद उसका मित्र बीमार है।
32. वह लिखना-पढ़ना करने लगा है।
33. मेरे को उन्होंने बताया है।
34. अनेकों व्यक्तियों ने वह फिल्म देखीं।
35. कृपया तीन दिन का अवकाश देने की कृपा करें।
36. गत रविवार वह मुंबई जाएगा।
37. जवाहरलाल नेहरू का देश सदा आभारी रहेगा।
38. हर एक ने टोपियाँ पहन रखी थी।
39. नल और दमयंती वन को गई।
40. हमारा वाला घर सुविधाजनक है।
41. तुमने अभी रुकना है।
42. मैं उसे अपनी शत्रुता समझता हूँ।
43. मेरा शरीर गदगद हो उठा।
44. खरगोश को काटकर गाजर खिलाओ।
45. उसका प्राण निकल गया।
46. केवल मात्र महिलाओं के लिए आरक्षित है।
47. मैं सप्रमाण सहित बता रहा हूँ।
48. वह सोमवार को पहुँच जाएगा।
49. हमें प्रत्येक छोटी-मोटी बातें सोचनी होगी।
50. हमारे को तुम्हारी बातें अच्छी नहीं लगी।
51. उसने व्यवहार करने के ढंग को बताया।
52. केवल कहने मात्र से कुछ नहीं होता।
53. मेरे से अब आपकी मित्रता नहीं निभ सकेगी।
54. जवाहरलाल जी लब्ध प्रतिष्ठित नेता था।
55. कश्मीर में अनेक दर्शनीय स्थान देखने योग्य हैं।
56. कृपया करके शीघ्र आओ।
57. कहने मात्र से ही वह हमारी बात मान गया।
58. गत रविवार वह दिल्ली जाएगा।

59. उसके बाद फिर क्या हुआ?
60. कमरे में बड़ा अँधेरा है।
61. वे सज्जन पुरुष मेरे संबंधी हैं।
62. उस पर घड़ों पानी फिर गया।
63. सोहन को काटकर सेब खिलाओ।
64. यद्यपि इस लड़के ने बिल्कुल परिश्रम नहीं किया, तो भी वह पास हो गया।
65. विंध्याचल पर्वत को लाँघना पड़ा।
66. मंत्राणी समारोह में आई हैं।
67. हम दोनों के बीच शत्रुता हो गई।
68. वे गुनगुने गर्म पानी से स्नान करते हैं।
69. वह श्याम पर बरस गया।
70. उसके पास केवल मात्र एक रुपया रह गया।
71. हम पाँच बजे सोकर उठ लिए थे।
72. हमें उनका उत्तर से बहुत निराशा हुई।
73. कृपया मुझे कल की छुट्टी देने की कृपा करें।
74. बैल को काटकर घास खिलाओ।
75. मैं गरम गाय का दूध पीना पसंद करता हूँ।
76. हम निबंध लिख चुके हैं।
77. जानता कौन है इस बात को?
78. इन दिनों में आप क्या काम कर रहे हैं?
79. माताजी ने आपको बुलाए हैं।
80. मैं ड्राइवर से ज्योति को कार चलाना सिखा रहा हूँ।
81. सदा सच बोलना यही जीवन के लक्ष्य होना चाहिए।
82. मैंने पाठ याद करना भूल गया।
83. आप पुस्तक क्या पढ़ेंगे।
84. आपका मेहमान किधर चले गए?
85. पिताजी बैठ जाओ।
86. मेरे को तुमसे कुछ काम है।
87. मेरा पुत्र व पुत्री बाजार गई हैं।
88. हम बाजार गए, कुछ किताबें खरीदें और वापिस आ गए।
89. बोलो, तुमको क्या होना।
90. छत पर से नीचे उतर जाओ।
91. तुम तुम्हारी पुस्तक पढ़ो।
92. फर्श पर के लिए एक कालीन खरीदना है।

93. तुम्हारे को क्या चाहिए?
94. वह दुकान पर से अभी लौटा है।
95. मैंने भी आपके साथ चलना है।
96. एक गर्म कप चाय पी लीजिए।
97. मेरे को आपसे कुछ काम है।
98. शुद्ध गाय का दूध पीया करो।
99. आप अभी चले जाओ।
100. मुझे गरम गोभी का पराठा बहुत प्रिय है।
101. आप चलो, मैं आता हूँ।
102. अपना हस्ताक्षर कर दीजिए।
103. मेरे को मुंबई जाना है।
104. तुम्हें कितनी पुस्तकें चाहिएँ।
105. बड़े भाग्य से आपका दर्शन हुआ।
106. तुम्हारे से बडा भी कोई है।
107. पहली जुलाई करे नया सत्र प्रारंभ हुआ।
108. तुम पुस्तक को पढ़ते हो।
109. उसे अगणित कष्ट उठाने पड़े।
110. रानी का घोड़ा भीषण गति से दौड़ रहा था।
111. सरकार ने जंगलात के काटने पर रोक लगा दी है।
112. भारी भरकम भीड़ जमा हो गई।
113. मुझे उठा नहीं जाता।
114. राम माता-पिता की परिचर्या करते थे।
115. वह गुनगुने गर्म पानी से स्नान करता है।
116. वह तो व्यर्थ में अंगारे हुआ जाता है।
117. ईश्वर के अनेकों नाम है।
118. उसका सिर शर्म से गड़ गया।
119. वह घर में चला गया।
120. सारे विश्व भर में महँगाई बढ़ रही है।
121. उसका गुप्त भेद खुल गया।
122. मेरे को एक किताब चाहिए।
123. प्रधानमंत्री भाषण दे रहा है।
124. मैं रेलगाड़ी पर आया।
125. मैंने दिल्ली जाना है।
126. एक गीतों की पुस्तक चाहिए।

127. मेरा बेटा और बेटी बाजार गई है।
128. वहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है।
129. हम आमों को चूस रहे हैं।
130. मेरे माता जी आ रही है।
131. क्या आप खाना खा लिए हैं?
132. मैं ड्राइवर से मीरा को कार चलाना सिखा रहा हूँ।
133. हम लोग यहाँ सकुशलतापूर्वक हैं।
134. मेरे को एक संतरा चाहिए।
135. पत्र ये किसने लिखे हैं।
136. आप पूज्यनीय हैं।
137. भगत सिंह का देश सदा आभारी रहेगा।
138. एक रुपयों की थैली ले आइए।
139. आशा है आप सकुशलतापूर्वक होंगे?
140. शास्त्री जी अच्छे व्याकरण के जानकार हैं।
141. एक गेंदे की माला लेते आइए।
142. मैं आप सबों का स्वागत करता हूँ।
143. पशु को काटकर चारा खिलाओ।
144. आप चलो, मैं आया।
145. हम हमारे देश की सेवा करें।
146. हम ह्दय से आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।
147. कल वहाँ एक लड़का और लड़की खड़ी थी।
148. तुमको क्या होना?
149. वह कलाकार आदमी है।
150. अतिथियों को सादरपूर्वक बिठाइए।
151. सप्रसंग-सहित व्याख्या अपेक्षित है।
152. मेरे को जाना पड़ेगा।
153. केवल दस रुपए मात्र के लए ऐसी लड़ाई!
154. कृपया मेरी सहायता करने की कृपा करें।
155. तुम तुम्हारे गाँव लौट जाओ।
156. अपनी बात सविस्तारपूर्व सुनाइए।
157. उन सबों ने काम नहीं किया।
158. मैं आज सायंकाल के समय घूमने गया था।
159. मेरे को अभी विद्यालय जाना है।
160. कृपया दो दिन का अवकाश देने की कृपा करें।

161. एक आम मेरे को भी दीजिए।
162. काटकर रोगी को फल खिलाइए।
163. प्रात:काल के समय घूमना चाहिए।
164. तुम तुम्हारे मित्र को बुलाओ।
165. अनेकों लोगों से हॉल भरा था।
166. पुत्र ने पिता जी के चरणों के लिए सिर झुका दिया।
167. हमने इसको विचार-विमर्श किया।
168. मेरे को गुरुजी ने क्यों बुलाया है?
169. कृपया दो दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।
170. शेर को सामने देखकर मेरे तो प्राण ही सूख गया।
171. मुझे केवल मात्र पाँच रुपए चाहिए।

उत्तर- शुद्ध वाक्य

1. रोगी को एक कप गर्म दूध दीजिए।
2. हमने यह काम किया है।
3. आप आओ।
4. उसने अनेक बड़े-बड़े काम किए।
5. डाकुओं ने बस लूटी।
6. वह स्थान केवल महिलाओं के लिए आरक्षित है।
7. मुझे परमात्मा पर विश्वास है।
8. भारतीय सेना ने गोलों और तोपों से आक्रमण किया।
9. मेरे तो प्राण ही निकल गए।
10. मुझे फूलों की एक माला चाहिए।
11. तुम्हारी बकझक सुनते-सुनते काम पक गए।
12. शिक्षक ने मुझे आज्ञा दी।
13. गुणवती नारी सर्वत्र पूजी जाती है।
14. मैंने नरेश, कमल और रमेश को आज साथ-साथ देखा है।
15. जयपुर में अनेक दर्शनीय स्थान है।
16. मुझे उनके असफल होने का संदेह है।
17. उसे यह काम करना है।
18. मुझे प्यास लगी है।
19. उन्होंने एक कविता का अंग्रेजी से अनुवाद किया है।
20. क्या आप देर से सोकर उठते हैं?
21. कृपया मेरे साथ नीचे चलिए।

22. मोहन कल सुबह आएगा।
23. माता-पिता आ गए हैं।
24. उधर जाकर कुर्सी पर बैठ जाओ।
25. मुझे अभी मुंबई जाना है।
26. कृपया इधर आइए।
27. इस काम के हो जाने की मुझे आशा है।
28. यह कविता तुलसी ने लिखी है।
29. यहाँ लगभग बीस व्यक्ति खड़े थे।
30. इस पुस्तक में लेखक ने भारत की समस्याओं पर विचार किया है।
31. कृष्णकांत जानता है कि उसका मित्र बीमार है।
32. वह लिखने-पढ़ने लगा है।
33. मुझे उन्होंने बताया है।
34. अनेक व्यक्तियों ने वह फिल्म देखी।
35. तीन दिन का अवकाश देने की कृपा करें।
36. आगामी रविवार वह मुंबई जाएगा।
37. देश जवाहरलाल नेहरू का सदा आभारी रहेगा।
38. हर एक ने टोपी पहन रखी थी।
39. नल और दमयंती वन को गए।
40. हमारा घर सुविधाजनक है।
41. अभी तुम्हें रुकना है।
42. मैं उसे अपना शत्रु समझता हूँ।
43. मेरा शरीर गद्‌गद् हो गया।
44. खरगोश को गाजर काटकर खिलाओ।
45. उसके प्राण निकल गए।
46. केवल महिलाओं के लिए आरक्षित है।
47. मैं प्रमाण सहित बता रहा हूँ या मैं सप्रमाण बता रहा हूँ।
48. वह सोमवार को यहाँ पहुँच जाएगा।
49. हमें प्रत्येक छोटी-मोटी बात सोचनी होगी।
50. हमें तुम्हारी बातें अच्छी नहीं लगी।
51. उसने व्यवहार का ढंग बताया।
52. कहने मात्र से कुछ नहीं होता।
53. मुझसे अब आपकी मित्रता नहीं निभ सकेगी।
54. जवाहरलाल जी लब्ध प्रतिष्ठित नेता थे।
55. कश्मीर में अनेक दर्शनीय स्थल हैं।

56. कृपया शीघ्र आओ।
57. कहने से ही वह हमारी बात मान गया।
58. आगामी रविवार वह दिल्ली जाएगा।
59. उसके बाद क्या हुआ?
60. कमरे में बहुत अँधेरा है।
61. वे सज्जन मेरे संबंधी हैं।
62. उस पर घड़ों पानी पड़ गया।
63. सोहन को सेब काटकर खिलाओ।
64. यद्यपि इस लड़के ने परिश्रम नहीं किया, तो भी वह पास हो गया।
65. विंध्याचल को लाँघना पड़ेगा।
66. मंत्री समारोह में आई हैं।
67. हम दोनों में शत्रुता हो गई।
68. वे गुनगुने पानी से स्नान करते हैं।
69. वह श्याम पर बरस पड़ा।
70. उसके पास केवल एक रुपया रह गया।
71. हम पाँच बजे सोकर उठ गए।
72. हमें उनके उत्तर से बहुत निराशा हुई।
73. कृपया मुझे कल की छुट्टी दे दीजिए।
74. घास काटकर बैल को खिलाओ।
75. मैं गाय का गरम दूध पीना पसंद करता हूँ।
76. हमने निबंध लिख लिया है।
77. इस बात को कौन जानता है?
78. इन दिनों आप क्या कर रहे हैं?
79. माता जी ने आपको बुलाया है।
80. मैं ड्राइवर से ज्योति को कार चलाना सिखवा रहा हूँ।
81. सदा सच बोलना ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।
82. मैं पाठ करना भूल गया।
83. क्या आप पुस्तक पढ़ेंगे?
84. आपके मेहमान किधर चले गए?
85. पिता जी बैठ जाइए।
86. मुझे तुमसे कुछ काम है।
87. मेरे पुत्र व पुत्री बाजार गए हैं।
88. हम बाजार गए, कुछ किताबें खरीदीं और वापिस आ गए।
89. बोलो, तुम्हें क्या चाहिए?

90. छत से नीचे उतर जाओ।
91. तुम अपनी पुस्तक पढ़ो।
92. फर्श के लिए एक कालीन खरीदना है।
93. तुम्हें क्या चाहिए?
94. वह दुकान से अभी लौटा है।
95. मुझे भी आपके साथ चलना है।
96. एक कप गर्म चाय पी लीजिए।
97. मुझे आपसे कुछ काम है।
98. गाय का शुद्ध दूध पिया करो।
99. तुम अभी चले जाओ।
100. मुझे गोभी का गरम पराँठा बहुत प्रिय है।
101. आप चलिए, मैं आता हूँ।
102. आप हस्ताक्षर कर दीजिए।
103. मुझे मुंबई जाना है।
104. तुम्हें कितनी पुस्तकें चाहिए?
105. बड़े भाग्य से आपके दर्शन हुए।
106. तुमसे बड़ा भी कोई है।
107. पहली जुलाई से नया सत्र प्रारंभ हुआ।
108. तुम पुस्तक पढ़ते हो।
109. उसे अनगिनत कष्ट सहने पड़े।
110. रानी का घोड़ा तेज गति से दौड़ रहा था।
111. सरकार ने जंगलात काटने पर रोक लगा दी है।
112. भारी भीड़ जमा हो गई।
113. मुझसे उठा नहीं जाता।
114. राम माता-पिता की परिचर्या करता था।
115. वह गर्म पानी से स्नान करता है।
116. वह व्यर्थ में अंगारा हुआ जाता है।
117. ईश्वर के अनेक नाम हैं।
118. उसका सिर शर्म से झुक गया।
119. वह घर चला गया।
120. सारे विश्व में महँगाई बढ़ रही है।
121. उसका भेद खुल गया।
122. मुझे एक किताब चाहिए।
123. प्रधानमंत्री भाषण दे रहे हैं।

124. मैं रेलगाड़ी से आया।
125. मुझे दिल्ली जाना है।
126. गीतों की एक पुस्तक चाहिए।
127. मेरा बेटा और बेटी बाजार गए हैं।
128. वहाँ गाय का शुद्ध दूध मिलता है।
129. हम आम चूस रहे हैं
130. मेरी माता जी आ रही हैं।
131. क्या आपने खाना खा लिया है?
132. मैं ड्राइवर द्वारा मीरा को कार चलाना सिखवा रहा हूँ।
133. हम लोग यहाँ सकुशल है।
134. मुझे एक संतरा चाहिए।
135. यह पत्र किसने लिखा है?
136. आप पूजनीय हैं या आप पूज्य हैं।
137. देश सदा भगतसिंह का आभारी रहेगा।
138. रुपयों की एक थैली ले आइए।
139 आशा है, आप सकुशल होंगे? या
आशा है, आप कुशलतापूर्वक होंगे?
140. शास्त्री जी व्याकरण के अच्छे जानकार हैं।
141. गेंदे की एक माला लेते आइए।
142. मैं आप सबका स्वागत करता हूँ।
143. पशु को चारा काटकर खिलाओ।
144. आप चलिए, मैं आया।
145. हम अपने देश की सेवा करें।
146. हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।
147. कल वहाँ एक लड़का और लड़की खड़े थे।
148. तुम्हें क्या होगा?
149. वह कलाकार है।
150. अतिथियों को सादर बिठाइए।
151. सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित है।
152. मुझे जाना पड़ेगा।
153. मात्र दस रुपए के लिए ऐसी लड़ाई!
154. कृपया, मेरी सहायता करें।
155. तुम अपने गाँव लौट जाओ।
156. अपनी बात विस्तारपूर्वक सुनाइए।

157. उन सबने काम नहीं किया।
158. मैं आज सायंकाल घूमने गया था।
159. मुझे अभी विद्यालय जाना है।
160. कृपया दो दिन का अवकाश प्रदान करें।
161. एक आम मुझे भी दीजिए।
162. रोगी को फल काटकर खिलाइए।
163. प्रातःकाल घूमना चाहिए।
164. तुम अपने मित्र को बुलाओ।
165. अनेक लोगों से हॉल भरा था। या हॉल में अनेक लोग थे।
166. पुत्र ने पिता जी के चरणों में सिर झुका दिया।
167. हमने इस पर विचार-विमर्श किया।
168. मुझे गुरु जी ने क्यों बुलाया है।
169. दो दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।
170. शेर को सामने देखकर मेरे तो प्राण ही सूख गए।
171. मुझे मात्र पाँच रुपए चाहिए।

विराम चिह्न : प्रकार एवं प्रयोग

खण्ड-एक

विराम चिह्न : आवश्यकता एवं महत्त्व

01

विराम चिह्न : आवश्यकता एवं महत्त्व

• एक बार एक चोर के पीछे भागता हुआ आदमी चिल्लाया- ''पकड़ो मत जाने दो''- तो लोगों ने उसे पकड़ा नहीं और चोर आसानी से नौ दो ग्यारह हो गया।

• अमेरिका में गलत स्थान पर विराम चिह्न लगा देने से वहाँ की सरकार को 20 लाख डालर की हानि उठाना पड़ी; और तत् सम्बन्धित कानून ठीक विराम चिह्न लगाकर दुबारा पास करना पड़ा।

हुआ यूँ कि अमेरिका के समाचार-पत्रों को छापना था कि ''फल, पौधे और सब्जी पर एक विशेष प्रकार का कर लगाया गया है।'' भूल से फल के बाद का अल्प-विराम नहीं लगने से छप गया कि ''फल पौधे और सब्जी पर एक विशेष प्रकार का कर लगाया गया है।'' अत: कई दिनों तक फलदार पौधों पर कर लगता रहा, जबकि फल तथा पौधों, दोनों पर ही कर लगाया जाना था। अत: लाखों डालर की हानि हुई।

• फ्रांस में एक मुकदमे में स्याही का धब्बा गिरने से यह तय नहीं हो पाया कि विराम चिह्न अल्पविराम का है, या यह केवल धब्बा है।

• एक विद्यालय में निरीक्षण रिपोर्ट में निरीक्षक द्वारा लिखा जाना था— निरीक्षक महोदय कहते हैं, 'प्रधानाध्यापक अक्षम है।' किन्तु टंकण कर्ता ने अवतरण (उद्धरण) चिह्न नहीं लगाया, तो वाक्य इस प्रकार बन गया- निरीक्षक महोदय, कहते हैं प्रधानाध्यापक अक्षम है। इस प्रकार विचारों एवं भावों की स्पष्टता के लिए तथा लिखने में अर्थ के अनर्थ से बचने एवं कानून की आवश्यकताओं के लिए विराम चिह्नों के प्रयोग की बहुत सार्थकता है।

विराम चिह्नों का महत्त्व निम्नांकित संवाद से भी स्पष्ट होता है—

1. मोहन ने अपने छोटे भाई से पूछा—
   ''तुम कहाँ गए थे?''
2. छोटे भाई ने उत्तर दिया—
   ''मैं बाजार गया था।''
3. मोहन ने फिर पूछा—
   ''बाजार क्यों गए थे?''
4. छोटे भाई ने कहा—
   ''मुझे कुछ सामान खरीदना था— कलम, पेंसिल, पेन, कागज, पुस्तक...''
5. मोहन ने (वस्तुओं को देखकर) उनमें से पेन को उठाकर कहा—

"ओह! यह पेन कितना सुंदर है!"

उपर्युक्त संवाद में मोहन एवं उसके छोटे भाई के मध्य जो कथन हुआ, उसमें भिन्न-भिन्न स्थितियाँ प्रकट होती हैं। जब इन स्थितियों को लिखित भाषा में व्यक्त करना होता है, तब हमें विराम चिह्नों का सहारा लेना होता है।

उदाहरण के लिए पहले वाक्य को ही लें। उसमें मोहन द्वारा जो प्रश्न पूछा गया है, उसमें प्रश्नवाचक विराम चिह्न का प्रयोग करना आवश्यक होगा, अन्यथा उसे प्रश्न के रूप में कोई नहीं पढ़ पाएगा। यही बात अन्य वाक्यों के सम्बन्ध में भी है। इस प्रकार विराम चिह्न मन के भावों के साथ-साथ विचारों को स्पष्ट रीति से समझने में भी सहायक होते हैं।

तो आइए, विराम चिह्नों की इस यात्रा में हम सबसे पहले यह जानने का प्रयास करें कि विराम चिह्न क्या हैं? लेखन में इनका महत्त्व क्या है? इनके उद्देश्य क्या हैं? इनके गलत प्रयोग से वाक्यों के अर्थ कैसे बदल जाते हैं।

विराम चिह्न से आशय

विराम का अर्थ होता है— ठहराव, विश्राम अथवा रुकना। जिस प्रकार कार्य करते समय बीच-बीच में विश्राम करना आवश्यक होता है, उसी प्रकार भाषा में विराम चिह्नों का प्रयोग पढ़ने, लिखने तथा संभाषण करते समय उच्चारण की दृष्टि से वाक्य को उपखण्डों में विभाजित करने के लिए किया जाता है।

लेखन में विराम चिह्नों का महत्त्व एवं उद्देश्य

जिस प्रकार बिना शिरो रेखा के हम लगातार लिखते चले जाएँ, तो शायद ही हमारी बात पढ़कर कोई समझ सके, उसी प्रकार विराम चिह्नों का प्रयोग किए बिना हम कुछ लिखने का प्रयास करें, तो शायद ही कोई हमारे भावों को ठीक प्रकार से समझ सकता है।

आज की भागमभाग से भरी जिंदगी में ठहराव के लिए कोई स्थान ही नहीं है। विश्राम कोई करना ही नहीं चाहता। पूछो- ऐसा क्यों कर रहे हैं लोग? तो कोई कारण बताना ही नहीं चाहता। यही कारण है कि भाषा के क्षेत्र में भी विराम चिह्न लगाने के सम्बन्ध में अराजकता बढ़ती जा रही है। विराम चिह्न के नाम से कुल पाँच चिह्न हैं— पूर्ण विराम, अर्द्ध विराम, अल्प विराम, उप विराम, ऊर्ध्व विराम। इनमें कुल दो विराम चिह्नों का प्रयोग ही अक्सर लेखन में हो रहा है-पूर्ण विराम और अल्प विराम। शेष तीन विराम चिह्नों का प्रयोग व्यवहार में नहीं-सा है।

प्रश्नवाचक चिह्न, विस्मयादि चिह्न, निर्देशक चिह्न, योजक एवं उद्धरण चिह्न का प्रयोग प्रश्न पूछते समय, मनोभावों को स्पष्ट करते समय, शब्दों को सामासिक बनाने के लिए तथा कथन को स्पष्ट करने के लिए करना आवश्यक है। इस प्रकार ये पाँच चिह्नों का अध्ययन भी भली भाँति होना चाहिए। इन चिह्नों का उपयोग भी अवधारणा स्पष्ट न होने से भलीभाँति नहीं हो पाता। शेष विराम चिह्न भी लेखन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्व के हैं; वे हैं— व्याख्या चिह्न, लाघव चिह्न, आवेशी चिह्न, रेखांकन चिह्न, समापन चिह्न। इन्हें समझना भी लेखन की दृष्टि से उपयोगी रहता है किन्तु व्याकरण की पुस्तक में इनकी अवधारणाओं को विस्तार से नहीं समझाया

जाता, जबकि व्याकरण की सीमा से परे विराम चिह्नों का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है।

संस्कृत साहित्य का अध्ययन करते समय यह स्पष्ट हो जाता है कि उसमें विराम चिह्नों की इतनी आवश्यकता नहीं थी, जितनी आज है। उसका मुख्य कारण यह है कि संस्कृत में हर शब्द के साथ विभक्ति जुड़ी रहती है। अतः कोई शब्द कहीं भी रख दें, अन्वय करते समय उसका ठीक अर्थ निकालने में कोई कठिनाई नहीं आती; किन्तु हिन्दी में संस्कृत की इस परम्परा का पालन नहीं किया जा सकता है; विशेषकर गद्य-साहित्य के क्षेत्र में। यह तो स्वतः स्पष्ट है कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब अंग्रेजी के सम्पर्क में आने से हिन्दी भाषा में गद्य के विविध अंगों का विकास हुआ, तो वे सभी विराम चिह्न जो अंग्रेजी में प्रयुक्त होते हैं, हिन्दी में भी आ गए।

इस तथ्य का एक ही अपवाद है कि संस्कृत के समान हिन्दी में पूर्ण विराम चिह्न (।) का प्रयोग खड़ी पाई के रूप में अवश्य किया जाता है। शेष सभी विराम चिह्न यूरोप की देन हैं। यही कारण है कि हिन्दी में विराम चिह्नों का शाब्दिक अनुवाद भी ठीक से नहीं हो पाया है। विराम चिह्न के कुछ अलग-अलग नाम भी सामने आए हैं; जैसे—

1. उपविराम को अपूर्ण विराम भी कहा जाता है।
2. योजक चिह्न को सामासिक चिह्न कहा जाता है।
3. निर्देशक चिह्न को रेखिका चिह्न कहा जाता है।
4. लाघव चिह्न को बिन्दु चिह्न कहा जाता है।
5. आवेशी चिह्न को पदलोप चिह्न कहा जाता है।
6. उद्धरण चिह्न को अवतरण चिह्न आदि कहा जाता है।
7. व्याख्या चिह्न को विवरण चिह्न कहा जाता है।

सारांश रूप में यह कहा जा सकता है कि विराम चिह्नों के भाषा में प्रयुक्त होने के तीन प्रमुख उद्देश्य हैं —

1. वे वाक्य में उचित स्थान पर अर्थात् अर्थान्विति की समाप्ति पर विराम लेने का संकेत करते हैं।
2. उचित उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ने का संकेत देते हैं; जैसे— विस्मय, प्रवृत्त आदि भावों को तान के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।
3. वक्ता द्वारा किसी अन्य व्यक्ति द्वारा कही गई बात को उसी अन्य व्यक्ति की शब्दावली में प्रस्तुत करते हैं।

हिन्दी लेखन में बहुत कम ऐसे लोग हैं, जो विराम चिह्नों का सही-सही प्रयोग कर पाते हैं। अतः इसके अध्ययन की आवश्यकता आज सबसे अधिक है। इनके प्रयोग में तनिक भी असावधानी से कभी-कभी अर्थ ही बदल जाता है; जैसे—

1. गाओ, नाचो मत   2. गाओ-नाचो मत

प्रथम वाक्य में गाओ किन्तु नाचो मत यह भाव प्रकट हो रहा है, जबकि दूसरे वाक्य में गाना-नाचना दोनों का ही निषेध है। अतः विराम चिह्नों द्वारा वाक्य के उपखण्ड भी सरलता से बनाए जाते हैं। ये उपखण्ड पाठकों के भाव-बोध को भी सरल एवं सुगम बनाते हैं।

02

पूर्ण विराम (।)

इस पत्र को ध्यानपूर्वक पढ़िए—

''प्यारे पतिदेव प्रणाम।

आपके चरणों में। क्या चक्कर है आपने पत्र नहीं लिखा। मेरी सहेली को नौकर मिल गया है। हमारी गाय ने बछड़ा दिया है। दादा जी ने शराब पीनी शुरू कर दी है। मैंने तुमको कितने पत्र डाले तुम नहीं आए। कुत्ते के बच्चे को भेड़िया खा गया है। दो महीने का राशन चीनी आते वक्त लाना। एक खूब सूरत लड़की मेरी सहेली बन गई है। हेमामालिनी इस वक्त दूरदर्शन में गा रही है। हमारी बकरी बेच दी है। तुम्हारी माँ तुम्हें बहुत याद करती है। एक पड़ोसन हमें बहुत तंग करती है। तुम्हारी बहन सिर दर्द के कारण लेटी है। हमारी कुतिया पागल हो गई है। जमीन में गेहूँ बो दिया है। ताऊ जी के सिर में सिकरी हो गई है। पाँव में चोट लग गई है। तुम्हारी चिट्ठी को हर वक्त तरस रही हूँ।''

— तुम्हारी पत्नी

अब इस पत्र को दोबारा पढ़िए

इस पत्र के माध्यम से हम आपका ध्यान पूर्ण-विराम की ओर दिलाना चाहते हैं। पूर्ण विराम के प्रयोग में थोड़ी भी असावधानी कई गड़बड़ियाँ पैदा कर सकती है, जिससे वाक्य के अर्थ बदल सकते हैं; और वास्तविक अर्थ निकालने में कठिनाई आती है।

एक अन्य उदाहरण भी देखिए —

आप मुझे नहीं जानते, मैं अपना काम समय पर ही करता हूँ।

यहाँ 'जानते' के बाद अल्पविराम की जगह पूर्ण विराम ही लगाना चाहिए, क्योंकि यहाँ वाक्य पूर्ण हो जाता है।

अत: आइए, पूर्ण विराम के प्रयोग के विषय में कुछ तथ्यों को जान लें।

अवधारणा

वाक्य की पूर्णता को प्रकट करने के लिए अर्थात् एक वाक्य को दूसरे वाक्य से पृथक् करने के लिए पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाता है।

यह हिन्दी का सबसे पुराना विराम चिह्न है। इसके लिए खड़ी पाई (।) का प्रयोग होता है। आजकल कुछ पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में (.) बिंदी का प्रयोग भी होने लगा है किन्तु हिन्दी की मानक वर्तनी में इस चिह्न को स्वीकार नहीं किया गया है।

प्रयोग

1. प्रश्नवाचक तथा विस्मयादिबोधक वाक्यों को छोड़कर शेष सभी प्रकार के निश्चयात्मक वाक्यों के अंत में पूर्ण विराम का प्रयोग वाक्य की पूर्णता सूचित करने के लिए किया जाता है; जैसे —
   - (क) क्षमा मेरी पुत्री है। (सरल वाक्य)
   - (ख) सभी कहते हैं कि क्षमा बहुत अच्छा पढ़ाती है। (मिश्र वाक्य)
   - (ग) क्षमा भोपाल में रहती हैं; और निशा जबलपुर में। (संयुक्त वाक्य)
   - (घ) क्षमा को यहाँ शीघ्र बुलाओ। (आज्ञार्थक)
   - (ङ) शायद मैंने क्षमा को कहीं देखा है। (संदेहार्थक)
   - (च) भगवान्! क्षमा को कुशल रखे। (इच्छार्थक)
   - (छ) यदि क्षमा यहाँ आती है, तो मैं उसके साथ बाजार जाऊँगा। (संकेतार्थक)

इन वाक्यों में सभी वाक्य एक-दूसरे से स्वतंत्र हैं; एवं पूर्णता को सूचित करते हैं। अत: यहाँ प्रत्येक वाक्य के अन्त में पूर्ण विराम लगाना चाहिए।

2. ये तो साधारण वाक्य हैं किन्तु कुछ ऐसे लम्बे वाक्य भी देखने में आते हैं, जिनमें पूर्ण विराम एक लम्बी यात्रा के बाद आता है। ऐसे वाक्यों में बीच-बीच में अन्य विराम चिह्नों का प्रयोग अवश्य दिखाई देता है।

जैसे—

मोर के सिर की कलँगी, पैनी चोंच, गरदन ऊँची कर देखना, विशेष भंगिमा के साथ उसे नीची कर दाना चुगना, पानी पीना, टेढ़ी कर शब्द सुनना आदि क्रियाओं में जो सुकुमारता और सौंदर्य है, उसका अनुभव देखकर ही किया जा सकता है।

मोरनी का विकास मोर के समान चमत्कारिक तो नहीं हुआ, परन्तु अपनी लंबी धूप-छाँही गरदन, हवा में चलती कलँगी, पंखों की श्याम-श्वेत पत्रलेखा, मंथर गति आदि से वह भी मोर की उपयुक्त सहचारिणी होने का प्रमाण देने लगी।

3. गद्य की नाटक, कहानी अथवा उपन्यास विधा के अन्तर्गत कहीं-कहीं अधूरे वाक्यों के बाद भी पूर्ण विराम का प्रयोग देखने को मिलता है। पात्रों के परस्पर संवादों में जब प्रश्न एवं उत्तर कुछ ही शब्दों में दिए जाते हैं, वहाँ ऐसी स्थिति बनती है कि वाक्य तो पूरा नहीं बन पाता किन्तु अर्थ स्पष्ट हो जाता है। उदाहरण के लिए —

   (क) ''यह चिमटा कहाँ से आया?''
   ''मैंने मोल लिया है।''
   ''कितने पैसे में?''
   ''तीन पैसे में।''

   (ख) ''महाराज, फूल तो इन सज्जन ने लिया'' सुदास ने कहा।
   ''किस कीमत पर?''

"एक माशा सुवर्ण पर!"
"मैं दस माशा देता हूँ।"

4. कभी-कभी एक शब्द या एक अक्षर का उत्तर भी पूर्णता का बोधक होता है। अतः इसके बाद पूर्ण विराम का प्रयोग होता है; जैसे—

(क) "बंदी।"
"क्या है? सोने दो!"
"मुक्त होना चाहते हो?"
"अभी नहीं। निद्रा खुलने पर। चुप रहो।"
"फिर अवसर न मिलेगा।"

3 3 3

"मिल जाएगा।"
"हाँ"

(ख) "मेरे साथ खेलोगे?"
"जरूर।"
"कुछ नाश्ता कर लो।"
"हाँ।"

5. एकांकी/नाटक अथवा किसी ग्रंथ का संदर्भ देते समय खण्ड एवं पृष्ठ आदि को सूचित करने के लिए भी पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाता है।

(क) गीता 3/29 (अर्थात् तीसरे अध्याय का 29वाँ श्लोक)।

(ख) "जो व्यक्ति जहाँ रहता है - (4/3/79 तस्य निवासः), या उसके पुरखे जहाँ रहते थे (4/3/90 अभिजनश्च), उस स्थान के नाम से बना हुआ विशेषण व्यक्ति के नाम से जुड़ जाता था; जैसे मथुरा का रहनेवाला या जिसके बाप-दादे मथुरा के थे, उन्हें माथुर कहा जाने लगा।"
उक्त उदाहरण के कोष्ठक में दिए गए संदर्भ पाणिनि की अष्टाध्यायी के अध्याय 4 पात 3 के 79 व 90 वें सूत्र के हैं।

6. आधुनिक कहानी लेखन में अधूरे वाक्यों में भी कभी-कभी विराम चिह्न का प्रयोग होता देखा गया है; जैसे—

(क) गोरा रंग। गालों पर काश्मीरी सेब की झलक। नाक की सीध में ऊपर के ओठ पर मक्खी की तरह कुछ काले बाल। सिर के बाल न अधिक बड़े, न अधिक छोटे। कानों के पास बालों में कुछ सफेदी। पानीदार बड़ी-बड़ी आँखें। चौड़ा माथा। बाहर बंद गले का लम्बा कोट।

विशेष- यहाँ प्रत्येक वाक्यांश अपने में पूर्ण तथा स्वतंत्र है। ऐसी स्थिति में पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाना स्वाभाविक है।

7. अप्रत्यक्ष प्रश्नोंवाले वाक्यों के अंत में भी पूर्ण विराम का उपयोग किया जाता है; यथा —

(क) आपने बताया नहीं कि आप क्या पढ़ रहे थे।

(ख) तुम्हें क्यों बताऊँ कि मैं क्या चाहता हूँ।

(ग) हम अभी से क्या बताएँ कि हमारे दिल में क्या है।

(घ) किसी को पता नहीं कि वह कहाँ से आया है।

(ङ) उसने आपसे पूछा कि आपने गीता पढ़ी या नहीं?

8. काव्य में अर्द्धाली के पश्चात् पूर्ण विराम का प्रयोग देखा गया है।

(क) सिया राम मय सब जग जानी। (चौपाई)

(ख) जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। (चौपाई)

(ग) जसुमति मन अभिलाष करै। (पद)

(घ) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि। (दोहा)

(ङ) निंदक बाबा वीर हमारा, बिनही कौड़ी बहै विचारा। (चौपाई)

विशेष

पूर्ण विराम का प्रयोग कहाँ उपयुक्त नहीं होगा

1. शीर्षकों के साथ पूर्ण विराम का प्रयोग करना उचित नहीं।
2. किसी लेख आदि के बीच में यदि किसी पुस्तक एवं लेख आदि के नामों का उल्लेख करना हो तो भी पूर्ण विराम का प्रयोग करना उचित नहीं।
3. 'आप चिंतित हैं, मैं अपना अध्ययन नियमित कर रहा हूँ।'
   उपर्युक्त वाक्य में 'चिंतित हैं'- के बाद अल्पविराम के स्थान पर पूर्ण विराम ही चाहिए क्योंकि पहले वाक्य में बात अपने आप में पूरी हो गई है। दूसरा वाक्य पहले वाक्य से स्वतंत्र भाव व्यक्त कर रहा है।
4. छंदोबद्ध रचना के अंतिम चरण की सूचना के रूप में दो पाइयों का प्रयोग चौपाई, दोहा की भाँति अन्यत्र भी हिन्दी कविता में होता आ रहा है।

अभ्यास

एक दिन कोई ठग सोने का हार बेचने के लिए घर से निकला रास्ते में उसे दूसरा ठग मिल गया वह भी ठग ही था वह घी बेचने के लिए घर से निकला था दोनों एक दूसरे से अपरिचित थे सोने के हार वाले ठग ने हार के बदले घी ले लिया और खुशी-खुशी घर गया घर पहुँचने पर उसने घी का कुप्पा खोला उसने देखा कुप्पे में केवल ऊपर-ऊपर घी था और नीचे गोबर भरा था कुप्पेवाले ठग ने हार की जाँच सुनार से कराई हार नकली था दोनों ठगे से रह गए

03

अर्द्ध विराम (;)

अवधारणा

अर्द्ध विराम का प्रयोग अल्प विराम से अधिक तथा पूर्ण विराम से कम रुकने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग वाक्य में कई स्थानों पर किया जाता है; किन्तु हिन्दी में इसके स्थान पर 'अल्प विराम' का प्रयोग ही अधिक देखने में आता है।

प्रयोग

1. एक ही विषय से सम्बन्धित दो से अधिक उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने के लिए उनके मध्य अर्द्ध विराम का प्रयोग होता है।
   (क) नींद नहीं आती; भूख भी नहीं लगती; और लेटे भी रहा नहीं जाता; राम जाने क्या हो गया है।
   (ख) सूर्योदय हुआ; आकाश लाल हो गया; चिड़ियाँ चहकने लगीं; और कमल खिल गए।
   (ग) पतंग उड़ा लो; फिर चलेंगे।
   (घ) विद्या से विनय आती है; विनय से पात्रता; पात्रता से धन; धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है।
   (ङ) मैंने वेदों का गहन अध्ययन किया; श्रुतियों का मनन किया; स्मृतियों को रट डाला; उपनिषदों को छान मारा किन्तु रामचरित मानस जैसा आनन्द मुझे कहीं नहीं मिला।
2. यदि दो से अधिक प्रधान उपवाक्यों के लिए एक ही कर्त्ता का प्रयोग हुआ हो तो उन उपवाक्यों के बाद अर्द्ध विराम का प्रयोग होता है।
   (क) मैंने तुम्हें पढ़ाया; लिखाया; मैंने ही तुम्हें नौकरी दिलाने का प्रयास किया; इसलिए नहीं कि तुम मेरा ही विरोध करो।
   (ख) देखा, वे तो सीधे ही चले गए; बोले तक नहीं।
   (ग) राम स्कूल से घर गया; हाथ-मुँह धोकर नाश्ता किया; अपनी साइकिल उठाई; और चल पड़ा खेलने।
   (घ) वह कभी हँसती है; कभी रोती है; कभी उठती है; कभी बैठती है; कभी दौड़कर पुकारती है।
   (ङ) सूर्य का आगमन हुआ; अंधकार विलुप्त हो गया, पक्षी गाने लगे; हवा मंथर-

मंथर गति से बहने लगी और मैं भी अपने गंतव्य पथ की ओर अग्रसर हो गया।

विशेष

यहाँ एक बात का विशेष ध्यान रखना है कि समुच्चय बोधक उपवाक्यों के अतिरिक्त क्रिया-विशेषणात्मक समुच्चय बोधक भी दो वाक्यों को जोड़ने हेतु प्रयोग में आते हैं, ऐसे वाक्यों को पृथक् करने के लिए भी अर्द्ध विराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

(क) कारणवाचक क्रिया विशेषण में-
वायु के दबाव से साबुन का एक बुलबुला भी नहीं दबता; क्योंकि हवा का बाहरी दबाव बुलबुले के भीतरी दबाव से कट जाता है।

(ख) रमा के पिता ने बहुत प्रयत्न किया कि वह एम.बी.ए. की कक्षा में प्रवेश ले; पर वह राजी नहीं हुई; क्योंकि उसके पास शुल्क चुकाने के लिए बड़ी राशि नहीं थी।
(रेखांकित शब्द कारणवाचक विशेषण हैं)

3. एक ही समूह के विभिन्न रूपों का वर्गीकरण करते समय, उनमें भिन्नता प्रकट करने के लिए इस चिह्न का उपयोग किया जाता है; जैसे—

(क) वर्ण, वर्ण का स्वरूप; स्वर, स्वर के भेद; व्यंजन, व्यंजन के भेद; और व्यंजनों का उच्चारण; अनुस्वार, अनुस्वार के प्रयोग; विसर्ग, विसर्ग का स्वरूप आदि।

4. मिश्र तथा संयुक्त वाक्यों में विरोधाभासी कथनों को पृथक् करने के लिए भी अर्द्धविराम का प्रयोग होता है; जैसे—

(क) गांधी जी नहीं रहे; वे अमर हैं।

(ख) शेर बहादुर जानवर है; किन्तु वह पत्तों की खड़-खड़ से डर जाता है।

(ग) उसने रामचरितमानस का अध्ययन अवश्य किया है; पर उसे यथार्थ बोध नहीं हुआ।

(घ) मैं उसे प्यार करता हूँ; वह मुझसे नफरत करती है।

(ङ) मनुष्य कुछ सोचता है; ईश्वर कुछ और ही करता है।

5. किसी वाक्य में कोई उदाहरणसूचक नियम बताते समय (जैसे तथा यथा के पूर्व) भी अर्द्ध विराम का प्रयोग किया जाता है।

(क) उसने जो उदाहरण दिए, वे सटीक थे; यथा—

(ख) बहुधा स्त्रियों के नाम के साथ 'देवी' शब्द जुड़ा रहता है; जैसे—अन्नपूर्णा देवी।

6. कोश में एक शब्द के अनेक अर्थ देने के लिए; जैसे—

(क) अंक : पु. संख्या; नाटक का अंश; गोद।

विशेष

''मैं मनुष्य में मनुष्यता देखना चाहता हूँ; उसे देवता बनाकर पूजने की मेरी इच्छा नहीं है।''

उपर्युक्त वाक्य में पहले वाक्य का पूरक दूसरा वाक्य है। अत: पूर्ण विराम का प्रयोग उचित नहीं। यहाँ अर्द्ध विराम का प्रयोग ही करना चाहिए।

अभ्यास

(क) ''यदि कोई आदरणीय व्यक्ति भी कोई अच्छी बात भद्दी या अशुद्ध भाषा में कहे तो हम पर उसका यथेष्ट प्रभाव नहीं पड़ता उसके सम्बन्ध में हमारे मन में एक तरह की खटक रह जाती है।''

– रामचन्द्र वर्मा, अच्छी हिन्दी

(ख) यह बात कुछ महत्व नहीं रखती कि आदमी मरता कैसे है महत्व तो इस बात का है कि वह जीता किस प्रकार है।

04

अल्प विराम (,)

अवधारणा

अन्य सभी विराम चिह्नों की अपेक्षा अल्प विराम का प्रयोग सबसे अधिक किया जाता है। साथ ही, जहाँ अन्य अधिकांश विराम चिह्नों का प्रयोग मुख्यत: वाक्य के अंत में किया जाता है, वहाँ अल्प-विराम का प्रयोग वाक्य के भीतर होता है। अल्प-विराम का अर्थ है— थोड़ी देर रुकना।

अल्प विराम का प्रयोग करते समय दो बातों का विशेष ध्यान रखना पड़ता है—

1. कुछ विभिन्न मनोदशाओं को प्रदर्शित करने के लिए, अल्प विराम का प्रयोग आवश्यक है।
2. कुछ मनोदशाएँ ऐसी हैं, जिनमें अल्पविराम का प्रयोग सर्वथा बर्जित है।

प्रयोग

1. किसी वक्ता के कथन का उल्लेख करने के पूर्व अल्प विराम लगाया जाता है; जैसे—
   (क) उसने कहा, ''मैं परीक्षा में बैठ रहा हूँ।''
   (ख) उसने कहा, ''वह परीक्षा में बैठ रहा है।''
   (ग) लक्ष्मीबाई ने कहा, ''मैं मरते दम तक अंग्रेजों को झाँसी नहीं दूँगी।''
   (घ) सुनीता बोली, ''तुमने जितना पढ़ा, ठीक है।''
   (ङ) राम ने कहा, ''पृथ्वी गोल है।''
   (च) तिलक ने कहा, ''स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।''
2. जब किसी उपवाक्य के भीतर कोई दूसरा उपवाक्य घुस आए, तब अल्प विराम का प्रयोग— पद, वाक्यांश अथवा खण्ड वाक्य के दोनों ओर (आदि और अंत में) लगाया जाता है; जैसे—
   (क) वह लड़का, जो अभी आपसे मिलने आया था, पकड़ा गया।
   (ख) उस वक्त, जब आप मिले थे, मैं परीक्षा देने जा रहा था।
   (ग) क्रोध, चाहे जैसा भी हो, मनुष्य का विवेक छीन लेता है।
   (घ) वह लड़की, जो यहाँ आकर झगड़ रही थी, घर से भाग गई।
   (ङ) वह, जो साइकिल चला रहा है, मेरा दोस्त है।
3. सम्बोधन अथवा हाँ, नहीं, सचमुच, बस आदि शब्दों के बाद अल्प विराम का प्रयोग

होता है; जैसे—

(क) हाँ, मेरा यही विचार है। ('हाँ' का प्रयोग)

(ख) नहीं, अब तुम वहाँ से कहीं नहीं जा सकते। ('नहीं' का प्रयोग)

(ग) मोहन, बाजार अकेले मत जाओ। ('सम्बोधन' का प्रयोग)

(घ) समय आ गया है, अब तो चलो। (बस)

(ङ) सचमुच, तुम बहुत चतुर हो। (सचमुच)

विशेष

यदि सम्बोधन वाक्य के मध्य आए, तो दोनों ओर अल्प विराम लगाएँ।

(क) शान्त रहिए, मोहन जी, आप मेरी भी सुनेंगे या अपनी ही सुनाते जाएँगे।

4. जब एक ही स्थान पर अनेक शब्द, पद, उपवाक्यांश या उपवाक्य समान दशा में आते हों तथा उनके बीच में 'और' लगाने की संभावना हो, तो प्रत्येक के आगे अल्प विराम लगाया जाता है; जैसे—

(क) राम, सीता और लक्ष्मण वन को गए। (पद)

(ख) गोपाल का सदा हँसमुख रहना, सबसे प्रेमपूर्वक मिलना, किसी की निन्दा न करना; और अपने कार्य को मन लगाकर करना, मुझे बहुत प्रसन्नता देता है। (पद-बंध)

(ग) मैं सवेरे उठता हूँ, एक गिलास दूध पीता हूँ; और स्वाध्याय करने बैठ जाता हूँ। (उपवाक्य)

(घ) पानी हमारा जीवन है, वायु प्राण है; और अन्न हमारी शक्ति है।

(ङ) धनी, निर्धनी, शहरी, देहाती, शिक्षित और अशिक्षित, सभी को मत-दान का समान अधिकार है। (अनेक शब्द)

विशेष

उपर्युक्त वाक्यों में 'और' के पहले अल्पविराम लगाने की आवश्यकता नहीं है। कुछ लेखक अनावश्यक रूप से इस चिह्न का प्रयोग कर देते हैं, जो उचित नहीं है।

5. समुच्चय बोधक (इसलिए, पर, परन्तु, किन्तु, अतः, क्योंकि, जिससे, नहीं, नहीं तो, तथापि आदि) अव्ययों से प्रारंभ होनेवाले वाक्यों में अल्प विराम का प्रयोग होता है।

(क) वह लम्बी थी, <u>किन्तु</u> उसके पति की ऊँचाई कम थी।

(ख) मैं तो आता, <u>पर</u> उसने नहीं आने दिया।

(ग) मैं ऐसा कोई काम करना नहीं चाहता, <u>जिससे</u> बदनामी हो।

(घ) जाओ, <u>नहीं तो</u> पछताओगे।

(ङ) वह ईमानदार है, <u>इसलिए</u> झूँठ नहीं बोलेगा।

6. 'कि' के स्थान पर अल्प विराम का प्रयोग—

(क) उसने बताया, वह सुबह-सुबह टहलने जाता है। (कि)

(ख) आप समझते हैं, आपके बिना मेरा काम नहीं होगा। (कि)

(ग) मोहन ने बताया, वह कल भोपाल जाएगा। (कि)

विशेष

'कि' का वाक्य में प्रयोग करके वाक्य-रचना करना भी ठीक है, किन्तु 'कि' के बाद अल्प विराम का प्रयोग वर्जित है; यथा— मैंने कहा कि रमेश बीमार है।

7. किसी शब्द पर विशेष बल देने के लिए —

(क) जल्दी करो, नहीं तो गाड़ी छूट जाएगी।

(ख) भागो, मत रुको।

(ग) धीरे-धीरे पढ़ो, तभी कुछ समझ में आएगा।

8. शोक अथवा विस्मयाधि बोधक के पश्चात् —

(क) अरे, यह क्या हो गया।

(ख) वाह, आपने खूब कहा।

(ग) अजी, यह भी खूब रही।

(घ) धिक्कार है, तुमने ऐसा नीच कर्म किया।

(ङ) हाय, तूने हमें कहीं का न रखा।

9. यह, वह, तब, तो, जब, अब, वहाँ, लुप्त हो, अल्प विराम का प्रयोग होता है; जैसे—

(क) मनुष्य जो कुछ करता है, अपने स्वार्थ के लिए करता है। (वह के स्थान पर)

(ख) मैं जब पुकार रहा था, कहाँ थे? (जब के स्थान पर)

(ग) जब हम चले, बरसात हो रही थी। (तो के स्थान पर)

(घ) कहना था सो कह दिया, तुम जानो। (अब के स्थान पर)

(ङ) वह, जहाँ जाता है, बैठ जाता है। (वहाँ के स्थान पर)

10. यदि संज्ञा उपवाक्य मुख्य वाक्य के पहले हो, तो दोनों के बीच अल्पविराम चिह्न आता है। जैसे—

(क) तुम क्या चाहते हो, मैं नहीं जानता।

(ख) वह कब आएगा, मुझे मालूम नहीं।

विशेष

संज्ञा उपवाक्य तथा विशेषण उपवाक्य के पहले कोई विराम चिह्न नहीं आता है; जैसे—

(क) उसने कहा कि मोहन बीमार है। (संज्ञा उपवाक्य)

(ख) आशा है कि मोहन अच्छा हो जाएगा। (विशेष उपवाक्य)

11. जहाँ 'और' शब्द छिपा रहता है, वहाँ अल्पविराम चिह्न का प्रयोग होता है।
राम पढ़ रहा था, श्याम खेल रहा था।

12. योजक का लोप दिखाने के लिए —
वह आया, मैं गया। (योजक 'और' का लोप)

13. नाम, उपाधि स्थान के बीच—

(क) श्री राम मनोहर त्यागी, एम.ए., एल-एल.बी.।

(ख) डॉ. मनमोहन सिंह, एम.बी.बी.एस.।

(ग) चंडीगढ़, देहरादून, हरिद्वार तथा मंसूरी भारत के प्रसिद्ध स्थान हैं।

(ङ) एम.एस.सी., एम.ए. (शिक्षा), पी-एच.डी.।

14. दिनांक तथा माह के पश्चात् किन्तु सन् या संवत् से पूर्व—

(क) 15 अगस्त, 1948

(ख) वैशाख, कृष्णपक्ष, सं. 2056

(ग) 26 जनवरी, 2009 के कार्यक्रम में भाग लेने के लिए मैं दिल्ली गया था।

15. पत्र के अंत में—

भवदीय, भवदीया, आपका, ... आदि।

16. लिफाफे पर पता लिखने में—

श्री मुरली मनोहर राय,
लक्ष्मी-निवास,
चार इमली, भोपाल

17. हिन्दी में पुनरावृत्ति कथन की प्रवृत्ति है। अतः जहाँ शब्दों/वाक्यांशों की पुनरावृत्ति हो वहाँ अल्प विराम का प्रयोग होता है; जैसे—

(क) चलो, चलो, भाग चलो यहाँ से।

(ख) क्या करता, क्या न करता, कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था।

(ग) नहीं, नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता।

(घ) सुनो, सुनो, राम हमें पुकार रहा है।

(ङ) दौड़ो, दौड़ो, आग लग गई है।

18. हजार, लाख आदि संख्याओं को पृथक् करने के लिए भी अल्प विराम का प्रयोग होता है, किन्तु चार अंकों की संख्या लिखते समय अल्पविराम नहीं लगाया जाता।

(क) 10, 500

(ख) 2, 25, 427

19. किसी वाक्य में अस्पष्टता से बचने के लिए—

(क) रोको मत, जाने दो।

(ख) रोको, मत जाने दो।

(ग) आगे बढ़ो, मत हटो।

(घ) कहो मत, चुप रहो।

(ङ) भाई साहब जाओ मत, रुको।

विशेष

ऊपर दिए गए प्रथम वाक्य और दूसरे वाक्य में अलग-अलग स्थान पर लगे अल्पविराम अलग-अलग अर्थ दे रहे हैं।

20. जब किसी घटना को शृंखलाबद्ध बनाया जाता है, तब प्रत्येक घटना को अलग-अलग बताने के लिए —

(क) जन्म लेना, घर बसाना, जीवन भर कमाना, हो सके तो कभी किसी की मदद करना, इसी में जीवन चला जाता है।

(ख) अध्यापक आए, पुस्तक निकाली, जोर-जोर से पढ़ाने लगे।

21. एक ही वर्ग के शब्द युग्म (जोड़े) प्रयुक्त किए जाएँ तो अल्प विराम का प्रयोग करना चाहिए—

(क) चाँदी और सोना, ताँबा और पीतल, लोहा और टिन-ये सब आज बहुत महँगे हो गए हैं।

(ख) पाप और पुण्य, सच और झूठ, बेइमानी और ईमानदारी, ये सब सामाजिक मूल्य हैं।

22. जब किसी लम्बे वाक्य में एक से अधिक स्वतंत्र वाक्यांशों का प्रयोग हो—

(क) चाहती थी ऐसे बोलूँ, जैसे कोयल प्रथम किरण से बोलती है; ऐसे बोलूँ, जैसे कचनार के फूलों के बीच से बुलबुल बोल रही है।

(ख) फकीर तो कहीं भी सोए, उसकी फटी गुदड़ी को चोर नहीं लगते; परन्तु रत्न रखनेवाले की मूर्च्छा उसी के लिए हानिप्रद हो सकती है।

24. छंदों में यति के बाद—

(क) 'खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी।'

(ख) क्षमामयी, तू दयामयी है, क्षेममयी है,
सुधामयी, वात्सल्यमयी, तू प्रेममयी है।

25. संख्या के अंकों के उपरान्त —

2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 20, 30, 40, 50 आदि।

23. वाक्यांश में अनेक क्रिया विशेषणों के प्रयुक्त होने पर—

महेश, कपड़े उतार कर, तेल लगाकर, ऊपर की बुर्ज से नदी में कूद पड़ा।

विशेष

अथवा, लेकिन या जैसे— यौगिक शब्दों से पहले अल्पविराम का प्रयोग नहीं होता है।

अभ्यास

(क) सच है मनुज बड़ा पापी है नर का वध करता है
पर भूलो मत मानव के हित मानव ही मरता है।
यह कुन्दन यह अश्रु मनुज की आशा बहुत बड़ी है
बतलाता है यह मनुष्यता अब तक नहीं मरी है।

(ख) एक मंद बुद्धि लड़का बड़ा ही शरारती था। तोड़-फोड़, मस्ती, शोरगुल, मारपीट

करता था। सब उसके पास आने से कतराते थे, क्योंकि वह मुँह पर थूकता और चाँटा मारता था।

वह केवल दाल चावल अचार ही खाता था। पाया गया कि यह तो आहार का ही असर है। अगर इस बालक को अच्छे आहार पर लाया जाए तो यह सचाई प्रेम, करुणा शांति स्वास्थ्य आयु और आनंद पा सकेगा। एक हफ्ते की कोशिश के बाद बच्चा फलाहार पर आ गया साथ ही मिट्टी पानी का इलाज मालिश चलती रही। एक माह में करिश्मा हुआ। तोड़-फोड़ करनेवाला बच्चा, शांत भक्त जैसा बन गया।

(ग) अपनी भावनाओं पर ध्यान दें ये ही आपके विचार बन जाएँगे।
अपने विचारों पर ध्यान दें ये ही आपके शब्द बन जाएँगे।
अपने शब्दों पर ध्यान दें ये ही आपके कर्म बन जाएँगे।
अपने कर्मों पर ध्यान दें ये ही आपकी आदतें बन जाएँगी।
अपनी आदतों पर ध्यान दें ये ही आपका चरित्र बन जाएगा।
अपने चरित्र पर ध्यान दें ये ही आपकी नियति बन जाएगी।

05

अपूर्ण विराम/उपविराम (:)

अवधारणा

अपूर्ण विराम को उपविराम भी कहते हैं। इस चिह्न का प्रयोग प्रायः शीर्षकों में सर्वाधिक होता है। इसका चिह्न विसर्ग (:) की भाँति है किन्तु इसका प्रयोग करते समय ऐसी कोई भ्राँति नहीं होती कि कोई भ्रम हो क्योंकि विसर्ग का प्रयोग अक्षर से सटा हुआ होता है, जबकि अपूर्ण विराम का प्रयोग शब्द के अंतिम अक्षर से हटकर किया जाता है; जैसे—

तुलसीदास : एक अध्ययन

नई कविता : नई चुनौतियाँ

अपूर्ण विराम का मुख्य उपयोग करते समय निम्नलिखित बात ध्यान में रखना चाहिए:—

वाक्य के विषय में जो कुछ कहा जा चुका है, उसका समन्वय करने के लिए अर्थात् वाक्य का प्रारंभ जब सामान्य अर्थ में हो तो उसके बाद विशिष्ट कथन के अर्थ में होता है; जैसे—

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है : किन्तु उसे अभी तक वह सम्मान नहीं मिल पाया, जो उसे मिलना चाहिए था।

विशेष

किन्तु कभी-कभी यह क्रम उलटा भी हो सकता है; जैसे- अन्न चाहे वह कैसा भी हो, यहाँ तक कि घास-पात खाकर भी उन्होंने अपना पेट पाला : ऐसी थी अकाल के दिनों की स्थिति।

प्रयोग

1. क्रमबद्ध सूची का उल्लेख करते समय; जैसे—
   व्याकरण के तीन घटक हैं : वर्ण-परिचय, शब्द-परिचय, वाक्य परिचय।
2. कथन में आए किसी शब्द या वाक्य की पुष्टि या कोई विस्तृत व्याख्या देते समय। जैसे—
   महत्त्वाकांक्षा के तीन शत्रु हैं : आलस्य, हीन-भावना और पराश्रय क्योंकि ये ही मनुष्य को पंगु बना देते हैं।
3. उद्धरण चिह्न में दिए गए प्रत्यक्ष कथन से पहले; जैसे—
   (क) राधा ने कहा : ''कल आपके यहाँ मैं अवश्य आऊँगी।''
   (ख) प्रधानाध्यापक ने कहा : ''कल शिक्षक-दिवस है।''

विशेष

कथन के पूर्व अल्प विराम का प्रयोग भी किया जा सकता है, जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया गया है। अतः अब इस चिह्न का उपयोग कम हो गया है। पूर्व लेखन में यह प्रयोग अधिक देखने को मिलता है।

4. कभी-कभी अनुच्छेद या निबंध के शीर्षक पर कुछ अधिक बल देने के लिए या प्रभाव उत्पन्न करने के लिए; जैसे—

   समय-नियोजन : सफलता का मूलमंत्र।

5. किसी पुस्तक का लेखक और नाम आदि को सूचित करने के लिए —

   (क) डॉ. रामकुमार वर्मा : संत कबीर।

   (ख) मुक्तिबोध : चाँद का मुँह टेढ़ा।

6. कभी-कभी कोई लंबा कथन या प्रश्न प्रारंभ करने के पूर्व —

   (क) हम भी यह चाहते हैं : मानव-मानव में प्रेमभाव पनपे, वही आचरण करें जो न्यायसंगत हो, परस्पर सुविधा का ख्याल रखे: यही तो है सच्ची मानवता की पहचान।

   (ख) कभी सोचा आपने: किसी बालक का नामकरण रावण के नाम पर क्यों नहीं किया जाता है, जबकि रावण के पास धन, शक्ति, विद्या, कुल तथा अपार जन समर्थन था; उदाहरण के लिए—

   धन : रावण की नगरी स्वर्णमयी थी।

   शक्ति : उसने देवों पर विजय प्राप्त की थी।

   विद्या : उसने वेदों का भाष्य किया था।

   कुल : उसका जन्म महर्षि पुलस्त्य के उत्तम वंश में हुआ था।

   जन्म-समर्थन : लंका की पूरी जनता रावण के साथ थी।

7. किसी भाषण में सम्बोधन के साथ —

   (क) आदरणीय अध्यक्ष महोदय, भाइयो और बहनो :

8. समय को सूचित करने के लिए —

   (क) 8:30:12 (आठ बजकर तीस मिनिट और बारह सेकंड)।

   (ख) उसका जन्म 5:45 प्रातः हुआ।

9. संख्याओं का अनुपात बताने के लिए —

   (क) 2 : 3

   (ख) 10 : 20

अभ्यास

अपूर्ण विराम चिह्न लगाकर सही समय बताइए —

(क)	उठना	प्रात: 5 बजे
	स्नानादि	प्रात: 5 से 30 तक
	व्यायाम	6:30 से 7:30 तक
	अल्पाहार	7:30 से 8:00 तक
	प्रवचन, ध्यानादि	8:00 से 1:00 तक
	भोजन	1:00 से 1:30 तक

(ख) केवल पढ़-लिख लेने से ही कोई विद्वान् नहीं होता, जो इन गुणों— सत्य, तप, ज्ञान, अहिंसा, विद्वानों के प्रति श्रद्धा तथा सुशीलता को धारण करता है वही सच्चा विद्वान् है।

║06║

ऊर्ध्व विराम (')

अवधारणा

जब किसी 'वर्ण' अथवा 'अंक' को संक्षेप में लिखना अभीष्ट हो, तब ऊर्ध्व-विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार के विराम-चिह्न का प्रयोग प्रायः हिन्दी लेखन में अभी बहु-प्रचलित नहीं है, किन्तु इसके प्रयोग से हमारे लेखन में समय एवं स्थान की बचत हो सकती है।

प्रयोग

1. **वर्ण —**

   बस की गति 60 कि.मी.' घंटा। यहाँ 'प्रति' शब्द के स्थान पर ऊर्ध्व विराम चिह्न उपयोग में लाया गया है।

2. **अंक —**

   इस प्रकार की संख्या कोई सन् या संवत् हो सकती है। 15 अगस्त 47 (सन् 1947)

अभ्यास

(क) प्रति मिनट

(ख) 26 जनवरी 2009

07

प्रश्नवाचक चिह्न (?)

अवधारणा

प्रश्नवाचक चिह्न वाक्य के अंत में पूर्ण विराम के स्थान पर प्रयुक्त होता है। कभी-कभी केवल एक प्रश्नवाचक शब्द के अंत में भी इस चिह्न का प्रयोग देखा जाता है; जैसे : क्या? कौन? क्यों? कब? कैसे? आदि।

प्रश्न चिह्न के न लगने से वाक्यांश का अर्थ ही बदल जाता है; जैसे—

(क) यह काम तुम करोगे?

(ख) यह काम तुम करोगे।

इसमें प्रथम वाक्य प्रश्नसूचक है, जबकि दूसरा वाक्य आज्ञार्थक है।

उपर्युक्त आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रश्नवाचक चिह्न कथन के एक पक्ष की जिज्ञासा का सूचक है, जिसके आगे एक अथवा एक से अधिक उत्तर वाक्यों के आने की संभावना रहती है। पूर्ण विराम के समान यह वाक्य की समाप्ति का सूचक होकर भी चर्चा की समाप्ति का सूचक नहीं होता।

पूर्ण विराम तथा अल्प विराम की भाँति इस चिह्न का प्रयोग भी सर्वाधिक होता है।

प्रयोग —

1. जब वक्ता वाक्य में प्रश्नवाचक शब्द कब, कहाँ, कैसे, क्यों आदि का प्रयोग करता है, तब प्रश्नवाचक वाक्य के अंत में यह चिह्न लगाया जाता है; जैसे —

(क)	यह पुस्तक कहाँ मिलती है?	(कहाँ)
(ख)	क्या तुम इसे पहचानते हो?	(क्या)
(ग)	आपने ऐसा क्यों नहीं किया?	(क्यों)
(घ)	ऐसा कैसे होगा?	(कैसे)
(ङ)	वह दिल्ली कब जाएगा?	(कब)

विशेष

1. प्रायः छात्र वाक्य में जहाँ भी प्रश्नवाचक शब्द का प्रयोग करते हैं, वहाँ प्रश्नवाचक चिह्न लगा देते हैं। ऐसा हर जगह नहीं होता। जब प्रश्नवाचक शब्द वास्तव में सम्बन्धसूचक काम करे तब अंत में पूर्ण विराम लगाया जाता है।

   (क) आपके दिल में क्या है, कौन जाने।

   (ख) माया ने सहेली से पूछा कि तुम्हारे पिता जी कहाँ गए हैं।

(ग) बताओ इस पुस्तक का वजन कितना होगा।

(घ) वे क्या कर रही थीं, मैं समझा ही नहीं।

उपर्युक्त वाक्यों में उत्तर जानने की आकांक्षा नहीं है, इसलिए इनके अंत में प्रश्नवाचक चिह्न लगाना आवश्यक नहीं है। भले ही इन्हें प्रश्नवाचक के रूप में रखा गया है।

2. किसी डाँटते, फटकारते समय भी प्रश्न चिह्न का प्रयोग वांछनीय नहीं है; यथा—

(क) क्या बक रहे हो!

(ख) तुम होश में तो हो!

3. आज्ञार्थक वाक्यों के अंत में भी प्रश्न चिह्न नहीं लगाया जाता है; यथा—

शिक्षक : महात्मा गांधी का पूरा नाम बताओ।

छात्र : मोहनदास कर्मचंद गांधी।

4. एक के बाद एक कई छोटे-छोटे प्रश्न हों तो हर एक के बाद प्रश्न चिह्न लगाया जाता है; यथा—

(क) क्या? कब? कैसे हुआ यह सब?

विशेष

यदि एक ही वाक्य में अनेक प्रश्नसूचक उपवाक्य हों तो एक ही प्रश्न चिह्न लगाना उचित होगा; यथा—

(क) आप अब तक कहाँ थे, और यहाँ कब आए?

(ख) मैं कब उठता हूँ, कब सोता हूँ, क्या खाता हूँ, कहाँ आता-जाता हूँ, यह सब आपको बताना ज़रूरी है क्या?

(ग) वह कहाँ गया था, क्यों लौट आया और क्या चाहता है?

5. लेखन करते समय कथन में संदेह या अनिश्चितता प्रकट करने के लिए भी प्रश्न चिह्न लगाया जाता है; यथा—

(क) कालिदास उज्जैन (?) के निवासी थे।

(ख) यह मंगोलियन (?) जान पड़ता है।

(ग) तुम्हारा नाम क्या है (?) मैं जानना चाहता हूँ।

(घ) वह झूठा है (?) मुझे विश्वास नहीं होता।

(ङ) वह ईमानदार है (?) मैं मान ही नहीं सकता।

6. प्रूफ संशोधन कर्ता को यदि कहीं संशय व्यक्त करना हो, तो हाशिए में इस चिह्न का प्रयोग करना उचित होगा; यथा—

?/(क) भोपाल/रेलों का प्रसिद्ध केन्द्र है।

?/(ख) कृष्ण मक्खन से रोटी/खाते थे।

7. व्यंग्योक्तियों में भी प्रश्न चिह्न का प्रयोग होता है; यथा—

(क) भ्रष्टाचार इस युग का सबसे बड़ा शिष्टाचार है न!

(ख) उसके जैसा धर्मात्मा दूसरा पैदा ही नहीं हुआ!

(ग) हमारे पुलिस की ईमानदारी के सामने राजा हरिश्चन्द्र भी लज्जा का अनुभव करते हैं!

(घ) हमारे जन-नेता सेवा-कार्यों (!) में निपुण हैं।

(ङ) उनके जैसा देवता (!) कोई दूसरा है ही नहीं।

अभ्यास

(क) भालू - अरे बंदर! तेरे कंधे पर क्या लटक रहा है
बंदर - तुझे क्या मेरे कंधे पर थैला लटक रहा है
भालू - अरे! तू इतना अकड़ कर क्यों चल रहा है
बंदर - क्यों न अकडूँ तेरे जैसे तो मैं अपने थैले में रखता हूँ चल भाग यहाँ से

(ख) एक व्यक्ति को खाँसी हो गई। डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर ने परीक्षण उपरान्त दवा देकर कहा- 'दिन में तीन बार एक-एक गोली खाना, एक सप्ताह में ठीक हो जाओगे।'

उस व्यक्ति ने पूछा - गोलियाँ कैसे खाऊँ! पानी से, दूध से या चाय से
डॉक्टर ने कहा - किसी से भी सही पानी से ही ले लेना।
उसने फिर पूछा - पानी ठण्डा या गरम या गुनगुना
उसने फिर पूछा - कुएँ का, नल का या डिस्ट्रिल वाटर
उसने फिर पूछा - गोली एक-एक करके खाएँ या दोनों एक साथ
उसने फिर पूछा - खड़े होकर खाऊँ या बैठकर या लेटकर
उसने फिर पूछा - किस दिशा की ओर मुँह करके खाऊँ
और इस प्रकार अनेक प्रश्न पूछता ही गया

(ग) उसने पूछा- क्या तुम आगरा जा रहे हो (वाक्य)
यदि, यह सच है तो ...... (वाक्यखण्ड)
मैंने कहा- सच के पर नहीं होते (मुहावरा)
उसने कहा- क्या (एक शब्द)

(घ) पूत कपूत तो क्यों धन संचय
पूत सपूत तो क्यों धन संचय

08

विस्मयादिबोधक चिह्न (!)

अवधारणा

हम सभी के जीवन में कुछ ऐसे क्षण आते हैं, जब हम सुख-दु:ख, आश्चर्य, घृणा, दया करुणा आदि का अनुभव करते हैं। इन भावों को चेहरे से भी व्यक्त किया जाता है, तथा लिखकर भी। प्राय: जब ऐसे मनोभावों को लिखकर प्रकट किया जाता है तो विस्मयादिबोधक शब्दों के पश्चात् इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त शुभकामनाएँ देने तथा व्यंग्यपूर्ण वाक्यों में भी इस चिह्न का प्रयोग होता है।

प्रयोग

1. एक ही शब्द, उपवाक्य, वाक्यांश अथवा वाक्य के अंत में इसका प्रयोग देखने को मिलता है; जैसे—
   (क) ओह! (एक ही शब्द)
   (ख) काश! वह जिंदा होता! (उपवाक्य)
   (ग) आखिर है तो वह मेरा ही खून! (वाक्यांश)
   (घ) क्या यह सत्य है कि महात्मा गांधी की हत्या हो गई! (वाक्य)
2. विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग उपवाक्य के अन्तर्गत, कई मनोभावों को व्यक्त करते समय लगाया जाता है—
   (क) ओह! वह इतना नालायक है! (विस्मयसूचक)
   (ख) अरे! बेटा यह क्या कर डाला तुमने! (निराशासूचक)
   (ग) छि: तुम कितने गंदे हो! (घृणासूचक)
   (घ) धत्! तुझे लज्जा नहीं आती! (उपेक्षासूचक)
   (ङ) हाय! महात्मा गांधी नहीं रहे! (शोकसूचक)
   (च) अहा! कितने सुन्दर फूल हैं! (हर्षसूचक)
   (छ) हे प्रभो! हमें बल-बुद्धि दो! (प्रार्थनासूचक)
   (ज) बाप रे! इतना भयानक जंगल (भयसूचक)
   (झ) शाबाश! तुमने यह एक अच्छा काम किया। (अनुमोदनसूचक)
   (ञ) प्रणाम! गुरु जी (अभिवादनसूचक)
   (ट) धन्यवाद! (कृतज्ञतासूचक)
   (ठ) होशियार! अब आगे कदम नहीं बढ़ाना। (चेतावनीसूचक)

3. कभी-कभी वाक्य के अंत में भी इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है —

(क) इतनी लंबी दीवार है!

(ख) कैसा सुन्दर दृश्य है!

4. सम्बोधन के लिए भी इस चिह्न का प्रयोग होता है; यथा—

(क) भाइयो और बहनो! आज देश के लिए कुछ करने का समय आ गया है।

(ख) श्याम! तुम्हें मेरे साथ चलना है।

(ग) हे शिष्यो! अब हम चलते हैं।

(घ) हे प्रभो! मेरी रक्षा करो।

(ङ) हे भगवान! बचाओ।

5. जहाँ अपने से छोटों के प्रति शुभकामनाएँ और सद्‌भावनाएँ प्रकट की जाएँ—

(क) भगवान तुझको दीर्घायु दे!

(ख) यशस्वी होओ!

6. जहाँ प्रशंसा की जाए—

(क) कैसा सुन्दर रूप है!

(ख) वाह! कितना अच्छा गीत गाया तुमने!

(ग) कितने सुन्दर हैं नाक-नक्श इसके!

7. जिन प्रश्नों के उत्तर की अपेक्षा न हो, उसके अंत में भी इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; यथा—

(क) अब क्या हो सकता है! जो होना था, वह हो गया।

8. प्रभावोत्पादकता उत्पन्न करने के लिए—

लो सुनो बजी रण-भेरी
हिमशृंगों को नादित कर
दिग्‌ध्वनित हुआ जगती में
आक्रमण चीन का बर्बर!
उत्तर प्राचीर हिमालय
अरि चापों से अब कंपित
भारत का अविजित प्रहरी
होगा न कभी पद मर्दित!

(कविता सुमित्रानंदन पंत ने 'लोकायतन' में लगभग हर पद्य के अंत में प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से इस चिह्न का प्रयोग सर्वाधिक रूप में किया है।)

9. मनोविकारों की तीव्रता दर्शाने हेतु एक से अधिक विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग भी कहीं-कहीं देखने को मिलता है, यथा—

(क) हा! शोक!! महाशोक!!!

(ख) बोलते क्यों नहीं! जीभ कट गई है क्या!!

(ग) सफलता! महान सफलता!! अद्भुत सफलता!!!

10. कभी-कभी हम किसी व्यक्ति से अप्रसन्न होकर गुस्से में कह देते हैं—

(क) गधा कहीं का!

(ख) उल्लू!

(जबकि वह न तो गधा ही होता है, और न उल्लू)।

11. किसी बात पर जोर देने पर भी विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग होता है; यथा—

(क) नहीं, मैं ऐसा नहीं होने दूँगा!

(ख) तुम अच्छी तरह समझ लो!

12. आवेश में—

(क) तुम पाखंडी हो, यहाँ से चले जाओ!

(ख) सिपाहियो, शत्रु पर टूट पड़ो!

(ग) देखो, वह जाने न पाए!

(घ) सुनो, वहाँ आवाज नहीं होने पाए!

(ङ) दौड़ो, यह तुम्हें पकड़ न पाए!

13. अविश्वसनीयता —

(क) यह तो बड़ा ईमानदार बनता था! आखिर उसकी झूठ लोगों के सामने उजागर हो ही गई।

(ख) हारीत - धिक्कार है राजन आपको! आप अपनी माँ को भी नहीं पहचानते? जो तुम्हारी माँ है, वह मेरी भी माँ है।

मान सिंह- आप कदाचित् ब्राह्मण हैं, और मैं क्षत्रिय! हम दोनों की माँ एक कैसे हो सकती है?

बाप्पा - जो आपकी माँ है, वह देवा और बाल्या की भी माँ है।

मान सिंह- एक भील और एक क्षत्रिय महीपति की माँ एक ही है! आश्चर्य! तुम लोग मुझे पागल बनाने का यत्न क्यों कर रहे हो?

(हरिकृष्ण प्रेमी के नाटक 'प्रकाश स्तंभ' के इस संवाद में ''एक भील... आश्चर्य'')- में अविश्वसनीयता झलकती है।

अभ्यास

(क) अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी

(ख) संसार में मनुष्य जन्म एक ही बार होता है और जवानी भी केवल एक ही बार आती है साहसी और मनस्वी तरुण-तरुणियों को इस अवसर से हाथ नहीं धोना चाहिए कमर बाँध लो घुमक्कड़ो संसार तुम्हारे स्वागत के लिए बेकरार है

‖09‖

निर्देशक चिह्न/रेखिका (—)

अवधारणा —

किसी पदबंध या उपवाक्य अथवा सरलवाक्य में निहित अर्थ या विवरण को विस्तार के साथ यदि हम उल्लेखित नहीं करना चाहें, तब इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। वर्तमान में इस चिह्न का प्रयोग कम होता जा रहा है। अंग्रेजी में इसे 'डैश' कहते हैं। यह चिह्न योजक चिह्न (—) से बड़ा होता है।

विशेषकर नाटक आदि में संवाद, वार्तालाप, कथोपकथन आदि में अथवा किसी अवतरण का उल्लेख करते समय सम्बन्धित के नाम के पूर्व इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

प्रयोग

1. यदि किसी बात का उत्तर आगे दिया जाना है तो इस चिह्न का उपयोग करते हैं; जैसे—

   (क) राम— आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है।

2. नाटक के संवादों में पात्रों के नाम के आगे—

   (क) अध्यापक— भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे?
   छात्र — डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

   (ख) महेश — नरेन्द्र तुम कल कहाँ गए थे?
   नरेन्द्र — मेरी तबीयत ठीक नहीं थी।

3. किसी उद्धरण में लेखक या ग्रंथ को सूचित करने के लिए—

   ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।''

   — नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

   ''शशि मुख पर घूँघट डाले, अंचल में दीप छुपाए।
   जीवन की गोधूलि में, कौतूहल से तुम आए।।''

   — प्रसाद

4. वाक्य में जहाँ विचार बाधा पड़ जाना सूचित हो, वहाँ निक्षिप्त पदों के आगे-पीछे इस चिह्न का प्रयोग होता है; यथा—

   (क) क्या कहा आपने— मैं स्वाध्याय नहीं करता हूँ-

आपने पता नहीं किया और आरोप लगा दिया।

5. वाक्य में जहाँ विचार अप्रत्याशित रूप से परिवर्तन के सूचक हों, वहाँ इस चिह्न का प्रयोग होता है; यथा—
   (क) बूढ़ा खाँसता ही गया— बेचारे को दमा था— किसी ने भी उसकी नहीं सुनी।
   (ख) हाँ, हाँ— सुनते जाइए, अभी मैंने पूरी बात कहाँ कही है।
6. अपने कथन को स्पष्ट करने के लिए —
   (क) संज्ञा के तीन भेद होते हैं— व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा।
   (ख) मैंने विज्ञान के तीन विषय लिए हैं— भौतिकी, रसायन, गणित।
   (ग) दशरथ की तीन पत्नियाँ थीं— कौशल्या, सुमित्रा, कैकई।
7. परिभाषा देने के लिए —
   (क) रस— रस ही काव्य की आत्मा है।
   (ख) जीवन का अर्थ है— जोश, उत्साह, हिम्मत और जिंदा दिली।
8. किसी शब्द या संख्या की पूर्ति के लिए—
   (क) श्री --- को पत्र देना है।
   (ख) ...... रु. की धन-राशि प्रदान की जाती है।
9. उदाहरण देने के लिए —
   (क) अपने विस्तृत अर्थ में कोश अनेक प्रकार के होते हैं; जैसे—
      1. सचित्र बालकोश।
      2. हिन्दी शब्द कोश
      3. विश्व कोश
      4. पुराण कोश
      5. व्याकरण कोश
10. हकलाना सूचित करने के अर्थ में—
   (क) तू-तू-तेरा— तेरा बाप— मैं सभी को मज़ा चखा दूँगा, हाँ।
11. हिचकिचाहट सूचित करने के अर्थ में—
   (क) वह कहने लगा— ''यह-यह आपने ठीक नहीं कहा।''
12. अशोभनीय कथन या उसके अंश को छिपाने के लिए—
   (क) कहाँ गया वह ——— का गुलाम?
13. 'यहाँ से यहाँ तक'— की संख्याएँ अथवा सन् अथवा स्थान के बीच—
   (क) सन् 1947— 58
   (ख) दिल्ली— कश्मीर
14. किसी वाक्य के अंतिम खण्ड पर जोर देने के लिए—
   (क) हाँ, हाँ, आ जाइए— बड़े शौक से।

(ख) नहीं, नहीं— यह आपको शोभा नहीं देता है।

15. सारांश जताने के लिए —

(क) मेरे कहने का आशय यह है कि बच्चों, बूढों, जवानों— सबको देश की उन्नति में सहयोग करना होगा।

16. समानाधिकार शब्दों को पृथक् बताने के लिए—

(क) सभी शासकीय कर्मचारियों— शिक्षकों, लिपिकों, भृत्यों ने सरकार के इस कदम की सराहना की है।

17. अपने कथन को स्पष्ट करने के लिए—

(क) इस देश में कई बड़ी-बड़ी नदियाँ हैं— गंगा, सिंधु, ब्रह्मपुत्र आदि।

(ख) चार प्रकार के पुरुषार्थ शास्त्रों में बताए गए हैं— धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

18. प्रधान वाक्य के मध्य प्रयुक्त हुए शब्दों को पृथक् बताने के लिए—

(क) लिखना— मौलिक रूप से अपनी बात पाठक के सम्मुख रखना-यही मेरी रचनाधर्मिता है।

(ख) चरित्र— जिसे बातों ही बातों में हम आसानी से कह देते हैं— हमारे व्यक्तित्व का सहायक होना चाहिए।

19. कोश आदि में मुख्य शब्द को सूचित करने के लिए—

(क) सौंदर्य— शास्त्र,— परक

(यहाँ योजक चिह्न से आशय है कि— योजक चिह्न के स्थान पर 'सौंदर्य' शब्द का प्रयोग करना है और इस प्रकार सौंदर्यशास्त्र तथा सौंदर्यपरक शब्द यहाँ बनेंगे।)

अभ्यास

(क) वही उन्नति कर सकता है, जो स्वयं को उपदेश दे सकता है।

रामतीर्थ

(ख) उद्यम, साहस, पराक्रम, धैर्य, बुद्धि और शक्ति ये छह गुण जिसमें होते हैं, दैव उसकी सहायता करता है।

(ग) मुझे एक कला में सिद्धता हासिल नहीं है और वह है खुशामद।

10

योजक चिह्न/सामासिक-चिह्न (-)

अवधारणा

योजक का अर्थ है जोड़ने वाला। योजक चिह्न का प्रयोग सामासिक शब्दों के बीच दो शब्दों को जोड़ते समय एवं तुलनावाची (सा, सी, से) एवं पुनरुक्त शब्दों के साथ किया जाता है। इसे सामासिक चिह्न भी कहते हैं।

यह लम्बाई में निर्देशक चिह्न से छोटा होता है। इसका प्रयोग यौगिक शब्दों के खण्डों को सूचित करने के लिए किया जाता है; जैसे—

(क) राजीव-संजीव (संज्ञा)
(ख) मैं-तू (सर्वनाम)
(ग) लाल-पीला (विशेषण)
(घ) पढ़ना-लिखना (क्रिया)
(ङ) यदा-कदा (अव्यय)

प्रयोग

1. पदबंध को सामासिक बनाने के लिए —

(क) ज्ञान-विज्ञान (द्वन्द्व समास)
(ख) देव-मूर्ति (तत्पुरुष समास)
(ग) चरण-कमल (कर्मधारय समास)
(घ) यथा-शक्ति (अव्ययीभाव)
(ङ) सप्त-लोक (द्विगु समास)

विशेष

कुछ व्याकरणाचार्यों का मत है कि द्वन्द्व समास को छोड़कर शेष सामासिक पदों के मध्य योजक चिह्न लगाना उचित नहीं है। यही कारण है कि समाचार-पत्रों में अब इनका प्रयोग कम-से-कम होने लगा है। यहाँ तक कि पत्र-पत्रिकाओं के नाम भी अब योजक चिह्न के बिना लिखे जा रहे हैं; यथा—

(क) संस्कृति संवाद
(ख) लोकमत

अत: देवमूर्ति, चरणकमल, यथा-शक्ति, सप्तलोक— इन शब्दों को योजक चिह्न के बिना लिखना ही अब उचित होगा। ये अपने इसी रूप में अब शुद्ध माने जाने लगे हैं। ध्यान रहे

अनावश्यक और बोझिल रूप को हटाने के लिए भले ही इस चिह्न का उपयोग चलन से हटा रहे हैं फिर भी इस चिह्न की उपयोगिता है।

हिन्दी शब्दानुशासन में श्री किशोरीदास वाजपेयी ने एक उदाहरण देकर इस तथ्य की पुष्टि इस प्रकार की है—

एक ग्रंथ का नाम कवि-राज-मार्ग है। 'कवि-राज-मार्ग' से दो मतलब निकल सकते हैं। कविराजों का मार्ग अर्थात् सिद्ध कवियों की सरणि। दूसरा अर्थ— 'कवियों का राजमार्ग अथवा कविजनों के चलने का निर्भीक मार्ग।' इन दो अर्थों में से कौन-सा अर्थ लेखक को अभिप्रेत है, पता ही नहीं चलता। यदि पहला अर्थ अभिप्रेत है, तो कविराज-मार्ग शब्द चाहिए, और दूसरा अर्थ अभिप्रेत है, तो कवि-राजमार्ग चाहिए। कहने का आशय यह कि समाजसूचक शब्द का प्रयोग ऐसे शब्दों में सोच समझकर करना चाहिए, ताकि किसी प्रकार का भ्रम न रहे।

2. द्वित्व तथा शब्दयुग्म में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है—
    (क) ऐसे अवसर कभी-कभी ही आते हैं।
    (ख) बुआ खड़ी-खड़ी वहाँ क्या कर रही है?
    (ग) सामान बटोरते-बटोरते शाम हो गई।
    (घ) यह सोच-सोचकर मैं हैरान हूँ।
    (ङ) घर-घर इस बात की चर्चा है।

विशेष

(उपर्युक्त प्रकार के शब्दों में क्रिया या विशेषण या क्रिया-विशेषण का उपयोग होता है।)

3. विपरीतार्थ शब्द-युग्मों के मध्य —
    (क) इस काम को पूरा करने में मैंने रात-दिन एक कर दिया।
    (ख) कुछ ऊँच-नीच न हो जाए।
    (ग) लेन-देन के व्यवहार में भूल-चूक होती रहती है।
    (घ) जीवन में सुख-दु:ख आते ही रहते हैं।
    (ङ) समाज में अमीर-गरीब के बीच खाई बढ़ती ही जा रही है।
4. समानार्थक (सहचर) शब्दों के साथ —
    (क) उसको धन-दौलत की कमी नहीं है।
    (ख) चिट्ठी-पत्री देते रहना।
    (ग) खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन हो रहा है।
    (घ) अस्वस्थ व्यक्ति को खाने-पीने में संयम बरतना चाहिए।
    (ङ) रुपया-पैसा हाथ का मैल है।
5. सार्थक शब्दों के साथ प्रयुक्त होनेवाले निरर्थक शब्दों के बीच—
    (क) गलत-सलत सवाल हल करना ठीक नहीं।
    (ख) चाय-वाय हो जाए।

(ग) अनाप-शनाप क्या बके जा रहे हो!

(घ) सब कुछ ठीक-ठाक तो है!

(ङ) भीड़-भाड़ वाले इलाके में सँभलकर चलना चाहिए।

6. अर्थ भ्रम से बचने के लिए विशेषकर उपसर्ग का बोध कराते समय—

(क) कु-शासन (बुरा शासन) कुशासन (कुश का आसन)

(ख) भू-तत्त्व (पृथ्वी से सम्बद्ध तत्त्व) भूतत्त्व (भूत पन)

(ग) सह-अनुभूति सहानुभूति (हमदर्दी) (साथ मिलकर अनुभव)

(घ) अ-परस (जिसे किसी ने न छुआ हो) अपरस (एक चर्म रोग)

(ङ) अ-नति (नम्रता का अभाव) अनति (थोड़ा)

7. जब शब्दों के बीच सम्बन्ध कारक का, की, के (पर सर्ग) लुप्त हो—

(क) राम-लीला (राम की लीला)

(ख) शब्द-भण्डार (शब्दों का भण्डार)

(ग) राम-रावण संवाद (राम रावण का संवाद)

(घ) जन्म-भूमि

(ङ) शब्द-सागर

8. शब्दों के बीच न, का, ही, सा का प्रयोग होने पर—

(क) कुछ-न-कुछ। (न)

(ख) ज्यों-का-त्यों रहने दो। (का)

(ग) आप-ही-आप क्या कहे जा रहे हो। (ही)

(घ) उसके पास बहुत-सा-धन है। (सा)

9. संख्याओं तथा उनके अंशों के मध्य —

(क) एक-तिहाई

(ख) एक-चौथाई

(ग) कम-से-कम

(घ) तीन-चौथाई

(ङ) तीन-चार

10. जब कोई शब्द किसी पंक्ति में पूरा नहीं लिखा जा सकता है, तो सामासिक चिह्न लगाकर शेष आगे के अगली पंक्ति में लिख दिया जाता है; यथा—

(क) मैं उसे पुकारता रहा-
किन्तु उसने मेरी आवाज़ सुनी ही नहीं।

11. दो क्रियाओं के एक साथ प्रयुक्त होने पर—

(क) कहा-सुना माफ कर दो।

(ख) ले-देकर एक तो बेटा है। इसके साथ क्या झगड़ना।

(ग) रानी पूजा-पाठ करने के बाद निकली।

(घ) तुम पढ़-लिखकर बड़े आदमी बनोगे।

(ङ) एक दूसरे के घर आते-जाते रहने से संबंध बना रहता है।

12. मूल क्रिया के साथ प्रयुक्त प्रेरणार्थक क्रिया के बीच —

(क) सीखने-सिखाने की एक उम्र होती है। (मूल क्रिया सीखना)

(ख) पीना-पिलाना— शब्द का अर्थ अधिकतर प्रसंगानुकूल भिन्न-भिन्न लगाया जाता है। (प्रेरणार्थक क्रिया सिखाना)

13. दो विशेषण पदों का संज्ञा के अर्थ में प्रयोग होने पर —

(क) भूखा-प्यासा मत रहना।

(ख) आज का शासन अन्धा-बहरा है।

विशेष

1. तत्पुरुष समास में योजक चिह्न नहीं लगाना चाहिए, जब तक कि अर्थ भ्रम की स्थिति न हो।
2. उपसर्ग तथा प्रत्यय लगाकर बने शब्दों को मिलाकर लिखना ही उचित है, किन्तु अर्थभ्रम की स्थिति में वहाँ भी योजक चिह्न का प्रयोग करना चाहिए।

अभ्यास

(क) निम्नलिखित योजक शब्दों का स्वरचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए —

करीब-करीब	रो-धोकर
बहुत-बहुत	गली-गली
धीरे-धीरे	बच्चा-बच्चा
बार-बार	अपना-अपना
बजते-बजते	खाली-खाली

(ख) वही उन्नति कर सकता है
जो स्वयं को उपदेश दे सकता है

(ग) ध्वनि प्रदूषण की समस्या दिन-प्रति दिन बढ़ती जा रही है।

(घ) माँ ने पूछा! तुम कक्षा में प्रथम आ पाओगे।

11

व्याख्या चिह्न/विवरण चिह्न (:-)

अवधारणा —

किसी पारिभाषिक शब्द, नाम या प्रक्रिया की व्याख्या प्रस्तुत करने के लिए व्याख्या चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

यह चिह्न अपूर्ण विराम (:) तथा योजक चिह्न (-) का सम्मिलित रूप है। यही कारण है कि कहीं-कहीं व्याख्या चिह्न के स्थान पर निर्देशक चिह्न से ही काम चला लिया जाता है। अत: धीरे-धीरे व्याख्या चिह्न का प्रयोग कम होता जा रहा है।

प्रयोग

1. किसी बात अथवा विषय को विस्तार से समझाने अथवा तथ्यों का विवरण देने के लिए संकेत रूप में इस चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे—

   (क) क्रिया के मुख्य दो भेद हैं :—

      1. अकर्मक क्रिया
      2. सकर्मक क्रिया।

   (ख) बीस सूत्रीय कार्यक्रम इस प्रकार हैं :—

      1. ....
      2. ....।

   (ग) आज की बैठक में विचारणीय तथ्य हैं :—

      1. पुलिस में बढ़ता भ्रष्टाचार
      2. पुलिस में बढ़ता राजनीतिक हस्ताक्षेप

2. किसी पारिभाषिक शब्द, नाम या प्रक्रिया की व्याख्या प्रस्तुत करने के लिए—

   (क) कृष्ण :- कृष्ण पूर्णावतार थे। उनका नाम आज भी ईश्वर के रूप में बड़े आदर के साथ लिया जाता है।

   (ख) राम :- रामचरितमानस के नायक राम हैं। उनके पिता का नाम दशरथ तथा माता का नाम कौशल्या है। उनका विवाह विदेह राजा जनक की पुत्री सीता से हुआ था।

3. किसी उद्धरण को प्रारंभ करने के लिए —

   (क) तिलक ने घोषणा की :- ''स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।''

(ख) उसने विनीत भाव से कहा :- ''मैं अपराधी नहीं हूँ।''

4. प्रश्न पूछते समय जैसे—

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :—

अभ्यास

(क) विशेषण के चार भेद होते हैं

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण।

(ख) वाक्य शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं

लिपि भाषा के वर्णों या अक्षरों के लिखने की विधि को लिपि कहते हैं।

12

लाघव चिह्न/बिन्दु (./०)

अवधारणा

शब्दों को संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए लाघव चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इसे संक्षेप-सूचक चिह्न (संक्षिप्ति) भी कहते हैं। शब्द के प्रथम अक्षर के पश्चात् यह चिह्न स्थान, श्रम तथा समय की बचत के लिए लगाया जाता है।

प्रयोग

1. नाम-संक्षेपों या आद्याक्षरों के आगे इस चिह्न का प्रयोग होता है; यथा—

(क) कृ०पृ०उ० (कृपया पृष्ठ उलटिए)

(ख) म०प्र० (मध्य प्रदेश)

(ग) सौ. कां. (सौभाग्यकांक्षिणी)

(घ) अ.जा. (अनुसूचित जाति)

(ङ) ग्रा. पं. (ग्राम पंचायत)

2. संक्षेपों (शब्दों के संक्षिप्त रूपों) के बाद भी इस चिह्न का प्रयोग होता है तथा शब्दकोश में इसकी उपयोगिता सर्वाधिक होती है।

(क) डा. उपाध्याय (डॉक्टर उपाध्याय)

(ख) दे० (देखिए)

(ग) ई० (ईस्वी)

(घ) वि०सं० (विक्रम संवत्)

(ङ) पं० (पंडित)

3. एकाक्षरी लाघव-चिह्न —

(क) पं. (पंडित) (ख) हि. (हिन्दी)

(ग) सं. (संस्कृत) (घ) क्र. (क्रमांक)

(ङ) ई. (ईस्वी)

4. पूर्ववर्ती लाघव-चिह्न (इसमें अंतिम शब्द मौलिक रूप में ही बना रहता है।) यथा—

(क) जि.शि. अधिकारी (ख) नि.श्रे.लिपिक

(ग) सं.रा.अमेरिका (घ) टी.टी.नगर

(ङ) भू.वि.बैंक

5. पश्चवर्ती लाघव चिह्न (इसमें पूर्ववर्ती शब्द यथावत् रहता है, किन्तु अंतिम शब्द में

चिह्न लगाया जाता है) यथा—

(क) आश्विन कृ. (आश्विन कृष्णपक्ष)

(ख) कांग्रेस (इ.) (इंदिरा कांग्रेस)

(ग) चन्द्रगुप्त (प्र.) (चन्द्रगुप्त प्रथम)

(घ) 2000 ई.

(ङ) 2057 वि.सं.

6. शब्दकोश में इस चिह्न की उपयोगिता सर्वाधिक रहती है; यथा—

(क) स्त्री. (स्त्रीलिंग)

(ख) वि. (विशेषण)

(ग) उप. (उपसर्ग)

(घ) अ. (अव्यय)

(ङ) अ.क्रि. (अकर्मक क्रिया)

(च) अप. (अपभ्रंश)

(छ) अनु. (अनुस्वार)

(ज) प्रा. (प्राकृत)

(झ) पा. (पालि)

(ञ) ब्र. (ब्रजभाषा)

लाघव चिह्न का प्रयोग कहाँ आवश्यक नहीं है—

1. जिन शासकीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय विभागों के नाम का उच्चारण एक ही शब्द के रूप में किया जाता है, वहाँ भले ही उनके नाम संक्षेप में लिखे जाते हों किन्तु उनके प्रत्येक अक्षर के साथ लाघव चिह्न लगाना आवश्यक नहीं है; यथा—

(क) यूनेस्को (अन्तर राष्ट्रीय संस्था)

(ख) दक्षेस (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन)

(ग) द्रमुक (द्रमुक मुनेत्र कडगम)

(घ) देना (देवकरण नानजी बैंक)

(ङ) व्यापमं (व्यावसायिक परीक्षा मंडल)

2. दाशमिक प्रणाली के वजन तथा माप बनाने वाले शब्दों के साथ लाघव-चिह्न का प्रयोग नहीं किया जाता है; यथा—

(क) सेमी (= सेंटीमीटर)

(ख) किमी (किलोमीटर)

(ग) मी (मीटर)

(घ) डेमी (डेसीमीटर)

(ङ) हेमी (हेक्टोमीटर)

3. रासायनिक तत्त्वों के चिह्नों के बाद लाघव चिह्न का प्रयोग नहीं किया जाता है;

यथा—

(क) ना (= नाइट्रोजन)

(ख) हा (= हाइड्रोजन)

4. तिथि, नक्षत्र आदि के साथ इस चिह्न का प्रयोग नहीं किया जाता है; यथा—

(क) तृ (तृतीया)

(ख) रो (रोहिणी)

5. वर्णमाला के अक्षरों का जब नाम के रूप में प्रयोग किया जाता है तब लाघव चिह्न का प्रयोग नहीं किया जाता है; यथा—

(क) ऊ = (= ऊष्मा)

रोचक तथ्य

आज कल व्यक्तिगत नामों, उपाधियों तथा पदनामों में भी लाघव चिह्न का उपयोग हो रहा है किन्तु अंग्रेजी से आई इस पद्धति का उपयोग हिन्दी में सहज रूप से स्वीकार नहीं किया गया है; खासकर व्यक्तिगत नामों में, उदाहरण के लिए—

आर.के.माथुर— इसमें रामकुमार माथुर, राजकुमार माथुर, रावणकुमार माथुर आदि अनेक नामों की कल्पना की जा सकती है। अत: नामों में इसका उपयोग नहीं हो तो ही अच्छा।

यद्यपि उपाधियों तथा पद नामों में इसका चलन अब बढ़ता जा रहा है। इसके उदाहरण जितने चाहें मिल जाएँगे—

उपाधियाँ

1. पी-एच.डी.
2. एम.बी.ए.
3. एम.बी.बी.एस.
4. एल-एल.बी.
5. एम.काम.

पदनाम

1. प्रोफे. (प्रोफेसर)
2. प्रो. (प्रोपाइटर)
3. डी.एम. (डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट)
4. एम.एल.ए. (मेम्बर ऑफ लेजिस्लेटिव असेम्बली)
5. सी.ए. (चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट)

अभ्यास

निम्नलिखित संस्थाओं के नाम लाघव चिह्न लगाकर लिखिए:-

(क) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

(ख) भारतीय जनता पार्टी

13

आवेशी चिह्न/पद लोप चिह्न (...)

अवधारणा

कहानी,उपन्यास, नाटक में कथोपकथन के मध्य जब पात्र भावावेश की स्थिति में अपना कथन पूरा नहीं कर पाता और बहुत कुछ कहने की स्थिति में भी कुछ नहीं कह पाता, ऐसे समय आवेशी चिह्न का प्रयोग किया जाता है। नाटकों में इस चिह्न का प्रयोग सर्वाधिक होता है।

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि जब वाक्य अथवा अनुच्छेद के कुछ अंश छोड़कर लिखना हो तो इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इससे पढ़ने वाला यह समझ लेता है कि बीच के शब्द भी सार्थक हैं किन्तु स्थानाभाव के कारण उन्हें लिखा नहीं जा रहा है। निबन्ध की रूपरेखा लिखते समय भी इस चिह्न का उपयोग किया जा सकता है।

प्रयोग

1. (क) रमेश ने मोहन को ... कहकर गाली दी।
   (ख) सीता पास तो हो जाती, परन्तु ....
   (ग) इस विद्यालय में यूँ तो सभी सुविधाएँ हैं किन्तु... नहीं है।
   (घ) तुम चले जाओ, नहीं तो....
   (ङ) उसने कहा, तुम साधना तो नहीं ...
2. निबंध की रूपरेखा प्रस्तुत करते समय—
   (क) निबंध— 15 अगस्त : स्वतंत्रता दिवस
   (ख) संकेत—
      1. पराधीनता से मुक्ति...
      2. स्वतंत्रता के लिए बलिदानियों की सूची...
      3. स्वतंत्रता के लिए आंदोलन...
      4. स्वतंत्रता दिवस क्यों?...
      5. कैसे मनाया जाता है? ...
      6. स्वतंत्रता दिवस तथा राष्ट्र ...
3. चित्र और रूप-रेखाओं के आधार पर कहानी- लेखक के लिए—
   (क) दो मित्रों का जाना... मार्ग में जंगल से गुजरना .... एक रीछ को देखना... एक मित्र का डर कर पेड़ पर चढ़ना ... दूसरे मित्र का साँस रोककर लेटना ...

रीछ का आना, सूँघना... चले जाना... पेड़ से उतर कर मित्र से पूछना... शिक्षा...

4. कविता में—

(क) ''उलझी अलकें ज्यों तर्क जाल... चरणों में थी गति भरी ताल'' के अंतर्गत् प्रसाद ने इड़ा का सौंदर्य वर्णन प्रस्तुत किया है।

(ख) ''ग्यान के पंथ कृपान के धारा...'' वाली पंक्तियों में ज्ञान और भक्ति का तुलनात्मक वर्णन किया गया है।

(ग) अब किसी बियाबान वन में जटायु...?.... नहीं। वायुयान में बिठाकर जाएगा...। .... राम युद्ध ठानेंगे वानरों की सेना ले?

5. किसी बड़े अंश के प्रथम, मध्य अथवा अंतिम अंशों के उल्लेख करते समय—

(क) ... और कुमारियों के स्वयंवर स्थल तक को कभी-कभी रक्त-रंजित कर दिया गया है। (प्रथम अंश)

– वीरगाथा काल का प्रबंधक रूप (डॉ.श्यामसुंदर दास)

(ख) फागुन के गुलाबी जाड़े की वह सुनहरी संध्या क्या भुलाई जा सकती है।... वृद्ध अपने सहानुभूति हीन प्रांत में लौट जाना चाहते थे।

– (एक रेखा चित्र. महादेवी वर्मा)

6. किसी वर्जित प्रयोग से बचने के लिए —

(क) उस... ने फिर धोखा दिया।

अभ्यास

(क) किसी कहानी का आवेशी चिह्न का उपयोग करते हुए लिखिए।

(ख) किसी निबंध की रूपरेखा आवेशी चिह्न लगाकर तैयार कीजिए।

14

उद्धरण चिह्न/अवतरण (‘ ’ “ ”)

अवधारणा

किसी व्यक्ति द्वारा कही गई बात को उसी के शब्दों में उद्धृत किया जाता है, तब उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त किसी कहानी, कविता, लघु कथा, अथवा लिखित सामग्री में से कुछ विषय सामग्री उद्धृत की जाती है, तब भी इसका उपयोग किया जाता है।

उद्धरण चिह्न के दो रूप हैं—

(क) एकल उद्धरण चिह्न, (ख) युगल उद्धरण चिह्न

(क) एकल उद्धरण चिह्न

आज एकल उद्धरण का चिह्न बहु प्रचलित है; यथा—

1. किसी व्यक्ति, पुस्तक आदि के नाम को एकल उद्धरण चिह्न द्वारा व्यक्त किया जाता है; यथा—
   (क) ‘गृहशोभा’ महिलाओं की उत्तम पत्रिका है।
   (ख) ‘गीता’ एक धार्मिक ग्रंथ है।
   (ग) ‘रामचरितमानस’ तुलसी की सर्वश्रेष्ठ कृति है।
   (घ) ‘मुक्तिबोध’ हिन्दी के श्रेष्ठ कवि हैं।
   (ङ) ‘देवपुत्र’ बच्चों की लोकप्रिय बाल-पत्रिका है।
2. किसी शब्द को वाक्य में प्रयुक्त अन्य पदों से अलग करने के लिए—
   (क) ‘य’- अंत:स्थ व्यंजन है।
   (ख) यह ‘खट्टा’ आम है।
   इस वाक्य में ‘खट्टा’- विशेषण है।
   (ग) वह तेज-तेज चलता है।
   इस वाक्य में ‘तेज-तेज’ क्रिया विशेषण है।
3. किसी विदेशी भाषा के शब्द का प्रयोग करते समय —
   (क) ‘रिहर्सल’ एक अंग्रेजी शब्द है।
4. लेखन करते समय किसी उद्धरण के भीतर अन्य उद्धरण का उल्लेख करते समय—
   (क) किसी ने सच ही कहा है— “किसी भी विद्यालय का प्रधानाचार्य होना गौरव

की बात है, किन्तु हर व्यक्ति इस उत्तरदायित्व को ठीक से वहन नहीं कर सकता। महर्षि अरविन्द के अनुसार भी 'आचार्य राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कार की जड़ों में खाद देते हैं; और अपने श्रम से सींच-सींचकर महाप्राण शक्तियों का निर्माण करते हैं।' किन्तु ऐसा तभी संभव होगा जब प्रधानाचार्य स्वयं अपने अंदर उन गुणों का विकास करें।''

(ख) अब सारी स्थिति स्पष्ट हो चुकी है, उसने बताया, ''अब मुझे कुछ नहीं कहना है क्योंकि यह मैंने नहीं, उसने ही कहा था कि 'मोहन एक अच्छा साथी कभी नहीं बन सकता है।' फिर तुम जानो।''

(ग) इन लेखों में से एक लेख— ''वैज्ञानिक अध्यात्म के प्रतिपादन की दिशा में बढ़ते कदम, जो 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका में अगस्त महीने में छपा है, आचार्य श्री ने लिखा है— 'गत बीस वर्षों में विज्ञान ने अति तीव्र प्रगति की है; और उसका चरण अध्यात्म के समर्थन की ओर बढ़ा है। लगता है अगले पचास वर्षों में अध्यात्म और विज्ञान दोनों इतने पास आ जाएँगे कि दोनों का समन्वय असंभव न होगा।''

5. कहावतें/सूक्तियाँ तथा वाक्यांश को उद्धृत करते समय, यथा—

(क) गीता में कहा गया है- 'मा फलेषु कदाचन'' (सुभाषित)

(ख) किसी ने सत्य ही कहा है- (कहावत)
'जैसा खाए अन्न वैसा ही हो मन'

(ग) क्या आप नहीं जानते कि-
'न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी' (वाक्यांश)

(घ) 'हमारा व्यक्तित्त्व, हमारा अस्तित्त्व स्वयं में एक विशिष्ट यज्ञकुंड है।' ऐसा हमारे मनीषियों ने ठीक ही कहा है।(यज्ञ-कुंड पारिभाषिक शब्द)

(ख) युगल उद्धरण चिह्न

1. जब किसी व्यक्ति के कथन को ज्यों-का-त्यों उद्धृत किया जाए—

(क) शास्त्री जी ने ''जय जवान, जय किसान'' का नारा दिया।

(ख) तिलक ने कहा- ''स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।''

(ग) नेता जी ने कहा- ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।''

2. यदि किसी पुस्तक या पत्रिकाओं की लिखित सामग्री को उद्धृत किया जाए—

(क) डॉ. कलाम ने अपनी आत्मकथा- 'अग्नि की उड़ान' में लिखा है- ''मुझे विरासत में पिता से ईमानदारी और आत्मानुशासन तथा माता से भलाई में विश्वास तथा गहरी उदारता मिली है।''

3. संवाद-लेखन में—

''यह कैसा शोर है?''

''हुजूर, एक बच्चा है...''

''बच्चा है तो बदशऊर चुप क्यों नहीं रहता?''

''हुज़ूर, बीमार होगा।''

''बीमार है तो उसके लिए यह जगह है?

क्यों बीमार है?'' (भटियारा चुप)

''साथ उसके माँ है?''

''हाँ हुज़ूर है। वे कल यहाँ से चले जाने का कहते हैं।''

''उससे कहो, बच्चे को चुप करे, नहीं तो हमारी नींद में खलल पड़ता है। चलो, जाओ।'' (अपना-पराया-जैनेन्द्र)

विशेष

आधुनिक नाटककार संवादों में अब उद्धरण चिह्नों का प्रयोग नहीं करते हैं। प्राय: इनका प्रयोग उपन्यासों तथा कहानियों में देखने को अवश्य मिलता है।

4. लेखन के समय किसी विशेष कथन को प्रस्तुत करते समय —
   (क) गीता का संदेश है— ''कर्म करो किन्तु फल की इच्छा मत करो।''
   (ख) अर्थशास्त्र कहता है— ''आवश्यकता आविष्कार की जननी है।''
5. किन्हीं विशेष शब्दों का प्रयोग करते समय—
   (क) अध्यात्म सम्बन्धी लेखों को पढ़ने के लिए ''कल्याण'' (मासिक) में मेरा लेख पढ़िए।
   (ख) वीर रस की कविताओं के लिए ''भूषण'' (वीर रस के कवि) को अवश्य पढ़ें।

विशेष

आजकल विशेष शब्दों की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए इस चिह्न की अपेक्षा काले टाइप का प्रयोग करना अधिक प्रचलन में आता जा रहा है।

6. यदि किसी उद्धरण के बीच में ''उसने कहा'' अथवा ''उसने उत्तर दिया'' जैसी अभिव्यक्ति आ जाए, तो उप वाक्यों में दोनों ओर ही उद्धरण चिह्नों का प्रयोग करना होता है; यथा—
   (क) ''पिता जी बार-बार याद दिलाते हैं'', उसने कहा, ''मन लगाकर पढ़ो ताकि परीक्षा में अच्छे अंक मिलें।''
   (ख) ''गुरु जी जो कुछ कहते हैं'', उसने कहा, ''वह सही है।''

विशेष

1. पूर्ण विराम (।) चिह्न तथा अल्प विराम चिह्न का प्रयोग करते समय उन चिह्नों को उद्धरण चिह्न के भीतर ही रखें; यथा—
   (क) उसने कहा था, ''वह परीक्षा नहीं देगा।''
   (ख) सवार घोड़े से उतर गया। उसने पूछा, ''तुम मुझे राखी क्यों बाँधना चाहती हो?'' यमुना ने कहा, ''मेरे भाई नहीं है। मैं तुम्हें भाई बनाना चाहती हूँ। मैं

तुम्हें राखी बाधूँगी; और तुम मेरी रक्षा करने का वायदा करोगे।'' सवार बड़ा खुश हुआ और राखी बँधवाने के लिए उसने अपना दायाँ हाथ आगे बढ़ा दिया।

2. उप विराम (:) तथा अर्द्ध विराम (;) साधारणत: उद्धरण चिह्न के बाहर रखे जाते हैं, किन्तु यदि वे उद्धरण के ही अंग हैं, तो इन्हें उद्धरण चिह्न के भीतर रखना ही उचित होगा; यथा—
   (क) ''उसे मेरी इस बात पर विश्वास नहीं हुआ कि नमिता मेरी बहन है, और पूछ बैठा, ''मैंने नमिता को कहीं देखा अवश्य है।''
3. जब प्रश्न चिह्न तथा विराम चिह्न उद्धरण के ही अंग हैं, तो उन्हें उद्धरण चिह्नों के भीतर रखना उचित होगा किन्तु जब उनका सम्बन्ध वाक्य के शेष भाग से हो, तो उन्हें उद्धरण चिह्न के बाहर रखा जाएगा; यथा—
   (क) उसने पूछा, ''क्या पृथ्वी गोल है?''
   (ख) ''आप उन तीर्थों में गए हैं, दादा जी!'' रमेश ने पूछा।''नहीं'', दादा जी का उत्तर था।

अभ्यास

(क) स्वस्तिक शब्द स्वस्ति से उपजा है, जो सु उपसर्ग एवं अस् धातु से बना है। सु का अर्थ है सुन्दर अथवा मंगल तथा अस् का अर्थ है-अस्तित्व या उपस्थिति अर्थात् सर्वमंगल की भावना इस प्रतीक में बसी है।

(ख) बापू बोले! क्या है?
मैंने कहा, कोई था!
बोले, कौन था?
मैंने कहा, मालूम नहीं।
बोले, यों ही घबरा जाती हो।
मैंने कहा, कि-कि-
बोले, इसी पर देश सेविका बनोगी?
उपर्युक्त संवाद अभी तक आपने जितने भी विराम चिह्नों का अध्ययन किया है, प्रयोग कीजिए।

(ग) बर्नार्ड शा ने कहा था- अगर कोई सिर्फ अनुभवों के आधार पर विद्वान हो जाता तो लंदन के अजायबघर के पत्थर इतने सालों बाद दुनिया के बड़े-से-बड़े बुद्धिमानों से भी ज्यादा बुद्धिमान हो जाते।

15

रेखांकन (अंडरलाइन)

अवधारणा

लेखन में किसी वाक्य के महत्वपूर्ण शब्द, पद या वाक्यांश को रेखांकित करके दर्शाने का काम इस चिह्न द्वारा किया जाता है।

प्रयोग

1. लेखन करते समय—

''मैंने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण, पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण तक किया है, और मैंने ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं पाया, जो कि चोर है। इस देश में मैंने इस तरह की समृद्धता, शिष्टता और लोगों में इतनी अधिक संभावना देखी है, और मैं नहीं सोच सकता कि हम कभी भी इस देश पर राज कर पाएँगे, जब तक कि इस देश का दर्शन एवं संस्कृतिरूपी रीढ़ की हड्डी को न तोड़ दे; और इसीलिए मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि हम यहाँ के पुरातन शिक्षातंत्र एवं संस्कृति को ही बदल दें। यदि भारतीय यह सोचें कि जो विदेशी और अंग्रेजी हैं, वही अच्छा है, और हमारी संस्कृति से उच्च है। इसी से वे अपना आत्मसम्मान, अपनी पहचान तथा अपनी संस्कृति खो देंगे, और वे वह बन जाएँगे, जो हम उन्हें सच में बनाना चाहते हैं। एक गुलाम देश।''

— ब्रिटिश पार्लियामेंट में लॉर्ड मैकाले द्वारा
दिए गए भाषण के अंश (2 फरवरी 1835)

2. लिखित प्रश्न पूछते समय निर्देश देने के रूप में—

जैसे— रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए—

(क) वीरों को बनाने वाले कारखाने स्थापित नहीं हो सकते। वे तो देवदार के वृक्षों की भाँति अरण्य में स्वयं ही पैदा होते हैं; और बिना किसी सहायता के स्वयं ही तैयार रहते हैं। दुनिया में उनका सारा जीवन भीतर होता है।

(ख) ईश्वर एक है।

(ग) धीर वीर निर्भीकमना धनुर्धर लक्ष्मण पर्णकुटी की रखवाली कर रहा है।

(घ) कहा-सुना माफ कर दो।

(ङ) काम करना ही मनुष्य का सच्चा धर्म है।

अभ्यास

किसी अवतरण को लिखकर उसमें प्रदर्शित मुख्य अंशों को रेखांकित करें तथा उन रेखांकित अंशों का भाव-पल्लवन भी करें।

16

शब्द बलसूचक चिह्न (ऽऽऽ)

अवधारणा

जब किसी शब्द विशेष पर अधिक बल देना, प्रदर्शित करना हो, तब इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। यह चिह्न विशेषकर नाटक अथवा कहानी लेखन में संवाद स्थापित करने हेतु प्रदर्शित किया जाता है।

उदाहरण

(क) राम! तुम और आगे मत बढ़ना ऽऽऽ

(ख) कृष्ण! तुम कहाँ हो ऽऽऽ

(ग) मुझे मत भूलना ऽऽऽ

विशेष

शब्द बलसूचक चिह्न का प्रयोग बहुत कम देखने को मिलता है।

अभ्यास

नाटक अथवा कहानी पढ़ते समय ऐसे चिह्नों का प्रयोग यदि कहीं किया गया हो तो उसे अपनी अभ्यासपुस्तिका में अवश्य लिखें।

17

समापन चिह्न (-०-)

अवधारणा

किसी रचना, लेख, समीक्षा, कथन अथवा ग्रंथ की समाप्ति पर समापन चिह्न (-०-) का प्रयोग किया जाता है।

कम्प्यूटर युग में समापन चिह्न के स्वरूप में भी बदलाव आता जा रहा है। अनेक प्रकार के समापन चिह्न अब प्रचलित हो गए हैं, किन्तु समापन चिह्न का प्रयोग लगभग सभी पुस्तकों में मिलता है। कहीं-कहीं समापन चिह्न नहीं लगाने की रूढ़ि बनती जा रही है।

प्रयोग

(क) □ □

(ख) —×—×—

(ग) ◇ ◇ ◇

(घ) —०—

अभ्यास

आप जो पुस्तकें, लेख, समीक्षा पढ़ें तो उसमें किस प्रकार के समापन चिह्न का प्रयोग किया गया है, उसको सूची-बद्ध करें।

खण्ड-दो

विरामेतर चिह्न

01

संकेतक चिह्न (→)

अवधारणा

इस चिह्न का प्रयोग रूपान्तरण या परिवर्तन अथवा पद या वाक्य का उचित या विकसित रूप दर्शाने के लिए किया जाता है।

प्रयोग

1. सीता के वियोग में राम विलाप करके रोने लगे।
   → सीता के वियोग में राम रोने लगे। (वाक्य का उचित रूप)
2. त्र → त्र (त् + र) का परिवर्तित रूप
3. उसने ले लिया (अपने लिए)। (कर्तवाच्य)
   उसने ले लिया (दूसरे के लिए)। (कर्मवाच्य)

‖02‖

समतासूचक चिह्न (=)

अवधारणा

इस चिह्न का प्रयोग समान मूल्य वाले दो पदों अथवा वाक्यों की तुलना करने के लिए प्रदर्शित किया जाता है। शब्दार्थ स्पष्ट करने अथवा तुल्यता बताने के लिए भी इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इसका सर्वाधिक प्रयोग गणित विषय में होता है, किन्तु संक्षिप्तता के आग्रह से कभी-कभी सामान्य-भाषा में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

प्रयोग

1. समानार्थी बनाने के लिए—
   (क) राम = मोहन (व्यक्तिवाचक, एक वचन, पुंल्लिंग)
   (ख) शब्दार्थ बनाने के लिए—
   - न्यास = धरोहर
   - संस्कृति = सभ्यता
     (संसार में भारत की संस्कृति प्राचीन है)।
2. संरचना की समानता दिखाने के लिए—
   (क) राम घर जाता है = मोहन बाजार जाता है।
   (ख) पिता जी बाजार गए = पंडित जी चले गए।
3. प्रत्यय प्रकार बताने के लिए—
   ता = भाववाचक संज्ञा, व्युत्पादक प्रत्यय।
4. तुलना करने के लिए —
   (क) सौ पैसे = एक रु.
   (ख) 2 + 1 = 3

|| 03 ||

व्युत्पादक चिह्न (>)

अवधारणा

इस चिह्न का प्रयोग शब्दों की उत्पत्ति को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है।

प्रयोग

1. (क) फाल्गुन > फग्गुण्ण > फागुन

(ख) पचता/चलता

मूल धातु के अन्त में- ता प्रत्यय लगाने से उपर्युक्त दोनों शब्दों की व्युत्पत्ति संस्कृत वर्तमान कालिक कृदन्त के अन्त (शतृ प्रत्यान्त) वाले रूपों से मानी गई है—

सं० पचत् > प्रा० पचंतो > हि. पचता

सं० चलन् > प्रा० चलन्ते > हि. चलता

(ग) पूर्वकालिक कृदन्त

यह कृदन्त अविकृत धातु के रूप में रहता है अथवा मूलधातु के अंत में कर, के, करके लगाकर बनता है। इसकी व्युत्पत्ति संस्कृत के पूर्वकालिक कृदन्त (कृत्वा प्रत्यय) से मानी जाती है; यथा—

सं० श्रुत्वा > प्रा० सुणिअ > हि. सुनकर

सं० पठित्वा > प्रा० पठिअ > हि. पढ़कर

(घ) भूत कालिक कृदन्त

यह कृदन्त धातु के अंत में आ (या शून्य प्रत्यय) लगने से बनता है। इसकी व्युत्पत्ति संस्कृत के भूतकालिक कर्मवाचक कृदन्त के त, इन (क्त प्रत्यान्त) वाले रूपों से मानी गई है; यथा—

सं० चलितः > प्रा० चलितो, चलिओ > हिं० चल्यो, चला।

(ङ) मैं की व्युत्पत्ति संस्कृत मया + एन से मानी गई है। जिसका प्राकृत, अपभ्रंश तथा हिन्दी में रूप इस प्रकार बना है—

सं० मया > प्रा० मई, मए > अप, मइँ, मई > हिं० मैं 'हम की उत्पत्ति वैदिक' अस्मे से इस प्रकार हुई है—

संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश हिन्दी

अस्म > अम्ह > हम्म > हम

2. इसी प्रकार संज्ञामूलक आज, कल, परसों, तरसों शब्दों की व्युत्पत्ति भी संस्कृत से आई है। इनका विकास इस प्रकार हुआ है—

(क) सं० अध > प्रा० अज्ज > हिं० आज

(ख) सं० कल्प > प्रा० कल्ल > हिं० काल

(ग) सं० परश्व > प्रा० परस्सो > हिं० परसों

(घ) सं० त्रिः श्वः > प्रा० तरिस्सो > हिं० तरसों

3. गणनात्मक संख्याओं का विकास भी इस प्रकार हुआ है—

(क) एक एकः, एकं, एका > एक्क > एक

(ख) दो द्वौ, द्वै > द्वे > दो

(ग) तीन त्रीणि > तिणि > तीन

(घ) चार चत्वारि > चत्तारि > चतारि > चआरि > चारि > चार

(ङ) पाँच पञ्च > पंच > पाँच

04

कोष्ठक चिह्न ( ) { } [ ]

अवधारणा

लेखन में वाक्य के अन्तर्गत आए किसी पद के अर्थ कथन अथवा संदर्भ को स्पष्ट करना आवश्यक हो तो इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

हिन्दी में प्राय: लघु कोष्ठक ( ) का प्रयोग ही सर्वत्र मिलता है किन्तु भाषा वैज्ञानिक संरचनाओं को स्पष्ट करने के लिए मध्यम सर्पाकार कोष्ठक ᑉᑊऔर दीर्घ अथवा वर्गाकार कोष्ठक [ ] का भी कहीं-कहीं प्रयोग देखने में आता है। इनके प्रयोग से वाक्य की संरचना में किसी भी प्रकार का व्याघात नहीं होता है; जैसे—भाषा वैज्ञानिक संरचना को स्पष्ट करने का एक उदाहरण—

[राम गीता पढ़ता है]

[{रमा} {गीता पढ़ता है}]

[{राम} + {गीता} + {पढ़ता है}]

प्रयोग

लघु कोष्ठक

1. वाक्य के बीच में आए क्रमसूचक अंक या अक्षर लिखने के लिए, इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; यथा—

संधि के मुख्य तीन भेद हैं—

(क) स्वर संधि

(ख) व्यंजन संधि

(ग) विसर्ग संधि

वर्ण के दो भेद हैं—

(क) स्वर

(ख) व्यंजन

2. नाटक अथवा कथा प्रसंग में किसी विशेष व्यक्ति के संदर्भ में पद के अर्थ की ओर संकेत करने के लिए—

(क) धर्मराज (युधिष्ठिर) सत्य और धर्म के संरक्षक थे।

(ख) अनेक भारतवासी बापू (महात्मा गांधी) के अनन्य भक्त हैं।

(ग) सांसारिक व्यक्ति का अंतिम समय बड़े मानसिक अन्तर्द्वन्द्व (संघर्ष) में

बीतता है।

3. नाटकादि में हाव-भाव सूचित करने के लिए—
   (क) पिता पुत्र से - (क्रोधित होकर) झूठ बोलने का मज़ा अभी चखाता हूँ।
   (ख) प्रतिहारी - (नतमस्तक होकर) स्वामी! एक भिक्षु आपसे भेंट करना चाहता है।
4. उद्धरण में लेखक या पुस्तक का नाम —
   (क) ''सिया राममय सब जगजानी।'' (रामचरितमानस)
   (ख) ''अगर कोई आयु से ही विद्वान् हो जाता तो लंदन के अजायबघर के पत्थर इतने सालों बाद दुनिया के बड़े-से-बड़े बुद्धिमानों से भी ज्यादा बुद्धिमान हो जाते।'' (जार्ज बर्नार्ड शा)
5. उदाहरण, संदर्भ या निर्देश के रूप में दी गई सूचना—
   (क) वह एक वर्गाकार (देखिए चित्र 4) खेत है। (संदर्भ)
   (ख) कोष्ठांकित शब्दों के कारक बताइए - (निर्देश)
      1. राम (पेड़ से) गिर गया। -----
      2. मोहन ने (राम को) पुस्तक दी। -----
      3. चोर चलती (गाड़ी से) कूद गया। -----
      4. मनुष्य (धन के लिए) भटकता रहता है।-----
      5. सेवा (मनुष्य का) धर्म है। -----
6. जब किसी विस्तृत शब्द का छोटा रूप अथवा छोटे रूप के विस्तार के लिए विस्तृत रूप दोनों एक साथ दिए जाते हैं, तो एक रूप को कोष्ठक में रख देते हैं; यथा—
   (क) व्याकरण जाननेवाला (वैयाकरण)
   (ख) जिसमें संदेह हो (संदिग्ध)
7. किसी पठन, भाषण, वाद-विवाद या गवाही आदि के साथ यदि कोई टिप्पणी देना हो, तो गोल कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है। यथा—
   (क) गांधी- ''करो या मरो''... (तालियाँ)- (भाषण)
   (ख) न्यायाधीश (गंभीर मुद्रा में) - क्या तुमने चोरी की है?
   आरोपी (शांतिपूर्वक) - नहीं, बिल्कुल गलत।
8. क्रमबोध हेतु क्रमसूचक अंक लिखने के लिए—
   (क) विश्व के प्रमुख राष्ट्र हैं—
      1. अमेरिका
      2. रूस
      3. चीन
      4. ब्रिटेन
      5. भारत आदि।
9. शब्दों या अंकों में लिखी संख्या को स्पष्ट करने के लिए—

(क) पाँच हजार रु. (रु. 5,000/-)

(ख) रु. 10,000/- (दस हजार रु.)

10. किसी उद्धृत सामग्री में कोई लेखक यदि कोई बात जोड़ना चाहे—

(क) कालिदास (संस्कृत के महाकवि) की तुलना विश्व के किसी भी श्रेष्ठ कवि से की जा सकती है।

मध्यम कोष्ठक (कोणीय ‹› तथा सर्पाकार कोष्ठक { })

इन कोष्ठकों का प्रयोग भाषा की अपेक्षा गणित में अधिक किया जाता है किन्तु भाषा में शब्दकोश में किसी शब्द को समझाने के लिए तथा किसी शब्द की व्युत्पत्ति समझाने के लिए इसका उपयोग अवश्य किया जाता है। व्युत्पादक चिह्न (›) में इसका उदाहरण दिया जा चुका है।

दीर्घ (वर्गाकार) कोष्ठक

1. यदि गोल कोष्ठकों में रखी गई सामग्री के किसी संदर्भ को कोष्ठकों में रखने की आवश्यकता पड़े तो वर्गाकार कोष्ठकों का प्रयोग किया जाता है; यथा—

(क) तुलना कीजिए, कर्मभूमि (प्रेमचंद) [प्रकाशक : सरस्वती प्रेस, वाराणसी, दूसरा संस्करण]

2. यदि किसी उद्धरण या वाक्य आदि में कोई त्रुटि ठीक करना हो तो गोल कोष्ठक के स्थान पर वर्गाकार कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है; यथा—

(क) मैंने [मुझे] पढ़ना है।

(ख) दही जम गई [गया]

विशेष

भाषा की संरचना में गोल कोष्ठक का प्रयोग ही अधिक होता है। मध्य तथा दीर्घ कोष्ठक का प्रयोग आवश्यकतानुसार ही किया जाना उचित होगा।

05

हंस-पद/त्रुटिपूरक चिह्न (∧)

अवधारणा

लेखन में यदि कोई पद या वाक्यांश छूट जाए, तो छूटे हुए स्थल में त्रुटि पूरक चिह्न (∧) लगाकर छुटा हुआ अंश लिख देते हैं। कुछ लेखक छुटे हुए स्थान पर त्रुटिपूर्ण चिह्न लगाकर उसके ऊपर भी छूटा हुआ अंश लिख देते हैं। हंस जब चलता है तो भूमि पर ऐसे ही चिह्न बन जाते हैं। इसी आधार पर इसका यह नाम पड़ा है।

प्रयोग

1. आप बड़े साहसी ∧ हैं। ∧ और उत्साही
2. सत्संगति ∧ मंगल मूला। ∧ मुद
3. उसने मेरी बात ∧ कर दी। ∧ अनसुनी
4. इसके बाद मैं ∧ चला गया। ∧ विद्यालय
5. माता जी ∧ कहा –''सदा प्रसन्न रहो।'' ∧ ने

अभ्यास

कोष्ठक में नीचे दिए गए उचित शब्दों से हंस-पद की पूर्ति कीजिए—

यह कैसी विडम्बना है कि सरस्वती के देश में अज्ञानता ∧ दुर्गा के देश में अत्याचार ∧ विघटन लीला, बुद्ध और महावीर के देश में ∧ श्रीराम के देश में कुशासन और श्रीकृष्ण के देश में ∧ के सिद्धान्तों का उपहास हम देख रहे हैं। ऐसा क्यों? और कब तक होता रहेगा ऐसा? कभी सोचा आपने।

(अराजकता, निरक्षरता, कर्मयोग, हिंसा)

06

प्रतिहंस-पद चिह्न (∨)

अवधारणा

लेखन में यदि कोई पद या वाक्यांश भूलवश छूट जाता है तो छूटे हुए अंश को पंक्ति के नीचे लिख दिया जाता है तथा त्रुटि वाले स्थान पर प्रतिहंसपद चिह्न (∨) लगा दिया जाता है। यह हंसपद (∧) का विपरीत चिह्न है जो अंग्रेजी के V वर्ण के आकार का होता है।

प्रयोग

1. राम, मोहन, सुरेश ∨ श्याम घर चले गए।
   और
2. महंगाई के ∨ लोग परेशान हैं।
   कारण
3. उसी वर्ष मेरा बद्रीनाथ ∨ का कार्यक्रम बना।
   यात्रा
4. वे ∨ में धर्म की उन्नति चाहते थे।
   भारत

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थान की पूर्ति नीचे दिए गए उचित शब्दों से प्रति हंस-पद चिह्न लगाकर करें—

(क) चपरासी ने घंटी ------- दी।

(ख) --------- से पानी गिर रहा है।

(ग) वह ----------- रुक गई।

(बादल, आते-जाते, बजा)

07

पाद-टिप्पणी (*)

अवधारणा

लेखन में पृष्ठ के नीचे अथवा हाशिए में कोई संदर्भ का उल्लेख करना आवश्यक हो तो पाद-टिप्पणी (*) का प्रयोग आवश्यक होता है।

लेखन की स्पष्टता के लिए इस प्रकार के चिह्न लगाने की उपयोगिता वाचन की गहनता को स्पष्ट करता है, तथा कहीं विषयवस्तु के स्पष्टीकरण के लिए भी इस चिह्न की आवश्यकता रहती है।

प्रयोग

1. छायावादी काव्य रचना में बृहदत्रयी* का विशेष योगदान है।
2. भाषा में विदेशी शब्दों के स्थान पर पारिभाषिक शब्दों** का आरोपण भाषा को जटिल बना देता है।

* बृहदत्रयी में प्रसाद, निराला और पंत ये तीन बड़े कवि आते हैं।

** माचिस, रेल, लालटेन, वल्व, टिकिट, पैन, पेंसिल आदि शब्द यथावत प्रयुक्त होते हैं। इनके स्थान पर अन्य भाषिक शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता है। संस्कृत-कोश की सहायता से इनके स्थान पर नए-नए शब्द गढ़ना बलात् आरोपण होगा।

08

प्रसंग परिवर्तन चिह्न (×××)

अवधारणा

कहानी, उपन्यास अथवा कविता आदि में विस्तारपूर्वक उल्लेख करने के स्थान पर प्रसंग परिवर्तन करना यदि आवश्यक हो तो इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इससे विषयवस्तु का अनावश्यक विस्तार नहीं हो पाता।

प्रयोग

1. किसी कवि या लेखक की रचना का उदाहरण देते समय यदि बीच के अंश का उल्लेख करना आवश्यक नहीं लगता हो तो भी इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

   मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।

   × × ×

   दासी मीरा लाल गिरधर, तारो अब मोई।

   (उपर्युक्त पद मीरा द्वारा रचित है। इतना उल्लेख करना ही अभीष्ट है।)

09

पुनरुक्तिसूचक चिह्न (-''-)

अवधारणा

लेखन में कभी-कभी ऐसा अवसर भी आता है, जब पूर्व लिखित शब्द या पद को उसी शब्द या पद के नीचे पुनः लिखना पड़ता है, तो पुनरुक्तिसूचक चिह्न (-''-) का प्रयोग किया जाता है। इस चिह्न के प्रयोग करने से पुनर्लेखन नहीं करना पड़ता है, जिससे पुनरुक्ति दोष से बचा जा सकता है।

प्रयोग

1.	श्री मनोहर लाल दुबे	शिक्षक
2.	श्री राम भरोसे लाल	- '' -

अभ्यास

कार्यालयों में सूची बनाते समय जो जानकारी बार-बार लिखनी पड़ती है, उसका कोई एक प्रारूप तैयार कीजिए।

10

विकल्प चिह्न (/)

अवधारणा

दो या दो से अधिक में विकल्प प्रदर्शित करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

प्रयोग

1. शब्दों में—
   (क) गणित/प्राणिशास्त्र
   (ख) श्री/कु./श्रीमती
   (ग) समस्त प्राचार्य/प्राचार्या
   (घ) प्रार्थना पत्र/आवेदन-पत्र
2. वाक्यों में —
   (क) सचिव, शिक्षा मंत्रालय/मानव संसाधन विकास मंत्रालय की ओर सूचनार्थ।

खण्ड-तीन

परिशिष्ट

‖01‖

परीक्षोपयोगी विराम चिह्न (हल सहित)

यहाँ विराम चिह्न सम्बन्धी कुछ प्रश्न हल सहित दिए जा रहे हैं, जिन्हें कई माध्यमिक शिक्षा बोर्डों एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में पिछले दस वर्षों से पूछा जा रहा है। इनके अध्ययन द्वारा आप अपने ज्ञान का परीक्षण कर सकते हैं तथा हल सहित अध्ययन कर मूल अवधारणा तथा सिद्धान्तों को भली प्रकार सीख सकते हैं। यदि किसी प्रश्न का उत्तर ठीक से समझ में न आए तो उस प्रकरण को पुन: पुस्तक की सहायता से स्पष्ट कर सकते हैं, ताकि किसी प्रकार का भ्रम न रहे।

निम्नलिखित में समुचित विराम-चिह्न लगाइए—

प्रश्न

1. बीस-बाईस साल पहले मेरा एक लेख जनता में प्रकाशित हुआ जिससे चारों ओर मेरी धूम मच गई
2. हे वीरपुत्रो मृत्युभय मिथ्या है कर्तव्य में प्रमाद पाप है दुविधा अभिशाप है
3. रानी के मुँह से निकला मुंदर मुंदर हमारी प्यारी झाँसी की यह दुर्गति
4. दुलारी ने कहा वाह बाबू साहब आप ही के लिए तो मैं यहाँ बैठी हूँ सुनिए न
5. उसने दुलारी से कहा हम ठेका लगा रहे हैं तुम गाओ तब तक बल्लू पानी पीकर आता है
6. उसने कहा क्यों बाबू साहब आज रानी पन्ना का नाम सुनकर आपकी आँखों में आँसू क्यों आ गए बताइए न
7. बच्चा कह उठा कितनी बड़ी चीज कितनी रंग-बिरंगी चीज
8. श्याम ने कहा सुनो तुम ही बताओ क्या दूसरे का पैसा डकार जाना ईमानदारी है
9. मोहन ने बताया क्या कहूँ एक मोटा सा आदमी उसकी बीवी और कुत्ता मेरे पीछे चल दिए
10. मैंनें फिर हँसकर दृढ़तापूर्वक जबाव दिया आज़ादी की पहली सुबह आओ इसका स्वागत करें
11. सभी एक साथ चिल्ला उठे हम भी गाएँगे हम भी गाएँगे आओ शुरू करें
12. उन्होंने कहा अरे तुम्हारा मस्तिष्क तो विचित्र विचित्र बातें सोचने लगा है

13. वे अक्सर मुझे चिढ़ाने के लिए कहा करते क्यों आपके प्राणों में घुले हुए रंग धरती पर फैल गए क्या
14. नन्हकू ने पूछा यह किसकी बारात है जाओ पता लगाओ
15. तुम्हारा क्या ख्याल है जैसा आप फरमाएँ छोटे अफसर ने नम्रता से कहा
16. पिता ने कहा बेटे सुबह जल्दी उठा करो और नहा धोकर पढ़ा करो
17. नेता जी ने कहा था तुम मुझे खून दो और मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा
18. तिलक ने कहा स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
19. नन्हकू सिंह ने कहा क्यों उस दिन के झापड़ ने तुझको समझाया नहीं
20. अहा पिता जी मिठाई लाए हैं क्या तुम भी खाना चाहते हो
21. जीवन धर्म क्या है सोचता हूँ तो एक ही उत्तर मिलता है उद्यमशील रहना जीवन है
22. सिपाही ने आँखों में आँसू भरकर कहा प्यारे देश मेरा प्रणाम ले तू मेरा अन्नदाता है मैं रहूँ न रहूँ तू सर्वदा रहेगा
23. श्याम बाबू ने लड़कों को देखा फिर कहा क्यों राम क्या नकल हो रही थी कुछ नहीं राम ने कहा
24. वाह आपको अंदर किसने आने दिया मैंने चिल्लाकर कहा
25. ओह आप मेरी इतनी बड़ी बड़ी समस्याओं को भी क्यों नहीं समझते
26. महाराणा ने पूछा भीलराज आप क्या चाहते हैं
27. कहाँ गए वे क्या नगर से बाहर निकल गए मान्धाता चिल्लाए
28. महाराज ने कहा इन भोले भाले बच्चों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है
29. ओह आपने यह क्या कर डाला मैंने नाराज होते हुए पूछा
30. प्रशांत ने कहा ज्योति परिश्रम से क्यों घबराती हो
31. युद्धवीर ने दहाड़ते हुए कहा सैनिक तुम उधर क्या कर रहे हो
32. पुष्पा ने समझाते हुए कहा जूही तुम्हें ऐसी बातें नहीं सोचनी चाहिए
33. चौधरी ने कहा जड़ों में खाद पानी दो
34. नेता जी गरजे तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा
35. शीला ने बताया मेले में दूर दूर से लोग आए थे
36. प्रवक्ता ने कहा भारत पाक वार्ता का कोई परिणाम नहीं निकला
37. मैनेजर ने कहा तुम्हें घर घर जाकर सूचनाएँ इकट्ठी करनी होंगी
38. प्रधानमंत्री ने कहा भारत पाक वार्ता में मुशर्रफ का रूप अड़ियल था
39. सावित्री बोली मैं रात दिन सत्यवान के साथ रहूँगी
40. पार्वती ने पूछा आप रात दिन किसका नाम लेते हैं
41. मुखिया बोला साहब ऐसी भयानक बाढ़ कभी नहीं देखी
42. छि इतनी गंदगी में आप कैसे रह लेते हैं गंदगी तो बीमारी का घर है विश्वास बोला
43. अकबर ने उत्साह से कहा अल्लाह हो अकबर ईश्वर महान् है

44. आदमी पर अविश्वास भगवान् में विश्वास किन्तु जब आदमी पर विश्वास नहीं तो भगवान् पर कैसे विश्वास हो
45. गुरु जी बोले हे बालको कर्तव्य का पालन करना ही सच्चा धर्म है
46. रमेश ने सोहन को पुकारा सोहन ओ सोहन पर सोहन ने कोई ध्यान नहीं दिया वह सोचता सोचता राम श्याम और मोहन के खेतों के पार निकल गया
47. जो व्यक्ति बुद्धिमानी की बात नहीं करते सहानुभूति के गुणों से रहित हैं हमें कर्तव्य का बोध भी नहीं कराते ऐसे मित्रों का न होना ही भला है
48. हैं हमारी सेना हार गई राजा ने आश्चर्य से कहा यह सच है मंत्री ने विनीतभाव से उत्तर दिया
49. ऐसे व्यक्ति समाज में बहुत मिल जाएँगे जो शराब गाँजा अफीम चरस आदि के बिना नहीं रह सकते
50. महात्मा गांधी ने गाय करुणा की कविता है क्यों कहा यह उसकी आँखें देखकर ही समझ में आ सकता है
51. पर्यटक ने पूछा क्या इस वन में हाथी बाघ आदि रहते हैं
52. हे कवि आप कहाँ रहते हैं
53. सुनो सुबह जल्दी उठा करो
54. पिता जी जो मेहनत करता है वही सफल होता है मैंने पूछा
55. नरेश ने झल्लाकर कहा ओह यह क्या किया आपने पूछना तो चाहिए था
56. नेता जी ने कहा भाइयो मैं किस की बात सुनूँ मेरी कोई नहीं सुनता
57. पिता ने कहा बेटी तुम क्या चाहती हो बताओ तो सही

उत्तर

1. बीस-बाईस साल पहले मेरा एक लेख 'जनता' में प्रकाशित हुआ, जिससे चारों ओर मेरी धूम मच गई।
2. हे वीरपुत्रो! मृत्युभय मिथ्या है, कर्तव्य में प्रमाद पाप है दुविधा अभिशाप है।
3. रानी के मुँह से निकला, 'मुंदर! मुंदर! हमारी प्यारी झाँसी की यह यह दुर्गति।'
4. दुलारी ने कहा, ''वाह बाबू साहब! आप ही के लिए तो मैं यहाँ बैठी हूँ। सुनिए न।''
5. उसने दुलारी से कहा, ''हम ठेका लगा रहे हैं तुम गाओ तब तक बल्लू पानी पीकर आता है।''
6. उसने कहा, ''क्यों बाबू साहब, आज रानी पन्ना का नाम सुनकर आपकी आँखों में आँसू क्यों आ गए? बताइए न।''
7. बच्चा कह उठा, ''कितनी बड़ी चीज! कितनी रंग-बिरंगी चीज।''
8. श्याम ने कहा, ''सुनो तुम ही बताओ क्या दूसरे का पैसा डकार जाना ईमानदारी है?''
9. मोहन ने बताया-क्या कहूँ? एक मोटा सा आदमी उसकी बीवी और कुत्ता मेरे पीछे चल दिए।

10. मैंनें फिर हँसकर दृढ़तापूर्वक जबाव दिया, ''आज़ादी की पहली सुबह आओ इसका स्वागत करें।''
11. सभी एक साथ चिल्ला उठे— ''हम भी गाएँगे, हम भी गाएँगे, आओ शुरू करें।''
12. उन्होंने कहा, ''अरे! तुम्हारा मस्तिष्क तो विचित्र विचित्र बातें सोचने लगा है।''
13. वे अक्सर मुझे चिढ़ाने के लिए कहा करते, ''क्यों, आपके प्राणों में घुले हुए रंग धरती पर फैल गए क्या?''
14. नन्हकू ने पूछा, ''यह किसकी बारात है? जाओ पता लगाओ।''
15. ''तुम्हारा क्या ख्याल है?''
    ''जैसा आप फरमाएँ'' छोटे अफसर ने नम्रता से कहा।
16. पिता ने कहा, ''बेटे! सुबह जल्दी उठा करो और नहा धोकर पढ़ा करो।''
17. नेता जी ने कहा था, ''तुम मुझे खून दो और मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।''
18. तिलक ने कहा, ''स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।''
19. नन्हकू सिंह ने कहा, ''क्यों उस दिन के झापड़ ने तुझको समझाया नहीं?''
20. अहा! पिता जी मिठाई लाए हैं, क्या तुम भी खाना चाहते हो?
21. जीवन-धर्म क्या है? सोचता हूँ, तो एक ही उत्तर मिलता है— उद्यमशील रहना जीवन है।
22. सिपाही ने आँखों में आँसू भरकर कहा, ''प्यारे देश मेरा प्रणाम ले। तू मेरा अन्नदाता है। मैं रहूँ, न रहूँ, तू सर्वदा रहेगा।''
23. श्याम बाबू ने लड़कों को देखा, फिर कहा, ''क्यों राम! क्या नकल हो रही थी?''
    ''कुछ नहीं'', राम ने कहा।
24. ''वाह! आपको अंदर किसने आने दिया?'' मैंने चिल्लाकर कहा।
25. ''ओह! आप मेरी इतनी बड़ी-बड़ी समस्याओं को भी क्यों नहीं समझते?''।
26. महाराणा ने पूछा, ''भीलराज! आप क्या चाहते हैं?''
27. ''कहाँ गए वे? क्या नगर से बाहर निकल गए?'' मान्धाता चिल्लाए।
28. महाराज ने कहा, ''इन भोले-भाले बच्चों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?''
29. ''ओह! आपने यह क्या कर डाला?'' मैंने नाराज होते हुए पूछा।
30. प्रशांत ने कहा, ''ज्योति! परिश्रम से क्यों घबराती हो?''
31. युद्धवीर ने दहाड़ते हुए कहा, ''सैनिक, तुम उधर क्या कर रहे हो?''
32. पुष्पा ने समझाते हुए कहा, ''जूही! तुम्हें ऐसी बातें नहीं सोचनी चाहिए?''
33. चौधरी ने कहा, ''जड़ों में खाद पानी दो।''
34. नेता जी गरजे, ''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।''
35. शीला ने बताया, ''मेले में दूर-दूर से लोग आए थे?''
36. प्रवक्ता ने कहा, ''भारत-पाक वार्ता का कोई परिणाम नहीं निकला।''
37. मैनेजर ने कहा, ''तुम्हें घर-घर जाकर सूचनाएँ इकट्ठी करनी होंगी।''

38. प्रधानमंत्री ने कहा, ''भारत-पाक वार्ता में मुशर्रफ का रूप अड़ियल था।''
39. सावित्री बोली, ''मैं रात-दिन सत्यवान के साथ रहूँगी।''
40. पार्वती ने पूछा, ''आप रात-दिन किसका नाम लेते हैं?''
41. मुखिया बोला, ''साहब! ऐसी भयानक बाढ़ कभी नहीं देखी।''
42. ''छि:! इतनी गंदगी में आप कैसे रह लेते हैं? गंदगी तो बीमारी का घर है,'' विश्वास बोला।
43. अकबर ने उत्साह से कहा, ''अल्लाह हो अकबर! (ईश्वर महान् है)।''
44. आदमी पर अविश्वास, भगवान में विश्वास, किन्तु जब आदमी पर विश्वास नहीं तो भगवान पर कैसे विश्वास हो?
45. गुरु जी बोले, ''हे बालको, कर्तव्य का पालन करना ही सच्चा धर्म है।''
46. रमेश ने सोहन को पुकारा, ''सोहन! ओ सोहन!'' पर सोहन ने कोई ध्यान नहीं दिया, वह सोचता-सोचता राम, श्याम और मोहन के खेतों के पार निकल गया।
47. जो व्यक्ति बुद्धिमानी की बात नहीं करते; सहानुभूति के गुणों से रहित हैं; हमें कर्तव्य का बोध भी नहीं कराते, ऐसे मित्रों का न होना ही भला है।''
48. ''हैं! हमारी सेना हार गई'', राजा ने आश्चर्य से कहा। ''यह सच है,'' मंत्री ने विनीतभाव से उत्तर दिया।
49. ऐसे व्यक्ति समाज में बहुत मिल जाएँगे जो शराब, गाँजा, अफीम, चरस आदि के बिना नहीं रह सकते।
50. महात्मा गांधी ने ''गाय करुणा की कविता है'' क्यों कहा? यह उसकी आँखें देखकर ही समझ में आ सकता है।
51. पर्यटक ने पूछा, ''क्या इस वन में हाथी, बाघ आदि रहते हैं?''
52. हे कवि! आप कहाँ रहते हैं?
53. सुनो! सुबह जल्दी उठा करो।
54. ''पिता जी, जो मेहनत करता है वही सफल होता है।'' मैंने पूछा।
55. नरेश ने झल्लाकर कहा, ''ओह! यह क्या किया आपने, पूछना तो चाहिए था।''
56. नेता जी ने कहा, ''भाइयो! मैं किस की बात सुनूँ मेरी कोई नहीं सुनता।''
57. पिता ने कहा, ''बेटी तुम क्या चाहती हो? बताओ तो सही।''

||02||

स्व-मूल्यांकन

1. अंतर बताइए—
   (क) अल्प विराम— अर्द्ध विराम।
   (ख) एकल उद्धरण— युगल उद्धरण।
   (ग) योजक चिह्न— निर्देशक चिह्न।
   (घ) लघु कोष्ठक-दीर्घ कोष्ठक।
   (ङ) हंस पद— प्रतिहंस पद।
2. अर्थ बताते हुए अंतर स्पष्ट करिए—
   1. (क) आप? (ख) आप।
   2. (क) अच्छा। (ख) अच्छा!
   3. (क) कौन महेश? (ख) कौन? महेश!
   4. (क) रोको, मत जाने दो (ख) रोको मत, जाने दो।
3. निम्न वाक्यों में उपयुक्त विराम चिह्न लगाइए—
   1. दिशाएँ चार होती हैं पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण
   2. यह मेरे बेटे का स्मृति चिह्न है लाओ मुझे दे दो यही मेरे जीवन का सहारा रहेगा
   3. राजा के सामने सिर झुकाकर दोनों स्त्रियों ने कहा महाराज की जय हो राजन हमारा न्याय कीजिए
   4. बचपन के क्या दिन थे पर्व और त्योहार पर नए नए कपड़े पहनता था और अच्छी अच्छी चीजें खाता था
   5. हम साथ साथ खेले कूदे और बढ़े
   6. क्या आप अपना घर गंदा रखते हैं
   7. मोहन ने पूछा यह क्या हो गया रमेश
   8. रामू जोर से चिल्लाया बचो
4. विराम चिह्नों को उनके संकेत चिह्नों से मिलाइए—

	'क'	**'ख'**
(क)	अल्प विराम	(०)
(ख)	प्रश्नसूचक विराम	(!)

(ग) लाघव चिह्न (,)

(घ) निर्देशक चिह्न (—)

(ङ) विस्मयसूचक चिह्न (?)

5. उपयुक्त विराम चिह्न लगाकर निम्नांकित अनुच्छेद को सुपाठ्य बनाइए—

(क) राम ने कहा हे लक्ष्मण संसार में प्राण सबसे अधिक प्रिय होते हैं किन्तु सीता मुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय है फिर भी लोक कल्याण के लिए धर्मपालन मर्यादा के रक्षण और वचन के पालन के लिए मैं उसका भी त्याग कर सकता हूँ तुम्हें आश्चर्य क्यों हो रहा है

(ख) अर्जुन कृष्ण से पूछता है हे भगवान मनुष्य पाप का आचरण नहीं करना चाहता वह पाप से दूर रहना चाहता है फिर भी वह उस पाप से ऐसे लग जाता है जैसे कोई उसको जबरदस्ती उस कार्य में लगा रहा हो इससे ऐसा प्रतीत होता है कि पाप में लगाने वाला कोई प्रबल कारण है वह प्रबल कारण कौन सा है पाप की प्रेरणा देनेवाला कौन है

6. कोष्ठक में दिए गए विकल्पों की सहायता से नीचे दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—

(क) किसी व्यक्ति के उपनाम या पुस्तक के नाम को ... द्वारा लिखा जाता है।

(अल्प विराम/उद्धरण चिह्न/योजक चिह्न)

(ख) जिन प्रश्नों के उत्तर की अपेक्षा न हो उनके साथ — का प्रयोग किया जाता है।

(प्रश्न सूचक/विस्मयादिबोधक/विकल्प चिह्न)

(ग) एक ही शब्द या वाक्यांश की पुनरावृत्ति के लिए... का प्रयोग करते हैं।

(पुनरुक्ति चिह्न/अल्प विराम/अर्द्ध विराम)

(घ) किसी विषय या भाव को स्पष्ट करने के लिए - प्रयोग करते हैं।

(व्याख्या चिह्न/निर्देशक चिह्न/उद्धरण चिह्न)

(ङ) किसी वाक्य में शब्द विशेष पर अधिक बल देना प्रदर्शित करने के लिए-- प्रयोग करते हैं।

(आवेशी चिह्न/शब्द-बल सूचक/निर्देशक चिह्न)

7. प्रश्न अभ्यास—

(क) विराम चिह्न किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ख) पूर्ण विराम का प्रयोग कहाँ-कहाँ होता है?

(ग) आजकल पूर्ण विराम दो तरह से (।/.) लगाए जाने लगे हैं, आपकी दृष्टि में दोनों में से कौन-सा चिह्न हिन्दी के लिए उपयुक्त रहेगा।

(घ) अल्प विराम चिह्न का प्रयोग किन स्थितियों में किया जाता है? कोई पाँच स्थितियाँ उदाहरण सहित बताइए।

8. लाघव चिह्न का उपयोग करते हुए सामने दिए गए स्थान में शब्दों के संक्षिप्त रूप लिखिए—

	'अ'		**'आ'**
(क)	भारतीय जनता पार्टी	–	भा. ज. पा.
(ख)	बालकृष्ण मेहता	–	-------
(ग)	आल इंडिया रेडिया	–	-------
(घ)	प्रोफेसर रामचरण माथुर	–	-------
(ङ)	पंडित जवाहरलाल नेहरू	–	-------

9. निम्नलिखित कविता में विराम चिह्नों के नाम लिखिए—

→ △ ←
* हाय! *
← △ ←
नहीं चैन,
जागते ही कट गई रैन।
→   ←
। प्रेम यानी इश्क यानी लव।
'' ।''
'' ।।''
△ + △

। अरमानों के गाल पर चाँटा,
झर बेरी का काँटा।
← ? →
मोहब्बत में घाटा।

10. निम्नलिखित विराम चिह्नों के नाम लिखिए—

1. – ---------------
2. ० ---------------
3. '' '' ---------------
4. ? ---------------

5. , ---------------

6. ( ) ---------------

7. ; ---------------

8. ! ---------------

9. — ---------------

10. , ---------------

11. इन वाक्यों में लगे विराम चिह्नों को शुद्ध कीजिए—

1. तुम कहाँ से आ रहे हो।
2. कितना सुन्दर दृश्य है?
3. सोहन, मोहन और राम खेल रहे हैं?
4. गोस्वामी तुलसी दास ने 'रामचरित मानस' की रचना की?
5. सौदामिनी ने पुकारा- 'मैया जल्दी आओ'!
6. आप हमारे घर कब आएँगे।
7. पिता जी बोले- क्या यह खेलने का समय है?
8. उसके भैया घर पर नहीं हैं?
9. तुम अपना काम करो...
10. राधिका ने रोटी, दाल, चटनी खाई।

‖03‖

पारिभाषिक शब्दावली (हिन्दी-अंग्रेजी)

2.	पूर्ण विराम (।)	Full stop
3.	अर्द्ध विराम (;)	Semi colon
4.	अल्प विराम (,)	Comma
5.	उप विराम/अपूर्ण विराम (:)	Colon
6.	ऊर्ध्व विराम (')	Apostrophe
7.	प्रश्नवाचक चिह्न (?)	Question mark
8.	विस्मयादिबोधक चिह्न (!)	Exclamation mark
9.	निर्देशक चिह्न/रेखिका (—)	Dash
10.	योजक चिह्न/सामासिक चिह्न (-)	Hyphen
11.	व्याख्या चिह्न/विवरण चिह्न (:-)	Colon + dash
12.	लाघव चिह्न/बिन्दु (./०)	
13.	आवेशी चिह्न/पदलोप चिह्न (...)	Dots
14.	उद्धरण चिह्न (' '/ " ")/अवतरण चिह्न	Quotation marks
15.	रेखांकन	Underline
16.	शब्द-बल सूचक चिह्न (ऽऽऽ)	-
17.	समापन चिह्न (-०-)	-

विरामेतर चिह्न —

1.	संकेतक चिह्न (→)	-
2.	समतासूचक चिह्न/तुलना सूचक (=)	-
3.	व्युत्पादक चिह्न (>)	-
4.	कोष्ठक चिह्न ([ ])	Brackets
5.	हंसपद चिह्न (∧)/त्रुटिपूरक	Sign of left word
6.	प्रतिहंस पद चिह्न (∨)	-
7.	पाद टिप्पणी (*)	Footnotes
8.	प्रसंग परिवर्तन चिह्न (×××)	-
9.	पुनरुक्तिसूचक चिह्न (-''-)	-
10.	विकल्प चिह्न (/)	Slash

प्रूफ संशोधन चिह्न

समस्त मुद्रण व्यवसाय में मूल प्रति (पांडु लिपि) से मिलान करना व उसकी मूलों को चिह्नित करते हुए कुछ निश्चित चिह्न होते हैं। ये चिह्न सभी भाषाओं में समान रूप से प्रयुक्त होते हैं। अतः प्रूफ संशोधन चिह्नों की एक सूची यहाँ दी जा रही है, जो सबके लिए उपयोगी है। सुविधा के लिए उनकी हिन्दी तथा अंग्रेजी व्याख्या भी दी जा रही है।

चिह्न	**हिन्दी व्याख्या**	**अंग्रेजी व्याख्या**
	उपविराम/विसर्ग चिह्न	colon
	अल्प विराम	comma
	विस्मयादिबोधक चिह्न	exclamation mark
	हाइफन/समास चिह्न	hyphen
	हंसपद/हंसपद चिह्न	insert at point indicated by carot
	एक एम रेखक/डैश	one em dash/insert one em rule
	एक एन रेखक/डैश	en or one en dash
	लघुकोष्ठक	parenthesis
	पूर्ण विराम	period
	अंग्रेजी विराम चिह्न	period symbol
	प्रश्नवाचक चिह्न	question mark
	उद्धरण चिह्न संकेत	quotation mark/insert double quotation mark
	अर्ध-विराम	semi-colon out or see copy
	शब्द रेखांकित करें	underline word or words
	बिंदु पंक्ति	a dot leader
	बीच का स्थान बढ़ा दें	a rule between lines/increase space between line or paragraphs
	कोष्ठक बधनी	bracket (insert a quare bracket)
	दाये करें, बाये करें	bring word or character to left or right
	मोटे टाइप में	change to bigger type
	छोटे टाइप में	change to smaller type
	मिलाये और मध्य स्थान बढ़ायें	close up and space
	मिलायें	close up/delete space between letters
	सीध में करें	correct vertical alignment
	हटायें	delete
	नि./निकालो और इकट्ठा करो	delete and close up

हटायें और जगह छोड़ें	delete and leave space
यथावत्	disregard all marks above dots in text/ let it stand as it is.
अंतर सम कर	equalize space
हाशिए से एक एम	indent one em
हाशिए से दो एम	indent two ems
निचला अंक या उपरला अक	inferior figure or substitute
अधोवर्ती या शिरोवर्ती	superior figure
रेखा डालें	insert a line
इकहरा उद्धरण चिह्न	insert single quotation mark
दो एम रेखक दें	insert two em rule
जारी रखें	join as indicated by in text
जगह घटायें	lessen space/reduce space between words
नीचे करें	lower down to show it separate from existing matter.
पंक्तियाँ नीचे लाएँ	lower lines
जोड़ें/बढ़ा दें	marginal addition
दायीं ओर लाएँ	move left to point indicated/bring type flush to left
ठीक सीध में करें	move portion of matter so that it comes within the position indicated
बायी ओर लायें	move right to point indicated/bring type to right.
वृहदाक्षरों में/रोमन बड़े अक्षरों में	reste triple-underscored matter in capitals.
तिरछा टाइप	reset underscored matter in italic type.
तिरछी रेखा डालें	shilling stroke/insert slant stroke
पैरा नहीं/जारी	run on or no should not be a new paragraph
अंतर	space insert space
मध्य स्थान बढ़ायें और मिलायें	space and close up

पूरी वर्तनी दें	spell out in full encircle a word
नया पैरा (न.पै.)	start new paragraph at point indicated by carot.
सीध करें/सै.रेखा	straighten, out of alignment
निचला अंक लगायें	substitute inferior figure
उपरला अंक लगायें	substitute superior figure
उपरला अंक	superior figure or insert inferior figure
आरंभ का अक्षर पिछली पंक्ति में डालें	take letter or word from beginning of a line to the end of the preceding line.
अंतिमाक्षर नई पंक्ति	take letter or word from end of one line to the beginning of the following line.
पक्षांतर/स्थानांतर	transpose letters or words as indicated by in text.
उलट दें	turn encircled inverted letter.
टूटा टाइप	wrong font/font encircled broken letter must be replaced
गलत टाइप	wrong fount

04

अभ्यास उत्तरमाला

खण्ड-एक

अध्याय-2 (पृष्ठ-19)

एक दिन कोई ठग सोने का हार बेचने के लिए घर से निकला। रास्ते में उसे दूसरा ठग मिल गया। वह भी ठग ही था। वह घी बेचने के लिए घर से निकला था। दोनों एक दूसरे से अपरिचित थे। सोने के हार वाले ठग ने हार के बदले घी ले लिया और खुश-खुशी घर गया। घर पहुँचने पर उसने घी का कुप्पा खोला। उसने देखा कुप्पे में केवल ऊपर-ऊपर घी था और नीचे गोबर भरा था। कुप्पेवाले ठग ने हार की जाँच सुनार से कराई। हार नकली था। दोनों ठगे से रह गए।

अध्याय-3 (पृष्ठ-22)

(क) ''यदि कोई आदरणीय व्यक्ति भी कोई अच्छी बात भद्दी या अशुद्ध भाषा में कहे, तो हम पर उसका यथेष्ट प्रभाव नहीं पड़ता; उसके सम्बन्ध में हमारे मन में एक तरह की खटक रह जाती है।''

- रामचन्द्र वर्मा, (अच्छी हिन्दी)

(ख) यह बात कुछ महत्व नहीं रखती कि आदमी मरता कैसे है; महत्व तो इस बात का है कि वह जीता किस प्रकार है।

अध्याय-4 (पृष्ठ-29)

(क) सच है मनुज बड़ा पापी है, नर का वध करता है,
पर भूलो मत मानव के हित मानव ही मरता है।
यह कुन्दन यह अश्रु मनुज की आशा बहुत बड़ी है,
बतलाता है यह मनुष्यता अब तक नहीं मरी है।

(ख) एक मंद बुद्धि लड़का बड़ा ही शरारती था। तोड़-फोड़, मस्ती, शोरगुल, मारपीट करता था। सब उसके पास आने से कतराते थे, क्योंकि वह मुँह पर थूँकता और चाँटा मारता था।

वह केवल दाल, चावल, अचार ही खाता था। पाया गया कि यह तो आहार का ही असर है। अगर इस बालक को अच्छे आहार पर लाया जाए, तो यह सचाई प्रेम, करुणा, शांति, स्वास्थ्य, आयु और आनंद पा सकेगा। एक हफ्ते की कोशिश के बाद बच्चा फलाहार पर आ गया साथ ही मिट्टी पानी का इलाज, मालिश चलती रही।

एक माह में करिश्मा हुआ। तोड़-फोड़ करने वाला बच्चा, शांत भक्त जैसा बन गया।

(ग) अपनी भावनाओं पर ध्यान दें, ये ही आपके विचार बन जाएँगे।
अपने विचारों पर ध्यान दें, ये ही आपके शब्द बन जाएँगे।
अपने शब्दों पर ध्यान दें, ये ही आपके कर्म बन जाएँगे।
अपने कर्मों पर ध्यान दें, ये ही आपकी आदतें बन जाएँगी।
अपनी आदतों पर ध्यान दें, ये ही आपका चरित्र बन जाएगा।
अपने चरित्र पर ध्यान दें, ये ही आपकी नियति बन जाएगी।

अध्याय-5 (पृष्ठ-32)

(क)

उठना	प्रातः 5 बजे
स्नानादि	प्रातः 5 से 30 तक
व्यायाम	6 30 से 7 30 तक
अल्पाहार	7 30 से 8 00 तक
प्रवचन ध्यानादि	8 00 से 1 00 तक
भोजन	1 00 से 1 30 तक

(ख) केवल पढ़-लिख लेने से ही कोई विद्वान नहीं होता; जो इन गुणों-सत्य, तप, ज्ञान, अहिंसा, विद्वानों के प्रति श्रद्धा तथा सुशीलता को धारण करता है; वही सच्चा विद्वान है।

अध्याय-6 (पृष्ठ-33)

(क) प्रति मिनट

(ख) 26 जनवरी 2009

अध्याय-7 (पृष्ठ-37)

(क) भालू - अरे बंदर! तेरे कंधे पर क्या लटक रहा है?
बंदर - तुझे क्या? मेरे कंधे पर थैला लटक रहा है।
भालू - अरे! तू इतना अकड़ कर क्यों चल रहा है?
बंदर - क्यों न अकड़ूँ? तेरे जैसे तो मैं अपने थैले में रखता हूँ चल भाग यहाँ से

(ख) एक व्यक्ति को खाँसी हो गई। डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर ने परीक्षण उपरान्त दवा देकर कहा- 'दिन में तीन बार एक-एक गोली खाना, एक सप्ताह में ठीक हो जाओगे।'
उस व्यक्ति ने पूछा - गोलियाँ केसे खाऊँ! पानी से, दूध से या चाय से?
डॉक्टर ने कहा - किसी से भी सही पानी से ही ले लेना।
उसने फिर पूछा - पानी ठण्डा या गरम या गुनगुना?
उसने फिर पूछा - कुएँ का, नल का या डिस्ट्रिल वाटर?
उसने फिर पूछा - गोली एक-एक करके खाएँ या दोनों एक साथ?
उसने फिर पूछा - खड़े होकर खाऊँ या बैठकर या लेटकर ?

उसने फिर पूछा - किस दिशा की ओर मुँह करके खाऊँ?
और इस प्रकार अनेक प्रश्न पूछता ही गया

(ग) उसने पूछा- क्या तुम आगरा जा रहे हो? (वाक्य)
यदि, यह सच है तो ...... (वाक्यखण्ड)
मैंने कहा- सच के पर नहीं होते (मुहावरा)
उसने कहा- क्या? (एक शब्द)

(घ) पूत कपूत तो क्यों धन संचय?
पूत सपूत तो क्यों धन संचय?

अध्याय-8 (पृष्ठ-41)

(क) अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।

(ख) संसार में मनुष्य जन्म एक ही बार होता है और जवानी भी केवल एक ही बार आती है। साहसी और मनस्वी तरुण-तरुणियों को इस अवसर से हाथ नहीं धोना चाहिए। कमर बांध लो घुमक्कड़ो! संसार तुम्हारे स्वागत के लिए बेकरार है

अध्याय-9 (पृष्ठ-45)

(क) वही उन्नति कर सकता है, जो स्वयं को उपदेश दे सकता है।

— रामतीर्थ

(ख) उद्यम, साहस, पराक्रम, धैर्य, बुद्धि और शक्ति— ये छह गुण जिसमें होते हैं, देव उसकी सहायता करता है।

(ग) मुझे एक कला में सिद्धता हासिल नहीं है— और वह है- खुशामद।

अध्याय-10 (पृष्ठ-50)

(क) करीब-करीब रो-धोकर
बहुत-बहुत गली-गली
धीरे-धीरे बच्चा-बच्चा
बार-बार अपना-अपना
बजते-बजते खाली-खाली

(ख) वही उन्नति कर सकता है—
जो स्वयं को उपदेश दे सकता है

(ग) ध्वनि प्रदूषण की समस्या दिन-प्रति-दिन बढ़ती जा रही है।

(घ) माँ ने पूछा-तुम कक्षा में प्रथम आ पाओगे।

अध्याय-11 (पृष्ठ-52)

(क) विशेषण के चार भेद होते हैं :-

1. गुण वाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण।

3. परिमाण वाचक विशेषण

4. सार्वनामिक विशेषण

(ख) वाक्य :- शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं

लिपि :- भाषा के वर्णों या अक्षरों के लिखने की विधि को लिपि कहते हैं।

अध्याय-12 (पृष्ठ-56)

(क)	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	के.मा.शि.बो.
(ख)	भारतीय जनता पार्टी	भा.ज.पा.

अध्याय-13 (पृष्ठ-59)

(क) किसी कहानी का आवेशी चिह्न का उपयोग करते हुए लिखिए।

(ख) किसी निबंध की रूपरेखा आवेशी चिह्न लगाकर तैयार कीजिए।

अध्याय-14 (पृष्ठ-64)

(क) 'स्वस्तिक' शब्द स्वस्ति से उपजा है, जो 'सु' उपसर्ग एवं 'अस्' धातु से बना है। 'सु' का अर्थ है सुन्दर अथवा मंगल तथा 'अस्' का अर्थ है-अस्तित्व या उपस्थिति अर्थात् सर्वमंगल की भावना इस प्रतीक में बसी है।

(ख) "बापू बोले! क्या है?"

"मैंने कहा, कोई था!"

"बोले, कौन था?"

"मैंने कहा, मालूम नहीं।"

"बोले, यों ही घबरा जाती हो।"

"मैंने कहा, कि-कि-"

"बोले, इसी पर देश सेविका बनोगी?"

उपर्युक्त संवाद अभी तक आपने जितने भी विराम-चिह्नों का अध्ययन किया है, प्रयोग कीजिए।

(ग) बर्नार्ड शा ने कहा था- "अगर कोई सिर्फ अनुभवों के आधार पर विद्वान हो जाता तो लंदन के अजायबघर के पत्थर इतने सालो बाद दुनियाँ के बड़े-से-बड़े बुद्धिमानों से भी ज्यादा बुद्धिमान हो जाते।"

एक शोध-समाचार

05

दिमाग को चुस्त बनाती है हिन्दी

यदि आप हिन्दीभाषी हैं, और आधुनिक सभ्यता के शौकीन होकर बिना जरूरत अंग्रेजी बोलने की लत पाल चुके हैं तो जरा सावधान हो जाइए। देश के वैज्ञानिकों ने कहा है कि अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी भाषा बोलने से मस्तिष्क अधिक चुस्त-दुरुस्त रहता है।

राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र के डॉक्टरों ने एक अनुसंधान के बाद कहा है कि हिन्दीभाषी लोगों के लिए मस्तिष्क को चुस्त-दुरुस्त रखने का सबसे बढ़िया तरीका यही है कि वे अपनी बातचीत में अधिक से अधिक हिन्दी भाषा का इस्तेमाल करें; और अंग्रेजी का इस्तेमाल जरूरत पड़ने पर ही करें। विज्ञान पत्रिका करंट साइंस में प्रकाशित अनुसंधान के पूरे ब्यौरे में मस्तिष्क विशेषज्ञों का कहना है कि अंग्रेजी बोलते समय दिमाग का सिर्फ बायाँ हिस्सा सक्रिय रहता है, जबकि हिन्दी बोलते समय मस्तिष्क का दायाँ और बायाँ, दोनों हिस्से सक्रिय हो जाते हैं, जिससे दिमागी स्वथ्य तरोताजा रहता है।

राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र की भविष्य में अन्य भारतीय भाषाओं के प्रभाव पर भी अध्ययन करने की योजना है। अनुसंधान से जुड़ी डॉक्टर नंदिनी सिंह के अनुसार मस्तिष्क पर अंग्रेजी और हिन्दी भाषा के प्रभाव का असर जानने के लिए छात्रों के एक समूह को लेकर अनुसंधान किया गया। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र द्वारा कराए गए इस अध्ययन के पहले चरण में छात्रों से अंग्रेजी में जोर-जोर से बोलने को कहा गया, और फिर हिन्दी में बात करने को कहा गया।

इस समूची प्रक्रिया में दिमाग का एमआरआई किया जाता रहा। नंदिनी के अनुसार मस्तिष्क के परीक्षण से पता चला है कि अंग्रेजी बोलते समय छात्रों के दिमाग का सिर्फ बायाँ हिस्सा सक्रिय था, जबकि हिन्दी बोलते समय दिमाग के दोनों हिस्से (बाएँ और दाएँ) सक्रिय हो उठे। अनुसंधान टीम का कहना है कि ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि अंग्रेजी एक लाइन में सीधी पढ़ी जानेवाली भाषा है, जबकि हिन्दी के शब्दों में ऊपर-नीचे और बाएँ-दाएँ लगी मात्राओं के कारण दिमाग को इसे पढ़ने में अधिक कसरत करनी पड़ती है, जिससे इसका दायाँ हिस्सा भी सक्रिय हो उठता है।

इन डॉक्टरों की राय है कि हिन्दीभाषियों को बातचीत में ज्यादातर अपनी भाषा का इस्तेमाल ही करना चाहिए; और अंग्रेजी को जरूरत पड़ने पर सम्पर्क भाषा के रूप में। इस अनुसंधान के परिणामों पर जाने माने मनोचिकित्सक डॉ. समीर पारेख ने कहा कि ऐसा संभव है। उनका कहना है कि हिन्दी की जिस तरह की वर्णमाला है, उससे मस्तिष्क को कई फायदे हैं।

व्याकरण की समझ

║01║

भाषा

1. ध्वनि
1.1 ध्वनि एवं प्रकाश का संगम है- भाषा

''किसी भी शब्द के उच्चारण की एक लम्बी परंपरा होती है। एक हिंदी शिक्षक इस बात को लेकर बहुत परेशान थे कि वे छात्रों को हिंदी के कतिपय शब्दों का उच्चारण ठीक से नहीं करा पा रहे हैं। उदाहरण के लिए उनकी समस्या थी कि मराठी-भाषी छात्र कृपा को क्रुपा कहते हैं। पंजाबी छात्र स्कूल को सकूल, बंगाली छात्र भजन को भोजन आदि। इसे कैसे ठीक किया जाए।''

इस सम्बन्ध में इतना ही कहा जा सकता है कि शब्द का उच्चारण भौगोलिक कारणों से प्रभावित होता है। कुछ छात्र अपने उच्चारण बाल्यकाल में परिवार के सदस्यों द्वारा सिखाए गए अभ्यास के कारण ठीक से नहीं कर पाते। अत: शिक्षक को इस सम्बन्ध में विशेष चिंता की आवश्यकता नहीं है। मैंने उन्हें बताया कि कुछ शिक्षक स्वयं भी अपना उच्चारण ठीक से नहीं कर पाते। बंगाली, गुजराती, दक्षिण के राज्यों में हिंदी के शब्दों के उच्चारण में क्षेत्रीय बोलियों का प्रभाव रहता है। अत: जो शिक्षक इन भाषाओं को बोलते हैं, वे स्वयं हिंदी के कुछ शब्दों का उच्चारण ठीक से नहीं कर पाते है। उदाहरण के लिए-

बंगाली	-	तुमने यह शारा (सारा) राशॉगुल्ला (रसगुल्ला) कैशे (कैसे) खा लिया?
पंजाबी	-	रजिन्दर (राजेन्द्र) तुम मुझसे नराज़ (नाराज) क्यों है?
दक्षिण भारतीय	-	काना (खाना) खा लिया क्या?
हरियाणा	-	मुझे सटेशन (स्टेशन) तक ले चलो।
बिहारी	-	यह सरक (सड़क) कहाँ तक जाती है?
पूर्वी उ.प्र.	-	हर व्यक्ति को एक पउधा (पौधा) अवश्य लगाना चाहिए।

मेरे अनुभव में तो यह आया है कि पाठ्यपुस्तकें ही हमारी शिक्षक हैं, जो हर भाषा में हमसे संवाद करती हैं। इसलिए उनकी प्रस्तुति पर विशेष ध्यान देना चाहिए। शिक्षक को चाहिए कि वह उनकी आत्मा से उन्हें परिचित कराए। शब्दों के उच्चारण को वाग् जाल का अंग नहीं बनाना चाहिए।

हम ध्वनियों का उच्चारण बोलने में अवश्य करते हैं किंतु यह भूल जाते हैं कि उसके साथ अर्थ का सम्बन्ध है; और यह सम्बन्ध हमारे मस्तिष्क में चित्र के रूप में स्थापित रहता है। किसी

भी शब्द को बोलने में जो ध्वनि हम करते हैं, उसका चित्र छात्र के मस्तिष्क में ठीक से उभरे, यह ध्यान देना शिक्षक का कार्य है। इस प्रकार भाषा उच्चारण के स्थान पर चित्रात्मक रूप से अधिक समझी जाती है। मातृभाषा का ठीक से उच्चारण करना तो बच्चा परिवार द्वारा सीख जाता है, किंतु विद्यालय में मानक भाषा सिखाई जाती है। मानक भाषा व्याकरण सम्मत होती है। अतः उसका ज्ञान देने से ही छात्र को लाभ मिल सकेगा, इस आधार पर शिक्षक स्वयं शुद्ध उच्चारण करेगा, तो छात्र अवश्य ही उससे लाभान्वित होंगे। व्याकरण छात्र में वर्ण, शब्द, पद, वाक्य सम्बन्धी समझ विकसित हो, व्याकरण पढ़ाने का यही उद्देश्य है। यह उद्देश्य दो प्रकार से पूरा होता है– वाचन अभ्यास तथा लेखन अभ्यास।

वाचन अभ्यास :-

वाचन भी दो प्रकार का होता है। एक सस्वर वाचन, तथा दूसरा मौन वाचन। मात्र अक्षर ज्ञान से वाचन कला में प्रवीणता प्राप्त नहीं की जा सकती है। वाचन एक कला है। इस कला के अभाव में हम साक्षर तो हो सकते हैं किंतु सफल पाठक नहीं। वाचन के प्रति जिस छात्र की रुचि होती है, वह जीवन पर्यन्त नए ज्ञान, नए तथ्य तथा नए जीवन दर्शन को पाने के लिए सजग रहता है। सस्वर वाचन की दृष्टि से उच्चारण का महत्त्व है किंतु यह कार्य कक्षा तक ही सीमित रहता है।

मौन वाचन अकेला का साथी है। वाचन की सफलता तभी है जब बालक पढ़कर समझने लगे, और समझकर पढ़ने लगे। मौन वाचन द्वारा स्वाध्याय को बल मिलता है। स्वाध्याय से बालक को जीवन में नई प्रेरणा मिलती है।

अतः वाचन करते समय कुछ बातें नितान्त आवश्यक है। उनमें से प्रमुख तीन है–

1. ध्वनि – आकृति सम्बन्ध
2. वाक्य विन्यास
3. अर्थ

यदि इन तीनों का तालमेल न हो तो पढ़ना संभव नहीं। इस दृष्टि से निम्नलिखित बातें ध्यातव्य हैं–

(क) वाचन करते समय दृष्टि पहले एक शब्द– स्थल पर जमती है, जिसे दृष्टि–बिन्दु अथवा दृष्टि–केन्द्र कहते हैं और इस दृष्टि–केन्द्र के आस–पास हमारी जो दृष्टि पड़ती है, उसे दृष्टि–परिधि कहते हैं। जब हमारी दृष्टि एक केन्द्र से हटकर दो एक शब्दों के बाद दूसरे शब्द पर जा पहुँचती है, तो वह शब्द दृष्टि केन्द्र बन जाता है। दो केन्द्रों के बीच की दूरी को दृष्टि विराम कहते हैं।

अतः किसी भी शब्द का सस्वर–वाचन स्पष्ट व शुद्ध होना चाहिए जिससे ध्वनि और आकृति का सम्बन्ध ठीक से जुड़े।

कर्णेन्द्रिय एवं नेत्रेन्द्रिय का यह तालमेल ध्वनि, आकृति के सम्बन्ध में आवश्यक है। व्याकरण समझाते समय वर्ण एवं अक्षरों के स्पष्ट उच्चारण और लेखन पर इस दृष्टि से हमें पर्याप्त बल देना होगा। पिता को पीता–सुनकर बालक अशुद्ध लेखन ही करेगा।

(ख.) ध्वनि और आकृति का सम्बन्ध वर्णोच्चारण अथवा केवल लिपि पहचान तक सीमित नहीं

होना चाहिए अपितु लिपि प्रतीक पर दृष्टि पड़ते ही तथ्य, भाव या विचार हमारे मस्तिष्क में आते रहना चाहिए। वाक्य-विन्यास का इस दृष्टि से महत्त्व अधिक है। छोटे-छोटे वाक्यों में अपनी बात रखना अधिक प्रभावी होता है।

(ग.) वाचन के समय अर्थ-ग्रहण की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। इस दृष्टि से शब्द और अर्थ का नेत्रेन्द्रिय और मस्तिष्क से पूर्ण समायोजन चाहिए। वाचन करते समय बालक अर्थ-ग्रहण कर पा रहा है या नहीं, इसकी परीक्षा शिक्षक को बोधात्मक प्रश्नों के द्वारा करना चाहिए।

- यहाँ एक बात का और भी ध्यान रखना होगा कि समय-समय पर शब्द तो नहीं बदलते किंतु उसका अर्थ बदल जाता है; जैसे- 'गुरु' शब्द का आज वही अर्थ नहीं रहा, जो प्राचीनकाल में था। गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु ... कहकर उसकी स्तुति की जाती है किंतु आज 'गुरु' शब्द का अर्थ एक दम विपरीत हो गया है। आज 'गुरु' शब्द का चालाक-व्यक्ति के अर्थ में प्रयोग होता है।

लेखन अभ्यास :

भाषा में जो स्थान ध्वनि का है, वही स्थान लिपि में वर्ण का होता है। किंतु भाषा लिपि के बिना भी जीवित रह सकती है जबकि भाषा के अभाव में लिपि का कोई महत्त्व नहीं। अतः कुछ विद्वानों ने वाणी के दृश्य रूप को लिपि कहा है।

इस प्रकार भाषा के दो रूप है- एक प्रकृतिदत्त भाषा जो कान से सुनी जाती है, और दूसरी-आँख की भाषा जो आँखों से देखी जाती है। अतः उच्चरित भाषा को ध्वनि तथा लिखित भाषा को प्रकाश कहकर हम भाषा को ध्वनि तथा प्रकाश का संगम भी कह सकते है।

मौखिक और लिखित भाषा के अंतर को कुछ इस प्रकार से भी जानने का प्रयास करें-

1. उच्चरित भाषा मुख, ओष्ठ, जिव्हा, नासिका आदि की सहायता से उत्पन्न होती है। कान से उसे ग्रहण करते हैं जबकि लिखित भाषा हाथ अथवा यंत्र से निर्मित होती है, और आँख से उसे ग्रहण करते है।
2. उच्चरित भाषा का माध्यम एक मात्र वायु-तरंग है, जबकि लिखित भाषा का माध्यम रेत, मिट्टी, लकड़ी, भोज पत्र, कागज, स्याही, रंग आदि।
3. उच्चरित भाषा सजीव होती है अर्थात् लय, ताल, बलाघात आदि पर निर्भर करती है जबकि लिखित भाषा निर्जीव होती है।
4. उच्चरित भाषा पर देश-काल का प्रभाव पड़ता है जबकि लिखित भाषा देशकाल से मुक्त है।

अतः भाषा का पठन-पाठन करते समय शिक्षक का ध्यान इन बिन्दुओं पर अवश्य जाना चाहिए।

1.2

अतिक्रमण कारी है-व्यतिरेकी ध्वनियाँ

''व्याकरण में व्यतिरेकी ध्वनियों की पहचान करना बड़ा कठिन है। इसके अभ्यास को कैसे सार्थक बनाया जाए, कृपया बताइए।'' ''व्यतिरेकी ध्वनियों से आशय क्या है? कृपया यह भी स्पष्ट करे।'' शिक्षकों ने एक कार्यशाला में इस प्रकार के और भी प्रश्न उच्चारण के सम्बन्ध में पूछे, किंतु उनकी समस्या मूलत: व्यतिरेकी ध्वनियों को जानने की थी। हिन्दी में हम इसे ध्वनि-दोष मानते हैं। वैसे हिन्दी में सबसे अधिक ध्वनि दोष इ, ई के उच्चारण में होता है। 'इ' का उच्चारण करने में समय कम लगता है, जबकि 'ई' के उच्चारण करने में समय अधिक लगता है। सामान्य बोल-चाल में यह अंतर बहुत कम रह जाता है। इस अंतर का ध्यान न रखने से विपरीत ध्वनियों को पहचानने में कठिनाई आती है; जैसे आईए-आइए। (यहाँ 'ई' पर उच्चारण में विशेष बल देने पर आईए बोला जाता है, जबकि शुद्ध है आइए।)

इस विपरीत ध्वनि को सुनना ही व्यतिरेकी ध्वनियाँ कहा जाता है।

अभ्यासार्थ यहाँ ध्वनियों के अंतर को पहचान करने की तीन स्थितियाँ बताई जा रही हैं। प्रयोग के अनुसार उन्हें जानें।

स्वर-सम्बन्धी व्यतिरेक ध्वनियाँ :-

(क) **इ-ई ध्वनियों के अंतर को पहचानना।**

ध्वनि	**आदि**	**मध्य**	**अंत**
इ	इस	घिस	पति
ई	ईख	बीस	कली

(यहाँ वर्ण विग्रह द्वारा इस अंतर को जाने 'घिस' शब्द का वर्ण विग्रह होगा- घ्+इ+स =घिस। अत: यहाँ 'इ' मध्य में कहा गया है। पति का वर्ण विग्रह होगा- प+त्+इ= पति, यहाँ अंत में 'इ' आता है। इसी प्रकार आगे के क्रम को भी जानें।)

(ख) उ-ऊ का प्रयोग

उ	उस	खुश	विधु
ऊ	ऊन	खूब	बहू

(ग) ए-ऐ का प्रयोग

ध्वनि	**आदि**	**मध्य**	**अंत**
ए	एक	नेक	चले
ऐ	ऐनक	पैसा	है

(घ) ओ-औ का प्रयोग

ओ	ओर	मोर	मारो
औ	औरत	मौज	

व्यंजन सम्बन्धी व्यतिरेकी ध्वनियाँ :-

व्यंजन	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
1. श–स	जस	यश
2. ण–न	कन	कण
3. व–ब	बन	वन
4. छ–क्ष	कच्छा	कक्षा
5. ट–ठ	यथेष्ट	यथेष्ठ
6. ग्–घ	बग्घी	बघ्घी
7. द–ध	धही	दही

वस्तुत: बालक अपने परिवार तथा परिवेश से ही उच्चारण अभ्यास सीखता है। इसके लिए पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता है।

शान्ति को शान्ती, छबि को छबी, उषा को ऊषा, किन्तु को किन्तू आदि ऐसे ही शब्द हैं। जो प्राय: बोले जाते हैं। अत: शिक्षक को चाहिए परिवेश तथा परिवार को आधार बनाकर छात्रों को इन ध्वनियों का अभ्यास कराए। बोली और खड़ी बोली (भाषा) के अंतर को स्पष्ट करे। उच्चारण की भूल लेखन को प्रभावित न करे, इतना ही उद्देश्य हो। उच्चारण में पूर्ण सुधार संभव भी नहीं।

शब्दकोश में व्यतिरेक का अर्थ–अंतर अथवा अतिक्रमण दिया है। आज के अतिक्रमण के युग में व्यतिरेकी ध्वनियों के अतिक्रमण की समस्या का निदान करना बहुत कठिन है। हाँ, इनको पहचानने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए।

1.3

बहुवचन का चिह्न है- अनुनासिक ध्वनियाँ

एक शिक्षक ने प्रशिक्षण के मध्य एक प्रश्न किया। प्रश्न मजेदार था। शिक्षक का कहना था कि आपने हमें यह तो बताया कि प्रयोग के आधार पर स्वर दो प्रकार के होते है- पहला स्वर अपने मूल रूप में, तथा दूसरे अनुनासिक रूप में। इसे उदाहरण देकर आपने यह भी बताया कि मूल स्वर 11 होते हैं; तथा अनुनासिक के प्रयोग से वे 10 और होते हैं। चूँकि 'ऋ' की गणना अनुनासिक के प्रयोग में नहीं होती है। अत: मूल 10 स्वरों को अनुनासिक स्वरों के साथ मिलाकर उनकी संख्या 20 हो जाती है किन्तु कुछ स्थानों में लोग आवश्यकता न रहने पर भी अनुनासिक का प्रयोग करते देखे गए है; जैसे- पूछना को पूँछना। आश्चर्य तो यह है कि वे लेखन में भी इसका प्रयोग करते हैं। अत: स्पष्ट करें कि प्रयोग की दृष्टि से अनुनासिक का उपयोग किस प्रकार समझ में आ सकता है?

शिक्षक की जिज्ञासा और प्रश्न को सुनकर मैंने एक युक्ति निकाली, और उनको एक नियम बताया कि- बहुवचन के प्रयोग में अनुनासिक शब्दों का प्रयोग होता है। आप जानते हैं- बहुवचन बनाते समय यह ध्यान रखा जाता है कि जिन वस्तुओं को हम गणना नहीं कर सकते, उनका बहुवचन नहीं होता किन्तु जिन वस्तुओं की गणना की जाती है, उसका बहुवचन अवश्य होता है; जैसे- लड़के ने- लड़कों ने।

यहाँ 'ने' -विभक्ति चिह्न लगने से 'लड़के' में अन्त्य स्वर 'के' के स्थान पर बहुवचन लड़कों हो गया। आप पूछ सकते हैं- 'को' अनुनासिक कैसे हुआ? अत: अनुनासिक का प्रयोग करते समय कुछ बातों की ओर विशेष ध्यान रखें। शब्दों के बहुवचन बनाते समय यदि वर्ण की मात्रा के साथ अनुनासिक का प्रयोग होता है तो अनुनासिक का चिह्न (ँ) चंद्र बिन्दु के स्थान पर बिन्दु रहता है। यही कारण है कि- लड़कों में लड़के शब्द का बहुवचन बनाने पर अनुनासिक चिह्न का प्रयोग हुआ है। किंतु (ँ) चंद्र बिन्दु के स्थान पर बिन्दी (ं) लगी है। कारण- 'क' में 'ओ' की मात्रा लगी है। ऐसे कुछ शब्द छात्रों के अभ्यास में अवश्य लाएँ। ध्यान रहे, ऐसा प्रयोग विभक्ति सहित तथा विभक्ति रहित दोनों प्रकार के शब्दों के बहुवचन बनाते समय किया जाता है। इसे ऐसे समझें -

विभक्ति रहित शब्दों के बहुवचन

(जिन संज्ञा शब्दों में विभक्ति का प्रयोग नहीं होता है, उनके बहुवचन बनाते समय-

विभक्ति सहित शब्दों के बहुवचन

(जिन संज्ञा शब्दों में विभक्ति का प्रयोग होता है, उनके बहुवचन बनाते समय

ए, ऐं, याँ, इयाँ प्रत्ययों का प्रयोग होता है।)	ओं तथा यों का प्रयोग होता है।)
ए- बेटा+ए = बेटे	ओं - बालक ने =बालकों ने
ऐ- सड़क+ऐं = सड़कें	नेता ने = नेताओं ने
याँ- बेटी+याँ= बेटियाँ	यों- सहयोगी ने =सहयोगियों ने
इयाँ- गाड़ी+इयाँ = गाड़ियाँ	

(विशेष- संबोधन बहुवचन में अनुनासिक का प्रयोग नहीं होता है; जैसे- भाइयो और बहनो)

अपवाद : संबोधन कारकों के प्रयोग करते समय या किसी को पुकारने, सावधान करने के लिए संज्ञा शब्द के बहुवचन में 'ओं' के स्थान पर 'ओ' का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

क. प्यारे बच्चो! मेरी बात ध्यान से सुनो।

ख. भाइयो और बहनो! आप मेरी बात ध्यान से सुनें।

2

वर्ण

2.1
ड/ड़ का प्रयोग कहाँ होता है?

एक शिक्षक ने छात्रों को गृह-कार्य में ड और ड़ से बने पाँच-पाँच शब्द घर से लिखकर लाने को कहा। दूसरे दिन कुछ छात्र किसी तरह पाँच-पाँच शब्द लिखकर लाए। शेष छात्रों ने कही 'ड' तो कहीं 'ड़' के अंतर को समझे बिना ही पाँच-पाँच शब्द लिखकर बतला दिए। कक्षा के कुछ छात्र ऐसे भी थे, जो बिना समझे लिखना ठीक नहीं समझते थे, इसलिए उन्होंने शिक्षक से अनुरोध किया कि आचार्य जी! हम ठीक से समझ नहीं पा रहे है कि कहाँ 'ड' का प्रयोग किया जाए, और कहाँ 'ड़' का। शिक्षक समझदार थे। पहले तो उन्होंने 'ड' और 'ड़' का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है, इस बात को स्पष्ट किया, जिससे कक्षा के सभी छात्र उसको समझ सकें। उन्होंने कहा-

ड	ड़
1. ड-वर्ण का प्रयोग शब्द के आदि में होता है। जैसे - डमरु	1. ड़-वर्ण का प्रयोग शब्द के मध्य या अंत में होता है; जैसे-सड़क (मध्य में)
2. ह्रस्व स्वर के पश्चात् अनुनासिक व्यंजन के संयोग से-जैसे- डंडा, मंडप	2. दीर्घ स्वर के पश्चात्। जैसे- रीड़ (अंत में)
3. द्वित्व शब्दों में- जैसे- लड्डू (यहाँ ड दो बार आया है।)	

इतना समझाने के पश्चात् उन्होंने छात्रों से दोनों वर्णो को उच्चारण द्वारा भी समझाने का प्रयत्न किया। उन्होंने बतलाया - ड, ढ- स्पर्शी ध्वनियाँ है जिनके उच्चारण में जिह्वा मूर्धा को स्पर्श करके वायु को थोड़ी देर के लिए रोकती है। अब इसे भी जानें-

1. **ड**- 'ड' का उच्चारण मूर्धा से होता है, इसलिए इसे मूर्धन्य ध्वनि कहते हैं। (ऋ, र, ष तथा ट, ठ, ड, ढ, ण- ये सभी वर्ण मूर्धन्य कहलाते हैं क्योंकि इनके उच्चारण करते समय जिह्वा मूर्धा को स्पर्श करते हुए वायु को थोड़ी देर के लिए रोकती है।)
2. **'ड़'** के उच्चारण करते समय में जिह्वा का अग्रभाग उलटाकर मूर्द्धा में लगाना पड़ता है। 'ड़,

ढ़ उत्क्षिप्त ध्वनियाँ है जिनके उच्चारण में जिह्वा मूर्धा को बिना स्पर्श किए हवा को बाहर फेंकती है। व्याकरण में ऐसे वर्ण द्विस्पृष्ट अर्थात् (द्वि) याने दो (स्पष्ट) याने स्पर्श, दो स्थानों पर स्पर्श करने वाले वर्ण कहे गए हैं। दो स्थानों से उच्चारण होने के कारण कुछ विद्वान 'ड़' को संयुक्त व्यंजन मानते हैं क्योंकि उनके मतानुसार 'ड' में 'र' मिलकर 'ड़' की ध्वनि बनी है। अँग्रेजों द्वारा द्विस्पष्ट उच्चारण नहीं किया जाता है। यही कारण है कि वे 'सड़क' को सरक कहते हैं।

इस प्रकार प्रयोग तथा उच्चारण के आधार पर इन वर्णों की पहचान हम आसानी से कर सकते हैं। ढ और ढ़ में भी अंतर इसी आधार पर किया जाता है।

जैसे – ढ,ढ़ (मूर्धन्य) शब्द के आदि में

ढ गड्ढा (मूर्धन्य) (द्वित्व प्रयोग)

ढ़ चढ़ना (शब्द के मध्य में)

इन नियमों का भी ध्यान रखे :

1. चंद्र बिन्दु वाले वर्णों के बाद ड–ढ ही प्रयुक्त होते हैं, ड़–ढ़ नहीं; जैसे– खंडहर, पाँडे, ढूँढना आदि।
2. उपसर्ग के बाद भी ड–ढ ही प्रयुक्त होते है; जैसे– निडर, बेढंगा आदि।
3. अँग्रेजी से आए, विदेशी शब्दों में 'ड' ही प्रयुक्त होता है।
   जैसे– ब्रिगेडियर, रेडियो, हेडमास्टर आदि।

अंत में उन्होंने प्रत्येक छात्र को पुनः इन दोनों वर्णों से बनने वाले पाँच–पाँच शब्द शब्दकोश के माध्यम से छाँट कर लाने के लिए पुनः आग्रह किया। कुछ शब्द उन्होंने स्वयं बताए–

जैसे : 1. डमरू, पंडित, पांडेय, गुड, ढाल, ढाक, ठंडक, बुड्ढा आदि।

2. क्रीड़ा, गुड़, लड़का, लड़ाई, पढ़, बढ़, चढ़, बाढ़ आदि।

2.2

भ्रम फैलाते 'र' और 'ऋ'

''ह्रस्व और हृदय शब्द में 'ह' का प्रयोग करते हैं किंतु एक विद्वान ने मुझे बताया कि 'ह्रस्व' में 'र' का तथा 'हृदय' में 'ऋ' का प्रयोग होता है, यह अन्तर अभी तक किसी ने हमें नहीं बताया। कृपया, इस अंतर को हम कैसे जाने, इस पर प्रकाश डालें।''- एक शिक्षिका ने मुझसे प्रश्न किया।

छात्रों के प्रश्न पत्र में यह प्रश्न पूछा गया था। उत्तर पुस्तिका जाँचते समय वह भ्रमित थी कि हृस्व तथा हृदय में 'ह' एक ही तरह से लिखा जाना है अथवा उसमें कोई भिन्नता है।

प्रश्न बहुत चुनौती भरा था। कहने को कह सकते हैं कि 'हृस्व' में 'र' तथा हृदय में 'ऋ' का प्रयोग होता है किंतु हम ध्यान नहीं देते हैं। कुछ शब्द हैं, जिन पर हमें अवश्य ध्यान देना चाहिए; जैसे- सृष्टा सही है या स्रष्टा, दृष्टा सही है या द्रष्टा, बृज सही या ब्रज।

इस सम्बन्ध में हमें 'रि' के बदले 'ऋ' तथा 'ऋ' के बदले 'रि' लिखने का निर्णय शब्द-कोश की सहायता से करना चाहिए। और ऐसे शब्द बहुत थोड़े है। तत्सम शब्दों में ही इनका प्रयोग होता है। अत: हमें एक सूची बनाना उचित होगा। कुछ शब्द यहाँ उदाहरण स्वरूप दिए जा रहे हैं।

शुद्ध	**अशुद्ध**
जागृत	जाग्रत
दृष्टा	द्रष्टा
बृज	ब्रज
सृष्टा	स्रष्टा
हृस्व	ह्रस्व

किंतु ध्यान रहे 'ईत' प्रत्यय लगने पर 'र' का 'ऋ' में परिवर्तन हो जाता है; जैसे-

अनुग्रह	अनुगृहीत
ग्रहण	गृहीत
संग्रह	संगृहीत

जो इस नियम से परिचित नहीं है, वे ग्रहीत, अनुग्रहीत, संग्रहीत लिखते, जो कि अशुद्ध है।

इसी प्रकार 'त्र' और 'र' के प्रयोग में भी भ्रम उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए हम सहस्त्र, स्त्रोत लिखते हैं जो कि अशुद्ध है; शुद्ध है-सहस्र, स्रोत। अत: इन तत्सम शब्दों को शुद्ध लिखने का अभ्यास हमें छात्रों को अवश्य कराना चाहिए।

3

उच्चारण

3.1
'संयम' के उच्चारण में 'इ' की ध्वनि क्यों आती है?

"'संयम' के उच्चारण में 'इ' की ध्वनि क्यों आती है?"- एक शिक्षक ने मुझसे पूछा। मैंने शिक्षक से पूछा - "आप स्वयं बताएँ। आपको हिन्दी पढ़ाते वर्षों हो गए, फिर आज यह प्रश्न क्यों पूछ रहे हैं?।" वे बोले- "अभी तक यह प्रश्न किसी ने मुझसे किया ही नहीं, किन्तु कल एक छात्र ने मुझसे यह प्रश्न किया, तो मैं उत्तर नहीं दे पाया।"

उनकी कठिनाई को देखते हुए समाधान कैसे करें, यह सोच ही रहा था कि कुछ शब्द मैंने समान उच्चारण वाले उनके सामने बोले- संयत, संयुक्त, संयोग, संयोजक, संयोजन और कहा-आप देख रहे हैं, इन सभी शब्दों के उच्चारण में 'इ' की ध्वनि आ रही है। इसका सीधा कारण यह है कि 'सम' के आगे जब 'य' का संयोग होता है, तो 'इ' ध्वनि का उच्चारण हमें करना पड़ता है। ध्वनि और उच्चारण सम्बन्धी भूलों पर हम बहुत कम ध्यान दे पाते हैं। हिन्दी में जब हमारा बोलना उसकी ध्वनि व्यवस्था के अनुसार नहीं होता, तब हम उसे ध्वनि दोष कहते हैं। ये दोष दो स्तरों पर होते हैं- स्वर-संबंधित तथा व्यंजन-संबंधित।

ध्यान रहे, संयम शब्द सम्+यम। इन दो शब्दों से मिलकर बना है। 'सम्' में 'म्' के स्थान पर अनुस्वार आया है, और 'सं' लिखा जाता है। चूँकि वर्गीय व्यंजनों में पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार आता है किन्तु अन्तस्थ तथा ऊष्म व्यंजन-वर्गों का कोई पंचमाक्षर नहीं होता। संख्या में ये चार-चार ही हैं।

य,र,ल, व (अन्तस्थ व्यंजन)

श,ष,स,ह (ऊष्म व्यंजन)

इन व्यंजनों पर सीधे अनुस्वार का प्रयोग होता है। अत: 'स' पर अनुस्वार का प्रयोग हुआ है।

इन व्यंजनों से पहले यदि अनुस्वार प्रयोग होता है, तो उनके उच्चारण करते समय ध्वनि इस प्रकार होती है-

1. 'य', 'व', से पूर्व अनुनासिक स्वर की ध्वनि सुनाई देती है।

यथा-संयम, यहाँ 'स' में अनुनासिक ध्वनि सुनाई दे रही है। जो हमें 'इ' के रूप में सुनाई देती है। अत: ध्यान देने की बात यह है कि 'य' के पूर्व यदि 'सम्' में (सं) अनुस्वार का प्रयोग हुआ है तो वहाँ अनुस्वार का उच्चारण अनुनासिक की भाँति सुनाई देता है। यही स्थिति 'ए' के बाद 'य' आने पर होती है। 'ऐ' की मात्रा (ै) है पर इस मात्रा की दो ध्वनियाँ है। 'अई' और 'अए' बोलकर देखिए। शुद्ध रूप- गैया, उच्चरित रूप- गइया। यहाँ 'ऐ' के बाद 'य' होने से उसका उच्चरित रूप 'अइ' हो गया। अन्य अवस्थाओं में 'आए' की ध्वनि आती है; जैसे- कैसा-कएसा।

2. र, ल, स से पूर्व 'न' की ध्वनि सुनाई देती है;
   यथा- संरक्षा, संलेख, संसार आदि।
   (यहाँ र,ल, स के पूर्व 'न' की ध्वनि स्पष्ट सुनाई दे रही है।)
3. 'श' से पूर्व 'ण' की ध्वनि सुनाई देती है।
   यथा- अंश (यहाँ 'श' के पूर्व अनुस्वार का ही उच्चारण है।)
4. 'ह' से पूर्व 'ङ' की ध्वनि सुनाई देती है।
   यथा-सिंह (यहाँ स में इ की मात्रा होने से अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार का चिह्न लगाया गया है।)
5. 'व' के पूर्व 'म्' की ध्वनि सुनाई देती है।
   यथा- संवाद, संवेदना।

अत: स्पष्ट है कि उच्चरित रूप तथा लिखित रूप के इस अंतर का अध्ययन ध्यान से करना चाहिए। और छात्रों के भी ध्यान में लाना चाहिए कि कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनके उच्चरित रूप तथा लिखित रूप में अन्तर होता है। विशेष रूप से यह अन्तर अनुनासिक एवं अनुस्वार के प्रयोग पर आधारित है। इन दोनों ध्वनियों के उच्चारण में तथा लेखन में हमें विशेष सावधानी रखना है।

कहने का आशय यह कि ध्वनियों के शुद्ध उच्चारण तथा लिखित रूप के अंतर को जानने में पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता है।

3.2

उच्चारण में महाप्राण व्यंजनों में कभी द्वित्व नहीं होता किंतु लेखन में होता हैं

कभी-कभी कोई शब्द अनावश्यक विवाद का विषय बन जाते हैं। हमारे राष्ट्रीय-चरित्र की एक विशेषता आलोचना करना भी है। राजस्थान के एक सज्जन राजस्थान की तर्ज पर हिन्दुस्तान को हिन्दुस्थान कहने पर बल देने लगे। उनका आग्रह था कि यह देश हिन्दुओं के रहने का स्थान है, इसलिए इसे हिन्दुस्थान कहना गलत क्यों है? दूसरे सज्जन उनकी बात से सहमत नहीं थे उनका कहना था हिन्दू शब्द मुस्लिम काल की देन है, इसलिए उर्दू (विदेशी) शब्दों में 'स्तान' शब्द है। जिसका 'स्थान' शब्द से कोई लेना-देना नहीं है। पाकिस्तान, परिस्तान, कब्रिस्तान-शब्दों का उदाहरण देकर वे इस बात की पुष्टि कर रहे थे। अत: 'हिन्दुस्तान' शब्द ही ठीक है हिन्दुस्थान नहीं।

मुझे लगा उनका तर्क ठीक नहीं है। मैं उर्दू के भाषा सम्बन्धी नियमों से अपरिचित हूँ किंतु उनकी बातचीत से ऐसा अवश्य लगा कि हम बोलते समय हिन्दुस्तान ही बोलते है, हिन्दुस्थान नहीं। उच्चारण की यह समस्या केवल 'हिन्दुस्तान' हिन्दू-स्थान' में नहीं, अन्य शब्दों के सम्बन्ध में भी है; जैसे- पत्थर को कहीं-कहीं फत्थर कहते है, भूख का उच्चारण भूक करते हैं; लिखते भूख हैं। दाढ़ी को दाड़ी बोलते हैं। अत: इस विषय की चर्चा हमें इस दृष्टि से अवश्य करना चाहिए कि वास्तविकता क्या है?

उच्चारण में वायु प्रक्षेपण की दृष्टि से व्यंजनों के दो भेद हैं-

1. अल्पप्राण 2. महाप्राण।

जिन व्यंजनों के उच्चारण में कम वायु प्रक्षेपित होती है, उसे हम अल्पप्राण कहते हैं। स्पर्श व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवा वर्ण अल्पप्राण है; जैसे-

क-वर्ग	-	क, ग, ङ
च-वर्ग	-	च, ज, ञ
ट-वर्ग	-	ट, ड, ण
त- वर्ग	-	त, द, न
प- वर्ग	-	प, ब, म

महाप्राण के उच्चारण में 'हकार' की ध्वनि विशेष रूप से सुनाई देती है। स्पर्श व्यंजनों में प्रत्येक वर्ग का दूसरा, और चौथा वर्ण महाप्राण वर्ण है; जैसे-

क- वर्ग	ख (क्+ह)	घ (ग्+ह)
च- वर्ग	छ (च्+ह)	झ (ज्+ह)
ट- वर्ग	ठ (ट्+ह)	ढ (ड्+ह)
त- वर्ग	थ (त्+ह)	ध (द्+ह)
प- वर्ग	फ (प्+ह)	भ (ब्+ह)

कहने का आशय यह कि किसी शब्द में यदि दो महाप्राण आते हैं तो दूसरे अक्षर पहले अक्षर में तथा चौथे अक्षर(वर्ण) तीसरे में बदल जाते हैं। दो महाप्राण एक साथ नहीं आते; जैसे- ख्+ख = क्ख (मक्खी), छ्+छ =च्छ (मच्छर) यह नियम है।

ऐसे शब्दों की सूची छात्रों द्वारा तैयार करवाई जाए ताकि वे इस सिद्धांत को हृदयंगम कर सकें।

किंतु यह ध्यान दें कि यह नियम तभी लागू होगा जब पहला वर्ण अल्पप्राण हो, तथा दूसरा वर्ण महाप्राण। इस नियम के विपरीत यदि व्यंजनों को संयुक्त करते समय पहले महाप्राण अक्षर हो, और बाद में अल्पप्राण, तो निष्कर्ष रूप में इन तीन बातों पर विशेष ध्यान दें-

1. यह नियम वर्गीय व्यंजन पर ही लागू होता है।
2. पहला व्यंजन अल्पप्राण हो तथा दूसरा महाप्राण तो जैसा बोलते है, वैसा ही लिखते है। जैसे- पत्थर।
3. पहला व्यंजन महाप्राण हो तथा दूसरा अल्पप्राण तो जैसा उच्चारण करते है, वैसा नहीं लिखते। लिखने में दोनो अक्षर महाप्राण होते हैं।

जैसे: 1. खंबा - यहाँ खंबा शब्द में 'ख' महाप्राण है तथा 'ब' अल्पप्राण। ऐसी स्थिति में दोनों अक्षर ख तथा भ महाप्राण लिखने होंगे। यही शुद्ध है। खंबा का उच्चारण हम खंबा ही करते है, पर लेखन में खंभा लिखते है।

ऐसे में बोलने में द्वित्व नहीं होता किंतु लेखन में होता है। इस ओर हम बहुत कम सोच पाते हैं। कुछ शब्दों के उदाहरणों से यह तथ्य स्पष्ट होता है।

2. भूक - भूख
3. हात - हाथ
4. भाबी - भाभी
5. धंदा - धंधा
6. जीब - जीभ

अत: छात्रों का ध्यान इस ओर अवश्य दिलाया जाए। ऐसी स्थिति तभी बनती है, जब शब्द का पहला वर्ण महाप्राण हो, तथा दूसरा अल्पप्राण।

4

वर्तनी

4.1
शुद्ध क्या है?-संन्यास अथवा सन्यास?

प्रशिक्षण महाविद्यालय में हिन्दी भाषा के शिक्षण करते समय एक छात्राध्यापक ने प्रश्न किया कि –''सन्यास एवं संन्यास को दो तरह से लिखा जाता है। सन्यास में अनुस्वार नहीं है, संन्यास में 'स' पर अनुस्वार है। दोनों में अंतर क्या है? दोनों प्रकार से लिखने पर भी इनका उच्चारण समान है। अत: यदि दोनों ही प्रकार से लिखना शुद्ध है तो उसका कुछ आधार भी होगा, कृपया उसे स्पष्ट करें।''

मुझे लगा–उनका प्रश्न उचित है। व्याकरण की पुस्तकों में इतना ही लिखा रहता है कि अमुक शब्द दोनों प्रकार से लिखा जा सकता है किन्तु सम्यक् तर्क प्रस्तुत नहीं किया जाता है। मैंने उनकी कठिनाई को किस प्रकार हल किया, आइए, आप भी उस पर थोड़ा ध्यान दें।

पहले 'सन्यास' शब्द को ले। सन्यास शब्द स+न्यास दो अक्षरों के मेल से बना है। इन दोनों शब्दों को एक साथ बोलने पर सन्न्यास शब्द बोलने में आता है क्योंकि इनमें 'न' वर्ण का दोहराव है।

नियम है कि य,र,ल,व (अन्तस्थ वर्णों) की स्थिति में एक व्यंजन पहले हो तो लिखते समय व्यंजन का दोहराव नहीं होता; जैसे– उपन्यास। ऐसे शब्द व्याकरण में संयुक्ताक्षर कहे जाते है। संयुक्ताक्षर का अर्थ है: एक साथ एक झटके में उच्चारण होने वाली ध्वनियों का समूह।

अत: जिस प्रकार 'उपन्न्यास' बोला जाता है, और लिखा जाता **उपन्यास**, वैसे ही 'सन्न्यास' की स्थिति है। सन्न्यास बोला जाता है, और लिखा जाता है **सन्यास**।

अब संन्यास शब्द पर विचार करें। संगीत शब्द को सङ्–गीत बोला जाता है, जबकि मूल शब्द है– सम्+गीत। यहाँ 'म्' को उसी के वर्ग के पाँचवे वर्ण अथवा अनुस्वार में बदला गया है। उक्त सम्गीत को सङ्गीत बोला जाता है। यही स्थिति 'संन्यास' शब्द की है। 'संन्यास' शब्द सम्+न्यास दो शब्दों के मेल से बना है। अत: उसे संन्यास बोला जाता है।

छात्राध्यापक ने एक प्रश्न और इसी के सम्बन्ध में किया– ''क्या सन्यास तथा संन्यास दोनों शब्दों का अर्थ एक ही है।''

वास्तव में उनका यह प्रश्न भी विशेष महत्त्व का है। सन्यास एवं संन्यास दोनों शब्दों में उत्तर पद 'न्यास' है। पहले शब्द में सन्यास 'स' तथा दूसरे शब्द सम् उपसर्ग लगा है। न्यास का अर्थ है- छोड़ना। जिस वस्तु का त्याग किया जाता है, उसे न्यास कहते है। सन्यासी- वह है, जिसने सांसारिक इच्छाओं का त्याग किया है अर्थात् जो कुछ त्याग करता है, वह है सन्यासी। किन्तु संन्यासी वह है, जो सम्यक् प्रकार का त्याग करता है, अर्थात् जो सांसारिक इच्छाओं को पूरी तरह से त्याग देता है, वह है-संन्यासी। इस दृष्टि से सन्यासी की अपेक्षा संन्यासी अधिक श्रेष्ठ है। आप स्वयं देखेंगे गीता में जहाँ-तहाँ संन्यासी शब्द आता है, वहाँ सम्यक् न्यास के भाव से आया है, सन्यासी शब्द के भाव से नहीं। सन्यासी पूर्ण समर्पण नहीं करता। वह अपनी कुछ इच्छाएँ बचा लेता है, जबकि संन्यासी अपनी सम्पूर्ण इच्छाएँ त्याग देता है। देखने में भी आता है, संन्यासी आजकल बहुत ही अपवाद स्वरूप मिलते है। सन्यासी ही अधिक देखे जाते हैं।

संन्यास का सही उदाहरण प्राचीन ऋषियों के जीवन में देखने को मिलता है, जो सब कुछ त्यागकर वन में एकांत जीवन बिताते थे। आज सन्यासी घर को त्याग कर वैभवशाली आश्रम में रहते है। पत्नी को त्यागकर महिला सेविकाओं से घिरे रहते हैं। उत्तम सुस्वादु भोजन करते हैं; विलासिता में डूबे रहते हैं। शिष्य मंडली द्वारा प्राप्त भेंट से अपना जीवन राजसी वृत्तियों में बिताते हैं। अपवाद स्वरूप सच्चे संन्यासी अब भी अपना जीवन प्राचीन ऋषियों जैसा बिताते हैं किन्तु उनसे भेंट करना कठिन है।

अतः इस अन्तर पर भी ध्यान दें, तो हमें-दोनों शब्दों के मूल स्वभाव को जानने में मदद मिलेगी।

4.2

जीवन शैली में उथल-पुथल बताता है : वर्ण विपर्यय

''व्याकरण की कुछ पुस्तकों में वर्ण-विपर्यय की चर्चा की गई है, और कहा गया है कि अब इसका प्रयोग इतना अधिक चलन में आ गया है कि उनके शुद्ध रूप को जानना ही कठिन हो रहा है।'' इस पर चर्चा करें। एक कार्यशाला में मुझसे अनुरोध किया गया।

सचमुच वर्ण-विपर्यय की समस्या का प्रयोग लेखन में अधिक हो रहा है क्योंकि शब्दों को सुविधानुसार इधर-उधर करके बोलना आसान होता है। और उसी के अनुसार लेखन भी यथावत चलने लगता है। पहले हम 'विपर्यय' शब्द का कोशीय अर्थ जान लें। विपर्यय का अर्थ है- व्यतिक्रम अर्थात् और का और समझना, गड़बड़ी, अव्यवस्था, उलट-पुलट, इधर का उधर। हमारा जीवन भी लगभग अव्यवस्थित हो गया है तो फिर भला वर्ण-व्यवस्था में कुछ उलट-पुलट होता है, तो इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए। यह तो हमारा स्वभाव बनता जा रहा है कि हम विपर्यय पर विचार भी नहीं करते। तो आइए, वर्ण-विपर्यय को जाने।

वर्ण-विपर्यय का स्वरूप हमें 'ह्' के साथ न/म/ल और व के संयुक्त होने पर देखने में आता है; जैसे-

चिह्न	चिन्ह	(ह्+न)
ब्रह्म	ब्रम्ह	(ह्+म)
प्रह्लाद	प्रहलाद	(ह्+ल)
जिह्वा	जिव्हा	(ह्+व)

संस्कृत में चिह्न, ब्रह्म, प्रह्लाद, जिह्वा लिखा जाता है। इन्हें हम शब्द-भेद के अंतर्गत तत्सम शब्द कह सकते हैं किंतु हिन्दी में उच्चारण की कठिनाई के कारण चिन्ह, ब्रम्ह, प्रल्हाद तथा जिव्हा लिखा जा रहा है। लगता है, जिस प्रकार का बदलाव जीवन शैली में आ रहा है, वही बदलाव वर्ण-विपर्यय के रूप में शब्द-संसार में देखने को मिल रहा है। नियम है कि शब्द के मध्य या अंत में ह्+न/म/ल/व में से कोई भी वर्ण आए, तो इन चारों शब्दों में दोहराव आता है; जैसे-

चिह्न	=	चिह्न/न	
ब्रह्म		=	ब्रह्म/म
प्रहलाद	=	प्रह्/लाद	
जिह्वा	=	जिह्व/वा	

इस दोहराव के कारण हमें भ्रम होता है कि न/म/ल/व पहले है, अथवा ह्। इस भ्रम के कारण हम वर्ण-विपर्यय करके चिह्न को चिन्ह, ब्रह्म को ब्रम्ह, प्रहलाद को प्रल्हाद और जिह्वा को जिव्हा लिख देते हैं।

यहाँ यह भी देखने में आता है कि महाप्राण 'ह' अपने को आधे (ह्) रूप में स्वीकार करवाना पसंद नहीं करता है। वह अपना अस्तित्व पूरा बनाना चाहता है, और अपने बाद आने वाले व्यंजनों को आधा बनाकर अपने से पूर्व में पदस्थ कर देता है। यही सब कुछ अपने जीवन में भी हो रहा है। हमारा अपना साथी ही स्वयं के अस्तित्व के बनाए रखने के लिए हमारी आधी शक्ति ले लेता है। यही स्थिति रामचरित मानस में बाली की रही है। वह भी अपने सामने जो भी खड़ा होता था, उसका आधा बल स्वयं ले लेता था। इस प्रकार की उथल-पुथल, व्यापार, राजनीति आदि अनेक स्थानों पर देखने को मिल रही है। अत: हमें अपने अस्तित्व के संकट को बचाने के लिए इस विषय को गहराई से समझना होगा।

शिक्षक को ऐसे शब्दों की सूची छात्रों से बनाने के लिए कहना चाहिए। कुछ शब्द इस प्रकार हो सकते हैं-

	शुद्ध	**अशुद्ध**
ह्+न	अपराह्न	अपरान्ह
	पूर्वाह्न	पूर्वान्ह
ह्+म	ब्रह्मा	ब्रम्हा
	ब्राह्मण	ब्राम्हण
ह्+ल	आह्लाद	आल्हाद
ह्+व	आह्वान	आव्हान
	विह्वल	विव्हल

4.3

वर्तनी सुधार की वैज्ञानिक प्रक्रिया है- वर्ण विन्यास

एक छात्र से मैंने 'विद्या' शब्द लिखने को कहा, उसने लिखा 'विधा'। ऐसे और भी शब्द हैं; जैसे- 'सहस्र', उसने लिखा है- सहस्त्र। तो यह सब इसलिए होता है कि छात्र वर्ण-विन्यास' की प्रक्रिया से अनजान है। वर्ण विन्यास की यह प्रक्रिया संयुक्त व्यंजनों में अधिक देखी जाती है।

ऐसे ही जब मैंने एक शिक्षक से 'ध्रुव' शब्द में कौन सा वर्ण आधा है?

(क) ध् (ख) ध (ग) र् (घ) र - तो शिक्षक महोदय ने 'ध्' वर्ण को आधा बताया।

ये कुछ बातें है, जिन्हें हमें संयुक्त व्यंजन लिखते समय ध्यान में लाना होगा। संयुक्त व्यंजन में आदि, मध्य और अंत के रूपों का हमें अध्ययन अवश्य करना चाहिए। यह संयोग तीन प्रकार से होता है; जैसे-

क. आदि व्यंजन संयोग	ख. मध्य-व्यंजन संयोग	ग. अन्त व्यंजन संयोग
ध्+र= ध्रुव	द्+य= विद्या	स्+र= सहस्र

वैसे संयुक्त व्यंजनों को 'व्यंजन का गुच्छ' भी कहा जाता है। अत: इन व्यंजन- गुच्छों को वर्ण-विन्यास अथवा वर्ण विच्छेद के आधार पर जानना चाहिए, जो वर्तनी-सुधार की वैज्ञानिक प्रक्रिया है। कुछ प्रमुख संयुक्त व्यंजन यहाँ सुविधा के लिए दिए जा, रहे हैं-

क. <u>आदि व्यंजन संयोग</u> :

व्यंजन	विच्छेद	शब्द
क	क्+र	क्रम
ख	ख्+य	ख्याति
ग	ग्+ र	ग्रहण
घ	घ्+र	घ्राण
च	च्+य	च्युत
ज	ज्+य	ज्योति
त	त्+र	त्राण
द	द्+व	द्वार
प	प्+र	प्रेम
ब	ब्+र	ब्रज

व	व्+र	व्रत
श	श्+र	श्री
स	स्+र	स्रोत
ख.	**<u>मध्य व्यंजन संयोग</u> :**	
क	क्+छ	रक्षा
ख	ख्+य	व्याख्या
ग	ग्+न	अग्नि
ङ	ङ+ख	पङ्खा
च	च्+च	उच्चारण
ज	ज्+व	उज्ज्वल
त	त्+थ	पत्थर
द	द्+ध	उद्धार
न	न्+ज	अन्जन
ट	ट्+ठ	गट्ठर
ड	ड्+ढ	बुड्ढा
र	र्+ध	अर्घ्य
ल	ल्+य	कल्याण
श	श्+र	विश्राम
ग.	**<u>अन्त व्यंजन संयोग</u> :**	
क	क्+य	वाक्य
ख	ख्+य	सांख्य
ग	ग्+य	भाग्य
घ	घ्+र	व्याघ्र
र	र्+य	कार्य
ल	ल्+य	दौर्बल्य
व	व्+र	तीव्र
श	श्+य	दृश्य
स	स्+व	ह्रस्व

यह सूची कितनी भी बड़ी हो सकती है किंतु इसे देने का मुख्य लक्ष्य है कि हमारा ध्यान व्यंजन–संयोग पर अवश्य जाना चाहिए। यह तभी संभव होगा, जब हम वर्ण–विच्छेद की प्रक्रिया को भली–भाँति आत्मसात् कर लेंगे। वर्ण विच्छेद का एक उदाहरण यहाँ दिया जा रहा है–

कर्म = क्+अ+र्+म्+अ

कर्म में 'क' तथा क्रम में 'क' क्रमशः पूरा और अधूरा है। इसी प्रकार कर्म में र आधा तथा क्रम में र पूरा है। यह अंतर हमें वर्ण विन्यास करने पर ही समझ में आएगा। इसका पर्याप्त

अभ्यास हमें छात्रों को कराना होगा।

प्राथमिक कक्षा से ही 'वर्तनी-सुधार के अंतर्गत जो प्रयत्न किए जाते हैं, उस सम्बन्ध में शिक्षक को प्रारंभ से ही जानकारी होना आवश्यक है, इसके अभाव में वर्तनी सुधार की प्रक्रिया को वह ठीक से नहीं कर सकता। ये प्रयत्न इस प्रकार हो सकते हैं-

1. **मानक वर्तनी का अभ्यास :** भारत सरकार द्वारा प्रकाशित मानक वर्तनी का अध्ययन करना, जिससे भ्रम की स्थिति न बने।

2. **वर्तनी भेद के कारण :**

क. **उच्चारण की अशुद्धता** -क्योंकि वर्तनी का सबसे बड़ा आधार उच्चारण है। हस्व, दीर्घ, संयुक्त अक्षर।

ख. **हिन्दी ध्वनियों के प्रति अज्ञानता** - व्यतिरेकी ध्वनियाँ।

ग. **शब्द रचना के नियमों का ज्ञान न होना**- वर्ण-विन्यास, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास।

घ. **व्याकरण के ज्ञान का अभाव** -

ङ **लिपि के समुचित ज्ञान का अभाव**- वर्णों की आकृति।

च. **विदेशी भाषा का प्रभाव**-वैकल्पिक ढँग- वृत्त मुखी।

छ. **सुलेख अनुलेख और श्रुतलेख का अभाव।**

3. **वर्तनीगत भूलें**-

क. व्यतिरेकी ध्वनियाँ - अ/आ, इ/ई, उ/ऊ, ओ/औ।

ख. ऋ कार अनुस्वार-अनुनासिक, विसर्ग।

ग. रू, ण-न, व, ब, छ-क्ष, श,ष,श्र, संयुक्ताक्षर, संधि-नियम, समास, प्रत्यय, लिंग, संख्यावाचक।

घ. एक लिपि के सम्यक् ज्ञान का अभाव-द्वित्व व्यंजन, शिरोरेखा, योजक-चिह्न, हलन्त का प्रयोग, संख्यावाचक शब्द।

4. **निवारण के उपाय :**

क. निरोधात्मक उपाय -

1. शुद्ध उच्चारण का अभ्यास।
2. लिपि चिह्नों का सही ज्ञान।
3. वर्ण-विन्यास सम्बन्धी खेल।

ख. उपचारात्मक उपाय-

1. लिखित कार्य का नियमित एवं शुद्ध संशोधन।
2. संशोधित शब्दों का अभ्यास। 5-5 बार लिखवाना।
3. शुद्ध-वाचन
4. यांत्रिक अभ्यास।
5. शब्दकोश निर्माण।

5

लिपि

5.1
चाक्षुष भाषा है- देवनागरी लिपि

लिपि का विकास कब और कैसे हुआ। इस सम्बन्ध में भारत का क्या योगदान है। कृपया बतलाने का कष्ट करें। शुद्ध-लेखन प्रतियोगिता में भाग लेते समय कुछ छात्रों के सामने एक शिक्षक ने मुझसे प्रश्न किया। प्रतियोगिता में निर्णायक बनकर मैंने भाग लिया था।

भारतीय ग्रंथों में अति प्राचीनकाल से लेखन कला एवं लेखन सामग्री के प्रमाण मिलते है। प्रारंभ में इस कार्य के लिए शिला-लेखों का प्रयोग प्रमाण है। इसके अतिरिक्त प्राचीन ग्रंथों में विभिन्न प्रकार की स्याही का भी उल्लेख मिलता है।

ऋग्वेद में वर्णन है कि राजा सावर्णिक ने एक सहस्र अष्टकर्णी (जिनके कानों में आठ की संख्या अंकित थी।) गाएँ दान में दी थी। पाणिनि के अष्टाध्यायी में लिपि शब्द का प्रयोग हुआ है। महाभारत में भी ऐसा एक वर्णन पढ़ने को मिलता है कि महर्षि व्यास ने गणेश जी से महाभारत की कथा लिपिबद्ध करने को कहा था। गणेश जी ने एक शर्त पर यह कार्य किया। व्यास जी लगातार बोलते रहेंगे, और मैं लिखता रहूँगा। जैसे ही वे कथा सुनाना बंद कर देंगे, मैं लिखना बंद कर दूँगा। इस बात को ध्यान में रखने का प्रस्ताव स्वीकार करके व्यास जी ने भी लेखक के सम्मुख एक शर्त रखी कि आप जो भी लिखेंगे, समझकर लिखेंगे। आप जो लिख रहे हैं, यदि उसका अर्थ नहीं जानते हैं, तो मैं बोलना बंद कर दूँगा। साक्ष्य के रूप में स्वयं ब्रह्मा वहाँ उपस्थित हुए थे। यह घटना भी महाभारत काल में लिपि के रूप का प्रमाण है। चीनी यात्री ह्येन सांग के अनुसार भारतीय वर्णमाला के जनक ब्रह्मदेव है। विदेशी लोग लिपि की उत्पत्ति विदेशों से जोड़ते है, जो कि सर्वथा भ्रामक है।

ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी तक ब्राह्मी लिपि का विकास पूरे भारत में हो चुका था। शिलालेखों से इसकी पुष्टि होती है। आज जो लिपि प्रचलित है, उसे देवनागरी लिपि कहते है। देवभाषा संस्कृत के ग्रंथ इस लिपि में ही लिखे गए हैं।

इसका प्रारंभिक रूप सातवीं शताब्दी ई. से उपलब्ध होने लगा। ग्यारहवीं शताब्दी तक यह पूरे भारत की लिपि बन गई।

प्रारंभ में लेखन कार्य में ताड़-पत्रों का उपयोग किया जाता था। बौद्धों का त्रिपिटक ग्रंथ सर्वप्रथम ताड़पत्रों पर ही लिखा गया था। इन्हीं ताड़-पत्रों के संग्रह को छेद कर डोरी से गाँठ बाँध दी जाती थी। गाँठ बाँधने के कारण उक्त संग्रह को ग्रंथ कहा गया। भोज-पत्र पर लिखने का उल्लेख इतिहासकार अलबरुखी ने भी किया है। इसका प्रचलन प्रमुख रूप से उड़ीसा तथा कश्मीर प्रदेश में था। कहीं-कहीं रुई के द्वारा हाथ से बने हुए देशी कागज का प्रयोग भी होता था किंतु महँगा होने के कारण वह चलन में नहीं आया। लेखन कार्य में चमड़े के पट्टे तथा रेशमी और सूती वस्त्रों का भी उपयोग होता था। ताम्रपत्र, रजत-पत्र, स्वर्ण पत्र, लौह-स्तंभो पर राजाओं द्वारा प्रमाण-पत्र, आदेश-पत्र, प्रशस्तियाँ लिखवाई जाती थीं।

साधारण जनता लेखन कार्य में लकड़ी के पाटों या तख्तियों का प्रयोग करती थी। जब मैंने विद्यालय में प्रवेश लिया (1940 के लगभग), तब पत्थर की स्लेट पर छात्र खड़िया से लिखते थे। अक्षर-ज्ञान उसी स्लेट पर करवाया जाता था।

बौद्ध ग्रंथ 'ललित विस्तर' में उल्लेख है कि शिशु अवस्था में गौतम बुद्ध को उनके गुरु-विश्वामित्र ने चंदन की तख्ती और सोने की कलम से लिखना सिखलाया।

ब्राह्मी लिपि से देवनागरी लिपि उत्पन्न हुई। आज भारत में तथा विदेशों में इस देवनागरी लिपि में ही ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाएँ तथा समाचार आदि प्रकाशित हो रहे हैं। इसकी लोकप्रियता का कारण इसकी वैज्ञानिकता है। विज्ञान ने भी इसे संसार की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि माना है। भारत के संविधान में इसको राष्ट्रीय लिपि के रूप में स्वीकार किया गया है। किंतु दासता की मनोवृत्ति वाले मुट्ठीभर अँग्रेजी प्रेमी जो वस्तुत: हिंदी के विरोधी हैं, उन्होंने इस संस्कृति से जोड़ने वाली हृदय की भाषा के विरुद्ध पेट की भाषा (अँग्रेजी) का सहारा ले रखा है। आशा है, भारत के लोग उनके इस षड़यंत्र को शीघ्र पहचानेंगे, और विफल कर देंगे। इन्होंने लिपि के साथ एक और छेड़छाड़ शुरू की है। आजकल देवनागरी को रोमन लिपि में लिखने का ये प्रयोग कर रहे हैं। आशा है, भारत के लोग इस देवनागरी को रोमन-भाषा में लिखने का विरोध करेंगे। इसी भावना को लेकर नवयुवकों से देवनागरी को हृदय से स्वीकार करने का हमें प्रयास करना होगा।

‖02‖

शब्द

2.1
लोक व्यवहार में प्रचलित - देशज शब्द

''हिंदी में मूल स्रोत के आधार पर चार प्रकार के शब्द भंडार का अध्ययन किया जाता है। तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी। इनमें तत्सम शब्दों के विषय में कहा गया है कि वे संस्कृत भाषा से यथावत स्वीकार किए गए है। तद्भव शब्द भी संस्कृत के हैं किंतु उनका रूप परिवर्तित हो गया है। देशज तथा विदेशी-शब्दों में विदेशी शब्द तो वे हैं- जो अन्य विदेशी भाषाओं से आए है किंतु देशज शब्दों की चर्चा किसी भी पुस्तक में विस्तार से पढ़ने को नहीं मिलती है। देशज का शाब्दिक अर्थ है- देश की भाषाओं से उद्धृत शब्दावली। अत: इन शब्दों को लोक भाषा के वाहक के रूप में जान सकते हैं। कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालें।''- एक कार्यक्रम में किसी श्रोता ने यह प्रश्न मुझसे पूछा।

''निश्चय ही देशज शब्दों के विषय में यह ज्ञात नहीं होता कि इनका विकास किस प्रकार हुआ। इसी प्रकार इनकी व्युत्पत्ति (रचना) भी अज्ञात है। लगता है, देश की जन-बोलियों से अथवा देश की अन्य भाषाओं से समय-समय पर हिंदी में जो शब्द आते गए, उन्हें देशज शब्द कहा जाने लगा।''- मैंने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए पुन: कहा- आचार्य हेमचंद के अनुसार देशज शब्दों का सम्बन्ध संस्कृत से किसी भी प्रकार से नहीं जोड़ा जा सकता। कुछ विद्वानों ने ध्वन्यात्मक (अनुकरण मूलक) शब्दों को भी देशज शब्दों से जोड़ दिया है। कुछ लोग अनार्य अथवा आदिम जाति की बोलियों से आए शब्दों को देशज मानते हैं। इसी प्रकार कुछ विद्वान् देश की क्षेत्रीय तथा अन्य भारतीय लोक-भाषाओं से गृहीत शब्दों को भी देशज शब्द मानते हैं किंतु सभी विद्वान यह स्वीकार करते हैं कि देशज शब्द लोक-भाषा की उपज हैं। इनकी विशेषता यह है कि संस्कृत की किसी धातु अथवा व्याकरण के नियमों के आधार पर इनको नहीं पहचाना जा सकता। इनका स्रोत किसी निश्चित आधार से ज्ञात नहीं हो पाता।

कुछ उदाहरणों द्वारा यह स्पष्ट होता है-

1. अनार्य भाषाओं (द्रविड़ परिवार) के लगभग 450 शब्द ऐसे है, जो संस्कृत में ग्रहण कर लिए गए थे, तदुपरांत हिंदी में आए; जैसे- घोटक, बाण, पुष्प, पूजा, कला, नाना, पिक, मयूर, कोकिल, कीचक, कम्बल, अणु, कदलि, मर्कट, पिल्ला (कुत्ते का बच्चा) आदि।
2. अन्य क्षेत्रीय भाषाओं से, यथा-संताली भाषा से कूँडी, कोडी, हाँडी आदि।
   - मराठी भाषा से वाङ्मय, टिकाऊ, पटेल, चलतू आदि।
   - गुजराती भाषा से गरबा, हड़नाल।

- पंजाबी भाषा से सिक्ख, खालसा, भांगड़ा आदि।
- बंगला भाषा से रसगुल्ला, चमचम, संदेश, गल्प, भद्र, उपन्यास, गमछा आदि।
- ओडिया भाषा से- अटका आदि।

3. ध्वन्यात्मक शब्द- भड़भड़, तड़तड़, कलकल, छपछप, झलमल, खटखट, तड़ातड़, चमचम, जगमग, पों-पों, भों-भों आदि।
4. इसके अतिरिक्त वे शब्द जिनकी व्युत्पत्ति के विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता; यथा- ढुलमुल, भोंदू, टीस, ठेख, थोथा, मुस्टंडा आदि।
5. कुछ अन्य उदाहरण - कंजर, कबड्डी, कलाई, कटोरा-कटोरी, खिचड़ी, गाँठ, गागर, छपला-घाघरा, चम्पत, चिड़िया, चूहा, छोरा, छोरी, जूता, झोला, झुग्गी, टट्टू, टटिया, टीस, कुदाल, टाँग, डाब, डोर, डिबिया, डोंगा, ढेंचा, ढेंगली, तरकारी, तोता, धोबी, धोती, परपटी, पगड़ी, पेड़, बजट, बहू, बाजरा, मोंचा, बाबाजी, बूकना, बियाना, बिल्ली, भंगी, भेडिया, मुर्गा, मेंढा, मिर्च, रसिया, रोटी, रस्सा, लोटा, साफा, साफी, सोटा सिली।

इस प्रकार भाषा विकास की दृष्टि से शब्द-सम्पदा में चार प्रकार के मूल स्रोत ही हिंदी में स्वीकार किए गए है। पहले वे शब्द हैं जो अपने पूर्वजों से हमें प्राप्त हुए हैं। इन्हें तत्सम तथा तद्भव की श्रेणी के अंतर्गत रखते हैं। दूसरे वे शब्द हैं, जिनका मूल स्रोत अज्ञात है अथवा लोक-भाषाओं में निहित है। तीसरे प्रकार के शब्दों का वह समूह है जो विदेशी भाषाओं से संबंधित है और समय-समय पर हिंदी भाषा के साथ जुड़ जाते हैं। ये विदेशी शब्द या तो मूल रूप में अथवा तत्सम रूप में स्वीकृत किए जाते है। इन विदेशी भाषा के शब्दों की प्रकृति हमारी भाषा के अनुकूल नहीं होती और न इन पर व्याकरण के नियम लागू होते हैं। फिर भी इन्हें ग्रहण किया जाता है। व्याकरण की समझ इससे व्याघात पहुँचता है। संभवत: इन्हीं व्याघातों के कारण ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में महर्षि पतंजलि ने क्षुब्द होकर कहा था- **'व्यत्ययो हि बहुला।'**

अर्थात् बहुत विपर्यय हो रहा है परंतु इन्हीं व्यत्ययों के कारण आगे चलकर प्राकृत, अपभ्रंश एवं आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं विशेषकर हिंदी का विकास हुआ। विश्व के सभी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में इन चार प्रकार के शब्दों को प्रमुखता से स्थान दिया है। मिल्टन ने अपने साहित्य में 8 हजार, होमर ने 9 हजार, शेक्सपियर ने 15 हजार तथा संत तुलसी ने 16 हजार शब्दों का प्रयोग इस प्रकार के भावों को ग्रहण करके ही किया है। वैज्ञानिक प्रगति तथा तकनीकी शब्दों की अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता के कारण आज अनेक शब्दों का निर्माण भी द्रुतगति से हो रहा है। अत: हिंदी की विकास मान प्रवृत्तियों को समझना है, तो इस विषय पर गंभीरता से अध्ययन करना होगा और ध्यान रखना होगा कि विदेशी शब्दों की आँधी में देशज शब्द गुमनामी में न खो जाएँ। इनका सम्बन्ध हमारी लोक-संस्कृति तथा अस्मिता से जुड़ा हुआ है। 'गाय' को 'काऊ' कहने पर छात्र 'गाय' कहना ही भूल जाएँगा, तो गौमाता के स्थान पर वह उसे पशु-मात्र समझने लगेगा। अत: लोक व्यवहार में प्रचलित शब्दों की उपेक्षा नहीं की जा सकती, इस बात का ध्यान शिक्षक को भी शिक्षण करते समय रखना होगा।

संभव हो तो ऐसे शब्दों का संकलन भी तैयार कर सकते हैं।

2.2

परकीय प्रेम की तरह बढ़ रहा है- परकीय शब्दों का प्रयोग

क्या आपको ऐसा नहीं लगता है कि आजकल अँग्रेजी शब्दों को जस का तस हिन्दी में बातचीत करते समय बोले जाने का चलन बढ़ता जा रहा है। यह ठीक है कि अपने विचारों की अभिव्यक्ति को सरल और सहज बनाने के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाना उचित है किन्तु बोलने तथा लिखते समय हिन्दी के कर्णप्रिय शब्दों का प्रयोग भी ध्यान में रखना चाहिए अन्यथा आसान भाषा के नाम पर यह बाजारू भाषा बन जाएगी।

इसी प्रकार यह भी आवश्यक नहीं है कि भाषा को वजनदार बनाने के लिए क्लिष्ट शब्द ठूसे जाएँ। उदाहरण स्वरूप एक सज्जन घर से निकले और शुद्ध हिन्दी बोलने की उनकी इच्छा हुई। उन्होंने एक आटोवाले से कहा- ''त्रिचक्रीय चालक, पूरे भोपाल नगर के परिभ्रमण में कितनी मुद्राएँ व्यय होंगी?'' आटो वाले ने कहा- ''अबे, हिन्दी में बोल न।''

उन्होंने कहा- ''श्रीमान! मैं हिन्दी में ही वातार्लाप कर रहा हूँ।''

आटो वाला बोला-''तुम मुझे पागल समझते हो, चलो बैठो कहाँ चलना है?'' उन्होंने कहा-''परिसदन चलना है।'' आटो वाले का सर चकराया। वह बोला- ''यह परिसदन कहाँ है?'' तभी पास से गुजर रहे किसी ने कहा- ''अरे! सर्किट हाउस जाएगा।'' आटो वाले ने सिर खुजलाया और बोला- ''बैठिए प्रभु!'' रास्ते में वे फिर बोले- ''भोपाल छबिगृह की ओर से चलना है।'' आटो वाले ने कहा- ''यह छबिगृह कहाँ है?'' उन्होंने कहा- ''चलचित्र मंदिर।'' आटो वाला बोला -''यहाँ तो बहुत से मंदिर है- राम मंदिर, हनुमान मंदिर, बिड़ला मंदिर....।'' उन्होंने कहा- ''मैं उस मंदिर की बात कर रहा हूँ, जहाँ नायक-नायिका प्रेमालाप करते हैं।'' आटोवाला कुछ समझता कि सामने वाली गाड़ी से टकरा गया, तो आटो का अगला पहिया टेढ़ा हो गया। वे सज्जन बोले- ''त्रिचक्रीय चालक, तुम्हारा अग्र चक्र तो वक्र हो गया।'' आटोवाला उन्हें घूरकर देखने लगा और बोला-''मुझे माफ कर दो मेरे बाप! किसी और रिक्शे से चले जाओ।''

इस घटना से यही सिद्ध होता है कि हिन्दी सेवी कहलाने वाले लोग भाषा की सहजता का ध्यान अवश्य रखें। यह तभी संभव होगा, जब हम शब्दों के विषय में यह जाने कि आज के वातावरण के अनुसार हमें कैसे शब्दों का प्रयोग करना उचित होगा। कुछ शब्द हमारे संस्कारों से जुड़े हैं। उनका प्रयोग हमें अवश्य करना चाहिए। इस दृष्टि से हिन्दी शब्दों की अभिव्यक्तियाँ

अद्वितीय है; जैसे- अभिनंदन सुनते ही लगता है कि हमारा सम्मान बढ़ गया है। मनमोहन-कहते ही कृष्ण के मन मोहक सौंदर्य की ओर ध्यान चला जाता है। अदृश्य कहते ही जो दिखाई न दे का भान हो जाता है आदि। इसी प्रकार अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी आर्थिक तथा राजनैतिक कारणों से अनिवार्य हो गया है; जैसे- अंतरिम, अकादमी, तकनीक, त्रासदी जैसे शब्द का प्रयोग अब हर व्यक्ति कर रहा है, जबकि ये हिन्दी के शब्द नहीं है। ये शब्द अँग्रेजी शब्दों के बदले हुए रूप हैं।

इस दृष्टि किसी भी भाषा का शब्द भंडार उत्पत्ति के आधार पर दो प्रकार से बाँटा जा सकता है:-

1. स्वकीय शब्द भंडार 2. परकीय शब्द भंडार

1. स्वकीय शब्द :

किसी भाषा की सांस्कृतिक पहचान कराते हैं। इन शब्दों को तद्भव तथा देशज नाम से जाना जाता है। हिन्दी भाषा को संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश से जो शब्द-भंडार प्राप्त हुआ है, वह इसी के अंतर्गत आता है।

2. परकीय शब्द :

समाज के रीति-रिवाज, रहन-सहन के तरीके में परिवर्तन होने पर नए-नए शब्दों का प्रयोग भाषा में होता रहता है। यह परिवर्ततन बहुत कुछ आर्थिक तथा राजनैतिक कारणों से होता है। यही कारण है कि शब्दकोश में ऐसे शब्द जो कि चलन से हट गए है, हटा दिए जाते हैं; और जो चलन में मान्य हो जाते हैं, उनका प्रयोग समावेश कर दिया जाता है।

अतः हमें परकीय शब्दों को, जो कि विदेशी शब्द है, सोच समझ कर प्रयास करना चाहिए।

भगवान कृष्ण ने जिस प्रकार स्वकीय तथा परकीय प्रेम का एक साथ निर्वाह किया था, उसी प्रकार हमें भी भाषा में इसका उचित संतुलन बैठाना होगा। राधा-कृष्ण कहकर केवल परकीय-प्रेम को बढ़ावा देना हमारी संस्कृति में कभी नहीं रहा है। भाषा में स्वकीय (तद्भव तथा देशज) शब्दों के साथ परकीय (विदेशी) शब्दों का अधिक चलन कहीं हमारी संस्कृति की पवित्रता को नष्ट न कर दे, यह प्रयास हर हिन्दी-प्रेमी का होना चाहिए। शब्दों को अपना बनाना तद्भव शब्दों की चलन में पहले भी था, आगे भी रहेगा; किंतु वह सहज होना चाहिए। परकीय-प्रेम में पागल होने से हमें बचना चाहिए। परकीय शब्दों को अपना बनाना और बात है, उसके प्रेम में उसके वशीभूत होकर बातचीत में उसका अधिक से अधिक प्रयोग करना अपनी संस्कृति को संकट में डालने के समान है।

परकीय शब्दों पर आधारित 'कार्पोरेट गीता' के कुछ उपदेश दिए जा रहे हैं, जो किसी कार्यालय में पदस्थ कर्मचारियों के ध्यान को आकर्षित करने के लिए लगाए गए हैं। उसका आनन्द लीजिए-

हे कर्मचारी,

* ''तुम पिछले इंक्रीमेंट की चिंता मत करो।''

*''तुम अगले प्रमोशन की चिंता मत करो।''

*''बस अपनी करंट पोस्टिंग से ही प्रसन्न रहो।''

*''तुम जब नहीं थे, तब भी यह आफिस चल रहा था।''

*''जो लेपटाप आज तुम्हारा है, कल वह किसी और का था।''

*''वह कल किसी और का होगा।''

*''तुम इसे अपना समझकर एन्जाय कर रहे हो।''

*''यही तुम्हारे समस्त दु:खों का कारण है।''

*''प्रमोशन, इंक्रीमेंट जैसे शब्दों को अपने मन से निकाल दो।''

*''फिर तुम इस आफिस के, और ये आफिस तुम्हारा होगा।''

2.3

विलोमार्थी शब्द बनाने में अ/अन् का अनप्रयोग

एक कार्यशाला में मैंने विलोमार्थी शब्द बनाने का सूत्र बताते हुए कहा कि, ''जिन शब्दों में विशेषणात्मक गुण नहीं होता, उनके विलोमार्थी नहीं बनाए जा सकते क्योंकि विलोमार्थी शब्द बनाने में यह ध्यान रखा जाता है कि वह शब्द विरोध तो बताए किन्तु निषेधात्मकता का सूचक न हो।''

''बात कुछ स्पष्ट नहीं हुई''- एक शिक्षक महोदय बोले!

मैंने कहा- इसे निम्नलिखित उदाहरण से समझिए।

उदा. - लड़की सुन्दर है।

- लड़की असुन्दर है।
- लड़की सुन्दर नहीं है।

इन तीनों वाक्यों में तीसरे प्रकार का वाक्य निषेध का सूचक है। दूसरे प्रकार के वाक्य में सुन्दर में 'अ' लगाकर विलोमार्थी शब्द 'असुन्दर' का प्रयोग किया गया है, जो कि विपरीतार्थी शब्द तो है किन्तु वाक्य-गठन की दृष्टि से उचित नहीं है। यही कारण है कि विपरातार्थी अथवा विलोमार्थी शब्द बनाते समय किसी भी शब्द में 'अ' अन्यथा 'अन्' लगाकर उसका प्रयोग करना ठीक नहीं। ध्यान दें विलोमार्थी शब्द दो प्रकार से बनाए जा सकते हैं-

1. मूल विलोमार्थी शब्द; जैसे- रात-दिन, आदि-अंत, उत्थान-पतन आदि।
2. व्युत्पन्न (बनावट के आधार पर) विलोमार्थी शब्द- ऐसे शब्दों को उपसर्ग 'अ/अन्' के आधार पर बनाया जाता है; जैसे- अभाव। यहाँ मूल शब्द भाव है, जिसमें 'अ' उपसर्ग जुड़ा है, जो कि विपरीतार्थी भाव दे रहा है।

एक और उदाहरण ले-अनभिज्ञ। यहाँ मूल शब्द भिज्ञ (परिचित) में 'अन्' उपसर्ग लगाकर विपरीतार्थी शब्द बनाया गया है- अन्+भिज्ञ (अपरिचित)।

''महोदय, यह तो स्पष्ट हुआ कि मूल विलोमार्थी शब्दों के अलावा व्युत्पक विलोमार्थी शब्द भी होते हैं। किन्तु मूल के स्थान व्युत्पन्न शब्द की रचना करते समय कहाँ 'अ' लगाया जाता है, और कहाँ 'अन्' उपसर्ग लगाया जाता है, इसको भी स्पष्ट करने का कष्ट करें। यह कठिनाई प्राय: हमें आती है - किसी शिक्षक ने मुझसे आग्रह किया।

इसे भी जानिए- 'अ' उपसर्ग का प्रयोग व्यंजन से प्रारंभ होने वाले शब्दों में होता है, जैसे- विश्वास- अविश्वास।

'अन्' उपसर्ग का प्रयोग स्वर शब्दों से प्रारंभ होने वाले शब्दों में होता है, जैसे–आदर–अनादर।

अत: छात्रों को पढ़ाते समय हमें निम्नलिखित तालिका को आधार बनाकर विषय स्पष्ट करना चाहिए।

' अ' उपसर्ग लगाकर (व्यंजन वाले शब्दों में) 'अन्' उपसर्ग लगाकर (स्वरों में)

निश्चित	–	अनिश्चित	आस्था	–	अनावस्था
स्वीकृत	–	अस्वीकृत	उत्पादक	–	अनुत्पादक
स्थिर	–	अस्थिर	आवरण	–	अनावरण
हिंसा	–	अहिंसा	उपयुक्त	–	अनुपयुक्त
समय	–	असमय	अभ्यास	–	अनभ्यास

किंतु हर नियम की तरह इस नियम के भी अपवाद हैं, इस ओर छात्रों का ध्यान अवश्य दिलाएँ –

1. तद्‌भव शब्दों के विलोम तद्‌भव, तथा तत्सम शब्दों के विलोम तत्सम शब्द ही हो सकते हैं; जैसे–'आय' का विलोम 'व्यय' ही होगा, खर्च नहीं।
2. यदि विलोमार्थी शब्द हिन्दी का है, तो उसका विलोम हिन्दी शब्द ही होगा, किसी अन्य भाषा का नहीं; जैसे- जीवन–मरण उर्दू भाषा में कहें तो जिंदगी और मौत।
3. अनकहा, अनसुना–कुछ ऐसे शब्द हैं, जो अँग्रेजी भाषा के अनुवाद के रूप में हिन्दी में आए हैं। अत: यहाँ 'क' व्यंजन होने पर भी 'अन' उपसर्ग लगा है जो कि अँग्रेजी के untold शब्द का अनुवाद है।

विशेष : संस्कृत में नण् तत्पुरुष समास के उपभेद के रूप में स्वीकृत किया गया है, जिसका पहला पद अ/अन् अथवा न निषेधात्मक होता है।

2.4

उपसर्गों द्वारा विलोमार्थी शब्दों का निर्माण

''एक प्रश्न शब्दों की रचना से संबंधित पूछना चाहता हूँ, यदि आप कहें तो पूछूँ।''- एक जिज्ञासु ने प्रश्न किया।

मेरी अनुमति पाकर उन्होंने प्रश्न किया-''हिन्दी की ऐसी दो ध्वनियों की पहचान बताइए, जो अकेले ही शब्द और उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त हुई हों?''

प्रश्न उनका सटीक था। उत्तर में मैंने 'अ' और 'आ' ध्वनियों का उल्लेख करते हुए उनसे कहा कि-ये दो ही ध्वनियाँ ऐसी हैं, जिनके विषय में यह कहा जा सकता है कि ये शब्द भी हैं और उपसर्ग भी; जैसे -

अ- सुन्दर- असुन्दर (उपसर्ग के रूप में)
सहमति- असहमति (उपसर्ग के रूप में)

आ- तू आ मैं तो नहीं 'आ' सकता। (क्रिया के रूप में)

किन्तु ध्यान रहे 'अ' का प्रयोग हम स्वतंत्र रूप में नहीं कर सकते। अत: 'अ' शब्द नहीं 'शब्दांश' है। 'सुन्दर' शब्द को हम एक अर्थवान इकाई कहेंगे। इसमें 'अ' शब्दांश जुड़ने पर इसका अर्थ सुन्दरता से रहित हुआ। अत: 'अ' भी एक अर्थवान इकाई है।

एक बात और यहाँ समझना होगा कि सुन्दर तथा 'अ' में प्रयोग की दृष्टि से एक आधारभूत अन्तर है। 'सुन्दर' शब्द का प्रयोग हम स्वतंत्र रूप से कर सकते हैं किन्तु 'अ' का नहीं। इसका उपयोग हम किसी अन्य इकाई के साथ जुड़ने पर ही कर सकते है। अत: शब्द के दो रूप होते है। एक वे शब्द जो स्वतंत्र रूप से प्रयोग में आते हैं। व्याकरण की भाषा में इन्हें शब्द कहते हैं। दूसरे वे जिनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता। अत: इन्हें उपसर्ग या प्रत्यय कहते हैं।

शब्दकोश में ऐसे सहस्रों शब्द हैं, जिनका उपयोग करते समय उनके रूपों में परिवर्तन करना पड़ता है। शब्दों का संकलन शब्दकोश के निर्माण में सहायक होता है किन्तु सभी शब्दों का संग्रह करना किसी भी भाषा के 'शब्दकोश' के लिए संभव नहीं होता है। अत: शब्द-रचना करने के लिए कुछ शब्दों में उपसर्ग तथा प्रत्ययों का उपयोग करना पड़ता है।

हिन्दी में ऐसे तद्भव उपसर्गों का प्रयोग बहुलता से मिलता है। विलोमार्थी शब्द बनाने में उपसर्गों का प्रयोग किस प्रकार होता है, अब इस पर विचार कीजिए-

अ (नहीं)	:	मर–अमर
अन् (अभाव/रहित)	:	सुना–अनसुना
सु (अच्छा)	:	पुत्र–सपुत्र
कु (बुरा)	:	पुत्र–कुपुत्र
नि (बिना)	:	डर–निडर

शिक्षकों को चाहिए कि इस प्रकार शब्द–रचना पढ़ाते समय ऐसे पहलुओं को उजागर करना चाहिए। विलोमार्थी शब्द– शब्दों के अर्थभेद के अंतर्गत आते हैं, जबकि उपसर्ग का प्रकरण–शब्द–रचना के अंतर्गत आता है। इन दोनों प्रकरणों को पढ़ाते समय हमें इन दोनों के परस्पर सम्बन्ध को स्पष्ट करना होगा। तभी उपसर्गों के पढ़ाने की सार्थकता अर्थात् उद्‌देश्य सफल होगा। व्याकरण सिखाने की यही सही विधि है। पाठ–पठन द्वारा प्रकरण स्पष्ट कर देने मात्र से काम नहीं चलता। फिर छात्रों को ऐसे शब्दों को एकत्रित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जो विलोमार्थी हों। भाषा में समानार्थी शब्द होना संभव नहीं किन्तु विलोमार्थी शब्द अवश्य निश्चयात्मक रूप से होते हैं।

अत: उपसर्गों के द्वारा विलोमार्थी शब्दों के निर्माण की इस प्रक्रिया को हमें अवश्य छात्रों को समझाना चाहिए। उपसर्गों को पूर्व प्रत्यय भी कहा जाता है। इनको बनाने की प्रक्रिया निम्नानुसार है –

अ+काल (संज्ञा)	=	अकाल (संज्ञा)
अन+मोल (संज्ञा)	=	अनमोल (विशेषण)
अ+चूक (संज्ञा)	=	अचूक (विशेषण)
अन+चाहा (विशेषण)	=	अनचाहा (विशेषण)
अ+थक (क्रिया)	=	अथक (विशेषण)
अन+गढ़ (क्रिया)	=	अनगढ़ (विशेषण)
अ+ज्ञानी (विशेषण)	=	अज्ञानी (विशेषण)
अन+जाने (विशेषण)	=	अनजाने (क्रिया–विशेषण)

2.5

संस्कृति की पहचान कराते- संख्यावाची शब्द

किसी विद्यालय में गणेशोत्सव का आयोजन हो रहा था। छात्रों ने गणेश जी की आरती की; और 'जय गणेश देवा' का सामूहिक रूप से गायन किया। तत्पश्चात् सभी छात्र अपनी अपनी कक्षा में जाने लगे। संयोग से वहाँ के प्राचार्य मेरे परिचित थे। उन्होंने आग्रह किया कि आज आप कक्षा 10 के छात्रों को व्याकरण के विषय में कुछ बताइए। मैंने उनके आग्रह को स्वीकार किया; और उनके साथ कक्षा 10 में प्रवेश किया।

कक्षा अध्यापक तथा छात्रों ने 'प्रणाम' कहकर हमारा स्वागत किया। तभी प्राचार्य महोदय ने व्याकरण की रोचक बातें बताने वाले शिक्षक के नाते मेरा परिचय छात्रों को दिया।

छात्रों को व्याकरण जैसे शुष्क विषय पर रोचक बातें सुनने की आतुरता देख, मैंने छात्रों से एक प्रश्न पूछा- ''आज आप सब गणेश-वंदना करते समय गणेश जी को 'एक दन्त' कह रहे थे। जानते हैं, उनको एक दन्त क्यों कहा जाता है?''

छात्र इस विषय से अनभिज्ञ थे। तभी एक छात्र ने उस कथा को सुनाने के लिए आग्रह किया, किंतु मैंने उसके आग्रह को यह कहकर टाल दिया कि मुझे तो व्याकरण पर ही चर्चा करना है। अत: 'एक दन्त' की कथा आपको शिक्षक महोदय फिर कभी बतलाएँगे। यहाँ मैं शब्द रचना की दृष्टि से एक दन्त की कथा के संदर्भ को लेकर अपने विषय को प्रस्तुत करते हुए आप लोगों को यह बतलाना चाहता हूँ कि व्याकरण में जो संख्यावाची शब्द होते हैं, वे भी हमसे संस्कृति की बात करते हैं; जैसे- 'एक दन्त' शब्द को ही लें। यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। एक+दन्त जिसका सीधा अर्थ है एक दाँत किंतु एक दाँत तो किसी का होता नहीं। मनुष्य तो बत्तीस दाँत वाला होता है। अत: यह शब्द अवश्य किसी ऐसे प्रसंग की ओर संकेत करता है, जिसको जानने के बाद ही उसका सही अर्थ समझ में आ सकता है। इसलिए मैंने आप लोगों से पूछा कि क्या आप एक दन्त की कथा से परिचित है?

जहाँ तक व्याकरण का प्रश्न है- मैं आपसे पुन: पूछना चाहूँगा कि ऐसे शब्दों को व्याकरण में क्या कहते हैं जिनका वही अर्थ न हो, जो कि उसका शाब्दिक अर्थ हो। ऐसे शब्दों का विशेष अर्थ होता है जो कि विशेष संदर्भ की ओर संकेत करता हो। छात्र यह सुनकर मौन हो गए क्योंकि उनको इस प्रकार प्रसंगानुसार व्याकरण के पदों को समझाया ही नहीं गया था। अत: उनकी कठिनाई अनुभव करते हुए, मैंने स्वयं उन्हें स्मरण दिलाया- आपने पाठ्यपुस्तक में समास

के भेदों को उदाहरण सहित पढ़ा अवश्य है; किंतु ध्यान नहीं दिया। अतः आज मैं वही बताना चाहता हूँ।

देखिए शब्दों की संरचना चार प्रकार से होती है-

1. संधि द्वारा 2. समास द्वारा

3. उपसर्ग द्वारा 4. प्रत्यय द्वारा

'एक दन्त' शब्द की रचना में एक+दन्त दोनों पद प्रधान है। ऐसा समास में होता है। अतः एक दन्त- बहुब्रीहि समास है। बहुब्रीहि समास में जब दोनों पद एक स्थान पर मिलकर कोई अतिरिक्त संकेतार्थ बताते हैं, तो वहाँ बहुब्रीहि समास होता है; जैसा कि आपने पढ़ा है- लम्बोदर अर्थात् लम्बा है उदर जिसका (गणेश)।

उपसर्ग तथा प्रत्यय से भी दो शब्द मिलकर नया शब्द बनाने की प्रक्रिया होती है। उपसर्ग में शब्द आगे लगाया जाता है, प्रत्यय में बाद में। एक+दन्त उपसर्ग भी हो सकता है, यह कुछ छात्र सोच रहे होंगे क्योंकि दन्त के आगे एक शब्द लगा है किन्तु ऐसा नहीं है। उपसर्ग में दो शब्द मिलते हैं किन्तु प्रथम शब्द जो कि मूल शब्द के आगे लगाया गया है, वह शब्दांश कहलाता है, जो उसके अर्थ में नयापन लाता है; जैसे- अ +टल यहाँ 'अ' उपसर्ग है, जो कि शब्दांश है। शब्दांश का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता है। अतः एक दन्त में 'एक' उपसर्ग नहीं है।

एक दन्त में संधि नहीं हो सकती क्योंकि संधि में दो शब्द नहीं, दो ध्वनि मिलकर एक नई ध्वनि बनती है। अतः संधि शब्दों में विकार (परिवर्तन) होता है; जैसे- सु +आगत =स्वागत। यहाँ सु+आ की ध्वनि मिलकर 'स्वा' में परिवर्तित हो गई है। अतः एक दन्त संधि भी शब्द नहीं है।

एक दन्त बहुब्रीहि समास है। इस समास में दोनों ही शब्द अपने मूल रूप में रहते हैं।

द्विगु समास भी संख्या वाचक समास है। द्विगु का अर्थ है- द्विगुणित करने वाला अर्थात् एक से अधिक संख्या बताने वाला; जैसे- पंचवटी।

जिस सामासिक पद का प्रथम पद संख्या बोधक हो, वह द्विगु समास होता है। द्विगु भी दो प्रकार के होते हैं-

1. समाहार द्विगु 2. उत्तर पद प्रधान द्विगु

1. समाहार का अर्थ होता है- समूह। अतः जहाँ संख्या किसी समूह का द्योतक होती है, वहाँ द्विगु समास होता है; जैसे- पंचवटी में पाँच वटों का समाहार (समूह) होता है। ऐसे और भी उदाहरण दिए जा सकते हैं।

2. जहाँ उत्तर पद प्रधान हो- द्वैमातुर (यहाँ दो माताओं के अर्थ में होने से मातुर- शब्द उत्तर पद है, जो कि प्रधान है।)

अतः एक दन्त द्विगु समास नहीं हो सकता; तथा दन्त शब्द उत्तर पद प्रधान नहीं है। विग्रह करते समय यह स्पष्ट होता है कि 'एक' समाहार (समूह) नहीं है। बहुब्रीहि समास का विग्रह शब्दात्मक न होकर वाक्यात्मक होता है; जैसे-

नवग्रह (द्विगु समास) चतुर्भुज (बहुब्रीहि समास)

(नौ ग्रहों का समूह)   (चार है भुजा जिनके अर्थात् विष्णु)

अब यहाँ कुछ संख्यावाची शब्द दिए जा रहे हैं, जिनको विग्रह द्वारा पहचानें कि वे द्विगु समास है कि बहुब्रीहि समास–

त्रिभुवन, अष्टाध्यायी, पंचवटी, सतसई, त्रिगुण, त्रिकाल, त्रिलोक, शतचण्डी, सहस्र नयन, एक लिंग, एक नयन, द्विज (चंद्रमा), त्रिदेव, त्रिकूट, त्रिवेणी, त्रिभंगी, त्रिनयन, त्रिलोचन, चतुरानन, पंचदेव, षडराग, षडरस, षडपद, सप्तलोक, सप्तऋषि, सप्तपुरी, सप्तपदी, अष्टसिद्धि, अष्ट छाप, अष्टभुजी, नवरात्र।

शिक्षक–गणों को चाहिए कि उपरोक्त संख्यावाची पदों के संदर्भ में सांस्कृतिक भूमि भी स्पष्ट करने का यत्न करें, तो बात बनेगी। इस सम्बन्ध में रोचकता भी बढ़ेगी, तथा अलग से उन्हें पढ़ाना भी नहीं पड़ेगा। प्रायोजित कार्य के अंतर्गत भी छात्रों को यह कार्य दिया जा सकता है।

2.6

शब्दों का मायाजाल है- समोच्चारित शब्द

एक सज्जन मुझे एक घटना को बड़े ही रोचक और अनूठे ढँग से बता रहे थे। वे कह रहे थे-एक शराबी साधु से टकरा गया। साधु को क्रोध आ गया; और वह बोला-''अरे मूर्ख! मैं तुझे श्राप देता हूँ....।''

तभी शराबी (टोकते हुए) बोला- ''बाबाजी! रुकिए, मुझे गिलास तो ले आने दो।''

इस घटना में श्राप और शराब- दो शब्दों का ऐसा प्रयोग हुआ है कि व्यक्ति कहना कुछ चाहता है, सुनने वाला वही सुनता है, जो उसकी इच्छा होती है। देखिए साधु कहता है 'श्राप' दे दूँगा। शराबी कहता है- गिलास तो ले आने दो, अन्यथा वह शराब कैसे ग्रहण करेगा। इस प्रकार के शब्दों को व्याकरण में क्या कहते हैं? उन सज्जन की जिज्ञासा थी।

निश्चित ही उनकी जिज्ञासा अर्थपूर्ण जानकर मैंने उन्हें बतलाया कि हिंदी में ऐसे अनेक शब्द है, जिनका उच्चारण मात्रा या वर्ण, भेद के बावजूद सुनने में एक-से लगते हैं, किंतु उनके अर्थ में काफी भिन्नता होती है। इनका अर्थगत सूक्ष्म अंतर समझे बिना अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है। इन्हें हम **समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द-युग्म** कहते हैं।

प्राचीन भारत में उच्चारण का इस दृष्टि से बहुत महत्त्व था। एक संस्कृत श्लोक मैंने उन्हें सुनाया-

यद्यपि बहुताधीषे, तथापि पठ् पुत्र व्याकरणम्।
स्वजनः श्वजनो मा भूत, सकलम्-शकलम्, सकृच्छकृत।।

इस श्लोक के द्वारा एक विद्वान-पिता अपने पुत्र से कहता है कि हे! पुत्र यद्यपि तुमने बहुत अध्ययन कर लिया किंतु पढ़कर तुम स्वजन को श्वजन, सकलम् को शकलम् और सकृत को शकृत का उच्चारण नहीं करोगे। क्यों? इसे जानने के पूर्व आप इन शब्दों के भिन्नार्थक युग्म का आशय समझ लें-

स्वजन	-	आत्मीय लोग
श्वजन	-	कुत्ते
सकलम्	-	संपूर्ण
शकलम्	-	अपूर्ण
सकृत	-	एक बार

शकृत - निष्ठा

यहाँ उच्चारण में 'स' के स्थान पर 'श' बोलने का दोष बताया गया है किंतु यहाँ ध्यान हमें यह देना है कि उच्चारण-दोष तथा समोच्चारित भिन्नार्थ शब्द-युग्म में अंतर है। अत: हमें गहराई से इस अंतर को भी समझना होगा। ऐसे शब्दों में उच्चारण तथा श्रवण के आधार पर अंतर किया जा सकता है। ऐसे शब्द-युग्मों की लम्बी सूची प्रस्तुत की जा सकती है किंतु हमें सावधानी यह रखना है कि छात्र इस अंतर को स्पष्ट समझें।

स्वजन-श्वजन; सकल-शकल; सकृत-शकृत- में 'स' तथा 'श' का उच्चारण दोष है, तो सुनने वाला उसका अर्थ गलत ले सकता है, और क्रोध में आकर झगड़े पर उतारू हो सकता है किंतु समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द के रूप में जब हम इनको समझने का प्रयास करेंगे, तो कहा जाएगा कि बोलने वाला तो ठीक से उच्चारण कर रहा है किंतु सुनने वाला उसका अर्थ अपने स्वार्थ सिद्ध करने के अर्थ में लगाता है।

कहा भी गया है- 'कहे खेत की सुने खलिहान की।' अत: प्रयोग तथा अर्थ- दोनों की दृष्टि से समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द-युग्म का विशेष महत्त्व है।

इस प्रकार के शब्दों को व्याकरण की कुछ पुस्तकों में श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द भी कहा गया है। इनका प्रयोग तभी संभव है, जब शब्द-युग्म के रूप में इनका आशय व्यक्ति पृथक-पृथक रूप से जानता हो।

कुछ शब्द उदाहरण के लिए यहाँ दिए जा रहे हैं-

अम्ब (माता, पिता, आम)	अम्भ (जल)
असक्त (विरक्त)	अशक्त (कमजोर)
अचिर (शीघ्र)	अजिर (प्रांगण)
अध (पाप)	अग (सूर्य)
अस्र (आँसु)	अस्त्र (हथियार)
आदि (आरंभ)	आदी (अभ्यास)
कान्ति (चमक)	क्रांति (उलट-फेर)
कपिश (मटमैला)	कपीश (हनुमान, सुग्रीव)
कर्कट (केकड़ा)	करकट (कूड़ा)
छात्र (विद्यार्थी)	क्षात्र (क्षत्रिय सम्बन्धी)
जरा (थोड़ा)	जरा (बुढापा)
द्रव (पिघला हुआ)	द्रव्य (पदार्थ)
परीक्षा (इम्तहान)	परिक्षा (कीचड़)
सप्त (सात)	शप्त (शापित)
संग (साथ)	संघ (समिति)

विशेष : इनमें अनेक शब्द ऐसे हैं, जिनका प्रयोग गद्य की अपेक्षा पद्य में अधिक होता है।

2.7

पुनरुक्त शब्दों की मिठास

व्याकरण में कुछ शब्द ऐसे हैं, जिन्हें दोहराने में आनन्द आता है। आप सोचेंगे, बात-बात में शब्दों को दोहरानें की क्या आवश्यकता है? लेकिन आप नहीं जानते, हिन्दी भाषा को छोड़कर अन्य भाषाओं में यह आनन्द कहीं नहीं मिलता। हिन्दी में तो कुछ शब्दों को दोहराने की जिसे आदत है, उसे समझिए, बातचीत करने में महारत हासिल है। शायद ही आपने, इस ओर ध्यान दिया होगा। तो आइए, थोड़ी गप-शप हो जाए।

मैं बाजार जा रहा था, तो मैंने घर पर सभी से पूछा- 'कौन-कौन' साथ चलेगा? लेकिन यह क्या, तभी रेडियों पर गाना आ रहा था- 'कभी-कभी' मेरे दिल में... तो ध्यान रखें, शब्दों को भी एक-दूसरे का सहारा चाहिए। 'साथ-साथ' रहते हैं, तो उनका आनन्द भी दो गुना हो जाता है।

तभी मेरी पत्नी चाय लेकर आई और कहा- ''चाय पीकर जाइए।''

मैंने कहा- ''गरम-गरम है? जरा ध्यान से पीना। जल्दी मत करिए, धीरे-धीरे पीएँ, नहीं तो ठसका लग जाएगा।''

पत्नी और भी कुछ कहती किन्तु कहते-कहते रुक गई क्योंकि मैंने तो अभी-अभी लस्सी का सेवन किया था। तभी एक बिल्ली ने चूहा पकड़ने के लिए झपट्टा मारा, तो टेबिल पर रखा-चाय का मग नीचे फर्श पर गिर गया। पत्नी ने झल्लाकर कहा-''आप से कितनी बार कहा कि चाय को टेबल पर किनारे से नहीं रखना चाहिए, किंतु आप बार-बार कहने पर भी ध्यान ही नहीं देते।''

मैंने कहा- ''घर-घर यही हाल है।''

तो देखा आपने ऊपर की घटना शब्दों के दोहराव से कितनी रोचक बन पड़ी है। दोहराने से बात का वजन थोड़ा बढ़ जाता है। यह कमाल है, शब्दों को दोहराने का। जाते-जाते एक बात और याद आई। मैंने पत्नी से कहा- ''याद रखो। कहाँ-कहाँ, तुम मुझे टोकती रहोगी।'' अरे! अरे! अनर्थ हो गया। मुझे एक कार्यक्रम में आज भाग लेना था। आज का बाजार जाना स्थगित करते हैं।''

कहने का आशय यही कि, इस प्रकार के शब्दों का हम प्रयोग तो करते हैं, किन्तु ध्यान नहीं देते। व्याकरण में ऐसे शब्दों को **पुनरुक्त शब्द** कहते हैं।

पुनरुक्त का आशय होता है : पुनः उक्ति अर्थात् एक ही शब्द को पुनः कहना अर्थात्

दोहराना। बोलचाल में इनको सामासिक पद कह सकते हैं किन्तु इन्हें यौगिक शब्द कहते हैं।

परिभाषा : पूर्णपुनरुक्त शब्द- जब एक ही शब्द दो अथवा दो से अधिक बार दोहराया जाए- जैसे- बड़े-बड़े। इस प्रकार के पुनरूक्त शब्द सात प्रकार के होते है -

1. संज्ञा द्वारा पुनरुक्त शब्द - जैसे- 'घर-घर'
   उदा. घर-घर में आज महाभारत हो रही है।
2. सर्वनाम द्वारा - जैसे- 'कौन-कौन'
   उदा. कौन-कौन मेरे साथ चल रहा है।
3. विशेषण द्वारा- जैसे 'गरम-गरम'
   उदा. मैं गरम-गरम पकौड़े खा रहा हूँ।
4. क्रिया द्वारा- जैसे-'जाते-जाते'
   उदा. जाते-जाते भी हम अपने घर पर लगा ताला बार-बार देखना नहीं भूलते।
5. क्रिया विशेषण- जैसे- 'धीरे-धीरे'
   उदा. चाय जल्दी-जल्दी क्यों पी रहे हो, ठसका लग जाएगा। धीरे-धीरे पीओ।
6. विस्मयादि बोधकता- जैसे 'अरे! अरे!'
   उदा. अरे! अरे! यह क्या कर रहे हो।
7. विभक्ति युक्त पुनरुक्त शब्द- जैसे 'गाँव के गाँव'
   उदा. बाढ़ आने पर गाँव के गाँव खाली हो गए।

शिक्षक को चाहिए कि ऐसे पुनरुक्त शब्दों की जानकारी छात्रों को देकर उनकी प्रयोग क्षमता बढ़ाए ताकि छात्र हमेशा-हमेशा के लिए उन्हें याद रख सकें। आप स्वयं भी देखें दिन-भर में आप कितने पुनरुक्त शब्दों का प्रयोग करते हैं। सुविधा के लिए पुनरुक्त शब्दों की सूची यहाँ दी जा रही है-

संज्ञा	-	दाने-दाने, रोम-रोम, जंगल-जंगल, बात-बात, भाई-भाई, देश-देश आदि।
सर्वनाम	-	अपना-अपना, कोई-कोई, कुछ-कुछ आदि।
विशेषण	-	अच्छे-अच्छे, मीठे-मीठे, बड़े से बड़े, अच्छे से अच्छे आदि।
क्रिया	-	रोते-रोते, हँसते-हँसते, गाते-गाते आदि।
क्रिया विशेषण	-	आगे-आगे, पहले-पहले, पास-पास, कभी-कभी, साथ-साथ आदि।
विस्मादिबोधक	-	राम-राम!, वाह-वाह!, हाय-हाय! ओ-ओ! आदि।
विभक्ति युक्त	-	यहीं-का-यहीं, मन-ही-मन, झुंड-का-झुंड, अभी-के-अभी, तब-की-तब आदि।

2.8

व्यवहार में प्रचलित युगात्मक शब्द

"किसी-किसी को धोती-कुर्ते में देखकर लोग या तो उसे साहित्यकार मान बैठते हैं, या राजनेता क्योंकि धोती कुर्ते का प्रयोग प्रयोग आम-आदमी प्रायः नहीं करता।"

उपरोक्त वाक्यों में किसी-किसी पुनरुक्त शब्द है। पुनरुक्त शब्द में एक ही शब्द की पुनरावृत्ति होती किंतु 'धोती-कुर्ते' में एक ही शब्द की पुनरावृत्ति नहीं है, फिर भी वे दोनों शब्द युग्मात्मक हैं। ऐसे और भी शब्द है, जैसे हम किसी से पूछ बैठते हैं-"बाल-बच्चे कैसे हैं? अतः ऐसे शब्दों को व्याकरण में क्या कहते है?" इस पर प्रकाश डालिए। एक महिला-प्राध्यापक ने मुझसे इस विषय पर चर्चा करते हुए अनुरोध किया कि कुछ कहूँ।

"जैसा कि आपने पूछा है, यह विषय द्वित्व शब्दों के अंतर्गत ही आता है। वास्तव में द्वित्व शब्द चार प्रकार के होते है-

क.	पुनरुक्त	-	कानों-कान, अच्छे-अच्छे आदि।
ख.	युग्मात्मक	-	खाना-पीना, अच्छे-भले आदि।
ग.	अनुकरणात्मक	-	चाय-वाय, खाना-वाना आदि।
घ.	ध्वन्यात्मक	-	झर-झर, पट-पट आदि

पुनरुक्त शब्दों में उसी शब्द की पुनरावृत्ति होती है किंतु युग्मात्मक शब्द में दो शब्द पृथक-पृथक होते हैं। इनमें पहला पद मुख्य होता है; और दूसरा पद पहले पद की अर्थ-सीमा का विस्तारक होता है; जैसे- खाना-पीना/अनुकरणात्मक युग्म में प्रथम शब्द की अनुकृति पर दूसरा शब्द गढ़ लिया जाता है। अतः इसमें अनुकरणात्मक द्वित्व होता है। पहला पद सार्थक और दूसरा निरर्थक होकर भी भाषिक इकाई का कार्य करता है। हिंदी में ऐसे द्वित्व पद संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण क्रिया और अव्यय में देखने को मिलते है; जैसे- घर-वर (संज्ञा), तू-तड़ाक (सर्वनाम), अच्छा-वच्छा (विशेषण), देख-भाल (क्रिया), अड़ोस-पड़ोस (अव्यय)।

ध्वन्यात्मक युग्म में दोनों पद सुरात्मक होते है; जैसे- ऊल-जलूल, अनाप-सनाप, अंट-संट, फटाफट। वैसे इसमें दोनों पद निरर्थक होते हैं किंतु इनका संयोग सार्थक होता है।

आपने हिंदी में प्रयुक्त युग्मात्मक शब्दों के विषय में पूछा था, और मैंने आपको सभी प्रकार के शब्द-युग्मों की जानकारी दे दी।

अब आप इन युग्मों से संबंधित एक घटना सुनिए और देखिए किस चतुराई से लेखक ने इसमें सभी युग्मों का समावेश किया है।

राम-राम, न जाने कैसे-कैसे लोग इस दुनिया में पैदा हो जाते हैं जो समझते-बूझते तो कुछ नहीं, पर अपनी टाँग बात-बात में अड़ाते रहते हैं। कभी-कभी तो ऐसे लोगों के ऊल-जलूल व्यवहार से ईश्वर भी घबरा जाता होगा। अभी-अभी एक आदमी धड़-धड़ाते हुए दुकान में घुस गया, और अपने अड़ोस-पड़ोस के लोगों को गोली से मार करने वाले हथियार बेचने वाली दुकान के बारे में पूछने लगा। मैंने बार-बार उसे समझाया कि यहाँ तो तोप-तमंचे वाली दुकानें हैं, हथियार-वथियार वाली नहीं, तब वह मुझसे ही तुम-तड़ाक करने लगा। तब मैंने उसे किसी तरह टाला, और दूर की दुकान पर पूछने को कहा। अब वह वहाँ भी कोई-न-कोई गुल खिला रहा होगा।

महिला प्राध्यापक ने मुझे धन्यवाद दिया, और कहा-इस विषय में मैं अपने छात्रों को अवश्य बताऊँगी।

2.9

रंगत बदलते शब्द

''बहुत से शब्द अपनी रंगत बदलते रहते हैं। एक शब्द कभी संज्ञा हो जाता है कभी विशेषण, कभी सम्बन्ध-बोधक, कभी क्रिया-विशेषण।

किन्तु हिन्दी में ऐसे भी शब्द हैं, जो विषय और प्रसंग बदलने पर भिन्न अर्थ प्रकट करते हैं। शब्दों के रूप में उनका कोई विकल्प नहीं होता किंतु वाक्य में प्रयोग करने पर अर्थ अवश्य बदल जाता है। प्राय: ऐसे शब्दों का प्रयोग सुनने में आता है। इस पर प्रकाश डालें।''

आदमी चलता है। (चलने के अर्थ में)

पैसा चलता है। (प्रयोग के अर्थ में)

काम चलता है। (निर्वाह के अर्थ में)

बात चलती है। (विस्तार से चर्चा करने के अर्थ में)

रचनाकारों की दुनियाँ में रचना चलती है। (प्रचलित के अर्थ में)

चलता जमाना है। (वर्तमान के अर्थ में)

आजकल यह क्या चल रहा है? (कार्य के अर्थ में)

क्या हम यहाँ 'चल' क्रिया को प्रसंगानुसार अर्थ बदलते नहीं देख रहे हैं?''

मैंने कहा- निश्चय ही आपने एक बड़ी अच्छी बात कही है। इस दल-बदल के युग में जिस प्रकार व्यक्ति अपनी निष्ठा बदल देने में संकोच नहीं करता वैसे ही शब्द भी अपनी पद-व्यवस्था तथा अर्थ बदल देते हैं किंतु इन शब्दों का प्रयोग करना आसान नहीं। पद-व्यवस्था के अंतर्गत आए शब्द की पहचान तो हम वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय आदि के रूप में आसानी से कर लेते हैं किंतु अर्थ बदलने वाले शब्दों को पहचानना आसान नहीं क्योंकि इन शब्दों का प्रयोग साधारणत: मुहावरों के रूप में होता है।

व्याकरण की कुछ पुस्तकों में ऐसे शब्दों की चर्चा की जाती है किन्तु उस ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता क्योंकि किसी भी पुस्तक में इसे पृथक से जानने का आग्रह नहीं किया जाता जबकि ऐसे शब्दों का अध्ययन करने से हमारे लेखन में चार चाँद लग जाते है। आइए, इस पर चर्चा करें-

एक पुस्तक में 'पानी' शब्द को लेकर जो प्रयोग किया गया है, वह इस प्रकार है-

- वह पानी पीता है। (जल)

- वह स्त्री पानी पीने वाली है। (लड़का होना)
- ओझा जी ने पानी पढ़कर दिया, तब वह ठीक हुआ। (मंत्र पढना)
- मिठाई देखकर मुँह में पानी भर आया। (लोभ होना)
- आकाश में पानी भरा है। (बादल)
- इस चाकू पर पानी चढ़ा है। (सान)
- सबके सामने वह पानी-पानी हो गया। (लज्जित होना)
- उसका पानी चला गया। (प्रतिष्ठा)
- वह पानी की तरह धन बहा रहा है। (व्यर्थ)
- वह अपना मकान पानी के मोल बेच रहा है। (बहुत सस्ता)

इस प्रकार पानी शब्द के प्रसंगानुसार यहाँ अर्थ बदलते जा रहे हैं; तथा इन वाक्यों का सौंदर्य भी इस प्रकार की वाक्य रचना से बढ़ गया है।

कुछ और शब्द भी इस प्रकार पढ़ने को मिले हैं।

जैसे- उगना, पता , वृत्ति, कलम, परिवर्तन, संसार, खराब,
बढ़ना, चाल, बनाना, डूबना, फूटना, ताक,विचार, धर्म, लहर।

अत: किसी भी पुस्तक को पढ़ते समय ऐसे शब्दों का प्रयोग किस भाव से किया गया है। यह समझ में आने लगेगा तो पढ़ने का विशेष आनंद आएगा। कुछ शब्द-कोशों में इनके प्रयोग मुहावरों के रूप में भी देखने में आए हैं। उन पर ध्यान दें, तथा लेखन में इनका उपयोग कर अपना लेखन को प्रभावी बनाएँ। यही सोचकर यहाँ इस विषय में चर्चा की गई है।

2

संधि

2.10
संधि स्वर तथा स्वर-संधि में क्या अंतर है?

''व्याकरण की कुछ पुस्तकों में संधि-स्वर शब्द पढ़ने को मिलता है, जबकि स्वर-संधि के विषय में हम अच्छी तरह जानते हैं किन्तु इस नए शब्द से परिचित नहीं हैं। कृपया स्पष्ट करने का कष्ट करें। यह प्रश्न था एक प्रतियोगिता परीक्षा में शामिल होने वाले छात्र का!''

मैंने छात्र की कठिनाई को अनुभव कर संक्षेप में उनके प्रश्न का उत्तर देने का प्रयत्न किया। सर्वप्रथम उन्हें स्वरों की कुल संख्या 11 होती है, यह बतलाया।

क. मूल स्वर - अ, इ, उ, ऋ (कुल 4)
ख. दीर्घ स्वर - आ, ई, ऊ (कुल 3)
ग. संयुक्त स्वर - ए, ऐ, ओ, औ (कुल 4)

अब स्वरों के भेदों को भी जानें-

1. उच्चारण के आधार पर :

(क.) मूल स्वर (ह्रस्व)
(ख) दीर्घ स्वर (दीर्घ तथा प्लुत (तीन भेद))
(ग.) सानुनासिक तथा नि:रनुनासिक।

2. उत्पत्ति के अनुसार : मूल स्वर तथा संधि स्वर

क. मूलस्वर वे होते हैं, जिनकी उत्पत्ति किसी दूसरे स्वर के सहयोग से नहीं होती;
जैसे- अ, इ, उ,ऋ

ख. संधि स्वर वे होते हैं, जिनकी उत्पत्ति मूल स्वरों के सहयोग से होती है;
जैसे- आ, ई, ऊ, ए आदि।

संधि स्वरों का विचार दो दृष्टिकोणों के आधार पर किया जाता है।

(क) सजातीय संधि स्वर :

एक ही स्थान से उच्चरित होने वाले स्वरों को सजातीय संधि स्वर कहते हैं।

जैसे- अ-आ (कंठ), इ-ई (तालु), उ-ऊ (ओष्ठ), ए-ऐ (कण्ठ और तालु), ओ-औ (कंठ और ओष्ठ)

(ख.) विजातीय संधि स्वर :

जिन स्वरों का एक ही स्थान से उच्चारण न हो, उन्हें विजातीय संधि स्वर कहते हैं; जैसे- : अ (कंठ), इ (तालु), उ (ओष्ठ)

''किंतु हमने तो सजातीय संधि स्वरों के मेल से होने वाले स्वरों को दीर्घ स्वर पढ़ा था- जैसे अ+अ= आ, इ+इ= ई, उ+उ= ऊ। और जिसे आप विजातीय संधि स्वर कहते हैं, उन्हें संयुक्त स्वर के रूप में पढ़ा था; जैसे- अ+इ=ए।'' छात्र ने पुनः प्रश्न किया?

''आपका कथन ठीक है किंतु स्वरों की उत्पत्ति को संधि स्वर इसलिए कहना पड़ा कि 'स्वर संधि' में इनकी उपयोगिता होती है। अब दीर्घस्वर तथा संयुक्त स्वरों को मात्रा-भेद के अनुसार पहचाना जाता है। इस प्रकार स्वरों के तीन भेद है। ह्रस्व स्वर, दीर्घ स्वर, संयुक्त स्वर

क. ह्रास्व स्वर - अ,इ,उ,ऋ (एक मात्रिक स्वर)

ख. दीर्घ स्वर- अ+अ= आ, इ+इ=ई, उ+उ=ऊ (द्विमात्रिक स्वर)

ग. संयुक्त स्वर - अ+इ=ए, आ+ई=ए, अ+उ= ओ, आ+ओ= औ (त्रिमात्रिक स्वर या प्लुत स्वर) इसके लिए तीन (3) का अंक लगाया जाता है। हिंदी में इसका प्रयोग नगण्य है; जैसे ओऽम्/ वैदिक भाषा में इसका सर्वाधिक प्रयोग होता है।

अब ध्यान दें-

1. **स्वर संधि :** संधि का प्रयोग शब्द संरचना के अंतर्गत आता है। स्वर संधि का प्रयोग वर्ग-रचना के अंतर्गत आता है। प्रत्येक भाषा में शब्द संरचना की अपनी-अपनी प्रक्रिया होती है।
2. जिन शब्दों के बीच संधि होती है, उन्हें पूर्व की भाँति पृथक-पृथक करना **संधि विच्छेद** कहलाता है। इसी प्रकार जिन वर्णों के बीच संधि होती है, उन्हें पूर्व की भाँति पृथक-पृथक करना **वर्ण-विच्छेद** कहलाता है।
3. **स्वर दो प्रकार के होते हैं**- सजातीय तथा विजातीय, जबकि स्वर संधि पाँच प्रकार की होती है- दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण और अयादि।
4. **दीर्घ संधि**- सजातीय संधि स्वरों में होती है। इसके अनुसार- दीर्घ संधि में ह्रस्व या दीर्घ स्वर के बाद यदि उसी स्वर का ह्रस्व या दीर्घ रूप आए तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं; जैसे -हिम+आलय= हिमालय (यहाँ हि+म्+अ+आलय में अ+आ मिलने से सजातीय संधि हुई है।) तथा **गुण संधि** में दो भिन्न स्वरों (विजातीय स्वरों) के योग से तीसरा भिन्न स्वर बनता है। भिन्न स्वर को ध्वनि में गुणात्मक विकार कहा जा सकता है। जैसे- अ+इ = ए, नर+इन्द = नरेन्द्र (यहाँ न+र्+अ+इ+न्द्र में अ+इ मिलने से 'ए' हो गया है।) संभवतः इसीलिए इसका नाम गुण संधि रखा गया है।
5. वृद्धि, संधि, यण संधि तथा अयादि संधि में भी दो भिन्न स्वर वर्गों के उच्चारण से ध्वनि में विकार आता है और यह विकार एक नए स्वर को जन्म देता है;
   जैसे : एक + एक = एकैक (वृद्धि संधि) अ + ए= ऐ
   यदि+अपि = यद्यपि (यण संधि) इ+अ = य
   ने+अन् =नयन (अयादि संधि) ए+प = अप

2.11

श, ष, स के प्रयोग सम्बन्धी व्याकरणिक सूत्र

हिन्दी के एक लेखक ने मुझे बतलाया कि उनका बेटा कान्वेन्ट स्कूल में पढ़ता है। एक दिन उसने मुझसे कहा कि हिन्दी व्याकरण में उसे 'श, ष, स के प्रयोग करने में बहुत कठिनाई आती है। व्याकरण की पुस्तकों में इस सम्बन्ध में जो नियम दिए गए हैं, उन्हें समझकर याद करना भी सरल कार्य नहीं है। मैंने सोचा व्याकरण तो गणित विषय के समान कुछ नियमों पर ही आधारित रहता है तो गणित के सूत्रों के समान इसके नियमों को भी सूत्र में क्यों नहीं कहा जा सकता है। उन लेखक महोदय ने यह सोचकर मुझसे सम्पर्क किया; और अपनी कठिनाई बताई। व्याकरण के नियमों की अल्पज्ञता प्रकट करते हुए इस सम्बन्ध में वे मेरी सहायता चाहते थे।

मैंने उनसे कहा– व्याकरण की एक भी पुस्तक में इस प्रकार का प्रयोग नहीं है। यदि आप कहें तो, मैं प्रयास करता हूँ। मैंने उनके समक्ष श, ष, स के प्रयोग के सम्बन्ध में निम्नलिखित सूत्र प्रस्तुत किया। पाठकों से अनुरोध है कि वे भी इसका प्रयोग करना सीखें, तथा अपने बच्चों और अन्य छात्रों की कठिनाई को दूर करें।

श, ष, स के प्रयोग का व्याकरणिक सूत्र :

1.	व्यंजन		श		ष		स
2.	वर्गीय-व्यंजन				क		
		च		प		त	
				ट			
3.	प्रयोग		<u>च वर्ग</u>		<u>क वर्ग</u>		<u>त वर्ग</u>
		निश्चय		कनिष्क		पुस्तक	
		निशाचर		<u>प वर्ग</u>			
				निष्पाप			
				<u>ट-वर्ग</u>			
				नष्ट			

अब इस सूत्र को इस प्रकार समझने का प्रयास करें–

सर्वप्रथम हमने श, ष, स– व्यंजनों को लिखा। द्वितीय स्थिति में वर्गीय-व्यंजनों के पाँच प्रारंभिक शब्दों को इस प्रकार लिखा कि श के नीचे च वर्ग हो, 'ष' के नीचे क, प, ट– ये तीन

वर्ग हों तथा 'स' के नीचे त वर्ग हो। तृतीय स्थिति में उनके प्रयोग के रूप में कुछ शब्दों के उदाहरण लिखे गए हैं।

इस सूत्र का निर्माण आप स्वयं भी कर सकते हैं-

सर्वप्रथम-च, प, त- ये तीन शब्द लिखें।

प के ऊपर क तथा प के नीचे ट लिखें।

बस-चपत और कपट इन शब्दों को याद रखकर आप इस सूत्र का निर्माण ऊपर दिए गए क्रम से कर सकते हैं।

अंत में छात्रों को कुछ शब्दों की सूची इसी आधार पर तैयार करने के लिए कह सकते हैं; ताकि इस सूत्र को वे अच्छी तरह हृदयंगम कर सकें। उन्हें मैंने कुछ शब्द उन्हीं की सहायता से तैयार करवाए जो इस प्रकार थे-

1. श - निश्छल, शुचि (च-वर्ग)
2. ष - आविष्कार, अभिषेक (क-वर्ग)
   भीष्म, निष्फल (प-वर्ग)
   प्रतिष्ठान, कष्ट (ट-वर्ग)
3. स - विस्तार, निस्तेज (त-वर्ग)

अब इस सूत्र में छिपे नियमों पर भी ध्यान दें-

1. च वर्ग के अर्थात् च, छ, ज, झ, व्यंजनों के पूर्व 'श' का प्रयोग होता है; जैसे- निश्छल में रेखांकित छ- वर्ण के पूर्व श का प्रयोग हुआ है।
2. क, प तथा ट- वर्ग के 15 व्यंजनों में से क, ख, ग, घ, ङ, प, फ, ब, भ, म, ट, ठ, ड, ढ, ण- के पूर्व 'ष' का प्रयोग होता है; जैसा कि भीष्म में 'म' के पूर्व 'ष' का प्रयोग हुआ है।
3. त-वर्ग के अर्थात् त, थ, द, ध, न के पाँचों वर्णों के पूर्व 'स' का प्रयोग होता है; जैसे- निस्तेज

किंतु इस सूत्र के प्रयोग करते समय कुछ अपवाद की ओर भी मैं संकेत करना चाहूँगा। जैसा कि गणितीय सूत्रों में भी होता है, लगभग 90 प्रतिशत कठिनाई इन सूत्रों के सहारे हल हो सकेगी। अत: इन नियमों के कुछ अपवाद भी होते हैं। उस पर ध्यान रखें; जैसे-

1. कहीं कहीं क-वर्ग के पूर्व 'स' का प्रयोग भी होता है;
   जैसे- तिरस्कार, पुरस्कार, नमस्कार, संस्कार, भास्कर, संस्कृत आदि।
   इसका कारण भी समझें।

उपरोक्त सूत्र विसर्ग संधि के नियमों के आधार पर तैयार किया गया है; और अधिकांश शब्द उसी के अंतर्गत आते है।

विसर्ग संधि के अंतर्गत संस्कृत में विसर्ग के तीन भेदों में से एक-'शत्व' विधान का भेद है, जिसके अंतर्गत श, ष, स-के नियमों का उल्लेख मिलता है। वे इस प्रकार हैं-

1. यदि विसर्ग के बाद 'च' वर्ग का कोई भी वर्ण हो या 'श' हो तो विसर्ग का 'श' हो जाता है;

जैसे- दुः + चरित्र = दुश्चरित्र।

2. यदि विसर्ग के बाद क, ख, प, फ,ट, ठ हो तो विसर्ग का 'ष' हो जाता है;
जैसे- निः +कपट = निष्कपट।

3. यदि विसर्ग के बाद त हो तो विसर्ग का 'स' हो जाता है; जैसे- निः+तेज = निस्तेज।

इस प्रकार आप विसर्ग संधि के 'शत्व' अर्थात्-श, ष, स सम्बन्धी विधान को भी सरलता से समझ सकते हैं।

शिक्षकों को चाहिए कि छात्रों को इस सम्बन्ध में पर्याप्त अभ्यास कराएँ। विशेष रूप से 'क' वर्ग के प्रयोग करते समय ष तथा स के अन्तर को स्पष्ट समझाएँ। जो शब्द संधि पर आधारित हैं, उस ओर उनका ध्यान दिलाएँ। उन पर ही यह नियम लागू होगा।

3

समास

2.12
द्वंद्व-समास की रूप-रचना में समुच्चय बोधक की भूमिका

''द्वंद्व समास में दोनों पद प्रधान होते है। विग्रह करने पर दोनों पदों के बीच समुच्चय बोधक शब्द 'और' का प्रयोग भी होता है। अत: यह कैसे पहचाने कि अमुक शब्द द्वंद्व समास का है, अथवा समुच्चय बोधक। आपने बतलाया था कि समुच्चय बोधक अव्यय दो शब्दों, वाक्यांशो अथवा वाक्य को जोड़ते हैं।'' एक जिज्ञासु ने मेरे समक्ष अपनी समस्या कुछ इसी प्रकार रखी। हालाँकि उनकी समस्या को वे स्वयं मूल रूप से समझ न पाए। उत्तर वे स्वयं अपने पास सुरक्षित रखे हुए थे किंतु समझ के अभाव में वे उसका विश्लेषण करने में समर्थ नहीं थे।

मैंने उनसे चर्चा करके स्वयं से उत्तर खोजने को कहा; और ध्यान दिलाया कि आप स्वयं कह रहे हैं कि द्वंद्व समास की रूप-रचना का आधार 'और' शब्द है। यह शब्द विग्रह करने पर स्पष्ट हो जाता है; जैसे- राम-कृष्ण। यहाँ राम और कृष्ण ये दो पद 'और' शब्द से जुड़े हैं, और पृथक-पृथक अस्तित्व भी रखते हैं अर्थात् उन दोनों पदों (राम-कृष्ण) का प्रयोग वाक्य में पृथक-पृथक भी किया जा सकता है; और साथ-साथ भी। वाक्य में दोनों पदों का साथ-साथ प्रयोग बहुवचन के अर्थ में होता है क्योंकि ये दो पदों के योग से बनते है। किंतु समुच्चय बोधक अव्यय पूर्व शब्द (वाक्यांश या वाक्य) का सम्बन्ध उत्तर शब्द (वाक्यांश या वाक्य) से जोड़ता है। इसलिए समुच्चय बोधक अव्यय का मुख्य कार्य संयोजन अर्थात् मिलाना है। एक उदाहरण द्वारा इसे समझें-

समानाधिकरण समुच्चय बोधक चार प्रकार से मुख्य वाक्यों को जोड़ते हैं-

1. संयोजक शब्दों द्वारा-जैसे-और
2. विपरीतार्थी शब्दों द्वारा- जैसे- या
3. विरोध दर्शक शब्दों द्वारा- जैसे- किंतु
4. परिणाम दर्शक शब्दों द्वारा- जैसे-इसलिए

प्रथम तथा द्वितीय प्रकार के समुच्चय बोधकों का सम्बन्ध द्वंद्व समास से रहता है।

ध्यान दे :- संयोजक शब्द हैं- और, तथा, एवं, तथा व।

- विपरीतार्थी शब्द हैं- या, वा, अथवा।

द्वंद्व समास के भी तीन प्रकार है-

1. **इतरेतर द्वंद्व समास**- इसमें 'और' शब्द से सभी पद जुड़े रहते हैं; जैसे- राम-कृष्ण (राम और कृष्ण)

   इसमें 'और' शब्द का लोप होकर सामासिक पद बना है। विग्रह करने पर यह स्पष्ट है। यही कारण है कि समुच्चय बोधक तथा द्वंद्व समास का अंत: सम्बन्ध है।

2. **समाहार द्वंद्व समास** - समाहार का अर्थ है- समूह। जब द्वंद्व समास के दोनों पद समुच्चय बोधक से जुड़ जाने पर पृथक-पृथक अस्तित्व न रखें, बल्कि एक समूह का बोध कराएँ, वहाँ समाहार द्वंद्व समास होता है; जैसे- हाथ-पाँव= सभी शारीरिक अंग। अन्न-जल= सभी भोज्य पदार्थ।

   किन्तु कभी-कभी विपरीतार्थी शब्दों के योग से भी समाहार द्वंद्व समास बनता है; जैसे- भला-बुरा, पाप-पुण्य, थोड़ा-बहुत।

3. **वैकल्पिक द्वंद्व समास** - जिस समास पद के दोनों पदों के मध्य 'अथवा', 'या', का विकल्प रहता है, उन्हें वैकल्पिक द्वंद्व समास कहते हैं। इसमें बहुधा विपरीतार्थक शब्द का प्रयोग होता है किंतु समस्त पद सम्पूर्णता का द्योतक नहीं होता; जैसे- लँगड़ा-लूला(लँगड़ा या लूला), भला-बुरा (भला अथवा बुरा)

उपरोक्त आधार पर यह स्पष्ट दिखाई देता है कि द्वंद्व समास की रूप रचना में समुच्चय बोधक अव्यय की मुख्य भूमिका रहती है। यदि समुच्चयबोधक अव्यय न होता तो द्वंद्व समास की भूमिका भी गौण हो जाती। छात्रों को इसका तुलनात्मक ज्ञान देने से ज्ञान अनुभवजन्य लगने लगता है। तब वे उसे रटकर मात्र परीक्षा उत्तीर्ण करना ही अपना ध्येय नहीं बनाते हैं, उसे व्यवहार में लाकर सीखते भी हैं।

2.13

विभक्ति चिह्नों का लोप होता है- तत्पुरुष समास में

व्याकरण पढ़ाते समय हमें ध्यान रखना होगा कि किन-दो अथवा दो से अधिक विषय के आधार पर विषय वस्तु को बोधगम्य बनाया जा सकता है; जैसे- हम समास पढ़ा रहे हैं तो उसका कारकों की विभक्ति से क्या सम्बन्ध है, यह स्पष्ट कर दिया जाए, तो उसके आधार पर किस समास की रूप-रचना हुई है, यह स्पष्ट समझ बनती है।

आइए, इस विषय को थोड़ा तत्पुरुष समास के आधार पर ही समझें। समास के मुख्यत: चार भेद हैं। इनमें दो भेदों को सामासिक शब्दों के पूर्व एवं उत्तर पद की प्रधानता अथवा अप्रधानता के आधार पर जाना जाता है।

समास के चार भेद हैं-

1. अव्ययी भाव समास (पूर्व पद प्रधान होता है।)
2. तत्पुरुष समास (उत्तर पद प्रधान होता है।)
3. द्वंद्व समास (दोनों पद प्रधान होते है।)
4. बहुब्रीहि समास (कोई पद प्रधान नहीं होता।)

तत्पुरुष समास के भी दो भेद हैं। कामता प्रसाद गुरु के अनुसार -

1. समानाधिकरण तत्पुरुष :

क. कर्त्ता तत्पुरुष -जिसमें केवल एक ही कर्त्ता कारक की विभक्ति का प्रयोग हो। ऐसे सामासिक पद विशेष्य और विशेषण-भाव को प्राप्त होते हैं;

जैसे- महान+आत्मा = महात्मा (विशेषण)। इस सामासिक पद को कर्मधारय समास कहते हैं। यह सामासिक पदकर्त्ता की विशेषता बताता है।

ख. जिस समास का पहला पद संख्या वाचक विशेषण होता है, उसे द्विगु समास कहते हैं; जैसे : चौराहा।

2. व्याधिकरण तत्पुरुष : जिस समास के विग्रह में संबोधन कारक को छोड़कर शेष छ: कारकों की विभक्तियों का प्रयोग होता है, अर्थात् जिस सामासिक पद में जिस विभक्ति का लोप होता है, उसी कारक के अनुसार इस समास का भेद होता है; जैसे-

क. कर्म तत्पुरुष : (पूर्व पद में 'को' विभक्ति का लोप होता है।)

जैसे : यश-प्राप्त (यश को प्राप्त)

ख. करण तत्पुरुष : (पूर्व पद में 'से' विभक्ति का लोप होता है।)

जैसे : रोग-मुक्त (रोग से मुक्त)

ग. संप्रदान तत्पुरुष (पूर्व पद में 'के लिए' विभक्ति का लोप होता है।)

जैसे : रसोई-घर (रसोई के लिए घर)

घ. अपादान -तत्पुरुष (पूर्व पद में 'से' (विलग होने) विभक्ति का बोध होता है।

जैसे : ऋण-मुक्त (ऋण से मुक्त)

ङ. सम्बन्ध तत्पुरुष (पूर्व पद में क/की/के विभक्ति का लोप होता है।)

जैसे : राजमाता (राजा की माता)

च. अधिकरण तत्पुरुष (पूर्व पद में से /पर विभक्ति का लोप होता है।)

जैसे : ध्यानमग्न (ध्यान में मग्न)

रोचक तथ्य :

1. कर्मधारय समास तथा द्विगु समास तत्पुरुष समास के अंतर्गत माने गए हैं।
2. तत्पुरुष समास में कारक चिह्न अपने पूरे पद के साथ लुप्त हो जाता है;

जैसे- बैलगाड़ी- बैलों से चलने वाली गाड़ी।

3. तत्पुरुष समास के चार भेद होते हैं-

क. कर्मधारय समास

ख. द्विगु समास

ग. लुप्त तत्पुरुष समास

(जिसमें विभक्तियों का लोप अपने पूरे पद के साथ लुप्त हो जाता है।)

घ. न तत्पुरुष समास (निषेध सूचक) अ/अन् के उपयोग से बनने वाले सामासिक पद।

जैसे - अ+संभव = असंभव, अन् +अन्त = अनन्त

छात्रों को इस प्रक्रिया का पूरा लाभ उठाने के लिए अभ्यास आवश्यक है। शिक्षक स्वयं भी इसे समझकर उनसे अन्य उदाहरणों को छँटवाने का प्रयास करे। ऐसा करते समय उन्हें समास तथा कारकों की विभक्तियों का सहसम्बन्ध स्थापित करने में एक नया सोच बनेगा। व्याकरण को केवल खंडशः नहीं पढ़ना चाहिए। समझ विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी मूल रचना पर चिंतन हो।

2.14

रामेश्वर में कौन सा समास है?

एक समय किसी समारोह में भाग लेते समय एक सज्जन से भेंट हुई। वे रामेश्वर तीर्थ यात्रा से लौटे थे। उन्होंने बतलाया कि वहाँ से लौटने पर जब मैं घर के सदस्यों को रामेश्वर की जानकारी दे रहा था, तभी उनका पोता उनसे एक प्रश्न पूछ बैठा। पोते ने कहा- ''दादाजी! रामेश्वर-शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- राम + ईश्वर। आपने अभी बतलाया कि आपने रामेश्वर में शंकर जी के दर्शन किए। तो क्या वहाँ राम की मूर्ति नहीं है? क्या रामेश्वर का अर्थ शंकर भी होता है। यदि होता है तो मेरी शंका का निवारण कीजिए।''

पोते की बात सुनकर दादाजी मुस्कराने लगे और उसकी प्रशंसा करते हुए बोले- ''वास्तव में तुमने बहुत अच्छी बात पूछी है। अब मैं तुम्हें रामेश्वर का सही-सही अर्थ बतलाता हूँ। तुमने हिन्दी व्याकरण में समास के विषय में पढ़ा होगा। जानते हो समास शब्द में भी दो शब्द हैं- सम्+आस। सम् शब्द के शब्द कोशीय अर्थ है- संक्षिप्त, सुन्दर तथा आस का अर्थ है- कथन अर्थात् समास याने संक्षिप्त कथन। समास का प्रयोग अपनी बात को संक्षेप में कहने के लिए होता है; जैसे- दहीबड़ा- दही से तैयार किया गया बड़ा। यहाँ 'दही बड़ा' कहने से पूर्णार्थ स्पष्ट हो जाता है। इस प्रकार अनेक पदों का एक पद में, अनेक विभक्तियों का एक विभक्ति में तथा अनेक स्वरों का एक स्वर में कथन करना समास की विशेषता है।''

हिन्दी में समास के छः भेद है- द्वंद्व, द्विगु, कर्मधारय, तत्पुरुष, अव्ययीभाव और बहुव्रीहि।

जानते हो, रामेश्वर के ज्योतिर्लिंग की स्थापना भगवान राम ने की है। राम जब शंकर भगवान का प्रतिष्ठापन तथा पूजा-अर्जन कर रहे थे, तब उस ज्योतिर्लिंग का नाम रामेश्वर पड़ा। रामेश्वर का अर्थ क्या है? अब तुम्हें यह जिज्ञासा होगी। यही जिज्ञासा वहाँ सभी वानरों को हुई।

तब श्रीराम ने बतलाया कि- जो मेरा ईश्वर है, स्वामी है उसका नाम- रामेश्वर है। संस्कृत में- रामस्य ईश्वरः रामेश्वरः। इसके अनुसार 'रामेश्वर' तत्पुरुष समास है। राम का ईश्वर-यहाँ 'का' हटाकर सम्बन्ध तत्पुरुष बनता है। यहाँ रामेश्वर का अर्थ हुआ- शंकर।

इस पर भगवान शंकर मुस्कराकर कहने लगे- नहीं, महाराज यहां बहुव्रीहि समास है। जिसका अर्थ है-राम, ईश्वरो यस्य स रामेश्वरः अर्थात् श्रीराम जिसके ईश्वर है, वे रामेश्वर हैं।

बहुव्रीहि समास में शब्द के दोनों पद अर्थ की दृष्टि से गौण हो जाते हैं। समग्र समास एक पद प्रधान होता, जिसका अर्थ तीसरा ही होता है। अतः बहुव्रीहि समास के कारण तीसरा अर्थ

है– राम अथवा विष्णु।

इस प्रकार राम और शंकर की बातों को सुनकर ब्रह्माजी हँसने लगे और कहने लगे, कि –''नहीं, महाराज 'रामेश्वर' शब्द में न तो तत्पुरुष समास है, और न बहुब्रीहि समाज। इसमें तो कर्मधारय समास है। इसका सीधा अर्थ है कि– 'रामस्य और ईश्वर' अर्थात् राम ईश्वर एक अर्थात् श्रीराम और ईश्वर दो नहीं, एक ही है।''

इस प्रकार जो शिव है, वही विष्णु है। हर और हरि में कोई भेद नहीं है। दोनों एक धातु 'ह' से बने हैं। इसमें केवल प्रत्यय का अंतर है। इसलिए इसमें उपासना–भेद मानने वाले बड़ी भूल करते हैं। कर्मधारय समास में प्रथम पद तथा द्वितीय पद से तुलनात्मक आभास रहता है किन्तु वह होता नहीं है।

संस्कृत कर्मधारय समास के दो भेद है–विशेषता वाचक, और उपमान वाचक। रामेश्वर– उपमान वाचक समास है क्योंकि इसमें राम की तुलना ईश्वर से की गई है। उपमान–उपमेय का भाव होने से यह कर्मधारय समास ही है।

मैं नहीं समझता मेरा पोता कितना समझा किन्तु रामेश्वर के विषय में– बाल्मीकि रामायण के आधार पर मैंने 'रामेश्वर' के सामासिक अर्थ को समझा, और वहाँ जाकर शंकर और राम को अभिन्न मानकर पूजा–अर्चना की। यह मेरे जीवन का सबसे सुन्दर क्षण था, जो मैंने अपनी पीढ़ी को सांस्कृतिक धरोहर के रूप में सौंपा।

ऐसा मैं सोच ही रहा था कि पोते ने एक उत्सुकतापूर्वक एक प्रश्न किया– 'दादा जी!' आपने रामेश्वर के तीन समास बताएँ किंतु यदि परीक्षा में पूछा गया कि– रामेश्वर में कौन सा समास है? तो मैं क्या लिखूँगा। तीनों ही समास में कैसे लिखूँगा। शिक्षक कौन सा उत्तर सही मानेंगे?

पोते की बात सुनकर मुझे अच्छा लगा जिसकी समस्या का समाधान मैंने इस प्रकार किया– तुम जानते होगे कि सामासिक शब्द का विग्रह करके ही यह बताया जाता है कि उसमें कौन सा समास है। अतः तुम रामेश्वर शब्द का विग्रह करके, उसका भेद बता सकते हो किंतु ध्यान रहे, यदि परीक्षा में यह पूछा जाए कि–

रामेश्वर में कौन सा समास है?

(क.) तत्पुरुष (ख.) कर्मधारय

(ग.) बहुब्रीहि (घ.) ये तीनों।

तो हमें (घ) का विकल्प चुनकर उस पर ही सही का चिह्न लगाना है।

पोते को यह बात बहुत अच्छी लगी क्योंकि इस पूरी चर्चा में उसके लिए यह बात नई और काम की थी।

‖03‖

संज्ञा

3.1
वस्तु का नामकरण संस्कार है- व्यक्तिवाचक संज्ञा

एक महात्मा ने चर्चा करते हुए बतलाया कि आप व्याकरण पर चिंतन-मनन करते रहते हैं। कभी सोचा कि संज्ञा क्या है? संसार में जितने भी नाम-रूप है, हम तो उसे ही संज्ञा मानते हैं। परमात्मा जिस प्रकार हमें किसी नाम-रूप उपाधि से ही मिलता है, उसी प्रकार संसार में जितनी भी वस्तुएँ हैं, वे हमें पहले रूप के आधार पर पहचान में आती हैं, बाद में उनका नामकरण संस्कार कर दिया जाता है। नाम की उपाधि दिए बिना हम उसे पहचान नहीं सकते।

महात्मा जी के इस कथन से हम कितने सहमत हैं, यह आवश्यक नहीं किंतु यह स्पष्ट है कि जिस प्रकार घर में बालक के जन्म लेने के पश्चात् ही हम उसका नामकरण संस्कार करते हैं,उसी प्रकार जैसे ही कोई नई वस्तु संसार में आती है, उसका नामकरण होने के पश्चात् ही लोग उसकी पहचान कर पाते है। यहाँ कहने का मुख्य भाव यह है कि संज्ञा की जो परिभाषा पुस्तकों में जो दी जाती है, उसमें यह लिखा रहता है-संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान का बोध हो। दूसरे शब्दों में किसी मनुष्य, स्थान, वस्तु या गुण के नाम को संज्ञा कहा जाता है। यहाँ यह दृष्टव्य है कि महात्मा जी ने वस्तु के अंतर्गत प्राणी, पदार्थ और वस्तु के गुणधर्म की विवेचना की है, जो इस बात का संकेत करती है कि 'संज्ञा' किसे कहते हैं।

चर्चा में ध्यान देने की बात यह है कि संज्ञा किसी वस्तु का संकेतक नहीं है, मात्र उसके नाम की संकेतक है। उससे केवल किसी वस्तु विशेष के नाम का बोध होता है, स्वयं वस्तु के विषय में अन्य जो जानकारी है, उसका बोध नहीं होता। उदाहरण के लिए 'घड़ी' कहने से हमें समय देखने वाले यंत्र के रूप का आभास होता है, किंतु उसके नाम के आधार पर उसका निर्माण कैसे हुआ, यह ज्ञान नहीं होता। यदि हम उस 'घड़ी' को वॉच कहें, तो वस्तु नहीं बदलेगी केवल नाम बदलेगा।

रामकृष्ण परमहंस चर्चा में प्राय: यह बात कहते थे कि 'पानी' माँगने पर हिन्दी जानने वाला 'पानी' नामक वस्तु ही लाएगा। वाटर (अँग्रेजी), आब (उर्दू) तथा विश्व की भाषाओं में पानी के विभिन्न नामों से पुकारने पर 'पानी' नाम का तत्त्व ही आएगा। इसी प्रकार परमात्मा को किसी भी नाम से पुकारो, परमात्मा तुम्हें अवश्य मिलेगा। परमात्मा का नाम, परमात्मा का रूप ये दोनों मिलकर नाम रूप बनें। परमात्मा को जानने का यही साधन है। व्याकरण में परमात्मा और

संसार को जानने का साधन 'संज्ञा' ही है।

किसी राज्य के मुख्य-मंत्री ने एक सार्वजनिक सभा में जनहित की अनेक घोषणाएँ कीं किंतु जनता उनसे संतुष्ट नहीं हुई। जनता का कहना था, आप की घोषणाओं से हमें क्या लेना-देना। आप तो रबड़ी खाते हैं और हम राबड़ी। ऐसा कब तक चलेगा। मुख्यमंत्री जी ने कहा- ऐसा अब नहीं चलेगा। हम घोषणा करते हैं कि कल से जनता रबड़ी खाएगी; और हम राबड़ी। जनता ने करतल ध्वनि से घोषणा का स्वागत किया। मंत्री जी के पी.ए. ने कहा- इतना बजट हम कहाँ से लाएँगे कि सबको रबड़ी खिला सकें। मुख्यमंत्री जी ने कहा- यह सोचना हमारा काम है। तुम्हारा नहीं। दूसरे दिन मंत्री जी ने एक शासकीय आदेश निकाला- कल से राबड़ी को रबड़ी और रबड़ी को राबड़ी कहा जाएगा।

उपरोक्त नाम-संस्कार प्रक्रिया का नमूना भी यही सिद्ध करता है कि नाम परिवर्तित करने से वस्तु नहीं बदलती है। अत: यह स्पष्ट ध्यान रखना चाहिए कि छात्र इस बात को अच्छी तरह समझ लें, तभी उन्हें 'संज्ञा' के विषय में अधिक जानने की रुचि पैदा होगी।

शिक्षकों को चाहिए कि इस सम्बन्ध में छात्रों को यह अवश्य अवगत कराएँ कि वे अपने नाम का अर्थ जानें। भारत में निघण्टु के अनुसार हर शब्द का अर्थ होता है। 'राम' का अर्थ है- जो सबमें रमण करता है। कृष्ण का अर्थ- जो हमें आकर्षित करे। इस प्रकार भारत में जो नाम रखे जाने की प्रथा है, उनमें गुणवाचकता है किंतु आज जो नाम रखे जा रहे हैं, वे टिंकू, चिंकू, पिंकू, गोलू आदि वे केवल पश्चिमी जगत का अनुकरण हैं। इस प्रवृत्ति से दूर रहना चाहिए। व्यक्तिवाचक संज्ञा हमें यही संदेश देती है।

3.2

जातीय स्मृति जगाने में सहायक है-जातिवाचक संज्ञा

जनगणना के एक अधिकारी मेरे घर पर सहज मिलने आए। मैंने उनसे पूछा-आप जनगणना क्यों करते हैं? उसका उद्‌देश्य क्या है?

वे बोले जनगणना के आधार पर ही तो हम कह सकते हैं कि हमारे देश की जनसंख्या क्या है? विश्व की जनसंख्या क्या है? तुलनात्मक रूप से जनसंख्या के आधार पर विश्व में हमारा कौन सा स्थान है? आदि-आदि।

मैंने कहा- ''यह तो ठीक है किंतु क्या मनुष्यों की गणना करना ही पर्याप्त है।'' वे बोले- ''नहीं। हमारे देश में कितने पशु हैं। पशुओं में बाघ, हिरण आदि कितने हैं, नगर कितने हैं? धातु आदि कितनी हैं, इन सबकी जानकारी इससे मिलती हैं। इस प्रकार व्यक्ति, स्थान तथा वस्तुओं का पता इससे लगता है।''

उन्होंने कहा- यह आप क्यों पूछ रहे हैं? मैंने कहा- ''सहज ही।'' वे मुस्कराए और कहने लगे- ''क्या, इस विषय को भी आप व्याकरण से जोड़ना चाहते हैं?''

मैंने कहा, ''सही कहा आपने!'' जातिवाचक संज्ञा इस बात में सहायक है। उसके- प्राणीवाचक, स्थान वाचक, पदार्थ (द्रव्य) वाचक तथा समूह वाचक ये चार भेद हैं। मैं सोचता हूँ- प्राणीवाचक जातिवाचक संज्ञा हमें घर में कितने प्राणी हैं, पशु-पक्षी हैं; यह जानकारी देती है। साथ में घर में कौन सी भाषा बोली जाती है? लोगों का व्यवसाय क्या है? यह जानकारी भी उसी से मिलती है। इसका ही एकत्रीकरण आप करते हैं, यह अच्छी बात है।

देश में कितने साक्षर हैं, कितने निरक्षर हैं, कितने बच्चे हैं, कितने वृद्ध है आदि-आदि। न जाने कितनी जानकारी इस प्रकार देश के सम्बन्ध में मिल जाती है; और पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा उस देश के विकास की रूपरेखा भी इसी आधार पर तय होती है। देश का बजट भी उसी के अनुसार बनता है। ये सब संदर्भ मुझे याद आ रहे हैं। हो सकता है, और भी संदर्भ हों, जिनकी गणना समय-समय पर की जाती हो।

जातिवाचक संज्ञा स्थानवाचक भी होती है इससे किसी देश में कितने ग्राम हैं, नगर हैं, घर हैं, वन, पर्वत, नदी हैं इनकी जानकारी सहज ही मिल जाती है।

जातिवाचक संज्ञा की एक विशेषता और भी है कि इससे अगणनीय पदार्थ; जैसे- किसी देश में कितना सोना है, पीतल, तांबा, दूध, पानी, पेट्रोल आदि के भंडार हैं, उसका भी ज्ञान हो जाता है।

चौथी बात यह है कि समूहवाचक जाति संज्ञा से हमें यह पता चलता है कि किसी सेना में कितने सैनिक है, कक्षा में कितने छात्र, जुलूस में कितने लोग शामिल थे।

इस प्रकार जाति वाचक संज्ञा पढ़ाते समय इसकी उपयोगिता की चर्चा यदि छात्रों से की जाए तो जाति वाचक संज्ञा को छात्र सहज ही जान जाएँगे। अभी तो पाठ्यपुस्तकों में पहचान के लिए तालिका ही दी रहती है; जैसे-

जातिवाचक संज्ञा के भेद-

1. प्राणीवाचक	2. स्थानवाचक
3. पदार्थवाचक	4. समूहवाचक

जातिवाचक संज्ञा की परिभाषा में दिया रहता है कि - ''जिन शब्दों से व्यक्तियों, स्थानों, वस्तुओं आदि की पूरी जाति का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।'' परिभाषा की दृष्टि से संपूर्ण जाति का बोध तथा जनगणना के आधार पर उनकी संख्या का बोध होना एक दूसरे का पूरक है। दोनों का सम्बन्ध निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर देखा जा सकता है।

1. घर के मुखिया तथा संबंधियों के नाम	2. पदों के नाम
3. व्यवसाय के नाम	4. कार्यों के नाम
5. पशु पक्षियों के नाम	6. स्थान के नाम
7. प्राकृतिक वस्तुओं के नाम	8. वस्तुओं के नाम

छात्रों को जातिवाचक संज्ञा की इन विशेषताओं से अवश्य परिचित कराना चाहिए-

1. जातिवाचक संज्ञा जातीय स्मृति को जगाती है।
2. यह परस्पर सम्बन्ध बनाने में माहिर हैं। व्यक्तिवाचक तथा भाववाचक संज्ञाओं के साथ भी यह मिल-जुल कर काम करती है।
3. जातिवाचक संज्ञाएँ सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होती हैं।

3.3

उपजाति भी जातिवाचक संज्ञा है

विद्यालय की वार्षिक परीक्षा में एक प्रश्न इस प्रकार दिया गया। 'गाय एक पालतू पशु है।' - वाक्य में प्रयुक्त जातिवाचक संज्ञा को रेखांकित करें। छात्रों ने 'पशु' शब्द को रेखांकित किया। एक अंक के स्थान पर उसे आधा अंक मिला क्योंकि इस वाक्य में गाय और पशु- दो जातिवाचक संज्ञाएँ हैं, जिसे छात्र-समझ नहीं पाया। इसका मुख्य कारण यह पता लगा कि कक्षा में भी इस विषय को स्पष्ट नहीं किया गया था।

छात्र की कठिनाई वास्तविक थी किन्तु हिन्दी सहायक प्राध्यापक के साक्षात्कार के समय साक्षात्कार-कर्त्ता ने प्रतिभागी से पूछा कि- 'शेर' कौन सी संज्ञा है?

उन्होंने उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा बता दिया क्योंकि उनकी दृष्टि में पशु-जातिवाचक संज्ञा है। संयोग से वे सज्जन मुझसे मिलने आए थे। तभी छात्र का भी आगमन हुआ था। अत: दोनों को इस विषय में मेरे द्वारा जो जानकारी दी गई, वह इस प्रकार है-

संज्ञाएँ तीन प्रकार की होती हैं। व्यक्तिवाचक-जातिवाचक तथा भाववाचक। व्यक्तिवाचक तथा भाववाचक संज्ञाएँ अगणनीय होती है। व्यक्तिवाचक एकवचन की सूचक है। अत: उसकी गणना करने का प्रश्न ही नहीं उठता। भावभावक संज्ञा को देखा-परखा नहीं जाता, और न उसे छुआ जा सकता है, इस प्रकार वह अगणनीय है। केवल जातिवाचक संज्ञाएँ ही गणनीय होती हैं। जैसे किसी कक्षा में कितने छात्र है, यहाँ छात्र जातिवाचक संज्ञा है क्योंकि छात्र संज्ञा गणनीय होती है।

इसी प्रकार जातिवाचक संज्ञा की एक पहचान यह भी है कि वह किसी एक का बोध नहीं अपितु सम्पूर्ण जाति का बोध कराती है। अब हम 'पशु' शब्द को ले। पशु गणनीय है क्योंकि उन्हें गिना जा सकता है। 'गाय' भी गणनीय है। क्योंकि गायों को गिना जा सकता है। यही स्थिति शेर की है, उसे भी गिना जा सकता है। किंतु गाय का नाम यदि कपिला गाय है, तो वह व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाएगी क्योंकि कपिला पुकारने पर वही गाय पहचानी जाएगी, जिसका नाम कपिला है, अन्य गाएँ नहीं। अत: यदि गाय का नामकरण हो जाता है, तो वह जातिवाचक नहीं, व्यक्तिवाचक की संज्ञा में आएगी।

इस विषय को एक निम्नलिखित चार्ट द्वारा और स्पष्ट रूप से समझें-

व्यक्तिवाचक संज्ञा	राम	कपिला गाय	वासुकी नाग
उपजातिवाचक संज्ञा	ब्राह्मण	गाय	नाग

जातिवाचक संज्ञा मनुष्य पशु प्राणी

उपर्युक्त आधार पर आपको यह ध्यान रखना है कि जातिवाचक की पहचान उपजातिवाचक संज्ञा के द्वारा भी होती है। दोनों में कोई अंतर नहीं है। यह बात स्पष्ट होते ही दोनों को प्रसन्नता का अनुभव हुआ क्योंकि अब उनके मन में किसी प्रकार का भ्रम नहीं था।

उपजाति के विषय में चर्चा करना कितना महत्त्वपूर्ण है। कक्षा में इस विषय को व्याकरण का शिक्षण करते समय शिक्षक को अवश्य ही इस तथ्य को स्पष्ट करना चाहिए, और छात्रों को इस प्रकार के अन्य शब्दों को छाँटने के लिए कहना चाहिए, तभी छात्र व्यवहारिक रूप से व्याकरण को समझ सकेंगे।

3.4

अमूर्त जगत की परिचायक है-भाववाचक संज्ञा

'एकोऽहम् बहुस्याम'- के अनुसार जिस स्थूल जगत की रचना हुई, उसे नाम-रूप का संसार कहते हैं। यह नाम-रूप के आधार पर सर्वत्र दृष्टि गोचर होता है। एक वचन-बहुवचन के अनुसार व्यक्तिवाचक संज्ञा तथा जातिवाचक संज्ञा के रूप को पहचाना जाता है। पुरुष-स्त्री के भेद से पुल्लिंग-स्त्रीलिंग के रूप में उसकी पहचान करते है। किंतु एक और संसार है, जिसे देखा नहीं जा सकता, उसे केवल अनुभव किया जा सकता है। उसे हम नाम से जानते है किंतु रूप के अभाव में पहचाना नहीं जाता।

संसार के जितने पदार्थ है, उन्हें हम उनके विशेष गुण-धर्म से जानते हैं, और अन्य पदार्थों से उसकी भिन्नता का ज्ञान कर सकते हैं। किंतु गुण सम्बन्धी इस पहचान को उस पदार्थ से अलग नहीं कर सकते। इसकी केवल मानसिक कल्पना ही कर सकते हैं।

अमूर्त होने के कारण इनके नाम से ही इनकी पहचान की जा सकती है। रूप के आधार पर इनकी पहचान नहीं होती। इनकी रचना सूक्ष्म-जगत की परिचायक है। जैसे-पदार्थ की कोमलता-कठोरता का बोध हम कर सकते हैं किंतु व्यक्ति कितना कोमल और कठोर भाव वाला है, यह पहचान करना संभव नहीं। वह अमूर्त है। इसलिए उसे देखकर नहीं पहचाना जा सकता। कठोरता को धर्म के रूप में पालन करने वाले व्यक्ति को भले ही हम देख ले, स्पर्श कर लें किंतु कठोरता का कोई माप-दंड नहीं होता। अत: ऐसे सभी गुण-दोषों का भाववाचक-संज्ञा में अध्ययन किया जाता है।

विशेषण भी गुण बताता है किंतु वह संज्ञा नहीं है। विशेषण शब्द वाक्य में किसी संज्ञा शब्द के साथ प्रयुक्त होकर उसकी विशेषता बताता है, जबकि भाववाचक संज्ञा स्वत: किसी गुण या भाव का नाम है;

जैसे-मोहन एक सुंदर लड़का है। (विशेषण)

सुंदरता सबको प्रिय है। (भाववाचक संज्ञा)

भाव-वाचक संज्ञाओं की रूप रचना दो प्रकार से होती है।

1. मूल रूप में भाववाचक संज्ञाएँ- जैसे- सत्य, अहिंसा, दया, क्रोध, जन्म-मृत्यु आदि।
2. यौगिक भाववाचक संज्ञाएँ- यौगिक भाववाचक संज्ञाओं की रचना पाँच प्रकार से होती है-

(क.) जातिवाचक संज्ञा से (ख.) सर्वनाम से

(ग.) विशेषण से (घ.) क्रिया से

(ङ) अव्यय से

अर्थात् भाववाचक संज्ञा का क्षेत्र संपूर्ण शब्द- पदों अर्थात् व्याकरण के आठों अंगों में व्याप्त है। कोई भी पद उससे अछूता नहीं। यह भाववाचक संज्ञा की एक ऐसी विशेषता है, जो उसे सूक्ष्म जगत के प्रतिनिधि होने के फलस्वरूप प्राप्त है। आइए, इस पर विचार करें-

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा :

राम से रामत्व। भारत से भारतीयता।

(यहाँ राम तथा भारत के गुणों का महत्त्व बताया गया है?)

2. जाति वाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा :

मनुष्य से मनुष्यता

नारी से नारीत्व

मित्र से मित्रता

यहाँ मनुष्य से मनुष्यता, नारी से नारीत्व तथा मित्र से मित्रता के आधार पर हम यह जान सकते हैं कि व्यक्ति संस्कारी है, अथवा नहीं।

3. सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा :

अपना से अपनापन

अहं से अहंकार

मम् से ममता

सर्वनाम व्यक्ति के अंदर अहंकार तथा ममत्व का कितना गुण विकसित करता है। यह बताना भाववाचक संज्ञा का धर्म है।

4. विशेषण से भाववाचक संज्ञा

सुंदर से सुंदरता

चतुर से चतुराई

मीठा से मिठास

ऐसी 'सुंदरता' कहाँ देखने को मिलती है। इस वाक्य में 'सुंदरता', नारी के एक गुण के आधार पर बताई गई है।

5. क्रिया से भाववाचक संज्ञा :

पढ़ना से पढ़ाई

दौड़ना से दौड़

सजाना से सजावट

पढ़ना एक क्रिया है, 'पढाई करना' विद्यार्थी का गुणधर्म है। 'दौड़' में जीतना होता है, जबकि इस जीत के लिए 'दौड़ना' क्रिया है। इस प्रकार क्रिया में गुणवत्ता कैसे लाना यह बताना भाववाचक संज्ञा का कार्य है।

6. अव्यय से भाववाचक संज्ञा :

दूर से दूरी

समीप से सामीप्य

शाबाश से शाबाशी

दूरी और सामीप्य स्थानगत गुण-धर्म, इसको भाववाचक संज्ञाएँ व्यक्त कर रही है।

इस प्रकार जिन शब्दों के प्रयोग से किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के गुण, धर्म, अवस्था अथवा व्यापार का इंद्रियगत बोध होना पाया जाए, वहाँ भाववाचक संज्ञाएँ होती है। व्यक्ति अथवा वस्तु के गुण-धर्म को व्यक्ति या वस्तु से पृथक नहीं किया जा सकता। इस प्रकार जानकार छात्र व्यक्तित्व-निर्माण की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे; और अंत:करण में व्याप्त गुण-दोषों की विवेचना करना सीखेंगे।

3.5

खेल का खेल- एक व्याकरणिक पहेली

आद्या भारती कक्षा चार की छात्रा है। उसकी पुस्तक 'वितान'(हिन्दी) में एक प्रश्न पूछा गया।

प्रत्येक शब्द के आगे लिखो कि वह कौन सी संज्ञा है?

	शब्द	संज्ञा
उदाहरण	खेल	जातिवाचक
	क्रिकेट	व्यक्तिवाचक

पहला शब्द को उदाहरण स्वरूप उन्होंने लिखा है, जिसमें खेल को जाति वाचक संज्ञा कहा है; और क्रिकेट को व्यक्तिवाचक। व्याकरण की एक अन्य पुस्तक भी उसने मुझे बताई जिसमें खेल को भाववाचक संज्ञा कहा गया है। लेखक के अनुसार उसमें **'खेलना'**(क्रिया) से भाववाचक संज्ञा **'खेल'** बनाई गई है। दोनों पुस्तकों के उदाहरण एक भ्रम की स्थिति उत्पन्न कर रहे हैं, ऐसा लगता है । वास्तविकता क्या है? खेल के इस खेल को स्पष्ट करने के लिए उसने मुझसे कहा- प्रश्न बड़ा जटिल है। फिर भी मैंने उसे समझाने का प्रयास कुछ इस प्रकार किया।

सर्व प्रथम हमें जातिवाचक तथा भाववाचक संज्ञाओं के भेद को समझना होगा-

1. **जातिवाचक संज्ञा :** उसे कहते हैं, जिससे किसी सम्पूर्ण जाति का बोध हो; जैसे-मनुष्य कहने से संसार के सभी मनुष्य जाति का बोध होता है। इस दृष्टि से विचार करने पर खेल शब्द जातिवाचक है, क्योंकि 'खेल' कहने से संसार के सभी खेलों का बोध होता है।
2. **भाववाचक संज्ञा:** किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु आदि के गुण दोष, स्वभाव, अवस्था आदि का बोध कराती है। यह संज्ञा दो प्रकार की होती है।

   (क) मूल रूप में- जैसे सत्य, अहिंसा, जीवन, मृत्यु आदि ।

   (ख) कुछ भाववाचक संज्ञाएँ अन्य शब्दों के साथ प्रत्यय जोड़कर बनाई जाती है;

   जैसे -

जातिवाचक संज्ञा में	-	मित्र से मित्रता ('ता' प्रत्यय)
सर्वनाम से	-	अपना से अपनापन ('पन' प्रत्यय)
विशेषण से	-	उदार से उदारता ('ता' प्रत्यय)
क्रिया से	-	खेलना से खेल ('आ' प्रत्यय)

अव्यय से – दूर से दूरी

अत: खेल जातिवाचक भी है, और भाववाचक भी।

इस सम्बन्ध में किसी भी संज्ञा शब्द के भेद का निर्णय करते समय हमें उसके प्रयोग पर विशेष ध्यान देना होगा कि वह व्यक्तिवाचक है, या जातिवाचक अथवा भाववाचक। – व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक के रूप में भी होता है। उदाहरण के लिए– बस तुम्हीं एक हरिश्चन्द्र हो। (यहाँ हरिश्चन्द्र शब्द व्यक्ति वाचक है किन्तु उसका प्रयोग जाति वाचक के रूप में हुआ है।) इसी प्रकार भाववाचक संज्ञा का प्रयोग जाति वाचक के रूप में भी होता है। जैसे–किसी भी खेल को रुचिपूर्वक खेलो। (यहाँ **'खेल'** शब्द का प्रयोग जातिवाचक के रूप में किया गया है)। यदि हम यह कहें कि–'अब हम क्रिकेट खेलेंगे।' तो इस वाक्य में 'क्रिकेट' व्यक्तिवाचक 'संज्ञा' कहा जाएगा जबकि मूलरूप से 'खेल' शब्द की रचना 'खेलना' क्रिया से हुई है। अत: यह रचना की दृष्टि से भाववाचक संज्ञा है। ध्यान रहे–'खेल' शब्द का प्रयोग यदि हम वाक्य में करते हैं, तो वह जातिवाचक संज्ञा कहलाएगी जबकि 'खेल' शब्द की रचना का आधार भाववाचक संज्ञा है। है न विचित्र बात!

निष्कर्ष यह है कि संज्ञा पदों का निर्णय प्रयोग के आधार पर करना चाहिए। एक अन्य उदाहरण पर भी ध्यान दें।'खिलाड़ी' शब्द जातिवाचक संज्ञा है। किन्तु इसकी रचना 'खेल'(संज्ञा) में आड़ीं प्रत्यय जुड़ने से हुई है। अत: यह क्रियार्थक संज्ञा बन गया। क्रिया से बनने से इसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

यह बात मै उस कक्षा चार की छात्रा को कैसे समझाऊँ; यह मेरी कठिनाई है। इस पर मैं विचार करता रहा।

3.6

वचन का उत्स है- 'एकोहं बहुस्याम'

वेदांत में 'एकोऽहं बहुस्याम' संकल्प के द्वारा ईश्वर सदा सृष्टि का विस्तार करता है। चौरासी लाख योनियाँ इसी के आधार पर ईश्वर द्वारा रची गई हैं। एक से बहुत होने को ही व्याकरण में दो प्रकार से जाना जाता है- एकवचन और बहुवचन।

व्याकरण में 'वचन' संख्यावाची शब्द है। कर्त्ता, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। जिस विकारी शब्द का अर्थ एक संख्या का सूचक होता है, वह एकवचन और जिससे एक से अधिक संख्या का बोध हो, वह बहुवचन कहा जाता है। किंतु केवल यहीं नियम होता तो एकवचन-बहुवचन की पहचान करना सभी के लिए आसान होता किंतु देखने में दो बातें और भी आती हैं। यहाँ इसी पर विचार करना उचित होगा।

1. कभी-कभी एकवचन में भी बहुवचन के रूप में दिखाई देते हैं; जैसे-प्राण, भाग्य, देव, दर्शन, समाचार आदि। इन शब्दों का प्रयोग सदैव बहुवचन में माना जाता है, जबकि इनका एकवचन रूप भी मान्य है।

2. कभी-कभी बहुवचन में एकवचन का रूप दिखाई देता है; जैसे- काम, यात्रा, निंदा, रुपया आदि। इनके बहुवचन रूप हैं- कामों, यात्राओं, निंदाओं, रुपयों-किंतु प्रयोग में प्राय: एकवचन ही काम में लाया जाता है; जैसे-

- मैं अपने सारे काम छोड़कर आप से मिलने आया हूँ।
- जिन-जिन तीर्थों की मैंने यात्रा की उनके नाम बताता हूँ।
- वह आपकी बहुत निंदा कर रहा था।
- अब हमारे कार्यक्रम के हिसाब से कुछ रुपया इकट्ठा हो गया है।

कहने का आशय यह कि यह पूरी सृष्टि ही एक से उत्पन्न हुई है। इसलिए यह कहना कठिन है कि कौन सी वस्तु एकवचन की है, कौन सी बहुवचन की। फिर भी दो बातें हमें हमेशा याद रखना है कि एक वचन अकेलेपन का सूचक है; और बहुवचन भीड़-भाड़ का। हमारे चारों ओर की भीड़-भाड़ हमें घेरकर चलती है, फिर भी हम अपने आपको अकेले पाते हैं। इसका सीधा अर्थ है- एकवचन है। आत्मा जो सभी के भीतर है, उसका बाहरी रूप है- भीड़-भाड़ अर्थात् बहुवचन। ये दोनों वचन दो नहीं, एक ही हैं, तथा इस प्रकार 'एकोऽहं बहुस्याम'- सामाजिक समरसता तथा पर्यावरण संतुलन का संदेश भी देता है। सभी प्राणी उस एक चेतन के ही अंश है। उसमें भेद भाव कैसा? तथा पर्यावरण संतुलन की दृष्टि से सभी जीवों को जीने का हक है। यह संदेश यदि छात्र जान लें, तो एकवचन-बहुवचन में छिपे मर्म को वे शीघ्र ही पहचान लेंगे।

3.7

अधिकरण कारक का प्रयोग कहाँ होता है?

''अधिकरण कारक में दो परसर्ग हैं- में, पर। कृपया स्पष्ट करें, इन दोनों परसर्गों के प्रयोग का आधार क्या हैं? एक छात्र ने पूछा।

बहुत अच्छा प्रश्न है? छात्र को प्रोत्साहित करते हुए मैंने कहा-अधिकरण का शाब्दिक अर्थ है- आधार अर्थात् कर्त्ता और कर्म के द्वारा की गई क्रिया का आधार क्या है? यह अधिकरण कारक द्वारा स्पष्ट होता है।

संस्कृत व्याकरण में ये आधार तीन प्रकार के बताए गए हैं-

1. औपश्लेषिक आधार
2. वैषयिक आधार
3. अभिव्यापक आधार

1. **औपश्लेषिक आधार का अर्थ है**- जिस कारक में किसी अवयव का संयोग हो; जैसे- वृक्ष पर पत्ती है। (यहाँ वृक्ष पर से वृक्ष के एक अवयव (अंग) का बोध हो रहा है।)
2. **वैषयिक आधार**- का अर्थ है जिससे किसी विषय का बोध हो रहा हो; जैसे-भक्त का मन भगवान में मग्न है। (यहाँ 'मन' के मग्न होने का विषय ईश्वर है।)
3. **अभिव्यापक आधार का अर्थ है**, जिसमें आधेय संपूर्ण रूप से व्याप्त हो; जैसे- तिल में तेल है। यहाँ तेल का आधेय तिल है अर्थात् तेल तिल के सर्वांग रूप में व्याप्त है।

   संस्कृत के ये उदाहरण तीन आधारों को स्पष्ट करने की दृष्टि से पर्याप्त हैं किंतु हिंदी में अधिकरण कारक का आधार मुख्य रूप से दो प्रकार से निर्धारित होता है-

   क. स्थान सूचक - पिताजी घर में नहीं हैं। वे दुकान पर हैं।

   ख. समय सूचक- वह दो दिन में लौटेगा। रेल ठीक समय पर आएगी।

विशेष : तुलना करने का निर्धारण भी अधिकरण कारक द्वारा होता है; जैसे- कवियों में तुलसीदास श्रेष्ठ हैं।

पशुओं में सिंह बलवान होता है।

(यहाँ दोनों उदाहरणों में अनेक के बीच में एक निश्चय करने का बोध हो रहा है।)

'में' उपसर्ग के अन्य उदाहरण : -

(क.) स्थान सूचक शब्द भी प्रयोग के अनुसार निश्चित होते हैं; जैसे-

1. स्थान के भीतर का भाव प्रकट करने के लिए

- घड़े में पानी है।
- इस झोले में कितने आम हैं।
- मनुष्य में बहुत बुराईयाँ भी रहती हैं।

2. स्थान की सीमा का बोध कराने के लिए (भीतर का नहीं)। जैसे-

- वह विद्यालय में है।
- उसके हाथ में झोला है।

(ख.) समय सूचक शब्द भी प्रयोग के आधार पर निश्चित होते हैं; जैसे-

1. वह रात में देर तक जागता है।
2. वह दो सप्ताह में लौटेगा।

(ग.) मूल्य बताने के अर्थ में-

- यह पुस्तक मैंने सौ रुपए में खरीदी।
- यह अँगूठी तुमने कितने में खरीदी?

'पर' परसर्ग के अन्य उदाहरण :-

(क.) स्थान सूचक शब्द पूरे स्थान का सूचक होता है; जैसे-

- पेड़ पर बंदर है।
- छत पर मोर नाच रहा है।
- राम घर पर ही है।

(ख.) स्थान वाचक अव्यय (यहाँ, वहाँ, कहाँ, जहाँ) के साथ 'पर' का प्रयोग उचित नहीं होता; जैसे-

- वहाँ पर कितने छात्र हैं?
- तुम कहाँ पर जा रहे हो।

(उपरोक्त वाक्यों में 'पर' का प्रयोग उचित नहीं।)

अतः वहाँ कितने छात्र हैं? तुम कहाँ जा रहे हो? इससे भी भाव स्पष्ट हो जाता है।

(ग.) समय बोधक शब्द का प्रयोग :-

- वह ठीक समय पर रवाना हुआ।
- उसके जाने पर ही मैं आराम करूँगा। (यहाँ जाने पर का अर्थ है- जाने के बाद। क्रिया के बाद 'पर' आने से 'बाद' का अर्थ होता है।)

(घ.) मूल्य बताने के अर्थ में-

- कम मजदूरी देने पर कौन काम करेगा।

विशेष : कभी-कभी 'में' के स्थान पर 'पर' तथा 'पर' के स्थान में 'में' का प्रयोग भी हो जाता है; जैसे- वह घर में नहीं है। वह घर पर नहीं है।

- मैं भाग्य में विश्वास करता हूँ। मैं भाग्य पर विश्वास करता हूँ।

इन उपरोक्त वाक्यों से यह स्पष्ट होता है कि उनमें दोनों प्रकार के परसर्ग 'में' अथवा 'पर' लगाया जा सकता है। हिंदी में इस प्रकार स्थान, समय तथा मूल्य बनाने में अधिकरण कारक का प्रयोग प्रायः होता है।

3.8

विशेष अर्थबोधक संज्ञा शब्द

हमने पढ़ा है कि व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग सदा एकवचन में होता है, परंतु जब कोई व्यक्तिवाचक संज्ञा व्यक्ति विशेष का बोध न कराकर, उस व्यक्ति के गुण या दोष के आधार पर अनेक व्यक्तियों (जातिवाचक) का सूचक हो जाती है, तब वह व्यक्तिवाचक न होकर जातिवाचक प्रयोग कहलाता है; जैसे- देश में जयचंदों की कमी नहीं है।

यहाँ 'जयचंद' शब्द का प्रयोग जातिवाचक रूप में हुआ है। कठिनाई यह है कि ऐसे अन्य नाम जो व्यक्ति के दोष के आधार पर प्रसिद्ध हैं, हमें कहाँ मिलेंगे। लगभग व्याकरण की हर पुस्तक में जयचंद और विभीषण को ही हम कब तक पढ़ते रहेंगे। ये दो नाम तो ऐसे दोषी व्यक्तियों के नाम है, जो देश-द्रोह के सूचक हैं। छात्रों को गुण-दोष के आधार पर ऐसे कुछ नाम जानना चाहिए। इससे छात्रों को देश की संस्कृति और मनोवृत्ति का भी परिचय मिलेगा। अभी तो यही पता चलता है कि भारत में केवल देश-द्रोही ही बसते हैं, जिनसे मिलकर सत्ता का परिवर्तन सहज ही हो सकता है।''- एक शिक्षक ने अपनी व्यथा कुछ इस प्रकार व्यक्त की।

उनकी चिंता में मैं भी शामिल हो गया किंतु तटस्थ श्रोता की भाँति नहीं। मैंने प्रयत्न पूर्वक ऐसे नाम छाँटे हैं, जिनसे छात्रों को परिचित कराना प्रत्येक शिक्षक का कर्त्तव्य है।

व्यक्ति विशेष :

1. सीता-सावित्री	पतिव्रता स्त्री	2. सूरदास	अंधा आदमी
3. शुक्राचार्य	एक चक्षु	4. भीम	अत्यन्त पराक्रमी
5. मीरा	भक्ति	6. कर्ण	दानी
7. बलि	दानी	8. बृहस्पति	विद्वान
9. श्रवण	आज्ञाकारी	10. युधिष्ठिर	सत्यवादी
11. रावण	अत्याचारी	12. कुबेर	धनी
13. मंथरा	चुगल खोरी।	14. नारद	आपस में लड़ाने वाला

प्राणी विशेष :

1. गौ	सीधा स्वभाव
2. हंस	न्यायी
3. साँप	हानि पहुँचाने वाला
4. कुत्ता	पराए टुकड़ों पर पलने वाला।

5. गीदड़ डरपोक।

इस प्रकार इन सूचीबद्ध व्यक्तियों की विशेष अंतर्कथाएँ भी उन्हें सुनाने का प्रयास करना चाहिए, ताकि वे अपनी संस्कृति की पहचान कर सकें। ये व्यक्ति किस काल में उत्पन्न हुए, तथा इन्होंने यह पहचान किन कर्मों के आधार पर बनाई, उसका पूरा-पूरा इतिहास तथा पौराणिक संदर्भ छात्रों को देना चाहिए। ऐसा करने से व्याकरण एक शुष्क तथा रटने वाला विषय मात्र नहीं रहेगा, अपितु रोचक बनेगा। हो सके तो प्रायोजित कार्य के अंतर्गत इन पात्रों को अध्ययन का विषय बनाया जाना चाहिए। इनसे संबंधित महाभारत, रामायण की कहानियाँ को भी स्पष्ट करना चाहिए। ताकि उन्हें यह विशेषता किन विशेष गुणों तथा दोषों के आधार पर मिली है, छात्र ठीक से जान सकें।

'आप स्वयं विचार करें- अँग्रेजों के समय लिखे गए इतिहास में सिकन्दर महान, अशोक महान तथा अकबर महान ही क्यों पढ़ाए जाते हैं? हमें इस संकुचित मनोवृत्ति से उठकर अपने सांस्कृतिक इतिहास पुरुषों का परिचय अवश्य ही देना चाहिए। इसी प्रकार व्याकरण के उदाहरणों में भी जयचन्द्र, विभीषण ही क्यों, अन्य सद्‌गुणों के संदर्भ को ध्यान में रखकर अन्य महापुरुषों के सम्बन्ध में भी हमें छात्रों को बताया जाना चाहिए, ताकि उनमें सकारात्मक ऊर्जा भरी जा सके।'' इतना कहकर शिक्षक महोदय मुझे धन्यवाद देते हुए अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त करने लगे।

04

सर्वनाम

4.1
'मैं' का बहुवचन 'हम' नहीं होता

बात कई दिनों पूर्व की है, हिन्दी व्याख्याता के पद पर नियुक्त होने के लिए मेरी पुत्री ने साक्षात्कार दिया था। साक्षात्कार लेने वाले विद्वान महोदय ने उससे पूछा-''मैं का बहुवचन क्या होता है?'' उसने बताया-''हम''।

'हम' नहीं होता। विचार करना। इतना कहकर वे मौन हो गए। दूसरे प्रश्नकर्ता ने सामान्य ज्ञान सम्बन्धी प्रश्न पूछकर उससे कहा- ''जाइए।''

साक्षात्कार-कक्ष से बाहर आने पर उसने मुझे बताया- ''पिताजी! मैं का बहुवचन 'हम' होता है न!''

मैंने कहा-''हाँ। आजकल तो हम यही पढ़ते-पढ़ाते आए हैं। फिर तुम यह प्रश्न क्यों पूछ रही है?''

पुत्री ने कहा-''भाषा के विशेषज्ञ, जो मेरा साक्षात्कार ले रहे थे, उन्होंने मुझसे यह प्रश्न पूछा था कि 'मैं' का बहुवचन क्या होता है? मैंने कहा-'हम'। उन्होंने कहा-'हम' नहीं होता, विचार करना। मैंने कहा-चलो, ठीक है।'

कई वर्ष बीत गए। मुझे वह बात खटक रही थी कि 'मैं' का बहुवचन 'हम' नहीं, तो क्या है?

संयोग से एक परम विद्वान से मेरी भेंट हुई। उनके समक्ष मैंने अपनी जिज्ञासा रखी। वे बोले-'मैं' का बहुवचन 'हम' नहीं होता। क्यों? आओ! मैं आपको समझाता हूँ। उनके कथन से मैं संतुष्ट हुआ। आप भी इस विषय में उन्होंने जो कहा, उस पर विचार कीजिए, तो उनके विचारों से अवश्य सहमत होंगे।

उन्होंने बतलाया-कई बार हम कहते हैं, वैयाकरण झूठ नहीं बोलते। मैं भी ऐसा ही मानता हूँ किंतु एक स्थल पर हमारे पाणिनि ही नहीं, सारी भाषाओं के वैयाकरण गलती करते हैं। हम सबको पढ़ाया जाता है कि 'मैं' एकवचन है; और इसका बहुवचन है-'हम'। सभी भाषाओं में यह व्यवस्था है। पर विचार करो। जब कहते हो 'वह' का बहुवचन 'वे' है, तब उसका अर्थ होता है-वह (देवदत्त)+ वह(यज्ञदत्त)+(भानुदत्त)= वे। इस प्रकार कई 'वह' मिलकर 'वे' बने।

ऐसे ही तुम और तुम लोग में व्यवस्था है, तुम+तुम+तुम =तुम लोग। इस प्रकार एक जाति के कई 'वह' मिलकर 'वे' बनें। और एक जाति के 'तुम' मिलकर 'तुम' बनें। परंतु जब तुम कहते हो 'मैं' का बहुवचन 'हम' है, तब उसका अर्थ बदल जाता है।

मैं (देवदत्त)+मैं (यज्ञदत्त)+मैं (भानुदत्त) ऐसा कहने से ही 'हम' नहीं हो जाता क्योंकि यहाँ 'मैं-देवदत्त, तुम-यज्ञदत्त और वह भानुदत्त= तीनों मिलकर 'हम' कहला रहे हैं। अत: विभिन्न व्यक्तियों को जोड़कर 'हम' बना है, तो वह एक का बहुवचन कैसे सिद्ध होगा। मैं-तो एक ही रहा, उसमें भिन्न-भिन्न व्यक्ति मिलकर 'हम' बने। अत: 'मैं' का बहुवचन संभव ही नहीं।

उनके इस तर्क से हम सहमत हों या नहीं, किन्तु मुझे लगता है, हमको इस विषय पर पुनर्विचार करना होगा कि 'मैं' का बहुवचन 'हम' होता है कि नहीं? '

इस सम्बन्ध में जब मैंने विचार किया-तो पाया कि मेरा पेन-हमारा 'पेन' नहीं हो सकता। प्रत्येक के लिए एक-एक पेन चाहिए। तभी बात बनेगी। 'मैं' यदि 'हम' हो गया तो समाज की व्यवस्था ही भंग हो जाएगी। मेरी सम्पत्ति, सबकी (हमारी) सम्पत्ति होगी। ऐसी व्यवस्था कौन स्वीकार करेगा। हाँ। मेरी सम्पत्ति, तुम्हारी सम्पत्ति और उसकी सम्पत्ति मिलकर हमारी सम्पत्ति हो सकती है। कहने का आशय यही कि सजातीय वस्तुओं का संघ ही एकवचन से बहुवचन कहलाता है। 'तुम' और 'वह' सजातीय नहीं, बल्कि तुम+तुम+तुम सजातीय मिलकर 'तुम लोग' (बहुवचन) बना; और इसी प्रकार वह+वह+वह- सजातीय मिलकर एकवचन से बहुवचन 'वे' बनें। यह सजातीय व्यवस्था है। 'मैं' स्वयं में जातीय-व्यवस्था से परे है। अत: एक मात्र 'मैं' ही ऐसा उत्तम पुरुष है, जो सर्वश्रेष्ठ है। तुम मध्यमपुरुष है, तथा वे अन्य पुरुष हैं। शास्त्रीय भाषा में कहें, तो यह वेदान्त की विशेष देन है।

4.2

मैं ही उत्तमपुरुष क्यों?

संस्कृत भाषा में और संभवत: विश्व की अनेक भाषाओं में व्याकरण की दृष्टि से तीन पुरुष होते हैं– अन्य पुरुष – वह जाता है; मध्यम पुरुष– तुम जाते हो; उत्तम पुरुष – मैं जाता हूँ। सर्वनाम के भेदों के अंतर्गत पुरुष वाचक सर्वनाम में ये तीनों पुरुष अध्ययन का विषय बनते हैं। इनमें वह और तुम–ये दो पुरुष तो वे हैं, जो प्रत्यक्ष दिखाई देते है, अनुभव में आते हैं किंतु तीसरा पुरुष 'मैं' कभी अनुभव में नहीं आता क्योंकि वह तो अनुभव को करने वाला है। स्वयं कभी अनुभव का विषय नहीं बनता इसलिए अनुभवानीत है। अत: 'मैं' सदैव उत्तम पुरुष कहलाता है।

इसे एक उदाहरण द्वारा समझें– आकाशवाणी दिल्ली से जो बोलता है, वह कहता है– 'यह आकाशवाणी दिल्ली है। किन्तु जो दिल्ली से दूरस्थ बैठकर सुन रहा है, उसके लिए तो दिल्ली 'वह' है। यहाँ 'यह' को प्रत्यक्ष कहा गया है, तथा 'वह' को अप्रत्यक्ष। इसी प्रकार जो वक्ता है। (बोलने वाला होता है) वह अपने को 'मैं' कहता है, पर जब सामने वाला उत्तर देता है, तो वह स्वयं को 'मैं' कहता है और उसके जो सामने है, उसे 'तुम' कहता है अर्थात् वह हमें 'तुम' कहता है।

इस प्रकार 'मैं' शब्द किसी एक व्यक्ति से सम्बद्ध नहीं होता। वार्ता करते समय वक्ता अपने को 'मैं' तथा सामने वाले को 'तुम' कहता है किंतु सामने वाला जब उत्तर देता है, तब वह स्वयं को 'मैं' तथा हमें 'तुम' कहता है। संवाद का यही मुख्य आधार रहता है।'

वेदान्त की दृष्टि से कहें तो मैं, तुम और वह – ये तीनों ही पुरुष की उपाधियाँ है। उत्तम पुरुष सदैव वक्ता के साथ रहता है अर्थात् 'मैं'। वक्ता जब भी अपनी बात रखता है, तो 'मैं' उपाधि का प्रयोग करता है। सुनने वाले की 'तुम' उपाधि है; तथा जिसके विषय में कहा जाए उसे 'वह' की उपाधि से संबोधित किया जाता है। बोलने वाले तथा सुनने वाले के व्यवहार से ये उपाधियाँ बदलती रहती है। इसलिए 'मैं' किसी एक व्यक्ति से सम्बद्ध नहीं रहता। वह कभी 'तुम' कभी 'वह' के सापेक्ष में भी बोलता है किंतु कभी मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष नहीं बनता।

अब रही 'मैं' के उत्तम पुरुष कहलाने की बात तो जो बोलता है, वही कर्ता तथा भोक्ता होता है। 'तुम' तथा 'वह' कभी कर्ता–भोक्ता नहीं होते। इसे भी एक उदाहरण से समझें। मानों 'मैं' कहता हूँ, तुम ऐसा करो, तो करने वाला प्रत्यक्ष रूप से तो 'तुम' रहता है किंतु जब उसे करने का प्रतिफल मिलता है, तो वह कहता है, यह 'मैंने' किया। वह कभी नहीं कहता कि उसे 'तुम' उपाधिधारी ने किया। जब भी वह अपने को 'मैं' उपाधि को अस्वीकार करके बोलता है, तो वह अनुकरणकर्त्ता होता है, अनुभव–कर्त्ता नहीं। जब तक व्यक्ति सुनकर कार्य करेगा, अनुसरण करेगा, वह कार्य

मध्यम-वर्ग का ही कहा जाएगा, उत्तम वर्ग का नहीं; क्योंकि समस्या आने पर वह अपना समाधान स्वयं नहीं खोज सकता। समाधान सदैव 'मैं' ही खोजता है। यही दो विशेषताएँ उसकी मौलिकता तथा गुणवत्ता को प्रकट करती हैं। 'वह' चूँकि अप्रत्यक्ष होता है, इसलिए उसे अन्य कहा गया। अन्य सदैव दूसरा होता है। दूसरे के विषय में अनुमान ही लगाया जा सकता है। वह अनुमान प्रामाणिक नहीं होता।

अत: 'मैं' सदैव उत्तम कर्त्ता माना गया है क्योंकि उसका ज्ञान अनुभवात्मक होता है; मौलिक होता है; तथा गुणवत्ता पूर्ण होता है। एक बात और भी ध्यान लाना है कि यही 'मैं' यदि भौतिक रूप से देह केन्द्रित होकर अपनी बात रखता है, तो वह अहंकारी बन जाता है। स्वयं को ही श्रेष्ठ घोषित करना उसका लक्ष्य होता है। इस प्रकार उसका स्वभाव राजसिक या तामसिक होता है। किंतु अध्यात्म की भाषा में अपने विचार रखने वाला 'मैं' सदैव सात्विक प्रवृत्ति का उत्तम पुरुष रहता है। उसके कर्म भी सर्वजनहिताय रहते हैं। 'मैं' को उत्तम पुरुष होने के विषय में कितना भी कहा जाए, कम है। सारे वेद, उपनिषद, पुराण आदि ग्रंथों में इसे विस्तार से समझाया गया है। व्याकरण की दृष्टि से हम इसे उत्तम पुरुष क्यों कहते हैं? यह विषय यहीं तक सीमित है। हमें अपने को 'मैं' के रूप में पहचान कर शिक्षण-कार्य करना चाहिए। सभी संतों ने 'मैं' को इसी रूप में पहचान कर समाज-सेवा को ही प्रमुखता दी है।

बात यहीं समाप्त हो जाती यदि मेरे पास बैठे हुए मेरे साथी मेरे इन तर्कों से सहमत हो जाते किंतु वे संतुष्ट नहीं थे। उनकी जिज्ञासा थी -यदि ऐसा है तो तुम, और वह तो कभी उत्तम पुरुष नहीं बन सकते। इस पर भी कुछ बताइए। मैंने उनको एक सत्य घटना के आधार पर यह बताने का प्रयत्न किया कि 'तुम' और 'वह' यदि 'मैं' के साथ तादाम्य स्थापित कर लेते हैं, तो मै+ तुम +वह = हम के अनुसार सभी उत्तम पुरुष बन जाएँगे अर्थात 'मैं' और 'हम' (मैं+तुम+वह) सभी उत्तम पुरुष होंगे। इसे तथ्य और तर्क से अधिक इस प्रसंग से समझें-

भारत के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम साहब एक बार भोपाल के 'प्रशासनिक-अकादमी' में भ्रष्टाचार पर अपने विचार रख रहे थे। संयोग से किसी ने जब कलाम साहब से पूछा कि यह भ्रष्टाचार कैसे मिटेगा? तो श्रोताओं में से किसी ने कहा- नहीं मिट सकता। तब कलाम साहाब ने एक महत्त्वपूर्ण बात कही। वे बोले-भ्रष्टाचार मिटेगा; और अवश्य मिटेगा। इसके लिए हम सभी को प्रयत्न करना होगा। अब आप भी मेरे साथ बोलें-

भ्रष्टाचार को मैं मिटाऊँगा। भ्रष्टाचार को हम मिटाएँगे।

यहाँ मुझे ध्यान में आया कि कोई कर्म करने में 'मैं' के साथ यदि 'तुम' और 'वह' भी मिल जाएँ तो सभी उत्तम पुरुष होंगे। सभी कर्त्ता होंगे, सभी भोक्ता होंगे। अकेले 'तुम' या 'वह' उत्तम पुरुष नहीं हो सकते। उसके साथ 'मैं' भाव का होना आवश्यक है। तभी समाज में परिणामकारी प्रभाव आ सकता है। यदि मैं अकेला अपनी उन्नति में लगा रहा तो 'तुम' और 'वह' पिछड़ जाएँगे। इस दृष्टि से मेरी उन्नति खंडित तथा एकांगी होगी। इससे समाज में असंतुलन बनेगा। इसलिए हमें एक जुट होकर सबकी उन्नति के विषय में सोचना होगा।

वे मेरी इस बात से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने भी मेरे साथ जुड़कर समाज सेवा करने का लक्ष्य बनाया। शायद 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' की मूल भावना भी यही है।

4.3

क्यों नहीं होता पुरुषवाचक सर्वनाम में संबोधन कारक का प्रयोग

''कक्षा में शिक्षक छात्रों की उपस्थिति लेते समय प्रत्येक छात्र के नाम का उच्चारण करते हैं, तो क्या वहाँ भी संबोधन कारक होता है?''- एक जिज्ञासु ने प्रश्न किया।

उत्तर स्पष्ट है- नाम से ही स्पष्ट होता है कि इस कथन का प्रयोग किसी को पुकारने तथा जोर देकर संबोधन करने में होता है। संबोधन कारक की परिभाषा में कहा गया है कि संज्ञा से जिस रूप से किसी को पुकारने या सचेत करने आदि का भाव ज्ञात होता है, उसे संबोधन कारक कहते है।

अत: शिक्षक द्वारा उपस्थिति लेते समय छात्रों का नाम लेना 'संबोधनकारक' के अंतर्गत आता है। आपने कहीं-कहीं प्यार और गाली के रूप में भी 'संबोधन' करते सुना होगा; जैसे- कुत्ते! कमीने! चमचे! मेरे राजा बेटे! मेरी प्यारी बिटिया! अत: इन मानुषी संज्ञाओं के रूप में जो भी शब्द बोले जाते हैं,उनमें भी संबोधन कारक होता है।

आपने सुना होगा-

लक्ष्मी तेरे तीन नाम।
परसा, परसु, परसराम।।

अर्थात् जैसे-जैसे व्यक्ति धनवान बनता है, वैसे-वैसे उसके नाम से संबोधन भी बदल जाते हैं। राजा से राजू, चतुर्वेदी से चौबे, द्विवेदी से दुबे ये भी सम्बन्धकारक के रूप हैं।

किसी व्यक्ति विशेष को बुलाते समय हम कहते हैं- ए मिस्टर! सुनिए! भाईसाहब! प्लीज मैडम!- ये भी संबोधन कारक है।

विस्मयादि बोधक शब्दों में-देशवासियो! देश की मदद करो। यहाँ 'देशवासियो' शब्द भी संबोधन कारक है।

संबोधन की यह प्रक्रिया प्राय: सभी भाषाओं में है किंतु हिन्दी भाषा में विदेशी भाषा के शब्दों में संबोधन के दो प्रकार मिलते हैं:

अ. हिन्दी की प्रकृति के अनुसार।

ब. बिना विकृति के उस भाषा की मूल प्रकृति के अनुसार।

उदाहरण के लिए - (क.) अरबी फारसी की हिन्दी प्रकृति के अनुसार हम कहते हैं दोस्तो! हराम जादे! हराम जादो!

(ख.) उस भाषा की मूल प्रकृति के अनुसार हम कहेंगे- मेरे आका! मेहरबान! साहबान! अफसरान!

अँग्रेजी शब्दों में मूल रूप में ही हम संबोधन का प्रयोग करते हैं, पर कभी-कभी उसमें हिन्दी की मिलावट भी देखने को मिलती है; जैसे- होमगार्ड बन्धुओ!

''यदि आपने इस विषय पर ध्यान दिया होगा तो आप स्वयं बता सकेंगे कि सर्वनाम में संबोधन कारक का प्रयोग क्यों नहीं होता है। उसके कारकीय रूपों में केवल सात कारक ही क्यों होते हैं।'' मैंने एक प्रश्न उन जिज्ञासु महोदय से किया।

वे मुस्कराते हुए बोले-''आपने संबोधन के विषय में इतनी विस्तार से चर्चा की है, तो अब मुझे बताने में कोई भ्रम नहीं है कि 'सर्वनाम' में संबोधन कारक का प्रयोग क्यों नहीं होता है?''

संबोधन कारक का प्रयोग सर्वनामों की रूप-रचना में इसलिए नहीं होता है कि संबोधन का अर्थ ही किसी को पुकारने से है। हम किसी को पुकारते समय उस व्यक्ति का नाम, उपनाम अथवा विशेषण-शब्दों का प्रयोग करते हैं। अतः संज्ञा-पदों में ही संबोधन कारक होते हैं।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि जिज्ञासु महोदय ने मेरी बात समझ ली।

4.4

मैं (सर्वनाम) + मेरा (सम्बन्धकारक) = माया

एक महात्मा जी का प्रवचन चल रहा था। वे कह रहे थे कि ''जड़ और चेतन सर्वत्र 'मैं' व्याप्त है किंतु 'मैं' कभी अनुभव में नहीं आता, वह अनुभवातीत है। 'तुम' और 'वह'-ये दो अनुभव में आने वाले हैं। प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं किंतु 'मैं' कहीं दिखाई नहीं देता। उसे किसी साधन से नहीं जाना जा सकता क्योंकि वह सदैव जानने वाला ही रहेगा। हाँ! देह, इंद्रियाँ, मन आदि सभी 'मैं' के साथ मिलकर प्रतीत होते हैं। देह गौरी है तो मैं कहता हूँ- मैं गौरा हूँ। मैं लँगड़ा हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ आदि, ये सभी बातें देह को लेकर कही जाती है। यहाँ भी कहने वाला 'मैं' है किंतु देह से अलग होकर वह कहता है।''

मैं बीमार हूँ। कभी कहते हो- मेरा शरीर बीमार है। इस प्रकार शरीर को ही कभी 'मैं' कहते हो, कभी मेरा। ध्यान दो, जब कहते हो 'मेरा शरीर' तो 'मेरा' अर्थात् 'मैं' का शरीर, मैं का स्थूल शरीर से सम्बन्ध स्थापित करते हुए कहते हो। सूक्ष्म शरीर जो ज्ञान, क्रिया और विचार आदि का अधिष्ठान है- वह भी मेरा स्वरूप नहीं है। इस प्रकार 'मैं' सदैव 'मेरे' से अलग रहेगा।....''

इस प्रकार उनका प्रवचन चल रहा था। उसे सुनते समय मेरे मन में व्याकरण विषय को लेकर चिंतन चल रहा था। मैंने सोचा महात्मा जी के कथन का सीधा सम्बन्ध इस प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है-मैं (सर्वनाम)+मेरा (सम्बन्धकारक)= माया

अर्थात् 'मैं' का जब मेरे से सम्बन्ध स्थापित होता है, तभी संसार के माया-जाल में हम फँस जाते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम के चार कारकीय रूप इस दृष्टि से विचारणीय हैं-

मूल	**तिर्यक**	**सम्बन्धकारक**	**कर्म/सम्प्रदान कारक**
मैं	मुझ	मेरा/मेरी	मुझे
तू	तुझ	तेरा/तेरी	तुझे

निश्चयवाचक सर्वनाम के तीन कारकीय रूप भी इस सम्बन्ध में जानने योग्य होते हैं-

मूल	**तिर्यक**	**कर्म/सम्प्रदान**
यह	इस/इन	इसे/इन्हें
वह	उस/उन	उसे/उन्हें

अब ध्यान दें-

कर्मकारक का लक्षण है: क्रिया को भोगने वाला।

सम्प्रदान कारक का लक्षण है- क्रिया करने का उद्देश्य।

सम्बन्धकारक का लक्षण है- संज्ञा के साथ भिन्न-भिन्न प्रकार के सम्बन्ध का बोध।

अर्थात् 'मैं' यदि माया से मुक्त होना चाहे तो उसे इन तीन कारकों के लक्षणों पर चिंतन करना चाहिए।

1. कर्म कारक के आधार पर उसे ध्यान देना चाहिए कि मैं जो भी कार्य करता हूँ, उसको भोगने वाला भी 'मैं' हूँ। इसलिए जो-जो भी मेरा है, उसे मुझे सहर्ष समाज के लिए लगाना चाहिए; परिवार की सेवा में लगाना चाहिए; ताकि कर्त्ता भाव और भोक्ताभाव का सुंदर समन्वय हो सके। 'मैं' यदि सब कुछ 'मेरा' है, का भाव रखकर स्वयं उसका उपयोग करेगा, तो माया के चक्कर में पड़ जाएगा।
2. क्रिया करने का उद्देश्य है। जो 'मेरा' है- वह समाज को देना है। यही संप्रदान कारक का लक्षण है। 'मैं' समाजकल्याण के लिए अपनी आय का चतुर्थांस दान में देता हूँ। माँ ने मुझे पैसे दिए, और मैंने सबके लिए मिठाई खरीदी। यह देना का स्वभाव हमें 'परिग्रह' से अपरिग्रह की ओर ले जाता है।
3. सम्बन्धकारक के अंतर्गत हमारा सम्बन्ध 'मैं' से जुड़ता है। यह सम्बन्ध ही 'मेरा' भाव का जनक है। मैं चाँदी की थाली में खाता हूँ; यह मेरा मकान है आदि। अतः इस सम्बन्ध को हमें 'मैं' केन्द्रित नहीं रखते हुए 'राष्ट्र' केन्द्रित रखना चाहिए अर्थात् यह सम्पत्ति मेरी नहीं, राष्ट्र की है। राष्ट्र के सभी नागरिक मेरे अपने हैं आदि। यह चिंतन हमें समाज-सेवा एवं राष्ट्र-सेवा के लिए त्याग करने की शक्ति देता है।

'भारत के लोग लालची नहीं, धन को बटोरना नहीं चाहते है, केवल शांति चाहते हैं।'- यह संदेश '**वसुधैव कुटुम्बकम्**' की प्रेरणा जगाता है। इस भाव को जगाना ही हमारे जीवन का लक्ष्य बनना चाहिए

मैं और भी कुछ सोचता कि महात्मा जी का प्रवचन समाप्त हुआ। सब लोग उनको प्रणाम करते हुए अपने-अपने घर जाने लगे। कह नहीं सकता-ये विचार क्यों मेरे मन में आ रहे थे। इनको मैं अपने तक सीमिति नहीं रखना चाहता। इसलिए इस शीर्षक से सभी के लिए व्यक्त कर रहा हूँ।

4.5

'अपना कार्य आप करें' की शिक्षा देता है निजवाचक सर्वनाम

शिक्षक ने कक्षा में छात्रों से पूछा-"अपना-अपना नाम बताइए! अपने-अपने पते एक-दूसरे को दें।" सब बच्चों ने एक-दूसरे को अपने-अपने पते दिए।

"क्या इन वाक्यों में अपना, अपने निजवाचक सर्वनाम है?"- एक जिज्ञासु ने पूछा।

मैंने कहा- "निश्चय ही ये दोनों शब्द (अपना, अपने) 'आप' के विकारी रूप हैं। अन्य विकारी रूप है- आप ही, आप-ही-आप, अपने-आप, अपने-से। इसके अतिरिक्त तीन और निजवाचक सर्वनाम है- स्वतः, स्वयं (संस्कृत) तत्सम शब्द खुद (उर्दू विदेशी शब्द), जिनका प्रयोग हिंदी भाषा में किया जाता है।"

वैसे 'आप' शब्द का प्रयोग मध्यपुरुष 'तुम' के अर्थ में तथा अन्य पुरुष के अर्थ में भी किया जाता है, किंतु निजवाचक 'आप' और पुरुषवाचक 'आप' में अंतर है; जैसे-

1. आप यहीं बैठिए, मैं अभी आया। (मध्यम पुरुष, आदरार्थ)
2. आप मेरे मित्र हैं, आप भोपाल से आए हैं। (अन्य पुरुष, आदरार्थ)
3. मैं अपने-आप लिख लूँगा। (निजवाचक सर्वनाम)

अर्थात् निजवाचक सर्वनाम में कर्त्ता द्वारा अपना कार्य आप करने की भावना प्रबल होती है। यह निजता कर्त्ता के साथ अपनापन (निजत्व) की भावना से जुड़ी रहती है। इन शब्दों का प्रयोग 'कर्त्ता' के बाद होता है; जैसा कि वाक्य क्रमांक 3 में कर्त्ता 'मैं' के बाद ही अपने-आप का प्रयोग हुआ है।

अतः निजवाचक सर्वनाम की परिभाषा में कहा गया है- जो सर्वनाम वाक्य के कर्त्ता के साथ अपनापन बताता है, उसे निज-वाचक सर्वनाम कहते हैं।

इनके प्रयोग के सम्बन्ध में कुछ बातों पर ध्यान दें।

1. ये सर्वनाम, संज्ञा पद के लिंग, वचन के अनुरूप होते हैं; जैसे-
   - वह अपने घर गया। (पुल्लिंग)
   - यह मेरी अपनी रचना है। (स्त्रीलिंग)
   - माताजी अपना मुँह धो रही हैं। (एकवचन)
   - पिताजी अपने कपड़े धो रहे हैं। (बहुवचन)
2. तुलनात्मक वाक्य-रचना करते समय (अपने से+विशेषण) का प्रयोग होता है।

जैसे–1. अपने से छोटों को प्यार करो।
2. अपने से बड़ों का आदर करो।

3. सम्बन्ध कारक/अधिकरण कारक के रूप में–
जैसे–1. यह हमारे आपस का मामला है। (सम्बन्ध कारक)
2. आपस में बाँट लो। (अधिकरण कारक)

4. स्वयं के अर्थ में–
जैसे–1. मैंने स्वयं भोजन बनाया है।
2. तुम स्वयं को अपने से दूर कैसे रखोगे?

5. आप–ही, (अपने–आप) के अर्थ में–
जैसे–1. मैं आप–ही अपना काम करने में समर्थ हूँ।
2. इस चित्र की कल्पना अपने–आप मेरे मस्तिष्क में उभरी।

इस प्रकार निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग विशेषकर चार प्रकार के अर्थों को प्रकट करने वाले वाक्यों में होता है:–

1. किसी संज्ञा या सर्वनाम के निश्चय करने के लिए–
जैसे– मैं स्वयं यह देखकर आया हूँ।
2. अन्य व्यक्ति के निराकरण के लिए–
जैसे–वह औरों को नहीं, अपने (आप) को कोस रहा है।
3. सर्वसाधारण के अर्थ में–
जैसे– आप भला तो जग भला।
4. अवधारणा के अर्थ में; जैसे–
यह काम अपने आप ही हो गया।

उपरोक्त वाक्यों के प्रयोग की विशेषताएँ बताते हुए छात्रों को यह स्पष्ट करना चाहिए कि किसी काम को स्वयं करने के स्वभाव को बनाने के लिए निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग करना चाहिए। राष्ट्र और समाज सेवा के सम्बन्ध में जितना वे निजवाचक सर्वनाम पदों का प्रयोग करेंगे, उतनी ही उनकी यह भावना उसके चरित्र–निर्माण में सहायक बनेगी। फिर चाहे वह 'स्वच्छता–अभियान' में भाग लेने का अवसर हो या अन्य कोई भी सामाजिक–राष्ट्रीय दायित्व को पूरा करने का।

||05||

विशेषण

5.1
चरित्र निर्माण की शिक्षा देते हैं- विशेषण

''विशेषण के दो भेद- गुणवाचक तथा सार्वनामिक विशेषण- संज्ञा तथा सर्वनाम के आधार पर किए गए है किंतु संख्यावाचक तथा परिमाणात्मक विशेषण, इन दो भेदों की गणना विशेषण में किस आधार पर की गई है। इससे तो यह सिद्ध होता है कि वही मनुष्य महान् है, जो संख्या में बलवान है।''

कहने का आशय यह कि विशेषण के इन चार भेदों में से दो (गुणात्मक तथा परिमाणात्मक) विशेषण ही विकास के सूचक है। हमें विशेषण की इन दोनों विशेषताओं को ध्यान में रखकर अपना चरित्र-निर्माण करना चाहिए।''

एक शिक्षक ने बहुत ही चतुराई से मुझसे यह प्रश्न किया। मैं जो उत्तर दूँ, वह भी उतनी ही चतुराई भरा होना चाहिए। शिक्षक महोदय की चरित्र-निर्माण के सम्बन्ध में इस धारणा को देखकर मैंने उनसे ही एक प्रश्न किया- ''कृपया, बताएँ कि किसी बालक का नामकरण रावण के नाम पर क्यों नहीं किया जाता है, जबकि रावण धन, शक्ति, विद्या, कुल, अपार जन समर्थन एवं अजेय योद्धा था। दशहरा के दिन हम रावण का पुतला क्यों जलाते है? क्योंकि सर्वगुण सम्पन्न होकर भी उसमें एक बड़ा अवगुण था कि वह नैतिक दृष्टि से या यूँ कहिए कि चरित्र-निर्माण की दृष्टि से गिरा हुआ था। कहा भी गया है - **''एक लखपूत, सवा लख नाती। ता रावण घर दिया न बाती।''**

इसके विपरीत नैतिक एवं सदाचरण के मार्ग पर चलकर विभीषण राक्षस होते हुए भी राम-दास बन गया। शबरी भीलनी से भामिनी बन गई। दासी पुत्र नारद अगले जन्म में देवर्षि नारद बन गए। बाल्मीकि डाकू से वंदनीय आदिकवि बन गए। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि विशेषणों से हमें गुणात्मक विकास की ओर ही बढ़ना चाहिए; परिमाणात्मक विकास की ओर नहीं।

आज समाज में नैतिक दृष्टि से जो गिरावट आ रही है, उसका मुख्य कारण व्यक्ति का गुणात्मक विकास की तुलना में परिमाणात्मक विकास को महत्त्व देना है।

आप स्वयं देखिए- क्या ऐसा नहीं लगता कि आपके साथी, पड़ोसी, माता-पिता, भाई-बहन तथा समाज अधिक से अधिक संख्या और परिमाण में धन कमाने में नहीं जुटे हैं?

गाँधी जी महान बने, शिवाजी तथा महाराणा प्रताप महान बने क्योंकि बचपन से ही उन्हें उनके माता-पिता ने नैतिक गुणों के विकास की शिक्षा दी थी।

मैं और भी कुछ बोलता, इसके पहले शिक्षक महोदय ने मुझे टोकते हुए प्रतिप्रश्न किया- ''संख्या और परिमाण वैसे भी विशेषण नहीं है। फिर इन्हें विशेषण के अंतर्गत क्यों माना गया है?''

मैंने पुनः उनके प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि इन दोनों को विशेषण के अंतर्गत क्यों रखा गया है- यह विद्वान लोग ही जान सकते हैं। किंतु ये दोनों संज्ञा तथा सर्वनाम की संख्या तथा परिमाण का सही-सही आकलन करते हैं। इसलिए इनको विशेषण के अंतर्गत रखा गया है।

कहने का आशय यह कि जैसे हमें अधिक भोजन नहीं करना चाहिए, थोड़ा सा दूध पीना चाहिए, बहुत अधिक नहीं आदि शब्दों का व्यवहार में प्रयोग करने के लिए शब्द चाहिए। उस कथन की पूर्ति यह दोनों विशेषण करते हैं। एक अन्य उदाहरण लें। हमें दिन भर में आठ गिलास पानी पीना चाहिए आदि ऐसे अनेक वाक्य हैं, जो हमारे दैनिक जीवन में प्रयोग में आते हैं। अतः आध्यात्मिक दृष्टि से गुणात्मक विकास एवं भौतिक दृष्टि से पदार्थ (संख्या या परिमाण) का संयमित उपभोग करना, यह शिक्षा हमें विशेषण से मिलती है।

चरित्र-निर्माण के लिए हमें दोनों विकास की आवश्यकता है। शिक्षक महोदय मेरे इस दृष्टिकोण से बहुत प्रसन्न हुए और चलते-चलते कह गए कि मैं अब छात्रों को व्याकरण में विशेषण के महत्त्व को समझाऊँगा। केवल भेदों के अनुसार ही नहीं, उनके चरित्र-निर्माण की दृष्टि से स्पष्ट करूँगा। इससे उनमें जीवन को संयमित बनाने की प्रेरणा जगेगी।

5.2

कहानी में छिपे विशेषण के भेद

मेरी दादी ने मुझसे कहा- ''बेटी, नीबू पानी बनाकर लाओ। आज गर्मी बहुत अधिक है। नीबू पानी को पीकर कुछ राहत मिलेगी।''

मैंने कहा- ''दादी! नीबू-पानी कैसे तैयार होता है? मैंने तो पहले कभी नहीं बनाया।''

दादी बोली- ''आओ, मैं समझाती हूँ, इसे बनाना सबसे आसान है।''

सामान :

ठंडा पानी	- एक गिलास
पीला बड़ा नीबू	- एक
सफेद नमक	- थोड़ा सा
काला नमक	- चुटकी भर
दानेदार चीनी	- दो चम्मच
बर्फ के छोटे टुकड़े	- चार या पाँच

बनाने की विधि :

गिलास में भरे पानी में पहले चीनी और नमक अच्छी तरह मिला लो। नीबू काटकर उसका रस पानी में घोल दो। बर्फ के टुकड़े डाल दो-बस हो गया ठंडा, चटपटा नीबू पानी तैयार।

दादी के बताए अनुसार मैं नीबू-पानी तैयार करके लाई। दादी ने पूछा- ''आज तुमने स्कूल से दिया होमवर्क किया कि नहीं?'' मैंने कहा -''दादी, आज हमारी शिक्षिका ने 'विशेषण' के बारे में घर से पढ़कर आने को कहा है। मुझे याद ही नहीं हो रहा है कि विशेषण की परिभाषा क्या है, और उसके कितने भेद होते हैं?''

नीबू पानी का मजा लेते हुए दादी बोली- ''अरे! लो, मैं तुम्हें विशेषण के बारे में बताती हूँ। मैंने जो तुम्हें नीबू-पानी के सामान के बारे में बताया था, क्या तुम्हें याद है, किन-किन वस्तुओं का तुमने उसमें प्रयोग किया था?''

'पानी, नीबू, नमक, चीनी और बर्फ'- बस ये पाँच ही वस्तुएँ थी।

अब गृह-कार्य की कॉपी में लिखो-

संज्ञा शब्द (विशेष्य)	**कैसा? (गुणवाचक)**	**कितना?(संख्यावाचक/ परिमाणवाचक)**	**कौन सा ? (सार्वनामिक विशेषण)**
वस्तु के नाम	वस्तु के गुण का ज्ञान	वस्तु की मात्रा/तोल या	वस्तु की ओर संकेत

का बोध होता है।	होता है।	माप का ज्ञान होता है।	किया जाता है।
पानी	ठंडा	एक गिलास	–
नीबू	पीला	एक	–
नमक	सफेद, काला	थोड़ा सा, एक चुटकी	–
चीनी	दानेदार	दो चम्मच	–
बर्फ	छोटे टुकड़े	चार या पाँच	–

1. ध्यान दो, वस्तु के आगे कैसा लगाकर प्रश्न करो; तो उत्तर में तुम्हें उसके आकार, रूप-रंग, गुण, स्वभाव एवं अवस्था का पता लगेगा। इसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

   उदाहरण के लिए-

   1. पानी कैसा? – ठंडा (अवस्था)
   2. नीबू का रंग कैसा? – पीला (रूप-रंग)
   3. नमक कौनसा? – सफेद या काला (रूप-रंग)
   4. चीनी कैसी? – दानेदार (आकार)
   5. बर्फ का आकार कैसा? – छोटे टुकड़े (आकार)

2. यदि वस्तु के आगे कितना या कितनी लगाकर प्रश्न किया जाए? उत्तर में तुम्हें निश्चित संख्या का बोध होगा, इस संख्या को ही संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

   उदाहरण के लिए - 1. पानी कितना – एक गिलास

   इसी प्रकार नीबू आदि की संख्या भी ज्ञात की जा सकती है।

3. जब हम बाजार में जाते हैं, तो नमक और चीनी तुलवा कर किलोग्राम में लाते हैं; बाजार जाते समय स्कूटी में पेट्रोल भरवाते हैं तो वह लीटर में मापा जाता है; घर से बाजार तक की दूरी किलोमीटर में नापते हैं, तो हम कह सकते हैं कि जिन शब्दों (विशेष्यों) के द्वारा माप-तोल का पता चलता है, उन्हें हम परिमाणवाचक विशेषण कहते है। क्या बिना **परिमाण वाचक** विशेषण को जाने हम बाजार से वस्तुएँ जाकर ला सकते है? कभी नहीं।

संख्यावाचक विशेषण और परिमाणवाचक विशेषण दोनों में थोड़ा सा अंतर है। यद्यपि दोनों 'को कितना' कहकर समझा जा सकता है। फिर भी इस अंतर को जानना भी जरूरी है। ये दोनों जुडवाँ भाई हैं। यदि किसी वस्तु की गिनती संख्या के आधार पर होती है, तो वह संख्यावाचक विशेषण है; और न गिनने योग्य वस्तु को नापा या तोला जाता है, तो उनके परिमाण (नाप-तौल) के आधार पर उसे परिणाम-वाचक विशेषण कहते है।

एक बात और भी ध्यान में रखने योग्य है- जब हम बाजार जाते हैं, तो कभी-कभी वस्तु खरीदते समय दुकानदार पूछता है-

कौन सा नीबू दूँ – हरा या पीला।

कौन सा नमक दूँ – काला या सफेद।

कौन सी चीनी दूँ – बारीक या दानेदार।

तो हम कहते हैं- 1. चीनी नहीं, गुड़ दे दो। (संज्ञा)

2. यह नहीं, वह दे दो। (सर्वनाम)

3. यह गुड़ नहीं, वह करेली का गुड़ दे दो। (सार्वनामिक विशेषण)

दूसरे और तीसरे वाक्य में यद्यपि यह तथा वह- दोनों का समान प्रयोग हुआ है किंतु 'यह' तथा 'वह' का प्रयोग (चीनी एवं गुड़) के स्थान पर प्रयोग हुआ है। अतः वह सर्वनाम है तथा तीसरे वाक्य में 'यह' तथा 'वह' का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर न करके संज्ञा से पहले किया गया है। इसे ही **सार्वनामिक विशेषण** कहते हैं; अर्थात् जो सर्वनाम शब्द संज्ञा के एकदम पहले लगकर उसकी विशेषता का बोध कराते हैं, उनको सार्वनामिक विशेषण कहा जाता है।

अब बताओ, जो सामान मैंने नीबू पानी बनाने के लिए बताया, उसमें कौन-कौन से विशेषण हैं? मैंने कहा- वाह दादी! आपने तो कमाल कर दिया। नीबू के शरबत में तो बहुत गुण हैं।

शिक्षक इस प्रकार अन्य विषय-वस्तु को भी कहानी के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं।

5.3

सदाचरण की शिक्षा देते है- गुणवाचक विशेषण

''संसार में ऐसा कोई प्राणी नहीं होगा, जिसमें गुण ही गुण हों, दोष हों ही नहीं। रावण विद्वान था किंतु सदाचारी नहीं था। अब यह हम पर निर्भर करता है कि हम सदाचारी बनें, या न बनें।'' दशहरा पर दो मित्र आपस में यही चर्चा कर रहे थे। मुझे उस चर्चा में अपने काम की बात समझ में आई कि गुण और अवगुण की शिक्षा विशेषण के माध्यम से हमें परोक्ष रूप में व्याकरण में भी पढ़ने को मिलती है किंतु हम उस पर ध्यान नहीं देते।

विशेषण शब्द का कोशीय अर्थ है: किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाला शब्द। फिर यह विशेषता गुणों की हो, या अवगुणों की। व्याकरण की दृष्टि से गुण और अवगुणों का समावेश गुणों में ही होता है। प्रत्येक लेखक प्राथमिकता से गुणों और अवगुणों की चर्चा करता है; जैसे- गुण - अच्छा, दयालु, शांत, सज्जन, सच्चा, विद्वान आदि।

अवगुण - बुरा, निर्दयी, अशांत, दुर्जन, झूठा, मूर्ख आदि।

उदाहरण - रमेश बुद्धिमान है। (गुण)

उमेश मूर्ख है। (दोष/अवगुण)

लेकिन व्याकरण के अंतर्गत गुणवाचक विशेषण की संख्या इतनी अधिक है कि इसकी पहचान के लिए व्याकरण में जो वर्गीकरण किया गया है, वह भी पर्याप्त नहीं लगता; फिर भी चर्चा इसी आधार पर आगे बढ़ाते हैं। वह वर्गीकरण निम्नलिखित आधारों पर इस प्रकार है-

1. रंग के आधार पर जैसे - गोरा-काला
2. आकार के आधार पर जैसे - लम्बा, ठिगना
3. गति के आधार पर जैसे - तेज, मंद।
4. समय के आधार पर जैसे - दैनिक, वार्षिक
5. स्थान के आधार पर जैसे - देशी, विदेशी
6. दिशा के आधार पर जैसे - पूर्व, पश्चिम
7. गंध (ऐंदिक गुण) के आधार पर जैसे- सुगंधित, बदबूदार
8. स्वाद (ऐंदिक गुण) के आधार पर जैसे - मीठा, नमकीन
9. स्पर्श (ऐंदिक गुण) के आधार पर जैसे - नरम, कठोर
10. दृश्यता (ऐंदिक गुण) के आधार पर जैसे - आकर्षक, गंदा

11. स्वास्थ्य (ऐंदिक गुण) के आधार पर जैसे–स्वस्थ, अस्वस्थ

अतः उपरोक्त गुणों के आधार पर ही हम गुणवाचक विशेषण की पहचान कर सकते हैं। यह तो रही विशेषण की सैद्धांतिक व्याख्या किंतु यहाँ महत्त्व की बात यह है कि गुणवाचक विशेषण पढ़ाते समय हम यह भूल जाते हैं कि जीवन में विशेषता सद्गुणों से विकसित होती है, अवगुणों से नहीं। अतः शिक्षक को सावधानीपूर्वक इस स्थान पर छात्रों के हित में दो बातें ध्यान में लाना होंगी–

1. प्रत्येक गुण–दोषों की चर्चा महापुरुषों के गुणों को लेकर की जाए। छात्रों को प्रायोजित कार्य के अंतर्गत महापुरुषों के गुण–दोष लिखने को कहा जाए ताकि वे यह समझ सकें कि वे किन गुणों के कारण याद किए जाते हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी चर्चा, गंध, स्वाद, स्पर्श, दृश्य के अंतर्गत सौंदर्य प्रसाधनों तथा टी.वी.को लेकर चर्चा की जाए। रंग–आधार के अंतर्गत नेत्र–परीक्षण की चर्चा की जाए। कहने का आशय यह कि गुणवाचक विशेषण का सम्बन्ध विषय–मात्र से न जोड़कर दैनिक क्रिया–कलापों से जोड़ा जाए।

2. समाज में कंजूस व्यक्ति दानी बने। साहसी बनकर हमें बुराइयों का सामना करना आए आदि गुणों को आधार बनाकर ऐसी घटनाओं को प्रमुखता से छात्रों के प्रकाश में लाना चाहिए जिससे उन्हें सदाचरण की शिक्षा मिल सके। सदाचार के लिए कुछ पंक्तियों (सूक्तियों के रूप में) तैयार करवाई जाएँ; जैसे–

क. मैं दुखी लोगों की मदद करूँगा।

ख. मैं अच्छा बनने का प्रयत्न करूँगा।

ग. मैं अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय करूँगा आदि।

कहने का आशय यह कि गुणवाचक विशेषण के माध्यम से हम छात्रों में सदाचरण के प्रति लगाव उत्पन्न करने की चेष्टा कर सकते हैं। चरित्र–निर्माण की दिशा में ले जाने का कार्य केवल गुणवाचक विशेषण ही करते हैं। यह कार्य केवल शिक्षक ही कर सकते हैं।

5.4

साधना का मार्ग दिखाती-गुणवाचक विशेषण की अवधारणाएँ

एक दिन विद्यालय की कक्षा 12वीं के छात्रों को व्याकरण समझाने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। मैंने छात्रों से एक प्रश्न किया- ''आप सबमें अच्छा बालक कौन है?''
सभी ने एक स्वर में कहा, ''मोहन।''

''और सबसे बुरा लड़का कौन है?''

सभी ने हँसते हुए कहा, ''ऊधमसिंह।''

कक्षा के सभी छात्र हँस पड़े। मैंने कहा, ''आप जानते हैं, मेरे द्वारा यह पूछने का कारण क्या है?''

''नहीं, '' मैं बतलाता हूँ, ''आज आपको मैं विशेषण की तुलनात्मक अवस्थाओं के विषय में कुछ बतलाना चाहता हूँ।''

आप जानते हैं- दो या दो से अधिक वस्तुओं या गुणों की तुलना करने को 'तुलनात्मक विशेषण, कहते हैं। अँग्रेजी में तुलना करते समय शब्दों का रूपांतरण हो जाता है किंतु हिन्दी में ऐसा नहीं होता; जैसे-

good	better	best (अँग्रेजी)
अच्छा	अधिक अच्छा	सबसे अच्छा (हिंदी)
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम (संस्कृत)

उपरोक्त उदाहरणों में अँग्रेजी में good शब्द का रूपांतर better-best हुआ है। संस्कृत में 'तर' तथा 'तम' लगाकर तुलना की जाती है; तथा हिंदी में 'तर' के स्थान पर 'अधिक' (दो में तुलना) तथा 'तम' के स्थान पर 'सबसे' (सब में) श्रेष्ठ शब्द का प्रयोग किया जाता है।

तुलना करते समय एक बात ध्यान में रखना है कि यह तुलना केवल गुणात्मक होती है, संख्या या मात्रात्मक नहीं। संख्या तथा मात्रा में तुलना तो हो सकती है किंतु उनकी गुणवत्ता की तुलना करना संभव नहीं। अत: गुणवाचक विशेषण के विषय में जिन अच्छे- बुरे की ओर संकेत किया जाता है, उससे हमें प्रेरणा लेना चाहिए कि हमें लोग अच्छे और विशेष गुणों से जानें। मैंने जिन दो छात्रों के विषय में पूछा था कि 'सबसे अच्छा', 'सबसे बुरा' छात्र कौन है; वह इसीलिए पूछा था कि व्याकरण की दृष्टि से दोनों ही गुणवान हैं किंतु मानवता की दृष्टि से हमें अच्छे गुणों के विकास की ओर ध्यान देना चाहिए। अच्छे गुणों के विकास की प्रक्रिया साधना परक होती है, विकास परक होती है। अत: तुलनात्मक विशेषण का अध्ययन आप इसी दृष्टि से करें।

याद रखें-गुणवाचक विशेषण में भी कुछ विशेषण ऐसे होते हैं, जिनमें तुलनात्मक

अवस्थाएँ होती ही नहीं हैं; जैसे-

क. नकारात्मक अवस्था : अशिक्षित, असभ्य, अप्रिय, अक्षम्य आदि। किंतु अशिक्षित में भी सुनने-बोलने की क्षमता होती है, लिखने-पढ़ने की नहीं। अत: वह भी पूरी तरह शिक्षा-हीन नहीं। यही स्थिति असभ्य, अप्रिय तथा अक्षम्य की है। कोई पूरी तरह असभ्य, अप्रिय या अक्षम्य नहीं होता है। उसमें भी सभ्यता, प्रियता, क्षमा के कुछ गुण अवश्य पाए जाते हैं।

ख. अभावात्मक अवस्था : अंधा-बहरा, लूला-लँगड़ा आदि।

सूरदास अंधे थे किंतु उनमें 'प्रज्ञा-चक्षु' होने के गुण थे। वे मथुरा में वही भजन प्रतिदिन सुनाते थे, जिस प्रकार का उनके इष्ट को वेश धारण कराया जाता था। यह क्षमता हरेक में नहीं होती। इसी प्रकार तैमूर लूला-लँगड़ा था किंतु आक्रमणकारियों में उसकी गणना की जाती है; जबकि दो पैर वाले भी आक्रमण करने से घबराते हैं। कहने का आशय यह कि कोई भी गुणवाचक विशेषण नकारात्मक अथवा अभावात्मक नहीं होता। आवश्यकता है, उससे सकारात्मक तथा भावात्मक तादात्म्य की।

गुणात्मक विशेषण की इन दो विशेषताओं को ध्यान में रखकर हमें विशेषण की तुलनात्मक अवस्थाओं का अध्ययन करना चाहिए। ये तीन अवस्थाएँ हैं-

मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तम अवस्था**
सुंदर	अधिक सुंदर	सबसे सुंदर
(एक प्राणी के लिए)	(दो प्राणियों में तुलना के लिए)	(पूरे वर्ग के लिए)

विशेष : इस सम्बन्ध में कुछ बातों का हमें और भी ज्ञान होना चाहिए कि -

1. हिंदी में तुलनात्मक अवस्था बतलाने के लिए कुछ और भी शब्द हैं, जिस ओर हमारा ध्यान नहीं जाता; जैसे- से, अपेक्षा, सामने, बनिस्वत, सबसे, सबमें, सा आदि।

कुछ उदाहरणों से इसे जानें-

1. राम मोहन से अधिक बुद्धिमान है।
2. यहाँ के प्राचार्य की अपेक्षा शिक्षक अधिक शिष्ट हैं।
3. सरिता के सामने रीता की सुंदरता का कोई अर्थ नहीं है।
4. गीता सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है।

2. गुणात्मक उदाहरण में 'सा' प्रत्यय जोड़ कर गुणों को बड़ा या छोटा बतलाया जाता है; जैसे बड़ा-सा, छोटा-सा।

अत: तुलनात्मक विशेषण की इन बातों को ध्यान में रखते हुए हमें अपने व्यक्तित्व में निरंतर निखार लाने का संकल्प लेना चाहिए। दूसरों की तुलना की अपेक्षा सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी, गायक, समाजसेवक, राजनेता, अभिनेता, साहित्यकार आदि बनने का संकल्प लेना चाहिए। किंतु यह निखार साधना के मार्ग से आएगा, केवल सोचने से नहीं।

5.5

वान/मान का प्रयोग कहाँ होता है

''प्राय: कुछ संज्ञा पदों में वान अथवा मान प्रत्यय लगाकर विशेषण शब्द बनाए जाते हैं; जैसे:- धन में 'वान' लगाकर धनवान बना, तथा श्री के साथ 'मान' लगाकर श्रीमान शब्द बना। कृपया बताएँ- कहाँ 'वान' लगाते हैं, और कहाँ 'मान'?''- एक छात्र ने मुझसे जिज्ञासावश पूछा।

छात्र की जिज्ञासा का समाधान वैसे तो कुछ नियम बताकर भी किया जा सकता था, जैसा कि प्राय: व्याकरण की पुस्तकों में दिया रहता है। किन्तु उन नियमों को सीखने का अभ्यास करना बहुत आवश्यक है। अन्यथा कुछ शब्दों के उदाहरण जो कि उन पुस्तकों में दिए रहते हैं, उनके अतिरिक्त हम नए शब्दों के निर्माण की क्षमता छात्रों में पैदा नहीं कर सकते। यही सोचकर मैंने छात्र से पाँच 'वान' वाले शब्द तथा पाँच 'मान' वाले शब्द एक कागज पर लिखने को कहा। छात्र ने पाँच-पाँच शब्द इस प्रकार लिखे-

(क)	वान वाले शब्द	(ख) मान वाले शब्द
	धनवान भगवान	नीतिमान श्रीमान
	बलवान सत्यवान	गतिमान बुद्धिमान
	दयावान	

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर मैंने छात्र को समझाया कि 'क' स्तम्भ के वे पाँच शब्द कौन से हैं, जिनमें वान लगा है? छात्र ने बताया- धन, बल, भग, सत्य और दया।

अब ध्यान दो; इन शब्दों के अंतिम व्यंजन में 'अ' अथवा 'आ' स्वर का प्रयोग हुआ है; जैसे :- धन में न शब्द न्+अ स्वर मिलकर बना है। इसी प्रकार 'ल, य, ग तथा या' शेष चार व्यंजन 'अ' तथा 'आ' स्वरों से मिलकर बने हैं। अत: जहाँ कोई शब्द अंतिम व्यंजन 'अ' अथवा 'आ' से जुड़ा हो, वहाँ 'वान' शब्द का प्रयोग होता है; जैसे- ध+न्+अ्+वान =धनवान।

इसी प्रकार 'ब' स्तम्भ के अंतिम व्यंजनों में 'इ' अथवा 'ई' स्वर की मात्रा लगी है; जैसे- नीति में अंतिम 'ति' में 'इ' की मात्रा लगी है। श्री में बड़ी 'ई' की मात्रा लगी है। अत: जहाँ 'इ', 'ई' अथवा 'उ', 'ऊ' की मात्रा का प्रयोग शब्द के अंतिम व्यंजन में हो, वहाँ 'मान' शब्द जोड़ा जाता है। बस, अब आप पाठ्यपुस्तक या अन्य कोई भी पुस्तक पढ़ते समय शब्दों की बनावट पर ध्यान देंगे तो यह नियम स्वत: ही स्पष्ट हो जाएगा। पुस्तकों में केवल कुछ उदाहरणों के साथ नियम दिए रहते हैं, उनको विस्तार से इसी प्रकार जानने का प्रयास करें।

किन्तु हर नियम के कुछ अपवाद भी होते है। वैसे ही इस नियम के भी कुछ अपवाद

हैं; जैसे– गाड़ीवान यहाँ गाड़ी शब्द में 'ड़ी' में बड़ी 'ई' की मात्रा लगी है। अत: यहाँ 'मान' लगना चाहिए था, यह नियम है। किन्तु इस प्रकार के शब्दों पर विचार करेंगे तो ध्यान में आएगा कि अन्य भाषा से आए विदेशी शब्दों पर यह नियम लागू नहीं होता है। गाड़ी शब्द उर्दू का है। इसलिए यह नियम यहाँ लागू नहीं होता है। अत: शब्दों के निर्माण करने में हमें शब्दों के स्वरूप से भी परिचित होना होगा। यह नियम संस्कृत तथा हिन्दी के तत्सम शब्दों पर ही लागू होता है।

अब आप समझ गए होंगे कि कहाँ 'वान' लगता है, कहाँ 'मान'। अभ्यास के लिए यहाँ कुछ उदाहरण और दिए जा रहे हैं। आप भी इस प्रकार के हिन्दी तद्भव तथा तत्सम शब्दों का संकलन शब्दकोश की सहायता से स्वयं तैयार कर सकते हैं।

उदाहरण :	अ/आ (वान)	इ/ई अथवा उ/ऊ (मान)
	रूपवान	शक्तिमान
	गुणवान	हनुमान
	भाग्यवान	कीर्तिवान
	विद्वान	धृतिमान
	ज्ञानवान	वर्धमान

नियम :

संज्ञा शब्द के अंत में अ/आ हो तो 'वान' तथा इ/ई अथवा उ/ऊ हो तो 'मान' जोड़ा जाता है। इन्हें जोड़कर यौगिक विशेषणों का निर्माण होता है।

विशेष :

कुछ हिन्दी के तत्सम शब्दों में 'वान' के स्थान पर 'वन्त' तथा 'मान' के स्थान पर 'मन्त' का प्रयोग भी देखने को मिलता है; जैसे :– दयावन्त, श्रीमन्त, जाम्वन्त आदि।

06

क्रिया

6.1
क्रिया का होना/करना

क्रिया पर विचार करने के पूर्व निश्चय ही कर्त्ता का ध्यान पहले आता है। प्रश्न मन में उठता है कि कर्त्ता का जन्म पहले हुआ फिर क्रिया हुई; या कि क्रिया द्वारा कर्त्ता का जन्म हुआ अर्थात् क्रिया कर्त्ता के पूर्व से ही अस्तित्व में थी।

लगता है, यह प्रश्न ही व्यर्थ है। यह सोचने में समय व्यर्थ गँवाना है क्योंकि समाधान सोचने से नहीं मिलता। अस्तित्व के विषय में ऐसे प्रश्न निरर्थक है। इसलिए यह मानना ही अधिक उचित होगा कि दोनों का अस्तित्व पहले से ही था। किसी रेखा को खींचकर उनके अस्तित्व का प्रारंभ मानना, या न मानना एक दार्शनिक पहेली है किंतु यह सच है कि कार्य को लक्ष्य करके ही कर्त्ता क्रिया करता है।

परमात्मा जब क्रिया करता है तो उसे कार्य का होना कहा जाता है, और मानव द्वारा किया गया कार्य करने की श्रेणी में आता है। यही कारण है कि क्रिया की परिभाषा में होना/करना दोनों का उल्लेख मिलता है।

व्याकरण की भाषा में जिन शब्दों से किसी कार्य का होने या करने का पता चलता है, वे शब्द क्रिया कहलाते हैं; जैसे-

- पुजारी पेड़ से फूल तोड़ रहा है। (क्रिया पुजारी द्वारा की जा रही है।)
- पेड़ से फूल झड़ रहे हैं। (क्रिया स्वयं हो रही है।)

इन दोनों वाक्यों से क्रिया के करने तथा होने का पता चल रहा है। अतः क्रिया दोनों प्रकार से हो रही है।

यहाँ एक विशेष बात जो हमें ध्यान में लाना है, वह है कार्य, और क्रिया में अंतर जानना।

शब्दकोश में कार्य का अर्थ- काम, कृत्य, व्यापार या धंधा अर्थात् जिसे लक्ष्य करके कर्त्ता क्रिया करे। अतः कार्य का सम्बन्ध परिणाम से जोड़ा जाता है। या यूँ कहें कि कार्य और परिणाम (क्रिया) एक दूसरे के पूरक हैं; अर्थात् एक सिक्के के दो पहलू हैं।

एक मूलभूत अंतर कार्य और क्रिया में यह है कि कार्य पुल्लिंग (संज्ञा) है, जबकि क्रिया स्त्रीलिंग (संज्ञा) अर्थात् कोई भी प्रक्रिया बिना दोनों के मिले परिणाम नहीं देती।

इसलिए कार्य और क्रिया का अभिन्न सम्बन्ध है। निश्चय ही दोनों का अस्तित्व एक साथ प्रकट हुआ है।

क्रिया के सम्बन्ध में एक बात और भी चिंतन में लाना होगा कि होना तथा करना-ये दो स्वरूप उसके निर्धारित किए गए हैं, उसका क्या निहितार्थ है?

जैसा कि पूर्व में बताया गया है, जब क्रिया स्वयं होती है अर्थात् पेड़ से फूलों का झड़ना स्वत: हो रहा है तो इसे हम क्रिया का होना कहते हैं। इसमें मानवीय प्रयत्न को कोई स्थान नहीं है। हम देखते हैं कि संसार में ऐसी अनेक दैवी क्रियाएँ हैं जो स्वयं घटित होती हैं; जैसे- पानी का बरसना, हवा या आँधी का चलना, मृत्यु होना, जन्म होना, सुख-दु:ख, हानि-लाभ का होना ये सब क्रियाएँ 'होने' शब्द से व्यक्त होती है। इसी कारण कहा गया है- ''हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश, विधि हाथ।''

ठीक इसके विपरीत करने की क्रिया व्यक्ति (कर्त्ता) स्वयं करता है। इसके परिणाम को भी वह स्वयं उपयोग करता है। ये क्रियाएँ किसान के द्वारा खेत में बीज बोने के समान है। जैसा बीज डालेंगे, वैसी फसल होगी। कहा भी गया है-

'बोए पेड़ बबूल के, आम कहाँ से पाय।'

अत: इन दोनों पहलुओं को ध्यान में रखकर हमें छात्रों को जीवन में श्रेष्ठ क्रियाओं को करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। छात्र अपने जीवन में प्रयत्न करना न छोड़े। यदि प्रयत्न में सफलता नहीं मिलती है, तो वह असफलता 'होने' के अंतर्गत आती है; जैसे- पूरे वर्ष पढ़ाई की तैयारी में लगने पर भी ठीक परीक्षा के दिनों में स्वास्थ्य बिगड़ना। यहाँ परीक्षा देने की तैयारी करना क्रिया के **करने** के अंतर्गत आती है; और परीक्षा में स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण सम्मिलित न हो पाना **होने वाली** क्रिया के अंतर्गत है। इसलिए क्रिया के अंतर्गत होना/करना- दोनों का महत्त्व है। केवल 'करने' से सफलता मिलने का श्रेय वे ही लेते हैं जो कर्त्ताभाव से प्रेरित होते हैं। किंतु आस्तिक सफलता का श्रेय परमात्मा को देता है क्योंकि हर क्रिया के पूरे होने में परमात्मा ही सहयोगी होता है। अत: हमें हर क्रिया को पूरा होने में साक्षी भाव को जाग्रत रखना है। भारतीय चिंतन की इस अवधारणा को छात्र जानें, यह हमारा प्रयत्न होना चाहिए।

6.2

अकर्मक में 'अकर्म' किस बात का संकेत है–संज्ञा का या क्रिया का

शासकीय पाठ्यपुस्तकों का लेखन चल रहा था। स्थाई समिति के नाते विशेषकर हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों की रचना करने में नवाचार के प्रति मेरा आग्रह रहता था। लेखकगणों ने एक दिन पूछा–कर्म के विषय में शब्दकोश में बताया गया है कि कर्म वह कार्य अथवा क्रिया है, जिसका करना कर्त्तव्य हो; जैसे– विद्यार्थी का कर्त्तव्य है– स्वाध्याय करना।

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद किए जाते है: सकर्मक और अकर्मक। अत: स्पष्ट करें कि यदि कर्म अकर्मक है, तो वह कर्म कहाँ रहा? अ+कर्म तो कर्म के अभाव का सूचक है।

''विषय जटिल है, जिस ओर हमारा ध्यान अवश्य जाना चाहिए। इस बात को स्पष्ट करते हुए यही बात मैंने बताई। अत: हमें क्रिया और कर्म– इन दोनों शब्दों का आशय ठीक–ठीक समझना होगा। अकर्मक क्रिया इसी बात की ओर संकेत देती है। अत: हमें दोनों को ही एक साथ समझना होगा। किसी कार्य के होने अथवा करने को क्रिया कहते है। यहाँ कार्य और क्रिया में भी अंतर है। एक उदाहरण से इसे समझें; जैसे– माँ रोटी बनाती हैं। रोटी बनाना कार्य है किन्तु रोटी बनाने की प्रक्रिया को पूरा करते समय जो कार्य हो रहा है, वह क्रिया कहलाएगा; अर्थात् कार्य करने की प्रक्रिया क्रिया कहलाती है। अब रोटी बनाने की प्रक्रिया यदि माँ द्वारा पूरी की जाती है, तो उसे हम कर्म कहेंगे। कर्म सदैव कर्त्तव्य की भावना से जुड़ा रहता है। वह उसके बदले कुछ भी प्रतिफल नहीं चाहता है। यही कर्म यदि नौकरानी करती है, तो वह कर्म नहीं कहलाएगा, कार्य कहलाएगा।''

कर्म के आधार पर क्रिया में जो भेद किया जाता है, उसका कर्म अथवा क्रिया से कोई लेना–देना नहीं है। उसका सम्बन्ध कर्मकारक से है।

स (साथ)+ कर्मक (कर्मकारक के <u>साथ</u>) होने वाली क्रिया अर्थात् सकर्मक क्रिया।

अ (नहीं)+ कर्मक (कर्मकारक के <u>बिना</u> होने वाली क्रिया) अर्थात् अकर्मक क्रिया।

अब इसे एक उदाहरण से समझें। हिन्दी में निम्नलिखित क्रियाएँ सदैव <u>अकर्मक</u> रहती हैं–

1. जातिबोधक क्रियाएँ– आना, जाना, घूमना, दौड़ना, उड़ना आदि।
2. अवस्थाबोधक क्रियाएँ– होना, रहना।

जैसे- कृष्ण (कर्त्ता) दौड़ रहा (क्रिया) है।

उपरोक्त वाक्य में केवल कर्त्ता (कारक) तथा क्रिया का प्रयोग हुआ है। यहाँ कर्मकारक का प्रयोग नहीं है। अत: क्रिया का फल कर्त्ता पर पड़ रहा है, कर्म पर नहीं। कर्मकारक के अभाव के कारण इस क्रिया का नाम अकर्मक क्रिया है। यहाँ 'कर्मक' शब्द कर्मकारक का संक्षिप्त नाम है। कारक शब्द का अर्थ है-करने वाला। इस दृष्टि से संज्ञा अथवा सर्वनाम द्वारा की गई क्रिया का फल या प्रभाव जिस पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं और जिस क्रिया का फलकर्त्ता पर पड़े, उसे अकर्मक क्रिया कहते है। ऐसी क्रियाएँ कर्त्ता स्वयं करता है। यहाँ कृष्ण स्वयं दौड़ रहा है। कब 'कैसे और कौन'- क्रिया कर रहा है, प्रश्न का उत्तर कर्त्ता स्वयं होता है। आना, जाना, सोना, जागना, उठना, बैठना, जीना-मरना, मिलना, गिरना आदि कुछ क्रियाएँ सदैव कर्त्ता द्वारा पूरी की जाती है। अत: ये अकर्मक क्रियाओं के उदाहरण हैं। किंतु निम्नलिखित दो वाक्यों पर ध्यान दें।

क. कृष्ण खेल रहा है। (अकर्मक क्रिया)

ख. कृष्ण फुटबाल खेल रहा है। (सकर्मक क्रिया)

उपरोक्त दोनों वाक्य में खेलना क्रिया अकर्मक भी है; और सकर्मक भी। अत: प्रसंगानुसार छात्रों को इसकी जानकारी भी देना चाहिए कि यह क्रिया के प्रयोग पर निर्भर करता है कि वह सकर्मक है; अथवा अकर्मक।

निष्कर्ष यह है कि अकर्मक क्रिया में 'कर्मक' शब्द कर्मकारक का संकेतक है, क्रिया का नहीं। यह धारणा हमें स्पष्ट होना चाहिए। मेरे इस विवेचन को सुनकर अकर्मक क्रिया की अवधारणा को स्पष्ट होने का संकेत लेखक-गणों के चेहरे की मुस्कराहट से झलक रहा था।

6.3

अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं की रूपरचना

''पाठ्यपुस्तकों में अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं के कुछ उदाहरण इस प्रकार से दिए गए हैं कि– जब सकर्मक क्रिया द्वारा केवल व्यापार मात्र ही प्रकट करना अभीष्ट हो, और कर्म के कथन की आवश्यकता न हो, तब सकर्मक क्रिया अकर्मक हो जाती है; और कर्म के कथन की आवश्यकता हो, तब अकर्मक क्रिया सकर्मक हो जाती है। कृपया इस कथन को स्पष्ट करने का कष्ट करें।''– एक शिक्षक ने अपनी कठिनाई मेरे समक्ष रखी।

विषय जटिल है। स्पष्ट धारणा बनाने के लिए विषय को समझाने का ऐसा प्रयास होना चाहिए कि आगे जाकर पाठक अपनी बात दृढ़ता से रख सके। यह सोचकर सर्वप्रथम मैंने सकर्मक क्रिया अकर्मक क्रिया कैसे बन जाती है, इसको एक उदाहरण से स्पष्ट किया।

मोहन देखता है। राम बोलता है।

इन दोनों वाक्यों में देखता है, तथा बोलता है– क्रियाओं से 'देखना' और 'बोलने' का कार्य होने का व्यापार (कर्म) प्रकट हो रहा है। इसमें कर्मकारक का प्रयोग नहीं हो रहा है। कर्त्ता अपना कर्म स्वयं कर रहा है। उसे किसी की आवश्यकता नहीं है। अत: ये क्रियाएँ अकर्मक हैं।

अब यदि देखना और बोलना– क्रियाओं की धातु में दो व्यंजन 'ए' और 'ओ' के स्थान पर 'इ' और 'उ' लगा दिया जाए तो वह सकर्मक क्रिया हो जाएगी; जैसे–

देखना से दिखाना। ('दे' (ए) के स्थान पर 'दि' (ई) का रूप आ गया है।)

बोलना से बुलाना। (यहाँ 'ओ' के स्थान पर 'उ' का रूप हो गया है।)

इसे उदाहरण द्वारा समझें; जैसे–

मोहन राम को देखता है।

राम मोहन को बुलाता है।

कुछ क्रियाएँ ऐसी हैं जो प्रयोग के आधार पर अकर्मक और सकर्मक दोनो हो जाती हैं; जैसे–

अकर्मक	**सकर्मक**
आटा पिस गया।	आटा पीस डालो।
उसका सिर खुजलाता है	वह अपना सिर खुजलाता है।
वह घड़ा भरा है।	उस घड़े को भरो।

रूप रचना के आधार पर अकर्मक क्रियाओं के सकर्मक होने के कुछ नियम हैं। इन्हें भी

जानो –

1. अकर्मक क्रिया के धातु के तीन अक्षरों के मूल में द्वितीय अक्षर 'अ' को 'आ' (दीर्घ) करके सामान्य रूप का चिह्न 'ना' लगा देने से अकर्मक क्रिया सकर्मक हो जाती है; जैसे–

सुनना (अकर्मक)	मुझे **सुनना** है। (कर्त्ता क्रिया स्वयं कर रहा है।)
सुनाना (सकर्मक)	मुझे **सुनाना** है। (कर्त्ता को कर्म की आवश्यकता है।)
पकना (अकर्मक)	(यहाँ 'न' का 'ना' हो गया है।)
पकाना (सकर्मक)	(------''----------)
चलना (अकर्मक)	(------''----------)
चलाना (सकर्मक)	(------''----------)

2. अकर्मक एक अक्षर वाली धातु के प्रथम अक्षर में 'ई' या 'ओ' हो तो क्रमशः 'इ' या 'उ' करके 'ल' जोड़ देते है तो क्रिया सकर्मक हो जाती है; जैसे–

अकर्मक	**सकर्मक**	
जीना	जिलाना	(यहाँ 'जी' का 'जि' हो गया है।)
रोना	रुलाना	(यहाँ 'रो' का 'रु' हो गया है।)

3. कहीं–कहीं धातु में आ, ई, ऊ (दीर्घ) हो तो उसके स्थान में प्रथम अक्षर (यहाँ प्रथम अक्षर 'आ' (दीर्घ) 'अ' (ह्रस्व) हो गया तथा द्वितीय अक्षर 'ग' (ह्रस्व) 'गा' (द्वितीय) स्वर हो गया है।) 'अ', 'इ', 'उ' (ह्रस्व)हो जाता है, और द्वितीय अक्षर (ह्रस्व) से दीर्घ हो जाता है, तो सकर्मक क्रिया हो जाती है।

अकर्मक	**सकर्मक**
भागना	भगाना
घूमना	घुमाना

4. यदि मूल अकर्मक धातु का प्रथम वर्ण 'इ' या 'उ' कारान्त हो तो उसे एकारान्त अथवा 'ओ' कारान्त कर देने से सकर्मक धातु क्रिया बन जाती है; जैसे–

घिरना से घेरना (इ से ऊ)	मुड़ना से मोड़ना (उ से ओ)
छिदना से छेदना	खुलना से खोलना
दिखना से देखना	घुलना से घोलना
	जुड़ना से जोड़ना

5. कभी–कभी सकर्मक क्रियाओं का रूप बिल्कुल भिन्न हो जाता है; जैसे–

टूटना (अकर्मक) से तोड़ना (सकर्मक)

बिकना (अकर्मक) से बेचना (सकर्मक)

रहना (अकर्मक) से रखना (सकर्मक)

विशेष :

क. हिंदी में कुछ ऐसी क्रियाएँ है, जो सदैव अकर्मक रहती हैं वे कभी सकर्मक नहीं बनती;

जैसे–क. जातिबोधक क्रियाएँ– आना, जाना, घूमना, उड़ना, दौड़ना आदि।

ख. अवस्थाबोधक क्रियाएँ– होना, रहना, सोना आदि।

ख. जब अकर्मक धातु से भाववाचक संज्ञा बनाकर उसका कर्म के रूप में प्रयोग किया जाता है, तो अकर्मक क्रिया सकर्मक बन जाती है; जैसे– महेश गाता है। (अकर्मक)

- महेश गाना गाता है। (सकर्मक) यहाँ 'गाना' भाववाचक संज्ञा है; जैसे–
- राम चलता है। (अकर्मक)

राम तेज चाल चलता है। (सकर्मक)

ग. प्रेरणार्थक प्रयोग में भी अकर्मक क्रिया सकर्मक क्रिया बन जाती है; जैसे–

- गाड़ी **चलती** है। (अकर्मक)
  इंजन गाड़ी को चलाता है। (प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया 'चलाता'– सकर्मक)
- पेड़ बढ़ता है। (अकर्मक)
  पानी पेड़ को बढ़ाता है। (प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया 'बढ़ाता'– सकर्मक)

6.4

कितनी मनोरंजक है- रंजक क्रियाएँ

मेरी पोती आद्या भारती कक्षा चार में पढ़ती है। मुझसे भेंट करने आए एक विद्वान प्राध्यापक से उसने प्रश्न किया- ''मेरे सामने काँच के दो कटोरे रखे हैं। एक कटोरे में रंगीन कंचे हैं, जिनकी संख्या बीस है। दूसरा कटोरा खाली है। अब मैंने पहले कंचे से दस कंचे निकाल डाले; और दूसरे कंचे में रख दिए, तो बताइए पहले कटोरे में कितने कंचे बचे?''

''दस कंचे।''

''गलत।''

''वो कैसे?'' उन्होंने कहा।

पोती ने बताया-''आपने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। मैंने कहा था- दस कंचे निकाल-डाले/निकाले; और डाले-अर्थात् मैंने निकालकर पुनः पहले कटोरे में ही डाल दिए। निकाले-डाले एक साथ क्रिया की तो दूसरे कटोरे में कंचे कैसे पहुँचेंगे। वह तो खाली ही रहेगा।''

विद्वान प्राध्यापक मुस्कुराते हुए बोले- ''बेटी! तुम बहुत चतुर हो। तुम्हारे दादाजी के साथ रहकर तुम भी रंजक-क्रियाओं का मनोरंजक ढँग से प्रयोग कर रही हो।''

उपरोक्त संवाद से मुझे- रंजन-क्रियाओं पर लिखने का यह विषय मिला। वास्तव में रंजक क्रियाओं की रूप-रचना को हमें ठीक से समझना होगा कि इसमें विपरीत धर्मी क्रिया बोधक शब्दों का प्रयोग क्यों होता है?

रंजक-क्रिया की पहचान करने से पूर्व हमें यह ध्यान रखना होगा कि क्रिया के पाँच भेद होते हैं; 1. साधारण क्रिया, 2. संयुक्त क्रिया, 3. प्रेरणार्थक क्रिया,
4. पूर्वकालिक क्रिया, 5. नाम धातु क्रिया।

इन पाँचों क्रियाओं को योगिक क्रियाएँ भी कहते हैं, क्योंकि ये क्रियाएँ दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनती है। रंजक क्रिया का अध्ययन संयुक्त किया के अंतर्गत किया जाता है।

अतः पहले संयुक्त क्रिया को एक उदाहरण द्वारा समझें। 'रेल चलने लगी।' इस वाक्य में चलने+लगी। ये दो क्रियाएँ मिलकर कार्य पूरा कर रही हैं। इसलिए इन्हें संयुक्त कियाएँ कहते हैं। किंतु कुछ सहायक क्रियाएँ जब मुख्य क्रिया के अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर मुख्य क्रिया के

प्रभाव को बढ़ाती हैं, तो उन्हें रंजक क्रियाएँ कहते हैं। अर्थ का रंजन करते से इन्हें रंजक क्रियाएँ कहते हैं। इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं होता है। ये संयुक्त क्रियाओं के साथ ही प्रयुक्त होती हैं; जैसे वह पढ़ने लगा। यहाँ 'पढ़ना' पहली क्रिया मुख्य है, और दूसरी क्रिया 'लगा' उसमें विशेषता प्रकट कर रही है। अत: रंजक क्रियाओं की सरल पहचान है कि उसकी पहली क्रिया प्रधान होती है तथा दूसरी क्रिया उसके अर्थ में विशेषता अथवा नवीनता ला देती है; जैसे- राम को वनवास देने पर दशरथ चल बसे। यहाँ चल तथा बसे दोनों क्रियाएँ रंजक- क्रिया के अंतर्गत आती है। कुछ प्रमुख रंजक क्रियाओं का प्रयोग हिन्दी में सर्वाधिक होता है; जैसे- आना-जाना, उठना-बैठना, लेना-देना आदि। ये सभी पुनरुक्त बोधक रंजक क्रियाएँ हैं, जबकि पड़ना, सकना, लगना, रहना, चाहना सामान्य रंजक क्रियाएँ हैं।

अर्थ के अनुसार इनके ग्यारह भेद हैं। प्रयोग की दृष्टि से उसे जानना आवश्यक है-

1. **आरंभबोधक :** जैसे-पानी गिरने लगा। (यहाँ 'लगा' रंजक क्रिया से क्रिया के आरंभ होने का बोध हो रहा है।)
2. **समाप्तिबोधक :** जैसे- पानी बरस चुका। (यहाँ 'चुका' क्रिया से क्रिया की समाप्ति का बोध हो रहा है।)
3. **निश्चयबोधक :** जैसे- वह गिर पड़ा। (यहाँ 'पड़ा' क्रिया से गिरने के विषय में निश्चित स्थिति का बोध हो रहा है।)
4. **शक्तिबोधक :** जैसे- मैं लिख सकता हूँ। (यहाँ 'सकता' क्रिया से लिखने का सामर्थ्य प्रकट हो रहा है।)
5. **इच्छाबोधक :** जैसे- मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। (यहाँ 'चाहता' क्रिया मिलने की इच्छा का बोध कराती है।)
6. **आवश्यकता बोधक :** जैसे-इस समय तुम्हें घर पर होना चाहिए। (यहाँ 'चाहिए' क्रिया से घर पर जाने की आवश्यकता का बोध होता है। आवश्यकता बोधक क्रिया में पड़ना, होना का प्रयोग भी होता है।)
7. **अभ्यास बोधक :** जैसे- वह मुझे पढ़ाया करता है। (सामान्य रूप से भूतकाल की क्रिया में 'करना' क्रिया-शब्द लगाना अभ्यास का बोध कराता है। यहाँ 'पढ़ाया' भूतकाल की क्रिया है।)
8. **अनुमतिबोधक :** जैसे- मुझे अपनी बात कह लेने दो। यहाँ 'कह लेने दो' क्रिया अनुमति माँगने का बोध कराती है।
9. **अवकाशबोधक :** जैसे- बरसात होने से बच्चे पढ़ नहीं पाए। (यहाँ 'पढ़ नहीं पाने' में अवकाश मिलने का बोध हो रहा है।)
10. **नित्यबोधक :** जैसे-मैं पूजा कर रहा हूँ। (यहाँ कार्य करने की निरन्तरता का बोध हो रहा है।)
11. **पुनरुक्त बोधक :** जैसे- मिलते-जुलते रहा करो। (यहाँ दो समानार्थक क्रिया 'मिलना-जुलना' मिलकर कर्त्ता का मन्तव्य पूरा कर रही हैं।)

इस प्रकार सहायक क्रियाएँ मुख्य क्रियाओं की सहायता करती हैं तथा रंजक क्रियाएँ उनके अर्थ में विशेषता लाकर कर्त्ता की मनोवृत्ति का बोध कराती हैं।

इन क्रियाओं का पर्याप्त अभ्यास हमें करना चाहिए। छात्रों को भी इसे स्पष्ट समझ के साथ बताना चाहिए।

यदि और सरलता से समझा जाए तो जब किसी भी वाक्य में दो धातुएँ एक साथ आती हैं तो उनमें एक मूल क्रिया और दूसरी रंजक क्रिया होती है; जैसे- मुझे क्यों मारे डाल रहा है। (यहाँ मारना मुख्य क्रिया है। डालना-रंजक क्रिया।)

रोचक तथ्य :

कुछ रंजक क्रियाओं के अर्थ भी जान लीजिए जिनका प्रयोग बहुधा होता हैं:

1. लेना- इसका प्रयोग अपने लिए होता है; जैसे- मैंने भोजन कर लिया।
2. देना- इसका प्रयोग दूसरे के लिए होता है; जैसे- वह रो दिया।
3. रहना- इसका प्रयोग निरन्तरता के लिए होता है; जैसे-वह दिन भर पढ़ता रहता है।
4. लगना- इसका प्रयोग कार्य के आरंभ का सूचक है; जैसे- वह खेलने लगा है।
5. पाना- इसका प्रयोग शक्ति का बोधक है; जैसे- अब मैं ठीक से सुन पाता हूँ।
6. बैठना- इसका प्रयोग बुरे परिणाम का सूचक है; जैसे- तुम कुछ भी कर बैठते हो।
7. उठना/पड़ना- इसका प्रयोग आकस्मिकता का सूचक है; जैसे- क. साँप देखकर वह चिल्ला उठा। ख. मुझे देखकर वह रो पड़ा।
8. डालना- इसका प्रयोग कार्य समाप्ति का सूचक है; जैसे- उसने जमीन खोद डाली।
9. चाहना- इसका प्रयोग निकट भविष्य का बोध कराता है; जैसे- अब मैं चलना चाहता हूँ।
10. करना- किसी काम का बार-बार होना; जैसे- वह यहाँ आया करता है।

शिक्षक को चाहिए कि स्वयं भी ऐसे प्रयोगों की सूची बनाए, और छात्रों को उनके अर्थ से परिचित कराए। छात्रगण अपनी पाठ्य-पुस्तक को पढ़ते समय ऐसे उदाहरण छाँटने का प्रयास करेंगे, तो उन्हें सही समझ बनेगी।

6.5

संज्ञार्थक क्रिया और क्रियार्थक संज्ञा की अवधारणा क्या है?

''हिन्दी में संज्ञार्थक क्रिया और क्रियार्थक संज्ञा की अवधारणा क्या है? दोनों में भिन्नता स्पष्ट करने का आधार क्या है? कभी-कभी बहुत भ्रम होता है कि यह संज्ञार्थक क्रिया है, अथवा क्रियार्थक संज्ञा? कृपया स्पष्ट करें।'' एक कार्यशाला में किसी जिज्ञासु ने मुझसे प्रश्न किया। उन्होंने उदाहरण स्वरूप एक वाक्य भी रखा- रात भर जागना अच्छा नहीं होता। यहाँ जागना क्रियार्थक संज्ञा है, या संज्ञार्थक क्रिया।

''सचमुच पुस्तकों में समझाया नहीं गया है। अन्यथा भाववाचक संज्ञा की रूप-रचना में जाति वाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया का योग तो सभी ने बताया है किंतु यह नहीं बतलाया गया है कि क्रिया से जो भाववाचक संज्ञाएँ बनाई जाती है, उन्हें ही आज **क्रियार्थक संज्ञा** नाम दिया गया है। क्रियार्थक संज्ञाओं में लिंग, वचन के आधार पर कोई परिवर्तन नहीं होता है किंतु अपवाद स्वरूप परिवर्तन संभव है; जैसे- राम का कहना ठीक है। गीता का कहना ठीक है।

दोनों का कहना ठीक है। (क्रियार्थक संज्ञाओं का प्रयोग आ स्वरांत रूप में ही होता है; जैसे- कहना, पहुँचना, नाचना, मिलना आदि। इनमें लिंग के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।)

किंतु ध्यान रखें -

1. क्रियार्थक संज्ञाओं के साथ कारक चिह्न जुड़ने पर उनका रूप 'ना' के स्थान पर 'ए' स्वरांत हो जाता है; जैसे- मैं आप के पहुँचने से पहले वहाँ पहुँच जाऊँगा। (यहाँ -पहुँचना' में ना का 'ने' हो गया है।)
2. क्रियार्थक संज्ञाओं के विशेषण सम्बन्धी प्रयोग भी कहीं-कहीं देखने को मिलते है; जैसे- नाचने वाली लड़की बहुत सुंदर है।
3. क्रियार्थक संज्ञाएँ- क्रिया का कार्य भी व्यवहार में करती है; जैसे- मैं अपने मित्र से मिलने दिल्ली जा रहा हूँ।

क्रियार्थक संज्ञाओं की रूप रचना-

1. प्रथमाक्षर को दीर्घ करके; जैसे- चल से चाल
2. धातु के बाद 'आ' जोड़कर; जैसे- झगड़ना से झगड़ा

3. धातु के बाद 'आई' जोड़कर; जैसे–धुलना से धुलाई
4. धातु के बाद 'आव' जोड़कर; जैसे– छिड़कना से छिड़काव
5. धातु के बाद 'आवा' जोड़कर; जैसे– भूलना से भुलावा
6. धातु के बाद 'आवट' जोड़कर; जैसे– थकान से थकावट
7. धातु के बाद 'आहट' जोड़कर; जैसे– घबराना से घबराहट
8. धातु के बाद 'ई' जोड़कर; जैसे– हँसना से हँसी
9. धातु के बाद 'त' जोड़कर; जैसे– बचाना से बचत
10. धातु के बाद 'न' जोड़कर; जैसे– लेना–देना से लेन–देन
11. धातु के बाद 'नी' जोड़कर; जैसे– करना से करनी
12. धातु के बाद 'औता' जोड़कर; जैसे– समझ से समझौता

संज्ञार्थक क्रिया :

जो क्रिया संज्ञा अथवा विशेषण से बनती है, उसे ही अब **संज्ञार्थक क्रिया** कहने लगते है। इसे 'नाम धातु' नाम से भी जाना जाता है; जैसे– संज्ञा से– हाथ से हथियाना, बात से बतियाना।

विशेषण से– चिकना से चिकनाना, गरम से गरमाना।

संज्ञार्थक क्रियाओं की रूप-रचना

सामान्यत: संज्ञा या विशेषण के साथ करना/होना/पड़ना/लगना आदि जोड़कर संज्ञार्थक क्रियाएँ बनाई जाती हैं; जैसे–

संज्ञा+करना	संज्ञा +होना	विशेषण+ करना/होना
काम करना	काम होना	बंद करना/होना
संज्ञा+पड़ना	संज्ञा +लगना	विशेषण+ लगना
गर्मी पड़ना	भूख लगना	ठंडा+लगना
संज्ञा+खाना	संज्ञा +जमाना	
मार खाना	लात जमाना	

कुछ अन्य उदाहरण : दिखाई देना/पड़ना आदि।

शिक्षक को चाहिए कि इस सम्बन्ध में छात्रों को पर्याप्त अभ्यास करवाएँ; तथा उनका वाक्यों में प्रयोग करके भी दिखाए। संज्ञार्थक क्रिया अथवा क्रियार्थक संज्ञा की अवधारणा अभी स्पष्ट नहीं है। अत: अच्छा हो, उन्हें **भाववाचक संज्ञा** तथा **नाम-धातु** क्रिया के शीर्षक के अंतर्गत स्पष्ट किया जाए ताकि कोई भी भ्रम उत्पन्न न हो। आजकल नए-नए नाम रखने का चलन सा चल गया है। यही व्याकरण लेखन में भी हो रहा है।

6.6

संयोजी क्रियाएँ किसे कहते हैं?

''इधर कुछ दिनों से व्याकरण की पुस्तकों में संयोजी क्रियाओं का जिक्र मिलता है किन्तु विषय-वस्तु को स्पष्ट समझाया नहीं गया है? कृपया स्पष्ट करें।'' प्रतियोगिता परीक्षा में शामिल होने जा रहे एक प्रतिभागी ने मुझसे पूछा।

क्रिया के भेदों पर चर्चा करते समय मैंने उन्हें समझाया कि संयोजी क्रियाओं का कार्य है- कार्य के संयोजन में कर्त्ता के कार्य करने की कालावधि, मनोवृत्ति तथा कर्त्ता, कर्म अथवा भाव के अनुसार क्रिया के रूपान्तर के विषय में जानकारी प्राप्त करना। यह जानकारी तीन प्रकार से प्राप्त की जाती है-

1. क्रिया के पक्ष के सम्बन्ध में
2. क्रिया की वृत्ति पक्ष के सम्बन्ध में
3. क्रिया का वाच्य के सम्बन्ध में

परंपरागत व्याकरण में काल तथा वाच्य के विषय में तो पर्याप्त जानकारी पढ़ने को मिलती है। किन्तु पक्ष और वृत्ति के विषय में बहुत कम समझाया गया है। यह विषय वर्तमान में धीरे-धीरे स्वतंत्र रूप से आ रहा है।

वास्तव में देखा जाए, तो इन्हें सहायक-क्रिया के चार भेद भी कह सकते हैं जिसके अंतर्गत काल पक्ष, वृत्ति और वाच्य की चर्चा की जाती है। इन्हीं चारों विषयों को संयोजी क्रियाओं के अंतर्गत रखा गया है। तो आइए, इस पक्ष और वृत्ति को समझें।

1. क्रिया के पक्ष :

क्रिया के सम्बन्ध में काल और उसके भेद के अंतर्गत भूतकाल, वर्तमान काल तथा भविष्य काल की जानकारी दी जाती है। किंतु यह जानकारी मोटे रूप से अर्थात् काल के विभाजन (भूतकाल, भविष्यकाल तथा वर्तमान काल) के रूप में रहती है। हर काल प्रभेद द्वारा उसको समझाने का प्रयास भी किया गया है। किन्तु देखने में यह आता है कि हर क्रिया का अपना एक आंतरिक काल होता है; अर्थात् क्रिया के प्रारंभ और अंत के मध्य कितना अंतराल रहा, यह बताना ही 'पक्ष' कहलाता है।

इस प्रकार कार्य की पूर्णता या अपूर्णता का बोध पक्ष द्वारा ही व्यक्त होता है। यह कर्म की भौतिक अवस्था का द्योतक है। हिंदी में चार प्रकार के पक्ष स्वीकार किए गए हैं-

क. नित्यपूर्ण पक्ष : इससे कार्य के पूर्ण होने का बोध होता है;

जैसे- माँ ने भोजन कर लिया। (कार्य पूर्ण हो गया।)

ख. अपूर्ण पक्ष : इससे क्रिया का अपूर्ण ज्ञान होता है;
जैसे- वह सोता है। (कब उठेगा ज्ञात नहीं।)

ग. निरंतरता पक्ष : इससे क्रिया की निरंतता का बोध होता है;
जैसे- मैं पढ़ रहा हूँ। (कार्य अभी जारी है।)

घ. आवृत्ति मूलक पक्ष : इससे क्रिया के बार-बार होने का बोध होता है;
जैसे- सूरज पूरब से निकलता है।

2. वृत्ति :

क्रिया करने के अनेक उद्देश्य हो सकते हैं। अत: कर्त्ता की कार्य करने सम्बन्धी मनोवृत्ति का पता वृत्ति से लगता है। पाँच प्रकार की वृत्तियों का अध्ययन इसके अंतर्गत किया जाता है:

क. आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश, निषेध प्रधान वृत्ति -

जैसे - 1. तुम अपना काम करो। (आज्ञा)

2. तुम्हें यह कार्य नहीं करना है। (निषेध)
3. मुझे क्षमा करें। (प्रार्थना)
4. सत्य बोलो। (उपदेश)

ख. इच्छार्थक वृत्ति : इससे कर्त्ता की इच्छा, शाप, वरदान तथा आशीर्वाद के भाव प्रकट होते हैं; जैसे- 1. ईश्वर तुम्हें प्रसन्न रखे। (इच्छा)

2. आप सदैव प्रसन्न रहें। (वरदान)
3. प्रसन्न रहो। (आशीर्वाद)

ग. संभावनार्थक वृत्ति : यह कार्य के होने में संदेह की मनोवृत्ति का सूचक है;
जैसे- शायद आज वर्षा हो।

घ. निश्चयात्मक वृत्ति : इसमें वक्ता का कथन निश्चयात्मक होता है;
जैसे- वह स्वाध्याय कर रहा है।

ङ संकेतार्थक वृत्ति : इसमें एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर करता है;
जैसे- जैसा करोगे, वैसा भरोगे।

कहने का आशय यह कि वृत्ति के अंतर्गत की जाने वाली कियाएँ भौतिक जगत से संबंधित नहीं होतीं। ये मनोवैज्ञानिक जगत से संबंधित होती हैं। इससे कार्य के प्रति कर्त्ता का दृष्टिकोण व्यक्त होता है।

इस प्रकार संयोजी क्रियाओं की पहचान तीन प्रकार से होती है: पक्ष, वृत्ति और वाच्य। बहुधा पक्ष के अंतर्गत वाक्य में 'लगा' क्रिया रहती है; वृत्ति के अंतर्गत 'सकता'; तथा वाच्य के अंतर्गत कर्त्ता, कर्म और भाव के अनुसार क्रिया का रूपांतरण होता है।

काल और पक्ष क्रिया के समय का ज्ञान कराते हैं। वृत्ति द्वारा हम कार्य करने की मनोवृत्ति का अध्ययन करते हैं तथा वाच्य के अंतर्गत क्रिया का भावानुसार रूपान्तरण होता है।

6.7

कैसे होते हैं? शब्दों के तिर्यक रूप

''व्याकरण की कुछ पुस्तकों में शब्दों के तिर्यक् रूप की चर्चा पढ़ने को मिलती है। कुछ शब्दों के तिर्यक् रूप दिए भी गए हैं किन्तु इसकी उपयोगिता क्या है? तिर्यक् रूप से आशय क्या है? आदि कुछ ऐसे प्रश्न हैं, जिन पर वहाँ कोई चर्चा नहीं की गई है। कृपया, इस विषय को समझाने का कष्ट करें।'' यह समस्या कुछ शिक्षकों की थी जिसको उन्होंने एक कार्यशाला में रखा।

समस्या उनकी वास्तविक थी। मैंने कहा- निश्चित ही बिना समझे यदि हम व्याकरण को पढ़ेंगे, तो वह व्यवहार का विषय नहीं बनेगी; केवल पाठ्यपुस्तक का विषय बनकर रह जाएगी।

तो, सर्वप्रथम मैं आपको तिर्यक् शब्द का आशय स्पष्ट करता हूँ ताकि आप यह समझ सकेंगे कि तिर्यक् शब्दों का प्रयोग तो व्यक्ति बचपन से करता रहता है किन्तु उसके सैद्धान्तिक विवेचन के अभाव में वे इसे पहचान नहीं पाते।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया ये चार ऐसे विकारी पद हैं, जिनका प्रयोग दो प्रकार से देखने को मिलता है। एक तो अपने मूल रूप में, दूसरे उनके विकारी रूप में। विकारी रूप अर्थात् उसके मूलरूप में परिवर्तन होने की स्थिति में जो शब्द प्रयोग में आते हैं, वही उनका तिर्यक रूप कहलाता है। बिना तिर्यक् रूप के हम उनका वाक्यों में प्रयोग नहीं कर सकते, और अपनी बात किसी से नहीं कह पाते हैं, यही उनका महत्त्व है। आइए, इनको उदाहरणों द्वारा जानें-

1. **संज्ञा :-**

   संज्ञा के वे रूप जो परसर्ग रहित होते हैं, मूलरूप कहलाते हैं।

   जो रूप कारक प्रत्यय के साथ प्रयुक्त होते हैं, वे तिर्यक रूप कहलाते है क्योंकि उन्हें मूल रूप में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता; जैसे-

   क. लड़का पुस्तक पढ़ता है- मूल रूप

   ख. लड़के ने पुस्तक पढ़ी- तिर्यक् रूप।

   (यहाँ 'लड़का' शब्द का प्रयोग (क) वाक्य में अपने मूल रूप में हुआ है, जबकि (ख) वाक्य में 'लड़के' शब्द का प्रयोग कर्त्ता परसर्ग 'ने' के साथ हुआ है। अतः लड़के-लड़का का तिर्यक रूप है- वचन, लिंग तथा कारक के अनुसार संज्ञा के तिर्यक् रूप बनते हैं।)

2. **सर्वनाम :** वचन एवं कारक के कारण सर्वनामों में जो परिवर्तन होता है, उसे सर्वनाम का

तिर्यक रूप कहते हैं। सर्वनाम का प्रयोग वाक्य में दो प्रकार से होता है–

1. मूल रूप में 2. तिर्यक रूप में

इसे भी जानें–

	सर्वनाम (पुरुषवाचक)	मूलरूप	तिर्यक् रूप	कर्म/सम्प्रदान कारक
1.	उत्तम पुरुष	मैं	मुझ	मुझे
2.	मध्यम पुरुष	तू	तुझ	तुझे
3.	अन्य पुरुष	यह	इस/इन	इसे/इन्हें
		वह	उस/उन	उसे/उन्हें

उदाहरण – यह पुस्तक मेरी है। (सार्वभामिक विशेषण)

मुझको पुस्तक चाहिए। (सम्प्रदान कारक)

रोचक तथ्य :

ध्यान दें, सर्वनाम के तिर्यक रूप में यह में 'य' का 'इ' रूप हो गया है। 'व' का 'उ' हो गया है। इसी प्रकार कोई और कौन का किस तथा 'जो' का 'जिस' रूप हो जाता है।

3. **विशेषण :** हिन्दी में विशेषण के तिर्यक् रूप– लिंग, वचन और कारक के आधार पर वही होते हैं, जहाँ आकारान्त विशेषण होते हैं; जैसे–

क.

विशेषण	**विकारीकारक (परसर्ग रहित)**	**विकारीकारक (परसर्ग सहित)**
अच्छा	अच्छा लड़का (एकवचन)	अच्छे लड़के– ने/को/से (एकवचन)
	अच्छे लड़के (बहुवचन)	अच्छे लड़कों– ने/को/से (बहुवचन)

ख.

पुल्लिंग (एकवचन)	**पुल्लिंग**	**बहुवचन**	**स्त्रीलिंग**
	अच्छा	अच्छे	अच्छी
	गोरा	गोरे	गोरी

ग. **स्त्रीलिंग** के विकारी रूप बनाते समय प्राय: आ/ई स्त्री प्रत्यय लगाए जाते हैं; जैसे–प्रिय/प्रिया, सुन्दर/सुंदरी, साधु/साध्वी आदि।

4. **क्रिया :** क्रिया के तिर्यक् रूप में लिंग, वचन, काल, वाच्य आदि का योग रहता है। विभिन्न कालों की रूप–रचना करते समय इसे हम निम्नलिखित उदाहरण द्वारा स्पष्ट देख सकते हैं–

वर्तमान काल

पुरुष	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
क. उत्तम पुरुष	पढ़ता हूँ	पढ़ते हैं	पढ़ती हूँ	पढ़ती हैं
ख. मध्यम् पुरुष	पढ़ता है	पढ़ते हो	पढ़ती है	पढ़ती हो
ग. अन्य पुरुष	पढ़ना है	पढ़ते हैं	पढ़ती है	पढ़ती है
भूतकाल	पढ़ा	पढ़े	पढ़ी	पढ़ीं
भविष्य काल	पढ़ूँगा	पढ़ेंगे	पढ़ूँगी	पढ़ेंगी।

अब आप निम्नलिखित कहानी को पढ़कर स्वयं जाँचे कि आप शब्दों के इन तिर्यक रूपों से कितने परिचित हैं–

सवार घोड़े से उतर पड़ा। उसने पूछा, ''तुम मुझे राखी क्यों बाँधना चाहती हो।''

यमुना ने कहा, ''मेरे भाई नहीं है। मैं तुम्हें भाई बनाना चाहती हूँ। मैं तुम्हें राखी बाँधूगी, और तुम मेरी रक्षा करने का वायदा करोगी।''

सवार बड़ा खुश हुआ और राखी बँधवाने के लिए उसने अपना दायाँ हाथ बढ़ा दिया।

इस प्रकार आप विकारी शब्दों के तिर्यक रूपों का अभ्यास करने के लिए कुछ गद्यांश छाँटे, तथा उनकी पहचान छात्रों से करवाकर अपने ज्ञान को पुष्ट करें।

07

क्रिया विशेषण

7.1
विशेषण विकारी और क्रिया विशेषण अविकारी क्यों?

''व्याकरण में ऐसे अनेक प्रश्न हैं, जिन पर विचार किया जाना चाहिए; जैसे: विशेषण को विकारी, तथा क्रिया-विशेषण को अविकारी शब्द कहा जाता है किंतु निम्नलिखित उदाहरण से ज्ञात होता है कि लिंग, वचन और कारक का प्रभाव विशेष्य पर ही पड़ता है, विशेषण पर नहीं। उदाहरण- सुंदर पुरुष, सुंदर स्त्री।''

''यहाँ 'सुन्दरी स्त्री' नहीं कहा गया है। इसी प्रकार 'सुंदर लड़का' का बहुवचन 'सुन्दर लड़के' होता है, सुन्दरे लड़के नहीं। अत: उपरोक्त वाक्य में लिंग तथा वचन के आधार पर विशेषण 'सुन्दर' में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। फिर विशेषण अविकारी (परिवर्तनशील) होता है, ऐसा हम क्यों नहीं मानें?''- एक भाषाविद् ने मुझसे चर्चा में कहा। उनका प्रश्न निश्चय ही परंपरा से हटकर था, जिसका उत्तर दिया जाना उचित है।

मैंने कहा- आपने ठीक कहा; किंतु मैं भी एक उदाहरण देना चाहता हूँ। उस पर ध्यान दें-
काला कुत्ता, काली कुतिया (लिंग)
काला कुत्ता, काले कुत्ते (वचन)
काले कुत्ते ने, काले कुत्तों ने (कारक)

इन वाक्यों में काला शब्द विशेषण है, और लिंग, वचन, कारक के अनुसार उसमें परिवर्तन हुआ है। अत: वैयाकरणों के अनुसार विशेषण शब्दों में विकार आकारान्त शब्दों में ही होता है, इकारान्त शब्दों में नहीं; जैसे-

आकारान्त - नीला घोड़ा - नीली घोड़ी (लिंग)
नीला घोड़ा - नीले घोड़े (वचन)
नीले घोड़े पर - नीले घोड़ों पर (कारक के अनुसार)

इकारान्त - काली मैना - काली मैनाएँ

(यहाँ 'काली' विशेषण अविकारी रूप में है जबकि विशेष्य मैना का रूप मैनाएँ हुआ है। कहने का आशय यह कि यहाँ मैना (संज्ञा) का रूप विकारी हुआ है।)

अत: विशेषण का अध्ययन करते समय हमें विशेषण के इन अपवादात्मक स्वरूप पर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

यही स्थिति क्रिया-विशेषण की है। क्रिया विशेषण सामान्यत: अविकारी होते हैं किन्तु विकारी क्रिया-विशेषणों की संख्या भी नगण्य नहीं है; जैसे - राम दौड़ा-दौड़ा आया।

कृष्णा दौड़ी-दौड़ी आई। (लिंग के आधार पर परिवर्तन।)

वे दौड़े-दौड़े आए। (वचन के आधार पर परिवर्तन।)

आपने देखा! यहाँ दौड़ना 'आना' शब्द का क्रिया विशेषण बनकर आया है, किंतु उसमें विकार हुआ है। अत: यह भी अपवाद स्वरूप है। अत: ध्यान दें-

1. आकारान्त विशेषण जब क्रिया-विशेषण बनकर आते हैं, तो प्राय: विकारी होते है।

अन्य उदाहरण - थोड़ा सा पानी, थोड़ी सी चाय।

2. सकर्मक क्रिया के कर्तरि और कर्मणि प्रयोग में क्रिया-विशेषण कर्म के लिंग, वचन के अनुसार विकारी होते हैं; जैसे- सीधी रेखा खींचिए।

- काँच को सीधे काटना है।
- मगर पानी को सीधा काटता है।

उपरोक्त तीनों उदाहरण में क्रिया विशेषण, सीधी-सीधे ये दोनों 'सीधा' के विकारी रूप है।

3. अकर्मक क्रियाओं के अधिकतर क्रिया-विशेषण कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार अपना रूप बदलते हैं; जैसे-

- चींटी सदैव सीधी पंक्ति में चलती है।
- मंदिर जाना है, तो सीधे चले जाओ।
- बुढ़ापा है, फिर भी वह सीधा चल रहा है।

अत: इन दृष्टान्तों के आधार पर हम यह नहीं कह सकते कि विशेषण विकारी है, और क्रिया विशेषण अविकारी। अपवाद हर प्रकरण में रहता है। मैं समझता हूँ छात्रों के जटिल प्रश्नों का उत्तर देते समय हमें भी यह स्थिति स्पष्ट कर देना चाहिए ताकि छात्र उसे समझकर अपनी समस्याओं का निराकरण स्वयं कर सकें। उनके किसी भी प्रश्न को टालने का प्रयत्न न करें।

7.2

क्रिया विशेषण की रूपरचना में अव्ययीभाव समास की भूमिका

''व्याकरण पढ़ाते समय संज्ञा, सर्वनाम, अव्यय आदि को पृथक-पृथक पढ़ाया जाता है जबकि व्याकरण की इन आठ पद-व्यवस्थाओं में आपस में भी सह-सम्बन्ध होता है। इसी प्रकार का एक सहसम्बन्ध है- क्रिया विशेषणों की रूप-रचना में अव्ययी भाव समास का उपयोग। यह बात छात्रों को नहीं समझाई जाती है। कृपया इस पर प्रकाश डालें। इस सम्बन्ध में मुझे कहीं पढ़ने को मिला है किंतु विस्तार से समझाया नहीं गया है। केवल सूत्रात्मक संकेत दिया गया है।'' शिक्षक महोदय ने मुझसे पूछा।

मैंने उन्हें इस बात के लिए बधाई दी कि वे व्याकरण में रुचि रखते हैं, तथा विषय का व्यापक अनुभव भी रखते हैं। तभी तो इस प्रकार का प्रश्न उन्होंने किया। अन्यथा साधारण पाठक को तो यह प्रश्न सूझता भी नहीं। तो आइए, इस पर विचार करें।

क्रिया विशेषण दो प्रकार के होते हैं: एक रूढ़ तथा दूसरे यौगिक। रूढ़ क्रिया विशेषण की पहचान यह है कि वे अपने मूल रूप में ही रहते हैं; जैसे- अब, तब, फिर, तो, वहाँ आदि। यौगिक क्रिया विशेषण का निर्माण प्रत्ययों तथा अन्य शब्दों के योग से होता है; जैसे-क्षण भर, आजन्म, सोते जागते।

किंतु अव्ययी भाव समास उपसर्गों एवं अव्ययों के मेल से बनते हैं। कहा भी गया है, जिस समासिक शब्द का पहला अक्षर अव्यय हो, तथा सम्पूर्ण शब्द क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, वहाँ अव्ययी भाव समास होता है, अर्थात् क्रिया विशेषण की रचना में अव्ययी भाव समास का योगदान रहता है।

इनके विग्रह से यह बात स्पष्ट हो जाती है।

अव्यय	**अन्य शब्द**	**क्रिया विशेषण**	**विग्रह**
यथा	रुचि	यथारुचि	रुचि के अनुसार
यथा	इच्छा	यथेच्छा	इच्छा के अनुसार
आ	जन्म	आजन्म	जन्म तक
आ	मरण	आमरण	मरण तक
वि	अर्थ	व्यर्थ	बिना अर्थ का

प्रति	कूल	प्रतिकूल	कूल के विपरीत
प्रति	पल	प्रतिपल	पल-पल
अ	कारण	अकारण	कारण के बिना
अनु	दिन	अनुदिन	दिन पर दिन
नि	डर	निडर	डरता न हो।

इस प्रकार के कुछ शब्द यहाँ दिए जा रहे हैं जिनका अभ्यास छात्रों से करवाया जाना उचित होगा; जैसे- यथास्थिति, यथामति, यथासमय, यथाविधि, यथाक्रम, प्रतिकूल, प्रत्पक्ष, प्रत्येक, प्रतिक्षण, प्रत्यक्ष, प्रत्युयकार, पहले-पहल, अनुरूप, अनुचर, आपाद मस्तक आदि।

जहाँ तक क्रिया विशेषण शब्द पदों का अव्ययीभाव समास के अंत:सम्बन्ध का प्रश्न है, यह सम्बन्ध केवल अव्ययीभाव समास तक सीमित नहीं है। डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद ने इस सम्बन्ध को संज्ञा, विशेषण, क्रिया आदि से भी स्पष्ट किया है; जैसे-

1. **संज्ञा : क. सज्ञाओं की द्विरक्ति से :** जैसे - घर-घर, पैदल-पैदल, घड़ी-घड़ी।
   ख. दो विपरीतार्थ संज्ञाओं के मेल से ; जैसे - दिन-रात, घर-बाहर, देश-विदेश।
   ग. संज्ञा और विशषेण ; जैसे - एक साथ, सौ बार, हजार-बार।
2. **(क.) विशेषण तथा पूर्णकालिक कृदंत** -
   विशेष (विशेषण)+कर (पूर्वकालिक कृदंत)=विशेषकर। इसी प्रकार बहुत कर आदि।
   (ख.) विशेषण की द्विरुक्ति से- एक-एक, मोटा-मोटा आदि।
3. शब्दों की द्विरूक्ति से- चलते-चलते, दौड़ते-दौड़ते, लिखते-लिखते।
4. (क) क्रिया विशेषण की द्विरुक्ति से- जहाँ-जहाँ, कहाँ-कहाँ, कब-कब, धीरे-धीरे आदि।
   (ख) दो विपरीतार्थक क्रिया विशेषण के मेल से: जहाँ-तहाँ, आस-पास, जब-तब आदि।
   (ग) दो भिन्न या समान क्रिया विशेषणों के बीच 'न' लगने से: कभी-न-कभी, कहीं-न-कहीं।
5. **अनुकरण वाचक शब्दों की द्विरुक्ति** से: फटा-फट, गटा गट आदि।
6. **अव्यय तथा दूसरे शब्दों के मेल से:** यथाशक्ति, अनुकूल आदि

अंत में एक बात और। क्रिया विशेषणों की रूप रचना प्रत्ययों के आधार पर भी की जाती है; जैसे- मन से, भूल से, यहाँ तक आदि।

अत: स्पष्ट है कि क्रिया विशेषणों की रूप-रचना से संज्ञा, विशेषण, क्रिया एवं क्रिया विशेषण का भी परस्पर अंत:सम्बन्ध है। इसमें उपसर्ग तथा प्रत्यय का सहयोग भी लिया जाता है।

7.3

समानार्थक क्रिया-विशेषणों के अंतर को पहचानें

व्याकरण की एक पुस्तक में समानार्थक क्रिया विशेषणों का उल्लेख करते हुए लेखक ने उनका संकेत इस प्रकार दिया :-

कुछ क्रिया विशेषण देखने में समानार्थी प्रतीत होते हैं किन्तु प्रयोग में उनका अर्थ भिन्न होता है।

एक पाठक ने मुझे इसको उदाहरण सहित समझाने का आग्रह किया क्योंकि इन शब्दों के प्रयोग करने पर ही सही अर्थ समझा जा सकता है। कुछ भिन्नता इतनी सूक्ष्म होती है कि समझ से परे हो जाती है।

प्रयोग : 1. अब-अभी - अब- वर्तमान समय में अनिश्चित स्थिति बताने के लिए;

जैसे- अब आप बैठ सकते हैं।

अभी-तुरन्त की स्थिति बताने के लिए; जैसे-मैं अभी लिखने बैठता हूँ।

2. **कहाँ-कहीं** - कहाँ- किसी निश्चित स्थान का बोधक है; जैसे- तुम कहाँ गए थे?

कहीं-किसी अनिश्चित स्थान का बोधक है; जैसे-मैं कहीं जाऊँ, तुम्हें क्या?

3. **ही-भी** - ही- किसी बात पर निश्चयपूर्वक बल देने के लिए;

जैसे-इस विषय को तुम ही समझ सकते है। यहाँ 'ही' का तात्पर्य (एक मात्र तुमसे है, अन्य से नहीं।)

भी- किसी अतिरिक्त स्थिति को बताने के लिए; जैसे- मैं भी इसे समझा सकता हूँ।

(यहाँ 'भी' मैं समझा सकता है, यह प्रकट होता है।)

4. **प्रायः एवं बहुधा**- दोनों का अर्थ एक ही है किन्तु प्रायः की तुलना में 'बहुधा' अधिक मात्रा का सूचक है; जैसे -

बच्चे प्रायः हठी होते हैं। (थोड़ी मात्रा में)

बच्चे बहुधा हठी होते हैं। (अधिक मात्रा में)

5. केवल-मात्र - केवल- अकेले का सूचक है; जैसे- आज केवल सुन्दरकांड का पाठ करेंगे।

मात्र- सम्पूर्णता का सूचक है; जैसे- मुझे तुम्हें सौ रुपये मात्र देने है।

(केवल और मात्र-पर्यायवाची शब्द भी माने गए हैं। अतः दोनों शब्दों का प्रयोग एक साथ नहीं करना चाहिए।)

6. **तब-फिर** - तब भूतकाल का सूचक है; जैसे- तब उसने लिखना शुरु किया?
फिर- भविष्य-काल का बोधक है; जैसे- ऐसा फिर मत लिखना।

7. **न, नहीं, मत**- तीनों निषेध के सूचक हैं किन्तु प्रयोग में अंतर है:
जैसे - न -क्या? तुम प्रतियोगिता में भाग न लोगे? (साधारण निषेध)
नहीं- हाँ! मैं प्रतियोगिता में भाग नहीं लूँगा। (निश्चित निषेध)
मत- तुम इस प्रतियोगिता में भाग मत लो। (निषेधात्मक आज्ञा)

इस प्रकार समानार्थक क्रिया-विशेषणों का प्रयोग सोच-समझ कर करना चाहिए; जैसे- 'कहीं' शब्द के कुछ और प्रयोग भी देखें-

क. यह लेखन पूर्व के लेखन से कहीं श्रेष्ठ है। (तुलनात्मक दृष्टि)
ख. कहीं राम प्रतियोगिता जीत गए, तो मेरा क्या होगा? (संभावना)
ग. भगवान की माया; कहीं धूप कहीं छाया। (विरोधीभाव प्रकट करने के लिए)

ध्यान रहे, कुछ समानार्थक क्रिया विशेषण का अध्ययन निपात के अंतर्गत भी किया जाता है।

08

सम्बन्धबोधक अव्यय

8.1
आपसी सम्बन्ध जोड़ता है- सम्बन्धबोधक

एक समारोह में निर्देश दिए जा रहे थे। इस कोने से लेकर उस कोने तक झंडियाँ लगा दो। मैं मुख्य अतिथि को लेकर मुख्य द्वार तक जाऊँगा। मुख्य अतिथि उस मंच पर छात्रों के सम्मुख बैठेंगे। जिन छात्रों को आज सम्मानित किया जाना है, वे मंच के बाईं ओर से आएँगे। मंच के दोनों ओर कुर्सियाँ लगाई जाएँ। मंच के दाईं ओर नृत्य का कार्यक्रम होगा। अतिथि के दाईं ओर अध्यक्ष बैठेंगे। उनके बाईं ओर उनकी पत्नी बैठेंगी। सुधा, जो कि लता मंगेशकर की तरह गाती है, अपना गायन प्रस्तुत करेगी। उसका परिचय मैं दूँगा आदि।

कहने का आशय यह कि यदि कार्यक्रम की रूपरेखा बनाते समय हम सम्बन्धबोधक के बिना कोई भी कल्पना नहीं कर सकते। इन वाक्यों में रेखांकित अंश सम्बन्धबोधक अव्यय के हैं। सम्बन्ध बोधक अव्यय संज्ञा अथवा सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों (पदों) से जोड़ता है। यदि वह संज्ञा से सम्बन्ध नहीं जोड़ता है, तो विशेषण कहलाए। अत: कभी-कभी भ्रम होता है कि यह शब्द क्रिया-विशेशण है, अथवा सम्बन्धबोधक। अत: एक उदाहरण से इसे स्पष्ट समझें ताकि भ्रम न रहे।

जब हम किसी को कहते हैं- भीतर आओ, तो यहाँ भीतर शब्द 'आओ' (क्रिया) के पहले आया है। अत: यह क्रिया विशेशज्ञण है। और जब कहें कि कमरे के भीतर आओ तो यहाँ 'भीतर' का सम्बन्ध कमरे से जोड़ा गया है। अत: सम्बन्ध स्थापित करने का यह कार्य बेशक कभी संज्ञा बनकर, कभी विशेषण बनकर, कभी क्रिया विशेषण बनकर और कभी सम्बन्धबोधक के रूप में होता है; जैसे-

1. उसके पीठ-पीछे बुराई करना ठीक नहीं। (पीछे-विशेषण)
2. ये सब बातें पीछे होती रहेगी। (पीछे-विशेषण)
3. घर के पीछे मंदिर है। (पीछे- सम्बन्धबोधक)
4. अपने सामने ही दान कर दूँ, पता नहीं पीछे कोई करे, या न करें। (पीछे- क्रिया विशेषण)

कुछ वैयाकरण संज्ञा पदों का सम्बन्ध संज्ञा पद से जोड़ने के कार्य को सम्बन्धबोधक का कार्य मानते है किंतु ऐसा नहीं है। संज्ञा तथा सर्वनाम का वाक्य में अन्य शब्दों (पदों) से सम्बन्ध

स्थापित करना भी सम्बन्धबोधक का कार्य है, जैसा कि उपरोक्त उदाहरणों में स्पष्ट है। सम्बन्धबोधक शब्द 'का', 'की', 'के' कारण चिह्नों से पहचाने जाते हैं; जैसे- घर के पीछे मंदिर है। यहाँ 'के पीछे' में 'के' का प्रयोग हुआ है।

सम्बन्धबोधक अव्यय शब्द कौन-कौन से है, यह भी जानें-

1. काल वाचक - के आगे, के पीछे
2. स्थानवाचक - के पास, के नीचे
3. दिशावाचक - के चारों ओर
4. उद्देश्य वाचक - के लिए
5. विरोध वाचक - के विरुद्ध
6. कारणवाचक - के चलते
7. साधनवाचक - के द्वारा
8. तुलनात्मक - के समान
9. साह्चर्यवाचक - के साथ
10 अभावबोधक - के बिना
11. पार्थक्यबोधक - से दूर
12. सम्बन्धात्मक - के विषय में
13. व्यापकता बोधक - से लेकर/तक

यह सूची केवल सांकेतिक है। इसे अपने अध्ययन के आधार पर पूरा करने का प्रयत्न करें; तथा इन तेरह बिंदुओं पर वाक्य-रचना कर अपने ज्ञान की पुष्टि करें।

09

समुच्चयबोधक

9.1
वाक्य संरचना का संस्कार देते-सम्मुच्चय बोधक अव्यय

वाक्य संरचना करते समय हमें समुच्चय बोधक अव्ययों का सहारा उस समय लेना होता है, जब हम अपनी बात को संयुक्त अथवा मिश्र वाक्य में कहते हैं। बिना इनकी सहायता के हम साधारण वाक्य की रचना तो कर सकते हैं किंतु संयुक्त अथवा मिश्र वाक्य की रचना करना संभव नहीं।

अत: समुच्चय बोधक अव्यय का कार्य योजक की भूमिका का है; जैसे-

1. राम और लक्ष्मण वन को जाए। ('और' शब्द योजक)
2. कृष्ण राजा थे किंतु सुदामा निर्धन ब्राह्मण था। ('किंतु' वाक्यांश योजक)
3. स्नान कर लो और पूजा कर लो। ('और' वाक्य योजक)

इस प्रकार दो शब्द, दो वाक्यांश अथवा दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य, समुच्चय बोधक अव्यय का है।

यह कार्य वह दो प्रकार से करता है-

1. समानाधिकरण योजकों के द्वारा :

ये योजक दो समान उपवाक्यों को चार प्रकार से जोड़ते हैं। इन चारों वाक्यों में आप देखेंगे- दो समान उपवाक्य हैं:

क. संयोजक शब्दों के द्वारा - और, तथा, एवं, ताकि आदि।
ख. विरोध प्रकट करने वाले शब्दों के द्वारा - किंतु, परंतु, लेकिन आदि।
ग. विकल्प प्रकट करने वाले शब्दों के द्वारा - अथवा, चाहे, या, व आदि।
घ. परिणाम प्रकट करने वाले शब्दों के द्वारा - अत:, इसलिए आदि।

उदाहरण -

क. राम और लक्ष्मण वन को गए। (संयोजन)
ख. रावण को मंदोदरी ने बहुत समझाया किंतु वह नहीं माना। (विरोध)
ग. तुम यहाँ पढ़ो या विदेश में, मैं सदैव तुम्हारी सहायता करूँगा। (विकल्प)
घ. मैं स्वयं संकट में हूँ, इसलिए तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता। (परिणाम)

2. व्यधिकरण सम्मुचय बोधक योजकों द्वारा :

ये योजक ऐसे वाक्यों को जोड़ते हैं, जिनमें एक उप वाक्य प्रधान होता है, दूसरा उसके आश्रित या अधीन। ये भी चार प्रकार से सम्बन्ध जोड़ते हैं:

क. कारणबोधक – क्योंकि, ताकि आदि।

ख. संकेत बोधक – जो, तो, यद्यपि, तथापि आदि।

ग. स्वरूप बोधक – अर्थात्, मानों, जैसा, वैसा आदि।

घ. उद्देश्य वाचक – प्रात: ताकि, जिससे कि आदि।

उदाहरण –

क. मैं दिल्ली जा रहा हूँ क्योंकि वहाँ मेरा साक्षात्कार होना है। (कारण)

ख. यदि तुम समाज सेवा करना चाहते हो, तो समय देना होगा। (संकेत)

ग. मुझे वैसा ही फूल चाहिए, जैसा तुम्हारे हाथ में है। (स्वरूप)

घ. नियमित स्वाध्याय करो ताकि परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर सको। (उद्देश्य)

इस प्रकार संयुक्त वाक्यों की रचना में समानाधिकरण तथा मिश्र वाक्यों की रचना में व्यधिकरण समुच्चय बोधक अव्ययों की सहायता लेना आवश्यक है।

समुच्चय बोधक अव्ययों की रचना इस दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

कहने का आशय यह कि व्याकरण में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय: इन सभी का परस्पर सम्बन्ध होता है। हमें किसी भी पद का अध्ययन क्यों आवश्यक है? इसकी जानकारी होने पर उसके अध्ययन करने की महत्ता उद्देश्यपूर्ण बन जाती है।

व्याकरण के इन आठ पदों को पृथक-पृथक पढ़ाकर हम उनके परस्पर सम्बन्धों पर चर्चा नहीं करते इसलिए विषय नीरस सा लगने लगता है।

रोचक तथ्य : -

समुच्चय बोधक अव्यय, सम्बन्धबोधक अव्यय तथा क्रिया विशेषण अव्यय में कुछ अव्यय शब्द समान होते हैं। इनकी पहचान उनके प्रयोग पर निर्भर करती है। इस ओर भी हमारा ध्यान जाना चाहिए; जैसे-

(क.) 'तो' शब्द, निश्चय बोधक शब्द है किंतु समुच्चय बोधक में इसका प्रयोग दो प्रकार से होता है:

1. जब 'तो' के साथ 'नहीं' या 'भी' आए; जैसे- तुम स्वयं यहाँ रहो नहीं तो काम कौन देखेगा!

2. यदि के साथ तो आने पर; जैसे- यदि तुम यहाँ नहीं रहोगे तो सब काम चौपट हो जाएगा।

(ख.) 'इसलिए' शब्द समुच्चय बोधक भी है, और क्रिया विशेषण भी; जैसे-

1. वह इसलिए योग करता है कि शरीर स्वस्थ बना रहे।
   (कारण सूचक क्रिया विशेषण)
2. वह कंजूस है, इसलिए उससे कोई चंदा नहीं लेता। (योजक)

9.2

विलोमार्थीशब्द द्वंद्व समास और समुच्चयबोधक में अंतर

'व्याकरण की एक पुस्तक में विलोम (विपरीत) शब्द के अंतर्गत रात का विलोम दिन बताया गया है; और द्वंद्व समाज में भी रात-दिन शब्द को युग्म के रूप में उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। इससे छात्रों को भ्रम होता है कि रात-दिन जैसे शब्द विलोमार्थी हैं या कि द्वंद्व समास।'' - एक शिक्षक ने मुझसे प्रश्न किया। उनका प्रश्न सहज था। ऐसे भ्रम व्याकरण पढ़ाते समय होते ही हैं। ऐसी स्थिति में परिभाषाओं और प्रयोग के आधार पर हमें विलोमार्थी शब्द तथा द्वंद्व समास के अंतर को स्पष्ट करना चाहिए।

विलोमार्थी शब्द उनको कहते हैं, जिनके युग्म परस्पर विरोधी होते हैं; जैसे- सुख का विलोमार्थी दुख है। रात का विलोमार्थी दिन है। इस परिभाषा के अनुसार विलोमार्थी शब्दों के युग्म का प्रयोग एक साथ नहीं किया जा सकता है। उनका प्रयोग वाक्य में पृथक-पृथक होता है; जैसे- सुख के बाद दुख आता है। रात के बाद दिन होता है।

द्वंद समास में रात-दिन दोनों शब्द का प्रयोग एक साथ किया जाता है। यह सामासिक शब्द समुच्चय बोधक का लोप करके बनता है; जैसे- राधा-कृष्ण। यहाँ दोनों शब्दों के बीच 'और' समुच्चय बोधक का लोप हुआ है किंतु रात-दिन शब्द के बीच 'अथवा' वैकल्पिक समुच्चय बोधक का प्रयोग हुआ है। अतः इसे वैकल्पिक द्वंद्व समास कहते हैं। पाप-पुण्य, ऊँच-नीच आदि ऐसे ही द्वंद्व समास हैं। इस दृष्टि से जो मूल विलोमार्थी शब्द होते हैं, उनका प्रयोग ही बहुधा देखने में आता है।

बहुत कम लोगों को पता है कि द्वंद्व समास तीन प्रकार के होते हैं-

1. **इतरेतर द्वंद्व** - जैसे राधा-कृष्ण। (यहाँ समुच्चय-बोधक का लोप हुआ है।) 'और', तथा, एवं और 'व' के लोप से बनता है। इस समास से बने पद हमेशा बहुवचन में होते हैं क्योंकि वे दो या दो से अधिक शब्दों के योग होते हैं।
2. **समाहार द्वंद्व**- सह सामासिक शब्द समूह का सूचक होता है; जैसे- सेठ-साहूकार, कपड़े-लत्ते आदि। हिन्दी में ऐसे समाहार द्वंद्वों की संख्या ही अधिक है। सेठ-साहूकार अथवा कपड़े-लत्ते एक ही समूह के हैं।
3. **वैकल्पिक द्वंद्व**- इस सामासिक शब्द में विकल्प सूचक समुच्चयी बोधक का लोप होता है; जैसे- रात-दिन। यहाँ रात-दिन समास का विग्रह होगा- रात अथवा दिन। अन्य उदाहरण -

दो–चार (दो या चार) अथवा या के लोप से बनता है।

अब 'रात–दिन' पर विचार करें, तो इतरेतर द्वंद्व के रूप में इसका प्रयोग होगा तो रात और दिन। वैकल्पिक के रूप में इसका विग्रह होगा रात–अथवा दिन। दोनों ही स्थितियाँ बन सकती हैं।

अंत में यही कहा जा सकता है कि छात्र केवल इतना भी जान लें कि विलोमार्थी शब्दों के युग्म का प्रयोग पृथक–पृथक रूप में होता है तथा द्वंद्व समास के रूप में इन युग्मों का प्रयोग एक साथ होता है, तो पर्याप्त है। उदाहरण के लिए–

1. रात
2. दिन (विलोमार्थी) के रूप में दोनों का पृथक–पृथक प्रयोग।
3. रात–दिन (समास) के रूप में दोनों का एक साथ प्रयोग।

विशेष:

1. रात–दिन के मध्य योजक चिह्न लगाया जाता है। इस योजक चिह्न से स्पष्ट हो रहा है कि यह एक सामासिक पद है।
2. रात और दिन के मध्य यदि 'और' शब्द का लोप नहीं होता है, तो इसे समुच्चय बोधक अव्यय शब्द कहेंगे।

10

विस्मयादिबोधक अव्यय

10.1
मनोभावों का दर्पण है- विस्मयादिबोधक

एक घर में कुछ इस प्रकार के संवाद सुनने को मिले- 'राम-राम! तुमने यह क्या कर डाला।' (क्लेशबोधक)

'शाबास! यह तुमने अच्छा किया। ' (हर्षबोधक)

'छि: छि:! यहाँ यह गंदगी किसने की?' (घृणा बोधक)

'अच्छा! रामदीन तुम इस गंदगी को साफ कर दो।' (स्वीकार बोधक)

'अबे! पड़ा रहने दे। इसे साफ मत कर। जिसने गंदगी की है, वही सफाई करेगा।'(संबोधन बोधक)

'बिल्कुल सही! गंदगी करने वाले को ही साफ करना होगा।'

'बाप रे बाप! आप इतने छोटे बच्चे को सफाई के काम में क्यों लगा रहे हैं।' (विस्मयबोधक)

संवाद और भी आगे बढ़ते किंतु मेरे वहाँ पहुँचने पर सभी मौन हो गए। एक साधारण सी घटना थी, जिसको घर का हर सदस्य अपने-अपने ढँग से व्यक्त कर रहा था। फर्श पर दूध गिर गया था।

तभी छोटी लड़की की एक सहेली घर वापस जाने के लिए घर के सभी सदस्यों से-टाटा! बाई-बाई! कहकर बिदा लेने आ पहुँची। सबने 'अच्छा और आना' कहकर उसे बिदा दी।

इन सभी वाक्यों को सुनकर एक बात समझ में आई कि किसी भी घटना को लेकर हर व्यक्ति उसको अलग-अलग नजरिया से देखता, और प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। ऐसा करते समय जिन शब्दों को वह प्रकट करता है, वे विस्मयादिबोधक शब्द कहलाते हैं। प्रतिक्रिया दो प्रकार से प्रकट होती है:

क. मौखिक रूप से। ख. लिखित रूप से।

मौखिक रूप से आवाज लम्बी और ऊँची करके इसे व्यक्त किया जाता है, तथा लिखित रूप से विस्मयादि बोधक चिह्नों के द्वारा।

वाक्य-रचना में विस्मयादि बोधक शब्दों का कोई महत्त्व नहीं है क्योंकि इनसे वाक्य की संरचना में कोई अंतर नहीं पड़ता। ये शब्द वक्ता के केवल हर्ष, शोक, विस्मय आदि मनोभावों को प्रकट करते हैं।

विस्मय (आश्चर्य) आदि से मिलकर विस्मयादिबोधक शब्द बनता है। ये सभी तीव्र मनोभाव है। अत: ये मन के भावों को व्यक्त करते हैं।

विस्मयादि बोधक के प्रयोग करते समय कुछ बातें ध्यान देने योग्य हैं –

1. इनकी संख्या बहुत सीमित होती है। अत: मौखिक रूप से मनोभाव व्यक्त करते समय उपयुक्त शब्द का प्रयोग होना चाहिए।
2. विस्मयादि बोधक शब्दों को वाक्य के आरंभ में लगाना चाहिए।
3. इनका वाक्य से सीधा सम्बन्ध नहीं होता। इनके लगाएँ बिना भी वाक्य रचना हो सकती है; जैसे– 'अब मैं कहाँ जाऊ?' इसे विस्मयादिबोधक के रूप में इस प्रकार कहेंगे– हाय! अब मैं कहाँ जाऊँ? (शोक सूचक)
   अथवा अरे! अब मैं कहाँ जाऊँ? (सम्बोधन सूचक)
   (दोनों ही मनोदशाएँ भिन्न हैं।)
4. विस्मयादि बोधक शब्दों के प्रयोग के पश्चात् (!) चिह्न लगाना आवश्यक है।
5. कभी–कभी पूरा वाक्य ही विस्मयादि बोधक होता है; जैसे–
   क. क्या बात है!   ख. सर्वनाश (सत्यानाश) हो गया!

इस प्रकार विस्मयादिबोधक अव्यय वाक्य में सहायक नहीं होते। इनका प्रयोग केवल मनोभावों को विभिन्न मनोदशाओं को प्रकट करने के लिए होता है। इसलिए इन्हें मनोभावों का दर्पण कहा जाता है, जो उचित नहीं है। इनके मौखिक उच्चारण करते समय विभिन्न मुदाएँ बनती हैं। दर्पण देखकर उसका आनन्द लें।

11

वाक्य

11.1
मिश्र वाक्य की संरचना में सहायक है - संम्बन्धवाचक सर्वनाम

जो आया, सो जाएगा।

जो पढ़ेगा, वह उत्तीर्ण होगा।

जो-जो आपने कहा, वैसा-सब मैंने किया।

ये कुछ वाक्य हैं जो सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। इनमें प्रत्येक वाक्य में दो-दो उपवाक्य है। जिन्हें क्रमशः जो-सो, जो-वह तथा जैसा-जैसी, वैसा-वैसी सम्बन्धवाचक सर्वनाम से जोड़ा गया है। इन्हें नित्य सम्बन्धी कहते हैं। वाक्यों में इन शब्दों का प्रयोग करते समय, संज्ञा पद नहीं रहते। इन वाक्यों की विशेषता यह है कि ये सदैव पुल्लिंग, एकवचन की क्रिया से प्रयुक्त होते हैं। बहुत से लोग इसमें स्त्रीलिंग, बहुवचन का प्रयोग भूल से कर बैठते हैं, जो उचित नहीं; जैसे-जो आती है, वह ही जाती है।

जो पढ़ती है, वह उत्तीर्ण होती है।

जो-जो आपने कहा, वैसा-वैसा मैंने किया।

ये तीनों ही वाक्य अशुद्ध है। तीसरे वाक्य में जो-जो के साथ वैसा-वैसा का प्रयोग करना ठीक नहीं। वैसा-वैसा के स्थान पर वैसा-सब का प्रयोग करना चाहिए।

सम्बन्ध वाचक सम्बन्ध में इतना बताने के बाद एक शिक्षक ने किसी कार्यशाला में प्रश्न किया कि मिश्र वाक्य में विशेषण उपवाक्य की रचना भी प्रायः इन्हीं 'जो' तथा उसके विभिन्न रूपों (जिसने, जिन्होंने, जिसे, जिससे, जिसके लिए, जिनका, जिन पर आदि।) से प्रारंभ होती है। वहाँ ये उपवाक्य अपने से पहले उपवाक्य में आए संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताते हैं। क्या ऐसा तो नहीं कि मिश्र वाक्य की रचना में ये सम्बन्ध वाचक सर्वनाम सहायक है? कृपया स्पष्ट करें।

शिक्षक के स्वाध्याय की प्रशंसा करते हुए मैंने कहा- ''निश्चित ही आप का व्याकरण सम्बन्धी ज्ञान बड़ा व्यावहारिक है, अन्यथा ऐसी कल्पना करना हर व्यक्ति के लिए संभव नहीं।'' फिर मैंने दो वाक्य प्रस्तुत किए-

1. (जो) गया सो गया, अब क्या हो सकता है।
2. जो हो गया (सो) हो गया, अब क्या सोचना।

इन वाक्यों में 'जो' और 'सो' का प्रयोग लुप्त है किंतु कल्पना करके वाक्यों का सही अर्थ लगा सकते हैं। ये दोनों वाक्य सम्बन्धवाचक सर्वनाम से संबंधित है।

इन दो वाक्यों को देखिए-

1. वह आदमी जो कल आया था, आज भी आया है।
2. मैंने दो चुटकुले सुनाए, जिन पर खूब तालियाँ बजीं।

ये दो वाक्य विशेषण उपवाक्य के उदाहरण हैं।

मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य (सरल वाक्य) रहता है, तथा एक या एक से अधिक उपवाक्य होते हैं।

उपरोक्त उदाहरणों में वह आदमी आज भी आया है। (प्रधान उप वाक्य है।), तथा जो कल आया था। (विशेषण उपवाक्य)

विशेषण उपवाक्य की विशेषता यह है कि वे बिना सम्बन्धवाचक सर्वनाम के प्रारंभ नहीं होते। वे आश्रित वाक्य हैं। प्रधान उपवाक्य नहीं। दूसरे वाक्य में भी मैंने दो चुटकुले सुनाए (प्रधान उपवाक्य) है। जिन पर.... (आश्रित विशेषण उपवाक्य।)

सम्बन्धवाचक सर्वनाम में भी दो-दो उपवाक्य रहते है किंतु उनका प्रयोग कुछ इस प्रकार होता है-

1. जैसा काम वैसा दाम (समानता के अर्थ में)
2. यह पुस्तक ठीक वैसी नहीं है, जैसी मेरी पुस्तक। (असमानता के अर्थ में।)
3. भोपाल शहर सदैव जैसा का तैसा रहेगा। (पूर्ववत् के अर्थ में)
4. जैसे को तैसा। (मुहावरे के अर्थ में।)
5. जैसे ही वे आएँ, वैसे ही मुझे सूचना देना। (तात्कालिकता के अर्थ में।)

कहने का आशय यह कि सम्बन्धवाचक सर्वनाम को उनके प्रयोग की विशिष्टता के आधार पर पहचाना जा सकता है। इसमें दो उपवाक्य विशेष अर्थ के द्योतक हैं, जबकि मिश्रित वाक्य में दो उपवाक्य परस्पर एक दूसरे पर निर्भर करते हैं।

अभ्यास के द्वारा इन्हें पहचानने का प्रयत्न छात्रों को अवश्य कराना चाहिए।

12

वाक्य

12.1
पदों के निर्माण में सहायक है विराम चिह्न

''विराम चिह्न का प्रयोग सभी पुस्तकों में दिया गया है किंतु संज्ञा, क्रिया, विशेषण अर्थात् विकारी पदों में इनका प्रयोग किस प्रकार होता है, इसका उल्लेख कहीं पढ़ने को नहीं मिलता। क्या इन चिह्नों का प्रयोग व्याकरण के शब्द एवं पद निर्माण में सहायक भी होता है? कृपया, इस सम्बन्ध में कुछ जानकारी देंगे, तो अच्छा रहेगा।''- एक शिक्षक ने किसी संदर्भ में मुझसे पूछा।

शिक्षक महोदय की जिज्ञासा प्रशंसनीय है क्योंकि अधिकांश पुस्तकों में इस दिशा में कुछ भी नहीं बताया गया है। कुछ पुस्तकों में संकेत मात्र दिया गया है। अत: निश्चय ही इस पर विचार किया जाना उचित होगा। यह सोचकर मैंने उन्हें इस सम्बन्ध में इस प्रकार बतलाया :-

1. **योजक-चिह्न** - योजक चिह्नों का उपयोग सामासिक पदों में होता है;
   जैसे- द्वंद्व समास में रात-दिन, आकाश-पाताल आदि।
   (शेष सामासिक पदों में योजक चिह्नों का उपयोग नहीं होता है।)
2. जब एक ही संज्ञा दो बार प्रयुक्त हो, तब संज्ञाओं के मध्य योजक-चिह्नों का प्रयोग होता है। इसे द्विरुक्ति कहते हैं; जैसे- द्वार-द्वार, राम-राम आदि।
3. जब दो विशेषण पदों का संज्ञा के अर्थ में प्रयोग हो, वहाँ योजक-चिह्न लगाया जाता है; जैसे- भूखा-प्यासा, अंधा-बहरा आदि।
4. जब दो शब्दों के बीच सम्बन्ध कारक के चिह्न-का, की, के लुप्त हों, तब उनके बीच योजक-चिह्न लगता है; जैसे- मानव-जीवन, कृष्ण-लीला आदि।
5. **गुणवाचक विशेषण** में 'सा' जोड़ने पर योजक-चिह्न लगता है; जैसे-छोटी-सी लड़की, ठिगना-सा आदमी आदि।
6. निश्चित संख्यावाचक विशेषण में जब दो पद एक साथ प्रयोग में लाए जाएँ तो योजक-चिह्न लगाया जाता है; जैसे- एक-एक, दस-बारह आदमी आदि।
7. **अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण** में भी 'सा' अथवा 'से' का प्रयोग करने पर योजक-चिह्न लगाया जाता है; जैसे- कम-से-कम, अधिक-से-अधिक, थोड़ा-सा-काम आदि।
8. जब दो शुद्ध संयुक्त क्रियाएँ एक साथ प्रयुक्त हों, तब दोनों के बीच योजक-चिह्न लगाया

जाता है; जैसे- पढ़ना- लिखना, मरना-जीना आदि।

9. क्रिया की मूल धातु के साथ आई प्रेरणार्थक क्रियाओं के मध्य भी योजक चिह्न लगाया जाता है; जैसे- पीना-पिलाना आदि।
10. दो प्रेरणार्थक क्रियाओं के मध्य भी योजक चिह्न लगाया जाता है; जैसे- पढ़ाना-पढ़वाना, डराना-डरवाना आदि।
11. परिमाण वाचक तथा रीतिवाचक क्रिया विशेषण में प्रयुक्त दो अव्ययों तथा 'ही' से 'का', 'न' आदि के मध्य योजक-चिह्न लगाया जाता है; जैसे- थोडा-थोड़ा, धीरे-धीरे, अभी-अभी, साथ-साथ, कहीं-न-कहीं आदि।

    इस प्रकार देखने में आता है कि विराम चिह्नों के अंतर्गत योजक चिह्नों का प्रयोग पदों के निर्माण तथा सामासिक पदों की रूपरचना के अंतर्गत सर्वाधिक होता है किंतु अँग्रेजी भाषा के अनुकरण के अनुसार हमें बहुत अधिक मात्रा में इन चिह्नों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अन्यथा भाषा का लालित्य भी प्रभावित होता है, और भाषा जटिल एवं दुर्बोध हो जाती है।

12. अल्प विराम - यदि वाक्य में किसी वस्तु या व्यक्ति की विशिष्टता किसी सम्बन्ध वाचक सर्वनाम के माध्यम से बतानी है, तो वहाँ अल्प विराम का प्रयोग करना चाहिए; जैसे- मेरा भाई, जो एक शिक्षक है, भोपाल में पदस्थ है।
13. यदि वाक्य के बीच में अव्यय का प्रयोग होता है, तो उसके पहले अल्प विराम लगाया जाता है; जैसे- बोलियाँ अलग-अलग हो सकती हैं, किंतु भाषा एक ही हो।

    इस प्रकार के वाक्य यदि पढ़ने में आएँ तो इस ओर हमारा ध्यान अवश्य जाना चाहिए।

12.2

विराम चिह्नों का प्रयोग कैसे करें?

''कौन से विराम चिह्न कहाँ लगाना, क्या इस सम्बन्ध में आप कोई युक्ति सुझा सकते हैं?'' एक व्याख्याता द्वारा यह प्रश्न मुझसे किया गया।

सचमुच कोई सर्वमान्य नियम तो इस सम्बन्ध में हो ही नहीं सकता कि किस चिह्न का प्रयोग किस स्थान पर करना चाहिए, फिर भी स्मरण रखने के लिए एक युक्ति है-

जिस प्रकार मात्राओं का प्रयोग दाएँ, बाएँ, ऊपर, नीचे होता है उसी प्रकार विराम चिह्नों का प्रयोग भी चारों ओर होता है। उदाहरण के लिए नीचे का आरेख देखें-

3. अवतरण चिह्न, पुनरुक्ति चिह्न

1. विस्मयादिबोधक 2. पूर्ण, विराम, प्रश्न-चिह्न

4. समाप्ति चिह्न, अल्पविराम, अर्द्धविराम, हंसपद

इन नौ विराम चिह्नों के अतिरिक्त कुछ चिह्न शब्द के अंतिम वर्ण के मध्य के आगे लगाए जाते हैं; जैसे-

निर्देशन-चिह्न, योजक-चिह्न, लाघव-चिह्न, कोष्ठक, तुल्यता-सूचक, लोप-चिह्न, कोलन, विवरण चिह्न,डेश। अब इन चिह्नों की पहचान संकेतों के आधार पर भी जाने-

1. पूर्ण विराम (।)	10. लोपचिह्न (......)
2. अल्पविराम (,)	11. कोष्ठक ( )
3. अर्द्ध विराम (;)	12. समाप्ति चिह्न (-0-)
4. प्रश्न चिह्न (?)	13. तुल्पता सूचक (=)
5. निर्देशन चिह्न (-)	14. कोलन (:)
6. विस्मयादि बोधक (!)	15. हंसपद (‸)
7. योजक चिह्न (-)	16. पुनरुक्ति चिह्न (--''--)
8. लाघव चिह्न (.)	17. विवरण चिह्न (' ')
9. अवतरण चिह्न ('' '')	18. डेश (-)

अब इन चिह्नों को प्रयोग के आधार पर भी जानें-

1. नमिता मेरी पुत्री है। (पूर्ण विराम)
2. राम, सीता और लक्ष्मण वन को गए। (अल्पविराम)
3. जो चाहो, करो; पर शोर न करो। (अर्द्ध विराम)
4. आपने ईश्वर को देखा है? (प्रश्न चिह्न)
5. संज्ञा के तीन भेद हैं व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक। (निर्देशन चिह्न)
6. क्या मनोहर दृश्य है! (विस्मय सूचक)
7. लाभ-हानि। (योजक चिह्न)
8. कृ.पृ.उ. (कृपया पृष्ठ उलटिए) (लाघव चिह्न)
9. ''नहीं,'' पिताजी ने स्पष्ट कहा। (अवतरण चिह्न)
10. ज्यादा बक-बक मत करो, नहीं तो.... (लोप चिह्न)
11. हाथों की उपमा सरसिज (कमल) से दी गई है। (कोष्ठक चिह्न)
12. ---0--- (समाप्ति चिह्न)
13. मयंक=चंद्रमा (तुल्यता सूचक)
14. प्रमुख-बिंदु इस प्रकार हैं :- (कोलन)
15. महात्मा गाँधी सत्य‸ और अहिंसा के पुजारी थे। (हंसपद)
16. (do) ---''--- (पुनरुक्ति चिह्न)
17. विवरण चिह्न के उदाहरण निम्नलिखित है : (:)
18. बड़े-बड़े नेताओं जैसे- गाँधी-ने, सुभाष-ने देश के लिए सर्वस्व बलिदान कर दिया। (- डेश)

विशेष : कुछ लोग/निर्देशन-चिह्न तथा डेश का प्रयोग एक ही अर्थ में करते हैं।

अभी हिंदी लेखन में इन सभी विराम चिह्नों का प्रयोग नहीं किया जाता है। ऐसा करना आवश्यक भी नहीं किंतु व्याकरण के इस विषय पर छात्रों को पर्याप्त जानकारी दी जाना आवश्यक है, ताकि वे इनकी पहचान कर सकें।

वस्तुनिष्ठ व्याकरण

01

भाषा और लिपि

1. **भाषा के संचित ज्ञान-कोश को.............कहते हैं।**
   (अ) मान (ब) लिपि (स) व्याकरण (द) साहित्य
2. **हिन्दी उपभाषाओं को..........वर्गों में विभाजित किया गया है।**
   (अ) चार (ब) पाँच (स) छः (द) तीन
3. **भाषा का अल्पविकसित रूप.............कहलाता है।**
   (अ) लिपि (ब) साहित्य (स) मातृभाषा (द) बोली
4. **राजस्थानी..........पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी तथा बिहारी हिन्दी की उपभाषाएँ हैं।**
   (अ) मराठी (ब) पहाड़ी (स) संस्कृत (द) अवधी
5. **भाषा के शुद्ध रूप तथा प्रयोग का ज्ञान कराने वाला शास्त्र........... कहलाता है।**
   (अ) साहित्य (ब) लिपि (स) व्याकरण (द) उपभाषा
6. **भारतीय संविधान द्वारा........भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है।**
   (अ) 24 (ब) 18 (स) 23 (द) 25
7. **देवनागरी लिपि बाईं से..........ओर लिखी जाती है।**
   (अ) नीचे (ब) दाईं (स) ऊपर (द) पीछे की
8. **हिन्दी भाषा, फ़ीजी.........तथा त्रिनीदाद आदि देशों में बोली जाती है।**
   (अ) कनाडा (ब) रूस (स) जापान (द) मॉरीशस
9. **भाषा के सभी वर्णों के...........को वर्णमाला कहते हैं।**
   (अ) दल (ब) मेल (स) समूह (द) वृंद
10. **वर्ण ध्वनियों के.............रूप होते हैं।**
    (अ) मौखिक (ब) सांकेतिक (स) वैकल्पिक (द) लिखित
11. **जिन स्वरों के उच्चारण में..........समय लगे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं।**
    (अ) अधिक (ब) लम्बा (स) कम (द) अत्यधिक

12. जिन वर्णों का उच्चारण नाक तथा मुख से होता है........ कहलाते हैं।

(अ) अनुस्वार **(ब)** अनुनासिक

(स) अयोगवाह **(द)** अंतस्थ

13. अं, अः ....कहलाते हैं।

(अ) अंतस्थ **(ब)** अनुस्वार **(स)** अयोगवाह **(द)** विसर्ग

14. ज़, फ़ तथा ऑ...........है।

(अ) संयुक्त व्यंजन **(ब)** आगत ध्वनियाँ

(स) ऊष्म व्यंजन **(द)** स्पर्श व्यंजन

15. त,थ,द,ध,न, का उच्चारण...............से होता है।

(अ) तालु **(ब)** नासिका **(स)** दंत **(द)** कंठ

16. क,ख,ग,घ,ङ, का उच्चारण...........से होता है।

(अ) मूर्धा **(ब)** स्वर तंत्र **(स)** दंत **(द)** कंठ

17. भाषा के सर्वमान्य तथा स्वीकृत रूप को कहते हैं।

(अ) मातृभाषा **(ब)** भाषा **(स)** मानक भाषा **(द)** विभाषा

18. ब्राह्मी लिपि से किस लिपि का विकास हुआ।

(अ) रोमन लिपि **(ब)** देवनागरी

(स) अरबी लिपि **(द)** खरोष्ठी

19. हिन्दी की जननी कहा है।

(अ) संस्कृत **(ब)** बंगाली **(स)** अँग्रेजी **(द)** उर्दू

20. मौखिक भाषा में किसका प्रयोग किया जाता है?

(अ) चिह्नों **(ब)** संकेतों **(स)** ध्वनि **(द)** वर्ण

21. हिन्दी की मानक भाषा क्या है?

(अ) देवनागरी **(ब)** खड़ी बोली

(स) बोली **(ब)** लोक भाषा

22. निम्नलिखित शब्द का मानक रूप बताइए।

(अ) बुद्धिमान **(ब)** बुद्धिमन **(स)** बुद्धिमान **(द)** बुद्धीमान

23. जब हम दूरभाष पर समाचार सुनते हैं, तो वह भाषा का कौन सा रूप होता है?

(अ) मौखिक **(ब)** लिखित **(स)** सांकेतिक **(द)**उपरोक्त सभी

24. संविधान की धारा 343 के अनुसार हिन्दी को .... 1949 में राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया था-

(**अ**) 15अगस्त (**ब**) 26जनवरी (**स**) 14सितम्बर (**ब**) 18नवम्बर

25. विश्व में हिन्दी भाषा को .... स्थान प्राप्त है-

(**अ**) प्रथम (**ब**) द्वितीय (**स**) तृतीय (**द**) चतुर्थ

26. व्याकरण के विभाग हैं -

(**अ**) वर्ण विभाग (**ब**) शब्द विभाग

(**स**) वाक्य विभाग (**द**) उपर्युक्त सभी

27. जो भाषा लिखकर प्रयोग की जाए, उसे कहते हैं -

(**अ**) राजभाषा (**ब**) मौखिक भाषा

(**स**) लिखित भाषा (**द**) सांकेतिक भाषा

28. हिन्दी का सर्वप्रथम प्रयोग किया -

(**अ**) अमीर खुसरो ने (**ब**) सूरदास ने

(**स**) तुलसीदास ने (**द**) केशवदास ने

29. मानव सभ्यता का विकास संभव हुआ है -

(**अ**) लिखित भाषा द्वारा (**ब**) मौखिक भाषा द्वारा

(**स**) बोली द्वारा (**द**) सांकेतिक भाषा द्वारा

उत्तरमाला

1. द	**2.** ब	**3.** द	**4.** ब	**5.** स	**6.** ब	**7.** ब
8. द	**9.** स	**10.** द	**11.** स	**12.** ब	**13.** स	**14.** ब
15. स	**16.** द	**17.** स	**18.** ब	**19.** अ	**20.** स	**21.** ब
22. स	**23.** अ	**24.** स	**25.** स	**26.** द	**27.** स	**28.** अ
29. अ						

||02||

वर्ण विचार

उचित विकल्प को रेखांकित कीजिए-

1. **वर्ण से तात्पर्य है।**
(अ) रूप-द्वआकार (स) छोटे-छोटे शब्द (ब) छोटे-छोटे कथन (द) छोटी से छोटी सार्थक ध्वनि

2. **वर्ण के प्रकार होते हैं।**
(अ) ह्रस्व, स्वर, प्लुत (स) स्वर, व्यंजन (ब) स्वर, व्यंजन, अयोगवाह (द) मूल व संयुक्त वर्ण

3. **व्यंजन किसकी सहायता से बोले जाते हैं।**
(अ) स्वर (ब) व्यंजन (स) प्लुत (द) दीर्घ

4. **वर्णों को क्रम पूर्वक अलग करना कहलाता है?**
(अ) वर्णक्रम (ब) व्यंजनक्रम (स) संधि विच्छेद (द) वर्ण-विच्छेद

5. **स्वरों तथा व्यंजनों के बीच का उच्चारण है।**
(अ) सरल व्यंजन (स) अंतस्थ व्यंजन (ब) संयुक्त व्यंजन (द) ऊष्म व्यंजन

6. **किन वर्णों के उच्चारण में कम वायु तथा कम समय लगता है?**
(अ) अघोष (ब) महाप्राण (स) अल्पप्राण (द) दीर्घप्राण

7. **तालु से बोले जाने वाले (तालव्य) वर्णों में नहीं आता।**
(अ) ई (ब) ट (स) ज (द) श

8. **कंठ्य से बोले जाने वाले वर्णों में नहीं आता।**
(अ) च (ब) ह (स) ख (द) घ

9. **'व' का उच्चारण होता है।**
(अ) नासिक्य (ब) दंतोष्ठ्य (स) कंठ्य (द) ओष्ठ्य

10. **किन वर्णों के उच्चारण में हवा स्वर यंत्रियों से बिना टकराए बाहर आती है।**
(अ) सघोष (ब) अघोष (स) अल्प प्राण (द) महाप्राण

11. **महाप्राण व्यंजन के उदाहरण है।**
(अ) फ, भ **(ब)** क, ग **(स)** त, द **(द)** ल, व

12. **संयुक्ताक्षर है।**
(अ) कुम्हार **(ब)** मिट्टी **(स)** बिल्ली **(द)** दिल्ली

13. **शब्दों में प्रयुक्त वर्णों को अलग-अलग करके लिखने को क्या कहते हैं?**
(अ) वर्ण **(ब)** विच्छेद
(स) वर्ण विच्छेद **(द)** वर्ण संधि विच्छेद

14. **जब दो समान व्यंजन आपस में मिलते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?**
(अ) संयुक्ताक्षर **(ब)** द्वित्व व्यंजन
(स) व्यंजन **(द)** संयुक्त व्यंजन

15. **'क' वर्ग में कितने वर्ण होते हैं?**
(अ) पाँच **(ब)** तीन **(स)** सात **(द)** दो

16. **ओऽम किस स्वर का उदाहरण है?**
(अ) ह्रस्व **(ब)** दीर्घ **(स)** प्लुत **(द)** अल्पप्राण

17. **जोर से गाने या रोने में किस स्वर का प्रयोग होता है।**
(अ) ह्रस्व **(ब)** दीर्घ **(स)** प्लुत **(द)** महाप्राण

18. **ऋ की मात्रा किस व्यंजन के साथ नहीं लगाई जाती।**
(अ) ष **(ब)** प **(स)** ज **(द)** र

19. **क्षमा में 'क्ष' वर्ण किसका उदाहरण है?**
(अ) द्वित्व व्यंजन **(ब)** व्यंजन **(स)** संयुक्ताक्षर **(द)** स्वर

20. **र से पूर्व यदि स्वर रहित व्यंजन है तो 'र' का प्रयोग कैसे किया जाता है?**
(अ) धर्म **(ब)** प्राचीन **(स)** रथ **(द)** राष्ट्र

21. **अं और अः आते हैं -**
(अ) स्वर में **(ब)** व्यंजन में
(स) अयोगवाह में **(द)** इनमें से कोई नहीं

22. **इनमें से किसमें द्वित्व व्यंजन का प्रयोग नहीं है-**
(अ) दिल्ली **(ब)** चच्चा **(स)** कक्षा **(द)** चिह्न

23. **किस शब्द में अनुनासिक का प्रयोग है -**
(अ) कंगन **(ब)** गंगा **(स)** उन्हें **(द)** चाँदनी

24. श, स, ष, ह कौन से व्यंजन हैं?

(अ) अंतस्थ **(ब)** ऊष्म

(स) स्पर्श **(द)** इनमें से कोई नहीं

25. उ+द्+य+आ+न वर्णों का मेल है –

(अ) उदयान **(ब)** उद्यान **(स)** उदीयमान **(द)** उदयआन

26. उच्चारण के आधार पर व्यंजनों को कितने वर्गों में विभाजित किया गया है ?

(अ) छ: **(ब)** सात **(स)** आठ **(द)** नौ

27. जिन व्यंजनों के अंत में खड़ी पाई (रेखा) होती है, उनकी संख्या है–

(अ) सत्रह **(ब)** अठारह **(स)** बीस **(द)** इक्कीस

उत्तरमाला

1. द	**2.** ब	**3.** अ	**4.** द	**5.** स	**6.** स	**7.** ब
8. अ	**9.** ब	**10.** ब	**11.** अ	**12.** अ	**13.** स	**14.** ब
15. अ	**16.** स	**17.** स	**18.** द	**19.** स	**20.** ब	**21.** स
22. द	**23.** द	**24.** ब	**25.** ब	**26.** द	**27.** द	

03

स्वर

1. भाषा की सबसे छोटी मौखिक इकाई कहलाती है -
(अ) वर्ण (ब) शब्द (स) वाक्य (द) ध्वनि

2. जिन ध्वनियों के उच्चारण में श्वास वायु बिना किसी रुकावट के मुख से निकलती है, उसे कहते हैं -
(अ) व्यंजन (ब) स्वर (स) वर्ण (द) शब्द

3. जिन स्वरों के उच्चारण में सबसे कम समय लगे, उन्हें कहते हैं-
(अ) ह्रस्व स्वर (ब) दीर्घ स्वर (स) प्लुत स्वर (द) अनुस्वार

4. जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा से अधिक समय लगता है,उन्हें कहते हैं -
(अ) दीर्घ स्वर (ब) ह्रस्व स्वर (स) अनुस्वार (द) अनुनासिक

5. जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्राओं से अधिक समय लगे, वे कहलाते हैं -
(अ) दीर्घ स्वर (ब) प्लुत स्वर (स) ह्रस्व स्वर (द) अनुनासिक

6. वृत्ताकार स्वर है -
(अ) इ (ब) ई (स) ओ (द) म

7. इनमें अयोगवाह स्वर है-
(अ) प (ब) म (स) आ (द) अँ

8. बोलते समय सुर का आरोह-अवरोह कहलाता है -
(अ) अनुतान (ब) सुर (स) संगम (द) विराम

9. अनुनासिक स्वर वाला शब्द है -
(अ) मंजन (ब) अंजन (स) पाँव (द) हिन्दी

10. अनुस्वार स्वर वाला शब्द छाँटिए -
(अ) हंस (ब) आँख (स) बैल (द) पक्षी

11. इनमें स्वर नहीं है -
(अ) आ (ब) इ (स) र (द) उ

12. निम्नलिखित में व्यंजन नहीं है -
(अ) क (ब) य (स) द (द) अ

13. पश्च स्वर है-

(अ) ई (ब) ऊ (स) उ (द) ए

14. दीर्घ स्वर है -

(अ) उ (ब) ऐ (स) अ (द) इ

15. ह्रस्व स्वर है -

(अ) ई (ब) इ (स) आ (द) उ

16. निरनुनासिक स्वर वाला शब्द है -

(अ) पूछ (ब) पूँछ (स) पंकज (द) आँखें

17. इनमें से कौन सा शब्द दीर्घ मात्रा वाला है ? -

(अ) बैल (ब) बेल (स) दिन (द) कम

18. इनमें से कौन सा शब्द ह्रस्व मात्रा वाला है ? -

(अ) केरल (ब) बासी (स) मिल (द) अंबर

19. 'हंस' शब्द का अर्थ है -

(अ) हँसना (ब) एक पक्षी (स) हँसिया (द) एक पशु

20. शब्द बोलते समय अक्षर पर जो बल दिया जाता है, उसे कहते हैं-

(अ) स्वराघात (ब) वर्णाघात (स) बलाघात (द) शब्दाघात

21. दो पदों के बीच में उचित विराम देना कहलाता है -

(अ) अनुतान (ब) संगम (स) बलाघात (द) विराम

22. किस स्वर की मात्रा नहीं होती ?

(अ) अ (ब) इ (स) उ (द) ऋ

23. किस स्वर की मात्रा 'र्' के साथ नहीं लगाई जाती है ?

(अ) अ (ब) इ (स) उ (द) ऋ

24. किस स्वर का श के साथ ऋ की मात्रा लगाने पर भिन्न रूप बनता है?

(अ) श्+ऋ (ब) श्+र (स) श्+र् (द) श्+रि

25. किस स्वर की मात्रा 'र्' के साथ मध्य में लगाई जाती है -

(अ) अ (ब) इ (स) उ (द) ऋ

उत्तरमाला

1. द	2. ब	3. अ	4. अ	5. ब	6. स	7. द	8. अ	9. स
10. अ	11. स	12. द	13. अ	14. ब	15. अ	16. ब	17. अ	18. स
19. ब	20. स	21. ब	22. अ	23. द	24. अ	25. स		

‖04‖

व्यंजन

1. **जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, उन्हें कहते हैं-**
(अ) स्वर (ब) व्यंजन (स) अयोगवाह (द) संयुक्त व्यंजन

2. **व्यंजन होते हैं -**
(अ) 33 (ब) 37 (स) 40 (द) 38

3. **संयुक्त व्यंजन की संख्या है -**
(अ) 3 (ब) 4 (स) 5 (द) 2

4. **संयुक्त व्यंजन है -**
(अ) श्र (ब) द (स) ल (द) य

5. **स्वर सहित व्यंजन है -**
(अ) क (ब) ल् (स) ई (द) म्

6. **स्वर सहित व्यंजन को लिखते समय उसके नीचे लगाते हैं -**
(अ) अनुनासिक (ब) अनुस्वार (स) हलन्त् (द) विसर्ग

7. **कंठ से उच्चरित वर्ण है -**
(अ) प (ब) म (स) ध (द) क

8. **'ट' वर्ग का उच्चारण किया जाता है -**
(अ) मूर्धन्य (ब) वत्सर्य (स) तालव्य (द) कंठ्य

9. **ओष्ठ्य से उच्चरित वर्ण हैं -**
(अ) क (ब) स (स) ह (द) प

10. **दन्त्य से उच्चरित वर्ण है -**
(अ) त वर्ग (ब) प वर्ग (स) क वर्ग (द) च वर्ग

11. 'च' वर्ग का उच्चारण स्थान है -
(अ) तालव्य (ब) दन्त्य (स) मूर्धन्य (द) कंठ्य

12. जिन व्यंजनों के उच्चारण से स्वर तंत्रियों में कंपन पैदा हो, वह कहलाते हैं -
(अ) सघोष (ब) अघोष (स) स्वरतंत्री (द) ध्वनि

13. जिन व्यंजनों के उच्चारण से स्वर तंत्रियों में गूँज पैदा न हो, उन्हें कहते हैं -
(अ) गुंजन (ब) अघोष (स) सघोष (द) अल्पप्राण

14. जिन ध्वनियों के उच्चारण में श्वास वायु अधिक मात्रा में निकलती है, उसे कहते हैं -
(अ) अघोष (ब) सघोष (स) अल्पप्राण (द) महाप्राण

15. जिन ध्वनियों के उच्चारण में वायु की मात्रा कम होती है, उसे कहते हैं -
(अ) सघोष (ब) महाप्राण (स) अल्पप्राण (द) नासिक्य

16. 'क' व्यंजन है -
(अ) सघोष (ब) अघोष (स) महाप्राण (द) नासिक्य

17. अल्पप्राण व्यजंन है -
(अ) ख (ब) घ (स) झ (द) क

18. जो व्यंजन अल्पप्राण नहीं हैं, उसे अलग कीजिए -
(अ) ख (ब) क (स) ग (द) च

19. महाप्राण व्यंजन नहीं है -
(अ) क (ब) ख (स) घ (द) छ

20. 'उत्क्षिप्त' का अर्थ है -
(अ) उठाया हुआ (ब) फेंका हुआ
(स) लाया हुआ (द) ऊपर के

21. उत्क्षिप्त व्यंजन छाँटिए -
(अ) ब (ब) म (स) य (द) ढ़

22. नासिक्य व्यंजन है -
(अ) म (ब) प (स) र (द) द

23. निम्नलिखित में से नासिक्य व्यंजन नहीं है -
(अ) ङ (ब) म (स) न (द) थं

24. नासिक्य व्यंजन की संख्या है -
(अ) 4 (ब) 3 (स) 5 (द) 2

25. व्यंजन गुच्छ वाला शब्द है -
(अ) शरम (ब) क्यारी (स) बालक (द) गुलाम

26. वर्णों के सही उच्चारण स्थान वाली जोड़ी है -
(अ) क-दन्त्य (ब) प-ओष्ठ्य (स) ट-तालव्य (द) च-कंठ्य

27. आगत ध्वनि है -
(अ) क (ब) ड (स) ठ (द) ड़

28. किस शब्द में 'र' का प्रयोग नहीं है -
(अ) वृक्ष (ब) ट्राम (स) श्रम (द) स्रोत

29. किस शब्द में पंचम अक्षर का प्रयोग नहीं है -
(अ) संपदा (ब) अँगूठी (स) गंगा (द) डंडा

30. विसर्ग का उच्चारण ---- के समान होता है -
(अ) म् (ब) ह् (स) प् (द) य्

31. विसर्ग वाला शब्द है -
(अ) कंचन (ब) गाँव (स) प्राय: (द) मन्नत

32. मानक रूप वाला वर्ण नहीं है -
(अ) क (ब) ल (स) भ्क्त (द) प

33. जो न तो पूर्ण रूप से स्वर है, न पूर्ण रूप से व्यंजन, उसे कहते हैं-
(अ) अर्द्धव्यंजन (ब) अर्द्धस्वर
(स) अद्धवर्ण (द) कुछ नहीं

34. अर्द्धस्वर वाला व्यंजन अलग कीजिए -
(अ) प (ब) ब (स) य (द) म

35. स्पर्श व्यंजन है -
(अ) ल (ब) य (स) क (द) ढ़

36. संघर्षी व्यंजन है -
(अ) च (ब) प (स) ह (द) व

37. महाप्राण व्यंजन है -
(अ) प (ब) फ (स) ब (द) म

38. अघोष व्यंजन है -
(अ) क् (ब) ग (स) घ (द) ङ

39. पंचमाक्षर के आधार पर शुद्ध शब्द है-

(अ) कन्ठ **(ब)** कण्ठ **(स)** कङ्ठ **(द)** कञ्ठ

40. भीम शब्द में ध्वनियाँ हैं -

(अ) 3 **(ब)** 4 **(स)** 5 **(द)** 2

उत्तरमाला

1. ब	**2.** अ	**3.** ब	**4.** अ	**5.** अ	**6.** स	**7.** द
8. अ	**9.** द	**10.** अ	**11.** अ	**12.** अ	**13.** ब	**14.** द
15. स	**16.** ब	**17.** द	**18.** अ	**19.** अ	**20.** ब	**21.** द
22. अ	**23.** द	**24.** स	**25.** ब	**26.** ब	**27.** ब	**28.** अ
29. ब	**30.** ब	**31.** स	**32.** स	**33.** ब	**34.** स	**35.** स
36. स	**37.** ब	**38.** अ	**39.** ब	**40.** ब		

05

वर्तनी

1. **वर्णों के क्रम को............कहते हैं।**
(अ) शब्द (ब) वर्तीन (स) वर्णमाला (द) वर्तनी
2. **वर्तनी की त्रुटियों से अर्थ में...........आ जाता है।**
(अ) समानता (ब) अन्तर (स) अनतर (द) भेद
3. **आज दसवीं की परीक्षा का............ आएगा।**
(अ) परिणाम (ब) परीणाम (स) परिनाम (द) परीनाम
4. **मैं आपका अत्यन्त..........हूँ।**
(अ) अभारी (ब) आभरी (स) आभारी (द) आभार
5. **यदि दो पंचमाक्षर एक साथ आए, तो स्वर रहित........नहीं बनता।**
(अ) अनुस्वार (ब) अनुनासिक (स) निरनासिक (द) वर्तनी
6. **किस शब्द की वर्तनी अशुद्ध है-**
(अ) रमणीय (ब) व्यय (स) श्रृंगार (द) आशीर्वाद
7. **'अनुग्रहीत' शब्द में किस प्रकार की अशुद्धि है -**
(अ) द्वित्व व्यजंन संबंधी (स) 'र' के प्रयोग संबंधी
(ब) अनुनासिक संबंधी (द) उपसर्ग संबंधी
8. **'सन्यासी' शब्द में किस प्रकार की अशुद्धि है -**
(अ) अनुनासिक संबंधी (स) अनुस्वार संबंधी
(ब) संयुक्त व्यंजन संबंधी (द) द्वित्व व्यंजन संबंधी
9. **'धार्मिक' शब्द में किस प्रकार की अशुद्धि है -**
(अ) प्रत्यय संबंधी (स) 'र' संबंधी
(ब) संयुक्त व्यंजन संबंधी (द) अनुनासिक संबंधी
10. **'आशिर्वाद' शब्द में किस प्रकार की अशुद्धि है -**
(अ) उपसर्ग संबंधी (स) 'र' संबंधी
(ब) प्रत्यय संबंधी (द) 'इ' संबंधी

11. 'सुर्य' शब्द में किस प्रकार की अशुद्धि है -

(अ) शब्द संबंधी (स) 'उ' संबंधी

(ब) उपसर्ग संबंधी (द) 'र' संबंधी

12. 'कछा' शब्द में किस प्रकार की अशुद्धि है -

(अ)'क्ष' संबंधी (स)'ष' संबंधी (ब) श संबंधी (द)वर्ण संबंधी

13. अनुस्वार एवं पंचमाक्षर का सही प्रयोग किस युग्म में है-

(अ) हिन्दी-हिंदी (स) चंबल-चम्बल

(ब) गंगा-गन्गा (द) ठंडा-ठङडा

14. किस शब्द में पंचमाक्षर का प्रयोग नहीं है-

(अ) संबंध (स) कंपन (ब) दंड (द) पाँच

15. शुद्ध शब्द छाँटिए -

(अ) कृतघन (ब) कृत्घन (स) कृतघ्न (द) कृतध्न

16. शुद्ध अनुस्वार वाला शब्द है -

(अ) कँचन (ब) रंक (स) कगंन (द) चाँद

17. सही वर्तनी वाला शब्द है -

(अ) सुषमा (ब) भविश्य (स) प्रशाद (द) अमावश्या

18. ईकारांत अशुद्धि वाला शब्द है -

(अ) श्रीमती (ब) बीमारि (स) दीवाली (द) साक्षी

19. अशुद्ध शब्द है -

(अ) कृपालु (ब) आसू (स) शिशु (द) दयालु

20. शुद्ध शब्द छाँटिए -

(अ) अधीन (ब) अधिन (स) आधीन (द) आधिन

21. न-ण की अशुद्धि वाला शब्द है -

(अ) टिप्पणी (ब) रामायड़ (स) शरण (द) गणना

22. इ-ई की अशुद्धि वाला शब्द है -

(अ) पूर्ति (ब) प्राप्ती (स) कवि (द) उत्पत्ति

23. शुद्ध वर्तनी है -

(अ) आलौकिक (ब) अत्याधिक (स) अनाधिकार (द) बरात

24. अशुद्ध शब्द है -

(अ) चड़ना (ब) पढ़ना (स) लड़ना (द) खिड़की

25. शुद्ध शब्द है –

(अ) काँच **(ब)** कांच **(स)** कँगाल **(द)** आंख

26. शुद्ध शब्द है –

(अ) कृषी **(ब)** छुद्र **(स)** नछत्र **(द)** कृपा

27. अशुद्ध शब्द है –

(अ) घनिष्ठ **(ब)** निष्ठा **(स)** वशिष्ठ **(द)** श्रेष्ट

28. आगत ध्वनि नहीं है –

(अ)अँ **(ब)** ऑ **(स)** क़ **(द)** ज़

29. किस शब्द की वर्तनी सही है ?

(अ) उज्वल **(ब)** उज्ज्वल **(स)** उज्जवल **(द)** ऊज्ज्वल

30. किस शब्द की वर्तनी सही नहीं है ?

(अ) श्रृंगार **(ब)** भ्रम **(स)** गृह **(द)** कार्य

31. किस शब्द में 'ॠ' का प्रयोग हुआ है ?

(अ) भ्रम **(ब)** कर्म **(स)** ट्राम **(द)** कृष्ण

32. किस शब्द में अनुस्वार का प्रयोग नहीं है ?

(अ) उन्हें **(ब)** जंगल **(स)** गंगा **(द)** चंद्रमा

33. किस शब्द में रेफ संबंधी प्रयोग हुआ है ?

(अ) क्रम **(ब)** सहस्त्र **(स)** शृंगार **(द)** आश्चर्य

34. कौन सा शब्द द्वित्व व्यंजन नहीं है ?

(अ) क्षमा **(ब)** कुत्ता **(स)** सम्मान **(द)** बच्चा

35. कौन सा शब्द संयुक्त व्यंजन नहीं है ?

(अ) विद्यालय **(ब)** क्षमा **(स)** यज्ञ **(द)** योग्य

उत्तरमाला

1. स	**2.** ब	**3.** अ	**4.** स	**5.** अ	**6.** स	**7.** स
8. स	**9.** स	**10.** स	**11.** स	**12.** अ	**13.** अ	**14.** द
15. स	**16.** ब	**17.** अ	**18.** ब	**19.** ब	**20.** अ	**21.** ब
22. ब	**23.** स	**24.** अ	**25.** अ	**26.** द	**27.** द	**28.** अ
29. ब	**30.** अ	**31.** द	**32.** अ	**33.** द	**34.** अ	**35.** द

06

संधि

1. **संधि शब्द का अर्थ दो से अधिक वर्णों का .... है।**
(अ) मेल (ब) संयोग (स) मिलाप (द) मिलन

2. **ध्वनि के मेल से होने वाले विकार को.................कहते हैं।**
(अ) वर्ण (ब) शब्द (स) संधि (द) वाक्य

3. **संधि..........प्रकार की होती है।**
(अ) तीन (ब) दो (स) चार (द) पाँच

4. **दो स्वरों के मेल से होने वाले विकार को...............कहते हैं।**
(अ) स्वर संधि (ब) व्यंजन संधि (स) संधि (द) संयोग

5. **स्वर संधि के...............भेद होते हैं।**
(अ) पाँच (ब) दो (स) तीन (द) चार

6. **यण संधि...............संधि का भेद है।**
(अ) स्वर (ब) व्यंजन (स) विसर्ग (द) संयोग

7. **स्वर और व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को........संधि कहते हैं।**
(अ) व्यंजन (ब) स्वर (स) विसर्ग (द) संयोग

8. **विसर्ग और स्वर/व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को..........संधि कहते हैं।**
(अ) स्वर (ब) व्यंजन (स) विसर्ग (द) संयोग

9. **यदि विसर्ग के पहले 'त्' या 'ध्' हो और बाद में 'क्' हो तो विसर्ग........रहता है।**
(अ) परिवर्तित (ब) संयोग (स) ज्यों का त्यों (द) समान

10. **विसर्ग से पहले 'इ' या 'उ' हो और बाद में 'क' 'ख' 'ट्' 'ठ' 'प' 'फ' में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का..........हो जाता है।**
(अ) श (ब) ष (स) र (द) ह

11. **विसर्ग के पहले 'अ' या 'आ' हो और बाद में 'क' हो तो विसर्ग क...... हो जाता है-**
(अ) स (ब) श (स) ष (द) य

12. **यदि 'अ' या 'आ' के आगे 'इ' या 'ई' आए तो दोनो के मिलने से .... बनता है।**
(**अ**) ऐ (**ब**) ए (**स**) उ (**द**) ऊ

13. **यदि 'अ' या 'आ' के आगे 'ऋ' आए तो दोनों के मिलने से....... होता है।**
(**अ**) अल (**ब**) अर् (**स**) आव (**द**) अव

14. **यदि इ/ई के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो इ/ई का .... हो जाता है।**
(**अ**) य (**ब**) व (**स**) श (**द**) ष

15. **यदि उ/ऊ के बाद कोई स्वर आए तो उ/ऊ का...... जो जाता है।**
(**अ**) व (**ब**) य (**स**) श (**द**) ष

16. **यदि ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो ऋ का...... जो जाता है।**
(**अ**) व (**ब**) य (**स**) र् (**द**) स

17. **विसर्ग के पश्चात् च्, छ् या श् आने पर विसर्ग का.... हो जाता है।**
(**अ**) स (**ब**) य (**स**) श (**द**) ष

18. **विसर्ग के बाद त् या स् आने पर विसर्ग का....... हो जाता है।**
(**अ**) श (**ब**) स (**स**) य (**द**) प

संधि विच्छेदों मे से सही विकल्प चुनिए :-

19. **यद्यपि**
(**अ**) यद्+अपि (**ब**) यद्+यपि
(**स**) यदि+अपि (**द**) यद्य+पि

20. **राजर्षि**
(**अ**) राज्य+ऋषि (**ब**) राज+र्षि (**स**) राजा+ऋषि (**द**) राज+ऋषि

21. **तच्छाया**
(**अ**) तच्छ+छाया (**ब**) तच्+छाया (**स**) तत्+छाया (**द**) तः+छाया

22. **पावन**
(**अ**) पाव+अन (**ब**) पा+अन (**स**) पौ+अन (**द**) पव+अन

23. **संहार-**
(**अ**) सनृ+हार (**ब**) सं+हार (**स**) सम+हार (**द**) सम्+हार

संधि विच्छेद के लिए उचित संधि शब्द चुनिए :-

24. **सु+अस्ति**
(**अ**) सुअस्ति (**ब**) स्वस्ति (**स**) सुआस्ति (**द**) सुस्ती

25. **विष्+नु**
(अ) विष्णु (ब) विष्नु (स) विषनु (द) विषणु

26. **मन:+रथ**
(अ) मनरथ (ब) मनोरथ (स) मनोरथा (द) मनरथ:

27. **अप्+ज**
(अ) अपज (ब) अब्ज (स) अबज (द) अप्ज

28. **कृष+न**
(अ) कृषन (ब) किशन (स) कृष्न (द) कृष्ण

29. **'सूक्ति' का संधि विच्छेद है -**
(अ) स+उक्ति (ब) सु+उक्ति
(स) सू+उक्ति (द) सू+ऊक्ति

30. **'चंद्रोदय' का संधि विच्छेद है -**
(अ) चन्द्रो+दय (ब) चंद्र+उदय
(स) चन्द्र:+उदय (द) चन्द+उदय

31. **'व्यर्थ' का संधि विच्छेद है -**
(अ) व्यय+अर्थ (ब) व+अर्थ
(स) वि+अर्थ (द) व्य+अर्थ

32. **'अन्तर्गत' का संधि विच्छेद है -**
(अ) अन्त:+गत (ब) अन्तर:+गत
(स) अन्त:+गर्त (द) अन्तर+गत

33. **'नारायण' का संधि विच्छेद है -**
(अ) नार+अयन (ब) नार+अयण
(स) नार+आयन (द) नर+आयण

34. **'स्वागतम' का संधि विच्छेद है -**
(अ) सु+आगतम् (ब) स्व+आगतम
(स) स+आगतम् (द) स्वा+आगतम्

35. **'नायक' का संधि विच्छेद क्या है?**
(अ) ना+यक (ब) ना+अक
(स) ने+अक (द) नै+अक

36. **'साष्टांग' का संधि विच्छेद क्या है?**

(अ) साम+टांग (ब) सा+अष्टांग
(स) सा:+अष्ट+अंग (द) स+अष्ट+अंग

37. **'निर्गुण' शब्द किस संधि का उदाहरण है ?**
(अ) स्वर संधि का (ब) व्यंजन का
(स) विसर्ग संधि का (द) इनमें से कोई नहीं

38. **'भानूदय' संधि उदाहरण है-**
(अ) दीर्घ संधि का (ब) गुण संधि का
(स) वृद्धि संधि का (द) यण संधि का

39. **'महर्षि' संधि उदाहरण है-**
(अ) गुण संधि का (ब) वृद्धि संधि का
(स) यण संधि का (द) अयादि संधि का

40. **'यद्यपि ' संधि उदाहरण है-**
(अ) दीर्घ संधि का (ब) गुण संधि का
(स) यण संधि का (द) अयादि संधि का

41. **'पावक' संधि उदाहरण है-**
(अ) गुण संधि का (ब) यण संधि का
(स) अयादि संधि का (द) दीर्घ संधि का

42. **'व्यंजन' ध्वनि के निकट स्वर या कंणन आने से व्यंजन में जो परिवर्तन होता है उसे कहते हैं...**
(अ) स्वर संधि (ब) व्यजन संधि
(स) गुण संधि (द)विसर्ग संधि

43. **'तल्लीन' का सही संधि विच्छेद है-**
(अ) तल+लीन (ब) तत्+लीन
(स) तल्+लीन (द) तत+लीन

44. **'व्यंजन' संधि का उदाहरण है-**
(अ) भावुक (ब) पवन (स) उन्नति (द) स्वल्प

45. **'व्यंजन' संधि का उदाहरण नहीं है-**
(अ) दिगम्बर (ब) जगन्नाथ (स) सन्मार्ग (द) पवन

46. **बेमेल जोड़ी छाँटिए-**
(अ) सम्मति-व्यंजन (ब) भवन-अयादि (स) इत्यादि-यण
(द) निश्चय-वृद्धि

47. विसर्ग के पश्चात स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो परिवर्तन आता है उसे कहते हैं-

(अ) विसर्ग संधि **(ब)** अयादि संधि

(स) व्यंजन संधि **(द)** गुण संधि

48. 'मनः+बल' में संधि है-

(अ) अयादि **(ब)** गुण **(स)** विसर्ग **(द)** व्यंजन

49. विसर्ग संधि का उदाहरण नहीं है-

(अ) मनोरथ **(ब)** अधोगति **(स)** संशोधन **(द)** तपोबल

50. विसर्ग संधि का उदाहरण है-

(अ) दुर्जन **(ब)** अनुच्छेद **(स)** संस्मरण **(द)** संवाद

51. 'निश्चिन्त' का सही संधि विच्छेद है-

(अ) निश+चिन्त **(ब)** निः+चिन्त

(स) निश्+चिन्त**(द)** निशि+चिन्त

52. गै+अक की संधि होगी-

(अ) गैयक **(ब)** गायक **(स)** गौक **(द)** गौअक

53. 'नीरोग' शब्द में संधि है-

(अ) स्वर **(ब)** व्यंजन **(स)** विसर्ग **(द)** कोई नहीं

54. स्वर संधि का उदाहरण नहीं है-

(अ) निष्ठुर **(ब)** अत्याचार **(स)** शयन **(द)** महोत्सव

55. 'राम+अवतार' में संधि है-

(अ) गुण **(ब)** दीर्घ **(स)** वृद्धि **(द)** यण

56. गुण संधि का उदाहरण है-

(अ) सूक्ति **(ब)** सदैव **(स)** महोदय **(द)** वार्तालाप

57. वृद्धि संधि का उदाहरण नहीं है-

(अ) तदैव **(ब)** परमौषध **(स)** एकैक **(द)** धर्मेन्द्र

58. यदि इ/ई के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो इ/ई का 'य' हो जाता है यह संधि है -

(अ) अयादि **(ब)** यण **(स)** गुण **(द)** वृद्धि

59. 'यण' संधि का उदाहरण है-

(अ) स्वागत **(ब)** गायक **(स)** विद्यालय **(द)** महेश्वर

60. अयादि संधि का उदाहरण है-

(अ) प्रत्येक **(ब)** अन्वय **(स)** हिमालय **(द)** नयन

61. 'अत्याचार' का सही संधि विच्छेद होगा-

(अ) अत्य+अचार **(ब)** अति+आचार

(स) अति+अचार **(द)** अत्य+चार

62. महा+उत्सव में संधि है-

(अ) गुण **(ब)** यण **(स)** वृद्धि **(द)** अयादि

उत्तरमाला

1. अ	**2.** स	**3.** अ	**4.** अ	**5.** अ	**6.** अ	**7.** अ
8. स	**9.** स	**10.** ब	**11.** अ	**12.** ब	**13.** ब	**14.** अ
15. अ	**16.** स	**17.** स	**18.** ब	**19.** स	**20.** द	**21.** स
22. स	**23.** द	**24.** ब	**25.** अ	**26.** ब	**27.** ब	**28.** द
29. ब	**30.** ब	**31.** स	**32.** अ	**33.** अ	**34.** अ	**35.** द
36. द	**37.** स	**38.** अ	**39.** अ	**40.** स	**41.** स	**42.** ब
43. ब	**44.** स	**45.** द	**46.** द	**47.अ**	**48.** स	**49.** स
50. अ	**51.** स	**52.** ब	**53.** स	**54.** अ	**55.** द	**56.** स
57. द	**58.** ब	**59.** अ	**60.** द	**61.** ब	**62.** अ	

07

शब्द विचार

1. **वर्णों से निर्मित स्वतन्त्र तथा सार्थक ध्वनि..........कहलाती है।**
(अ) वर्ण (ब) शब्द (स) विचार (द) वर्तनी
2. **वर्णों के सार्थक से बनने वाली सार्थक इकाई.....कहलाती है।**
(अ) विचार (ब) शब्द (स) मेल (द) वर्ण
3. **व्याकरण के नियमों में बँधे, वाक्य में प्रयुक्त शब्द....कहलाते हैं।**
(अ) व्याकरण (ब) वाक्य (स) शब्द (द) पद
4. **सार्थक शब्दों के वर्गीकरण के............आधार है।**
(अ) एक (ब) दो (स) तीन (द) पाँच
5. **रचना के आधार पर शब्दों के...........भेद हैं।**
(अ) रूढ़, यौगिक, योगरूढ़ (ब) वर्ण, वर्तनी, लिपि,
(स) रचना, वाक्य, पद (द) रचना, आधार, शब्द
6. **उत्पत्ति के आधार पर शब्द के............भेद हैं।**
(अ) एक (ब) दो (स) तीन (द) पाँच
7. **अर्थ के आधार पर शब्द के.........भेद है।**
(अ) पाँच (ब) तीन (स) छ: (द) दो
8. **संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया..........शब्दों के भेद हैं।**
(अ) अविकारी (ब) विकारी (स) तद्भव (द) तत्सम
9. **सामान्य तथा तकनीकी शब्द भेद..........के आधार पर हैं।**
(अ) प्रयोग (ब) तत्सम् (स) तद्भव (द) शब्द
10. **जिन शब्दों की उत्पत्ति ग्रामीण क्षेत्रों और अंचलों की बोलियाँ है उन्हें.........शब्द कहते हैं।**
(अ) शब्द (ब) फारसी (स) विदेशज (द) देशज
11. **दो भिन्न भाषाओं के शब्दों के मेल से बने शब्द..........कहलाते हैं।**
(अ) संयोग (ब) संयुक्त (स) संकर शब्द (द) देशी
12. **जो शब्द लम्बे समय से किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होने लगते हैं उन्हें.........कहते हैं।**
(अ) रूढ़ (ब) विचार (स) शब्द (द) अर्थ

13. एक से अधिक सार्थक शब्दों से मिलकर बनने वाले शब्दों को .... कहते हैं।
(**अ**) रूढ़ शब्द (**ब**) यौगिक शब्द (**स**) योगरूढ़ शब्द (**द**) शब्द

14. जिन यौगिक शब्दों के अर्थ किसी तीसरे अर्थ के लिए रूढ़ हो जाते हैं उन्हें......शब्द कहा जाता है।
(**अ**) रूढ़ (**ब**) यौगिक (**स**) योगरूढ़ (**द**) संयोग

17. समान अर्थ रखने वाले शब्दों को..........कहा जाता है।
(**अ**) समानार्थक (**ब**) पर्यायवाची (**स**) विलोम (**द**) श्रुतिसम शब्द

16. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द तद्भव नहीं है-
(**अ**) गाड़ी (**ब**) गर्दन (**स**) गृह (**द**) घर

17. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द 'देशज' है-
(**अ**) रोटी (**ब**) खेत (**स**) जीभ (**द**) गाँव

18. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द 'योगरूढ़' है-
(**अ**) पेड़ (**ब**) सूरज (**स**) चारपाई (**द**) जन्मदिन

19. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द 'यौगिक' नहीं है-
(**अ**) दामोदर (**ब**) राष्ट्रपिता (**स**) चिड़ियाघर (**द**) पुस्तक

20. निम्नलिखित में से कौन सा शब्द 'रूढ़' शब्द है-
(**अ**) पेड़ (**ब**) उषकाल (**स**) चारपाई (**द**) जन्मदिन

21. जिन शब्दों में लिंग-वचन से परिवर्तन नहीं आता है, उसे कहते हैं-
(**अ**) यौगिक (**ब**) योग रूढ़ (**स**) अविकारी (**द**) विकारी

<u>7(1) -तत्सम एवं तद्भव शब्द</u>

1. जो शब्द संस्कृत से ज्यों के त्यों हिन्दी में लिए गए हैं, वे कहलाते हैं-
(**अ**) तद्भव (**ब**) तत्सम (**स**) देशज (**द**) विदेशी

2. तत्सम का अर्थ है।
(**अ**) उसके समान (**ब**) उसके विपरीत
(**स**) उसके आधार पर (**द**) उसके मूल शब्द

3. तद्भव शब्द का अर्थ है।
(**अ**) उससे उत्पन्न (**ब**) उससे विपरित
(**स**) उससे सुनना (**द**) उससे कहना

4. 'प्रौद्योगिकी' शब्द है-
(**अ**) तद्भव (**ब**) तत्सम (**स**) देशज (**द**) विदेशी

5. तत्सम शब्द है-
(**अ**) घी (**ब**) मुद्रा (**स**) अटारी (**द**) गाँव

6. तत्सम शब्द नहीं है-
(**अ**) धृत (**ब**) चूर्ण (**स**) चंचु (**द**) कोढ़

7. 'कुआँ' शब्द का तत्सम रूप है-

(अ) काष्ठ (ब) कूप (स) काक (द) कुष्ठ

8. जो शब्द समय के साथ परिवर्तित होकर हिन्दी में आए हैं वे कहलाते हैं-

(अ) तत्सम (ब) तद्भव (स) देशज (द) विदेशी

9. 'घोड़ा' शब्द है-

(अ) तद्भव (ब) तत्सम (स) देशज (द) विदेशी

10. तद्भव शब्द है-

(अ) प्रहर (ब) पृष्ठ (स) कुमार (द) भीत

11. तद्भव शब्द नहीं है-

(अ) मोर (ब) बूँद (स) प्रस्तर (द) पत्थर

12. 'भ्रमर' शब्द का तद्भव रूप है-

(अ)भँवरा (ब) मक्षिका (स) भित्ति (द) वहम

13. बेमेल जोड़ी छाँटिए-

(अ) प्रिय - प्यारा (ब) वानर - बंदर

(स) गृह - घर (द) पानीय - प्यास

14. 'तत्सम' शब्द नहीं है-

(अ) स्थल (ब) सूत्र (स) सौभाग्य (द) सुर

15. 'क्षीर' का तत्सम रूप होगा-

(अ) खीर (ब) क्षेत्र (स) खेत (द) सुर

16. तद्भव शब्द नहीं है-

(अ) हाथी (ब) हाथ (स) फुर्ती (द) हास

17. बेमेल जोड़ी नहीं है-

(अ) स्नेह-देशज (ब) क्षेत्र-विदेशी

(स) सूरज-तद्भव(द) हृदय-तद्भव

<u>7 (2)-देशज, विदेशी एवं संकर शब्द</u>

1. ऐसे शब्द जो ग्राम्य क्षेत्र की बोलियों से लिए जाते हैं, वे शब्द हैं-

(अ) विदेशी (ब) देशज (स) तत्सम (द) तद्भव

2. ऐसे शब्द जो विदेशी भाषाओं से आकर हिन्दी में प्रचलित हो जाते हैं वे शब्द है-

(अ) विदेशी (ब) देशज (स) तत्सम् (द) तद्भव

3. दो भिन्न भाषाओं के शब्दों को मिलाकर बनाए गए शब्द है-

(अ) देशज (ब) शंकर (स) संकर (द) विदेशी

4. देशज शब्द है-

(अ) लोटा (ब) आलपीन (स) कैंची (द) नीलाम

5. **विदेशी शब्द नहीं है-**

(**अ**) कर्फ्यू (**ब**) दर्पण (**स**) बाल्टी (**द**) रेलयात्री

6. **विदेशी शब्द नहीं है-**

(**अ**) काजू (**ब**) कारतूस (**स**) पेट, (**द**) जमीन

7. **संकर शब्द नहीं है-**

(**अ**) मालगोदाम (**ब**) टिकटघर (**स**) मिनिस्टर (**द**) पार्टीबाजी

8. **देशज शब्द नहीं है-**

(**अ**) ठेठ (**ब**) पादरी (**स**) झाड़ू (**द**) झोला

9. **बेमेल शब्द छाँटिए-**

(**अ**) पूँजीपति (**ब**) किताबघर (**स**) बस-यात्री (**द**) थानेदार

10. **सही जोड़ी चुनिए-**

(**अ**) रेलयात्री-विदेशी (**ब**) कप्तान-देशज

(**स**) चीनी-संकर (**द**) टिकट-विदेशी

<u>7 (3)- एकार्थी शब्द</u>

1. **हाथ में पकड़ कर चलाने वाला हथियार कहलाता है-**

(**अ**) अस्त्र (**ब**) शस्त्र (**स**) तलवार (**द**) धनुष

2. **अपयश का अर्थ है-**

(**अ**) यश (**ब**) सुयश (**स**) बदनामी (**द**) घमंड

3. **निपुण का अर्थ छाँटिए-**

(**अ**) कुशल (**ब**) सकुशल (**स**) अकुशल (**द**) सक्षम

4. **कृति का अर्थ है-**

(**अ**) रचनाकार(**ब**) कलाकार (**स**) कृतिकार (**द**) रचना

5. **मंच पर अभिनय करने वाला पात्र कहलाता है-**

(**अ**) कलाकार (**ब**) अभिनेता (**स**) नायक (**द**) अभिनायक

6. **कानून के विरुद्ध किया गया कार्य कहलाता है-**

(**अ**) अपराध (**ब**) गैरकानूनी (**स**) चोरी (**द**) डकैती

7. **फेंककर मारने वाले हथियार नहीं है-**

(**अ**) अस्त्र (**ब**) शस्त्र (**स**) भाला (**द**) तीर

8. **आसक्ति का अर्थ है-**

(**अ**) प्रेम (**ब**) विरक्ति (**स**) गहरी चाह (**द**) घृणा

9. **दाम्पत्य प्रेम कहलाता है-**

(**अ**) प्यार (**ब**) प्रणय (**स**) जीवन साथी (**द**) चाह

10. **अर्चना का अर्थ है-**

(**अ**) पूजा (**ब**) आरती (**स**) भक्ति (**द**) बिना चने के

7 (4)- अनेकार्थी शब्द

1. जो शब्द भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थ देते हैं, वे .... शब्द कहलाते हैं।

(अ) एकार्थक (ब) अनेकार्थक (स) पर्यायवाची (द) विलोम

उचित पर्यायवाची को चिह्नित करें :-

2. एकलव्य धनुर्विद्या में बहुत..........था।

(अ) कौशल (ब) तुच्छ (स) गुणी (द) कुशल

3. ग्रामीण महिलाएँ अपनी कमर पर...........बाँधती है।

(अ) जंजीर (ब) कमरबंद (स) मेखला (द) कपड़ा

4. उसे अधिक से अधिक पाने की तीव्र..........थी

(अ) लोभ (ब) लालच (स) लालसा (द) आशा

5. इस संसार में.............और अचेतन दो तरह के जीव है।

(अ) अवचेतन (ब) चेतन (स) प्रयोगिक (द) गगन

6. सूर्योदय के समय आसमान का रंग...........होता है।

(अ) केसर (ब) सिंदुरी (स) अरूण (द) सोना

7. अरावली के चारों ओर छोटे-छोटे पर्वतों की.............है।

(अ) समूह (ब) अवली (स) शृंखला (द) रेखा

रेखांकित से संबंधित शब्द लिखिए-

8. देश के जवान लड़के ही सेना के जवान बनते हैं।

(अ) जोशीले (ब) युवा (स) सेना (द) सिपाही

9. रविवार को चीन ने पहला वार किया।

(अ) सप्ताह (ब) दिन (स) आक्रमण (द) युद्ध

10. मैं अर्थ कमाने में कोई बड़ा अर्थ नहीं मानता।

(अ) धरती (ब) जमीन (स) पैसा (द) मतलब

11. मेरे लाल को लाल रंग भाता है।

(अ) पति (ब) पुत्री (स) पुत्र (द) अरूण

12. बेमेल शब्द छाँटिए-

(अ) अंक (ब) संख्या (स) गोद (द) शरीर

13. 'अनंत' का अर्थ नहीं है-

(अ) आकाश (ब) शिव (स) विष्णु (द) ईश्वर

14. 'अंबर' शब्द का अर्थ नहीं है-

(अ) कपास (ब) आकाश (स) कपड़ा (द) रंग

15. 'कुल' का अर्थ है-

(अ) परिवार (ब) जमा (स) शेष (द) पक्षी

16. **'कनक' का अर्थ नहीं है-**

(अ) कंगन (ब) सोना (स) धतूरा (द) गेहूँ

17. **बेमेल जोड़ी है-**

(अ) खग-पक्षी (ब) गति-मोक्ष

(स) कक्षा-परिधि (द) कला-कमरा

18. **सही जोड़ी छाँटिए-**

(अ) चपला-बिजली (ब) जड़-वस्त्र

(स) जीवन-युवक (द) घन-घड़ा

19. **'हरि' शब्द का अर्थ नहीं है-**

(अ) विष्णु (ब) सूर्य (स) सर्प (द) शिव

20. **'भव' का अर्थ है-**

(अ) संसार (ब) चमक (स) मान (द) स्वभाव

21. **बेमेल शब्द अलग कीजिए-**

(अ) दूध (ब) पद (स) पय (द) अमृत

7 (5)-युग्म एवं पुनरुक्त शब्द

1. **जब एक ही शब्द की पुनरावृत्ति हो तो वे कहलाते हैं-**

(अ) पुनरुक्त शब्द (ब) युग्म शब्द

(स) विपरीत शब्द (द) पर्यायवाची शब्द

2. **दो पर्याय, दो विपरीतार्थक या दो सार्थक-निरर्थक शब्दों का मेल कहलाता है।**

(अ) पुनरुक्त (ब) शब्द युग्म (स) समास (द) संधि

3. **आना-जाना उदाहरण है-**

(अ) विपरीतार्थक युग्म (ब) पर्याय युग्म

(स) सार्थक-निरर्थक युग्म (द) अनेकार्थी

4. **पानी-वानी उदाहरण है-**

(अ) विपरीतार्थक युग्म (ब) पर्याय युग्म

(स) सार्थक-निरर्थक युग्म (द) अनेकार्थी

5. **निम्नलिखित शब्दों में से पर्याय युग्म है-**

(अ) जीवन-मरण (ब) आमने-सामने

(स) मामा-मामी (द) बड़े-बूढ़े

6. **ऊँचे-ऊँचे शब्द उदाहरण है-**

(अ) पुनरुक्त शब्द (ब) पर्याय शब्द

(स) विशेषण शब्द (द) सार्थक निरर्थक

7. **वह हँसी-हँसी में टाल गया का उचित अर्थ है-**

(अ) वह हँसने लगा (ब) वह हँसता ही रहा

(स) वह हसीन है **(द)** वह हँसकर टाल गया

8. **अता-पता शब्द उदाहरण है-**

(अ) निरर्थक सार्थक युग्म **(ब)** विपरीतार्थक युग्म

(स) अनेकार्थी **(द)** पर्याय युग्म

9 **वह वन-वन भटका का उचित अर्थ है-**

(अ) वह वन में भटक गया **(ब)** वह में मार्ग भूल गया

(स) वह प्रत्येक वन भटका **(द)** वह प्रत्येक वन घूमा

10. **पर्याय शब्द युग्म छाँटिए-**

(अ) जान-पहचान **(ब)** उठना-बैठना

(स) आमने-सामने **(द)** आना-जाना

7 (6)-पर्यायवाची

1. **'सवेरा' का पर्यायवाची नहीं है-**

(अ) अरूणोदय **(ब)** उषा **(स)** भोर **(द)** निखिल

2. **'सौरभ' का अर्थ है-**

(अ) सुरभि **(ब)** सूर्य **(स)** सौरऊर्जा **(द)** अवधूत

3. **बेमेल शब्द छाँटिए-**

(अ) चक्षु **(ब)** लोचन **(स)** तुरंग **(द)** नेत्र

4. **'इच्छा'का पर्यायवाची है-**

(अ) हय **(ब)** मनोरथ **(स)** हर्ष **(द)** पुरंदर

5. **'जल का पर्यायवाची नहीं है-**

(अ) तोय **(ब)** वारी **(स)** नीर **(द)** वारि

6. **'मित्र' का समानार्थी छाँटिए-**

(अ) मीत **(ब)** शिखी **(स)** केकी **(द)** यथार्थ

7. **बेमेल शब्द है-**

(अ) कष्ट **(ब)** पीड़ा **(स)** क्लेश **(द)** वंदना

8. **'धन' का पर्यायवाची नहीं है-**

(अ) श्री **(ब)** चाप **(स)** द्रव्य **(द)** अर्थ

उचित पर्यायवाची शब्द छाँटिए -

9. **अरण्य**

(अ) अश्व **(ब)** जंगल **(स)** वन **(द)** आगमन

10. **सागर**

(अ) सरिता **(ब)** सरोवर **(स)** समुद्र **(द)** नहर

11. **प्रसन्नता**

(अ) सुख **(ब)** विलास **(स)** आनन्द **(द)** उत्साह

12. **आग**

(अ) अनिल **(ब)** अंजलि **(स)** अनुप **(द)** अश्व

13. **पवित्र**

(अ) स्वच्छ **(ब)** पावन **(स)** धवल **(द)** निर्मल

14. **सही पर्याय वाली जोड़ी है-**

(अ) मनुष्य-मधुप **(ब)** बुद्धि-मनीषा

(स) बर्फ-संलिल **(द)** मछली-कैवल्य

16. **सही पर्याय वाली जोड़ी नहीं है-**

(अ) युद्ध-समीर **(ब)** राजा-महीप

(स) बालक-शावक **(द)** प्रकाश-द्युति

17. **नीचे पर्यायवाची शब्दों की श्रृंखला दी गई है इनमें से एक शब्द श्रृंखला से संबद्ध नहीं है। उसे छाँटिए-**

	अ	**ब**	**स**	**द**
1.	सरस्वती	दुर्गा	भारती	शारदा
2.	नयन	लोचन	नमन	विलोचन
3.	अतिथि	आगन्तुक	महानुभाव	मेहमान
4.	नीरद	अम्बुज	नीरज	कमल
5.	अँधकार	अँधेरा	रजनी	तम

7 (7)-समरूप भिन्नार्थक शब्द

1. **बेमेल जोड़ी अलग कीजिए-**

(अ) अति-बहुत **(ब)** अनु-पीछे

(स) अचर-जड़ **(द)** अचल-पृथ्वी

2. **'जो कहा न जा सके' के लिए शब्द है-**

(अ) अथक **(ब)** अकथ **(स)** अनंत **(द)** अबल

3. **'जिसे पार न किया जा सके' के लिए शब्द है-**

(अ) अपार **(ब)** अपर **(स)** कठिन **(द)** आसान

4. **'अलि' का अर्थ है-**

(अ) काला **(ब)** भौंरा **(स)** काली **(द)** सुंदर

5. **अविलम्ब का सही अर्थ है-**

(अ) शीघ्र **(ब)** सहारा **(स)** बहुत लम्बा **(द)** दुबला

6. **समश्रुति भिन्नार्थक शब्द नहीं है-**

(अ) कनक **(ब)** उदार **(स)** उद्धार **(द)** उधार

7. **अनल का अर्थ है-**

(अ) वायु **(ब)** आग **(स)** बिना नल का **(द)** नल

8. **'घोड़ा' शब्द के लिए उपयुक्त शब्द है-**

(अ) तुरंग **(ब)** तरंग **(स)** रंग **(द)** शावक

9. **'दीन' का अर्थ है-**

(अ) दिवस **(ब)** गरीब **(स)** ईश्वर **(द)** दीनानाथ

10. **'नमस्कार' यानी-**

(अ) प्रमाण **(ब)** परिमाण **(स)** परिणाम **(द)** प्रणाम

7 (8)-विलोम शब्द

1. **'उपकार' का विलोम है-**

(अ) प्रत्युपकार **(ब)** अपकार **(स)** अनुपकार **(द)** अनुपयोग

2. **'अमृत' का विलोम है-**

(अ) विष **(ब)** पेय **(स)** जहर **(द)** विषम

3. **बेमेल जोड़ी छाँटिए-**

(अ) उत्थान-पतन **(ब)** घृणा-प्रेम

(स) चर-अचर **(द)** गुण-लाभ

4. **विलोम की सही जोड़ी है-**

(अ) खरी-खोटी **(ब)** कृश-स्थूल

(स) इष्ट-इच्छा **(द)** उत्थान-अस्त

5. **'जड़' का विलोम छाँटिए-**

(अ) चर **(ब)** वृक्ष **(स)** चेतन **(द)** अचर

6. **'अचल' का विलोम है-**

(अ) पर्वत **(ब)** चल **(स)** स्थूल **(द)** बढ़ना

7. **'अपव्यय' का उचित विलोम होगा-**

(अ) व्यय **(ब)** आय **(स)** वेतन **(द)** हानि

8. **कृतज्ञ**

(अ) कृतिका **(ब)** कृनवर्ग **(स)** कृनकृत **(द)** कृतध्न

9. **स्वाभाविक**

(अ) स्वभाव **(ब)** असंभव **(स)** रचना **(द)** कृत्रिम

10. **जटिल**

(अ) सरल **(ब)** कड़ा **(स)** ठोस **(द)** कठोर

11. **नित्य**

(अ) हमेशा **(ब)** रोज **(स)** अनित्य **(द)** प्रतिदिन

12. **गृहस्थ**

(अ) गुप्त **(ब)** गुनाह **(स)** घर **(द)** वैरागी

13. **माता**

(अ) माँ (ब) जननी (स) तात (द) पिता

14. **अनुज**

(अ) मनुज (ब) दनुज (स) अग्रजा (द) अग्रज

15. **खल**

(अ) सज्जन (ब) दुर्जन (स) उग्र (द) दुश्मन

16. **निर्दोष**

(अ) दोषी (ब) दोष (स) अदोष (द) पापी

17. **नूतन**

(अ) पुरातन (ब) रूढ़ (स) अनूतन (द) नवीन

(स) पय (द) विजय

18. **'विरक्ति' का विलोम शब्द है-**

(अ) अनुरक्ति (ब) भक्ति (स) प्रेम (द) अनुराग

19. **'इहलोक' का विलोम है-**

(अ) जसलोक (ब) परलोक (स) ब्रह्मलोक (द) स्वर्गलोक

20. **'अतिवृष्टि' का विलोम है-**

(अ) अनावृष्टि (ब) सृष्टि (स) बाढ़ (द) सूखा

7 (9)-अनेक शब्दों के लिए एक शब्द/वाक्यांश

निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए उपयुक्त शब्द पर ( ) लगाइए:-

1. **साथ चलने वाला**

(अ) सहकर्मी (ब) सहचर (स) नभचर (द) जलचर

2. **एकान्त में रहने वाला**

(अ) एकान्तवासी (ब) ऐकांतिक (स) अकेला (द) एकनिष्ठ

3. **दोपहर के बाद का समय**

(अ) पूर्वाह्न (ब) अपराह्न (स) अद्वितीय (द) संध्या

4. **जिसकी आयु छोटी हो**

(अ) दीर्घायु (ब) शाश्वत (स) अल्पायु (द) अपराजेय

5. **जो कठिनाई से जीता जा सके**

(अ) अपराजेय (ब) कठिन (स) दुर्जन (द) दुर्जेय

6. **ऐतिहासिक**

(अ) इतिहास से संबंधित (ब) राजनीति से संबंधित

(स) समाज से संबंधित (द) कोई नहीं।

7. **नवजात**

(अ) जो ताजा-ताजा जन्म हो (ब) जो नया जन्मा हो

(स) जो कम समय से जन्मा हो (द) जो देर से जन्मा हो

8. **परीक्षार्थी**

(अ) परीक्षा देने वाला **(ब)** जिसने परीक्षा दी हो

(स) परीक्षा न देने वाला **(द)** जो परिणाम जानता हो

9. **दंपति**

(अ) भाई और बहन **(ब)** पति और पत्नी

(स) श्रीमान् और श्रीमती **(द)** माता और पिता

10. **जिजीविषा**

(अ) जीने का तीव्र इच्छा **(ब)** जीने की इच्छा

(स) जीने से अरूचि **(द)** जीवन से निराश

11. **जिसका कोई स्वामी न हो-के लिए एक शब्द है-**

(अ) सेवक **(ब)** स्वामी

(स) बिना स्वामी का **(द)** अनाथ

12. **जो क्षमा करने योग्य न हो, उसे कहते हैं-**

(अ) अक्षम्य **(ब)** आडम्बर **(स)** अवैध **(द)** अज्ञेय

13. **'अतिशयोक्ति' का अर्थ है-**

(अ) बढ़ा चढ़ा के कही गई उक्ति **(ब)** थोड़ी सी उक्ति

(स) बिना किसी नियम के **(द)** जिसकी बात न हो

14. **जिसका-दमन न हो सके, उसे कहते हैं-**

(अ) अनन्त **(ब)** अदम्य **(स)** अनादि **(द)** अनियमित

15. **बिना थके के लिए एक शब्द है-**

(अ) अथक **(ब)** अटल **(स)** कुमार्गी **(द)** उदार

16. **जिस पर अभियोग लगाया गया हो, उसे कहते हैं-**

(अ) असंदिग्ध **(ब)** अभियुक्त **(स)** अशक्त **(द)** अवैध

17. **'जो कड़वा बोलता है' के लिए एक शब्द है-**

(अ) कटुभाषी **(ब)** मृदुभाषी **(स)** कृतघ्न **(द)** कृतज्ञ

18. **जिज्ञासु का अर्थ है-**

(अ) जिसमें जानने की इच्छा न हो

(ब) जीने की प्रबल इच्छावाला

(स)जिसमें जानने की इच्छा हो

(द) तेज बुद्धि वाला

19. **बेमेल जोड़ी छाँटिए-**

(अ) आकाश में घूमने वाल - नभचर

(ब) जल में रहने वाला - जलचर

(स) पृथ्वी में रहने वाला - थलचर

(द) जल एवं पृथ्वी में रहने वाला - खगचर

20. **'जिसका वर्णन न किया जा सके' के लिए एक शब्द है-**

(अ) वर्णनातीत (ब) अवर्णनीय

(स) अविश्वसनीय (द) वर्णनीय

7 (10)-उपसर्ग

1. **वे शब्दांश जो किसी शब्द के पूर्व लगकर उस शब्द का अर्थ बदल देते हैं, कहलाते हैं-**

(अ) प्रत्यय (ब) उपसर्ग (स) सर्वनाम (द) संज्ञा

2. **'अनु' उपसर्ग से बनने वाला सही शब्द है-**

(अ) अनुपस्थित (ब) अनुचित (स) अनुपयोग (द) अनुकूल

3. **'प्रति' उपसर्ग से बना शब्द नहीं है-**

(अ) प्रत्यक्ष (ब) प्रताप (स) प्रतिध्वनि (द) प्रतिक्षण

4. **'पराक्रम' शब्द में उपसर्ग है-**

(अ) पर (ब) परा (स) परि (द) प

5. **'निष्काम' शब्द में उपसर्ग है-**

(अ) निस् (ब) निष् (स) निः (द) निश्

6. **उपसर्ग युक्त शब्द नहीं है-**

(अ) आमरण (ब) उद्घाटन (स) अभियान (द) प्रसारित

7. **एक से अधिक उपसर्गों के प्रयोग वाला शब्द है-**

(अ) स्वावलम्बन (ब) भरसक (स) निडर (द) प्रतिध्वनि

8. **'स्वावलम्बन' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है-**

(अ) स्वाव (ब) स्वा (स) स्व (द) लम्बन

9. **उर्दू उपसर्ग युक्त शब्द है-**

(अ) लाचार (ब) दुर्बल (स) कुपूत (द) सहपाठी

10. **'अनेक' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है-**

(अ) अन् (ब) अन (स) अने (द) अ

निम्न शब्दों के लिए उचित उपसर्ग चुनिए -

11. **स्वागत**

(अ) सु (ब) स्वा (स) स्व (द) गत

12. **सरपंच**

(अ) स (ब) सर (स) पंच (द) सरप

13. **निस्तेज**

(अ) निस (ब) निस् (स) नि (द) तेज

14. नगण्य

(अ) नग **(ब)** न **(स)** गण्य **(द)** य

15. उपदेश

(अ) उपदे **(ब)** उपए **(स)** उप **(द)** देश

16. मान

(अ) हम **(ब)** परि **(स)** सम् **(द)** आ

17. अभिमान

(अ) अन **(ब)** नि **(स)** परा **(द)** अभि

18. योग

(अ) स **(ब)** परि **(स)** सु **(द)** दु

19. वासन

(अ) निर **(ब)** नि: **(स)** निर्वा **(द)** निर्वास

20. अध्यक्ष

(अ) अप **(ब)** अधि **(स)** अव **(द)** अ

21. 'अन्' उपसर्ग का प्रयोग किया जाता है -

(अ) स्वरों के साथ **(ब)** व्यंजन के साथ

(स) विसर्ग के साथ **(द)** अयोगवाह के साथ

22. 'अ' उपसर्ग का प्रयोग किया जाता है -

(अ) स्पर्श व्यंजन के साथ **(ब)** अन्तस्थ व्यंजन के साथ

(स) उष्म व्यंजन के साथ **(द)** इन तीनों के साथ

7 (11)-प्रत्यय

1. जो शब्दांश शब्दों के अंत में लगाकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं वे कहलाते हैं-

(अ) उपसर्ग **(ब)** प्रत्यय **(स)** संज्ञा **(द)** विशेषण

2. प्रत्यय के प्रकार है-

(अ) ४ **(ब)** ३ **(स)** २ **(द)** ५

3. जो प्रत्यय क्रिया के मूल धातु रूप के साथ लगाकर संज्ञा एवं विशेषण शब्द बनाते हैं वे कहलाते हैं-

(अ) कृत प्रत्यय **(ब)** तद्धित प्रत्यय **(स)** सर्वनाम **(द)** विशेषण

4. जो प्रत्यय संज्ञा या विशेषण शब्दों के साथ लगकर नए शब्द बनाते हैं वे कहलाते हैं-

(अ) कृत प्रत्यय **(ब)** तद्धित प्रत्यय **(स)** विशेषण **(द)** संज्ञा

5. कृत् प्रत्यय के योग से बनने वाले शब्दों को............कहते हैं।

(अ) कृत् **(ब)** तद्धित **(स)** प्रत्यय **(द)** कृदंत

6. **कृदन्त प्रत्यय..........प्रकार के होते हैं।**
(अ) दो **(ब)** एक **(स)** पाँच **(द)** चार
7. **'सनसनाहट' में प्रयुक्त प्रत्यय है-**
(अ) हट **(ब)** आहट **(स)** सनाहट **(द)** ट
8. **'स्थ' प्रत्यय युक्त शब्द है-**
(अ) दूरस्थ **(ब)** स्थल **(स)** स्थान **(द)** स्थिति
9. **आलू प्रत्यय युक्त शब्द नहीं है-**
(अ) उबालूँ **(ब)** झगड़ालू **(स)** शंकालु **(द)** दयालु
10. **'वाई' प्रत्यय से बना सही शब्द है-**
(अ) हवाई, **(ब)** सवाई **(स)** सौदाई **(द)** भरवाई
11. **'पठनीय' शब्द में लगा प्रत्यय है-**
(अ) पठन **(ब)** अनीय **(स)** नीय **(द)** ईय
12. **चिकनाहट में लगा प्रत्यय है-**
(अ) हट **(ब)** ट **(स)** नाहट **(द)** आहट

निम्नलिखित शब्दों में कौन सा प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है-

13. **प्यास**
(अ) स **(ब)** यास **(स)** आस **(द)** अस
14. **पत्रकार**
(अ) आर **(ब)** कर **(स)** कार **(द)** र
15. **जिंदा**
(अ) जि **(ब)** इदा **(स)** इंदा **(द)** दा
16. **आदरणीय**
(अ) नीय **(ब)** णीय **(स)** आ **(द)** दर
17. **लेखक**
(अ) ले **(ब)** ख **(स)** क **(द)** लेख

7 (12)समास

1. **दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनने वाला नया शब्द कहलाता है-**
(अ) संज्ञा **(ब)** संधि **(स)** समास **(द)** प्रत्यय
2. **समास के मुख्यतः प्रकार है-**
(अ) ४ **(ब)** ६ **(स)** ८ **(द)** ५
3. **'दही बड़ा' का विग्रह है-**
(अ) दही का बड़ा **(ब)** दही में डूबा हुआ बड़ा
(स) दही वाला बड़ा **(द)** दही के लिए बड़ा

4. **'रोग से मुक्त' विग्रह का समस्त पद है-**

(अ)रोग की मुक्ति **(ब)**रोगमुक्त **(स)**रोगीमुक्त **(द)**रोगी की मुक्ति

5. **'व्यवहार कुशल' में समास है-**

(अ) बहुब्रीहि **(ब)** तत्पुरुष **(स)** अव्यवीभाव**(द)** द्वंद्व

6. **जहाँ उत्तर पद प्रधान और पूर्व पद गौण हो, उसे कहते हैं-**

(अ) तत्पुरुष समास **(ब)** बहुबीहि समास

(स) अव्यवीभाव समास **(द)** द्वंद्व समास

7. **जहाँ पहला पद और दूसरा पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं वहाँ समास होता है-**

(अ) द्वंद्व **(ब)** बहुब्रीहि **(स)** अव्यवी भाव **(द)** तत्पुरुष

8. **'एकदंत' में समास है-**

(अ) बहुब्रीहि **(ब)** कर्मधारय **(स)** द्विगु **(द)** द्वंद्व

9. **'त्रिवेणी' का विग्रह है-**

(अ) तीन वेणी **(ब)** तीन नदियों का संगम स्थल

(स) तीन वर्ण **(द)** तीन वीर

10. **जिस समस्त पद में दोनों पद प्रधान हों, वहाँ समास होता है-**

(अ) द्वंद्व **(ब)** द्विगु **(स)** तत्पुरुष **(द)** बहुब्रीहि

11. **'आटा दाल' का विग्रह है-**

(अ) आटे के लिए दाल **(ब)** आटा की दाल

(स) आटा और दाल **(द)** आटे में दाल

12. **'चतुर्मुख' .... समास का उदाहरण है-**

(अ) तत्पुरुष **(ब)** द्वंद्व **(स)** द्विगु **(द)** बहुब्रीहि

13. **जिस पद में पहला पद अव्यय हो वहाँ समास होता है-**

(अ) अव्यवीभाव**(ब)** बहुब्रीजि **(स)** कर्मधारय **(द)** द्वंद

14. **'हर घड़ी' का विग्रह है-**

(अ) हरी घड़ी **(ब)** हरी है जो घड़ी

(स) घड़ी-घड़ी **(द)** प्रत्येक घड़ी

15. **'संदेह रहित' का समस्त पद है-**

(अ) निस्संदेह **(ब)** संदेह से रहित

(स) संदेह के साथ **(द)** संदेह वाला

16. **'प्रत्यक्ष' का विग्रह है-**

(अ) आँखों में **(ब)** आँखों से

(स) आँखों के सामने **(द)** आँखों में यक्ष

17. **दिनों-दिन निम्न समास का उदाहरण है-**
(अ) तत्पुरुष (ब) द्वंद्व (स) द्विगु (द) बहुव्रीहि
18. **घी-शक्कर का विग्रह है-**
(अ) घी और शक्कर (ब) घी में शक्कर
(स) घी के साथ शक्कर (द) घी से शक्कर
19. **'अनादि' का सही विग्रह है-**
(अ) जिसका आदि नहीं हो (ब) नहीं आदि
(स) न आदि (द) जो आदि नहीं
20. **'सप्ताह' .... समास का उदाहरण है-**
(अ) द्विगु (ब) द्वंद्व (स) बहुव्रीहि (द) तत्पुरुष
21. **शब्द समूहों को संक्षिप्त करने की प्रक्रिया को कहते हैं।**
(अ) संज्ञा (ब) सर्वनाम (स) संधि (द) समास
22. **समास में प्रक्रियाएँ होती है।**
(अ) दो (ब) तीन (स) एक (द) चार
23. **समास प्रक्रिया में बीच की विभक्तियों का क्या होता है?**
(अ) लोप (ब) मिलन (स) पर्याय (द) विलोम
24. **जिस समास में पहला पद संख्यावाचक हो, उसे...समास कहते हैं।**
(अ) द्विगु (ब) अव्ययी (स) अव्यय (द) द्वन्द
25. **.......समास में उत्तर पद प्रधान होता है तथा पूर्वपद गौण होता है।**
(अ) अव्ययी (ब) द्वंद्व (स) तत्पुरुष (द) बहुव्रीहि
26. **........समास में विग्रह करने पर योजक शब्दों का प्रयोग होता है।**
(अ) कर्मधारय (ब) अव्ययी (स) द्वंद्व (द) द्विगु
27. **...........समास में दोनों में से कोई भी पद प्रधान नहीं होता, बल्कि दोनों पद मिलकर तीसरे अर्थ को स्पष्ट करते हैं।**
(अ) कर्मधार (ब) द्विगु (स) द्वंद्व (द) बहुव्रीहि
28. **निम्नलिखित समासपदों का सही विग्रह एवं भेदवाला विकल्प चुनिए -**
(i) कमलनयन
(अ) कमल है जिसका नयन-बहुव्रीह (ब)कमल और नयन-द्वन्द्व
(स) कमल के समान नयन-कर्मधारय (द)कमल रूपी नयन-कर्मधारय
29. **(ii) जन्मांध**
(अ) जन्म से अंधा-तत्पुरुष (ब)जन्म का अंधा-तत्पुरुष
(स) जन्म के लिए अन्धा-तत्पुरुष (द) इनमें से कोई नहीं
30. **(iiii) हरी मिर्च**
(अ) हरी मिर्च-कर्मधारय (ब) हरी है जो मिर्च-कर्मधारय (स) हरी है जिसकी मिर्च-कर्मधारय (द) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला

7- शब्द विचार

1. ब **2.** ब **3.** द **4.** द **5.** अ **6.** द **7.** स **8.** अ **9.** अ
10. द **11.** स **12.** अ **13.** ब **14.** स **15.** अ **16.** स **17.** स **18.** स
19. द **20.** अ **21.** स

7(1)- तत्सम एवं तद्भव शब्द

1. ब **2.** द **3.** अ **4.**द **5.** ब **6.** द **7.** ब **8.** ब **9.** द
10. द **11.** स **12.** अ **13.** द **14.** द **15.** अ **16.** द **17.** द

7(2)- देशज, विदेशी एवं संकर शब्द

1. ब **2.** अ **3.** स **4.** अ **5.** ब **6.** स **7.** स **8.** ब **9.** स
10. द

7(3)- एकार्थी

1. ब **2.** स **3.** अ **4.** द **5.** स **6.** ब **7.** ब **8.** स **9.** स
10. अ

7(4)- अनेकार्थी

1. ब **2.** द **3.** ब **4.** स **5.** ब **6.** ब **7.** स **8.** ब **9.** स
10. स **11.** स **12.** द **13.** ब **14.** अ **15.** अ **16.** अ **17.** द **18.** अ
19. द **20.** अ **21.** ब

7(5)- युग्म एवं पुनुरुक्त

1. ब **2.** ब **3.** अ **4.** स **5.** द **6.** अ **7.** द **8.** अ **9.** अ
10. अ

7(6)- पर्यायवाची

1. द **2.** अ **3.** स **4.** ब **5.** ब **6.** अ **7.** द **8.** ब **9.** स
10. स **11.** स **12.** अ **13.** ब **14.** स **15.** द **16.** स **17.** (1.-ब 2.-स 3.-स 4.-अ 5.-स)

7(7)- समश्रुत भिन्नार्थक शब्द

1. द 2. ब 3. अ 4. ब 5. अ 6. अ 7. ब 8. अ 9. ब
10. द

7(8)- विलोम शब्द

1. ब 2. अ 3. द 4. अ 5. स 6. ब 7. अ 8. द 9. द
10. अ 11. स 12. द 13. द 14. द 15. अ 16. अ 17. अ 18. अ
19. ब 20. अ

7(9)-अनेक शब्दों के लिए एक शब्द/वाक्यांश

1. ब 2. अ 3. ब 4. स 5. द 6. अ 7. अ 8. अ
9. ब 10. अ 11. द 12. अ 13. अ 14. ब 15. अ 16. ब 17. अ
18. स 19. द 20. ब

7(10)- उपसर्ग

1. ब 2. द 3. ब 4. ब 5. स 6. द 7. अ 8. स 9. अ
10. अ 11. अ 12. ब 13. स 14. ब 15. स 16. स 17. द 18. अ
19. ब 20. ब 21. अ 22. द

7(11)- प्रत्यय

1. ब 2. स 3. अ 4. ब 5. द 6. स 7. ब 8. अ 9. अ
10. द 11. ब 12. द 13. स 14. स 15. द 16. अ 17. स

7(12)-समास

1. स 2. ब 3. ब 4. ब 5. ब 6. अ 7. ब 8. अ 9. ब
10. अ 11. स 12. द 13. अ 14. द 15. अ 16. स 17. ब 18. अ
19. अ 20. अ 21. द 22. अ 23. अ 24. अ 25. ब 26. स 27. द
28. स 29. अ 30. स

08

संज्ञा

1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को कहते हैं?

(अ) संज्ञा **(ब)** सर्वनाम **(स)** स्थान **(द)** भाववाचक संज्ञा

2. संज्ञा के तीन भेद कौन से है?

(अ) व्यक्ति, जाति व भाववाचक संज्ञा

(ब) संज्ञा सर्वनाम, विशेषण

(स) क्रिया, अव्यय व भाववाचक संज्ञा

(द) जाति, क्रम व भाववाचक संज्ञा

3. जिस संज्ञा पद से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु के नाम का बोध हो, उसे कौन सी संज्ञा कहते हैं?

(अ) पुरुषवाचक संज्ञा **(ब)** व्यक्तिवाचक संज्ञा

(स) व्यक्ति संज्ञा **(द)** भाववाचक

4. जिस संज्ञा पद से किसी प्राणी, स्थान या वस्तु की सम्पूर्ण जाति का बोध होना है उसे.........संज्ञा कहते हैं।

(अ) व्यक्ति वाचक **(ब)** जाति वाचक

(स) भाववाचक **(द)** द्रव्यवाचक

5. किसी पदार्थ या द्रव्य का बोध कराने वाले शब्दों को............संज्ञा कहते हैं।

(अ) समूहवाचक **(ब)** व्यक्तिवाचक

(स) द्रव्यवाचक **(द)** जातिवाचक

6. किसी गुण दशा स्वभाव कार्य या भाव का बोध कराने वाले शब्द कहलाते हैं-

(अ) व्यक्ति वाचक संज्ञा **(ब)** भाव वाचक संज्ञा

(स) जाति वाचक संज्ञा **(द)** द्रव्य वाचक संज्ञा

7. विभीषणों से बचो वाक्य में रेखांकित शब्द में संज्ञा है-

(अ) भाव वाचक **(ब)** जाति वाचक

(स) व्यक्ति वाचक **(द)** स्थान वाचक

8. 'शास्त्री जी' भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री थे वाक्य में रेखांकित शब्द में संज्ञा है-

(अ) भाव वाचक **(ब)** जाति वाचक

(स) व्यक्ति वाचक **(द)** स्थान वाचक

9. 'सीना' शब्द की भाव वाचक संज्ञा, होगी-

(अ) सिलना (ब) सिलाई (स) सीना (द) सिलवाया

10. सूरज की लालिमा देखकर मैं दंग रह गई-वाक्य में रेखांकित शब्द संज्ञा है-

(अ) भाव वाचक (ब) स्थान वाचक

(स) व्यक्ति वाचक (द) जाति वाचक

11. परिश्रमी व्यक्ति को..............त्यागना पड़ता है - खाली स्थान में सही भाव वाचक संज्ञा शब्द होगा-

(अ) आलसपन (ब) आलसता (स) आलसी (द) आलस्य

12. जाति वाचक संज्ञा छाँटिए-

(अ) ताजमहल (ब) माँ (स) वात्सल्य (द) गंगा

13. व्यक्ति वाचक संज्ञा शब्द है-

(अ) राजा (ब) चाचा (स) गाँधी (द) हँसी

14. भाव वाचक संज्ञा शब्द नहीं है-

(अ) निकटता (ब) चुनाव (स) झुकाव (द) प्रतापी

15. 'मुस्कराना' शब्द की भाव वाचक संज्ञा है-

(अ) मुस्काना (ब) मुस्कखाना (स) मुस्कराहट (द) मुस्कान

16. सज्जन व्यक्ति की सज्जनता पूजनीय है-वाक्य में भाव वाचक संज्ञा है।

(अ) सज्जन (ब) सज्जनता (स) व्यक्ति (द) पूजनीय

17. पशु शब्द में संज्ञा है-

(अ) व्यक्ति वाचक (ब) जाति वाचक

(स) स्थान वाचक (द) भाव वाचक

18. द्रव्य वाचक संज्ञा शब्द है-

(अ) ऊँचाई (ब) फूल (स) सैनिक (द) पीतल

19. व्यक्ति वाचक संज्ञा शब्द नहीं है-

(अ) पंडित नेहरु (ब) महात्मा गाँधी (स) गंगा नदी (द) पर्वत

20. समूह वाचक संज्ञा शब्द नहीं है-

(अ) जुलूस, (ब) सेना (स) बच्चे (द) फूल

21. जातिवाचक संज्ञा शब्द है-

(अ) बचपन (ब) सुंदरता (स) बेटा (द) ताजमहल

22. निम्न में से कौन सा शब्द जातिवाचक संज्ञा है।

(अ) शहर (ब) आगर (स) कामायनी (द) नीलिमा

23. महात्मा गाँधी को राष्ट्रपिता कहा जाता है? रेखांकित अंश कौन सी संज्ञा है?

(अ) जातिवाचक संज्ञा (ब) व्यक्तिवाचक संज्ञा

(स) भाववाचक संज्ञा (द) द्रव्यवाचक संज्ञा

24. **<u>नेताजी</u> भाषण दे चुके हैं (रेखांकित संज्ञा)**
(**अ**) व्यक्तिवाचक (**ब**) भाववाचक
(**स**) जातिवाचक (**द**) समूहवाचक

25. **किस वर्ग की सभी संज्ञाएँ भाववाचक संज्ञा नहीं है।**
(**अ**) पुत्र, योग्य (**ब**) परतन्त्रता, स्वतन्त्रता
(**स**) ऊँचाई, कमजोरी (**द**) ईमानदारी, वीरता

निम्नलिखित शब्दों में से जाति वाचक संज्ञा छाँटिए-

26. **गुरुता**
(**अ**) गुरु (**ब**) गुरुदेव (**स**) गुरुत्व (**द**) सन्यासी

27. **नारीत्व**
(**अ**) नारियाँ (**ब**) नर (**स**) नारी (**द**) महिलाएँ

28. **वक्तृता**
(**अ**) वक्ता (**ब**) श्रोता (**स**) वक्तृ (**द**) वकता

निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए:-

29. **मीठा**
(**अ**) मिठाई (**ब**) मिठास (**स**) मीठी (**द**) मधुर

30. **पंडित**
(**अ**) पंडितजी (**ब**) पंडिताईन (**स**) पांडित्य (**द**) पाडीत्य

31. **मम**
(**अ**) ममत्व (**ब**) अहं (**स**) मेरा (**द**) अपनापन

32. **धिक्**
(**अ**) धिरज (**ब**) धिक्कार (**स**) धिक्कर (**द**) धिक्कारणा

<u>8 (1) - वचन</u>

1. **शब्द के जिस रूप से एक अथवा अनेक होने का बोध हो -**
(**अ**) सर्वनाम (**ब**) क्रिया (**स**) संज्ञा (**द**) वचन

2. **वचन के प्रकार हैं -**
(**अ**) दो (**ब**) चार (**स**) तीन (**द**) पाँच

3. **शब्द के जिस रूप से उसके एक होने का बोध हो, उसे कहते हैं-**
(**अ**) बहुवचन (**ब**) एकवचन (**स**) द्विवचन (**द**) त्रिवचन

4. **शब्द के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का बोध हो -**
(**अ**) एकवचन (**ब**) बहुवचन (**स**) द्विवचन (**द**) त्रिवचन

5. **'जनता' शब्द है-**
(**अ**) एकवचन (**ब**) द्विवचन (**स**) त्रिवचन (**द**) बहुवचन

6. **एकवचन शब्द छाँटिए-**

(अ) मेज (ब) संतरे (स) आँसू (द) गुरुजी

7. **उचित बहुवचन शब्द छाँटिए-**

(अ) छात्र-दल (ब) जन-समूह (स) प्रजा-जन (द) छात्र-सेना

8. **उचित एकवचन शब्द छाँटिए-**

(अ) मनुष्य-जाति (ब) छात्र-वृन्द

(स) अध्यापक-गण (द) गुरु-जन

9. **चिड़िया का बहुवचन है-**

(अ) चिड़ियों (ब) चिड़ियें (स) चिड़ियाँ (द) चिड़ीयाँ

10. **अपने से बड़ों के प्रति आदर या सम्मान प्रकट करने के लिए हम किस वचन का प्रयोग करते हैं।**

(अ) एकवचन (ब) द्विवचन (स) बहुवचन (द) कोई भी नहीं

11. **निम्नलिखित में से कौन से संज्ञा शब्द बहुवचन में ही रहते हैं।**

(अ) आँसू, प्राण, होश (ब) झाड़ू, ईख, रात

(स) लड़का, लड़की, चूहा (द) माला, नाक, नदी

12. **माप-तोल अर्थात् पीतल, आटा, तेल आदि के रूप किस वचन में होते हैं।**

(अ) एकवचन रूप में (ब) बहुवचन रूप में

(स) एक वचन तथा बहुवचन रूप एक जैसे (द) इनमें से कोई नहीं।

13. **भाववाचक संज्ञाएँ किस वचन में प्रयुक्त होती है?**

(अ) एकवचन (ब) द्विवचन (स) बहुवचन (द) उभयवचन

14. **एक साथ दो संज्ञाएँ आने पर किस संज्ञा को बहुवचन बना दिया जाता है।**

(अ) पहले वाली संज्ञा (ब) बाद वाली संज्ञा

(स) दोनों संज्ञा (द) इनमें से कोई नहीं।

15. **किन संज्ञाओं का वचन परिवर्तन नहीं होता है?**

(अ) संबन्ध सूचक (ब) भाववाचक

(स) संज्ञा सूचक (द) जाति सूचक

निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कोष्ठकांकित शब्द के बहुवचन रूप से कीजिए

16. **महाभारत के युद्ध में करोड़ों...........मारे गए (योद्धा)**

(अ) योद्धे (ब) योद्धा (स) योद्धागण (द) योद्धाओं

17. **गोली चलते ही..........फुर्र से उड़ गई। (चिड़ियाँ)**

(अ) चिड़िया (ब) चिड़ियाँ (स) चिड़िएँ (द) चिड़े

18. **भारत अपनी पौराणिक..............के लिए प्रसिद्ध है। (कथा)**

(अ) कथा (ब) कथाएँ (स) कथाओं (द) कथे

19. **आमों में.........है। (मीठा)**
(अ) मिठास (ब) मिठाई (स) मीठापन (द) मीठी

20. **पुत्र के फैल होने पर माँ के............निकले। (आँसू)**
(अ) आँसु (ब) आसुओं (स) आँसू (द) आँसुएँ

8 (2) - लिंग

1. **शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री या पुरुष जाति के होने का बोध हो, उसे कहते हैं-**
(अ) वचन (ब) संज्ञा (स) लिंग (द) क्रिया

2. **लिंग के प्रकार है-**
(अ) दो (ब) चार (स) तीन (द) पाँच

3. **स्त्रीत्व का बोध कराने वाले शब्द कहलाते हैं-**
(अ) पुल्लिंग (ब) स्त्रीलिंग (स) उभयलिंग (द) नपुंसकलिंग

4. **पुरुषत्व का बोध कराने वाले शब्द कहलाते हैं-**
(अ) पुल्लिंग (ब) स्त्रीलिंग (स) उभयलिंग (द) नपुंसकलिंग

5. **स्त्रीलिंग शब्द छाँटिए-**
(अ) रोना (ब) जाना (स) बुढ़ापा (द) दया

6. **पुल्लिंग शब्द है-**
(अ) चरखा (ब) लता (स) बरखा (द) मद्रासी

7. **तिथियों के नाम होते हैं-**
(अ) पुल्लिंग (ब) स्त्रीलिंग (स) नपुंसकलिंग (द) उभयलिंग

8. **पुल्लिंग शब्द नहीं है-**
(अ) हिमाचल, (ब) दिन (स) चावल (द) गंगा

9. **स्त्रीलिंग शब्द नहीं है-**
(अ) टोपी (ब) दही (स) रोटी (द) नदी

10. **सही जोड़ी नहीं है-**
(अ) कावेरी-स्त्रीलिंग (ब) मक्का-स्त्रीलिंग
(स) उदासी-स्त्रीलिंग (द) चाँदी-पुल्लिंग

11. **'दाता' शब्द का स्त्री लिंग क्या है?**
(अ) दातृ (ब) दात्री (स) दातरी (द) दाता

12. **इन्द्र शब्द का स्त्रीलिंग है?**
(अ) इन्द्रा (ब) इन्द्रानी (स) इन्द्राणी (द) इन्द्राणि

13. **नायक का स्त्री लिंग है?**
(अ) नायिका (ब) नायंका (स) नायीका (द) नायिकी

14. **नेता शब्द का स्त्रीलिंग है?**
(अ) नेत्री (ब) नेतृ (स) नेतिक (द) नेता

15. **'परिचारक' शब्द का स्त्रीलिंग है?**
 (अ)परिचारिका **(ब)**परिचारिकी
 (स)परिचारकी **(द)**परिचाराइन
16. **समूह अथवा झुंड का बोध कराने वाले शब्द किसके अन्तर्गत आते हैं?**
 (अ) स्त्रीलिंग **(ब)** पुल्लिंग **(स)** लिंग **(द)** समूह
17. **डॉक्टर, मंत्री किस लिंग के सूचक है?**
 (अ) पुल्लिंग **(ब)** स्त्रीलिंग **(स)** लिंग **(द)** उभयलिंग
18. **अप्राणीवाचक संज्ञाओं के लिए निर्धारण किस आधार पर होता है।**
 (अ) शब्द व रूप के आधार पर **(ब)** लिंग के आधार पर
 (स) व्यवहार के आधार पर **(द)** समूह के आधार पर
19. **भाववाचक संज्ञाएँ प्राय: किस लिंग में होती है।**
 (अ) पुल्लिंग **(ब)** स्त्रीलिंग
 (स) उभयलिंग **(द)** कोई नहीं

निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग रूप पर सही का निशान (✓) लगाइए।

20. **राक्षस**
 (अ) राक्षसी **(ब)** राक्षसनी **(स)** रक्षायन **(द)** रक्षाइन
21. **ससुर**
 (अ) ससुरी **(ब)** सुसरनी **(स)** सास **(द)** सासु
22. **दाता**
 (अ) दात्री **(ब)** दाती **(स)** दीती **(द)** दत्री
23. **खरगोश**
 (अ) मादा खरगोश **(ब)** खरगोश **(स)** नरखरगोश **(द)** खरगोशी
24. **नाटक**
 (अ) नाटक **(ब)** नाटिका **(स)** नाटकी **(द)** नटी
25. **निम्नलिखित में कौन सा युग्म ठीक है? उस पर सही का निशान (✓) लगाइए-**
 (1) सेठ-सेठाइन **(11)** बैल-बैली
 (2) पंडित-पंडितन **(12)** पोता-पोती
 (3) विद्वान-विद्वानी **(13)** माली-मालनी
 (4) बालक-बालिका **(14)** अभिनेता-अभिनेती
 (5) दाता-दाती **(15)** विधाता-विधात्री
 (6) आयुष-आयीष **(16)** जाल-खाल
 (7) तपस्वी-तपिस्वीनी **(17)** सन्यासी-संयासिनी **(8)** हंस-हंसी
 (18) चूहा-चूही
 (9) साधु-साध्वी **(19)** पुरुष-पुरुषी

(10) बाप-मम्मी (20) भाई-भाभा

8 (3) - कारक

1. **संज्ञा या सर्वनाम शब्द को क्रिया के साथ जोड़ने वाले शब्द कहलाते हैं-**
   (अ) अव्यय (ब) कारक (स) विशेषण (द) क्रिया विशेषण
2. **कारक के प्रकार है-**
   (अ) ६ (ब) २ (स) ५ (द) ८
3. **जिस साधन से क्रिया हो, वह कारक कहलाता है-**
   (अ) सम्प्रदान (ब) करण (स) अपादान (द) कर्म
4. **जिस संज्ञा को पुकारा जाता, वह कहलाता है-**
   (अ) अपादान (ब) संबंध (स) संबोधन (द) सम्प्रदान
5. **जिस कारक में पृथकता की सूचना हो वह कहलाता है-**
   (अ) सम्प्रदान (ब) करण (स) अधिकरण (द) अपादान
6. **क्रिया के करने वाला कहलाता है-**
   (अ) कर्ता (ब) कर्म (स) करण (द) संबंध
7. **जिसके लिए क्रिया की जाए, वह कहलाता है-**
   (अ) अधिकरण (ब) सम्प्रदान (स) अपादान (द) संबंध
8. **जिस पर क्रिया का फल पड़े, वह कारक है-**
   (अ) कर्ता (ब) अपादान (स) करण (द) कर्म
9. **क्रिया के अतिरिक्त अन्य पदों से संबंध बताने वाला कहलाता है-**
   (अ) संबोधन (ब) संबंध (स) कर्ता (द) करण
10. **क्रिया करने का स्थान बताने वाला कारक कहलाता है-**
    (अ) कर्ता (ब) करण (स) कर्म (द) अधिकरण
11. **हमको दिल्ली जाना है-वाक्य में हमको का कारक है-**
    (अ) कर्ता (ब) कर्म (स) करण (द) अपादान
12. **रजनी ढोलक बजा रही है-वाक्य में ढोलक का कारक है-**
    (अ) कर्ता (ब) कर्म (स) करण (द) अपादान
13. **मोहन छत से कूद गया वाक्य में 'छत से' का कारक है-**
    (अ) अपादान (ब) करण (स) कर्ता (द) कर्म
14. **हम दही के साथ रोटी खाते हैं-वाक्य में 'दही के साथ' का कारक है-**
    (अ) करण (ब) कर्ता (स) सम्प्रदान (द) अपादान
15. **<u>प्रियेश की माताजी</u> आ रही हैं - वाक्य में रेखांकित अंश का कारक है-**
    (अ) संप्रदान (ब) कर्ता (स) कर्म (द) संबंध
16. **बच्चो! खूब परिश्रम करो-वाक्य में 'बच्चो' का कारक है -**
    (अ) अपादान (ब) संबंध (स) संप्रदान (द) संबोधन

17. हम शहर से आए हैं-वाक्य में रेखांकित अंश का कारक है -

(अ) अपादान **(ब)** संबंध **(स)** संप्रदान **(द)** करण

18. क्रिया कराने वाले सहायक पद क्या कहलाते हैं?

(अ) कर्ता **(ब)** कर्म **(स)** कारक **(द)** परसर्ग

19. कारकों की विभक्तियों को क्या कहते हैं?

(अ) कारक **(ब)** विभक्ति **(स)** परसर्ग **(द)** कुछ भी नही

20. अपादान कारक का वाक्य है-

(अ) सुनील गाड़ी से गिर गया।

(ब) शीतल ने पैंसिल से चित्र बनाया।

(स) घर के भीतर बैठो।

(द) राम ने रावण को मारा।

21. सही जोड़ी है-

(अ) अधिकरण कारक-पर,ऊपर,

(ब) अपादान-के भीतर, के मध्य

(स) संबंध करक-से, ने,

(द) संप्रदान कारक-में, बीच में

22. सही कारक वाला वाक्य नहीं है-

(अ) प्रियेश की माताजी आ रही है-संबंधकारक

(ब) सिंह वन में रहता है-अधिकरण

(स) वह नदी से जल लाया-अपादान

(द) वह पानी से खेल रहा है-संप्रदानं

23. कारक का शब्दिक अर्थ क्या है?

(अ) क्रिया को करवाने वाला **(ब)** क्रिया करना

(स) क्रिया को करने वाला **(द)** इनमें से कोई नहीं।

24. कौन सा कारक परसर्ग सहित या परसर्ग रहित दोनों प्रकार का होता है।

(अ) कर्म कारक **(ब)** अपादान

(स) कर्ता कारक **(द)** सभी कारक

25. डरने, लजाने, तुलना, सीखने, घृणा करने आदि के भावों को व्यक्त करने के लिए कौन सा कारक प्रयुक्त होता है।

(अ) कर्म कारक **(ब)** संबोधन कारक

(स) अपादान कारक **(द)** संबंध कारक

26. किसी वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम पदों का उस वाक्य की क्रिया से जो संबंध होता है, वह क्या कहलाता है।

(अ) कारक **(ब)** सर्वनाम **(स)** संज्ञा **(द)** वाक्य

प्र. रेखांकित के सही कारक पर (✓) चिह्न लगाइए।

27. गंगा हिमालय से निकलती है।

(अ) कर्म (ब) करण (स) संबंध (द) अपादान

28. पेड़ पर पक्षी बैठे हैं।

(अ) कर्म कारक (ब) अधिकरण

(स) संप्रदान कारक (द) संबंध कारक

29. मोहन पुस्तक पढ़ता है।

(अ) कर्ता (ब) कर्म (स) अधिकरण (द) संप्रदान

30. उसके वचनों पर ध्यान दो।

(अ) कर्म (ब) संबंध (स) संबोधन (द) करण

31. वह अगले साल आएगा।

(अ) करण (ब) कर्ता (स) अधिकरण (द) संबंध

रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त कारक चिह्नों के द्वारा कीजिए।

32. मोहन घर...........है। (अधिकरण कारक)

(अ) पर (ब) नहीं (स) तो (द) से

33. रावण को बाण...........मारा। (करण कारक)

(अ) से (ब) में (स) मत (द) तो

34. इस बात से..........क्या? (संबंध कारक)

(अ) मेरे को (ब) मेरे से (स) मुझे (द) मेरा

35. किस वाक्य में कारक का प्रयोग ठीक से नहीं हुआ -

(अ) मैंने कल दिल्ली जाना है।

(ब) मुझको कल दिल्ली जाना है।

(स) मैंने दिल्ली के लिए टिकट खरीद लिया है

(द) मैं दिल्ली अक्सर जाया करता हूँ।

36. इनमें से कौन सा कर्त्ता कारक का परसर्ग है -

(अ) के (ब) में (स) को (द) ने

37. इनमें से किसमें अधिकरण कारक का प्रयोग होता है -

(अ) समय में (ब) तुलना में (स) स्थान में (द) उपर्युक्त सभी में

38. बच्चो! शांत रहो। में रेखांकित शब्द में कारक है -

(अ) संबंध (ब) संबोधन (स) कर्त्ता (द) इनमें से कोई नही

उत्तरमाला

8 संज्ञा

1. अ	**2.** अ	**3.** ब	**4.** ब	**5.** स	**6.** ब	**7.** ब
8. स	**9.** ब	**10.** अ	**11.** द	**12.** ब	**13.** स	**14.** द
15. स	**16.** ब	**17.** ब	**18.** द	**19.** द	**20.** द	**21.** स
22. अ	**23.** ब	**24.** स	**25.** द	**26.** अ	**27.** स	**28.** अ
29. अ	**30.** स	**31.** अ	**32.** ब			

8(1) वचन

1. द	**2.** अ	**3.** ब	**4.** अ	**5.** द	**6.** अ	**7.** स
8. अ	**9.** स	**10.** स	**11.** ब	**12.** स	**13.** अ	**14.** ब
15. अ	**16.** ब	**17.** ब	**18.** स	**19.** अ	**20.** स	

8(2) लिंग

1. स	**2.** अ	**3.** ब	**4.** अ	**5.** द	**6.** अ	**7.** ब
8. द	**9.** ब	**10.** द	**11.** ब	**12.** स	**13.** अ	**14.** अ
15. अ	**16.** ब	**17.** द	**18.** स	**19.** अ	**20.** ब	**21.** स
22. अ	**23.** अ	**24.** ब	**25.** (4, 9, 12, 15)			

8(3) कारक

1. ब	**2.** द	**3.** ब	**4.** स	**5.** द	**6.** अ	**7.** ब
8. द	**9.** ब	**10.** द	**11.** अ	**12.** ब	**13.** अ	**14.** अ
15. द	**16.** द	**17.** अ	**18.** द	**19.** स	**20.** स	**21.** अ
22. द	**23.** अ	**24.** स	**25.** स	**26.** अ	**27.** द	**28.** ब
29. ब	**30.** ब	**31.** ब	**32.** अ	**33.** अ	**34.** स	**35.** अ
36. द	**37.** द	**38.** ब				

09

सर्वनाम

---

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द कहलाते हैं-

(अ) विशेषण **(ब)** क्रिया **(स)** सर्वनाम **(द)** कारक

2. सर्वनाम के भेद है-

(अ) २ **(ब)** ४ **(स)** ६ **(द)** ७

3. किसी निश्चित बात के लिए प्रयुक्त सर्वनाम है-

(अ) अनिश्चय वाचक **(ब)** निश्चयवाचक

(स) निजवाचक **(द)** पुरुषवाचक

4. जिन सर्वनामों से किसी के बारे में प्रश्न का बोध हो, वह कहलाता है-

(अ) पुरुषवाचक **(ब)** प्रश्नवाचक

(स) अनिश्चयवाचक **(द)** निजवाचक

5. माँ तू जल्दी आ-वाक्य में सर्वनाम है-

(अ) तू **(ब)** जल्दी **(स)** आ **(द)** माँ

6. हम किसी को कुछ नहीं कह सकते-वाक्य में सर्वनाम का भेद है-

(अ) निश्चयवाचक **(ब)** अनिश्चयवाचक

(स) प्रश्नवाचक **(द)** निजवाचक

7. मैं अपना काम स्वयं करता हूँ। (रेखांकित सर्वनाम का उदाहरण है)

(अ) पुरुषवाचक **(ब)** निजवाचक

(स) प्रश्नवाचक **(द)** संबंधवाचक

8. जो करेगा वो भरेगा वाक्य में सर्वनाम है-

(अ) संबंधवाचक **(ब)** निजवाचक

(स) निश्चयवाचक **(द)** अनिश्चयवाचक

9. हे भगवान तेरी माया निराली है-इस वाक्य में सर्वनाम है-

(अ) संबंधवाचक **(ब)** निजवाचक

(स) पुरुषवाचक **(द)** प्रश्नवाचक

10. पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद होते हैं-

(अ) तीन **(ब)** चार **(स)** पाँच **(द)** दो

11. वक्ता अपने लिए जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग करता है, उसे क्या कहते हैं।
(**अ**) सर्वनाम (**ब**) उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम (**स**) मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम (**द**) अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम

12. सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है।
(**अ**) सबकी पहचान (**ब**) संज्ञा
(**स**) सबका नाम (**द**) सबको जानना

13. भाषा में शब्दों के दोहराव से बचने के लिए किन शब्दों का प्रयोग किया जाता है।
(**अ**) संधि (**ब**) समास (**स**) सर्वनाम (**द**) संज्ञा

14. उत्तमपुरुष, मध्यम व अन्य पुरुष किस सर्वनाम के भेद है?
(**अ**) निज वाचक (**ब**) पुरुष वाचक
(**स**) निश्चय वाचक (**द**) अनिश्चय वाचक

15. 'कोई' का बहुवचन है?
(**अ**) कोई (**ब**) कुछ (**स**) किन्हीं (**द**) किसी

16. कोई और किन्हीं का प्रयोग किस के लिए किया जाता है।
(**अ**) मानव (**ब**) पशु (**स**) कीड़े (**द**) प्राणियों

17. 'क्या' सर्वनाम का प्रयोग किस के लिए किया जाता है।
(**अ**) सजीव के लिए (**ब**) निर्जीव के लिए
(**स**) सजीव व निर्जीव के लिए (**द**) किसी के लिए भी नहीं

नीचे एक सर्वनाम के संभावित चार शब्द दिए गए है उनमें एक गलत है गलत पर (X) लगाइए।

18. प्रश्न वाचक
(**अ**) क्या (**ब**) कौन सा (**स**) कौन (**द**) कुछ

19. अनिश्चय वाचक
(**अ**) कोई (**ब**) किसी (**स**) कुछ (**द**) प्रत्येक

20. संबंध कारक
(**अ**) मेरा (**ब**) अगर जो (**स**) उसको-जिसको (**द**) उसे-जिसे

उत्तरमाला

1. स	**2.** स	**3.** ब	**4.** ब	**5.** अ	**6.** ब	**7.** ब
8. अ	**9.** स	**10.** अ	**11.** ब	**12.** स	**13.** स	**14.** ब
15. स	**16.** अ	**17.** ब	**18.** द	**19.** द	**20.** अ	

10

विशेषण

1. **संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द कहलाते हैं-**
   (अ) कारक (ब) क्रियाविशेषण (स) विशेषण (द) क्रिया
2. **जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, वह कहलाते हैं-**
   (अ) संज्ञा (ब) सर्वनाम (स) विशेषण (द) विशेष्य
3. **विशेष्य के बाद आने वाले विशेषण को कहते हैं-**
   (अ) विधेयविशेषण (ब) विशेष्यविशेषण
   (स) प्रविशेषण (द) क्रियाविशेषण
4. **विशेष्य के पहले आने वाले विशेषण को कहते हैं-**
   (अ) विधेय विशेषण (ब) विशेष्य विशेषण
   (स) प्रविशेषण (द) क्रिया विशेषण
5. **विशेषण की भी विशेषता बताने वाले शब्द कहलाते हैं-**
   (अ) क्रिया विशेषण (ब) प्रविशेषण
   (स) विशेष्य विशेषण (द) विधेय विशेषण
6. **विशेषण के प्रकार हैं-**
   (अ) चार (ब) पाँच (स) छः (द) दो
7. **लम्बी लड़की खेल रही है - यह उदाहरण है-**
   (अ) प्रविशेषण का (ब) क्रियाविशेषण का
   (स) विधेयविशेषण का (द) विशेष्यविशेषण का
8. **वह बालक चतुर है - इस वाक्य में .... है-**
   (अ) विधेय विशेषण (ब) विशेष्यविशेषण
   (स) प्रविशेषण (द) क्रियाविशेषण
9. **अपूर्व घोर परिश्रमी बालक है - इस वाक्य में .... है-**
   (अ) प्रविशेषण (ब) क्रियाविशेषण
   (स) विधेयविशेषण (द) विशेष्यविशेषण
10. **आप बड़े मूर्ख व्यक्ति है - इस वाक्य में प्रविशेषण है-**
   (अ) बड़े (ब) मूर्ख (स) आप (द) व्यक्ति

11. जो शब्द किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम की माप-तौल संबंधी विशेषता बताए, उसे कहते हैं-

(अ) गुणवाचक विशेषण (ब) संख्यावाचक विशेषण

(स) परिमाण वाचक विशेषण (द) संकेतवाचक विशेषण

12. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता बताते हैं, वे कहलाते हैं-

(अ) परिमाणवाचक विशेषण (ब) संख्यावाचक विशेषण

(स) गुणवाचक विशेषण (द) संकेतवाचक विशेषण

13. कुछ केले दुकान से खरीद लो-वाक्य में विशेषण है-

(अ) परिमाणवाचक (ब) संख्यावाचक (स) गुणवाचक (द) सार्वनामिक

14. कौन लड़का खड़ा है? वाक्य में विशेषण है-

(अ) परिमाणवाचक (ब) संख्यावाचक (स) गुणवाचक (द) सार्वनामिक

15. परिमाणवाचक विशेषण है-

(अ) ग्यारहवाँ लड़का (ब) चालीसा

(स) सतसई (द) थोड़ा पापड़

16. ढेर सारा मक्खन में विशेषण है-

(अ) निश्चित संख्यावाचक (ब) निश्चित परिमाणवाचक

(स) अनिश्चित संख्यावाचक (द) अनिश्चित परिमाणवाचक

17. जो लड़का कल आएगा, वह ठीक नहीं है; वाक्य में विशेषण शब्द है-

(अ) वह (ब) जो (स) ठीक (द) कल

18. सार्वनामिक विशेषण का उदाहरण है-

(अ) यह लड़का चालाक है। (ब) उसने मुझे बुलाया है।

(स) उस जगह कौन है? (द) यह काफी कमजोर खिड़की है।

19. प्रविशेषण वाला वाक्य छाँटिए-

(अ) सुंदर लड़की (ब) बहुत सुंदर कमरा

(स) वह सुंदर घर (द) यह अच्छी पुस्तक

20. विशेष्यविशेषण का उदाहरण है-

(अ) चतुर लड़की बैठी है (ब) वह लड़का खराब है।

(स) यह गाड़ी काले रंग की है। (द) अरुण अच्छा खेलता है।

उत्तरमाला

1. स	**2.** द	**3.** अ	**4.** अ	**5.** ब	**6.** अ	**7.** स	**8.** अ	**9.** अ
10. अ	**11.** स	**12.** ब	**13.** ब	**14.** द	**15.** द	**16.** द	**17.** ब	**18.** अ
19. ब	**20.** अ							

10

क्रिया

1. जिन शब्दों से किसी कार्य को करने या होने का बोध हो, उसे कहते हैं-

(अ) संज्ञा **(ब)** क्रिया **(स)** विशेषण **(द)** सर्वनाम

2. मैंने कविता पढ़ी और परीक्षा दी- वाक्य में क्रिया है-

(अ) मैंने **(ब)** और **(स)** पढ़ी, दी **(द)** पढ़ी

3. जिन वाक्यों में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे कहते हैं-

(अ) अकर्मक क्रिया **(ब)** सकर्मक क्रिया

(स) द्विकर्मक क्रिया **(द)** प्रेरणार्थक क्रिया

4. 'बंटी ने कविता पढ़ी' यह वाक्य क्रिया का उदाहरण है-

(अ) सकर्मक क्रिया का **(ब)** अकर्मक क्रिया का

(स) प्रेरणार्थक क्रिया का **(द)** द्विकर्मक क्रिया का

5. गुरचरण ने जगदीप को पंजाबी-

(अ) पढ़ाया **(ब)** पढ़ाई **(स)** पढ़ी **(द)** पठाएगी

6. जिन क्रियाओं में दो कर्म होते हैं, वे क्रियाएँ कहलाती है-

(अ) एककर्मक क्रिया **(ब)** दविकर्मक क्रिया

(स) त्रिकर्मक क्रिया **(द)** प्रेरणार्थक क्रिया

7. मेघना पढ़ती है-यह वाक्य निम्नलिखित क्रिया का उदाहरण है-

(अ) सकर्मक **(ब)** द्विकर्मक **(स)** एककर्मक **(द)** अकर्मक

8. जब किसी वाक्य में एक से अधिक क्रियाएँ हों, उसे कहते हैं-

(अ) सामान्य क्रिया **(ब)** संयुक्त क्रिया

(स) द्विकर्मक **(द)** एककर्मक क्रिया

9. माँ पुत्री को नौकरानी से दूध पिलवाती है-वाक्य में प्रेरणार्थक क्रिया है-

(अ) नौकरानी **(ब)** दूध **(स)** पिलवाती **(द)** माँ

10. 'रखना' शब्द से प्रेरणार्थक क्रिया बनेगी-

(अ) रखाना **(ब)** रखो **(स)** रखवाना **(द)** रखिए

11. शब्दों के अंत में प्रत्यय लगाकर बनने वाली क्रियाएँ कहलाती है-

(अ) कृदन्त **(ब)** तद्धिन्त **(स)** कृत **(द)** सामान्य

12. **विष्णु ने गृह-कार्य स्वयं किया-वाक्य में क्रिया है-**
(**अ**) किया (**ब**) गृहकार्य (**स**) विष्णु (**द**) स्वयं
13. **'घूम' शब्द से कृदन्त क्रिया बनेगी-**
(**अ**) घूमिए (**ब**) घूमो (**स**) घूमना (**द**) घूमा
14. **चित्रा ने कॉपियाँ जाँचकर रख दी-वाक्य में संयुक्त क्रिया है-**
(**अ**) कॉपियाँ (**ब**) चित्रा (**स**) जाँचकर (**द**) रख दीं
15. **मुख्य क्रिया से पहले होने वाली क्रिया कहलाती है-**
(**अ**) संयुक्त (**ब**) पूर्वकालिक (**स**) सकर्मक (**द**) अकर्मक
16. **'सोमनाथ नहाकर पूजा करने लगा' वाक्य में पूर्वकालिक क्रिया है-**
(**अ**) पूजा (**ब**) करने (**स**) नहाकर (**द**) लगा
17. **जिस क्रिया को कर्ता स्वयं न करके, दूसरे को करने के लिए प्रेरित करता है, उसे कहते हैं-**
(**अ**) प्रेरणार्थक (**ब**) संयुक्त (**स**) सामान्य (**द**) अकर्मक
18. **'हँसना' क्रिया है-**
(**अ**) प्रेरणार्थक (**ब**) सकर्मक (**स**) अकर्मक (**द**) द्विकर्मक
19. **'रोहित खा रहा है,' वाक्य में क्रिया है-**
(**अ**) अकर्मक (**ब**) सकर्मक (**स**) प्रेरणार्थक (**द**) संयुक्त
20. **'मैं लोगों को टेप' से गीत सुनवाता हूँ- वाक्य में क्रिया है।**
(**अ**) सकर्मक (**ब**) अकर्मक (**स**) प्रेरणार्थक (**द**) संयुक्त
21. **'अक्षय पेन से लिख रहा है' वाक्य उदाहरण है-**
(**अ**) प्रेरणार्थक क्रिया का (**ब**) संयुक्त क्रिया का (**स**) अकर्मक क्रिया का (**द**) सकर्मक क्रिया का
22. **'हँसाना' क्रिया उदाहरण है-**
(**अ**) प्रथम प्रेरणार्थक (**ब**) द्वितीय प्रेरणार्थक
(**स**) संयुक्त क्रिया (**द**) सकर्मक
23. **'काटना' शब्द की द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया होगी-**
(**अ**) कटना (**ब**) कटवाना (**स**) कटाना (**द**) काटा
24. **तुम भी क्या प्रसंग ले बैठे-वाक्य में संयुक्त क्रिया है-**
(**अ**) क्या (**ब**) तुम (**स**) ले बैठे (**द**) प्रसंग
25. **सही क्रिया वाला वाक्य छाँटिए-**
(**अ**) ऋतु कुर्सी पर बैठ गई-द्विकर्मक
(**ब**) लक्ष्मी सेब लाई-संयुक्त
(**स**) माँ पुत्री को दूध पिलाती है-प्रेरणार्थक
(**द**) सोनू प्रथम आया-सकर्मक

11 (1)-काल

1. **क्रिया का वह रूप जिससे उसके होने का समय पता चलता है, उसे कहते हैं-**
   (अ) काल, **(ब)** क्रिया, **(स)** संज्ञा, **(द)** वचन
2. **'अध्यापक ने कविता पढ़ाई'-उदाहरण है-**
   (अ) भविष्य काल, **(ब)** भूतकाल,
   (स) वर्तमान काल, **(द)** अपूर्ण भूतकाल
3. **जो समय अभी चल रहा है-वह कहलाता है-**
   (अ) भविष्यकाल **(ब)** वर्तमान काल
   (स) आधुनिक काल **(द)** भूतकाल
4. **'वह पढ़ता होगा' वाक्य में काल है-**
   (अ) भविष्यकाल **(ब)** वर्तमानकाल
   (स) भूतकाल **(द)** अपूर्ण वर्तमान
5. **'शायद वह चला जाए' इस वाक्य में हैं-**
   (अ) भूतकाल **(ब)** भविष्यकाल
   (स) वर्तमानकाल **(द)** पूर्ण भूतकाल
6. **भूतकाल का उपयुक्त वाक्य है-**
   (अ) संभवत आज ठंड हो।
   (ब) वह खेलता होगा।
   (स) यदि वर्षा होती तो खेती न सूखती।
   (स) गाड़ी आती है।
7. **माली गाय को भगाता है-वाक्य में काल है-**
   (अ) वर्तमान **(स)** भूतकाल,
   (स) भविष्यकाल, **(द)** सामान्य वर्तमान
8. **क्रिया के जिस रूप से भविष्य में कार्य होने की संभावना हो, उसे कहते हैं-**
   (अ) सामान्य भविष्यत् **(ब)** संभाव्य भविष्यत्
   (स) सातत्यबोधक भविष्यत् **(द)** पूर्ण भविष्यत्
9. **जिस क्रिया में काम के भूतकाल में जारी रहने का पता चले, वह कहलाता है-**
   (अ) संदिग्ध भूत **(ब)** अपूर्ण भूत **(स)** पूर्ण भूत **(द)** आसन्न भूत
10. **क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का बोध हो, उसे.....कहते हैं।**
    (अ) काल **(ब)** भूतकाल **(स)** भविष्यकाल **(द)** वर्तमानकाल
11. **भूतकाल के...........भेद है।**
    (अ) दो **(ब)** चार **(स)** छः **(द)** आठ
12. **क्रिया के जिस रूप से उसके अभी-अभी सम्पन्न होने का बोध हो, उसे .... कहते हैं।**

(अ) आसन्न भूतकाल (ब) अपूर्ण भूतकाल
(स) संदिग्ध भूतकाल (द) सामान्य भूतकाल

13. **जब क्रिया भूतकाल में बहुत-पहले पूर्ण हो चुकी हो, उसे .... कहते हैं।**
(अ) संदिग्ध भूतकाल (ब) पूर्ण भूतकाल
(स) अपूर्ण भूतकाल (द) वर्तमान काल

14. **शायद हम दार्जिलिंग जाएँ। (काल बताइए)**
(अ) संभाव्य भविष्यत् (ब) सामान्य भविष्यत्
(स) भूत काल(द) वर्तमान काल

15. **शीला नृत्य कला में भाग लेगी।**
(अ) सामान्य भविष्यत् (ब) संभाव्य भविष्यत्
(स) भविष्यत् (द) भूतकाल

16. **क्रिया के घटित होने के आधार पर काल के भेद हैं।**
(अ) तीन (ब) चार (स) पाँच (द) सात

17. **माँ बच्चे को लोरी सुना रही थी। (काल बताइए)**
(अ) अपूर्ण भूतकाल (ब) अपूर्ण वर्तमान
(स) अपूर्ण भविष्यत् (द) पूर्ण भविष्यत्

18. **यदि तुम समय पर स्टेशन पहुँचते तो गाड़ी नहीं छूटती। (काल बताइए)**
(अ) वर्तमान काल (ब) हेतु हेतुमद् भूतकाल
(स) संदिग्ध भूतकाल (द) भूतकाल

11(2) - वाच्य

निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य बताइए-

1. **ईश्वर हमारी रक्षा करते हैं।**
(अ) कर्तृवाच्य(ब) भाववाच्य (स) कर्मवाच्य (द) इनमें से कोई नहीं

2. **मैं फारसी में लिख पढ़ नहीं सकता।**
(अ) कर्तृवाच्य(ब) भाववाच्य (स) कर्मवाच्य (द) अन्य

3. **उषा पत्र पढ़ रही है।**
(अ) कर्तृवाच्य(ब) कर्मवाच्य (स) भाववाच्य (द) अन्य

4. **आज यहाँ बैठा जाए।**
(अ) कर्तृवाच्य(ब) कर्मवाच्य (स) भाववाच्य (द) अन्य

5. **वायुयान यात्रा महेश से नहीं हो सकेगी।**
(अ) कर्तृवाच्य(ब) कर्मवाच्य (स) भाववाच्य (द) अन्य

6. **पक्षी आकाश में उड़ते हैं।**
(अ) कर्तृवाच्य(ब) कर्मवाच्य (स) भाववाच्य (द) अन्य

7. **मुख्यमंत्री द्वारा राष्ट्रध्वज फहराया गया।**
(अ) कर्तृवाच्य **(ब)** कर्मवाच्य **(स)** भाववाच्य **(द)** अन्य

8. **कम्प्यूटर चला लिया जाए।**
(अ) कर्तृवाच्य **(ब)** कर्मवाच्य **(स)** भाववाच्य **(द)** अन्य

9. **महेश चाय पी रहा है।**
(अ) कर्तृवाच्य **(ब)** कर्मवाच्य **(स)** भाववाच्य **(द)** अन्य

10 **रामायण मुझसे पढ़ी नहीं जाएगी।**
(अ) कर्तृवाच्य **(ब)** कर्मवाच्य **(स)** भाववाच्य **(द)** अन्य

कोष्ठक में दिए सही वाच्य परिवर्तन पर (✓) चिह्न लगाइए।

11. **मैं अब नहीं चल सकता। (भाववाच्य में)**
(अ) मुझसे अब नहीं चला जाता **(ब)** मैं नहीं चल सकता
(स) मेरे से चला नहीं जाता। **(द)** मुझे और नहीं चलना

12. **सुधीर से चला नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में बदलिए)**
(अ) सुधीर चलता नहीं। **(ब)** सुधीर चल नहीं सकता
(स) सुधीर चल नहीं पाता। **(द)** सुधीर से चला नहीं जाता

13. **मैं उठ भी नहीं सकता। (भाववाच्य में)**
(अ) मुझसे उठा भी नहीं जा सकता
(ब) मुझसे उठा जाता है।
(स) मैं उठ सकता ही नहीं।
(द) मैं उठ नहीं पाऊँगा।

14. **मजदूर पेड़ नहीं काट रहे हैं। (कर्मवाच्य में)**
(अ) मजदूर द्वारा पेड़ नहीं काटे जा सकते हैं।
(ब) मजदूर द्वारा पेड़ नही काटे जा रहे हैं।
(स) मजदूर पेड़ नहीं काट रहे।
(द) मजदूरों से पेड़ नहीं काट रहे।

15. **उमा नहीं चल पाती (भाववाच्य में)**
(अ) ऊमा नहीं चलती **(ब)** ऊमा से नहीं चला जाता
(स) ऊमा चल नहीं पाएँगी **(द)** ऊमा नहीं चलेगी

16. **सोहन से पत्र लिखा जाता है। (कर्तृवाच्य में)**
(अ) सोहन द्वारा पत्र लिखा जाता है।
(ब) सोहन से पत्र लिखा जाता है।
(स) सोहन पत्र लिखता है।
(द) सोहन पत्र लिख रहा है।

17. बालक हँस रहा है। (भाववाच्य में)

(अ) बालक हँसा जा रहा है। (ब) बालक से हँसा जाता है।

(स) बालक के द्वारा हँसा जा रहा है। (द) बालक हँसता जा रहा है।

18. मैंने पुस्तकें खरीदी। (कर्मवाच्य में)

(अ) मुझसे पुस्तकें खरीदी गई। (ब) मैंने पुस्तकों को खरीदा।

(स) मुझे पुस्तक खरीदनी पड़ी। (द) गुझसे पुस्तकें खरीदी।

19. राधा से गीत गाया गया (कर्तृवाच्य में)

(अ) राधा गीत गाती है। (ब) राधा ने गीत गाया।

(स) राधा के द्वारा गीत गाया गया। (द) राधा गीत गाएँगी।

20. कर्म वाच्य है-

(अ) पिता जी से सीढ़िया नहीं चढ़ी जाती

(ब) रीया भोजन पका रही है।

(स) मीना से गीता नहीं पढ़ी गई।

(द) मिताली पत्र लिख रही है।

21. भाव वाच्य है।

(अ) राम द्वारा पौधे लगाए जाते हैं।

(ब) प्रिया चित्र बनाती है।

(स) मीना द्वारा पढ़ा जाता है।

(द) रमेश द्वारा लेख लिखा जाता है।

22. कर्तृवाच्य है।

(अ) लड़के फुटबॉल खेल रहे हैं। (ब) बच्चों द्वारा गाने गाए जाते हैं।

(स) राकेश से उठा नहीं जाता। (द) राम से पत्र लिखा नहीं जाता।

23. मैं हिन्दी भाषा रुचिपूर्वक पढ़ सकूँगा।

(अ) कर्तृवाच्य (ब) कर्मवाच्य (स) भाववाच्य (द) कोई नहीं

24. आज न्यायालय द्वारा उसे जमानत दे दी गई।

(अ) कर्तृवाच्य (ब) भाववाच्य (स) कर्मवाच्य (द) कोई नहीं

11(3) - वाक्य परिवर्तन एवं संश्लेषण

वाक्य परिवर्तन और संश्लेषण रचना के आधार पर उचित भेद छाँटिए-

1. जहाँ बस खड़ी है, वहाँ चले जाओ।

(अ) सरल वाक्य (ब) संयुक्त वाक्य

(स) मिश्र वाक्य (द) प्रश्न वाक्य

2. महिमा पढ़ रही है और मोहन खेल रहा है।

(अ) सरल वाक्य (ब) संयुक्त वाक्य

(स) मिश्र वाक्य (द) कर्त्ता वाक्य

3. नेताजी भाषण दे रहे हैं।

(अ) सरल वाक्य **(ब)** संयुक्त वाक्य

(स) मिश्र वाक्य **(द)** भाव वाक्य

4. जो अध्यापक बहुत अच्छा पढ़ाते हैं, वे विनम्र स्वभाव के होते हैं।

(अ) सरल वाक्य **(ब)** संयुक्त वाक्य

(स) मिश्र वाक्य **(द)** कर्म वाक्य

5. तुम यहाँ बैठकर विश्राम करो।

(अ) सरल वाक्य **(ब)** मिश्र वाक्य

(स) संयुक्त वाक्य **(द)** भाषा वाक्य

6. उसने कहा कि चुप हो जाओ।

(अ) संयुक्त वाक्य **(ब)** मिश्र वाक्य

(स) सरल वाक्य **(द)** अन्य वाक्य

7. जब जागो तभी सवेरा।

(अ) सरल वाक्य **(ब)** मिश्र वाक्य

(स) संयुक्त वाक्य **(द)** भाव वाक्य

8. आप चाय पिएँगे या कॉफी

(अ) मिश्र वाक्य **(ब)** संयुक्त वाक्य

(स) सरल वाक्य **(द)** भाव वाक्य

9. हो सकता है, आशा दिल्ली रहने जाए।

(अ) सरल वाक्य **(ब)** मिश्र वाक्य

(स) संयुक्त वाक्य **(द)** कर्ता वाक्य

10. रात हुई और तारे खिले।

(अ)सरल वाक्य**(ब)**संयुक्त वाक्य

(स)मिश्र वाक्य **(द)** भाव वाक्य

वाच्य के आधार पर वाक्य के भेद छाँटिए -

11. किस वाच्य का प्रयोग असमर्थता प्रकट करने के लिए होता है?

(अ) वाच्च **(ब)** भाववाच्य

(स) कर्तृवाच्य **(द)** कर्मवाच्य

12. जब क्रिया का सीधा सम्बन्ध कर्म से हो, तब क्रिया किस वाच्य की होगी?

(अ) कर्मवाच्य **(ब)** भाववाच्य

(स) कर्तृवाच्य **(द)** इनमें से कोई नहीं

13. सकर्मक तथा अकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग किस वाच्य में किया जाता है?

(अ) कर्तृ **(ब)** भाव **(स)** कर्म **(द)** इनमें से कोई नहीं

14. अकर्मक क्रियाओं का प्रयोग किस वाच्य में किया जाता है?

(अ) कर्तृ **(ब)** भाव **(स)** कर्म **(द)** इनमें से कोई नहीं

15. किस वाच्य में केवल सकर्मक क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है-

(अ) कर्तृ **(ब)** भाव **(स)** कर्म **(द)** इनमें से कोई नहीं

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद छाँटिए-

16. ईश्वर तुम्हारी सभी कामनाएँ पूर्ण करें।

(अ) आज्ञार्थक **(ब)** विधानार्थक

(स) इच्छार्थक **(द)** विस्मयार्थक

17. यहाँ मत रुकिए।

(अ) प्रश्नवाचक **(ब)** आज्ञावाचक **(स)** संकेत वाचक

(द) विधानवाचक

18. धूप में बड़ी गर्मी है।

(अ) विधान वाचक **(ब)** आज्ञावाचक

(स) संदेश वाचक **(द)** संकेत वाचक

19. यह किसकी किताब है?

(अ) इच्छावाचक **(ब)** निषेधवाचक

(स) प्रश्नवाचक **(द)** विधानवाचक

20. परिश्रम किया होता तो सफलता अवश्य मिलती।

(अ) संदेहवाचक **(ब)** संकेतवाचक

(स) प्रश्नवाचक **(द)** विधानवाचक

21. आपका मित्र कहाँ पढ़ता है?

(अ) विधानवाचक **(ब)** इच्छावाचक

(स) प्रश्नवाचक **(द)** आज्ञावाचक

22. ईश्वर हर काम में आपकी सहायता करें।

(अ) आज्ञावाचक **(ब)** संदेहवाचक

(स) इच्छावाचक **(द)** विधानवाचक

23. मुझे अब चलना चाहिए।

(अ) विधानवाचक **(ब)** आज्ञावाचक

(स) प्रश्नवाचक **(द)** संदेहवाचक

24. मुझे एक दिन का अवकाश दे दीजिए।

(अ) आज्ञावाचक **(ब)** संदेहवाचक

(स) इच्छावाचक **(द)** विधानवाचक

25. अध्यापिका पढ़ा रही है।

(अ) विधानवाचक (ब) इच्छावाचक

(स) आज्ञावाचक (द) संकेतवाचक

26. यहाँ मत बैठो।

(अ) विधानवाचक (ब) निषेधवाचक

(स) आज्ञावाचक (द) संकेतवाचक

27. हो सकता है, मैं बाहर जाऊँ।

(अ) विधानवाचक (ब) इच्छावाचक

(स) संदेहवाचक (द) विस्मयवाचक

28. ओह! कैसा सुन्दर दृश्य है।

(अ) विधानवाचक (ब) विस्मयवाचक

(स) इच्छावाचक (द) संकेतवाचक

29. शायद वह कल आएगा।

(अ) इच्छावाचक (अ) संदेहवाचक

(स) आज्ञावाचक (द) विस्मयवाचक

30. छिः! कितनी बदबू आ रही है।

(अ) आज्ञावाचक (अ) विस्मयवाचक

(स) निषेधवाचक (द) प्रश्नवाचक

उत्तरमाला

11 – क्रिया

1. ब **2.** स **3.** ब **4.** अ **5.** ब **6.** ब **7.** द
8. ब **9.** स **10.** स **11.** अ **12.** अ **13.** स **14.** द
15. ब **16.** स **17.** अ **18.** स **19.** अ **20.** स **21.** ब **22.** अ
23. ब **24.** स **25.** स

11 (1)– काल

1. अ **2.** ब **3.** स **4.** द **5.** ब **6.** स **7.** अ
8. ब **9.** ब **10.** ब **11.** स **12.** अ **13.** ब **14.** अ
15. अ **16.** अ **17.** अ **18.** ब

11 (2)- वाच्य

1. ब **2.** स **3.** अ **4.** स **5.** ब **6.** स **7.** ब
8. अ **9.** अ **10.** ब **11.** स **12.** ब **13.** अ **14.** ब
15. ब **16.** स **17.** द **18.** अ **19.** ब **20.** अ **21.** ब **22.** अ
23. स **24.** स

11 (3)- वाक्य परिवर्तन एवं संश्लेषण

1. स **2.** ब **3.** अ **4.** स **5.** ब **6.** ब **7.** ब
8. ब **9.** ब **10.** ब **11.** ब **12.** अ **13.** अ **14.** ब
15. स **16.** स **17.** ब **18.** अ **19.** स **20.** ब **21.** स **22.** स
23. अ **24.** अ **25.** अ **26.** ब **27.** स **28.** ब **29.** ब **30.** ब

12

अव्यय

1. **जिनमें विकार या परिवर्तन न आए, उन्हें कहते हैं-**
   (अ) विकारी शब्द **(ब)** अव्यय **(स)** निपात **(द)** संबधबोधक
2. **अविकारी शब्द होते हैं-**
   (अ) ४ **(ब)** ३ **(स)** ५ **(द)** २
3. **'गीता अभी आई है' वाक्य में रेखांकित शब्द है-**
   (अ) कालवाचक क्रिया विशेषण **(ब)** स्थानवाचक क्रिया विशेषण
   (स) रीतिवाचक क्रिया विशेषण **(द)** परिमाण वाचक क्रिया विशेषण
4. **'उतना खाओ जितना पचा सको'-वाक्य में क्रिया विशेषण है-**
   (अ) जितना **(ब)** पचा **(स)** खाओ **(द)** सके
5. **बालक चाँद की ओर देख रहा है-वाक्य में रेखांकित शब्द है-**
   (अ) सम्मुच्चय बोधक **(ब)** संबंधबोचक
   (स) निपात **(द)** विस्मयादिबोधक
6. **घर के .... से चारपाई लाओ-वाक्य के खाली स्थान में उचित संबंधबोधक लगेगा।**
   (अ) अंदर **(ब)** सामने **(स)** ऊपर **(द)** पास
7. **राम-राम! आपने क्या कर दिया? वाक्य में विस्यादिबोधक शब्द है।**
   (अ) आपने **(ब)** क्या **(स)** राम-राम **(द)** दिया

रेखांकित विस्मयादि बोधक अव्यय के लिए उससे संबंध रखने वाले भावों का निम्नलिखित वाक्यों में सही चुनाव कीजिए -

8. **अरे! आप कब आए।**
   (अ) घृणा **(ब)** पीड़ा **(स)** विस्मय **(द)** संबोधन
9. **वाह! क्या चौका लगाया है।**
   (अ) प्रोत्साहन **(ब)** हर्षउल्लास **(स)** भय **(द)** क्रोध
10. **हे राम! मुझे इस खतरे से बचाओ।**
    (अ) संबोधन **(ब)** शोर **(स)** संवेदना **(द)** प्रार्थना

11. हाय रे! मैं लुट गया।

(अ) संबोधन **(ब)** पीड़ा **(स)** घृणा **(द)** विस्मय

12. छि: छि:! तुमने चोरी की है।

(अ) तिरस्कार **(ब)** विस्मय **(स)** शोक **(द)** चेतावनी

13. समुच्चबोधक उदाहरण का उचित वाक्य है-

(अ) बादल उमड़े और वर्षा होने लगी।

(ब) सुरभि ऊपर बैठी है।

(स) मोहिनी मधुर गाती है।

(द) कमरे के अंदर बैठो।

14. 'मोहन ही क्रिकेट खेल रहा है' - वाक्य में किस अव्यय का प्रयोग हुआ है ?

(अ) संबंधबोधक **(ब)** समुच्चयबोधक

(स) निपात **(द)** क्रियाविशेषण

15. 'यद्पि वर्षा हुई तथापि गर्मी शांत नहीं हुई'- वाक्य उदाहरण है-

(अ) समुच्चयबोधक का **(ब)** निपात का

(स) क्रियाविशेषण का **(द)** संबंधबोधक का

16. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द कहलाते हैं-

(अ) विशेषण **(ब)** क्रिया विशेषण **(स)** सर्वनाम **(द)** संज्ञा

17. क्रिया विशेषण के भेद हैं-

(अ) ४ **(ब)** ३ **(स)** ५ **(द)** ६

18. क्रिया होने के समय की सूचना देने वाले क्रियाविशेषण शब्द कहलाते हैं-

(अ) स्थानवाचक **(ब)** कालवाचक

(स) रीतिवाचक **(द)** परिमाणवाचक

19. क्रिया होने के स्थान या दिशा का बोध कराने वाले क्रिया विशेषण कहलाते हैं-

(अ) कालवाचक **(ब)** स्थानवाचक

(स) रीतिवाचक **(द)** परिमाणवाचक

20. जिन क्रियाविशेषण शब्दों में क्रिया की मात्रा का बोध हो, वे कहलाते हैं-

(अ) कालवाचक **(ब)** रीतिवाचक

(स) स्थानवाचक **(द)** परिमाणवाचक

21. क्रिया विशेषण क्या है?

(अ) विकारी शब्द**(ब)** सार्थक शब्द

(स) अविकारी शब्द **(द)** निरर्थक शब्द

22. वह बिल्कुल थक गया है-वाक्य में रेखांकित विशेषण है-

(अ) कालवाचक **(ब)** स्थानवाचक

(स) परिमाणवाचक **(द)** रीतिवाचक

23. दिए गए वाक्यों में कालवाचक क्रिया विशेषण वाला वाक्य छाँटिए–

(अ) तुम अब जा सकते हैं। **(ब)** मोहन अंदर गया।

(स) तुम ऊपर बैठो, **(द)** वह कहीं नहीं जाएगा।

24. सही जोड़ी वाला वाक्य है–

(अ) सुनीता ने बहुत मना किया – परिमाणवाचक

(ब) धर्म की सर्वत्र विजय होती है – रीतिवाचक

(स) सरला अभी गा रही है – स्थानवाचक

(द) लता कितना मधुर गाती है – कालवाचक

25. 'सोहन धड़ाधड़ घर के अंदर आ गया।' वाक्य में क्रिया विशेषण शब्द है–

(अ) अंदर **(ब)** घर के **(स)** धड़ाधड़ **(द)** आ गया

रेखांकित क्रिया विशेषण के भेद बताइए।

26. राधा तेज भागती है।

(अ) रीतिवाचक **(ब)** स्थान वाचक

(स) परिणामवाचक **(द)** कालवाचक

27. मेरी बात सुनकर वह बहुत हँसा।

(अ) रीतिवाचक **(ब)** स्थान वाचक

(स) परिणाम वाचक **(द)** कालवाचक

28. आगे बढ़ना है तो परिश्रम करो।

(अ) रीतिवाचक **(ब)** कालवाचक

(स) स्थान वाचक **(द)** परिणाम वाचक

29. मैं कल जाऊँगा।

(अ) रीतिवाचक **(ब)** परिणाम वाचक

(स) स्थान वाचक **(द)** कालवाचक

30. जितना सोचो, उतना ही बोलो।

(अ) परिणाम वाचक **(ब)** रीतिवाचक

(स) कालवाचक **(द)** स्थान वाचक

31. वह सरपट भागा।

(अ) रीतिवाचक **(ब)** परिणाम वाचक

(स) स्थान वाचक **(द)** कालवाचक

32. वह ध्यानपूर्वक पढ़ता है।

(अ) रीतिवाचक **(ब)** कालवाचक

(स) स्थान वाचक **(द)** परिणाम वाचक

33. ढोलकपुर <u>कहाँ है</u> ?

(अ) रीतिवाचक **(ब)** स्थान वाचक

(स) परिणाम वाचक **(द)** कालवाचक

34. उत्सव के पश्चात् हम <u>शीघ्र</u> चल पड़ेंगे।

(अ) कालवाचक **(ब)** रीतिवाचक

(स) स्थान वाचक **(द)** परिणाम वाचक

35. सोहन <u>धीरे-धीरे</u> चलता है।

(अ) कालवाचक **(ब)** रीतिवाचक

(स) स्थान वाचक **(द)** परिणाम वाचक

36. वह <u>सदा</u> सच बोलता है।

(अ) कालवाचक **(ब)** रीतिवाचक

(स) स्थान वाचक **(द)** परिणाम वाचक

37. वह <u>बार-बार</u> भूल रहा है।

(अ) कालवाचक **(ब)** स्थान वाचक

(स) परिणाम वाचक **(द)** रीतिवाचक

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित <u>क्रिया</u> विशेषण चुनकर कीजिए।

38. सुमित..........कार चलाओ।

(अ) शीघ्र **(ब)** धीरे **(स)** तेज **(द)** आज

39. आज बारिश.........होगी।

(अ) कुछ **(ब)** रोज **(स)** रातभर **(द)** बाएँ

40. मैं........सो रहा था।

(अ) अब **(ब)** रात से **(स)** गहरी नींद **(द)** आराम से

41. वह..........धीरे बोलता है।

(अ) यहाँ **(ब)** हमेशा **(स)** बहुत **(द)** धीरे

42. उस दिन पुष्पा बहुत..........बोली।

(अ) कम **(ब)** कैसे **(स)** क्रोधमय **(द)** हमेशा

43. मैं.........जाऊँगा।

(अ) अभी **(ब)** हमेशा **(स)** वीरतापूर्वक **(द)** क्रोध

44. रमेश.........चला गया।

(अ) यहाँ से **(ब)** अब **(स)** आज **(द)** प्रेमपूर्वक

45. राम...........बैठा है ?

(अ) ऊपर **(ब)** कहाँ **(स)** हमेशा **(द)** कैसे

46. जरा........चलो।

(अ) कैसे **(ब)** कहाँ **(स)** धीरे **(द)** बहुत

47. रमेश........शरारत करता है।

(अ) नित्य **(ब)** कैसे **(स)** क्या **(द)** उछल-कूद

उत्तरमाला

1. ब	**2.** स	**3.** ब	**4.** अ	**5.** ब	**6.** ब	**7.** अ
8. स	**9.** अ	**10.** अ	**11.** ब	**12.** अ	**13.** अ	**14.** स
15. अ	**16.** ब	**17.** अ	**18.** ब	**19.** ब	**20.** द	**21.** स
22. द	**23.** अ	**24.** अ	**25.** स	**26.** अ	**27.** स	**28.** द
29. द	**30.** ब	**31.** अ	**32.** अ	**33.** ब	**34.** अ	**35.** अ
36. अ	**37.** द	**38.** स	**39.** स	**40.** द	**41.** द	**42.** अ
43. अ	**44.** अ	**45.** ब	**46.** स	**47.** अ		

13

निपात

1. **जो अव्यय वाक्य में किसी शब्द के बाद लगकर उसे विशेष बल प्रदान करते हैं, 'वे' ....कहलाते हैं।**
   (अ) अव्यय (ब) निपात (स) संज्ञा (द) शब्द
2. **क्या बात कर रहे हो? मैंने तो सुना........नहीं**
   (अ) सा (ब) तो (स) भी (द) ही
3. **शिक्षा.........मनुष्य को ऊपर उठाती है।**
   (अ) मात्र (ब) सहारा (स) तो (द) का
4. **गुरु...........ने शिष्यों को भली-भाँति समझाया।**
   (अ) महोदय (ब) जी (स) महाशय (द) शिष्य
5. **दादा जी के चित्र को............उतारो।**
   (अ) मत (ब) ही (स) शायद (द) कभी
6. **सरस्वती विद्यालय बारहवीं कक्षा.............है।**
   (अ) नहीं (ब) तक (स) में (द) भोपाल
7. **बस...........यहाँ से मिलेगी?**
   (अ) क्या (ब) क्यों (स) कहाँ (द) किससे
8. **बढ़ई ने मेज.............बनाया है।**
   (अ) ठीक (ब) लगभग (स) करीब (द) शायद
9. **कैसा चाँद..........सुन्दर चेहरा है।**
   (अ) सा (ब) ही (स) भी (द) तो
10. **सीमा ने कल............काम नहीं किया था।**
    (अ) ही (ब) मात्र (स) भर (द) भी

    वाक्यों में प्रयुक्त निपात शब्दों को बताइए -
11. **मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।**
    (अ) मेरे (ब) तो (स) दूसरा (द) न
12. **केवल भीख माँगकर गुज़ारा नहीं हो सकता।**
    (अ) केवल (ब) नहीं (स) हो (द) सकता

13. शिक्षक ही देश को भ्रष्टाचार से मुक्त कर सकता है।

(अ) ही **(ब)** को **(स)** से **(द)** है

14. तुमने पत्र तक नहीं लिखा।

(अ) पत्र **(ब)** तक **(स)** नहीं **(द)** लिखा

15. नाटक में राम भर ने मेरा साथ दिया है।

(अ) में **(ब)** भर **(स)** साथ **(द)** इनमें से कोई नही

उत्तरमाला

1. ब **2.** द **3.** अ **4.** ब **5.** अ **6.** ब **7.** अ

8. अ **9.** अ **10.** द **11.** ब **12.** अ **13.** अ **14.** ब

15. ब

14

विराम चिह्न

1. **निर्देशक चिह्न का उचित प्रयोग है-**
   (अ) प्रेमचंद-एक अध्ययन **(ब)** राम-भाई ! भरत इधर आओ।
   (स) सुबह-शाम **(द)** रमेश बोला-तुमने ठीक कहा।
2. **विराम चिह्न मुख्यत कितने प्रकार के होते हैं-**
   (अ) ५ **(ब)** ६ **(स)** ४ **(द)** २
3. **योजक चिह्न का उचित प्रयोग है-**
   (अ) कभी-कभी
   (ब) हिन्दी साहित्य के सूर्य-सूरदास जन्ममान्ध थे।
   (स) नई कहानी-कुछ प्रश्न
   (द) हाँ-मैं यह काम अवश्य करुँगा।
4. **लाघव चिह्न का प्रयोग किया जाता है, जब लिखना हो-**
   (अ) शब्दों का विस्तृत रूप **(ब)** शब्दों का संक्षिप्त रुप
   (स) शब्दों का पृथक रूप **(द)** शब्दों का मूल रूप
5. **'गीता' एक धार्मिक ग्रंथ है। रेखाकिंत वाक्य में चिह्न है-**
   (अ) लाघव **(ब)** उद्धरण **(स)** अर्द्धविराम **(द)** अल्पविराम
6. **निराला जी की कविता भिक्षुक में लिखा है। इस वाक्य में उद्धरण चिह्न किस शब्द पर लगेगा।**
   (अ) निराला **(ब)** भिक्षुक **(स)** कविता **(द)** पूरे वाक्य में
7. **संबोधन को शेष वाक्य से अलग करने के लिए प्रयोग होता है।**
   (अ) अर्द्धविराम **(ब)** अल्पविराम
   (स) पूर्णविराम **(द)** विस्मयसूचक
8. **अल्पविराम का प्रयोग-**
   (अ) वाक्य के अंत में होता है **(ब)** वाक्य के पूर्व होता है
   (स) वाक्य के मध्य में होता है **(द)** कहीं नहीं होता।
9. **जहाँ अल्पविराम से अधिक लेकिन पूर्ण विराम से कुछ कम रुकने की आवश्यकता हो, वहाँ प्रयोग किया जाता है-**
   (अ) अर्द्धविराम **(ब)** अल्पविराम
   (स) कोष्ठक **(द)** पूर्ण विराम

10. वाह आप खूब हैं वाक्य में चिह्न का प्रयोग होगा–

(अ) प्रश्नसूचक **(ब)** विस्मयसूचक

(स) पूर्ण विराम **(द)** अल्पविराम

11. सम्बोधन के लिए प्रयोग किया जाता है–

(अ) विराम चिह्न **(ब)** उद्धरण चिह्न

(स) विस्मय चिह्न**(द)** योजक चिह्न

12. संदेह या अनिश्चय की स्थिति में प्रयोग होता है–

(अ) प्रश्न सूचक **(ब)** विराम सूचक,

(स) विस्मय सूचक **(द)** लाघव सूचक

13. वाक्य पूर्ण होने पर लगाया जाता है–

(अ) अल्पविराम **(ब)** पूर्णविराम

(स) अर्द्धविराम **(द)** हंसपद

14. राम–तुम अब पढ़ो। रिक्त स्थान में लगेगा–

(अ) विरामचिह्न **(ब)** लाघवचिह्न **(स)** हंसपद **(द)** सम्बोधक

15. राजा (उदास होकर) इसमें चिह्न लगा है–

(अ) पूर्ण विराम **(ब)** कोष्ठक

(स) अल्पविराम **(द)** कुछ नहीं

16. घाट-घाट का शब्द में चिह्न लगा है–

(अ) निर्देशक **(ब)** योजक

(स) लाघव **(द)** कोष्ठक

17. आपको क्या काम है? वाक्य में चिह्न है–

(अ) पूर्णविराम **(ब)** प्रश्नवाचक

(स) अल्पविराम**(द)** अर्द्धविराम

18. कृ.पृ.उ. में लगा चिह्न है–

(अ) अल्पविराम **(ब)** पूर्ण विराम

(स) लाघव **(द)** हंसपद

19. सही चिह्न वाला वाक्य छाँटिए–

(अ) सिन्धु–सा विस्तृत और अथाह **(ब)** सदा सत्य बोलो!

(स) 'उसे' पढ़ने दो। **(द)** तुम जाओ?

20. सही जोड़ी छाँटिए–

(अ) तुम आ गए – पूर्णविराम

(ब) तुलसीकृत रामचरितमानस – विस्मयसूचक

(स) तुम क्या पढ़ रहे हो – विराम

(द) सेब, आम, केला – पूर्णविराम

विराम चिह्नों के सही नाम चुनिए-

21. प्रश्न सूचक वाक्यों का चिह्न है-

(अ) (.......) (ब) ( ) (स) । (द) ?

22. (;') चिह्न है-

(अ) योजक (ब) हँसपद (स) अपूर्ण विराम (द) निर्देशक

23. 'वह कष्ट सहता रहा....लोग आनंद लेते रहे।' रिक्त स्थान में चिह्न लगेगा-

(अ) । (ब) ! (स) ? (द) ;

24. (:-)

(अ) योजक चिह्न (ब) विवरण चिह्न

(स) हंसपद चिह्न (द) कोष्ठक चिह्न

25. (-)

(अ) योजक चिह्न (ब) विस्मय चिह्न

(स) कोष्ठक चिह्न (द) संयोजक चिह्न

26. ( )

(अ) कोष्ठक चिह्न (ब) हंसपद चिह्न

(स) विवरण चिह्न (द) योजक चिह्न

27. (" ")

(अ) उद्धरण चिह्न (ब) उदाहरण चिह्न

(स) विशेष चिह्न (द) कोष्ठक चिह्न

28. (?)

(अ) आश्चर्य चिह्न (ब) प्रश्नसूचक चिह्न

(स) कोष्ठक चिह्न (द) विस्मय चिह्न

29. (,)

(अ) अल्पविराम चिह्न (ब) अर्धविराम चिह्न

(स) विवरण चिह्न (द) लाघव चिह्न

30. (।)

(अ) अर्धविराम चिह्न (ब) पूर्णविराम चिह्न

(स) अल्पविराम चिह्न (द) हंसपद चिह्न

31. (!)

(अ) संकेत चिह्न (ब) विस्मयादिसूचक चिह्न

(स) प्रश्न चिह्न (द) विस्मय चिह्न

32. (०)

(अ) कोष्ठक चिह्न (ब) लाघव चिह्न

(स) शून्य चिह्न (द) निर्देशक चिह्न

33. **(,)**

(अ) विवरण चिह्न **(ब)** अल्पविराम चिह्न

(स) लाघव चिह्न **(द)** कोष्ठक चिह्न

उत्तरमाला

1. ब	**2.** अ	**3.** अ	**4.** अ	**5.** ब	**6.** ब	**7.** ब
8. स	**9.** अ	**10.** ब	**11.** स	**12.** अ	**13.** ब	**14.** द
15. ब	**16.** ब	**17.** ब	**18.** स	**19.** अ	**20.** ब	**21.** द
22. ब	**23.** द	**24.** ब	**25.** अ	**26.** ब	**27.** अ	**28.** ब
29. ब	**30.** ब	**31.** ब	**32.** ब	**33.** ब		

15

पद परिचय

1. **वाक्य में प्रयुक्त होने वाले शब्द कहलाते हैं –**
   (अ) वाक्य (ब) पद (स) वाक्यांश (द) भाषा

   रेखांकित शब्दों का पद बताइए –
2. **बाल्मीकि आदि कवि थे।**
   (अ) विशेषण पद (ब) सर्वनाम पद
   (स) संज्ञा पद (द) क्रिया विशेषण पद
3. **महान व्यक्ति परोपकार भाव से रहते हैं।**
   (अ) संज्ञा पद (ब) विशेषण पद
   (स) अव्यय पद (द) क्रिया पद
4. **जीओ और जीने दो।**
   (अ) संज्ञा पद (ब) क्रिया पद
   (स) सर्वनाम पद (द) क्रिया विशेषण पद
5. **अपनी बात ढंग से कहो।**
   (अ) क्रिया पद (ब) विशेषण पद
   (स) क्रिया विशेषण पद (द) सर्वनाम पद
6. **मैं अपनी सम्पत्ति नहीं दूँगी।**
   (अ) सर्वनाम पद (ब) संज्ञा पद
   (स) विशेषण पद (द) क्रिया विशेषण पद
7. **राम श्याम के साथ जा रहा है।**
   (अ) क्रिया पद (ब) संज्ञा पद
   (स) सम्बन्ध बोधक पद (द) विशेषण पद
8. **आजकल सीधों को कोई नहीं पूछता।**
   (अ) संज्ञा (ब) सर्वनाम
   (स) विशेषण (द) क्रिया विशेषण
9. **दूध में कुछ है।**
   (अ) सर्वनाम (ब) विशेषण
   (स) क्रिया विशेषण (द) क्रिया

10. बहुत काम करना है।
(अ) सम्बन्धबोधक (ब) संज्ञा (स) सर्वनाम (द) विशेषण

11. राम और श्याम पढ़ रहे हैं।
(अ) संज्ञा (ब) सर्वनाम (स) क्रिया विशेषण (द) समुच्चय बोधक

12. अच्छा! तुमने अभी तक पढ़ना शुरू नहीं किया।
(अ) संबंधबोधक (ब) समुच्चयबोधक
(स) विस्मयादि बोधक (द) निपात

13. वह दौड़ रहा है।
(अ) सर्वनाम (ब) संज्ञा (स) विशेषण (द) अव्यय

14. राम आगे चल रहा था।
(अ) संज्ञा (ब) सर्वनाम
(स) विशेषण (द) क्रिया विशेषण

15. इन्हें एक-एक कर बुलाओ।
(अ) संज्ञा (ब) सर्वनाम
(स) अव्यय (द) क्रिया विशेषण

16. मुझे केवल आपसे चर्चा करना है।
(अ) संज्ञा (ब) विशेषण
(स) क्रिया विशेषण (द) समुच्चय बोधक

17. ऐसों के पास मत जाना।
(अ) संज्ञा (ब) सर्वनाम
(स) विशेषण (द) क्रिया विशेषण

18. ऊपर कोई गया है।
(अ) संज्ञा (ब) सर्वनाम
(स) विशेषण (द) अव्यय

19. और लोग कहाँ गए।
(अ) सर्वनाम (ब) विशेषण
(स) संज्ञा (द) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला

1. ब	**2.** स	**3.** ब	**4.** ब	**5.** स	**6.** अ	**7.** स
8. अ	**9.** अ	**10.** द	**11.** द	**12.** स	**13.** अ	**14.** द
15. द	**16.** द	**17.** ब	**18.** ब	**19.** ब		

16

परिभाषाओं के दर्पण में

---

1. **भाषा** : भाषा वह माध्यम है, जिसके अनुसार हम अपने भावों और विचारों को बोलकर या लिखकर प्रकट करते हैं।
2. **बोली** : क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली भाषा बोली कहलाती है।
3. **लिपि** : भाषा के लिखित रूप में जिन ध्वनि-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उसे लिपि कहते हैं।
4. **वर्ण** : भाषा की सबसे छोटी ध्वनि को वर्ण कहते हैं।
5. **वर्णमाला** : वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।
6. **स्वर** : जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है, स्वर कहलाते हैं।
7. **व्यंजन** : स्वरों की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण, व्यंजन कहलाते हैं।
8. **संयुक्त व्यंजन** : दो या दो से अधिक व्यंजनों के संयोग से बनने वाले व्यंजन- उदाहरण : क् + ष = क्ष
9. **हलंत** : स्वर रहित वर्ण के नीचे लगी टेढ़ी रेखा हलंत (्) कहलाती है।
10. **बलाघात** : शब्द के उच्चारण में किसी अक्षर पर तथा वाक्य में किसी शब्द पर दिया जाने वाला बल, बलाघात है।
11. **शब्द** : सार्थक वर्ण समूह को शब्द कहते हैं।
12. **विकारी शब्द** : ऐसे शब्द जो लिंग, वचन तथा काल से प्रभावित होते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा विशेषण विकारी शब्द कहलाते हैं।
13. **अविकारी शब्द** : ऐसे शब्द जो लिंग, वचन तथा काल से प्रभावित नहीं होते हैं। ये अपने मूल रूप में ही प्रयोग किए जाते हैं। क्रिया-विशेषण, समुच्चयबोधक, संबंधबोधक, विस्मयादिबोधक तथा निपात अविकारी शब्द हैं।
14. **संज्ञा** : किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, स्थान, स्थिति या भाव को संज्ञा कहते हैं।
15. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** : जो शब्द किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराते हैं।
16. **जातिवाचक संज्ञा** : जो शब्द अपनी संपूर्ण जाति का बोध कराते हैं।
17. **भाववाचक संज्ञा** : जो शब्द गुण, दोष, भाव, दशा, व्यापार या मन के भाव का बोध कराते हैं।

18. लिंग : संज्ञा के पुरुष जाति या स्त्री जाति का बोध कराने वाला रूप लिंग कहलाता है।

19. वचन : संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिससे उनके एक या अधिक होने का बोध हो।

20. कारक : संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में आए अन्य शब्दों से जाना जाए।

21. सर्वनाम : संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

22. पुरुषवाचक संज्ञा : बोलने वाले, सुनने वाले और अन्य पुरुष के लिए प्रयुक्त सर्वनाम; जैसे - मैं, हम, तुम, वह आदि

23. निश्चयवाचक सर्वनाम : जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति या वस्तु का निश्चयपूर्वक बोध हो; जैसे-यह, वह आदि।

24. अनिश्चयवाचक सर्वनाम : अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु के स्थान पर प्रयुक्त सर्वनाम; जैसे - कोई, कुछ, किसी आदि

25. प्रश्नवाचक सर्वनाम : प्रश्न के रूप में प्रयुक्त सर्वनाम; जैसे- कौन, क्या

26. संबंधवाचक सर्वनाम : वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम से संबंध बताने वाला सर्वनाम; जैसे- जो- सो, जैसा-वैसा, जिसका-उसका आदि।

27. निजवाचक सर्वनाम : जो सर्वनाम कर्ता अपने लिए प्रयोग करता है; जैसे-अपने आप।

28. विशेषण : वे शब्द, जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताए।

29. विशेष्य : जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाए, उस शब्द को विशेष्य कहते हैं।

30. गुणवाचक विशेषण : जो विशेषण शब्द रंग, रूप, गुण, दोष संबंधी विशेषता बताते हैं।

31. संख्यावाचक विशेषण : जो विशेषण शब्द, संख्या संबंधी विशेषता बताते हैं।

32. परिमाणवाचक विशेषण : जो विशेषण शब्द, वस्तु की मात्रा या माप-तौल संबंधी विशेषता का बोध कराने वाले शब्द।

33. सार्वनामिक विशेषण : जो सर्वनाम शब्द विशेषण की तरह संज्ञा की विशेषता बताते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण या संकेतवाचक विशेषण कहते हैं।

34. क्रिया : जिन शब्दों से किसी काम का करना या होना पाया जाए, वे क्रिया कहलाते हैं।

35. **धातु** : क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है।
36. **अकर्मक क्रिया** : जिस क्रिया में कर्म की आवश्यकता न हो।
37. **सकर्मक क्रिया** : जिस क्रिया में कर्म उपस्थित हो।
38. **एककर्मक क्रिया** : जिस क्रिया का केवल एक कर्म हो।
39. **द्विकर्मक क्रिया** : जिस क्रिया में में दो कर्म हों।
40. **प्रेरणार्थक क्रिया** : वह क्रिया जिसे कर्ता स्वयं न करके किसी दूसरे से करवाता है या दूसरे को करने की प्रेरणा देता है।
41. **संयुक्त क्रिया** : जब दो या दो से अधिक क्रियाएँ मिलकर एक पूर्ण क्रिया बनाती हैं।
42. **नामधातु क्रिया** : संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों के अंत में प्रत्यय लगाकर बनने वाली क्रियाएँ। जैसे 'बात' से 'बताना', 'गरम' से 'गरमाना' आदि।
43. **पूर्वकालिक क्रिया** : मुख्य क्रिया के पूर्व आने वाली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है।
44. **अनुकरणात्मक क्रिया** : वे क्रिया शब्द जो किसी ध्वनि के अनुकरण पर बनते हैं। जैसे -खटखट से खटखटाना, थपथप से थपथपाना आदि।
45. **काल** : क्रिया के जिस रूप से काम होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं। काल का अर्थ है - समय।
46. **भूतकाल** : समय जो बीत गया।
47. **वर्तमानकाल** : समय जो चल रहा है।
48. **भविष्यकाल** : समय जो अभी आएगा।
49. **वाच्य** : क्रिया का वह रूप जिससे पता चले कि वाक्य में क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है या भाव।
50. **क्रिया-विशेषण** : क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।
51. **कालवाचक क्रिया-विशेषण :** क्रिया की काल संबंधी विशेषता बताते हैं।
52. **स्थानवाचक क्रिया-विशेषण :** क्रिया की स्थान संबंधी विशेषता बताते हैं।
53. **रीतिवाचक क्रिया-विशेषण :** क्रिया की रीति संबंधी अर्थात क्रिया के होने के ढंग बताते हैं।
54. **परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण :** क्रिया की परिमाण अर्थात मात्रा संबंधी विशेषता का बोध कराते हैं।

55. **संबंधबोधक** : वह अव्यय जो संज्ञा या सर्वनम का वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ संबंध बताता है।

56. **समुच्चयबोधक** : वह शब्द जो दो शब्दों, पदबंधों या वाक्यों को परस्पर जोड़ता है।

57. **विस्मयादिबोधक** : वे शब्द जो हर्ष, शोक, घृणा, विस्मय आदि का भाव व्यक्त करते हैं।

58. **निपात** : ऐसे अव्यय जो पद के बाद जुड़कर उसके अर्थ में विशेष बल प्रदान करते हैं।

59. **पर्यायवाची शब्द** : एक दूसरे से मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द पर्यायवाची शब्द या समानार्थक शब्द कहलाते हैं।

60. **अनेकार्थी शब्द** : जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

61. **विलोम शब्द** : कुछ शब्द के अर्थ एक दूसरे के विपरीत अर्थात उलटे होते हैं, ऐसे शब्द विलोम शब्द या विपरीतार्थक शब्द कहलाते हैं।

62. **युग्म शब्द** : जिन शब्दों का जोड़े में प्रयोग किया जाता है; जैसे-दिन-रात, साथ-साथ।

63. **उपसर्ग** : वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के आरंभ में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं तथा उनके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं।

64. **प्रत्यय** : वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं तथा उनके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं।

65. **संधि** : दो वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार होता है, उसे संधि कहते हैं।

66. **संधि-विच्छेद** : शब्दों के अलग करने की क्रिया को संधि-विच्छेद कहते हैं।

67. **समास** : दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक नवीन या सार्थक शब्द बनाने की विधि समास कहलाती है।

68. **विराम चिह्न** : लिखित भाषा में विभिन्न भावों या विचारों को स्पष्ट करने के लिए प्रयोग किए गए चिह्न, विराम-चिह्न कहलाते हैं।

69. **पद** : वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाते हैं।

70. **पद-परिचय** : वाक्य में आए प्रत्येक शब्द का व्याकरण के आधार पर परिचय देना पद-परिचय कहलाता है।

71. **वाक्य** : पदों (शब्दों) का ऐसा समूह जिसका अर्थ व अभिप्राय स्पष्ट हो, वाक्य कहलाता है।

72. **सरल वाक्य** : जिन वाक्यों में एक विधेय होता है, उन्हें सरल वाक्य कहते हैं।

73. **संयुक्त वाक्य** : जिस वाक्य में दो या दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।

74. **मिश्रित वाक्य** : जिस वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य हो, और अन्य आश्रित उपवाक्य हों, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं।

17

प्रश्न-मंच-प्रतियोगिता

- यह प्रश्नमंच व्याकरण से संबंधित है।
- इसमें किसी कक्षा का कोई भी छात्र किसी एक दल (टीम) में भाग ले सकता है। प्रत्येक टीम में तीन छात्र होंगे।
- यह प्रतियोगिता प्राथमिक/माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अलग–अलग वर्ग बनाकर भी आयोजित की जा सकती है।
- प्रश्नोत्तरी के सभी प्रश्न डॉ. प्रेम भारती लिखित वस्तुनिष्ठ व्याकरण से पूछे जाएँगे।
- यह विद्यालयीन प्रतियोगिता है। इस प्रतियोगिता में यदि टीमों की संख्या 6 से अधिक हुई तो पहले एक लिखित परीक्षा होगी जिसमें 30 बहुविकल्पी प्रश्न दिए जाएँगे, जिनके उत्तर क, ख, ग, घ, लिखकर देने होंगे। प्रत्येक टीम को एक ही प्रश्न–पत्र दिया जाएगा, जिसे 15 मिनिट में तीनों साथी मिलकर हल करेंगे। लिखित परीक्षा का परिणाम वहीं घोषित कर दिया जाएगा। परीक्षा में सर्वाधिक अंक पाने वाले छः टीमों को प्रतियोगिता में शामिल किया जाएगा।
- विजेता टीमें मंच पर बैठेंगी, तथा शेष टीमें मंच के सामने बैठेंगी।
- प्रश्नमंच सम्पन्न कराने में प्रोजेक्टर (L.C.D.) का प्रयोग किया जा सकता है। समय की गणना प्रश्न के पर्दे पर आते ही आरंभ हो जाएगी।
- उत्तर सोचने के लिए केवल एक ही बार 30 सेकण्ड का समय दिया जाएगा। गलत उत्तर पर शून्य अंक मिलेगा, तथा सही उत्तर पर एक अंक और प्रश्न अगली टीम को अग्रेषित कर दिया जाएगा। अग्रेषित प्रश्न के लिए अलग से सोचने का समय नहीं दिया जाएगा, नहीं प्रश्न दोहराया जाएगा।
- किसी भी टीम का कोई एक प्रतिभागी प्रश्न का उत्तर खड़े होकर देगा। आवश्यकता हो तो वह अपनी टीम के अन्य दो साथियों से विचार–विमर्श कर सकता है। प्रतिभागी द्वारा बोला गया उत्तर श्यामपट्ट पर लिखा जाएगा। प्रथम बार दिया उत्तर ही अंतिम होगा। समय–सीमा के भीतर उत्तर बदलने की अनुमति नहीं होगी। सही गलत उत्तर का निर्णय प्राश्निक करेंगे।
- कुल तीन चक्र होंगे। प्रत्येक चक्र में 10 प्रश्न होंगे।
- 6 टीमों में से विजेता प्रथम तीन टीमें द्वितीय चक्र में शामिल रहेंगी। शेष टीमें मंच से हट जाएँगी। विजेता टीमों से क्रमशः प्रत्येक टीम से नौ प्रश्न पूछे जाएँगे। इसे त्वरित चक्र कहा

जाएगा। प्रत्येक टीम के तीन सदस्यों में से प्रत्येक सदस्य को तीन–तीन प्रश्नों के उत्तर व्यक्तिगत् रूप से तत्काल देने होंगे। उत्तर के लिए केवल 2–3 सेकण्ड की प्रतीक्षा की जाएगी।

ठीक उत्तर के दो–दो अंक होंगे। गलत उत्तर के लिए एक अंक काटा जाएगा। मौन रहने पर शून्य अंक दिया जाएगा। ये प्रश्न अग्रेषित नहीं होंगे।

- अंतिम चक्र चुनौती चक्र होगा। इसमें प्रत्येक प्रतिभागी टीम को अपने से आगे वाली टीम से एक प्रश्न पूछने को कहा जाएगा। शर्त यह होगी कि उस प्रश्न का सही उत्तर प्रश्नकर्ता टीम को आता हो। अन्यथा उसके 5 अंक काटे जाएँगे। यदि उत्तरदाता टीम का उत्तर सही है तो उसे 10 अंक प्राप्त होंगे। यदि उत्तर सही नहीं है, और प्रश्नकर्ता टीम ने सही उत्तर दे दिया, तो उत्तरदाता टीम के 10 अंक कटेंगे।
- अंत में तीनों चक्र में सफल टीम को सर्वाधिक अंक पाने पर क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान घोषित किया जाएगा।

<u>प्रतियोगिता हेतु प्रबंध</u>

- प्रतियोगिता समाप्त कराने के लिए एक संयोजक, एक उद्घोषक, एक प्राश्निक, दो मंच सहायक, एक टाइमर, एक स्कोरर होने चाहिए। दो कार्यकर्ता पुस्तक की प्रति सहित मंच के पास रहें।
- कार्यक्रम का एक अध्यक्ष, दो मुख्य अतिथि हों तथा अभिभावक भी आमंत्रित हों तो अच्छा है।
- प्रतियोगिता के तुरंत पश्चात प्रमाण–पत्र दिया जाएगा।
- छः टीमें, जो मंच पर स्थान ग्रहण करेंगी, उन्हें स्वेच्छा से अपना स्थान चुनने की अनुमति रहेगी।
- मंच पर ध्वनि व्यवस्था उत्तम हो।
- यदि कोई उत्तर किसी भी टीम से नहीं प्राप्त हो तो दर्शकों से भी उत्तर प्राप्त करने की चेष्टा करना चाहिए।

मुहावरों और लोकोक्तियों का खेल

01

मुहावरा शब्द से आशय

एक आदमी ने अपने बेटे को दर्जी का काम सीखने के लिए एक दुकान पर भेजा। जब दो माह बीत गए, तो उसने अपने बेटे से पूछा- ''दो महा तुम्हें काम सीखने को हो गए हैं, इन दो महीनों में तुमने क्या सीखो? बेटे ने उत्तर दिया- 'गला काटना सीख गया हूँ, अब जेब काटना सीख रहा हूँ।' पिता-पुत्र का यह संवाद कितना रोचक है। इसको पढ़कर क्या हमें नहीं लगता कि यह एक रोचक प्रसंग है। गला काटना और जेब काटना दोनों ही क्रियाएँ अपना मूल अर्थ खो चुकी हैं। बातचीत में ऐसे प्रयोगरस उत्पन्न कर देते हैं।''

जब किसी कथन का प्रचलित अर्थ को छोड़कर किसी विशिष्ट अर्थ में प्रयोग होता है, तो भाषा में यही वाक्यांश मुहावरा कहलाता है। यही कारण है कि समाज में परिवर्तन के साथ-साथ भाषा का स्वरूप भी बदलता रहता है और मुहावरे भी अपनी परिवर्तन यात्रा जारी रखते हैं।

'मुहावरा शब्द हिन्दी शब्द नहीं है। अरबी भाषा का शब्द है। अरबी भाषा में 'मुहावर' अभ्यास अथवा बातचीत को कहते है। हिन्दी भाषा में आकर मुहावरा एक पारिभाषिक शब्द बन गया। इसका हिन्दी अनुवाद 'वाग्धारा' करने का प्रयास भी किया गया किन्तु धीरे-धीरे 'मुहावरा' शब्द ही प्रचलित हो गया।

किन्तु ध्यान रहे, प्रत्येक प्रकार की बातचीत को हम मुहावरा नहीं कह सकते। मुहावरों की संरचना में भाषाई इकाइयों का व्याकरणिक संयोग नहीं होता। इनका अर्थ वाच्यार्थ से भिन्न होता है तथा बाद में यही कथन-बंध लक्षणा या व्यंजना शब्द-शक्तियों पर आधारित होता है। अर्थ को प्रकट करने वाली इकाइयों के रूप में रूढ़ हो जाता है। यह एक मनोवैज्ञानिक संरचना है जैसे-

दाँत पीसना मुहावरे का मूलार्थ होगा- दाँत से दाँत को रगड़ना।

किन्तु इसका व्यंग्यार्थ है- क्रोध करना।

इस प्रकार प्रत्येक मुहावरे का मूलार्थ एवं व्यंग्यार्थ ठीक से जानने का प्रयत्न करने पर ही हम उसकी संरचना से परिचित हो सकेंगे।

रोचक तथ्य

1. मुहावरे न तो शब्द होते हैं और न वाक्य ही। वे वाक्यांश होते हैं।
2. इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता। किसी प्रसंग के अनुसार ही किया जाता है।
3. मुहावरों का शाब्दिक अर्थ नहीं लिया, विशेष अर्थ ही ग्राह्य है।

02

मुहावरों का महत्व

मानव सभ्यता के विकास में भाषा का एक महत्वपूर्ण स्थान है किन्तु भाषा के विकास में मुहावरों का स्थान एक अतिविशिष्ट घटना है। हिन्दी भाषा में मुहावरों का भाषा में प्रयोग कब से हुआ होगा यह कहना तो संभव नहीं है किन्तु भाषा के प्रयोग में वे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, यह निर्विवाद है।

सामन्ती युग के मुहावरों की अपेक्षा औद्योगिक एवं प्रजातंत्र के युग में भी नए-नए मुहावरों की रचना हुई है। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि सामाजिक विकास के साथ-साथ मुहावरों का भी विकास हुआ है। इस प्रकार मुहावरे समाज की समृद्धि और विकास के द्योतक हैं। जो समाज जितना अधिक सांस्कृतिक एवं राजनैतिक दृष्टि से परिपक्व होगा उस समाज में मुहावरे भी अधिक व्यापक होंगे।

03

मुहावरों के प्रयोग में सावधानियाँ

1. मुहावरों का प्रयोग उनके मूलरूप में किया जाता है, उनके शाब्दिक अर्थ में नहीं। जैसे- लोहे के चने चबाना यह मुहावरा 'बहुत कठिन काम' के रूप में प्रयोग होता है। जबकि इसका शाब्दिक अर्थ कुछ और है।
2. मुहावरा अपने आप में स्वतंत्र नहीं होता, वह जब वाक्य में प्रयोग किया जाता है, तो वाक्य में इस प्रकार घुल मिल जाता है कि वह पूर्ण वाक्य का एक अंग बन जाता है।
   जैसे- दाँत खट्टे करना (मुहावरा)
   प्रयोग- शिवाजी ने मुगलों की सेना के दाँत खट्टे कर दिए।
   यहाँ मुहावरा 'दाँत खट्टे करना' प्रयोग में वाक्य का एक अंश बन गया है, जो शिवाजी का मुगलों को बार-बार हराने की बात कहता है।
3. क्रिया युक्त मुहावरों के अंत में 'ना' आता है जैसे 'फूलकर कुप्पा होना' किन्तु वाक्य में प्रयोग करते समय क्रिया का रूप लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार बदल जाता है। जैसे-
   वह फूलकर कुप्पा हो गया। (पुल्लिंग)
   वह फूलकर कुप्पा हो गई। (स्त्रीलिंग)
4. मुहावरों का प्रयोग इस प्रकार करना चाहिए कि उससे भाव स्पष्ट हो जाए अर्थात् केवल प्रयोग के लिए मुहावरों का प्रयोग करना उचित नहीं। 'ईंट से ईंट बजा देना' का विशिष्ट भाव है- युद्ध में सब कुछ नष्ट कर देना। यदि हम एक ईंट से दूसरी ईंट बजाना'- इस सामान्य अर्थ में इसका प्रयोग करें तो यह अनुचित होगा। मुहावरों को अपने विशिष्ट भाव में ही प्रयोग करना चाहिए।
5. मुहावरों का प्रयोग किसी प्रसंग या संदर्भ में ही करना चाहिए।
6. मुहावरों का प्रयोग अपने असली रूप में ही करना चाहिए। पर्यायवाची शब्दों में उसका प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। जैसे - सिर दर्द मोल लेना के स्थान पर 'शीश-पीड़ा के लिए मूल्य चुकाना' नहीं कहा जा सकता।
7. मुहावरे के लिए लोक-स्वीकृति की छाप अनिवार्य है। कोई व्यक्ति मुहावरा बनाने का दावा नहीं कर सकता। मुहावरे बनते-बनते बन जाते हैं और लोभ में प्रचलित होने पर उसका पता चलता है।

8. यद्यपि मुहावरों के शब्द निश्चित होते हैं और उनमें प्रयुक्त शब्दों को परिवर्तित करने की छूट नहीं रहती किंतु वाक्य में प्रयुक्त होने की आवश्यकतानुसार उनमें रूपांतरण हो सकता है। जैसे–

मुहावरा – आबरू पर पानी फिरना।

प्रयोग – दहेज लोभी की बारात लौटाकर वधु ने वर–पक्ष की आबरू पर पानी फेर दिया।

04

मुहावरों पर आधारित गतिविधियाँ

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हिन्दी के अधिकांश मुहावरों का संबंध शरीर के अंगों से है। यही कारण है कि मुँह, कान, नाक, हाथ अथवा पैर आदि पर अनेक मुहावरे प्रचलित हैं। हमारे जीवन की अनेक घटनाएँ इन्हीं के सहारे चलती रहती है।

मुहावरों का खेल कई प्रकार से खेला जा सकता है कक्षा अध्यापक अपनी-अपनी कक्षा में इसे बताएँ कि उन्हें कैसे खेलना है यहाँ शरीर के अंगों के आधार पर एक खेल का उदाहरण दिया जा रहा है-

1. खेल में पाँच या छः बालकों का एक समूह रहेगा। एक बुद्धिमान बालक प्रत्येक समूह में हो जो समूह का नेतृत्व करे।
2. इस खेल में अपनी बारी आने पर प्रत्येक समूह को शरीर के अंगों से संबंधित एक-एक मुहावरा कहना है।
3. एक दूसरे का स्वर ठीक से सुन सके समूह को इस प्रकार बैठाना है।
4. एक व्यक्ति का चित्र कुछ दूरी पर इस प्रकार रखें कि प्रत्येक समूह की दृष्टि उस पर पड़े। चित्र में सिर से लेकर पैर तक जितने भी अंग है, उनके नाम यथा स्थान लिखे जाए।
5. पहला समूह मुहावरा सिर से प्रारम्भ करें। सभी समूहों का एक चक्र पूरा होने पर सिर के बाद आँख-आँख के बाद नाम आदि के क्रम से समूह को पुनः एक-एक अंग पर एक मुहावरा बोलना है।
6. जो समूह आधे मिनट के समय में एक मुहावरा बोलने में असमर्थ रहे, उसे शून्य अंक दिया जाए।
7. जितने शून्य अधिक होंगे, वह समूह हार जाएगा।
8. प्रतियोगिता तब तक चलेगी जब तक हारे हुए समूह एक-एक कर प्रतियोगिता से बाहर नहीं हो जाएं। अंतिम बचे दो समूहों में खेल बहुत रोचक हो उठता है। पैर तक मुहावरे पूरे होने के बाद खेल सिर के मुहावरों से पुनः प्रारम्भ हो सकता है।
9. शिक्षक चित्र के पास खड़े होकर, बालकों को शीघ्रता का संकेत देते है। जो समूह उत्तर नहीं दे पाते, उन्हें शून्य अंक देते हैं। अन्त तक रहने वाला समूह विजेता घोषित होता है।

05

सिर संबंधी मुहावरे

1. सिर उठाना। (विद्रोह करना)

प्रयोग- अन्याय के विरुद्ध सिर उठाने वालों की सदैव हत्या कर दी जाती है।

2. सिर नीचा होना। (अपमानित होना)

प्रयोग- अब तुम्हें ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए, जिससे दूसरों के सामने सिर नीचा हो।

3. सिर चढ़ना। (मुँह लगना)

प्रयोग- वह अफसर के सिर चढ़ा है, इसलिए अकड़कर बात करता है।

4. सिर पीटना। (पश्चाताप करना)

प्रयोग- जब पढ़ाई करना थी, की नही, अब सिर पटकने से क्या लाभ?

5. सिर मारना। (समझाते-समझाते परेशान हो जाना)

प्रयोग- मैंने उसे गणित समझाने में बहुत सिर मारा, लेकिन उसकी समझ में कुछ नहीं आया।

6. सिर पर लेना (जिम्मेदारी लेना)

प्रयोग- पिता की मृत्यु के पश्चात उसके पालन पोषण का भार उसके काका ने अपने सिर पर ले लिया।

7. सिर सूँघना (आशीष देना)

प्रयोग- माताएँ अपने बच्चों को जाते समय सिर सूँघती हैं।

8. सिर हिलाना (मना करना)

प्रयोग- सिर हिलाने से काम नहीं चलेगा, जो कहना है सामने कहो।

9. सिर से बला टलना (मुसीबत टलना)

प्रयोग- जैसे तैसे सिर से बला टले, तो चैन मिले।

10. सिर से पानी गुजरना (हद से गुजर जाना)

प्रयोग- अब उसकी शरारत सिर से पानी की तरह गुजर गई है, अब कुछ कठोर निर्णय लेना ही पड़ेगा।

11. सिर से खेल जाना (प्राणों की चिन्ता न करना)

प्रयोग- देश की रक्षा के लिए सिर पर खेल जाना ही परम कर्तव्य है।

12. सिर पर खून सवार होना (किसी को जान से मारने पर उतारू होना)

प्रयोग- उस समय उसके सिर पर खून सवार हो गया था।

13. सिर पर सेहरा बाँधना (शाबासी मिलना)

14. सिर पर मौत नाचना (मृत्यु आना)

प्रयोग– लगता है, उसके सिर पर मौत नाच रही है।

15. सिर पर पाँव रखकर भागना (बहुत तेजी से भागना)

प्रयोग– सिपाही को देखकर चोर सिर पर पाँव रखकर भागा।

16. सिर माथे पर चढ़ाना (स्वीकार होना)

प्रयोग– मैं अपने अध्यापक का हर आदेश सिर माथे चढ़ाता हूँ।

17. सिर पर कोई न होना (कोई सहायता करने वाला न होना)

प्रयोग– जिन बच्चों के सिर पर कोई नहीं होता, उनके बिगड़ने की संभावना अधिक होती है।

18. सिर पर हाथ रखकर रोना (भाग्य को कोसना)

प्रयोग– अभी तुम खूब मौज मस्ती कर लो, जब मैं नहीं रहूँगा, तो सिर पर हाथ रखकर रोना।

19. सिर मुड़ाते ओले पड़े (कार्यारम्भ में विघ्न पड़ना)

प्रयोग– यदि मैं जानता कि सिर मुड़ाते ही ओले पड़ेगे तो चुनाव में भाग नहीं लेता।

20. सिर पर हाथ फेरना (फुसलाना)

प्रयोग– वह बच्चों के सिर पर हाथ फेरकर उनका अपहरण कर लेता है।

21. सिर पटकना (पछताना)

प्रयोग– तुमने उसे व्यर्थ ही ऋण दिया, अब वह नहीं लौटा रहा है, तो सिर पटकने से क्या लाभ?

22. सिर ओखली में देना (मुसीबत में पड़ना)

प्रयोग– जब सिर ओखली में दिया ही है तो घबराना कैसा।

23. सिर छिपाना (किसी को मुँह न दिखलाना)

प्रयोग– अंग्रेजों के समय क्रांतिकारी सिर छिपाते फिरते थे।

24. सिर के बल चलना (सम्मान करना)

प्रयोग– भगवान के दर्शन के लिए मैं सिर के बल भी चल सकता हूँ।

25. सिर को उतार लेना (सिर काटना)

प्रयोग– विद्रोहियों के सिर उतार लेंगे, तभी सब ठीक होगा।

26. सिर उठाने की फुरसत न होना (समय का अभाव)

प्रयोग– अब तुम्हारे अच्छे दिन आ गए, अब तो तुम्हें सिर उठाने की भी फुरसत नही है।

27. सिर पर कफन बाँधना (बलिदान के लिए तैयार)

प्रयोग– सैनिक युद्धभूमि में सिर पर कफन बाँधकर लड़ते है।

28. सिर दर्द मोल लेना (अपने को झंझट में डालना)

प्रयोग– उससे दुश्मनी मोल लेकर तुमने सिर दर्द मोल ले लिया।

29. सिर आँखों पर बिठाना (आदर करना)

प्रयोग– मैं अपने माता–पिता को सिर आँखों पर बिठाता हूँ। उनसे मुझे सदैव आशीर्वाद मिलता है।

30. सिर पर सवार होना (पीछे पड़ना)

प्रयोग– जाओ, अपना काम करो हर वक्त मेरे सिर पर सवार मत हो।

06

आँख से सम्बद्ध मुहावरे

1. आँख की किरकिरी (खटकने वाला व्यक्ति)

प्रयोग– वह मुझे अपने आँख की किरकिरी समझता है, पर मैं वैसा नहीं हूँ।

2. आँख का अंधा गांठ का पूरा (मूर्खधनी व्यक्ति)

प्रयोग– मनोहर भी आँख का अंधा और गाँठ का पूरा है, तभी तो उसने घाटे वाले व्यापार में साझा कर लिया।

3. आँखे ऊँची न होना (शर्मिन्दा होना)

प्रयोग– अपराध प्रवृत्ति वाले व्यक्ति की आँखे ऊँची नहीं होती

4. आँखे खुलना (सचेत होना)

प्रयोग– गाँधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन से अँग्रेजी शासको की आँखे खुल गई।

5. आँखों से गिर जाना (सम्मान खो देना)

प्रयोग– जब से शिक्षक ने केशव को नकल करते देखा, वह उनकी आँखों से गिर गया।

6. आँख उठाकर न देखना (अवहेलना करना)

प्रयोग– मुझे पता नहीं था कि तुम आँख उठाकर भी न देखोंगे, वरना मैं तुम्हारे पास नहीं आता।

7. आँख का तारा (बहुत प्रेमी)

प्रयोग– हर संतान अपनी माँ की आँखों का तारा होती है।

8. आँखों के आगे अँधेरा छाना (दु:ख के समय निराश होना)

प्रयोग– अचानक नौकरी से हटाने से मनोहर की आँखों के सामने अंधेरा छा गया।

9. आँखों से खून उतरना (क्रोध आना)

प्रयोग– बेटे की काली करतूते सुनकर पिता की आँखों में खून उतर आया।

10. आँख का अंधा गाँठ का पूरा (धनवान मूर्ख)

प्रयोग– राम भी आँख का अंधा और गाँठ का पूरा है, तभी तो उसने अपनी सारी दौलत जुआ खेलने में लगा दी।

11. आँख कान खुले रखना (सावधान रहना)

प्रयोग– आजकल सीधे बने रहने से काम नहीं चलता, आँख कान खुले रखने पड़ते है।

12. आँखे दिखाना (क्रोध करना)

प्रयोग– गिरफ्तार होने के बाद भी चोर पुलिस को आँखे दिखाने लगा।

13. आँखे चुराना (अपने को छिपाना)

प्रयोग - कर्जदार साहूकार से आँख चुराकर निकल जाते है।

14. आँखों पर पर्दा डालना (सही बात को समझ नहीं पाना)

प्रयोग- सत्य पाकर प्रायः नेताओं की आँखों पर पर्दा डल जाता है।

15. आँख का काटा (शत्रु)

प्रयोग- शिवाजी मुगलों की आँख के काँटे थे।

16. आँखे बन्द होना (मर जाना)

प्रयोग- आज सबरे उसके मामा की आँखे बन्द हो गई।

17. आँख फाड़कर देखना (घूरना)

प्रयोग- वह उस लड़की को आँख फाड़कर क्यों देख रहा है।

18. आँख मारना (इशारा करना)

प्रयोग- उसने आँख मारकर अपने दोस्त को बुलाया।

19. आँख मटकाना (संकेत करना)

प्रयोग- मैंने सैर सपाटे पर चलने के लिए प्रकाश को आँख मटकाई।

20. आँखें फेर लेना (पर्वाह न करना)

प्रयोग- स्वार्थी लोग अपना काम निकलते ही आँख फेर लेते हैं।

21. आँखों में खटकना (बुरा लगना)

प्रयोग- चोर पुलिस की आँखों में खटकता है।

22. आँख में पानी न होना (बेशर्म होना)

प्रयोग- तुम्हारी आँख में पानी नहीं है, तभी तो पिताजी से इस प्रकार झगड़ रहे हों।

23. आँखों से गिरना (सम्मान घटना)

प्रयोग- जब किसी व्यक्ति की चालाकी का भण्डा फोड़ होता है, तो वह दूसरों की आँखों से गिर जाता है।

24. आँख में चुभना (बुरा लगना)

प्रयोग- देखते नहीं: रमेश सबकी आँखो में कैसा चुभता है?

25. आँख लड़ जाना (प्रेम होना)

प्रयोग- देखते-देखते उसकी आँखे क्या लड़ी, उसे न रात को नींद आती है, न दिन को चैन।

26. आँख लजाना (शर्मिन्दा होना)

प्रयोग- शादी में दुलहन की आँखे भले ही लजाती हो बाद में वह पति के साथ घूमने में नहीं लजाती।

27. आँखों में धूल झोंकना (सरासर धोखा देना)

प्रयोग- वह तस्कर पुलिस की आँखों में धूल झोंक रहा था किंतु आज पकड़ा ही गया।

28. आँखों का काजल चुरा लेना (चोरी करने में निपुण)

प्रयोग– जो आँखों का काजल चुरा लेने में माहिर हो, उसे पुलिस क्या पकड़ेगी।

29. आँखों देखा न कानों सुना (आश्चर्य होना)

प्रयोग– वैज्ञानिकों ने ऐसे कई आविष्कार किए है जो पहले आँखों देखा न कानों सुना।

30. आँखों देखी कहना (स्वयं देखकर वर्णन करना)

प्रयोग– मैं आँखों देखी कहता हूँ सुनी सुनाई नहीं।

31. आँखों में बसना (दिल में रहना)

प्रयोग– मीरा की आँखों में बसते थे श्रीकृष्ण।

32. आँखे खुलना (होश में आना)

प्रयोग– जब राम के घर चोरी हो गई, तो उसकी आँखे खुली।

33. आँखे चार होना (परस्पर प्रेम हो जाना)

प्रयोग– जब राजा दुष्यन्त कष्व ऋषि के आश्रम पर आए तो शकुन्तला से उनकी आँखे चार हो गई।

34. आँखे नम होना (दु:खी होना)

प्रयोग– गांधीजी की हत्या को सुनकर सारे विश्व की आँखें नम हो गई।

35. आँखे डबडबाना (रोने को होना)

प्रयोग– शैतानी पर मार खाने के भय से छोटे भाई की आँखे डबडबा आई।

36. आँखे बिछाना (बहुत सम्मान करना)

प्रयोग– भारतीय संस्कृति की यह परम्परा है कि वह अतिथियों के स्वागत के लिए आँखे बिछा देते हैं।

37. आँखों में खून उतरना (अत्यधिक क्रोधित होना)

प्रयोग– शत्रु को देखते ही महाराणा प्रताप की आँखों में खून उतर आया।

38. आँख फेर लेना (पहले जैसा प्रेम न रहना)

प्रयोग– दुष्ट और स्वार्थी मनुष्य अपना काम निकल जाने के बाद आँख फेर लेते हैं।

39. फूटी आँखों न देखना (बुरा लगना)

प्रयोग– वह काम ही ऐसा करता है, जिसके कारण कोई उसको फूटी आँखों नहीं भाता।

07

नाक संबंधी मुहावरे

1. नाक ऊँची होना (सम्मान होना)

प्रयोग- तुम्हारे ही कारण विद्यालय की नाक ऊँची हुई है। हम तुम्हें नौकरी से नहीं जाने देंगे।

2. नाक काटना (अपमानित करना)

प्रयोग- अपने बुरी आदतों से सुनील ने अपने माता-पिता की नाक कटवा दी।

3. नाक रगड़ना (अनुनय विनय करना)

प्रयोग- अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए व्यापारी अधिकारियों के सामने नाक रगड़ते हैं।

4. नाक कट जाना (अपमानित करना)

प्रयोग- तुमने गलती की तुम्हारा कुछ न बिगड़ा लेकिन मेरी तो नाक कट गई।

5. नाक का बाल होना (गहरा दोस्त होना)

प्रयोग- नेता का चमचा, उसकी नाक का बाल होता है तभी तो हर बात वह उससे पूछकर करता है।

6. नाक में नकेल डालना (वश में करना)

प्रयोग- पुलिस ने भ्रष्टाचारियों के नाक में नकेल डाल दी।

7. नाक-भौं चढ़ाना (घृणा प्रकट करना)

प्रयोग- दूध में मलाई देखकर बच्चे नाक भौ चढ़ाते हैं।

8. नाक में दम होना (परेशान होना)

प्रयोग- शरारती छात्र अध्यापक की नाक में दमकर देता है।

9. नाक पर गुस्सा होना (बहुत क्रोधी स्वभाव होना)

प्रयोग- छोटी-छोटी बातों पर उसकी नाक पर गुस्सा होता है।

10. नाक की सीध में (बिल्कुल सीधे)

प्रयोग- नाक की सीध में जो मंदिर है वह वहीं मिलेगी।

11. नाको चने चबाना (बहुत परेशान करना/ संकट में डालना)

प्रयोग- मुगलों को शिवाजी ने नाकों चने चबाए।

12. नाक पर मक्खी न बैठने देना (खूब स्वच्छता रखना)

प्रयोग- अस्पताल में नाक में मक्खी नहीं बैठने देते हर दम सफाई होती रहती है।

13. नाक तोड़ देना (खूब पिटाई करना)

प्रयोग – सबने मिलकर सड़क के मजनूं की पिटाई कर दी। अब वह फिर से ऐसा काम नहीं करेगा।

14. नाक पर ऊँगली रखकर बात करना (नाज-नखरे से बात करना)

प्रयोग– उसने कभी नाक पर ऊँगली रखकर बात नहीं की।

15. नाक रखना (प्रतिष्ठा रखना)

प्रयोग– वर्ल्डकप फायनल में पहुँचकर भारतीय टीम ने देश की नाक रख ली।

16. नाक पर गुस्सा (तुरत क्रोधी)

प्रयोग– गुस्सा तो तुम्हारी नाक पर रखा है।

08

कान सम्बद्धी मुहावरे

1. कान ऐंठना (होशयार करना)

प्रयोग- पिता ने कहा जब तक कान ऐंठूँगा नहीं, तुम मानने वाले नहीं।

2. कान का कच्चा होना (दूसरी की सुनी बात पर विश्वास करना)

प्रयोग- वह तो कान का कच्चा है इसलिए हर बात सच्ची मान लेता है। उसकी बात का बुरा मत मानो। जाकर पूछ लो।

3. कान कतरना (मात देना)

प्रयोग- आजकल के बच्चों को आप कम न समझिए, वे अच्छे अच्छों के कान कतरते हैं।

4. कान खड़े हो जाना (चौकन्ना होना)

प्रयोग- पाकिस्तान का व्यवहार देखकर भारत के कान खड़े हो गए।

5. कान खोलना (सावधान करना)

प्रयोग- तुमने आकर मेरे कान खोल दिए, नहीं तो मैं तो ठगी का शिकार हो जाता।

6. कान खुल जाना (आगे के लिए सावधान होना)

प्रयोग- एक बार चोट लगने पर सभी के कान खुल जाते हैं।

7. कान उमेठना (दण्ड या चेतावनी देने के लिए कान मरोड़ना)

प्रयोग- यह बहुत हठी है, कान उमेठने से काम नहीं चलेगा।

8. कान काटना (चालाकी से काम करना)

प्रयोग- राकेश अपनी कार्यक्षमता से अच्छे अच्छों के कान काट रहा है।

9. कान धरना (ध्यान देना)

प्रयोग- अच्छे बालक माता-पिता की बातों पर कान धरते हैं।

10. कान पकड़कर निकाल देना (निरादर करना)

प्रयोग- अगर तुम उल्टी सीधी बाते करोगें तो मैं तुम्हें कान पकड़कर घर से निकाल दूँगा।

11. कान पर जूँ तक न रेंगना (तनिक भी पर्वाह न करना)

प्रयोग- मैं तुमसे रोज जल्दी आने को कहता हूँ किन्तु तुम्हारे कान पर जूँ तक नहीं रेंगती।

12. कान पर हाथ रखना (भयभीत होना)

प्रयोग- आपकी बातें सुनकर बच्चा कान पर हाथ रख रहा है, चुप हो जाएं।

13. कान बंद कर लेना (ध्यान न देना)

प्रयोग – यदि कोई अपशब्द कह रहा हो तो हमें कान बंद कर लेना चाहिए।

14. कान बहरा करना (सुना-अनसुना करना)

प्रयोग- शिक्षक छात्रों की हर बात पर ध्यान देते है। वे कान बहरा कर नहीं बैठते।

15. कान भर देना (चुगली कर देना)

प्रयोग- मंथरा ने कैकई के कान भरकर श्रीराम को वनवास दिलवा दिया।

16. कान देना (ध्यान से सुनना)

प्रयोग- बच्चों। जरा इधर कान दो।

17. कान में तेल डालकर बैठना (सुनकर भी ध्यान न देना)

प्रयोग- मैंने तुमसे कहा कि मेहनत करो, तभी काम सफल होगा लेकिन तुमने तो कानों में तेल डाल रखा है।

18. कान लगाकर सुनना (ध्यान से सुनना)

प्रयोग- मैं आड़ में छिपकर उनकी बातें कान लगाकर सुनता रहा।

19. कान पकड़ना (गलती मान लेना)

प्रयोग- मैं कान पकड़ता हूँ, भविष्य में यह भूल नहीं दोहराऊँगा।

20. कान में बात डालना (किसी को कोई बात बता देना)

प्रयोग- इस घटना को सुनाकर मैंने आपके कान में बात डाल दी है।

21. कान में फूँकना (चुपके से कुछ कह देना)

प्रयोग- न जाने उनके कान में किसी न क्या फूँक दिया कि मेरी बात सुनते ही नही।

22. कानाफूसी करना (चुपके-चुपके/ धीमे धीमें बात करना)

प्रयोग- मुझे काना-फूसी करना ठीक नहीं लगता।

23. कानों में ऊँगली देना (सुनने को टालना)

प्रयोग- मैं कब से यह बात कह रहा था किन्तु आपने तो कानों में ऊँगली डाल रखी थी।

24. कानों कान खबर न लगना (किसी को ज्ञात न होना)

प्रयोग- सब काम ऐसी चतुराई से होगा कि किसी को कानों कान खबर न होगी।

09

जीभ सम्बद्धी मुहावरे

1. जबान का तेज (झगडालू)

प्रयोग– तुम बताओं , यह व्यक्ति जबान का तेज तो नहीं।

2. जबान खुलना (कुछ कहना)

प्रयोग– लगता है वह कुछ कहना चाहता था किन्तु तुम्हारे सामने उसकी जबान नहीं खुली।

3. जबान पर लाना (कहना)

प्रयोग– मैं अपशब्दों को जबान पर नहीं लाता।

4. जबान पर चढ़ना (किसी के सामने याद आना)

प्रयोग– वह घटना मेरी जबान पर नहीं चढ़ रही है।

5. जबान पर ताला लगाना (चुप रहने के लिए विवश होना)

प्रयोग– मैं सरकारी नौकर हूँ। मेरी तो जबान पर ताला लगा है, मैं क्या बताऊँ?

6. जबान काट कर देना (वायदा करना)

प्रयोग– जब जबान काट कर दी है तो निभाएँगे ही।

7. जबान पर लगाम न होना (बेमतलब बोलते जाना)

प्रयोग– फालतू की बातें मत करो, जबान पर लगाम दो।

8. जबान चलाना(बहुत बोलते रहना)

प्रयोग– अधिक जबान मत चलाइए, वरना पछताओगे।

9. जबान उलट देना (कोई बात कहकर मुकर जाना)

प्रयोग– तुम्हें जबान नहीं उलटनी चाहिए, क्योंकि तुम मंदिर के पुजारी हो।

10. जबान फिसल जाना (इच्छा न होने पर भी बोल देना)

प्रयोग– मैं ऐसा कहना नहीं चाहता था किन्तु मेरी जबान फिसल गई।

11. जबान लड़ाना(बहस करना)

प्रयोग– क्यों व्यर्थ में जबान लड़ा रहे हो? अपने माता-पिता का कुछ तो ख्याल करो।

12. जीभ खोलना (मुख से कहना)

प्रयोग– जब तक जीभ नहीं खोलोंगे, मैं कैसे समझूँगा कि तुम क्या कह रहे हो?

13. जीभ चलाना (बढ़चढ़ के बातें करना)

प्रयोग - मेरे सामने जीभ न चलाओ, मैं तुम्हारी हर आदत से परिचित हूँ।

14. जीभ पर सरस्वती बसना (बोलने की दैवी शक्ति)

प्रयोग– जिसकी जीभ पर सरस्वती बसती हो, उसे किसी बात की चिन्ता नहीं होना चाहिए।

15. जीभ लड़खड़ाना (अच्छी तरह बात न कर सकना)

प्रयोग–

16. जीभ चलाना (व्यर्थ बोलना)

प्रयोग– जीभ चलाना अच्छी बात नहीं है।

10

दाँत संबंधी मुहावरे

1. दाँत तोड़ देना (कठोर दंड देना)

प्रयोग– यदि फिर ऐसी शरारत की तो दाँत तोड़ दूँगा।

2. दाँत निपोरना (गिड़ गिड़ाना)

प्रयोग– उसने अपनी गलती स्वीकार की और दाँत निपोटने लगा।

3. दाँत काटी रोटी होना (घनिष्ठ संबंध होना)

प्रयोग– मोहन से मेरी दाँत काटी रोटी है, चुनाव में मैं उसका विरोध नहीं कर सकता।

4. दाँत खट्टे करना (हरा देना)

प्रयोग– कारगिल युद्ध में भारत के सैनिकों ने पाकिस्तान के सैनिकों के दाँत खट्टे कर दिए।

5. दाँतों तले अँगुली दबाना (आश्चर्य में रह जाना)

प्रयोग– कलाकारों की कलाबाजी देखकर लोगों ने दाँतों तले अँगुली दबा ली।

6. दाँत पीसना (क्रोध करना)

प्रयोग– दाँत क्यों पीस रहे हो, मैंने तो तुमने पूछा वही बताया है।

7. दाँत पीस कर रह जाना (क्रोध को अपने भीतर ही दबाकर रखना)

प्रयोग– अपने पिता की बुराई सुनकर राधेश्याम दाँत पीसकर रह गया।

8. दाँत पर न रखा जाना (बहुत खट्टा होना)

प्रयोग– मेरे दाँत पर कुछ नहीं रखा जा रहा है, अभी डाक्टर को दिखा कर आ रहा हूँ।

9. दाँत बजना (बहुत सर्दी लगना)

प्रयोग– बालक वर्षा में भींग गया है। बेचारे के दाँत बज रहे है।

10. दाँतों में जीभ होना(शत्रुओं से घिरा होना)

प्रयोग– आजकल रात में निकलना ठीक नहीं न जाने कब दाँतों में जीभ आ जाए

11. दाँतो से कौड़ी पकड़ना (बहुत कंजूस होना)

प्रयोग– तुम्हारी मितव्ययता का क्या कहना। दाँत से कौड़ी पकड़ते हो।

12. दाँत दिखाना (खीस काटना)

प्रयोग– खुद ही देर की और अब मुझे दाँत दिखा रहे हो।

13. दाँत गिनना (उम्र पता लगाना)

प्रयोग– कुछ लोग वृद्धावस्था में भी युवा दिखते हैं। ऐसे लोगों के दाँत गिनना आसान काम नहीं।

11

ओंठ संबंधी मुहावरे

1. ओंठ चबाना (क्रोध प्रकट करना/ झुँझलाना)

प्रयोग– एक छात्रा द्वारा छात्र की झूँठी शिकायत करने पर प्रधानाचार्य ओंठ चबाकर रह गए।

2. ओंठों पर लगना (धीरे से बतलाना)

प्रयोग– जब उसने तुम्हें परेशान किया ही है तो ओंठो पर लाने में क्या हर्ज है।

3. ओंठ सी देना (मौन करा देना)

प्रयोग– कुछ धन देकर इसके ओंठ सी देना चाहिए, फिर कुछ नहीं होगा।

12

मुँह संबंधी मुहावरे

1. मुँह में पानी आना (लालच आना)
प्रयोग- रसगुल्ले देखकर मेरे मुँह में पानी आ गया।
2. मुँह उतरना (उदास होना)
प्रयोग- जब रमेश को यह पता चला कि वह अनुत्तीर्ण हो गया है, उसका मुँह उतर गया।
3. मुँह उठाकर कह देना (बिना सोचे बात कह देना)
प्रयोग- यहाँ मुँह उठाकर कुछ भी न कह देना, वरना तुम्हारी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी।
4. मुँह अेधेंरे (बहुत तड़के)
प्रयोग- मुँह अंधेरे ही उठ जाना, वरना ट्रेन छूट जाएगी।
5. मुँह उठाए चले जाना (बिना भय के चले जाना)
प्रयोग- मुँह उठाए कैसे चले आ रहे हो, पहले अनुमति लो फिर आना।
6. मुँह का मीठा (मृदुभाषी)
प्रयोग- श्याम मुँह का, बहुत मीठा है, लेकिन मन में कपट रखता है।
7. मुँह काला करना (कलंकित करना)
प्रयोग- अपनी नीच हरकत से तुमने बुढ़ापे में पिता का मुँह काला कर दिया।
8. मुँह की बात छीनना (सिर्फ अपनी बात करना)
प्रयोग- मैं दिल्ली जाने की बात कहने वाला ही था, आपने मेरे मुँह की बात छीन ली।
9. मुँह खुलकर रह जाना (आश्चर्य चकित रह जाना)
प्रयोग- विज्ञान के करतब देखकर, छात्रों का मुँह खुलकर रह गया।
10. मुँह के तोते उड़ जाना (कह न पाना)
प्रयोग- पहले बहुत जोर से बोल रहे थे, मेरे आते ही तुम्हारे मुँह के तोते क्यों उड़ गए।
11. मुँह खराब होना (अपशब्द कहना)
प्रयोग- उसका मुँह खराब है, उसके मुँह मत लगो।
12. मुँह देखकर बात करना (खुशामद करना)
प्रयोग- महादेव मुँह देखकर बात करने में बड़ा चतुर है।
13. मुँह ताकना (लज्जित होकर ताकना)
प्रयोग- अब मुँह ताकते ही रहोगें क्या? पहले सोच लिया होता।

14. मुँह की रोटी छीनना (आजीवन से वंचित रहना)

प्रयोग– किसी के मुँह की रोटी छीनने वाला व्यक्ति महान पापी होता है।

15. मुँह फुलाना (क्रोधित होना)

प्रयोग– राधेलाल की पत्नी अधिकतर मुँह फुलाए रहती है।

16. मुँह तोड़ जवाब देना (बदले में करारी चोट करना)

प्रयोग– भारतीय सैनिक दुश्मन को मुँह तोड़ जवाब देते हैं।

17. मुँह फैलाना (लोभ करना)

प्रयोग– माँगने वाले तो मुँह फैलाते ही हैं, तुम्हे जो देना हो दे दो भाई।

18. मुँह बन्द कर देना (चुपकर देना)

प्रयोग– तुम अपना मुँह बन्द कर लो, वरना पिटोगे।

19. मुँह पर ताला लगाना (बोलने की स्वतंत्रता छिनना)

प्रयोग– अभी तो वह बोल भी नहीं पाया था कि रमेश के आते ही उसके मुँह पर ताला लग गया।

20. मुँह बिचकाना (अप्रसन्नता प्रकट करना)

प्रयोग– वह मुँह बिचकाकर बोला, यह सांस्कृतिक कार्यक्रम था या फूहड़ प्रदर्शन।

21. मुँह माँगी मुराद पाना (मनोकामना पूरी होना)

प्रयोग– अगर मुझे इस काम में सफलता मिल जाए, तो मैं मुँह माँगी मुराद पर जाऊँ।

22. मुँह में जीभ न होना (बोलने की शक्ति न होना)

प्रयोग– अब चुप क्यों बैठे हो, क्या मुँह में जीभ नहीं है।

23. मुँह लगना (ढिठाई से बोलना)

प्रयोग– पहलवानों के मुँह कोई नहीं लगता।

24. मुँह लटकाना –(उदास हो जाना)

प्रयोग– अरे तुम तो तनिक सी बात को लेकर मुँह लटका रहे हो।

25. मुँह से फूल झड़ना (प्रिय बातें निकालना)

प्रयोग– हमारे नेता जब भाषण देते हैं, तो मुँह से फूल झड़ते हैं।

26. मुँह में तिनका लेना (लजाना)

प्रयोग– लड़की मुँह में तिनका ले रही है, हमें कहीं और चलकर बात करना चाहिए।

27. मुँह में लगाम देना (सोच विचार कर कहना)

प्रयोग– उसकी बात का बुरा मत मानों , उसके मुँह में लगाम नही है।

28. मुँह लटकाना (नाराज होकर बैठना)

प्रयोग– मुँह क्यों लटकाए हो? जो भी बात हो साफ–साफ कहो।

29. मुँह धो आना (आशा न रखना)

प्रयोग– मैं तुम्हें फूटी कौड़ी भी न दूँगा, कितनी ही बार मुँह धोकर आओ।

30. मुँह बनाना (खीझ प्रकट करना)

प्रयोग– श्याम कल से मुँह बना रहा है।

31. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना (स्वयं अपनी बड़ाई करना)

प्रयोग– अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना अच्छी बात नहीं, इससे लोग हमसे बात करने से परहेज करने लगते हैं।

32. अपना सा मुँह लेकर रह जाना (लज्जा में डूब जाना)

प्रयोग– अपनी सही-सही आलोचना सुनकर, रमेश अपना सा मुँह लेकर रह गया।

33. मुँह चलाना (बकवास करना)

प्रयोग– तुम्हारी मुँह चलाने की आदत ठीक नहीं, इसे छोड़ दो।

34. मुँह की खाना (बुरी तरह पराजित होना)

प्रयोग– यदि उनसे लड़ोगे तो, मुँह की खाना पड़ेगी।

35. मुँह पर थूकना (लज्जित करना)

प्रयोग– ऐसा कोई काम न करो, जिससे कोई तुम्हारे मुँह पर थूके।

36. मुँह पर बात आना (कुछ कहने को होना)

प्रयोग– जब मुँह पर बात आ ही गई, तो कह लेने दो, उसको टोको मत।

37. मुँह चूमना (प्रशंसा करना)

प्रयोग– ईश्वर जानता है, तुम इतने अच्छे हो कि मुँह चूमना चाहता हूँ तुम्हारा।

38. मुँह पर हवाई उड़ना (घबरा जाना)

प्रयोग– पुलिस वालों को देखकर जेब कतरे के मुँह पर हवाई उड़ने लगी।

39. मुँह तोड़ जवाब देना (अकाट्य उत्तर देना)

प्रयोग– मेरे वकील ने आरोपी के वकील को वह मुँह तोड़ जवाब दिया कि, उसको कुछ आगे कहते न बना।

40. मुँह सूखना (अधिक प्यास लगना)

प्रयोग– कई घंटे खड़े रहने से, मेरा मुँह सूखने लग गया है।

13

गला संबंधी मुहावरे

1. गला छुड़ाना (छुटकारा पाना)

प्रयोग– ऐसे लोग बहुत है, जो लोभ से अपना गला छुड़ा सकें।

2. गला घुटना (दम घुटना)

प्रयोग – रात को पिताजी का गला घुँटने लगा, तो फौरन अस्पताल में भर्ती करवाया।

3. गला पकड़ना (उत्तरदायी ठहराना)

प्रयोग– तुम मेरा गला क्यों पकड़ रहे हो, यह काम मेरा नहीं, किसी और का है।

4. गला दबाना (अनुचित दबाव डालना)

प्रयोग– मजदूरों का गला दबाकर कोई काम नहीं करवाया जा सकता।

5. गला भारी होना (गला बैठ जाना)

प्रयोग– कल मैंने दही ले लिया, उससे गला बैठ गया।

6. गला फँसाना (मजबूर हो जाना)

प्रयोग– उसका तो पहले ही गला फँसा है वह अपनी क्या सहायता करेगा।

7. गला फाड़ना (अधिक जोर से चिल्लाना)

प्रयोग– क्यों गला फाड़कर पाक रहे हो, वह तुम्हारी आवाज सुन ही नही रहा है।

8. गले से नीचे उतरना (मन में बैठना /समझ में आना)

प्रयोग– मैंने उसे बहुत समझाया किन्तु मेरा तर्क भी उसके गले से नीचे नहीं उतर सका।

9. गले लगना (प्रेम से मिलना)

प्रयोग– मित्र आपस में गले लगकर मिलते हैं।

10. गले में जंजीर पड़ना (विवाह होना)

प्रयोग– गले में जंजीर पड़ने से, नवयुवक अपने आप सुधर जाते है।

11. गले मिलना (बैर, भाव भुलाना)

प्रयोग– दोनो भाई अब गले मिल रहे हैं, शायद बीती सब बाते भूल गए हैं।

12. गले बाँधना (इच्छा के विरुद्ध सौंपना)

प्रयोग– गृहस्थी का सब काम पिताजी ने मेरे गले बाँध दिया।

13. गले लगना (अपनाना)

प्रयोग– समाज में सभी हमारे भाई हैं सभी को गले लगाना हमारा धर्म है।

14. गले का हार (बहुत प्यारा)

प्रयोग– छोटा बच्चा माँ के गले का हार होता है।

15. गले पड़े ढोल बजाना (मजबूरन काम करना)

प्रयोग– मैं तो बाबू गिरी करना ही नहीं चाहता, पर अब तो गले पड़ा ढोल बजाना ही पड़ेगा।

14

गरदन संबंधी मुहावरे

1. गरदन उठाना (विद्रोह करना)

प्रयोग- शासन के विरुद्ध गरदन उठाओगे, तो कुचल दिए जाओगे।

2. गरदन न उठाना (शर्मिन्दा होना)

प्रयोग- चोरी करते रंगे हाथों पकड़े जाने पर, वह बेचारा अपनी गरदन नहीं उठा पा रहा है।

3. गरदन पर सवार होना (किसी के पीछे पड़ जाना)

प्रयोग- मैंने तुम्हारी बात क्या मान ली, तुम तो गरदन पर सवार हो गए।

4. गरदर कट जाना (कलंकित होना)

प्रयोग- मुझे डाँटकर आपने सबके सामने मेरी गरदन काटकर रख दी।

5. गरदन का बोझ होना- (जिम्मेदारी निभाना)

प्रयोग- आपने स्वयं ही गरदन का यह बोझ उठाया है, हमारा नाम क्यों लेते हो।

6. गरदन पकड़कर करा लेना (जबरदस्ती करवा लेना)

प्रयोग- यहाँ तो उसी का दब दबा रहेगा, जो गरदन पकड़कर काम कर वाले।

7. गरदन झुकना, (विनय का भाव प्रदर्शित करना)

प्रयोग- आपके सामने मेरी गरदन हमेशा झुकी रहेगी।

8. गरदन पर छुरी फेरना (अन्याय करना)

प्रयोग- अधिक ब्याज लेकर क्यों बेचारे गरीबों की गरदन पर छुरी चलाते हो।

9. गरदन पकड़कर निकालना (अपमानित करके बाहर करना)

प्रयोग- तुम ठीक से काम करो, नहीं तो गरदन पकड़कर निकाल दूँगा।

15

छाती संबंधी मुहावरे

1. छाती फुलाना (अकड़ दिखाना)

प्रयोग- आजकल जिसके पास कुछ भी नही हैं, वह भी छाती फुलाता है।

2. छाती फूलना (सच्चा गर्व होना)

प्रयोग- अपनी कक्षा में सदैव प्रथम स्थान प्राप्त करने पर राम के माता-पिता की छाती गर्व से फूल गई।

3. छाती पर मूँग दलना (जान बूझकर दुख देना)

प्रयोग- आजकल नालायक लड़के माता-पिता की छाती पर मूँग दलते रहते हैं।

4. छाती पर पत्थर रखना (चुपचाप आपत्ति सहन करना)

प्रयोग- भारतीय नारी छाती पर पत्थर रखकर सब कुछ सहन करती रहती है।

5. छाती पर साँप लौटना (ईर्ष्या होना)

प्रयोग- रामाधार की पदोन्नति होने पर उसके पड़ोसियों की छाती पर साँप लौटने लगे।

6. छाती फटना (असहनीय दुख होना)

प्रयोग- अपने पिता की मृत्यु का सुनकर उसकी छाती फटी जा रही थी।

7. छाती ठोंक कर कहना (ललकार कर कहना)

प्रयोग- पहलवान ने छाती ठोककर कहा कि जिसे आना हो, मैदान में आए।

16

हाथ संबंधी मुहावरे

1. हाथ लगना (प्राप्त होना)

प्रयोग - खुफिया ऐजेन्सी को सेठ के यहाँ से छापे के दौरान महत्वपूर्ण दस्तावेज हाथ लगे।

2. हाथ पाँव मारना- (प्रयत्न करना)

प्रयोग- बैठे-बैठे बातें बनाने से कुछ नहीं होगा। हाथ पाँव मारोगे, तभी कोई नौकरी मिल पाएगी।

3. हाथ साफ करना (चोरी से लेना)

प्रयोग- चोरों ने सूने घर में घुसकर सोना-चाँदी पर हाथ साफ कर लिया।

4. हाथ मारना (छीन लेना)

प्रयोग- इस बार तो उसने तिजोरी पर हाथ मार दिया।

5. हाथ पीले कर देना (लड़की की शादी कर देना)

प्रयोग- गंगा प्रसाद ने अपनी बड़ी लड़की के हाथ पीले कर बड़ी राहत महसूस की।

6. हाथ का खिलौना (हाथ की कठपुतली होना)

प्रयोग- हमें बेईमानों के हाथ का खिलौना नहीं बनना चाहिए।

7. हाथ कटना (वचनबद्ध होना)

प्रयोग- मैंने इस कोरे कागज पर हस्ताक्षर कर अपने हाथ कटवा लिए।

8. हाथ ऊँचा होना (दानी होना)

प्रयोग- कर्ण का हाथ ऊँचा था वह कभी किसी को निराश नहीं करता था।

9. हाथ जोड़ना (नमस्कार करना)

प्रयोग- ऐसे आदमी को हम दूर से ही हाथ जोड़ते हैं।

10. हाथ धोकर पीछे पड़ना (पीछा न छोड़ना)

प्रयोग- यह अधिकारी तो बाबुओं के हाथ धोकर पीछे पड़ा है, चैन ही नहीं लेने देता।

11. हाथ खाली होना (पैसा पास न होना)

प्रयोग- उसका हाथ कभी खाली नहीं होता, वह तुम्हारी अवश्य मदद करेगा।

12. हाथ खोल देना (बिना विचार किए खर्च करना)

प्रयोग- समाज सेवा में हाथ खोलकर खर्च करना चाहिए।

13. हाथ पर हाथ धरे बैठना (समय व्यर्थ नष्ट करना)

प्रयोग- हाथ पर हाथ धरे मत बैठो, कार्यक्रम शुरू होने ही वाला है।

14. हाथ कानों पर रखना (आश्चर्य में पड़ना)

प्रयोग- जादूगर के खेल देखकर बच्चों ने हाथ कानों पर रख लिए।

15. हाथ पकड़ना (आश्रय देना)

प्रयोग- भाई तो मुझे कभी निकाल बाहर करता लेकिन भाभी ने मेरा हाथ मुसीबत के समय पकड़ लिया।

16. हाथ पैर जोड़ना (विनती करना)

प्रयोग- प्रधानाध्यापक ने कहा-तुम अपने अध्यापक के हाथ, पैर जोड़ो, शायद वे तुम्हें क्षमा कर दें।

17. हाथ-पाँव फूल जाना (डर से घबराना)

प्रयोग- घर में चोरों को घुसते देख, उसके तो हाथ पाँव फूलने लगे।

18. हाथ उठाना (मारने को तत्पर होना)

प्रयोग- औरतों पर हाथ उठाना अच्छी बात नहीं।

19. हाथ मलना (पश्चाताप होना)

प्रयोग- परिश्रम के अभाव में यदि तुम पास न हुए, तो हाथ मलते रहोगें।

20. हाथ फैलाना (माँगना)

प्रयोग- आज एक भिखारी ने मेरे आगे हाथ फैलाया, तो मैंने उसे पाँच रूपये दे दिए।

21. हाथ डालना (प्रारम्भ करना)

प्रयोग- अब तो मैं जिस काम में हाथ डालता हूँ, वह पूरा नहीं होता।

22. हाथ पर हाथ रखकर बैठना (खाली बैठना)

प्रयोग- कुछ काम करो, इस प्रकार बैठे रहने से कैसे चलेगा।

23. हाथ धोना (खो बैठना)

प्रयोग- सोच समझकर काम करो, वरना नौकरी से हाथ धो बैठोंगे।

24. हाथ मारना (हड़प लेना)

प्रयोग- ससुराल में हाथ मारना आसान नहीं, वहाँ सब चौकन्ने बैठे है।

25. हाथ भरना (रिश्वत देना)

प्रयोग- आजकल कोई काम करवाना हो, हाथ पहले भरना होता है।

26. हाथ पाँव पीटना (विशेष प्रयत्न करना)

प्रयोग- हाथ पाँव पीटने से काम नहीं चलता, भाग्य भी साथ देगा तभी काम होगा।

27. हाथों के तोते उड़ जाना- (होश-हवास जाते रहना)

प्रयोग- पिता की बीमारी का सुनकर, उसके हाथों के तोते उड़ गए।

28. हाथ बटाना (सहयोग करना)

प्रयोग– पति को पत्नी के काम में हाथ बटाना चाहिए।

29. हाथ पैर फैलाना (कार्य का विस्तार करना)

प्रयोग– व्यापार में ज्यादा हाथ–पैर फैलाना अच्छा नहीं है वरना सम्हलेगा नहीं।

30. हाथ पाँव ठण्डे पड़ना (मृत्यु का सूचक)

प्रयोग– अब इसका अंतिम समय आ गया है। हाथ पाँव ठण्डे पड़ रहे हैं।

31. हाथ मलना (अफसोस करना)

प्रयोग– जेब कतरे ने हाथ मलते हुए क्षमा याचना की।

32. हाथ में लेना (अधिकार में लेना)

प्रयोग– सरकार हर काम अपने हाथ में ले रही है।

33. हाथों में होना (वश में होना)

प्रयोग– मुझे पास करना आपके हाथों में है।

34. हाथों हाथ (बहुत शीघ्र)

प्रयोग– पढ़ाई का काम हाथों हाथ कर लेना चाहिए।

35. हाथ में हाथ देना (शादी करना)

प्रयोग– अपनी छोटी लड़की का हाथ रमेश को देकर पिताजी निश्चित हो गये।

36. हाथापाई करना (झगड़ा करना)

प्रयोग– तुमने आकर बचा लिया नहीं तो वह हाथापाई पर उतर आया था।

37. हाथों में लिए रहना (खूब सेवा करना)

प्रयोग– माँ मुझे बपचन में हाथों पे लिए रहती थी।

38. हाथ से तीर निकल जाना (दायित्व छिन जाना)

प्रयोग– अब तो तीर हमार हाथ से निकल गया, अब हम तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकते।

39. हाथ साफ करना (जेब काटना)

प्रयोग– अरे। यह क्या? किसी ने मेरी जेब पर हाथ साफ कर दिया।

40. हाथ लगाना (स्पर्श करना)

प्रयोग– हाथ लगाकर देखो अब इसे बुखार है या नहीं।

41. हाथ रोकना (खर्चा कम करना)

प्रयोग– विवाह में हाथ रोककर खर्च करो।

42. हाथों हाथ बिक जाना (शीघ्र बिक जाना)

प्रयोग– 'हिन्दी वर्ण और वर्तनी' पुस्तक हाथों हाथ बिक गई।

43. हाथ को हाथ न सूझना (घना अंधेरा होना)

प्रयोग– तेज वर्षा के कारण बिजली गुल हो गई। हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था।

44. बाँए हाथ का खेल होना (बहुत आसान काम होना)

प्रयोग– गणित के कठिन से कठिन सवाल लगाना मेरे बाँऐ हाथ का खेल है।

45. हाथ खींचना (साथ न देना)

प्रयोग– विपत्ति के समय प्राय: स्वार्थी लोग हाथ खींच लेते हैं।

46. बहती गंगा में हाथ धोना (अवसर का लाभ उठाना)

प्रयोग– इस समय सरलता से केरोसिन मिल रहा है, चाहे तो तुम भी बहती गंगा में हाथ धो लो।

17

पेट संबंधी मुहावरे

1. पेट की आग बुझाना (भूख शान्त करना)

प्रयोग- पेट की आग बुझाने के लिए व्यक्ति क्या-क्या नहीं करता।

2. पेट का पानी न पचना (कोई बात बिन कहे न रहना)

प्रयोग- बिना यह बात बताए, उसके पेट का पानी न पचेगा।

3. पेट छँटना (तोंद कम होना)

प्रयोग- प्रातः भ्रमण करने से पेट छँट जाता है।

4. पेट भर जाना (धनवान होना)

प्रयोग- व्यापार में पेट भरता है, नौकरी में तो दाल-रोटी भी मुश्किल से मिलती है।

5. पेट में चूहे दौड़ना (भूख लगना)

प्रयोग- माँ मुझे खाना परोस दो, मेरे पेट में चूहे दौड़ रहे है।

6. पेट में होना (मन में होना)

प्रयोग- पेट में बात मत रखों जो है कह डालो।

7. पेट में दाढ़ी होना (बहुत चालाक होना)

प्रयोग- आजकल छोटे बच्चों के पेट में भी दाढ़ी होती है।

8. पेट काटना (कम खर्च करके आवश्यकता के लिए धन जोड़ना)

प्रयोग- गरीब माँ-बाप पेट काटकर बेटे को पढ़ाते हैं।

18

पीठ संबंधी मुहावरे

1. पीठ फेरना (उपेक्षा करना)

प्रयोग- तुम तो ऐसे पीठ फेर रहे हो जैसे मुझे पहचानते ही नहीं।

2. पीठ दिखाना (हार कर भाग जाना)

प्रयोग- भारतीय वीर रणभूमि में कभी पीठ नही दिखाते।

3. पीठ पीछे (सम्मुख के स्थान पर अनुपस्थिति में)

प्रयोग- तुम पीठ पीछे उसकी बुराई क्यों करते हो।

4. पीठ ठोकना - (शाबाशी देना)

प्रयोग- प्रशिक्षक ने खिलाड़ी को पीठ ठोकते हुए खेल मैदान में उतारा।

5. पीठ पर होना (सहायक होना)

प्रयोग- जब तक मैं तुम्हारी पीठ पर हूँ, तुम्हें चिन्ता नहीं करना चाहिए।

6. पीठ में छुरा घोंपना

प्रयोग- कपटी लोग अवसर पाते ही पीठ में छुरा भोग देते हैं।

19

पैर संबंधी मुहावरे

1. पैर उखड़ना (हार मानना)

प्रयोग– पुलिस के सामने डाकू दल के पैर उखड़ गए और वे जान बचाकर भाग गए।

2. पैर का धोवन भी न होना (किसी के बराबरी में तुच्छ होना)

प्रयोग– तुम उसकी क्या बराबरी करोगे, तुम तो उसके पैर की धोवन भी नहीं।

3. पैर में मेंहदी (चलने फिरने में असमर्थ)

प्रयोग– रमेश के पैर में मेंहदी लगी है जो उसने तुम्हें मेरे पास भेजा।

4. पैर में शनिश्चर होना (हमेशा घूमते रहना)

प्रयोग– उसके पैर में शनिश्चर है, तभी तो वह एक जगह टिक नहीं पाता।

5. पैरों में बेड़ी डालना (बंधन डालना)

प्रयोग– लड़की के पैरों में बेड़ी डालकर तुमने ठीक नही किया।

6. पैर पूजना (पूज्य मानना)

प्रयोग– गुरूजनों एवं माता पिता के पैर पूजना हमारा धर्म है।

7. लात मारना (गुस्से से त्याग देना)

प्रयोग– अरे उसे लात मारो और किसी के बारे में सोचो।

8. लात जमाना (पैर से मारना)

प्रयोग– सास ने बहू से कहा उतारती हो गहने या लात जमाऊँ।

9. पाँव फूँक फूँक कर रखना (अत्यंत सावधानी बरतना)

प्रयोग– आज भारत में आतंकवादी घटनाएँ प्रतिदिन हो रही हैं। हर निर्णय पाँव फूँक फूँक कर लेना चाहिए।

10. पाँव की जूती सिर को लगाना (किसी छोटे को सिर चढ़ाना)

प्रयोग– आपने भी पाँव की जूती सिर को लगा रखी है, वरना वह सेवक होकर ऐसा उत्तर नहीं देता।

11. पाँव तले से धरती खिसक जाना (होश उड़ जाना)

प्रयोग– मालिक को क्रोध भरा स्वर सुनकर नौकर के पाँव तले की धरती खिसक गई।

12. पाँव तोड़ना (दूर जाकर थकान अनुभव करना)

प्रयोग– रोज कार्यालय पैदल जाकर मैं क्यों अपने पाँव तोड़ूँ।

13. पाँव उठाना (जल्दी जल्दी चलना)

प्रयोग– पाँव उठाओ अन्यथा आज कार्यालय समय पर नहीं पहुँच पाएंगे।

14. पाँव पर गिरना (हीनता से प्रार्थना करना)

प्रयोग– मैं गुरूजी के पाँव पर गिर पड़ा, फिर भी उन्होंने मुझे ही अपराधी बनाया।

15. पाँव फैलाना (अधिक माँग)

प्रयोग– नीच प्रवृत्ति के लोग थोड़ा पाकर भी और पाँव फैलाने लगते है।

16. पाँव पर पाँव रखकर बैठना (निकम्मा होना)

प्रयोग– पाँव पर पाँव रखकर मत बैठो, जीवन में अच्छा बुरा समय आता ही रहता है।

17. पाँव फूँक फूँक कर रखना (अति सावधानी से कार्य करना)

प्रयोग– धन्धे में नुकसान होने के बाद से ही वह अब फूँक-फूँक कर पाँव रख रहा है।

18. अपने पाँव आप कुल्हाड़ी मारना (संकट मोल लेना)

प्रयोग– उसको अपशब्द कहकर तुमने अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ी मारी है।

19. अपने पैरो खड़े होना (स्वावलम्बी होना)

प्रयोग– अपनी प्रगति के लिए हमें अपने पैरो खड़े होना आवश्यकता है।

20. अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना (स्वयं अपना नुकसान करना)

प्रयोग– उस चुगलखोर को घर में आश्रय देकर तुम अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार रहे हो।

21. पैरों में पंख लगाना (बहुत तेज दौड़ना)

प्रयोग– नेताजी के आने की सूचना पाकर जनता के पैरों में पंख लग गए। थोड़े समय में ही वे स्टेशन पहुँच गए।

22. पैर पसार कर सोना (निश्चिन्त होकर सोना)

प्रयोग– ऐसे पैर पसार कर सो रहे हो जैसे अब तुम्हें कोई काम ही नहीं है।

23. उल्टे पैर लौटना (तुरन्त वापस होना)

प्रयोग– जनता के आरोपों से बचने के लिए नेताजी जन-संपर्क से उलटे पैर लौट गए।

24. जमीन पर पैर न रखना (शेखी दिखाना)

प्रयोग– राम प्रथम श्रेणी में क्या उत्तीर्ण हुआ। वह पैर जमीन पर नहीं रख रहा है।

01

लोकोक्ति शब्द से आशय

लोकोक्ति शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। लोक+उक्ति अर्थात् लोगों में प्रचलित उक्ति।

प्रायं ये उक्तियाँ महान् लेखकों, विचारकों अथवा दार्शनिकों जैसे महापुरुषों के द्वारा कही जाती है। अतः इनके माध्यम से समाज का चिर-संचित ज्ञान तथा जीवन अनुभव संग्रहीत रहता है। किसी विशेष संदर्भ में प्रयोग करके इनसे भाषा में लालित्प आ जाता है।

एक डच लोकोक्ति के अनुसार 'लोकोक्तियाँ दैनिक अनुभव की बेटियाँ हैं।

लोकाक्ति प्रारंभ में एक सामान्य उक्ति के रूप में जन्म अवश्य लेती है, किंतु लोक-स्वीकृति से उसका क्षेत्र भौतिक सीमाओं का अतिक्रमण उत्पन्न व्यापक हो जाता है और तभी उसे लोकोक्ति कहा जाता है। इस अर्थ में लोकोक्तियाँ की शक्ति 'गागर में सागर' अथवा बूँद में समुद्र-जैसी होती है।

लोकोक्ति तथा कहावत- ये दोनों ही शब्द हिन्दी के है। लोकोक्ति तत्सम शब्द है तथा कहावत तद्भव शब्द।

कुछ विद्वान कहावत को 'कथावत्'- शब्द से निकला हुआ मानते है क्योंकि प्राकृत व्याकरण में 'थ' का 'ह' हो जाता है। अतः कालान्तर में कथावत् ही कहावत् बन गया। कुछ लोग कह+आवत (जिसे लोक परंपरा से सुनते आए है।) शब्द से कहावत शब्द का उद्गम मानते हैं, जो अनुभव पर आधारित सूत्र-कथन है। अतः उसमें किया गया परिवर्तन उसके प्रभाव को समाप्त कर सकता है।

एक डच कहावत के अनुसार- ''कहावत् दैनिक अनुभवों की बेटियाँ है।'' यही कारण है कि प्रारंभ में स्थानिक होते हुए भी कालान्तर में भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण करके दूर-दूर तक फैल जाती है। जैसे- ताल तो भोपाल ताल और सब तलैया।

यह कहावत् मूलतः भोपाल तक अथवा बुंदेली अँचल तक सीमित तथ्य पर आधारित है किंतु इसकी ख्याति सुदूर तक सुनाई देती है।

02

मुहावरा तथा लोकोक्ति में अन्तर

मुहावरों तथा लोकोक्तियों में अंतर बताने के पूर्व एक समानता दोनों में ही है, उस ओर हमारा ध्यान सर्वप्रथम जाना चाहिए। इनके रूप और अर्थ की दृष्टि से दोनों में समानता यह है कि इनके रूप को बदलने की शिथिलता किसी भी दशा में नहीं है। जैसे- आग में घी डालना। मुहावरे का अर्थ है- क्रोध बढाना। इसे 'अग्नि में घृत डालना'- नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार-'चोर की दाढ़ी में तिनका'- को आप 'चोर की दाढ़ी में जूँ'- ऐसा नहीं कह सकते। ऐसा कहने पर वह लोकोक्ति नहीं रहेंगी। वह एक साधारण उक्ति मानी जाएगी। यह एक अलग बात है कि बहुत कम चोर अब दाढी रखते है।

अब इनके अंतर को भी पहचाने।

1. **रूप की दृष्टि से :-**

मुहावरा अपने आप में स्वतंत्र नहीं होता। प्रयोग करते समय वह वाक्य में इस प्रकार घुल-मिल जाता है कि उसकी पृथक सत्ता समाप्त हो जाती है। जैसे- 'ईद का चाँद होना' मुहावरे का अर्थ है- बहुत दिनों बाद मिलना। अरे मित्र! तुम तो ईद के चाँद हो रहे हो। यहाँ मुहावरा- ईद का चाँद होना, पूर्ण वाक्य का एक अंग बन गया है।

यहीं एक अंतर और भी स्पष्ट है, जिस पर ध्यान दें- 'ईद का चाँद होना'- यहाँ मुहावरे के अंत में 'ना' आया है। इसी प्रकार लगभग सभी मुहावरो के अंत में 'ना' आता है। प्रयोग के समय इसका लिंग, वचन और काल पुरुष के अनुसार बदल जाता है। किंतु पूर्ण इकाई होने के कारण लोकाक्ति में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है।

2. **अर्थ की दृष्टि से -**

मुहावरे का प्रयोग वाक्य के अंतर्गत् वाक्यांश या वाक्य-खंड के रूप में आरंभ में, मध्य में अथवा अंत में कहीं भी किया जा सकता है, जबकि लोकोक्ति एक सम्पूर्ण अर्थ-गार्मित सूत्र वाक्य हैँ जिसमें मानवजीवन की अनुरूप एवं सूत्र वाक्य में समेट दिया जाता हैँ अत: इसमें कुछ जोड़ने घटाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

3. लोकोक्तियों की आधार कोई चिरसत्य होना है, जिसमें भूत काल का अनुभव संग्रहीत रहता है जबकि मुहावरे अपने रूढ अर्थ के लिए प्रयुक्त होता है
4. मुहावरों तथा लोकोक्तियों में एक विशेष आकार की पद को लेकर है। मुहावरे में किया पद अवश्य होना है किन्तु लोकोक्तियों में किया पद अनिवार्य नहीं। यही कारण है कि मुहावरों

की अपेक्षा लोकोक्तियों स्वतंत्र वाक्य के रूप में भी प्रयक्त हो सकती है।

उपयोगिता की दृष्टि से – लोकोक्ति किसी बात के समर्थन विरोध अथवा खंडन के लिए प्रयोग में लाई जाती है, जबकि मुहावरे वाक्य में चमत्कार उत्पन्न करने के लिए प्रयोग में लाए जाते है।

5. मुहावरों को लोकोक्ति का रूप नहीं दिया जा सकता जबकि कुछ लोकोक्तियों को मुहावरों में रूपान्तरित किया जा सकता है –

   जैसे– 1.खेती के लिए अतिवृष्टि सांपनाथ है, अल्पवृष्टि नागनाथ।

   2. नेताओं के नाम ही बड़े होते है किन्तु दर्शन छोटे।

6. संदर्भ का बन्धन मुहावरों तथा लोकोक्त्यिों दोनों के लिए आवश्यक है। अन्तर यह है कि मुहावरों का संदर्भ वाक्य के अन्तर्गत भी हो सकता है किन्तु लोकोक्तियों के लिए पृथक से एक अनुच्छेद लिखा होता है।

03

लोकोक्तियों का महत्त्व

भारत में लोक शक्ति का महत्व बहुत पुराना है लोक संस्कृति के माध्यम से ही हमारी संस्कृति आज भी अक्षुण्य बनी हुई है।

किसी समाज की लोकोक्ति उसकी लोक चेतना की होती है। लोकोक्ति का जन्म लोक-जीवन की परिस्थितियों के गर्भ से ही होता है और उन्हीं के बीच उसका विकास होता है। जब लोक जीवन किसी सत्य को बार बार परख लेता है, तो एवं लोकोक्ति का निर्माण होता है।

लोकोक्तियों के माध्यम से मानस में जिन बिंबो तथा अवधारणाओं की सृष्टि होती है, उनसे परम्परा के प्रवाह में अनेक सांस्कृतिक जन मानव मन में चले उभते है। अतीत की कोख से जाने में नाच हमारे वर्तमान और भविष्य संबंधी चिन्तन को भी प्रभावित करते है।

लोकोक्तियों का एक वृहद संसार है, जिनमें प्रमुख है- प्रकृति, प्राणी जगत्, मानव-चरित्र, मूलप्रवृत्ति, परिवार, समाज, अर्थ-व्यवस्था, राजनीति, जीवन-दर्शन, शिक्षा आदि विषय है। इन सबमें परस्पर संगति भी है। वह संगति विशेष प्रकार की समग्र विश्व दृष्टि के कारण है।

इस दृष्टि से लोकोक्तियाँ ज्ञान के संक्षेपीकरण का ऐसा रूप है, जो नीति-शास्त्र का काम देती है। इन्हें ज्ञान के चोखे-चुभते सूत्र भी कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए संत तुलसी लिखते हैं- का बरखा जब कृषि सुखाने।

रामचरित मानस अथवा संत-कवियों द्वारा रचित साहित्य में ऐसी कहावतों का प्रयोग प्रचुरता से हुआ है।

डॉ विद्यानिवास मिश्र ने एक लोक-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर अपने संबोधन में कहा था कि देश की संपूर्ण शिक्षा-प्रक्रिया को लोक-जीवन की गहराइयों से जोडना लोकतंत्र की आज सबसे बड़ी चुनौती है। यह कार्य प्राथमिक स्तर से ही प्रारंभ कर देना चाहिए ताकि बालक यह देख सके शिक्षा के लिए मात्र पाठ्य-पुस्तकें ही नहीं अपितु इस विराट लोक के भौतिक और आध्यात्मिक जीवन को देखना और समझना भी आवश्यक है।

इस दृष्टि से प्रत्येक विद्यालय का कर्त्तव्य है कि वह अपने अंचल में प्रत्येक जन-समूह और जाति के जीवन में उतरकर उसकी लोकोक्तियों का संग्रह-संपादन करे।

हमारे जीवन का एक बहुत बड़ा हिस्सा होता है-हमारा परिवेश। हमारे सुख-दु:ख में पशु-पक्षी भी सहभागी है। पहले जो ललित कलाएँ बहन की आरती का दीप बनकर लोक-साहित्य के माथे पर रंगीन संध्याओं का कुमकुम और सितारों का अक्षत लगाने का काम करती

थी, वे अब पाश्चात्य सभ्यताओं में डूबे नेताओं और अधिकारी वर्ग के ड्राइंग रूम सजाने और शयन-कक्ष की शोभा बढ़ाने के काम में आने लगी हैं। यदि हमने समय रहते इन गीतो, कहानियों, कहावतों (लोकोक्तियों) की खोज का काम नहीं किया तो भारतीय संस्कृति की यह अक्षय निधि भी नष्ट हो जाएगी।

किसान के पाँव अब खेत से लौटते समय लोक-गीत की कड़ियों पर नहीं उठते वरन् रेडियों से प्रसारित योजनाओं के नाटक और आंकड़ों की प्रगति की कहानी को सुनते हैं।

कहने का आशय यह कि अब गाँव ग्रामीण-संस्कृति की उपेक्षा कर अपने सामाजिक विकास की प्रक्रिया को ही भूलने लगे हैं।

04

लोकोक्तियों में प्राणी जगत

ऋग्वेद कालीन संस्कृति में प्राणी जगत का विशेष महत्त्व था। इसलिए ऋग्वेद में जिन जीव–जंतुओं का वर्णन मिलता है, उनमें गाय, बैल, घोड़ा, हाथी, ऊँट, कुत्ता, बकरी, शेर, महिष, भेड़–हिरण आदि पशुओं के नाम आते हैं। सरीसृप तथा अन्य लघु जीवों में साँप, चूहा, बिच्छू, चींटी, गोह आदि के नाम हैं। जल के जीवों में मछली, मेढ़क का उल्लेख है। पक्षियों में शकुनी (श्यामा, चिड़िया) बाज, हंस, मयूर, कौआ, शुक आदि का वर्णन हुआ है।

भारतीय तब से लेकर आज तक उनका महत्त्व यथावत् बना हुआ है। गाय को हम आज भी अवद्य मानते हैं। उसे माता कहने की परम्परा आज तक हिन्दू समाज में पूर्ववत है। इसी प्रकार अश्व, हाथी तथा ऊँट की भी उपयोगिता कई दृष्टियों से बताई गई है। राजा लोग प्रसन्न होकर दान में स्वर्णभार सहित इन पशुओं का दान करते थे।

पालतू पशुओं में भेड़–बकरी का भी उल्लेख मिलता है। दसवें मंडल के पुरुष सूक्त (10.90)में कहा गया है कि इसी से पैदा हुई, बकरियाँ और भेड़ पैदा हुई। साँप पर भी कुछ सूक्त रचे गए है। चूहा, मछली का वर्णन भी मिलता है। पक्षियों की तुलना जीवात्मा और परमात्मा से की गई है। मयूर, कोयल, कौआ, हंस का भी उल्लेख मिलता है। प्राणी जगत् को दैनंदिन संबंध इन ऋचाओं में मिलता है। इस प्रकार ऋग्वेद से लेकर आज तक प्राणी जगत का हमारे अतीत से तथा संस्कृति से जाने–अनजाने संबंध आज तक चला आ रहा है। यह निरंतरता का सूत्र कभी नहीं टूटने का/लोकोक्तियों के माध्यम से यह सूत्र और भी मजबूत हुआ है।

आइए, इसकी सच्चाई को लोकोक्तियों के अध्ययन से जानें।

05

लोकोक्तियों पर आधारित गतिविधियाँ

एक खिलाड़ी घेरे में खड़े होकर खिलाड़ियों में से किसी एक खिलाड़ी से पूछेगा- ''तुम्हारा नाम क्या है? तुम कहाँ रहते हो?/रहती हो?''

इसके उत्तर में वह अपने नाम का पहला अक्षर बताएगा। पूछने वाला खिलाड़ी उसका पूरा नाम बताएगा। यदि वह सही नाम नहीं बता पाया तो घेर के चारों ओर लंगड़ी चाल से चक्कर लगाएगा और दूसरे खिलाड़ी से इसी प्रकार के प्रश्न पूछेगा। यदि उसने सही उत्तर दे दिया, तो घेरे के बीच में खड़ा होकर उससे संबंधित एक लोकोक्ति कहने के लिए किसी भी खिलाड़ी की ओर इशारा करेगा। यदि वह लोकोक्ति सही रूप से बोल देता है, तो ठीक/अन्यथा लोकोक्ति न बताने पर लंगड़ी चाल से घूमेगा। यही क्रम जब तक खेल चलता है, जारी रहेगा।

यह प्रश्न प्राणी जगत के विषय में ही होगा।

जैसे- किसी खिलाड़ी ने प्रश्न पूछा- ''अपने नाम का पहला अक्षर बनाइए।''

उत्तर- ब

प्रश्न पूछने वाला कहेगा- बटेर।

यदि वह नाम न बता सके तो घेरे का लंगड़ी चाल से चक्कर लगाएगा।

आवश्यकता नहीं कि इसी प्रकार का खेल खेलें, अपनी सुविधानुसार अन्य गतिविधियों की रचना भी स्थानीय स्तर पर की जा सकती है।

06

प्राणी नभचर

कौआ

1. कौआ चला हंस की चाल, मुआ अपनी भी भूला।
(किसी की नकल करने पर अपनी वास्तविक स्थिति नहीं भूलना चाहिए।)

प्रयोग : पड़ोसी को देखकर मोहन भी ठाट-बाट से रहने लगा और कर्जदार हो गया। सच ही कहा है- कौआ चला हंस की चाल, मुआ अपनी भी भूला।

2. कबहु निरामिष होय न कागा

प्रयोग : एक दफ्तर में लिखा था- यहाँ रिश्वत नहीं ली जाती है। किंतु वहाँ तो सभी रिश्वत लेते हैं। इसलिए मैं कहता हूँ- कबहु निरामिष होय न कागा।

3. हंसा थे सो उड़ गए, कागा भए दिवान
(अच्छे और विद्वान व्यक्तियों का कार्यकाल पूरा होने पर दुष्ट और मूर्खों की नियुक्ति होना)

प्रयोग : अब उस कार्यालय में पहले जैसा वातावरण कहाँ रहा, वहाँ तो- हंसा थे सो उड़ गए, कागा गए दिवान की स्थिति हो गई है।

चिड़ियाँ

1. अब पक्षताए होत क्या जब चिडिया चुग गई खेत।
(हानि हो जाने पर पछतावा करना व्यर्थ है।)

प्रयोग : जब समय था तुमने परीक्षा के लिए तैयारी नहीं की। अनुत्तीर्ण होने पर अब नाहक रो रहे हो। बंधु! अब पछताए होत क्या जब चिडिया चुग गई खेत।

बटेर

1. अंधे के हाथ बटेर लगना।
(बिना परिश्रम लाभ)

प्रयोग : उसकी लाटरी क्या खुल गई वह धन-सम्पत्ति का तो ऐसा उपयोग कर रहा है, जैसे- अंधे के हाथ बटेर लग गई है।

2. आधा तीतर आधा बटेर।
(बेमेल चीजों का एक साथ रहना।)

प्रयोग : आजकल स्कूल में मुझे मेरा आधा तीतर आधा बटेर की हालत हो रही है। मुझे पढ़ाना भी पढ़ता है और बाबू का काम भी करना पड़ता है।

मुर्गा/मुर्गी

1. जहाँ मुर्गा वहीं होता, क्या वहाँ सबेरा नहीं होता।
(किसी के बिना कोई काम नहीं रूकता।)

प्रयोग : देखो सभापित जी आज नहीं आए। अब और प्रतीक्षा मत करो। बैठक प्रारंभ कर दो- जहाँ मुर्गा नहीं हाता, क्या वहाँ सबेरा नहीं होता।

2. घर की मुर्गी दाल बराबर
(जो पास हो उसकी कीमत न जानना।)

प्रयोग : कामता प्रसाद को यह पता नहीं था, कि उसका लड़का एक दिन कलेक्टर बनेगा। उसे तो वह, घर की मुर्गी दाल बराबर समझते थे।

मोर

1. जंगल में मोर नाचां किसने देखा।
(पारखियों के न रहने पर गुणों का प्रदर्शन)

प्रयोग : यहाँ गाँव में आपकी कला की कद्र कोई नहीं करेगा। पास के शहर में जाइए। कहा भी है- जंगल में मोर नाचा किसने देखा।

हंस

1. कै हंसा मोती चुगे कै लंछिन मर जाए।
(बड़े आदमी अपनी आन-बान नहीं छोड़ते।)

प्रयोग : उमा आन-बान वाली लड़की है। वह विवाह करेगी तो उसके पसन्द के लड़के से ही, नहीं तो अविवाहित ही रह जाएगी। कै हंसा मोती चुगै कै लंछिन मर जाए।

2. राजहंस बिन को करै, नीर-क्षीर को न्याय।
(   )

प्रयोग :

07

प्राणी थलचर

ऊँट

1. ऊँट के मुँह में जीरा।
(आवश्यकता से बहुत कम मिलना)

प्रयोग : कार्यक्रम यों तो भव्य था किंतु समापन पर एक बिस्कुट खाने को दिया गया। यह तो हो ऊँट के मुँह में जीरा के समान था।

2. देखें ऊँट किस करवट बैठता है।
(काम का परिणाम अनिश्चित होना।)

प्रयोग : नेताजी ने अपने क्षेत्र में कोई काम नहीं किया और अब फिर से चुनाव लड़ रहे हैं। देखों ऊँट किस करवट बैठता है।

3. अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे।
(अपने से अधिक योग्य व्यक्ति के सामने लज्जित होना।)

प्रयोग : विनोद अपने को बहुत बुद्धिमान मानता था। प्रतियोगिता परीक्षा में उसे बहुत कम अंक मिले। सच ही कहा है- अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे।

4. बावले गाँव में ऊँट आना।
(छोटी वस्तु के प्रति अधिक उत्साह दिखाना)

प्रयोग : जब पहली बार गाँव में टी.वी. आया, तो लोग उसे देखने के लिए उमड़ पड़े, मानो बावले गाँव में ऊँट आ गया हो।

1. कुत्ता

1. अंधा पीसे कुत्ता खाए।
(परिश्रम कोई करे और लाभ कोई और उठाए)

प्रयोग : उसके विवाह में ऐसी दुर्व्यवस्था थी कि अंधा पीसे कुत्ता खाए की स्थिति बन गई थी।

2. अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है।
(अपने क्षेत्र में दूसरे पर दबाव बनाना)

प्रयोग : जब श्याम अपने घर से मोहन को गाली देने लगा तो मोहन ने कहा- बाहर आओ तो देखूँ। अपनी गली में तो कुत्ता भी शेर होता है।

3. धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।
(अस्थिर मति कहीं का नहीं होता।)

प्रयोग : इस चुनाव में मैंने स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़ा तो हार हो गई और मैंने अपनी नौकरी भी छोड़ दी। अब मेरी दशा ऐसी है जैसे धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।

4. कुत्ते की दुम टेढी की टेढी।
(समझाने का स्वभाव पर कोई अंतर नहीं पड़ता।)

प्रयोग : सोचा था मेरा बेटा मामा के पास रहकर सुधर जाएगा, पर आज उसे झगड़ते देखकर मानना पड़ेगा कि कुत्ते की दुम टेढी की टेढी ही रहती है।

5. कुत्ते को घी हजम नहीं होता।
(नीच व्यक्ति बड़ा पद पाने पर इतराने लगता है।)

प्रयोग : अधिकारी ने बाबू को बहुत समझाया कि समय पर आवे किंतु वह मानता ही नहीं। सच ही कहते है- कुत्ते को घी हजम नहीं होता।

6. सीधे का मुँह कुत्ता चाटे
(अधिक सीधापन दु:ख का कारण बनता है।)

प्रयोग : रोज-रोज सबकी डाट खाते रहने पर आफिस में मोहन की इज्जत ही नहीं रही। सच ही कहा है- सीधे का मुँह कुत्ता चाटे।

7. बासी बचे न कुत्ता खाए।
(झाड-पोंछ कर खुद ही खा जाने वाले के यहाँ दूसरो के लिए गुंजाइश नहीं।)

प्रयोग : मित्र ने अपने साथी से कहा- मोहन के घर जाकर भोजन थोड़े ही मिलेगा। वहाँ तो वही दशा है- बासी बचे न कुत्ता खाए।

गधा

1. गधा खेत खाए जुलाहा मारा जाए
(दुष्टता कोई दुष्ट करे, लेकिन भुगतना उसके पास वाले व्यक्ति को पड़े।)

प्रयोग : कक्षा में शरातर रमेश करता है लेकिन डॉट श्याम को खाना पड़ती है। यह तो वहीं हुआ कि- गधा खेत खाए जुलाहा मारा जाए।

2. धोबी का गधा न घर का न घाट का।
(बेकार जीवन)

प्रयोग : रमेश को नौकरी से निकाल दिया गया। घरवालों ने भी उससे भला-बुरा कहना शुरू कर दिया। सच ही कहा है- धोबी का गधा न घर का न घाट का।

3. गधा मरे कुम्हार का, धोबिन सती होय।

प्रयोग :

4. आगे नाथ न पीछे पग हा, सबसे भला कुम्हार का गड्ढा।

प्रयोग :

5. चंदन लगाने से गधा घोड़ा नहीं बन जाता।

प्रयोग : लफ्फा जी से भाषण देकर उसने जनता से तालियाँ भले ही पिटजाती, पर सब उसे जानते हैं। चंदन लगाने से गधा घोड़ा नहीं बन जाता।

6. देसी गद ही, पूरबी रैक

प्रयोग :

7. कहने से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता।
(हठधर्मी कहना नहीं मानता।)

प्रयोग : हमारे अनुरोध से रमेश हमारे साथ नहीं चाल और बिन बुलाए कार्यक्रम में आ पहुँचा- कहने से कुम्हार गधे पर नहीं बैठता।

8. काबुल में क्या गधे नहीं होते।
(मूर्ख तो सभी जगह होते है।)

प्रयोग : अधिकारी का स्थानांतरण हो गया। उसने सोचा आफिस के गधे बाबुओं से पीछा छूटा। दूसरे कार्यालय में भी वही हाल देखकर उसके साथी ने कहा- काबुल में क्या गधे नहीं होते।

9. धोबिन पर बसन चले तो गधे के कान उमठे।
(बलवान पर अधिकार न हो, तो कमजोर के कान उमेठे।)

प्रयोग : एक कार्यालय में अधिकारी का एक रिश्तेदार बाबू था। वह कामचोर था लेकिन अधिकारी उसके बजाए उसके साथी बाबू को डॉटते थे। सच ही कहा है-धोबिन पर बस न चले तो गधी के कान उमेठे।

10. गधा धोने से घोड़ा नही बन जाता।
(मूर्ख शब्दा डंबर से विद्वान नहीं बन जाता।)

प्रयोग : लफ्फा जी से भरा भाषण देकर उसने वाहवाही जरूर-लूट ली पर सब उसे जानते है। गधा धोने से घोड़ा नहीं बन जाता।

गाय

1. दुधारू गाय की लात भली।
(लाभकारी व्यक्ति द्वारा दिए गए कष्ट अच्छे लगते है।)

प्रयोग : राम की पत्नी कलेक्टर है, तो वह पति को भी आदेश देकर काम करवाता है। सच है- दुधारू गाय की लात भली।

2. दान की बछिया के दाँत नहीं गिने जाते ।
(मुफ्त प्राप्त वस्तु में कमी नहीं देखते।)

प्रयोग : मोहन को ससुराल से दहेज में कार मिली। वह चलने में बहुत अच्छी नहीं थी। ऊपर से रंग-रोगन करवा दिया था। अपने मित्र के पूछने पर उसने बताया-कार मिली तो है पर घटिया है। यह सुनकर मोहन तपाक् से बोला- भाई ! दान के बछिया के दाँत नहीं देखे जाते।

घोड़ा

1. घोडा घास से यारी करेगा तो खाएगा क्या?
(अपनी मजदूरी अवश्य लेना चाहिए वरना जीवन-निर्वाह कैसे होगा?)

प्रयोग : डॉक्टर के मित्र होकर भी तुमसे उन्होंने फीस ले ली, यह कुछ गलत नहीं हुआ। घोडा घास से यारी करेगा, तो खाएगा क्या?

चुहिया

1. खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
(परिश्रम अधिक लाभ कम)

प्रयोग : इस पुस्तक को पढ़कर हमने प्रथम श्रेणी में अनुत्तीर्ण होने का प्रयास किया था, पर हुआ उल्टा ही? बहुत कम अंक आए, जितनी आशा थी उतने नहीं। यह तो वही बात हुई कि खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

बंदर

1. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।
(मूर्ख व्यक्ति किसी वस्तु का महत्त्व नहीं समझता)

प्रयोग : भारतीय चिंतन का आनंद तुम्हें क्या पता। तुम्हें क्या पता कि इससे जितनी सुख-शांति मिलती है, उतनी भौतिक साधनों में नहीं। ठीक ही तो कहा गया है- बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

2. तबेले (घुडसाल) बला बंदर के सिर।
(किसी का अपराध किसी पर थौपना)

प्रयोग : कर-चोरी रामलाल की, परंतु पकड़या गया उसका छोटा भाई श्यामलाल। यह तो वही बात हुई, तबेले के बला बंदर के सिरपर।

3. बंदर के गले मोती माला।
(अयोग्य को अच्छी वस्तु मिलना।)

प्रयोग : मोहन की पदोन्निति का सुनकर उसके साथियों ने कहा- यह तो इस लायक था ही नहीं। सच ही कहा है-बंदर के गले मोती माला।

4. बंदर के हाथ में उस्तरा।
(अयोग्य व्यक्ति को अधिक दायित्व देना।)

प्रयोग : सिपाही को जैसे ही थानेदार के पद का प्रभार मिला। चोर उसके नाम से ही डरने लगे। बंदर के हाथ में उस्तरा जाने क्या कर डाले।

5. लकड़ी के बल बंदर नाचे।
(भय से सब काँपते है।)

प्रयोग : नए अधिकारी की कुछ न पूछो भाई। अभी तो उसके डर से मोहन भी परेशान है। सच ही कहा है, लकड़ी के बल बंदर नाचे। मोहन कुछ काम नहीं करता था।

बिल्ली

1. खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे।
(हारने पर क्रोधित होना।)

प्रयोग: नेताजी हमेशा चुनाव जीतते आए है। इस बार उन्हें हार का सामना करना पड़ा, तो वह नाराज हो गए। यही तो वही बात हुई खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे।

2. बिल्ली के भाग से छींका टूटा।
(अचानक लाभ होना।)

प्रयोग : होटल के मालिक ने जिस नौकर को निकाला, उसकी अगले ही दिन लाख की नौकरी मिल गई। इसे कहते हैं- बिल्ली के भाग से छींका टूटना।

3. हमारा बिल्ली हमीं से म्याऊँ।
(आश्रयदाता पर रौब जमाना)

प्रयोग : मैंने ही तुम्हें यहाँ नौकरी दिलवाई है और मुझे ही आँख दिखा रहे हो। हमारी बिल्ली हमीं से म्याऊँ।

4. सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली
(जीवनभर गलत काम करके अंत में भला मनुष्य बनने का प्रयत्न करना।)

प्रयोग : सारी उम्र तो बहू को प्रताड़ित करती रही। अब बुढापे में उसे मनाती रहती है, यह तो वैसा ही हुआ, सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली।

5. बिल्ली खाएगी नहीं तो औधाय देगी।
(दुष्ट व्यक्ति व्यर्थ ही हानि पहुँचाते हैं।)

6. बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधे।

7. बिल्ली के भाग से छींका टूटा।
(अचानक लाभ होना)

प्रयोग : मुझे तो पास होने की उम्मीद ही नहीं थी लेकिन इस बार बिल्ली के भाग से छींका टूटा और मैं कृपांक से पास हो गया।

8. दबी बिल्ली चूहे से कान कटाए।
(अपराध बोध होने पर बलवान व्यक्ति भी खरी-खरी सुन लेता है।)

9. झर बेरी के जंगल में बिल्ली ही सिंह।
(छोटे स्थान पर छोटा ही बड़ा होता है।)

प्रयोग: देखों! गाँव में कुल 10 घर है, जिसमें शेरसिंह अपने को यहाँ का दादा कहता है। सच है- झर बेरी के जंगल में बिल्ली ही सिंह है।

10. पंच कहें बिल्ली तो बिल्ली।
(सबकी राय के अनुसार राय देना)

प्रयोग : बजट पास करने में सबने हाँ कर दी, तो मैंने भी हाँ कर दी। ठीक ही तो है- पंच कहें बिल्ली तो बिल्ली।

बैल

1. आ बैल मुझे मार।
(घर बैठे मुसीबत मोल लेना)

प्रयोग : अपने विरोधियों को घर में बुलाकर मैं तो निरूहित था किंतु इनके व्यवहार को देखकर ऐसा लग रहा है कि यह तो ऐसा हुआ- आ बैल मुझे मार।

हाथी

1. हाथी के दाँत दिखाने के और खाने के और।
(कहने-करने में अंतर।)

प्रयोग : उसके माथे पर तिलक लगा देखकर ही मत मानो कि वह एक भला आदमी है। पता है न- हाथी के दाँत दिखाने के और खाने के और हुआ करते हैं।

2. हाथी निकल गया दुम रह गई।
(अधिक काम हो गया, थोड़ा बचा)

प्रयोग : परीक्षा पूरी होने को है, केवल गणित का प्रश्न-पत्र शेष है। मित्र यह कहो कि- हाथी निकल गया दुम रह गई।

3. हाथी के पाँव में सबका पाँव।
(एक बड़ा प्रयास अनेक छोटे प्रयासों के बराबर होता है।)

प्रयोग : मंदिर निर्माण के लिए घर-घर चंदा माँगने क्यों जाते हो। एक सेठ ही पूरा खर्च दे देंगे। हाथी के पाँव में सबका पाँव।

4. हाथी चढे पर कुत्ता काटे। (मुसीबत सब जगह आ सकती है।)

प्रयोग :

5. कुत्ते भौंके हजार, हाथी चला बाजार
(काम करने वाले किसी के विरोध की परवाह नहीं करते।)

प्रयोग : उमा आन-बान वाली लड़की है। वह विवाह करेगी तो उसके पसन्द के लड़के से ही, नहीं तो अविवाहित ही रह जाएगी। कै हंसा मोती चुगै कै लंछिन मर जाए।

भैंस

1. काला अक्षर भैंस बराबर।

प्रयोग : पूरे मोहल्ले में रामबाबू का सभी मज़ाक उड़ाते हैं, क्योंकि उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।

2. जिसकी लाठी उसकी भैंस।
(शक्ति के बल से अधिकार जमाना)

प्रयोग : आजकल भ्रष्ट नेता ही चुनाव जीतते है। सच ही कहा है- जिसकी लाठी उसकी भैंस।

3. भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगु राए।

(मूर्खों को सद् व्यवहार की शिक्षा देना व्यर्थ है।)

प्रयोग : उसका ध्यान तो कहीं और था, तुम उसे व्यर्थ ही समझा रहे थे। शायद तुम्हें याद नहीं, भैंस के आगे बीन बजाए, भैंस खड़ी पगुराएँ

4. अक्ल बड़ी या भैंस

(शरीर की अपेक्षा बुद्धि-बल श्रेष्ठ हैं।)

प्रयोग : भीम जैसी काया होते हुए भी तुम्हें यह बात नहीं सूझी। यह छोटी सी बात इस बच्चे ने ही बता दी। यह तो ठीक वहीं बात हुई कि - अक्ल बड़ी या भैंस।

बकरा

1. बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी।

(आने वली मुसीबत आकर रहती है।)

प्रयोग : गली में दादागिरी करने वाले मुन्ना को आज तो उसके पिता थाने से छुडवा लाए किंतु बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी।

साँप

1. जैसे नागनाथ वैसे साँपनाथ

(जब दो व्यक्ति एक सी प्रकृति के मिल जाए।)

प्रयोग : तुम गोपाल की बात करते हो, अरे! क्या गोपाल और क्या रामेन्द्र- जैसे नागनाथ वैस साँपनाथ।

2. साँप मरे न लाठी टूटे। (बिना हानि के काम निकालना।)

प्रयोग : रामलाल भ्रष्ट आदमी है। उससे रुपया लेने का कोई ऐसा रास्ता निकालो जिससे साँप भी मरे न लाठी टूटे।

3. साँप निकल गया लकीर पीट रहे हैं। (   )

प्रयोग :

4. बाहर टेढी चलता है, घर में सीधा साँप। (   )

प्रयोग :

5. बिच्छू का मंत्र न जाने, साँप के पिटारे में हाथ दे बैठे। (   )

प्रयोग :

6. साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। (बिना हानि काम हो जाए।)

प्रयोग : वही बुद्धिमान है जो हर परिस्थिति का सोच-विचार कर सामना करे। अपना कार्य प्रारंभ करने के पहले इतना सोच-विचार कर ले कि साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

छछूंदर

1. छछूंदर के सिर पर चमेली का तेल
(अयोग्य को योग्य वस्तु प्राप्त होना)

प्रयोग : रूपसी उर्वशी और कंगाल रूपेश का विवाह। यह कैसे समबहुआ? छछूंदर के सिर पर चमेली का तेल।

2. मई गति साँप छछूंदर केरी।
(दुविधा में पड़ना)

प्रयोग : उधर कर्ज से दबते जाना और नए-नए खर्च की आदत ने रमेश की हालत गई गति साँप छछूंदर केरी जैसी बना दी।

08

प्राणी जलचर

मगर

1. जल में रहकर मगर से बैर।
(आश्रय देने वाले से शत्रुता रखना)

प्रयोग : तुम्हें अपने अध्यापकों को प्रसन्न रखना चाहिए। तुम्हें पता नहीं जल में रहकर मगर से बैर नहीं करना चाहिए।

मछली

1. एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।
(एक बुरा सबको कलंकित करवाता है।)

प्रयोग : कक्षा में यदि कोई चोरी करता है, तो शक सभी छात्रों पर जाता है। एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है- यह ऐसे ही थोड़े कहा गया है।

2. जल बिन मीन पियासी, सुनि-सुनि आवै हॉसी।
(तृष्णा कब नहीं जाती)

प्रयोग : संसार में रहकर यह जानते हुए भी कि धन की उसे कमी नहीं, फिर भी वह उपयोग करना नहीं चाहता और धन बटोरता रहता है। यह तो वैसा ही हुआ- जल बिनु मीन पियासी।

3. कूद-कूद मछली बगुले को खाए। (समय विपरीत आने पर शक्तिहीन भी शक्तिशाली आचरण कर बैठता है।)

प्रयोग : संकट के समय तीतर भी राजा नल की आधी धोती ले उड़े। सच है- कूद कूद मछली बगुले को खाए।

परिशिष्ट

स्व-परीक्षण

बातन हाथी पाइए, बातन हाथी पाँव

हमारी बात ही हमें नाम दिलाती है। इसका मतलब है पूरे आत्मविश्वास के साथ दिलचस्प भाषा में बात कहना। इसके लिए जरूरी है, कहावतों और मुहावरों का ज्ञान। अपना ज्ञान स्वयं परख लीजिए।

1. **अक्ल बड़ी कि भैंस का तात्पर्य है कि तर्क से बड़ी होती है अक्ल। इस कहावत का मूल रूप है—**

   क. अक्ल बड़ी कि शक्ल　　ख. अक्ल बड़ी कि बहस

   ग. अक्ल बड़ी कि नकल　　घ. अक्ल बडी कि बिल्ली

2. **दीपावली की रात को आले-कोने साफ करते हुए स्त्रियाँ क्या कहती हैं?**

   क. लक्ष्मीजी सदा सहाय　　ख. इस्सर आए, दलिद्दर जाए

   ग. शुभ-लाभ　　घ. धन-धान्य से भरो घर

3. **प्राय: लड़कों के लिए कहा जाता है कि उलझ जाएगा, तो सुलझ ही जाएगा। यह किसमें उलझने की बात है?**

   क. नौकरी　　ख. गृहस्थी

   ग. प्रेम　　घ. दोस्ती

4. **एक गरीब को मारा था, वो नौ मन चर्बी निकली थी। इस कहावत में गरीब है**

   क. कंजूस जो खर्च नहीं करता

   ख. चर्बी का व्यापार करने वाला व्यक्ति

   ग. करों से बचने खुद को गरीब बताने वाला

   घ. अत्याचार सहने वाला निर्धन

5. **डाल का चूका बंदर नहीं सँभलता, उसी तरह और कौन नहीं सँभल पाता?**

   क. अवसर का चूका आदमी

   ख. नदी में फिसला आदमी

   ग. निशाने से चूका निशानेबाज

   घ. दाँव लगाने से चूका जुआरी

6. करनी खाक की बात लाख की किसके लिए कहा जाता है?

क. अच्छे वक्ता केलिए

ख. सपने देखने वाले के लिए

ग. वादे करने वाले के लिए

घ. निकम्मे और बातूनी के लिए

7. कोई आदमी अगर अपने स्वार्थवश दूसरे का बुरा चाहे, तो उससे कुछ होता नहीं है। ऐसा बताने वाले कहावत है

क. लंगड़ी घोड़ी मैदान नहीं मारती

ख. सिखाए पूत दरबार नहीं चढ़ते

ग. ईश्वर की मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं खड़कता

घ. कौवों के कोसे से ढोर नहीं मरते

8. खाए के.... नहाए के... नहीं छिपते?

क. गाल, बाल ख. मन, तन

ग. उल्टी, बाल्टी घ. डकार, विकार

9. किसी का पता-ठिकाना जानने के लिए कहे जाने वाले तीन शब्द कौन से हैं?

क. नाम, जाति, क्षेत्र ख. कुल, गोत्र, गाँव

ग. गाँव, नाँव, ठाँव घ. अपना परिचय दो

10. संस्कृत में कहते हैं गृहिणी गृहमुच्यते हिंदी में इसे कहते हैं

क. घरवाली घर में ही अच्छी

ख. घरवाली घर का मुँह है

ग. घर घरवाली से

घ. घर घरवाली से ही सँभले

11. असम्भव व्यापार के लिए कहा जाता है

क. चिड़िया का दूध

ख. शेरनी का दूध

ग. हथिनी का दूध

घ. घोड़ी का दूध

12. जीते तो हाथ काला, हारे तो मुँह काला में किसकी बात की गई है?

क. राजनेताओं की

ख. पहलवानों की

ग. जुआरियों की

घ. पंजा लड़ाने वालों की

13. जब कोई किसी से ताना मारकर कहे कि तुम्हें इस काम का क्या अनुभव, तब वह जवाब में कहावत कहता है

क. करत करत अभ्यास के

ख. चलनी कहे सूप से जिसमें बहत्तर छेद

ग. ब्याह नहीं किया, बरातें तो देखी है

घ. असम्भव कुछ भी नहीं है

14. संस्कृत में कहावत है- अहो रूपमहोध्वनि। गधा, ऊँट से कहे वाह क्या रूप है और ऊँट, गधे से कहे, वाह क्या आवाज है। यह हिंदी में इस रूप में प्रचलित है

क. मैं भली, तू शाबाश

ख. तू सुंदर, मैं सुरीली

ग. तू सुंदरी, मैं सोने की मुंदरी

घ. मैं रूपा, तू देवी स्वरूपा

15. झगड़ा करने के लिए दूसरे की बात बहुत जल्दी सुनता है, इसलिए लड़ाके के कितने कान होते हैं?

क. हजारों

ख. चार

ग. दस

घ. अनगिनत

16. जब कोई पूछे कि हमने क्या गधे चराए हैं, तो वास्तव में वह व्यंग्य से पूछना चाहता है

क. क्या मैं गरीब लगता हूँ?

ख. क्या मुझमें योग्यता नहीं?

ग. क्या मैं शिक्षित नहीं लगता?

घ. क्या मैं मूर्ख लगता हूँ?

मिलाएँ अपने उत्तर—

1. (ख), 2. (ख), 3. (ख), 4. (ग), 5. (क), 6. (घ), 7. (घ), 8. (क), 9. (ग), 10. (ग), 11. (क), 12. (ग), 13. (ग), 14. (क), 15. (ख), 16. (घ)।

कैसे देखें हिंदी शब्दकोश

01

शब्दकोश निर्माण की पृष्ठभूमि

कालेज के एक प्राध्यापक मुझसे सहज ही चर्चा करने लगे कि हिंदी के समक्ष आज सबसे बड़ी चुनौती यह है कि उसमें प्राचीन शब्दों का भण्डार धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है। इतना ही नहीं, नए-नए जिन शब्दों का समावेश भाषा के क्षेत्र में हो रहा है और जिन शब्दों को आम आदमी भी संदर्भ आने पर बोल लेता है, वे शब्द शब्दकोश में नहीं मिलते। लगता है, अब शब्दकोश भी अपनी प्रासंगिकता खो देंगे।

यदि यही स्थिति रही तो हिंदी शब्दकोश को नवीन दृष्टि से संशोधित करना आवश्यक हो जाएगा। विश्व भाषा बनने के लिए हिंदी के समक्ष यह प्रश्न भी उपस्थित हो रहा है कि संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग कम से कम हो, तथा तकनीकी भाषा की दृष्टि से भी उसमें शब्दों का समावेश किया जाए।

उनकी बातों को मैंने बड़े ध्यान से सुना। उनकी बात को स्वीकार करते हुए मैं भी इस विषय में कुछ कहना चाहता था किंतु वे सुनने को तैयार ही नहीं थे। उनके पास समस्याएँ ही समस्याएँ थीं, समाधान नहीं। ऐसे व्यक्ति समाज में अधिक मिलते हैं, जो चर्चा करके अपनी समस्याओं को दूसरों की ओर मोड़कर चले जाते हैं; और दूसरों की सुनते ही नहीं।

मैंने उनसे पुनः आग्रहपूर्वक कहा-'आप मेरी कुछ सुनेंगे।'

वे बोले-सुनाइए और इसका समाधान भी कीजिए।

मैंने उनसे इतना ही पूछा-'क्या आपने हिंदी शब्दकोश का कभी उपयोग किया है। कुछ समाधान बताऊँ, उसके पहले इतना बताइए।'

वे बोले-'नहीं। इसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ी।'

उनकी इस बात से मैं सहमत नहीं था। आवश्यकता तो शब्दकोश की हमेशा रहती है किंतु हम उसे देखना नहीं चाहते। शब्दकोश देखना इतना आसान भी नहीं है। शब्दकोश में प्राचीन शब्दों की विदाई एवं नवीन शब्दों का समावेश हमेशा होता आया है। आइए, राष्ट्रभाषा हिंदी के साथ ऐसा क्यों होता है, यह जानने का प्रयास करें।

फिर मैंने उन्हें बताया-भारत एक विशाल देश है। यहाँ विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों तथा भाषाओं के लोग रहते हैं। कवीन्द्र रवीन्द्र ने इसे 'महामानवेतर समुद्र' की संज्ञा दी है। इस देश की भाषा हिन्दी एक सशक्त, सम्पन्न तथा समृद्ध भाषा है। यह भारत की राजभाषा भी है, जनभाषा भी है, और सम्पर्क भाषा भी है। यही कारण है कि इसे हम एक ऐसी सांस्कृतिक विरासत के रूप

में पाते हैं, जिसमें ज्ञान का अनंत भण्डार है।

यद्यपि इस देश में अन्य भाषाएँ भी बोली जाती हैं, किंतु हिन्दी का क्षेत्र बिहार से राजस्थान तक दस राज्यों में फैला हुआ है। भारत के बाहर पड़ोसी देशों में भी हिन्दी समझने वालों की एक बड़ी संख्या है। अमेरिका, यूरोप तथा विश्व के अनेक देशों में प्रयोजन की दृष्टि से हिंदी का ज्ञान दिया जा रहा है। विश्व की तीसरी भाषा कहलाने का अब इसे गौरव प्राप्त हुआ है।

एक विकसित भाषा के स्वरूप निर्माण में हजारों वर्ष लग जाते हैं जिसमें शब्द भी एक लंबी यात्रा करके अपना रूप और अर्थ बदलते रहते हैं। पहले जिसे वर्षगाँठ कहा जाता था, अब उसे जन्मदिन कहा जाने लगा है। इस प्रकार और भी उदाहरण दिए जा सकते हैं किंतु यहाँ इतना कहना ही पर्याप्त है कि अपने दैनिक जीवन के मध्य हम कुछ नए-नए शब्दों का प्रयोग समय-समय पर अवश्य करते रहते हैं; जैसे-कम्प्यूटर, दूरदर्शन, मीडिया जैसे नए शब्द। अब ये शब्द हमारे लिए पराए नहीं रहे।

जिस प्रकार मुद्रा का स्वरूप बदलता रहता है, उसी प्रकार शब्द भी अपना स्वरूप बदलते रहते हैं। जब तक हम उन शब्दों के सही अर्थ से परिचित नहीं होते, हम अपनी बात दूसरे को ठीक से समझा नहीं पाते। इन शब्दों से परिचित होना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक ही नहीं, शब्दों के प्रसंगानुसार क्या अर्थ होते हैं, यह जानना भी आवश्यक है। अनुपयुक्त शब्द का प्रयोग करने पर हमारी हास्यापद स्थिति बन जाती है। ऐसे में उसका सही अर्थ जानने के लिए शब्दकोश का सहारा लेना पड़ता है। शब्द कोश में भी एक शब्द के अनेक अर्थ दिए रहते हैं। किस शब्द का प्रयोग कहाँ करना उपयुक्त होगा, यह जानने के लिए प्राथमिक कक्षाओं से ही छात्रों को शब्दकोश का प्रयोग करना सिखाना चाहिए।

यह कहना कठिन है कि शब्दों ने अपनी यात्रा कहाँ से प्रारंभ की किंतु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि प्राचीन काल से ही इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि भाषा प्रयोग के अंतर्गत छिपे हुए गूढ़ रहस्यों को जानने के लिए विश्व का सबसे पहला कोश 'निघंटु' का निर्माण भारत में हो चुका था, जिसमें वैदिक शब्दों का संकलन किया गया था। संभवत: यह विश्व का प्रथम भाषायीकोश था, जिसकी व्याख्या सात सौ वर्ष (ईसा पूर्व) पूर्व यास्क ने 'निरुक्त' नाम से की थी। इसमें शब्द का 'धातु' के आधार पर अर्थ और प्रयोग बताया गया है।

पाँचवी शताब्दी में 'अमर-कोश' की रचना हुई थी, जो संस्कृत कोशों में प्रथम कोश बताया जाता है। 'अमर-कोश' के पश्चात अनेक कोश निर्मित हुए, जो पर्यायों का समध्वन्यात्मक शब्दों की कोशगत विशेषताओं पर आधारित हैं। कालांतर में पालि और प्राकृत भाषा के कोशों का निर्माण भी हुआ। वर्तमान में गणित चिकित्सा तथा ज्योतिष के शब्दों को लेकर भी तकनीकी शब्दकोशों का निर्माण किया जा रहा है।

हिंदी का सर्वप्रथम कोश कब बना, इस संबंध में प्रामाणिक रूप से कुछ भी कहना संभव नहीं। कहा जाता है कि मध्यकाल में अष्टछाप के कवि नंददास की 'मान मंजरी नाम माला' (1561) अमर कोश के आधार पर पर्यायवाची शब्दों का प्रथम संकलन है। धीरे-धीरे हिंदी भाषा में 'अमर कोश' के आधार पर 19 शताब्दी के अंत तक अनेक कोशों का निर्माण हुआ, जो कि

परम्परात तथा रूढ़िवादी थे।

इस प्रतिमान के आधार पर एक ईसाई पादरी डी.आदम ने 'हिंदी भाषा कोश' की रचना की, जो 1829 में प्रकाशित हुआ। इस कोश में अकारादिक्रम से बीस हजार प्रविष्टियाँ हैं। यह कोश 80 वर्ष तक अपना महत्वपूर्ण स्थान बना सका। इसमें प्रत्येक शब्द के साथ व्याकरणिक सूचनाएँ भी दी गई हैं। मुहावरों का प्रयोग भी स्वतंत्र रूप से इसमें है। इस कोश के निर्माण के पश्चात हिंदी अपना मानक रूप पाने के लिए संघर्ष करती रही। परिणामस्वरूप कोश निर्माण के लिए मानक सिद्धांतों का अभाव रहा। फलस्वरूप जिन शब्दकोशों की रचना हुई, उनमें एक ओर संस्कृतनिष्ठ शैली के तत्सम शब्द तथा दूसरी ओर स्थानीय बोलियों के शब्द रखे गए।

कुछ विद्वानों ने अमीर खुसरो (1255-1324 ई.) द्वारा लिखित 'खालिक बारी' को हिंदी का पहला शब्दकोश माना है। किंतु प्रामाणिकता की दृष्टि से हिन्दी शब्द सागर (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 1922-29) को प्राथमिकता से पहला कोश स्वीकार किया गया है। कोश विज्ञान की दृष्टि से यह भारतीय भाषाओं का प्रतिनिधि कोश है जिसमें शब्द-चयन, अर्थ-विवेचन, व्युत्पत्तिपरक अंतर्दृष्टि तथा प्रयोग निर्धारण को आधार बनाकर एक लाख से अधिक प्रविष्टियों को स्थान मिला। इसके निर्माण में हिंदी के उद्‌भट् विद्वानों के नामों में से श्यामसुंदर दास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, बालकृष्ण भट्ट के नाम विशेष उल्लेखनीय है। इस कोश के बाद रामचंद्र वर्मा के संपादकत्व में संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर (1933) का प्रकाशन हुआ। इसी के आधार पर कालान्तर में अन्य कोशों का निर्माण हुआ, जिसमें **वृहद हिंदी कोश** (1952) सर्वोत्तम है।

कुछ कोशों का निर्माण छात्रों की दृष्टि से भी किया गया। कुछ पर्यायवाची कोश तथा मुहावरों पर आधारित कोश भी बाद में बनें। उन्नीसवीं शताब्दी में इन कोशों के साथ-साथ कई तकनीकी शब्दावलियाँ भी प्रकाश में आईं, जो द्विभाषी कोश के अंतर्गत आती हैं। ज्ञान-विस्फोट के कारण भविष्य में कोश निर्माण की यह प्रक्रिया और भी जारी रहेगी।

द्विभाषी कोशों का एक नया आयाम भी देखने में आ रहा है। अभी तक एकभाषी कोश के रूप में शब्दार्थ देखकर अपनी भाषायी क्षमता विकसित करने की उपयोगिता को ही प्रमुखता दी जाती रही है किंतु अब किसी भाषा के संप्रेषण हेतु भी द्विभाषी कोशों का निर्माण भी किया जाने लगा है। ऐसे कोश 'सम्प्रेषणात्मक' क्षमता की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। कोश-निर्माण तकनीक की दृष्टि से ऐसे कोशों में दृष्टांत वाक्य, पद बंध, अन्यान्य संबंध तुलना विधि, सूचीकरण आदि तकनीकों का उपयोग होने लगा है।

प्रश्न उठता है कि क्या शब्दार्थ स्पष्ट करने के लिए कोशकार को इस प्रकार की सभी जानकारी देना आवश्यक है। सामान्यत: एकभाषायी कोश में पर्यायवाची, विपरीतार्थी तथा संबद्ध शब्दों की सूचियाँ परम्परागत रूप से व्याकरण तथा रचना की पुस्तकों में दी जाने की व्यवस्था पूर्व में ही दी गई है। अत: कोश को शब्दार्थ तक ही सीमित किया जाना उचित होगा। अगर कोश का क्षेत्र विस्तृत किया जाना उचित ही लगता है तो फिर दृष्टांत वाक्यों के आधार पर ऐसे प्रयोगों को स्पष्ट करने की आवश्यकता रहेगी, जैसा कि हिंदी अंग्रेजी शब्दकोश The Advanced Learners

Dictioneay of current English में देखने को मिलता है। हिंदी के शब्दकोशों में अभी तक इस प्रकार के प्रयास का अभाव है।

द्विभाषी कोशों में इस प्रकार की आवश्यकता सभी अनुभव कर रहे हैं। व्याकरण के नियमों को जानकर भाषा-प्रयोक्ता की भाषादक्षता, उपयुक्त शब्द-चयन एवं उसके प्रयोग पर निर्भर करती है।

हिंदी शब्द सागर (सं. 2028 वि.) में इस प्रकार दृष्टांत वाक्य दिए जाने का प्रयास अवश्य किया गया था किंतु वे दृष्टांत वाक्य अब संशोधन की अपेक्षा रखते हैं। उदाहरण के लिए 'उत्कट' शब्द का वाक्य प्रयोग (दूसरों की उत्कट कीर्ति से इसमें ईर्ष्या होती है) भारतेन्दु ग्रंथ में जिस प्रकार हुआ है, वह वर्तमान में अप्रासंगिक है। अब 'उत्कट' शब्द का प्रयोग उत्कट अभिलाषा, उत्कट प्रेम के अर्थ में अधिक हो रहा है, जो कि सार्थक है। अत: इस दृष्टि से उन कोशों में संशोधन चाहिए। वास्तव में उस समय 'हिंदी शब्द सागर' शब्दकोश का उद्देश्य शब्दों के प्रयोग की अपेक्षा पुराने साहित्य में उन शब्दों का प्रयोग कहाँ-कहाँ हुआ है, यह बताना अधिक रहा है। किंतु अब यह प्रथा समाप्त हो गई है। अब साहित्यिक प्रयोगों की अपेक्षा व्यावहारिक प्रयोग की प्रथा चल रही है।

कामिल बुल्के के अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश में हिंदी के समानार्थी शब्दों वाले अंशों में सह-परसर्गों का उल्लेख अवश्य मिलता है किंतु इसमें भी समरूपता का अभाव है। अत: द्विभाषी-कोशों का निर्माण करना कोशकारों के लिए एक बड़ी चुनौती भरा कार्य है।

मेरी इस लम्बी दलील को सुनकर पता नहीं वे सज्जन मेरी बात से सहमत हुए या नहीं, किंतु इतना उन्होंने अवश्य कहा-चलो, अच्छा हुआ। आपसे चर्चा करके आज मुझे बहुत कुछ जानने को मिला। शब्द भी यात्रा करते हैं, यह मुझे अब पता चला।

रोचक तथ्य-

प्रथम अँग्रेजी शब्दकोश का निर्माता एन वेबस्टर था, जिसने 30 वर्षों तक सतत् कार्य कर शब्दकोश तैयार किया था।

||02||

शब्द-कोश किसे कहते हैं?

उन सज्जन ने पुन: एक प्रश्न किया-'शब्द-कोश' में 'कोश' तथा 'कोष:' दो शब्द देखने को मिलते हैं, जिनका जहाँ तक मैं समझता हूँ अर्थ की दृष्टि से अर्थ भी एक है। हिंदी भाषा के अध्ययनकर्ता को 'शब्द-कोश' के लिए दोनों में से उपयुक्त कौन सा शब्द चुनना चाहिए? अत: आप स्पष्ट रूप से समझाएँ कि 'शब्द-कोश' लिखना उचित है या शब्द-कोष। मैंने कहा- अब 'शब्द-कोश' में कोश शब्द का प्रयोग रूढ़ हो गया है। अत: 'कोश' शब्द को 'शब्द-कोश' तथा 'कोष' को 'कोषालय' (ट्रेजरी) के लिए प्रयोग में लाया जाता है। मैं सोचता हूँ, यह उचित ही है। इससे भ्रम की स्थिति नहीं बनती है। उनका अगला प्रश्न था- शब्दकोश किसे कहते हैं?

मैंने कहा— 'शब्दकोश' में अकारादि क्रम से एक भाषा-भाषी क्षेत्र में व्यापक रूप से प्रयुक्त शब्द दिए रहते हैं। इन शब्दों की व्युत्पत्ति, उच्चारण के संकेत चिह्न, व्याकरणिक विश्लेषण, विभिन्न अर्थ, पर्यायवाची शब्द, प्रयोग, मुहावरे, लोकोक्तियाँ और उदाहरण देकर शब्द के संबंध में विस्तार से समझाया जाता है। कुछ कोशो में तो चित्र, रेखाचित्रों के माध्यम से भी शब्दों को समझाया गया है।

अत: हम शब्दकोश की परिभाषा संक्षेप में बताते समय इतना ही कह सकते हैं कि **शब्दकोश में शब्दों के संबंध में विस्तार से जानकारी दी जाती है**। शब्दकोश निर्माण की आवश्यकता भी शायद इसी दृष्टि को लेकर हुई है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि पाठक वर्ग की आवश्यकतानुसार शब्द-कोश का निर्माण होता है; अर्थात् आम आदमी तथा छात्रों के लिए वृहद शब्दकोशों की आवश्यकता बिल्कुल नहीं होती, क्योंकि सामान्य व्यक्ति को प्रतिदिन के लिए उपयोग में आने वाले शब्दों के विषय में अर्थ जानने की आवश्यकता होती है। वह आवश्यकता सामान्य कोश से दूर हो जाती है। इसी प्रकार छोटी कक्षाओं के छात्रों को भी कक्षानुसार तथा दक्षतानुसार कोश की आवश्यकता रहती है। शब्द की व्युत्पत्ति अथवा व्याकरणिक-प्रयोग से उनको लेना-देना नहीं रहता। बड़ी कक्षाओं में अवश्य उनको शब्दों के संबंध में विस्तार से जानने की जिज्ञासा रहती है। अत: आजकल सामान्य कोश एवं छात्रोपयोगी कोशों का निर्माण भी विशेष रूप से देखने में आ रहा है। इन कोशों द्वारा छात्र किसी भी शब्द का अर्थ तथा वर्तनी का ज्ञान सही-सही प्राप्त कर सकते हैं।

अंग्रेजी की 'चैम्बर्स ट्वेन्टियेथ सेंचुरी डिक्शनरी' और हिंदी में रामचन्द्र वर्मा कृत 'प्रामाणिक हिंदी कोश' कोश इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

रोचक तथ्य—

अँग्रेजी भाषा में शब्दकोश को डिक्शनरी कहते हैं।

03

शब्द-कोश निर्माण की आवश्यकता

बहुधा यह तर्क दिया जाता है कि भाषा सीखने के लिए व्याकरण सीखना आवश्यक है, किंतु कुछ लोग इस तर्क से सहमत नहीं होते। उनके मतानुसार भाषा को सीखने के लिए व्याकरण की कोई आवश्यकता नहीं है। उनका तर्क है कि भाषा के चार कौशल हैं:-

1. सुनना, 2. बोलना, 3. पढ़ना, 4. लिखना।

बालक अपने घर में सुनकर सर्वप्रथम बोलना सीखता है। इसके लिए व्याकरण की आवश्यकता नहीं होती। अत: भाषा सुनकर बोली जा सकती है। अपढ़ व्यक्ति भी सुनकर स्थानीय भाषा बोल सकता है किंतु अपने विचारों को परिष्कृत रूप से व्यक्त नहीं कर सकता। इसके लिए उसे व्याकरण के माध्यम से भाषा के उच्चारण तथा लेखन संबंधी प्रयोगों को सीखना होता है। शब्दों के उचित प्रयोग के लिए उनके भेदों तथा रूपों का जानना भी उसके लिए आवश्यक है। अत: भाषा अनुशासन के लिए तथा पढ़ने-लिखने के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है।

बोली की सहायता से व्यक्ति अपने संबंधों का निर्वाह तो कर सकता है किंतु इसका साहित्यिक ज्ञान भाषा द्वारा ही होता है। भाषा वही सशक्त होती है, जिसके पास अपना शब्द भण्डार हो। इस प्रकार सृष्टि के विकास में भाषा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से ही करता है।

आजकल विश्व एक परिवार के रूप में विकसित हो रहा है। यह विकास एक सशक्त भाषा के माध्यम से ही सम्पन्न हो रहा है। घर, समाज, राष्ट्र एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संबंधों का ताना-बाना बुनने के लिए संपर्क भाषा का ज्ञान आवश्यक है। शब्दकोश ऐसे ही शब्दों का खजाना है, जिसकी सहायता से व्यक्ति दैनिक जीवन में अपनी भाषा का उचित प्रयोग कर सकता है। इस दृष्टि से विचार करें तो छात्र जीवन से ही हमें शब्दकोश देखना सीखना चाहिए।

अपने छात्र जीवन में पाठ्यपुस्तक एवं अन्य पुस्तकों के अध्ययन करते समय प्रत्येक बालक को कुछ नए शब्दों से परिचित होना पड़ता है, जिसका अर्थ समझे बिना वह विषय वस्तु को ठीक से ग्रहण नहीं कर सकता। शिक्षक सम्पूर्ण शब्दों के अर्थ तथा प्रयोग के विषय में बतला देंगे, यह धारण भी उचित नहीं। अत: प्रत्येक छात्र एवं अध्ययनकर्ता को ऐसे साधन की आवश्यकता रहती है, जिसका उपयोग वह अपनी सुविधा तथा सरल ढंग से स्वयं कर सके। शब्द कोश का उपयोग इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

पाठ्यपुस्तकों को कक्षा में पढ़ाते समय शिक्षक को भी किसी विशेष प्रसंग में शब्दों के विषय में विस्तार से जानने की जिज्ञासा रहती है। अत: उसकी पूर्ति के लिए उसे शब्दकोश का सहारा लेना पड़ता है जिससे वह उस शब्द के साधारण अर्थ, लक्ष्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ को सही रूप से समझा सके।

वैसे भी, कोश एक संदर्भ ग्रंथ की तरह होता है। शिक्षक को स्वयं उसका अध्ययन करना चाहिए, तथा छात्रों को भी उसके अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे पाठ्यवस्तु समझाने तथा समझने में रोचकता बनी रहे। छात्रों को शब्दकोश देखना बोझिल न लगे, और वे स्वयं उसके उपयोग एवं प्रयोग करने का स्वभाव बनावें, इसके लिए उन्हें प्रेरित करना शिक्षक का महत्वपूर्ण कर्तव्य है।

अच्छे कोश में निम्नलिखित बिन्दुओं का अवश्य समावेश रहता है—

1. वर्णक्रम की जानकारी।
2. वर्तनी।
3. उच्चारण।
4. व्याकरणिक भेद।
5. शब्द व्युत्पत्ति।
6. अर्थ।
7. प्रयोग।
8. मुहावरे पद तथा लोकोक्तियाँ।
9. संकेत चिह्न।

अत: इस संबंध में छात्रों को विशेष रूप से अवगत कराना चाहिए।

04

शब्दकोश के उपयोग का शिक्षण में लाभ

हिन्दी का शिक्षण भाषा और साहित्य दोनों ही दृष्टियों से उपयोगी होता है। शब्दों के अशुद्ध एवं त्रुटिपूर्ण प्रयोग को यदि लंबे समय तक जारी रखा जाए, तो उसका सुधार भी लंबे समय तक करने पर ही हो सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षक प्रारंभ से ही इस दिशा में जागरूक रहे।

जहाँ तक संभव हो, प्रारंभिक कक्षाओं से ही इस विषय को गंभीरता से लें; और शब्दकोश देखने की समस्त प्रक्रिया से छात्रों को परिचित कराएँ।

भाषा शिक्षण की प्रक्रिया बहुमुखी होती है। यह एक निरंतर विकासशील प्रक्रिया है। जब तक छात्र शब्दकोश की उपयोगिता को सही-सही ढंग से अनुभव करके उसको देखने का स्वभाव न बना लें, तब तक यह क्रम निरंतर जारी रहना चाहिए। इस कार्य में शिक्षक को धैर्य एवं संयम रखने की आवश्यकता भी होती है। जहाँ तक संभव हो, स्वयं भी शब्दकोश का शिक्षण कार्य में उपयोग करे; तथा पैनी दृष्टि द्वारा छात्रों को भी उसका लाभ समझाए।

शिक्षण करते समय शब्दकोश के उपयोग हेतु शिक्षक को किस प्रक्रिया को अपनाना होगा, इसके लिए निम्नलिखित तथ्यों की जानकारी शिक्षक को अवश्य होना चाहिए।

1. अगले दिन पढ़ाए जाने वाले पाठ के कठिन शब्दों का अर्थ उनको (छात्रों को) कोश की सहायता से घर से लिखकर लाने का आग्रह करना। शिक्षक उन्हें इसे गृहकार्य के रूप में करवा सकता है।
2. कोश में शब्दभेद दिए रहते हैं जिससे वह उनके व्याकरणिक पदों को आसानी से जान सकता है; अर्थात कौन सा शब्द संज्ञा है, सर्वनाम है, विशेषण है, क्रिया अथवा अव्यय है, यह ज्ञान छात्र को होना चाहिए। अत: उसे भी शब्दार्थ के साथ लिखकर लाए।
3. शब्द की व्युत्पत्ति अर्थात् शब्द की रचना कैसे हुई? इसकी जानकारी भी होना चाहिए। उसके आधार पर उसके अर्थ एवं प्रयोग को भली भाँति जाने। इस दृष्टि से शिक्षक स्वयं भी शब्दकोश की सहायता ले।
4. वर्तनी की शुद्धता को समझ सकने में कोश की सहायता ली जा सकती है। 'र' तथा 'श' 'ष' 'स' आदि का प्रयोग एवं मात्राओं में छात्र प्राय: भूल करते हैं।
5. शब्दकोश की सहायता से छात्र शब्द के एक से अधिक अर्थों एवं उनके प्रयोगों को सीख सकता है।
6. कभी-कभी कठिन शब्दों को श्रुतलेख के द्वारा शुद्ध लिखने का अभ्यास कराकर

शिक्षक उनके शब्द ज्ञान को सही करा सकता है।

7. कोश का उपयोग शुद्ध उच्चारण की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण होता है।
8. अच्छे कोश में मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ भी दी जाती हैं। इसके अध्ययन से छात्र के भाषा ज्ञान में वृद्धि होती है।
9. शब्दों के विपरार्थी, पर्यायवाची, विलोम, पाठकों की सुविधा के लिए शब्दकोश में रहते हैं। कभी-कभी इस प्रकार के विशेष कोश भी मिलते हैं, जिनका लाभ छात्रों को मिलता है।
10. कक्षा शिक्षक छात्रों को अपने स्तर पर स्वयं का शब्दकोश बनाने के लिए प्रेरित कर सकता है।

ऐसे प्रयत्नों से निश्चय ही भाषा-शिक्षण में गुणात्मक सुधार देखने को मिलेगा।

05

शब्दकोश के प्रकार

अब तक हमने जाना कि कोश किसे कहते हैं? शब्दकोश निर्माण की आवश्यकता क्यों है? शब्दकोश के उपयोग से शिक्षण में किस प्रकार गुणात्मक सुधार हो सकता है! यहाँ हम शब्दकोशों के प्रकार के विषय में जानेंगे। ताकि छात्र शिक्षक यह समझ सकें कि किस प्रकार के शब्दकोश का उपयोग उसके लिए लाभकारी होगा। प्रारंभिक कक्षाओं के लिए कुछ शब्दकोश इस प्रकार के हैं–1. बाल शब्दकोश, 2. चित्रमय बालकोश,
3. सरल विश्वकोश, 4. बाल विश्वकोश।

1. बाल शब्दकोश

बालकों के उपयोग के लिए आवश्यक शब्दों को सरल भाषा में समझाने वाला शब्द संग्रह है।

2. चित्रमय बालकोश

निर्धारित आवश्यक शब्दों का चित्रों के साथ अर्थ एवं उपयोग समझाने वाला शब्द भण्डार है।

3. सरल विश्वकोश

विश्व भर के बालकों के द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले शब्दों का भण्डार है। इसमें उन सभी विषयों से संबंधित शब्द और तकनीकी शब्दों का विवरण होता है, जो विश्व भर में कहीं भी उपयोग में लाए जाते हैं।

4. बाल विश्वकोश

विश्व भर के बालकों के हाईस्कूल स्तर तक के सभी आवश्यक शब्द और तकनीकी शब्दों का चित्रों के साथ विवरण, अर्थ और तकनीकी शब्दों का परिचय दिया रहता है। इनमें शब्दों का बनना, उसके रूप तथा उनका उपयोग एवं प्रयोग भी दिए रहते हैं।

उपर्युक्त प्रकार के कोश छात्रों के लिए प्रारंभिक जानकारी के लिए उपयोगी हैं किंतु छात्रों को यह भी समझाया जाना चाहिए कि भाषा की दृष्टि से कोश तीन प्रकार के होते हैं–

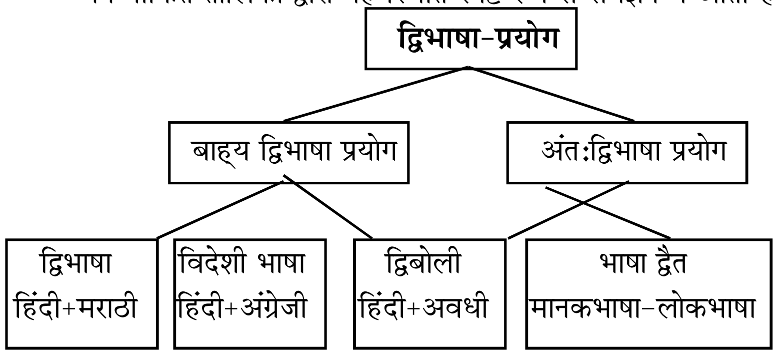
1. एकभाषी कोश

इस कोश में एक ही भाषा के शब्द और उनकी व्युत्पत्ति अर्थ आदि का समावेश रहता है। इस दृष्टि से हिन्दी भाषा कोश तथा अंग्रेजी भाषा के कोश पृथक-पृथक होते हैं।

2. द्विभाषी कोश

किसी समाज में एक भाषा का प्रचलन अब आदर्श कल्पना मात्र है। आज का भाषा-समाज न केवल द्विभाषी है, बल्कि बहुभाषी भी है। यही स्थिति बोली, भाषा, शैली आदि अनेक स्तरों पर देखने को मिलती है।

निम्नांकित तालिका द्वारा यह स्थिति स्पष्ट रूप से समझने में आती है—



जब एकभाषी व्यक्ति द्वितीय भाषा सीखता है तो वह द्वितीय भाषा की संरचना की अपेक्षा एक भाषीय कोश का अध्ययन करना पसंद करता है; और प्रथम भाषा के मूलभूत भाषा-संरचना के अनुसार वह उन शब्दों का प्रयोग करता है। द्विभाषा का प्रयोग करते समय व्यक्ति प्रथम भाषा के नियमों को ही स्थानांतरित करता है।

इस प्रकार के कोशों में एक भाषा के शब्दों को दूसरी भाषा के पर्यायवाची शब्दों के साथ अर्थ दिए रहते हैं, ताकि अन्य भाषायी देश में भ्रमण करते समय उनकी भाषा का अर्थ समझ में आ जाए। अनुवाद के क्षेत्र में भी ये कोश उपयोगी होते हैं। क्षेत्रीय भाषाओं के कोश भी इस आधार पर तैयार हो रहे हैं। पूरा विश्व एक परिवार की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इसलिए इस प्रकार की कोशों का प्रचलन अधिक बढ़ रहा है।

3. बहु-भाषी कोश-

दो या दो से अधिक भाषा के कोश को बहु-भाषी कोश कहते हैं। **भारतीय व्यवहार कोश** का नाम इस दृष्टि से उल्लेखनीय है कि उसमें 16 भारतीय भाषाओं के पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं। इसके सम्पादक-विश्वनाथ दिनकर नखने हैं। इसमें दैनिक जीवन में व्यवहार में आने वाले शब्दों का ही उल्लेख मिलता है। इसका साहित्यिक रूप नहीं होता।

भाषा संबंधी जो अन्य कोश देखने को मिलते हैं, उनमें हैं-

1. पर्यायवाची कोश- इसमें समानार्थी शब्दों का उल्लेख मिलता है।
2. अनेकार्थी कोश- एक शब्द के अनेक अर्थ दिए रहते हैं।
3. व्युत्पत्ति कोश- इस कोश में किसी भाषा के शब्दों की उत्पत्ति दी रहती है। इन कोशों का उपयोग विद्वान करते हैं।

4. उच्चारण कोश

इसमें प्रत्येक वर्ण के उच्चारण संबंधी जानकारी दी जाती है। कुछ कोश निम्नलिखित शीर्षकों से भी बने हैं—

1. विषय कोश– आजकल प्रत्येक विषय को ध्यान में रखकर तत्संबंधी शब्दावली को स्पष्ट किया जाता है। विज्ञान, आयुर्विज्ञान, पुरातत्व, धातु विज्ञान आदि में ऐसे कोश सहायक होते हैं। छात्रों को उनके विषयानुसार इस प्रकार के कोश बनाने की प्रेरणा देना चाहिए।

2. विश्वकोश (Encyclopaedia)– विश्वकोश कई खण्डों में बनाए जाते हैं। इन कोशों में विश्व के विविध विषयों के संबंध में विस्तार से जानकारी दी जाती है। अन्य कोशों की भाँति इनका क्रम भी अकारादि क्रम में होता है। ये सामान्य भी होते हैं, और विशिष्ट भी। हिंदी के प्रमुख विश्वकोश निम्नलिखित हैं–

हिन्दी विश्वकोश – नागरी प्रचारिणी सभा (11 खण्ड)

हिन्दी विश्वकोश – नरेन्द्रनाथ बसु (24 खण्ड)

सचित्र विश्वकोश –राजपाल एण्ड संस (10 खण्ड)

3. पारिभाषिक शब्दकोश– यह जानकर आश्चर्य होता है कि भारत में पारिभाषिक शब्दावली प्रयोग की एक लम्बी परंपरा रही है। हिंदी भाषा के अंतर्गत यदि संस्कृत, पालि–प्राकृत–अपभ्रंश के विकास–क्रम का अवलोकन करें तो पारिभाषिक शब्दावली का व्यवहार में प्रयोग स्पष्ट दिखाई देता है। मध्यकाल के समय अरबी–फारसी के पारिभाषिक शब्दों का समावेश हिंदी भाषा में देखने को मिलता है। अंग्रेजी शासन के स्थापित होने पर अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों का चलन भी भाषा के अंतर्गत देखने को मिलता है।

स्वतंत्रता के पूर्व हिंदी संपर्क भाषा थी किंतु स्वतंत्रता के पश्चात् राजभाषा घोषित होने पर संघीय संवैधानिक कार्यों के लिए इस प्रकार के कोश की आवश्यकता अनुभव में आई। प्रशासन के अतिरिक्त सामाजिक व्यवहार के प्रयोजन मूलक क्षेत्रों में इस शब्दावली की विशेष आवश्यकता थी। विशेषकर इस दृष्टि से डॉ. रघुवीर द्वारा 1953 में हिंदी का प्रथम पारिभाषिक कोश तैयार किया गया था, जिसमें उन्होंने संस्कृत व्याकरण नियमों के आधार पर धातु, प्रत्यय और उपसर्ग का प्रयोग करते हुए लगभग डेढ़ लाख नए–पुराने हिंदी शब्दों का संग्रह किया है। इस बीच भाषावार प्रांत रचना के कारण कई प्रांतों ने अलग–अलग पारिभाषिक शब्द–संग्रह निकाले। इस कड़ी में भारत सरकार ने 1961 में एक पृथक अखिल भारतीय तकनीकी शब्दावली बोर्ड की स्थापना की। अब तकनीकी शब्दावली के लिए तैयार किए गए कोश से ही पारिभाषिक शब्द का उपयोग होता है।

4. कंप्यूटर कोश : कभी गणना के लिए बनाया गया यंत्र कंप्यूटर आज हमारे दैनिक जीवन का आवश्यक अंश बन गया है। कहीं प्रत्यक्ष तो कहीं परोक्ष रूप में शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, बैंकिंग, औद्योगिक उत्पादन एवं विपणन सभी क्षेत्रों में इसने अपनी पैठ बनाई है।

कंप्यूटर के मुख्य दो अंग हैं— एक यंत्र जिसे हम छू सकते हैं, इसे हार्डवेयर कहते हैं। दूसरा वह साधन जिससे यंत्र संचालित होता है, उसे साफ्टवेयर कहते हैं। एक अन्य शब्द भी आज प्रचलित हो रहा है— नेटवर्क। कंप्यूटर के इस महत्त्व को देखते हुए विद्यालयों में इसका पठन–पाठन हो रहा है।

भारत में कंप्यूटर साहित्य की रचना भी प्रचुरता से हो रही है। अंग्रेजी में इस प्रकार के साहित्य एवं शब्दकोश की रचना को आधार बनाकर हिंदी में भी ऐसे कोश की कल्पना लेकर

किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली ने 'कंप्यूटर कोश' प्रकाशित किया है, जिसके संपादक डॉ. राजेश्वर गंगवार हैं। इस कोश में कंप्यूटर संबंधी शब्दों के हिंदी पर्याय का अभाव है। की बोर्ड, मॉनिटर, माउस, स्क्रीन, सेव, स्टोर, प्रोग्राम आदि ऐसे शब्द हैं, जो कंप्यूटर में विशिष्ट अर्थ रखते हैं। अत: 'कंप्यूटर शब्दावली' को अंग्रेजी शब्दावली के क्रम में रखकर उसका परिचय संदर्भानुसार दिया गया है।

अंग्रेजी शब्दों के साथ-साथ हिंदी के प्रचलित तकनीकी शब्दों को भी अपनाया गया है, जिससे विषयवस्तु ग्राह्य बने। आवश्यकतानुसार शब्दों की व्याख्या भी दी गई है। कोश केवल संदर्भ के लिए ही नहीं, प्रशिक्षण देने में भी उपयोगी हो, इसका विशेष ध्यान रखा गया है।

5. मुहावरा कोश : जिस प्रकार सामान्य कोश का निर्माण होता है, उसी सिद्धांत पर मुहावरा कोश बनाया जाता है। मुहावरों का संयोजन वर्णक्रम रूप में होता है। हिंदी में अनेक मुहावरा-कोश उपलब्ध है।

6. साहित्य कोश : साहित्य से संबंधित विषयों को लेकर साहित्य कोश तैयार किए गए हैं। हिंदी में अभी तक इस प्रकार के दो कोश देखने को मिले हैं: एक कोश सुप्रसिद्ध साहित्यकोश के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर आधारित है; दूसरे प्रकार का कोश शास्त्रीय आलोचना के पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या पर आधारित है।

06

शब्दकोश देखने की विधि

भाषा की पाठ्यपुस्तकों के अंत में शब्दार्थ के अंतर्गत कठिन और अपरिचित शब्दों को दिए जाने की पद्धति प्राय: छोटी कक्षाओं में देखने को मिलती है। उच्च कक्षाओं में भी कहीं-कहीं शब्दार्थ लिखने की प्रथा है, जिससे छात्र शब्दों के अर्थ भलीभाँति हृदयंगम कर सकें। अत: शब्दकोश के सही उपयोग के लिए उसे देखने की विधि भी जानना चाहिए।

अंग्रेजी भाषा के कोश देखने में विशेष कठिनाई नहीं होती है। थोड़े से अभ्यास से ही उसे देखने का कौशल विकसित हो जाता है क्योंकि उसकी वर्णमाला में A से Z तक कुल 26 वर्ण होते हैं। परंतु हिंदी में वर्णों की संख्या 48 है। इस दृष्टि से हिंदी शब्दकोश स्वरों तथा 33 व्यंजनों के साथ-साथ क्ष, त्र, ज्ञ, श्र, ड़ आदि को समेटे हुए है। इसके अतिरिक्त संयुक्त व्यंजनों की भी भरमार है। शब्दों को ढूँढ़ने के लिए वर्णों का क्रम अच्छी तरह याद करना होता है। वर्णों का क्रम जाने बिना शब्दकोश से शब्द ढूँढ़ना अँधेरे में तीर मारने के समान है। अत: कोश से शब्द कैसे ढूँढ़ना? यह भी एक कला है, जिसमें पारंगत होना आवश्यक है।

मान लो हमें 'ज्योत्सना' शब्द खोजना है, तो सर्वप्रथम हमें 'ज' शब्द खोजना होगा। आप जानते हैं वर्णमाला में 'ज' का स्थान च वर्ग में तीसरे क्रम पर है। इसलिए कोश का वह पन्ना पलटें जहाँ 'ज' के शब्द लिखे हैं। 'ज' वर्ग से बनने वाले शब्दों में जहाँ पृष्ठ संख्या अंकित है, उसके बाएँ कोने पर जो शब्द अंकित रहता है, वह उस पृष्ठ का सबसे पहला शब्द होता है, तथा दाएँ कोने पर जो शब्द अंकित है, वह उस पृष्ठ का अंतिम शब्द होता है। अत: आप ऊपरी शब्दों पर नजर रखकर यह ध्यान देने का यत्न करें कि 'ज' का क्रम कहाँ पर आता है। किसी भी व्यंजन को संयुक्त बनाने वाले व्यंजन को 'ज' के क्रम में अंत में स्थान दिया जाता है। अत: इस क्रम को याद रखने के लिए 'ज' का क्रम ध्यान में लाएँ। शब्दकोश में यह क्रम इस प्रकार होगा-

जं, जँ, जा, जि, जी, जु, जू, जृं, जे, जै, जो, जौ, ज्ञ (ज्+ञ) ज्य, ज्व।

यदि देखते समय आप 'ज्ञ' पर पहुंच गए हैं, तो आगे बढ़े; और 'ज्व' पर पहुँच गए हैं, तो पीछे चलें, जहाँ 'ज्य' से प्रारंभ होने वाले शब्द मिलेंगे। 'ज्योत्सना' में ज्यो के पश्चात 'त्' हलंत है। अत: त की मात्रा वाले शब्दों के बाद 'त्' (हलंत) आता है। अब आप अपने लक्ष्य के समीप हैं। बस 'ज्यो' के बाद 'त्स' से प्रारंभ होने वाले शब्दों को देखें तो आप 'ज्योत्सना' शब्द ढूँढ़ लेंगे।

कोश से शब्द ढूँढना कैसे प्रारंभ करें-

1. वर्णमाला

कोश देखने की विधि के अंतर्गत यह देखने में आता है कि किसी भी भाषा के शब्दों की

रचना का आधार वर्णमाला है। वर्णो से शब्द बनते हैं और शब्दों से वाक्य बनते हैं। अत: सर्वप्रथम हमें वर्णमाला का ठीक-ठीक ज्ञान होना चाहिए। हिंदी भाषा में अकारादि क्रम जाने बिना हम वांछित शब्द को नहीं ढूँढ सकते।

हिन्दी की वर्णमाला

प्रत्येक भाषा की अपनी एक वर्णमाला होती है। वर्णमाला में वर्णों का एक निश्चित क्रम निर्धारित होता है। वर्णों का यह क्रम किसी भी शब्दकोश के लिए अनिवार्य होता है। सर्वप्रथम हम देवनागरी लिपि की इस वर्णमाला का पुनर्स्मरण कर लें-

हिन्दी की मानक वर्णमाला

स्वर	**व्यंजन**	
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ,	क-वर्ग	क, ख, ग, घ, ङ।
ऋ, ए, ऐ, ओ, औ	च-वर्ग	च, छ, ज, झ, ञ।
	ट-वर्ग।	ट, ठ, ड, ढ, ण।
	त-वर्ग।	त, थ, द, ध, न।
अनुस्वार- (अं)	प-वर्ग।	प, फ, ब, भ, म।
विसर्ग- (अ:)	अंत:स्थ	- य, र, ल, व।
	ऊष्म	- श, ष, स, ह
		(25+4+4=33)
(11+2=13)	आगत ध्वनि-ड़, ढ़= 2	
	संयुक्त व्यंजन- क्ष, त्र, ज्ञ श्र = 4	

कुल=वर्ण 48 (संयुक्त व्यंजन को वर्ण माला में शामिल नहीं किया गया है।)

हिंदी वर्ण माला (शब्द कोश के संदर्भ में)

स्वर			**व्यंजन**
अनुस्वार	अं,	क-वर्ग-	क, क्ष (क्+ष), ख, ग, घ, ङ
अनुनासिक	अँ	च-वर्ग-	च, छ, ज, ज्ञ (ज्+ञ), झ, ञ
विसर्ग	अ:	ट-वर्ग-	ट, ढ, ड (ड़), ढ (ढ़), ण
स्वर	अ, आ, इ, ई,	त-वर्ग-	त, त्र (त्+र), थ, द, ध, न
	उ, ऊ, ऋ, ए,	प-वर्ग-	प, फ, ब, भ, म
	ऐ, ओ, औ	अंत:स्थ	य, र, ल, व
		ऊष्म	श, श्र (श्+र), ष, स, ह

तथ्य-

स्वरों की स्थिति स्वतंत्र वर्ण के रूप में भी है, और व्यंजनों के साथ मिलकर मात्रात्मक रूप में भी है।

स्वर तथा व्यंजन को मिलाकर शब्द बनाने के लिए मात्राओं का प्रयोग किया जाता है।

मात्रा स्वर को बनाने वाली वह रेखा अथवा चिह्न है, जो अक्षर के चारों ओर (आगे, पीछे, ऊपर-नीचे) लगाई जाती है। जैसे-

1. आगे लगने वाली मात्रा - (ि) कि
2. पीछे लगने वाली मात्रा - (ी) की
3. ऊपर लगने वाली मात्रा - (े) के (ै) कै
4. नीचे लगने वाली मात्रा - (ु) कु (ू) कू (ृ) कृ

कोश में ये मात्राएँ भी क्रम से दी हुई रहती हैं। अत: उसे निम्नलिखित तालिका से समझें-

स्वर	**मात्रा-चिह्न मात्रा रूप**	**शब्द**	
अ	अ स्वर की कोई मात्रा नहीं होती	क्+अ=क	कमल
आ		क्+आ=का	काम
इ		क्+इ=कि	किधर
ई		क्+ई=की	कील
उ		क्+उ=कु	कुल
ऊ		क्+ऊ=कू	कूल
ऋ		क्+ऋ=कृ	कृष्ण
ए		क्+ए=के	केयूर
ऐ		क्+ऐ=कै	कैकेई
ओ		क्+ओ=को	कोयल
औ		क्+औ=कौ	कौशल
अं		क्+अं=कं	कंकन
अ:		क्+अ:=क:	....

विशेष- **1.** बारह खड़ी या द्वादशाक्षरी में 'ऋ' की मात्रा की गणना नहीं होती है। संपूर्ण व्यंजनों के विषय में भी इसी प्रकार जानो। संयुक्त व्यंजनों की बारहखड़ी भी साधारण व्यंजनों के समान ही होती है; जैसे- क्ल, क्ला, क्लि, क्ली, क्लु, क्लू, क्ले, क्लै, क्लो, क्लौ, क्लं, क्ल:।

2. कुछ हिंदी शब्द ऐसे हैं, जिनके उच्चारण करते समय वास्तविक मात्रा की स्थिति पर विशेष ध्यान देना होता है। उदाहरण स्वरूप 'स्थिर' शब्द पर ध्यान दें। वास्तव में यहाँ 'ई'(ि) की मात्रा 'थि' पर लगाना चाहिए किंतु व्याकरण के नियमों के अनुसार स् (अर्द्ध 'स') पर मात्रा नहीं लगाई जा सकती अर्थात् स्थिर को 'सिथर' लिखना अशुद्ध है, 'स्थिर' लिखना शुद्ध है। अत: शब्दकोश में 'सौ' के पश्चात् वाले शब्दों में 'स्था' शब्द के बाद स्थित शब्द ढूँढ़ें। क्योंकि वर्ग क्रम में 'आ'(ा) की मात्रा के पश्चात ही इ(ि) की मात्रा आएगी।

2. अनुस्वार

अनुस्वार का उच्चारण स्वर+व्यंजन की भाँति होता है। अनुस्वार में अनु उपसर्ग लगा है जिसका अर्थ है स्वर के पहले अक्षर। इस अक्षर के आने के बाद में नासिक्य व्यंजन ध्वनि होती

है; जैसे- कंगन = क्+अं+ग्+अ+न+अ

स्पष्ट है कि अं = अ+ङ

यहाँ अं में पहले स्वर है; तथा उसके बाद क-वर्ग का पंचम वर्ग (ङ) नासिक्य व्यंजन। इसे 'क' वर्ण के ऊपर बिंदी (-ं) लगाकर लिखा जाता है। अनुस्वार का उच्चारण उसी व्यंजन-वर्ग में आने वाले नासिक्य व्यंजन के स्थान पर होता है; जैसे-

उच्चारित रूप	**लिखित रूप**	**व्यंजन वर्ग का पंचम वर्ण**
पंङ्कज	पंकज	'क' वर्ग का (ङ)
मञ्च	मंच	'च' वर्ग (ञ)
घण्टा	घंटा	'ट' वर्ग (ण)
दन्त	दंत	'त' वर्ग (न)
चम्पक	चंपक	'प' वर्ग (म)

ध्यान देने की बात है कि कोश में हर वर्ण या अक्षर की शुरूआत अनुस्वार (-ं) (अं) से होती है, जबकि वर्णमाला में इसका स्थान स्वरों के पश्चात है।

3. अनुनासिक

उच्चारण स्थान के आधार पर स्वरों के दो भेद किए गए है- अनुनासिक स्वर तथा निरानुनासिक स्वर।

निरानुनासिक का चिह्न (-ँ) है। बहुधा अनुस्वार तथा अनुनासिक के चिह्नों की पहचान करने में भ्रम होता है। इन दोनों के अंतर को निम्नलिखित प्रयोग के आधार पर समझ सकते हैं-

1. हँस में ह्-अनुनासिक है, इसके उच्चारण में एक मात्रा जितना समय लगता है। अनुनासिक का चिह्न (-ँ) है।

   हंस में ह्- में अनुस्वार है। अनुस्वार का चिह्न (-ं) है।
2. अनुनासिक मूलतः स्वर है, जबकि अनुस्वार स्वर+व्यंजन का योग है।
3. शब्दों के तद्भव रूपों में अनुनासिक का प्रयोग होता है और तत्सम शब्दों में अनुस्वार लगता है।

जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि कोश में अनुस्वार का प्रयोग सर्वप्रथम होता है। काशीनागरी प्रचारिणी के हिंदी शब्द सागर में इसी प्रथा का निर्वाह किया गया है। अनुस्वार के बाद अनुनासिक शब्द दिए गए हैं किंतु अधिकांश कोश वर्तमान में इस प्रथा का निर्वाहन नहीं कर रहे हैं। वे इन्हें एक साथ ही दे रहे हैं। अतः जिस कोश का आप उपयोग कर रहे हैं, उसमें किस प्रथा का पालन किया गया है; इसे अवश्य देख लें।

4. विसर्ग

विसर्ग का उच्चारण स्वर के ठीक बाद 'ह' की भाँति किया जाता है। यह संस्कृत भाषा के जिन शब्दों में प्रयुक्त होता है, हिंदी में भी उसी रूप में प्रचलित हैं अर्थात् संस्कृत के तत्सम शब्दों में ही विसर्ग लगता है; जैसे-संभवतः, दुःख, प्रायः, अतः, अंतःकरण आदि। इसका लिपि चिह्न ':' होता है, जिसे हिंदी वर्णमाला में 'अ' के रूप में बनाया गया है।

कोश में विसर्ग वाले शब्दों का क्रम अनुस्वार के बाद आता है। विसर्ग के बाद उस वर्ण का प्रथम पूरा अक्षर आता है; जैसे– कं, कः, फिर वर्ण 'क' से प्रारंभ होने वाले शब्द।

5. व्यंजनों के दो रूप

स्वरों के बाद व्यंजन का क्रम आता है। संस्कृत भाषा में व्यंजन को हल् कहा जाता है। अतः वहाँ प्रत्येक व्यंजन के मूलरूप में हल् (्) का चिह्न लगा रहता है। हिंदी में कुछ स्थानों पर ही हल् का प्रयोग किया जाता है। वस्तुतः हल चिह्न स्वररहित व्यंजन का प्रतीक है। अतः हिंदी में जिस व्यंजन पर हल् का चिह्न लगा हो, उसे स्वरहीन व्यंजन समझना चाहिए; जैसे– क=(क्+अ)– यह स्वर युक्त व्यंजन है।

अतः व्यंजनों के दो रूप देखने को मिलते हैं। इसे हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

क. स्वरहीन व्यंजन – क् (इसे हल भी कहते हैं)

ख. स्वरयुक्त व्यंजन – क(क्+अ) सम्पूर्ण 33 व्यंजन स्वरयुक्त व्यंजन है।

5.1 खड़ी पाई वाले अक्षरों के हल युक्त रूप

खड़ी पाई वाले व्यंजन निम्नलिखित हैं– क्, ख्, ग्, घ्, च्, ज्, ण्, त्, थ्, ध्, न्, प्, ब्, भ्, म्, ल्, व्, श्, ष्, स्, क्ष्, त्र्। इन्हें खड़ी पाई वाले व्यंजन इसलिए कहा जाता है क्योंकि इन अक्षरों के सामने खड़ी पाई (।) का चिह्न होता है। इन्हें हल रूप से लिखते समय इनके पाई वाले भाग को काट दिया जाता है, जैसे–

क	–	क्	–	क्यारी
ख	–	ख्	–	व्याख्या
ग	–	ग्	–	ग्वाला
घ	–	घ्	–	विघ्न
च	–	च्	–	सच्चा
ज	–	ज्	–	ज्वाला
त	–	त्	–	पत्ता
थ	–	थ्	–	पथ्य
ध	–	ध्	–	ध्यान
न	–	न्	–	पन्ना
प	–	प्	–	प्रेम
ब	–	ब्	–	ब्याज
भ	–	भ्	–	भ्रमण
म	–	म्	–	सम्मान
य	–	य्	–	प्यार
ल	–	ल्	–	बल्ला
व	–	व्	–	व्यास
श	–	श्	–	काश्मीर

ष	–	ष्	–	ष्ठीवन (थूकना)
स	–	स्	–	निस्सार
क्ष	–	क्ष	–	क्षमा (पृथ्वी)
त्र	–	त्र	–	त्र्यंबकम्

कोश में इन अक्षरों का क्रम पूर्ण अक्षर (स्वरयुक्त व्यंजन) के बाद आता है।

6. संयुक्ताक्षर (व्यंजन-व्यंजन संयोग)

संयुक्त अक्षर शब्द का अर्थ है, जहाँ दो या दो से अधिक व्यंजनों का संयोग हो रहा हो। संयुक्ताक्षर को संयुक्त व्यंजन भी इसीलिए कहा जाता है। संयुक्ताक्षरों का उच्चारण अभ्यास की अपेक्षा रखता है।

कुछ व्यंजन ऐसे हैं जो संयुक्ताक्षर के रूप में दो तरह से लिखे मिलते हैं; जैसे–पक्का, अथवा पक्‌का, लट्टू अथवा लट्‌टू, विद्या अथवा विद्‌या आदि।

इस संबंध में इतना ही कहना है कि बाजार में उपलब्ध सभी कोशों में अभी भी प्राचीन परम्परा का अनुसरण किया जाता है। हल चिह्न लगाकर उन्हें नहीं लिखा जाता है। अत: ऐसे संयुक्ताक्षरों को देखते समय उनके प्राचीन स्वरूप को ही ध्यान में लाएँ।

सुविधा के लिए हिंदी में पाए जाने वाले आदि, मध्य एवं अंत, स्थानीय संयुक्त व्यंजनों के कुछ रूप यहाँ दिए जा रहे हैं—

1. आदि व्यंजन-संयोग

क	:	क्+य	क्यारी
		क्+र	क्रम
		क्+ल	क्लिष्ट
		क्+व	क्वार
ख	:	ख्+य	ख्याति
ग	:	ग्+य	ग्यारह
		ग्+र	ग्रहण
		ग्+ल	ग्लानि
		ग्+व	ग्वाल
घ	:	घ्+र	घ्राण
च	:	च्+य	च्युत
ज	:	ज्+य	ज्योति
		ज्+व	ज्वाला
ट	:	ट्+य	ट्यूशन
		ट्+र	ट्रेन, ट्रंक
ड	:	ड्+य	ड्योढ़ा
त	:	त्+य	त्याग

		त्+र	त्राण, त्रेता
		त्+व	त्वचा
द	:	द्+य	द्युति
		द्+र	द्रुम
		द्+व	द्वार
ध	:	ध्+य	ध्यान
		ध्+र	ध्रुव
		ध्+व	ध्वजा, ध्वनि
न	:	न्+य	न्याय
		न्+र	नृत्य, नृप
प	:	प्+य	प्यार
		प्+र	प्रेम
		प्+ल	प्लेग, प्लावन
फ	:	फ्+र	फ्रान्स
ब	:	ब्+य	ब्याज
		ब्+र	ब्रज
		ब्+ल	ब्लाउज
भ	:	भ्+र	भ्रम
म	:	म्+य	म्यान
		म्+ल	म्लान
व	:	व्+य	व्यक्ति
		व्+र	व्रत
श	:	श्+य	श्याम
		श्+र	श्री, श्रुति
		श्+ल	श्लेष
		श्+व	श्वास, श्वान
स	:	स्+क	स्कन्ध, स्कूल
		स्+ख	स्खलन
		स्+त	स्तन, स्तंभ
		स्+थ	स्थान, स्थूल
		स्+न	स्नेह, स्नान
		स्+प	स्पर्द्धा
		स्+फ	स्फूर्ति
		स्+म	स्मार्त्त

		स्+य	स्याही
		ह्+र	ह्रास, हृदय
		स्+र	स्रोत
		स्+ल	स्लेट
		स्+व	स्वर

2. मध्य व्यंजन संयोग

इस स्थिति में दो व्यंजनों का संयोग होता है, किन्तु उनमें से एक व्यंजन प्रथम अक्षर के साथ चला जाता है, तथा दूसरा व्यंजन परवर्ती अक्षर के साथ रहता है; जैसे— अर्जन=अर्+जन। हिन्दी में पाये जानेवाले मध्य व्यंजन-संयोग इस प्रकार हैं—

क	:	क्+क	मक्का
		क्+ख	मक्खन
		क्+छ	रक्छा (रक्षा)
		क्+ट	नक्टा
		क्+ठ	लक्ठा
		क्+र	वक्रोक्ति
ख	:	ख्+य	व्याख्या
ग	:	ग्+ग	सुग्गा
		ग्+घ	बग्घी
		ग्+न	अग्नि
ङ	:	ङ्+क	अङ्कुर
		ङ्+ख	पङ्खा
		ङ्+ग	गङ्गा
		ङ्+घ	कङ्घा
च	:	च्+च	उच्चाटन
		च्+छ	गुच्छा
ज	:	ज्+ज	मज्जा
		ज्+झ	खुज्झा
		ज्+य	त्रिज्या
		ज्+र	वज्र
		ज्+व	उज्ज्वल
ञ	:	ञ्+च	चञ्चल
		ञ्+छ	पञ्छी
		ञ्+ज	अञ्जन
		ञ्+झ	मञ्झा

त	:	त्+क	उत्कल
		त्+त	उत्तर
		त्+थ	पत्थर
		त्+प	उत्पादन
		त्+य	हत्या
		त्+र	खत्री
द	:	द्+ग	उद्गार
		द्+घ	उद्घाटन
		द्+म	पद्मावत
		द्+ध	उद्धार
		द्+द	भद्दा, रद्दी
		द्+य	विद्या, उद्योग
		द्+व	विद्वान
न	:	न्+त	चिन्ता
		न्+द	कुन्दन
		न्+ध	कन्धा
		न्+न	गन्ना
		न्+य	अन्याय
		न्+व	सुधन्वा
		न्+ह	नन्हा
प	:	प्+प	चप्पल
		प्+त	सप्ताह
फ	:	फ्+त	हफ्ता, दफ्तर
ब	:	ब्+ज	कब्जा
		ब्+ब	गुब्बारा
म	:	म्+च	चम्चा
		म्+छ	गम्छा
		म्+प	कम्पन
		म्+ब	अम्बर
		म्+भ	खम्भा
		म्+म	अम्मा
		म्+ह	कुम्हार
ट	:	ट्+ठ	खट्टा
		ट्+ठ	गट्ठर

ड	:	ड्+ड	अड्डा
		ड्+ढ	बुड्ढा
ण	:	ण्+ट	कण्टक
		ण्+ठ	कण्ठा
		ण्+ड	पण्डा
र	:	र्+क	कर्कश
		र्+ग	अर्गला
		र्+घ	अर्घ्य
		र्+च	अर्चना
		र्+छ	बर्छी
		र्+त	कर्तार, कुर्त्ता
		र्+थ	अर्थी
		र्+द	गुर्दा
		र्+ध	अर्धाली
		र्+न	कर्नाटक
		र्+प	अर्पण
		र्+भ	अर्भक
		र्+म	अकर्मण्य
		र्+र	गुर्राना
		र्+व	गर्वीला
व	:	व्+य	काव्यांग
ल	:	ल्+क	वल्कल
		ल्+द	जल्दी
		ल्+थ	पाल्थी
		ल्+प	कल्पना
		ल्+म	कल्मष
		ल्+य	कल्याण
		ल्+ल	लल्लन
		ल्+व	खल्वाट
		ल्+स	जल्सा
		ल्+ह	चूल्हा, आल्हा
श	:	श्+क	लश्कर
		श्+च	पश्चिम
		श्+त	कुश्ती

		श्+म	दुश्मन
		श्+य	कश्यप
		श्+र	विश्राम
		श्+ल	विश्लेषण
		श्+व	विश्वास
स	:	स्+त	विस्तार
		स्+थ	अस्थायी
		स्+रा	संसृष्टि
		स्+स	किस्सा, गुस्सा

3. अन्त व्यंजन-संयोग

विभिन्न व्यंजन अधिकांशत: य, र, ल, व व्यंजनों से मिलकर ही अन्त संयुक्त व्यंजन का रूप बनता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

क	:	क्+य	वाक्य
		क्+र	वक्र, तक्र
		क्+ल	शुक्ल
		क्+व	परिपक्व
ख	:	ख्+य	असंख्य, सौख्य
ग	:	ग्+य	भाग्य
		ग्+र	अग्र
		ग्+ल	आंग्ल
घ	:	घ्+य	श्लाघ्य
		घ्+र	व्याघ्र
व	:	व्+य	काव्य
		व्+र	तीव्र
ल	:	ल्+द	जल्द
		ल्+प	अल्प
		ल्+म	गुल्म
		ल्+य	दौर्बल्य
र	:	र्+क	अर्क
		र्+ख	मूर्ख
		र्+ग	वर्ग
		र्+घ	दीर्घ
		र्+च	खर्च
		र्+ज	कर्ज, गुर्ज

		र्+ट	आर्ट
		र्+ड	गार्ड, कार्ड
		र्+त	गर्त
		र्+थ	अर्थ व्यर्थ
		र्+द	गर्द, सर्द
		र्+ध	अर्ध
		र्+न	हार्न
		र्+प	दर्प
		र्+फ	बर्फ
		र्+भ	गर्भ, दर्भ
		र्+म	मर्म
		र्+य	कार्य
		र्+व	पर्व, सर्व
		र्+स	पर्स
		र्+ह	प्रयोगार्ह
श	:	श्+य	दृश्य
		श्+र	मिश्र
		श्+व	विश्व, अश्व
स	:	स्+क	यास्क फ्लास्क
		स्+त	अस्त, मस्त
		स्+थ	स्वस्थ
		स्+म	भस्म, किस्म
		स्+य	शस्य
		स्+र	सहस्त्र
		स्+व	ह्रस्व

रोचक तथ्य—

- कोश में ङ्, छ्, झ्, ञ्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र् से प्रारंभ होने वाले अक्षर देखने में नहीं आते।
- कोई-कोई व्यंजन परस्पर नहीं मिल सकते; जैसे- 'ख' और 'फ', 'छ' और 'ग' आदि।

7. रेफ (विशिष्ट वर्ण)

रेफ वर्ण का चिह्न है, (ँ) जो 'र्' (अर्द्ध 'र') का सूचक है। जब हम शब्द कोश में रेफ वाले शब्दों को देखें तो ध्यान रखें कि रेफ वाले शब्द 'र' शब्द के अंतर्गत होने से 'र से रौ' वाले अक्षरों के क्रम के बाद आता है। किंतु जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया गया है, 'र्' से प्रारंभ होने वाले शब्द नहीं होते हैं। अत: इसे देखने में सावधानी बरतना होगी।

जैसा–'प' अक्षर के क्रम में हमें रेफ वाले (पृ) का प्रयोग देखना हो तो यह 'प से पौ' के बाद ही आएगा। उदाहरण के लिए–पौष्टिक के बाद 'प्याऊ' शब्द आएगा। उसके बाद प्रकाश... प्रतिवेदन, प्रसारण, प्रियदर्शन शब्द आएगा।

ध्यान रहे, 'र्' यदि किसी व्यंजन से पहले मिलता है, तो उसे व्यंजन के ऊपर लिखा जाता है, और यदि किसी व्यंजन के पीछे मिलता है तो उसका रूप खड़ी पाई वाले व्यंजनों के साथ (्र) तथा 'ट' वर्ग के साथ (‸) के रूप में उस दूसरे व्यंजन के नीचे लिखा जाता है; जैसे— सुदर्शन, स्पर्श, वक्र, आम्र, राष्ट्र आदि।

विशेष

1. क्ष, त्र, ज्ञ और श्र– ये संयुक्त व्यंजन हैं। इन्हें शब्दकोश में 'ह' के बाद नहीं ढूँढ़ना चाहिए क्योंकि ये संयुक्तव्यंजन हैं।
    1. क्ष = (क्+ष)
    2. त्र = (त्+र)
    3. ज्ञ = (ज्+ञ)
    4. श्र = (श्+र)
1. 'क' और 'ष' का संयुक्त रूप है 'क्ष'। अत: 'क्ष' से शुरू होने वाले शब्दों को 'क' से शुरू होने वाले शब्दों के समाप्त होने पर ढूँढ़ना चाहिए। 'क्ष' के बाद 'क्या' (आधे वर्ण) से बनने वाले शब्द आते हैं; जैसे— क्या।
2. 'त' और 'र' का संयुक्त रूप 'त्र' है। अत: 'त' से शुरू होने वाले शब्दों के समाप्त होने पर 'त्र' से बनने वाले शब्दों को ढूँढ़े। 'त्र' से बनने वाले शब्दों के बाद 'त्व' (आधे वर्ण) से संबंधित शब्द देखे जा सकते हैं; जैसे– त्व।
3. 'ज' और 'श्र' का संयुक्त रूप है 'ज्ञ'। अत: 'ज्ञ' से शुरू होने वाले शब्दों को 'ज' से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़ना चाहिए। 'ज्ञ' के बाद 'ज्य' (आधे वर्ण) से बनने वाले शब्द आते हैं; जैसे–ज्य।
4. 'श' और 'र' का संयुक्त रूप है 'श्र'। अत: 'श्र' से शुरू होने वाले शब्दों को 'श' से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़ना चाहिए। 'श्र' के बाद 'श्या' (आधे वर्ण) से बनने वाले शब्द आते हैं; जैसे– श्या।

अत: क्ष– को क वर्ग में; त्र को त् वर्ग में; ज्ञ को च वर्ग में तथा श्र को श के बाद ढूँढ़ना होगा।

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि हिंदी की मानक वर्णमाला तथा शब्दकोश के संदर्भ में दी गई वर्णमाला में कुछ मौलिक अंतर होता है। अत: इसे ठीक से समझ लेना चाहिए ताकि शब्दकोश देखने में उसकी उपेयागिता बने।

1. अनुस्वार (–ं–) तथा अनुनासिक (ँ) स्वरों से भी पहले स्थान पाते हैं। इन दोनों में पहले किसका प्रयोग होगा? कह नहीं सकते। इनमें आगे–पीछे का क्रम नहीं होता।
   जैसे– क–वर्ग में कंकड, कँकडील, कँकरा

किंतु इतना निश्चित है कि किसी व्यंजन के क्रम का श्रीगणेश ये ही करते हैं।

2. अनुस्वार तथा अनुनासिक के बाद विसर्ग का स्थान आता है;
   जैसे- दुंदुभी (अनुस्वार), दु:ख (विसर्ग), दुआ (मूल 'उ' स्वर)
3. ऋ की मात्रा (ृ) होती है, अत: इसे ऊ के बाद ढूँढे। उदाहरण के लिए— दृश्य।
4. अंतिम स्वर 'औ' के पश्चात व्यंजनों की शुरुआत होती है।
5. आधे वर्णों का क्रम पूरे वर्ण की मात्राओं के बाद आता है।
6. किसी भी संयुक्त व्यंजन का प्रयोग कोश में स्वतंत्र रूप से नहीं मिलेगा। संरचना को समझकर उसे उसी व्यंजन क्रम में ढूँढ़ें; जैसे-
   क्ष (क्+ष) त्र (त्+र) ज्ञ (ज+ञ) श्र (श्+र)
   शृ (श्+ऋ)
7. किसी भी प्रकार के व्यंजन को संयुक्त बनाने वाले व्यंजन वर्णमाला के क्रम से आते हैं- जैसे—
   व्यंजन का वास्तविक रूप हलंत (्) वाला होता है। शब्दकोश में भी पहले मूल व्यंजन हलंत (्) के रूप में आता है। अत: 'द' व्यंजन के पहले द् आएगा। द् में जुड़ने वाले स्वर तथा व्यंजन उसी क्रम में जुड़ते हैं, जिस क्रम में वे वर्णमाला में होते हैं। पहले स्वर फिर व्यंजन। यदि
   द्ध, द्ध, द्द, द्ब, द्र, द्य- को क्रम से रखा जाए तो पहले- द्द आएगा क्योंकि इसमें द्+द है। फिर क्रमश द्ध आएगा (द्+ध), (द्+भ), (द्+य), (द्+र), (द्+व) आएगा।
8. क्र तथा कृ- में अंतर को स्पष्ट समझें। 'क' वर्ग में कौ (क्+औ) के पश्चात् क् का क्रम आता है। क्या (क्+या) इसके पश्चात। इसी क्र में क्+र अर्थात् क्र आएगा; जैसे— क्रंदन, कृति का क्रम। 'ऋ' की मात्रा 'उ' की मात्रा के पश्चात देखने को मिलेगी- जैसे कूल के पश्चात कृति (क्+ऋ) आएगा। अत: ध्यान दें (क्+ऋ) की मात्रा स्वरों के अंतर्गत उ के पश्चात आएगी और (क्र) का क्रम स्पर्शव्यंजन प-वर्ग के प के पश्चात प्रारंभ होने वाले अन्तस्थ व्यंजन 'य' के बाद आएगा।
9. ट वर्ग में (्र) मात्रा का प्रयोग होता है। इसे भी (ट्+र) अर्थात् म् के पश्चात् 'प' वर्ग के अन्तस्थ व्यंजन के अन्तर्गत ही ढूँढ़ें।
10. ड़, ढ़ का प्रयोग ड, ढ के साथ ही देखने को मिलता है।

07

कोश देखने में संकेताक्षरों का उपयोग

शब्द के संक्षिप्त रूप को ही संकेताक्षर कहते हैं। सामान्यत: सभी शब्दकोशों में संकेताक्षरों के रूप में संक्षिप्तियों का प्रयोग किया जाता है। हिंदी शब्द सागर (रामचंद्र वर्मा) हिंदी शब्द सागर (श्यामसुंदर दास), भाषा शब्द कोश (डॉ. रमाशंकर शुक्ल), राजपाल हिन्दी शब्दकोश, नालंदा हिन्दी कोश आदि कोशों में संक्षिप्तियों का उल्लेख मिलता है।

संक्षिप्त का निहितार्थ है: किसी भी ऐसे शब्द की रचना करना जो संक्षिप्त भी हो, तथा जिसमें अर्थ द्योतक की सम्पूर्ण क्षमता हो। चाहे वह एक शब्द की संक्षिप्ति हो, या एकाधिक शब्दों के प्रारंभ, मध्य या अंत के वर्णों को मिलाकर बनाई गई संक्षिप्ति हो।

शब्दकोश में इन संक्षिप्तियों को शब्दों की प्रविष्टियों के रूपों में समझाने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। शब्दकोश में प्रत्येक प्रविष्टि के साथ संकेताक्षरों में इनका उपयोग किया जाता है। स्थान बचाने के लिए इन संकेताक्षरों का विशेष महत्व है। इससे शब्दकोश का बहुत सा स्थान व्यर्थ नहीं जाता। पुस्तक के मुद्रण एवं टंकण कार्य में भी इससे समय की बचत होती है। पुस्तक का आकार नहीं बढ़ने से उसका मूल्य भी कम रहता है।

हर कोश की अपनी संक्षिप्तियाँ एवं संकेत चिह्न हैं। इनमें एकरूपता का होना आवश्यक नहीं। कम या अधिक संक्षिप्तियाँ पुस्तक की आवश्यकतानुसार निर्धारित की जाती हैं। अत: जिस शब्दकोश का हम अध्ययन करना चाहते हैं, उसकी संक्षिप्तियों को पहले समझ लें। तभी हम उस शब्दकोश से भरपूर लाभ उठा सकेंगे। एक उदाहरण द्वारा यह बिन्दु और भी स्पष्ट किया जाता है।

नाच – संज्ञा पु. (सं. नाट्य) अंगों की वह गति जो हृदयोल्लास के कारण अथवा संगीत के मेल में ताल-स्वर के अनुसार और हावभाव युक्त हो।

मुहावरा – नाच दिखाना- उछलना, कूदना, हाथ-पैर हिलाना।

भलाई – संज्ञा स्त्री. (हि. भला+ई (प्रत्य.)), भले होने का भाव। भलापन उपकार। नेकी।

उपरोक्त शब्दों में पु. संकेताक्षर पुल्लिंग के लिए, सं- संस्कृत के लिए, हि. हिंदी के लिए, प्रत्य. प्रत्यय के लिए दिया गया है।

प्रत्येक कोश में इस प्रकार के संकेताक्षर दिए गए हैं। उनका अध्ययन हमें सर्वप्रथम करना होगा, तभी हम अर्थ के साथ-साथ शब्द के विषय सही-सही जान सकेंगे।

हिंदी कोशों में व्याकरण तथा व्युत्पत्ति के अनुसार संकेताक्षरों का विवरण

भाषा संबंधी संकेताक्षर	**व्याकरण के आधार पर संकेताक्षर**
हिं–हिंदी	1. संज्ञा– संज्ञा
सं– संस्कृत	2. लिंग– पु./स्त्री.
अप.– अपभ्रंश	3. वचन– एक व./बहु व.
पा. – पाली	4. सर्वनाम– सर्व.
अव.– अवधी	5. विशेषण– वि.
उडि. – उडिया	6. क्रिया– क्रि.
गज़–गुजराती	7. क्रिया अकर्मक– क्रि.अ.
पं.–पंजाबी	8. क्रिया सकर्मक– क्रि.स.
मरा.–मराठी	9. क्रिया विशेषण– क्रि.वि.
देश.–देशज	10. अव्यय– अव्य.
फा.–फारसी	11. मुहावरा– मुहा.
अं.–अंग्रेजी	12. प्रत्यय– प्रत्य.
अन्य संकेताक्षर	13. अव्ययी भाव समास– अव्य.स.
उदाहरण– उदा.	14. उपसर्ग– उप.
देखो– दे.	15. यौ.–यौगिक
तुलनात्मक– तुल.	
परि.–परिशिष्ट	

‖08‖

वर्णों के शब्दकोशीय क्रम एवं रूप

(उदाहरण सहित)

शब्दकोश संबंधी सभी आवश्यक जानकारियाँ आपको दी जा चुकी हैं। यहाँ हम एक वर्ण के शब्दकोशीय क्रम तथा रूप को उदाहरण सहित दे रहे हैं जिसकी सहायता से आप स्वर तथा व्यंजनों का शब्दकोशीय क्रम आसानी से जान सकेंगे।

1. वर्णों के शब्दकोशीय क्रम

हिंदी शब्द देखने के लिए स्वरों तथा व्यंजनों का निम्नलिखित क्रम शब्दकोश में रहता है। इसे समझकर कोई भी व्यक्ति बिना कठिनाई के वांछित शब्द को ढूँढ सकता है।

1. अनुस्वार (ं)/अनुनासिक (ँ)
2. विसर्ग
3. अ
4. आ
5. इ
6. ई
7. उ
8. ऊ
9. ऋ
10. ए
11. ऐ
12. ओ
13. औ
14. क
15. क्ष (क्+ष) यह वर्ण कोश में क वर्ग में कौ के बाद आता है।
16. ख
17. ग
18. घ
19. ङ
20. च

21. छ
22. ज
23. ज्ञ (ज+ञ) ज्ञ- शब्द वर्ग में जौ के बाद आता है।
24. झ
25. ञ
26. ट
27. ठ
28. ड
29. ढ
30. ण
31. त
32. (त्+र) त वर्ग में तौ के बाद 'त्' के साथ
33. थ
34. द
35. ध
36. न
37. प
38. फ
39. ब
40. भ
41. म
42. य
43. र
44. ल
45. व
46. श
47. क्ष (श्+र)
48. ष
49. स
50. ह

2. 'क' वर्ण के शब्दकोशीय रूप

अब आप स्वयं किसी एक व्यंजन के शब्दकोशीय रूप को तैयार कर सकते हैं, जिससे शब्दकोश में किसी भी शब्द का स्थान ढूँढ़ना आसान हो जाए; जैसे 'क' वर्ण के शब्दकोशीय रूप–

क्र.	वर्ण		व्यंनीय रूप	उदाहरण
1	अनुस्वार (ं)	क्+अं=कं	कं या कँ	कंक, कंकड़, कंबल
	अनुनासिक (ँ)	क्+अँ=कँ	कँ	कँपना
2	विसर्ग (:)	क्+:	कः	
3	अ	क्+अ	क	ककहरा, कमल
4	आ	क्+आँ या आं	काँ या कां	कांख, काँटा, कांत
5		क+आ	का	काजल काठ
6	इ	क्+ई या ईं	किं	किंकर, किंवा
7		क्+ई	कि	कितना, किनारा
8	ई	क्+ई या ईं	कीं	
9		क्+ई	की	कीड़ा, कीर
10	उ	क्+उ या उँ	कुँ या कुं	कुँअर, कुंदन
11		क्+उ	कु	कुटीर, कुठार
12	ऊ	क्+ऊँ या ऊं	कूँ या कूं	कूँचा
13		क्+ऊ	कू	कूल, कूबर
14	ऋ	क्+ऋ	कृ	कृपा, कृषि
15		क्+एँ या एं	कें	केंचुआ, केन्द्र
16	ए	क्+ए	के	केतु, केवल
17	ऐ	क्+एँ या ऐं	कैं	कैंची, कैंसर
18		क्+ऐ	कै	कैरम, कैसर
19	ओ	क्+ओं या ओं	कों	कोंपल, कोंकण

क्र.	वर्ण		व्यंनीय रूप	उदाहरण
20		क्+ओ	को	कोयल, कोश
21	औ	क्+ओं या ओं	कौं	कौंधना
22		क्+औ	कौ	कौटिल्य, कौशिक
23	य	क्+य	क्य	क्या, क्यों, क्यारी
24		क्+र	क्र	क्रंदन
25	र	क्+र	क्र	क्रय, क्रम
26	ल	क्+ल	कल	क्लीक, क्लांत
27	व	क्+व	क्व	क्वचित
28	ष	क्+षं	क्षं	क्षंता
29		क्+षं	क्ष	क्षमा, क्षण, क्षेपक

'क' वर्ग के शब्दकोशीय रूप को देखकर हम सहज ही अनुमान लगा सकते हैं कि 'क' के प्रत्येक रूप के साथ पहले अनुस्वार या अनुनासिक का रूप आता है; बाद में व्यंजनीय रूप। इस पर विशेष ध्यान दें; अर्थात् 'क' वर्ण के पहले 'कं' या 'कँ' आएगा। 'का' वर्ण के पहले 'कां' या 'काँ' आएगा। इस प्रकार 'कं' के विभिन्न रूपों के साथ पहले अनुस्वार पर अनुनासिक शब्द आता है, बाद में उसका शब्दक्रम होता है।

रोचक तथ्य—

व्यंजन को याद करने का सूत्र

1. क, च, ट, त, प– य, श
2. य, र, ल, व
3. श, ष, स, ह

09

हिंदी अंकों का शब्दकोशीय रूप

गणेशोत्सव का समय था। एक छात्र मेरे निवास पर चंदा लेने आया। मैंने उत्सव के निमित्त बीस रुपये देने को कहा। मेरे पास पचास रुपये का नोट था। अत: मैंने उससे तीस रुपये वापस करने के लिए कहा। छात्र बोला— 'कितने रुपये मुझे वापस करने होंगे?' मैंने कहा— 'तीस रुपये। किस कक्षा में पढ़ रहे हो? मैंने पुन: प्रश्न किया।'

छात्र ने बताया 'क्लास सिक्स में।'

''किस माध्यम से पढ़ रहे हो?''

''अंग्रेजी माध्यम से?''

''अच्छा! तभी तुम्हें तीस रुपये का अर्थ पता नहीं है। तुम्हें थर्टी रुपीज़ चाहिए।''

और सचमुच तब उसने मुझे तीस रुपये लौटा दिए; और कहा— 'सॉरी! अंकल, मुझे हिंदी नहीं आती।'

उस छात्र का नाम कमलेश था। ऐसे हमारे देश में कई कमलेश हैं, जो न अपने नाम का अर्थ जानते हैं, और न भारतीय मुद्रा के अंकों के विषय में।

यह स्थिति बच्चों की ही नहीं, बड़े लोगों की भी है। वे भी हिंदी अंकों को ठीक से बोलना-लिखना नहीं जानते। 'इकहत्तर है या एकहत्तर' किसी शिक्षक से मैंने पूछा— इन दोनों में सही उच्चारण क्या है? शिक्षक ने कहा— ठीक से पता नहीं।

यह शिक्षक की अज्ञानता का नहीं, अपितु अवधान की कमी को बताता है। मैंने शिक्षक को बताया कि ऐसी स्थिति में शब्द-कोश देखकर अपनी शंका का समाधान हम आसानी से कर सकते हैं।

अंग्रेजी छात्रों के सम्मुख इस प्रकार की कोई कठिनाई नहीं है। अंग्रेजी में 71 को Seventy one ही कहा जाएगा। अत: हिंदी में भी ऐसी मानक अंकों के उच्चारण और लेखन का अभ्यास प्राथमिक कक्षाओं से ही प्रारंभ करना चाहिए।

यहाँ हम हिंदी के मानक अंकों के शब्दकोशीय रूप दे रहे हैं। इन संख्या वाचक शब्दों के आधार पर आप जान सकेंगे कि शब्दकोश में इनका स्थान कहाँ है। संख्या वाचक 1 (एक) 'ए' वर्ण के शब्दों के साथ आएगा क्योंकि इसके उच्चारण में प्रथम वर्ण 'ए' है। इसी प्रकार अन्य संख्याओं के प्रथम अक्षर के आधार पर आप उस संख्या को शब्दकोश में ढूँढ़कर उसके लिखने के सही रूप को जानने का प्रयत्न करें।

एक से सौ तक संख्या वाचक शब्दों के मानक रूप

अंतरराष्ट्रीय अंक	देवनागरी अंक	संख्या वाचक मानक रूप
1	१	एक
2	२	दो
3	३	तीन
4	४	चार
5	५	पाँच
6	६	छह
7	७	सात
8	८	आठ
9	९	नौ
10	१०	दस
11	११	ग्यारह
12	१२	बारह
13	१३	तेरह
14	१४	चौदह
15	१५	पन्द्रह
16	१६	सोलह
17	१७	सत्रह
18	१८	अठारह
19	१९	उन्नीस
20	२०	बीस
21	२१	इक्कीस
22	२२	बाईस
23	२३	तेईस
24	२४	चौबीस
25	२५	पच्चीस
26	२६	छब्बीस
27	२७	सत्ताईस
28	२८	अट्ठाईस

अंतरराष्ट्रीय अंक	देवनागरी अंक	संख्या वाचक मानक रूप
29	२९	उनतीस
30	३०	तीस
31	३१	इकतीस
32	३२	बत्तीस
33	३३	तैंतीस
34	३४	चौंतीस
35	३५	पैंतीस
36	३६	छत्तीस
37	३७	सैंतीस
38	३८	अड़तीस
39	३९	उनचालीस
40	४०	चालीस
41	४१	इकतालीस
42	४२	बयालीस
43	४३	तैंतालीस
44	४४	चवालीस
45	४५	पैंतालीस
46	४६	छियालीस
47	४७	सैंतालीस
48	४८	अड़तालीस
49	४९	उनपचास
50	५०	पचास
51	५१	इक्यावन
52	५२	बावन
53	५३	तिरपन
54	५४	चौवन
55	५५	पचपन
56	५६	छप्पन
57	५७	सत्तावन
58	५८	अट्ठावन
59	५९	उनसठ
60	६०	साठ

अंतरराष्ट्रीय अंक	देवनागरी अंक	संख्या वाचक मानक रूप
61	६१	इकसठ
62	६२	बासठ
63	६३	तिरसठ
64	६४	चौंसठ
65	६५	पैंसठ
66	६६	छियासठ
67	६७	सड़सठ
68	६८	अड़सठ
69	६९	उनहत्तर
70	७०	सत्तर
71	७१	इकहत्तर
72	७२	बहत्तर
73	७३	तिहत्तर
74	७४	चौहत्तर
75	७५	पचहत्तर
76	७६	छिहत्तर
77	७७	सतहत्तर
78	७८	अठहत्तर
79	७९	उन्नासी
80	८०	अस्सी
81	८१	इक्यासी
82	८२	बयासी
83	८३	तिरासी
84	८४	चौरासी
85	८५	पचासी
86	८६	छियासी
87	८७	सतासी
88	८८	अट्ठासी
89	८९	नवासी
90	९०	नव्वे
91	९१	इक्यानवे
92	९२	बानवे

अंतरराष्ट्रीय अंक	देवनागरी अंक	संख्या वाचक मानक रूप
93	९३	तिरानवे
94	९४	चौरानवे
95	९५	पंचानवे
96	९६	छियानवे
97	९७	सत्तानवे
98	९८	अट्ठानवे
99	९९	निन्यानवे
100	१००	सौ

01

परिशिष्ट

हिन्दी के प्रमुख एकभाषी शब्दकोश

1. सचित्र हिंदी बाल शब्दकोश-

प्रकाशक- वंदना बुक एजेंसी, प्रीति विहार, दिल्ली-110092, प्रकाशन वर्ष- 2006, मूल्य- 390 रु.

यह शब्दकोश 6-9 वर्ष के बच्चों के लिए उपयोगी है। बाल रुचि व बाल सामर्थ्य को ध्यान में रखकर इसका निर्माण किया गया है। यही इसकी विशेषता है।

शब्द के साथ शब्दार्थ, बाल सुलभ रंगीन चित्र तथा शब्द प्रयोग भी दिया गया है। शब्दों का वर्णक्रम वर्णमाला के क्रमानुसार दिया गया है। प्रारंभ में ही वर्णमाला दी गई है; तथा शब्द सूची व शब्द के साथ पृष्ठ संख्या दी गई है, जो शब्द खोजने में सहायक है। अनुस्वार वाले शब्द अंत में दिए गए हैं। और इसके बाद संयुक्ताक्षर वाले शब्द रखे गए हैं। हलंत् व विसर्ग वाले शब्दों को टाला गया है।

इस शब्दकोश में 1728 शब्द, 5184 शब्द प्रयोग एवं 1000 के लगभग रंगीन चित्र हैं। प्रौढ़ शिक्षा के लिए भी यह उपयोगी है।

अन्य कोश—

क्र.	कोश का नाम	संपादक	प्रकाशक
1	सचित्र हिंदी शब्द सागर	डॉ. रामचन्द्र वर्मा	नागरी प्रचारिणी सभा काशी
2	मानक हिंदी कोश	डॉ. रामचन्द्र वर्मा	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
3	नालंदा विशाल शब्द सागर	नवल जी	आदीश बुक डिपो, नई दिल्ली
4	भार्गव आदर्श हिंदी शब्द कोश	नवल जी	भार्गव बुक डिपो, वाराणसी
5	दिनमान हिंदी शब्दकोश	शरण	दिनमान प्रकाशन, दिल्ली
6	उच्चतर हिंदी कोश	डॉ. हरदेव बाहरी	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

||02||

परिशिष्ट

हिन्दी के प्रमुख कोशों में दिया गया अकारादिक्रम

हिंदी शब्द सागर (बाबू श्यामसुंदर दास)	मानक हिंदी कोश (रामचंद्र वर्मा)	भार्गव आदर्श हिंदी कोश	नालंदा विशाल शब्द सागर
अ	**क**	**ज**	**त**
अंक	कंकड	जंग	तंग
अंकुर	कँगूरा	जँगला	तंबाकू
अंगूर	कंधा	जंगली	तंबू
अंबर	ककड़ी	जादव	तंबूरा
अंश	कक्कड़	जन्म	तंबोलिनी
अंसू	कक्ष	जिंदा	तः
अँगना	कढाव	जीजी	तकुआ
अंजन	कदापि	जुही	तकिया
अकड़	करोड़	जोड़ी	तापी
अजर	कर्कश	जौहर	तुहिन
अनमोल	कर्ता	ज्ञाति	तून
अनीति	कल	ज्ञेय	तेज
अपशब्द	कलगी	ज्यादती	तोबा
अमर	कलौंजी	ज्वालेश्वर	तौल
अम्ल	कांक्षा		त्राटक
अरथी	काक		त्र्यंश
अर्थ	किधर		त्वचा
अवरुद्ध	कुतूहल		
अश्व	कृतघ्न		
अहोर	कृत्य		
	केंद्र		
	केत		

कैद
कोको
कौस्तुक
क्यारी
कुन्दन
क्रोध
क्रांति
क्षणिक

विशेष टिप्पणी

उपरोक्त प्रमुख कोशों में दिए गए अकारादि क्रम पर ध्यान दें, तो आपको स्वयं निम्नलिखित बिन्दु स्पष्ट हो जाएँगे–

- चारों ही कोशों में अनुस्वार तथा अनुनासिक को सर्वप्रथम स्थान दिया गया है।
- प्रथम कोश में दिया गया क्रम– अंक, अंकुर, अंगूर, अंबर, अंश, अंसू, अंगना, अंजन, अकड़ है, अंक के पश्चात अंकुर है।
- क्+अ के पश्चात
  क्+उ का क्रम आएगा
- क्+ऊ (ह्रस्व 'उ' के पश्चात दीर्घ 'ऊ' का क्रम आएगा)
  (अर्थात शब्द में प्रथम वर्ण के पश्चात द्वितीय वर्ण का विचार भी उसी क्रम में किया जाता है। जैसे–कंकड़ के पश्चात् कँगूरा शब्द आया है। इसी प्रकार द्वितीय वर्ण में समानता होने पर तृतीय वर्ण में उसी क्रम को प्रधानता दी जाती है।)
- चारों ही कोशों में इस प्रकार अकारादि क्रम का अध्ययन कर इस तथ्य की पुष्टि करें। इससे आपका अभ्यास भी बढ़ेगा, तथा शब्दकोशीय वर्ण क्रम की पहचान भी सुगमता से हो सकेगी।

03

परिशिष्ट

प्रायोजना कार्य- छात्र स्वयं तैयार करें अपना शब्दकोश

यदि छात्र अपनी कक्षा की भाषा पाठ्यपुस्तक में आए कठिन शब्दों के अनुसार शब्दकोश तैयार करना चाहें तो, प्रायोजना कार्य के अंतर्गत इस प्रकार की गतिविधि दी जा सकती है। प्रारंभिक कक्षाओं में इस प्रकार के अभ्यास से उन्हें उच्च कक्षाओं में शब्दकोश के उपयोग करने में बहुत सहायता मिलेगी। शिक्षक को स्वयं इस विषय का अध्ययन करना होगा, ताकि छात्र को स्वयं के शब्दकोश तैयार करने में सुगमता हो। इस कार्य हेतु निम्नलिखित मार्गदर्शक बिन्दुओं पर शिक्षक को ध्यान देना होगा।

कोश निर्माण के मार्गदर्शक बिन्दु

1. प्रत्येक शब्दकोश में शब्दों को अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ के पश्चात् 'क' से 'ह' तक के सभी वर्णक्रम के अनुसार दिए रहते हैं। हमें जिस शब्द के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है, उसके आरंभ का वर्ण देखकर शब्द ढूँढ़ा जा सकता है; जैसे— 'अ' से प्रारंभ होने वाले सभी शब्द 'अ' शीर्षक के नीचे ही होंगे।
2. सभी वर्ण अनुस्वार एवं चंद्रबिंदु से शुरू होते हैं। इसके बाद वर्णक्रम शुरू होता है। इसलिए अंगरखा, अंशुमनि आदि के पश्चात् ही अटल, अनुरोध आदि शब्द आते हैं। यही क्रम सभी वर्णों के साथ स्वीकृत हैं।
3. हर वर्ण में मात्राओं का वही क्रम आता है, जो स्वरों का होता है; जैसे— 'क' में क्रमशः (हिंदी) 'क' के बाद का, कि, की, कु, कू, के, कै, को, कौ आदि से प्रारंभ होने वाले शब्द होंगे। इसी प्रकार अन्य वर्णों के क्रम में भी उनसे बनने वाले शब्द मिलेंगे। मात्राओं से युक्त वर्णों के समाप्त होने पर ही संयुक्त वर्ण शुरू होता है।
4. आधे वर्णों का क्रम पूरे वर्ण की मात्राओं के बाद आता है; जैसे— 'स्या' शब्द 'सौ' के बाद आएगा।
5. 'क्ष, त्र, ज्ञ' को 'ह' के बाद नहीं ढूँढ़ना चाहिए क्योंकि ये संयुक्ताक्षर रूप हैं।

शिक्षक द्वारा किए जाने वाले प्रयास

1. शब्दकोश निर्माण करते समय बाईं ओर कठिन शब्द तथा दाईं ओर उसका अर्थ लिखा जाना चाहिए।
2. आवश्यकतानुसार शब्दों के आगे कोष्ठक में संयुक्त शब्दों को अलग-अलग करके

दिखाना चाहिए, ताकि छात्र शब्द निर्माण की विधि से परिचित हो सके।

3. शब्द का अर्थ देने के पूर्व मूल शब्द के बाद कोष्टक में एक संकेताक्षर दिया जाना चाहिए, जिसमें व्याकरण की दृष्टि से कोई शब्द संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि शब्द भेदों में से किस भेद का है; यह जानकारी मिल सके, जैसे—

पुलिंग	– पु.	विशेषण	– वि.	अव्यय	– अ.
स्त्रीलिंग	– स्त्री.	क्रिया	– क्रि.	मुहावरा	– मु.
सर्वनाम	– सर्व.	क्रिया विशेषण	– कि.वि.		

4. कहीं-कहीं शब्दों के पर्याय भी देना चाहिए ताकि प्रसंग के अनुसार छात्र अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे।

5. अर्थ देते समय शब्द के प्रसंगगत अर्थ को भी महत्त्व देना चाहिए; जैसे—

क्र.	शब्द	अर्थ	प्रयोग
1.	आम	एक प्रकार का मीठा फल	कच्चे आम से अचार, अमचुर, पना (शरबत) आदि बनता है।
2.	आम	सामान्य, साधारण	आम तौर पर आम आदमी आम खाता है।

6. आवश्यक स्थानों पर समानार्थी शब्द भी दिए जाना चाहिए जिससे छात्र मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्दों में अंतर करना, और उनमें से उपयुक्त शब्द का चुनाव करना सीख सकेंगे।

7. सामान्य शब्दकोशों में मुहावरों को निर्दिष्ट शब्द के अंतर्गत दिया जाता है, किंतु छात्रों को सुविधा की दृष्टि से उन्हें अपना शब्दकोश तैयार करते समय मुहावरों को स्वतंत्र इकाई मानकर अलग पद के रूप में दिया जाए ताकि शब्द-कोश देखना उनके लिए सुविधाजनक रहे।

8. शिक्षक द्वारा छात्रों को उचित मार्गदर्शन करने के लिए कुछ शब्द सूची स्वयं भी तैयार कर लेना चाहिए। श्यामपट्ट पर टाँगकर स्वयं द्वारा निर्मित सूची छात्रों को अपने क्रम से मिलान करने को कहना चाहिए, ताकि वे उस सूची के अनुसार अपना क्रम सुधार लें।

9. छात्रों को किसी भी एक व्यंजन के आधार पर शब्दकोषीय क्रम बनवाने के लिए प्रेरित करें, ताकि उसकी सहायता से छात्र स्वयं भी अपने क्रम को ठीक कर लें।

10. कोश में शब्द ढूँढ़ो प्रतियोगिता का आयोजन भी समय-समय पर करें।

11. मौखिक रूप से शब्दों के सही उच्चारण का अभ्यास छात्रों को करवाना चाहिए ताकि उनके लिखित रूप को देखकर छात्र उनका वाचन ठीक से कर सकें। ध्यान रहे, जब तक किसी शब्द का उच्चारण और वाचन ठीक-ठीक नहीं होगा, छात्र 'कोश' में शब्द

को ठीक से नहीं ढूँढ़ पाएगा।

शब्दकोश का उपयोग और अशुद्ध शब्द को शुद्ध रूप में बार-बार बोलना तथा लिखना बालक को प्रारंभिक कक्षाओं से ही अभ्यास में आना चाहिए। इस संबंध में कुछ मार्गदर्शक बिंदु यहाँ स्पष्ट किए जाते हैं जिनके आधार पर शिक्षक यह कार्य कर सकता है—

1. छात्र 'आ' को 'अं' बोलता है।
2. 'इ-ई' में बोलने में अंतर नहीं कर पाता।
   शान्ति को शान्ती बोलता है।
3. छोटे 'उ' को 'ऊ' बोलते हैं। रुपया-रूपया।
4. 'ऋ' को 'रि' बोलते हैं। कृपा को किरपा बोलते हैं।
5. 'ओ' को 'औ' बोलते हैं, जैसे-गोस्वामी का गौस्वामी।
6. 'क' को 'ख', 'ख' को 'क', 'घ' को 'ग' बोलते हैं; जैसे-भूख को भूक, घर को गर।
7. 'छ' को 'श', 'क्ष' को 'च' बोलते हैं; जैसे- छात्र को क्षात्र।
8. 'ड', 'ढ' तथा 'ड़', 'ढ़' में भेद नहीं कर पाते हैं; जैसे- पड़ना को पढ़ना।
9. 'ण' को 'न' बोलते हैं; जैसे- विशेषण को विशेषन।
10. 'द्' का 'ध्' बोलते हैं; जैसे- विद्यार्थी को विध्यार्थी।
11. 'व' को 'ब' तथा 'ब' को 'व' बोलते हैं; जैसे- कवि को कबि।
12. 'र' का 'ड़' तथा 'ढ' को 'र' बोलते हैं; जैसे- सड़क को सरक।
13. 'श, ष, स' के उच्चारण में भेद नहीं कर पाते हैं; जैसे- कृष्ण का कस्न, शेर का सेर, सुषमा का शुसुमा, सुशील का शुशील।
14. 'क्ष' का 'छ', 'ज्ञ' का 'ग्य', 'स' का 'स्त्र' उच्चारण करते हैं; जैसे- क्षत्रिय का छत्रिय, ज्ञान का ग्यान, स्रोत का स्त्रोत।
15. स्टेशन को इस्टेशन, कर्म को करम, सवाल को स्वाल, चिह्न को चिन्ह बोलना सामान्य बात है।

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि अशुद्ध उच्चारण से वे शब्दकोश का सही उपयोग नहीं कर सकते। अतः ऐसे शब्दों का उच्चारण सही-सही हो, इसका शिक्षक ध्यान रखें।

║04║

परिशिष्ट

हिंदी वर्णों के पुराने तथा नए रूप

हिंदी शब्दकोश का अध्ययन करते समय हमें कुछ वर्णों के दो-दो रूप भी देखने को मिलते हैं। इनको समझने के लिए उनके मानक और अमानक रूपों को समझना होगा। पुराने रूप को अमानक रूप कहा गया है।

भाषा तथा लिपि के विकास के साथ-साथ देवनागरी लिपि के वर्णों के रूप में परिवर्तन होता चला गया है। इस ओर ध्यान देना आवश्यक है। यहाँ दोनों ही रूप को दिया जा रहा है, ताकि किसी शब्दकोश विशेष का अध्ययन करने में कठिनाई न हो।

अमानक रूप (पुराना रूप)	**मानक रूप (नया रूप)**
अ, आ, औ, औ, अं, अः	अ, आ, ओ, औ, अं, अः
ऋ	ऋ
ख	ख
छ	छ
झ	झ
ण	ण
ध	ध
भ	भ
ल	ल
श	श
ट्ट	ट् ट
द्द	द् द
त्त	त्त
द्ध	द्‌ध
द्व	द्‌व
द्य	द्‌य
ल्ला	ल्‌ला

द्भु	द्‌भु
ह्वी	ह्‌वी
ह्म	ह्‌म
क्ति	क्‌ति
ड्ढा	ड्‌ढा
क्का	क्‌का
द्म	द्‌म

||05||

परिशिष्ट

स्व-मूल्यांकन

यदि आपने इस पुस्तक का अध्ययन जिज्ञासा-समाधान की दृष्टि से किया है, तो सभी सूत्रों को व्यवहार में ला सकते हैं। एक मात्र अभ्यास से ही यह संभव है।

स्व-मूल्यांकन द्वारा यह अभ्यास स्वयं जाँचे। यहाँ कुछ शब्द दिए जा रहे हैं, जिन्हें शब्दकोशीय वर्णानुक्रम में जमाना है-

क्र.	**अशुद्ध क्रम**	**शुद्ध क्रम**
1.	उदय	------
2.	उपला	------
3.	उद्यम	------
4.	उजाला	------
5.	उखड़ना	------
6.	उत्पादन	------
7.	उँडेलना	------
8.	उभरना	------
9.	उन्नत	------
10.	उत्तर	------
11.	उपज	------
12.	उम्दा	------
13.	ऊँचा	------
14.	ऊन	------
15.	उचकना	------
16.	उषा	------
17.	उबलना	------
18.	उपदेश	------
19.	उधार	------
20.	उग्र	------

06

परिशिष्ट

परीक्षोपयोगी प्रश्न

1. विश्व के प्रथम भाषायीकोश का नाम क्या है?
2. संस्कृत शब्दकोशों में प्रथम कोश का नाम बताइए?
3. 'कोश' तथा 'कोष' शब्द में अंतर बताइए।
4. 'शब्दकोश' को परिभाषित कीजिए।
5. अच्छे शब्दकोश की विशेषताएँ बताइए।
6. 'एकभाषी कोश' तथा 'द्विभाषी कोश' से क्या आशय है?
7. क्ष, त्र, ज्ञ, श्र शब्दों को हम किस व्यंजन वर्ण में ढूंढ़ेंगे क्रमशः लिखिए।
8. हल्रहित व्यंजन से क्या आशय है? उसकी पहचान के लिए किसी एक व्यंजन को लिखिए।
9. 'हिंदी व्याकरण में वर्णमाला' तथा 'शब्दकोश में वर्णमाला' में अंतर स्पष्ट कीजिए।
10. अनुस्वार तथा अनुनासिक का क्रम 'शब्दकोश' में कहाँ से प्रारंभ होता है किसी एक व्यंजन का उदाहरण देकर बताइए।
11. संयुक्त वर्ण के कोई दो शब्द लिखकर उनका शब्दकोश में स्थान निर्धारित कीजिए।
12. व्यंजनों के दो रूप कौन-कौन से हैं?
13. शब्दकोश में खड़ी पाई वाले हलयुक्त रूपों का क्रम कब आता है?
14. 'ऋ' की मात्रा वाले शब्दों का क्रम कहाँ निहित होता है?
15. 'क्र' तथा 'कृ' में अंतर स्पष्ट करें, तथा दोनों का क्रम भी शब्दकोश में स्पष्ट करें।
16. संकेताक्षरों से क्या आशय है? उदाहरण देकर समझाएँ।
17. किसी एक वर्ण के शब्दकोशीय रूप लिखिए।
18. हिंदी के प्रमुख एकभाषीय कोश का नाम बताइए।
19. हिंदी वर्णों के दो पुराने तथा नए रूप लिखिए।
20. हिंदीभाषी कोश तथा अन्य कोशों में क्या अंतर है?
21. नीचे कुछ शब्द दिए जा रहे हैं, उन्हें कोश के क्रम में जमाएँ।

1.	कंकर	2.	किंचित	3.	किरण
4.	केश	5.	क्या	6.	कौन

7.	क्लेश	8.	क्रूर	9.	कैंची
10.	कुंतल	11.	कुत्ता	12.	कृपाण
13.	कूच	14.	कमल	15.	कलम

22. दाम, नाम, कर्म, क्रम, आशीर्वाद, नम्र को कोशीय क्रम के अनुसार रखें।
23. क्षेत्र, त्राण, श्री, ज्ञान को कोशीय क्रम में रखें।
24. 'कृपाण' शब्दकोश में किस शब्द के ठीक बाद आएगा।
25. कोश में 'शृंगार' शब्द 'हँसने' से पहले आएगा, या बाद में।
26. कोश में द्वेष, द्रव, द्वंद्व, दौहित्य का क्रम क्या होगा?
27. निम्नलिखित शब्दों को कोश के अनुसार रखिए—
    भक्त, आक्रमण, मिट्टी, राष्ट्र-प्रबुद्ध, विद्यालय, द्वापर, ध्यान, कर्म, प्रार्थना, व्यापार, ब्रह्म, ग्राह्य, आह्वान।
28. रमेश, मनोहर, श्रीकांत, ज्ञानेश्वर, त्र्यंबक, में से सबसे पहला, तथा सबसे अंतिम क्रम में कौन होगा? (शब्दकोशीय क्रमानुसार)।
29. किसी साक्षात्कार में निम्नलिखित अभ्यर्थी पहुँचे। यदि शब्दकोशीय क्रमानुसार उन्हें बुलाया जाए, तो पाँचवें क्रम में किसका नाम पुकारा जाएगा—
    पंकज, धर्मदास, विवेक, उमेश, ओंकार, ऋषि, आद्या, लक्ष्मी, हंसा, दुर्गा।
30. नगर की टेलीफोन डायरी में एक नाम और जोड़ना है— ज्ञानेश्वर। नीचे लिखे नामों में रिक्त स्थान पर उस नाम को शब्दकोशीय क्रमानुसार लिखिए—
    1. उषा प्रियम्बदा
       ----
    2. ऐश्वर्या सिन्हा
       ----
    3. कमला राय
       ----
    4. जमना लाल सर्राफ
       ----
    5. माँगीलाल नाहर

व्याकरण परिवार कौमुदी (एकांकी)

व्याकरण परिवार

पात्र परिचय

श्रीमान् संज्ञानन्द	–	परिवार के मुखिया
श्रीमति क्रिया देवी	–	परिवार की मालकिन
सर्वनाम	–	पुत्र
विशेषण	–	पुत्री
क्रिया विशेषण	–	पुत्री
सम्बन्धबोधक	–	घर का सेवक
समुच्चयबोधक	–	घर का सेवक
विस्मयादिबोधक	–	पारिवारिक मित्र

समय – प्रातःकाल

स्थान – भाषा के घर का बाहरी कक्ष

रंगमंच सज्जा –

(एक मेज और अर्द्धगोलाकार रूप में कुछ कुर्सियाँ रखी हैं। मेज पर लिखने-पढ़ने के सामान के अतिरिक्त कुछ पुस्तकें भी रखी हैं।)

(नेपथ्य से)

– अपने देश भारत में एक ऐसा परिवार भी है जिसकी पहुँच हर घर में है। इस परिवार के मुखिया का नाम है-श्रीमान् संज्ञानन्द महोदय, तथा इस परिवार की मालकिन का नाम है-श्रीमती क्रिया देवी। इस दम्पति के तीन बच्चे हैं-एक पुत्र तथा दो पुत्रियाँ।

पुत्र का नाम 'सर्वनाम' है। दोनों बेटियों के नाम हैं- कुमारी विशेषण तथा कुमारी क्रिया विशेषण। इस परिवार में दो नौकर भी हैं-जिनके नाम हैं-सम्बन्धबोधक तथा समुच्चयबोधक। इस परिवार के एक और सदस्य हैं-श्री विस्मयादिबोधक महोदय, जो उनके पारिवारिक मित्र हैं; और सुख-दु:ख में सदा उनका साथ देते हैं।

आइए, इस परिवार से आपकी दिलचस्प भेंट करवाते हैं।

(संज्ञानन्द का प्रवेश। संज्ञानन्द के हाथ में एक पत्रिका है जिसके पन्नों को पलटते हुए किसी एक पृष्ठ पर उनकी नज़र टिक जाती है; और उसे पढ़ने का अभिनय करते हैं।)

संज्ञानन्द : क्रिया! ओ क्रिया! कहाँ हो तुम! तुम्हारे बिना मेरा कुछ काम नहीं होता है। मेरा खाना, पीना, पढ़ना, लिखना, जाना, आना तुम्हारे बिना सम्भव नहीं।

(श्रीमती क्रिया देवी का प्रवेश)

क्रिया देवी : मैं जानती हूँ, तुम मेरे बिना एक पल भी नहीं रह सकते। चाहे भूतकाल हो या भविष्यकाल, मैं सभी समय में तुम्हारे साथ रही हूँ; और रहूँगी, लेकिन वर्तमानकाल में भी तुम मेरे बिना नहीं रह सकते, ऐसा क्यों?

संज्ञानन्द : **(टी.वी. की ओर इशारा करते हुए)** देखो! यहाँ चैनल पर रंगमंचीय कार्यक्रम चल रहा है। मैं अकेले इस कार्यक्रम को देखूँ, यह ठीक नहीं, तुम्हें भी मेरा साथ देना होगा। हाँ, वर्तमान में तुम साथ नहीं रहोगी तो फिर भूतकाल और भविष्यकाल कैसा?

(संज्ञानन्द तथा क्रिया देवी कुर्सी पर बैठते हुए)

क्रिया देवी : इस चैनल पर कार्यक्रम क्यों देख रहे हैं! आप, जानते नहीं, यह चैनल जिस भाषा का प्रयोग कर रहा है, वह ठीक नहीं। अन्य चैनलों पर भी ऐसा ही कर रहे हैं, उससे हम अपनी परम्पराओं को भूलते जा रहे हैं। अपनी भाषा को बिगाड़ कर विदेशी भाषा के शब्दों की मिलावट से ये अपनी संस्कृति पर गहरा आघात कर रहे हैं।

(विस्मायादिबोधक प्रवेश करते हैं। संज्ञानन्द तथा क्रिया देवी खड़े होकर उनका अभिवादन करते हैं।)

संज्ञानन्द : आइए भाई साहब! **(कुर्सी की ओर इशारा करते हुए)** बैठिए।

(तीनों कुर्सी पर बैठ जाते हैं।)

विस्मयादि बोधक : अरे! नौ बज गए। संज्ञानन्द जी! आज बच्चे नहीं दिखाई दे रहे हैं। कहाँ हैं भाई सब लोग?

(तभी सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया विशेषण सभी एक-एक कर आते हैं, और एक साथ सभी को प्रणाम करते हैं।)

विस्मयादि बोधक : नमस्ते बेटा सर्वनाम! कहाँ थे तुम? क्या कर रहे थे अभी तक? बताओ तो?

सर्वनाम : मैं पिताजी का सबसे बड़ा लड़का हूँ न। घर का सारा काम मुझे ही करना पड़ता है। वही कर रहा था।

विस्मयादि बोधक : और हमारी दोनों बेटियाँ क्या कर रही थीं?

विशेषण : मैं सर्वनाम की बहन हूँ। मेरे पिताजी और बड़े भाई सर्वनाम दोनों ही मुझे बहुत चाहते हैं। मैं सदैव इनके कामों में हाथ बँटाती हूँ। दोनों की क्या तारीफ करूँ। इनमें इतने गुण और योग्यताएँ हैं कि उनको बताते-बताते मेरे पास शब्द कम पड़ जाते हैं।

विस्मयादि बोधक : और बेटी क्रिया विशेषण! तुम क्या कर रही थीं?

क्रिया विशेषण : मैं अपनी माँ को बहुत चाहती हूँ। मैं तो अपनी माँ की इतनी प्रशंसा करती हूँ कि भैया और पिताजी को भी भूल जाती हूँ। बस, उन्हीं के काम में हाथ बँटा रही थी।

विस्मयादि बोधक : क्या! तुम माँ के सामने पिताजी और भाई को भी भूल जाती हो ऐसा क्यों! बेटी!

क्रिया विशेषण : ये लोग मुझे नहीं चाहते, इसलिए उनकी प्रशंसा क्यों करूँ। तारीफ तो क्रिया की होनी चाहिए। काम किस तरह किया जाए, क्या किया जाए, किस समय किया जाए, यह बात ही मैं माँ को बताती रहती हूँ। और सुनो, माँ के सभी कर्म सकर्मक थोड़े ही होते हैं-कभी हँसती है, कभी रोती है, कभी गप्पें लड़ाती है, यह भी कोई काम हुआ, यह तो अकर्मक है।

विस्मयादि बोधक : बस!बस! ठीक है। सुनो भाई संज्ञानन्द! आज तुम्हारे घर इसलिए आया हूँ

कि लगता है, तुम्हारा परिवार पर नियंत्रण नहीं रहा। सर्वनाम, विशेषण, क्रिया-विशेषण घर के कामों में इतने लगे रहते हैं कि समाज में इनकी पहचान लुप्त होती जा रही है। अभी-अभी मैं रास्ते में आ रहा था तो एक लड़की को यह कहते हुए सुना -"मैं भी चलूँगा, तुम अकेले नहीं जा सकता" क्या उसका यह कहना ठीक है। पुरुष, पुरुष की तरह बोलता है; औरत, औरत की तरह। श्रीमान् संज्ञानन्द महोदय! आगे की क्या कहूँ, लोग तुम्हें भी भूलते जा रहे हैं। आज एक घर में गया, वहाँ मैंने एक छोटी-सी बच्ची से पूछा-"बेटा बताओ, 'गाय कहाँ' खड़ी है।" वह कहती है- "मुझे क्या पता?" फिर मैंने पूछा-"बताओ, 'काऊ कहाँ' खड़ी है?" उसने बताया - "यह रही।" बताओ, यदि यही हाल रहा तो कौन किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान के बारे में सही-सही बता पाएगा? आज मोहन, सोहन कहीं दिखाई नहीं दे रहे हैं। पिंकु, टिंकु चल पड़े हैं। मुझे तो डर है, तुम्हारा खानदान ही बरबाद होकर रहेगा। लोग भूल जाएँगे कि तुम्हारा असली खानदान क्या है।

संज्ञानन्द : कैसे भूल जाएँगे? मैं जानता हूँ। मेरा वंश संस्कृत भाषा से चला है। संस्कृत भाषा इस देश की सबसे पुरानी भाषा है, जिसका व्यवहार मुनि, विद्वान, कवि सभी करते हैं। इसे देवभाषा भी कहा जाता है। फिर उसकी सन्तान प्राकृत भाषा और पालि भाषा हुई। प्राकृत भाषाओं से ही अपभ्रंश भाषा का जन्म हुआ। कहते हैं- अपभ्रंश भाषा का अर्थ है-बिगड़ी हुई भाषा। यह नाम विद्वानों ने रखा था, लेकिन मैं जानता हूँ, अपभ्रंश लोक भाषा के रूप में विख्यात थी। इसी अपभ्रंश से हिन्दी का जन्म हुआ है। जब से भारत स्वतन्त्र हुआ, इसे राष्ट्रभाषा होने का गौरव भी प्राप्त है; हम उसी राष्ट्रभाषा परिवार के हैं।

विस्मयादि बोधक : यह तो ठीक है, श्रीमान् संज्ञानन्द जी! आप एक ऊँचे खानदान से हैं। लेकिन आपका नाम हिन्दी कैसे पड़ा? क्या कुछ बताएँगे।

संज्ञानन्द : मैं जानता हूँ, तुम क्या कहना चाहते हो। हिन्दी, हिन्दु, हिन्दुस्तान ये नाम संस्कृत के नहीं, फारसी के हैं, यही न? तो सुनो, यह ऐसी बात है कि बच्चा हमारे घर में जन्मे, और उसका नामकरण पड़ोसी करें।

विस्मयादि बोधक : ठीक है! ठीक है! अरे भाई! क्या बातें ही चलती रहेंगी या कुछ खिलाओगे-पिलाओगे भी?

संज्ञानन्द : अरे! सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक! कहाँ हो तुम लोग? देखो, कौन आए हैं। तुम्हें पता नहीं, अतिथि का स्वागत करना हमारा धर्म है।

सम्बन्ध बोधक : आया मालिक! मैं तो आपके और सर्वनाम भैया के बाहर जाने की तैयारी में

लगा था।

विस्मयादि बोधक : और क्या क्रिया भाभी बाहर नहीं जा रही हैं? ये भी तो जा रही हैं? फिर तुम संज्ञा और सर्वनाम का ही काम क्यों करते हो, इनका क्यों नहीं?

(समुच्चयबोधक का प्रवेश)

समुच्चय बोधक : मैं बताऊँ महोदय, असली बात यह है कि सम्बन्धबोधक तो उस नौकर की तरह है; जो केवल मालिक की बात सुनता है; और उसके बेटे की। बाकी सारे घर का काम मैं करता हूँ। घर के प्रत्येक सदस्य की देख-रेख करने की जिम्मेदारी मेरी है। मैं तो पूरे परिवार का नौकर हूँ। मैं चाहूँ तो किन्तु, परन्तु, मगर लगाते हुए यह कह सकता हूँ कि काम इस कारण नहीं हुआ। मैं बीमार हूँ, क्योंकि मुझे सर्दी लग गई है। लेकिन मैं ऐसा नहीं करता।

अब सुनिए, कल रविवार था। सब लोगों ने तय किया, पिकनिक मनाएँगे। मैं तैयारी में लग गया लेकिन अचानक वर्षा हो गई। वर्षा लगातार होती गई, इसलिए मुझे सर्दी लग गई।

विस्मयादि बोधक : बस! बस! बस करो भाई! तुमने अपनी पहचान भी इस तरह बता दी। और तथा, लेकिन, अथवा, इसलिए, नहीं तो, क्योंकि यह सब कहना तो तुम्हारी आदत में शुमार है। भाई वाह! अरे बेटी क्रिया विशेषण और सम्बन्धबोधक! तुम दोनों के काम में अन्तर क्या है? मुझे लगता है, जैसी तुम माँ की सेवा करती हो, वैसे ही सम्बन्धबोधक संज्ञानन्द और सर्वनाम की सेवा करता है। काम में अन्तर समझ में नहीं आता?

क्रिया विशेषण : नहीं महोदय! हम दोनों के काम में बहुत बड़ा अन्तर है। मेरा काम है-मेरी माँ (क्रिया) किसी काम को कैसे, कब, कहाँ और कितना करती है; इस बात का ध्यान रखकर सहायता करना; और सम्बन्धबोधक का काम है- पिता जी और भाई के बीच सम्बन्ध जोड़ना।

जैसे- सामने मन्दिर है। (यह बताना मेरा काम है)। घर के सामने मन्दिर है (यह घर और मन्दिर दोनों के बीच सम्बन्ध जोड़ना सम्बन्धबोधक का काम है।)

विस्मयादि बोधक : वाह! भाई वाह! यह भी खूब रही। क्या खूब सभी ने अपना-अपना काम बताया। समय बहुत अधिक हो चला है। अब चलना चाहिए।

(सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण विस्मयादिबोधक के पैर छूते हैं।)

विस्मयादि

बोधक : जीते रहो! दीर्घायु हो! सुनो!! जाते-जाते मैं सभी को एक सलाह देता जा रहा हूँ, ध्यान रखना।

''बेटा सर्वनाम-लिंग, वचन और कारक: ये तीन, तुम्हारी शक्तियाँ हैं। इनका ध्यान रखना।

मैं पढ़ता हूँ। मैं पढ़ती हूँ। हम पढ़ते हैं। मैं पुस्तक से पढ़ता हूँ। माँ कपड़े सिलती है। इन सभी वाक्यों में लिंग, वचन और कारक की समानता है, यह परम्परा खत्म नहीं होनी चाहिए।''

''बेटी विशेषण-ध्यान रहे, तुम्हारा काम सुन्दर, अधिक सुन्दर, सबसे सुन्दर होना चाहिए, ऐसा न हो कि तुम्हारा काम खराब, अधिक खराब और सबसे खराब होता जाए। तुम्हें समाज के सामने आदर्श रखना चाहिए कि अपना लक्ष्य महान, महानतर और महानतम् हो। एक-एक सीढ़ी चढ़कर विकास की उच्चतम् अवस्था तक पहुँचना ही सबका लक्ष्य बने। यह ध्यान रहे।''

तुम सब भी समझ लो, आज भाषा के परिवार में जो संकट आ रहा है, उस ओर ध्यान दो। सब लोग अपना-अपना काम ठीक से करो और एक -दूसरे का साथ मत छोड़ो। तुम्हारे परिवार की मान-मर्यादा इसी में है कि काम नियम के अनुसार होना चाहिए। मैं चाहता हूँ, तुम्हारे वंश की परम्परा भी बनी रहे, और सब लोग वर्तमान के साथ भी चल सकें। सभी को मिलकर इस भाषा को अब अन्तरर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाना है। यह समय की माँग है।

(पटाक्षेप)

संज्ञा

क्या आप बता सकते हैं कि वह क्या है, जो है वो तो आपका, पर उसका प्रयोग सदा दूसरे ही करते हैं।

जी हाँ! आपका नाम।

व्याकरण में किसी के नाम को ही ***संज्ञा*** *कहते हैं। प्रत्येक वस्तु, स्थान, भाव या प्राणी का कोई न कोई नाम अवश्य ही होता है। प्रत्येक नाम को* ***संज्ञा*** *कहा जाता है।* ***संज्ञा*** *शब्द का अर्थ ही है नाम।*

पात्र परिचय

संज्ञानन्द जी	–	
पत्रकार	–	
विशेषण	–	संज्ञानन्द जी की पुत्री
एक बालक	–	

स्थान

[घर का ड्राइंग रूम]

(संज्ञानन्द जी अपने ड्राइंग रूम में बैठे हैं। तभी एक पत्रकार उनके कक्ष में प्रवेश करता है और अपना परिचय पत्र देता है।)

पत्रकार : नमस्ते! संज्ञानन्द जी। मैं 'हिन्दी प्रचार-प्रसार' का पत्रकार हूँ। हिन्दी विषय पर आपसे कुछ चर्चा करना है। कहिए, अनुमति है।

संज्ञानन्द : हाँ! हाँ! अनुमति है। हमारा पूरा परिवार हिन्दी भाषा की सेवा में लगा हुआ है। हिन्दी को अनुशासन में रखना हमारा धर्म है।

पत्रकार : संज्ञानन्द जी! हिन्दी का एक विशाल भूगोल है। हिन्दी भाषा प्रयोग क्षेत्र इस दृष्टि से विशाल है। अब तो राष्ट्र-भाषा से ऊपर उठकर अन्तरर्राष्ट्रीय-स्तर पर भी इसने अपनी पहचान बनाई है। स्वाभाविक है कि इससे हिंदी-भाषा का एक नया रूप देखने को मिल रहा है। कई नए-नए शब्द भी हिंदी में आ रहे हैं, जिसका प्रभाव व्याकरण परिवार के अनुशासन पर पड़ रहा है। संज्ञा शब्दों में भी बदलाव आया है। इसकी सभी को चिन्ता है। इस संबंध में आप क्या कहना चाहेंगे?

संज्ञानन्द : यह आपने ठीक कहा है। मैं देख रहा हूँ, यह परिवर्तन समय से पहले ही हो रहा है। नई पीढ़ी ने व्यक्ति, वस्तु तथा स्थान के नाम तेजी से बदलने का जैसे संकल्प ले लिया है। अब व्यक्ति राम कुमार शर्मा के स्थान पर आर.के. शर्मा कहलाना अधिक पसन्द कर रहा है, जो रावण कुमार भी हो सकता है, राज कुमार भी। राम कुमार रखने से संस्कृति का बोध होता था, लेकिन आर.के. कहने से क्या बोध होता है? मैं नहीं जानता। कुछ इसी प्रकार का परिवर्तन स्थान के नाम में भी हुआ है। देखो, प्रयाग को लोग अब इलाहाबाद के नाम से जानते हैं; काशी को बनारस के नाम से। यही बात वस्तुओं के बारे में है। अब असली घी की पहचान पीढ़ी भूलती जा रही है। डालडा घी को ही लोग असली घी समझते हैं। यही हाल मैं जाति वाचक नामों में भी देख रहा हूँ - गाय को काऊ कहा जाने लगा है। कुत्ता डॉग बन गया है। भाववाचक शब्दों की स्थिति तो और भी विचित्र है। गुण वाले शब्द कम बोले जाते हैं, दोष बताने वाले अधिक। इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य के मन में दुर्गुण वाले भाव अधिक पनप रहे हैं, सद्गुण वाले कम।

पत्रकार : क्या आप यह कहना चाहते हैं कि व्यक्ति, जाति तथा भाव इन तीनों से आपकी जो एक विशिष्ट पहचान थी, वह धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है; और इससे मनुष्य के अन्त:करण में संस्कृति का क्षरण हो रहा है।

संज्ञानन्द : ठीक कहा आपने। और कितने प्रमाण दूँ। क्या आप नहीं देख रहे हैं कि अब व्यक्ति का नाम राम, कृष्ण नहीं, पिंकु-चिंकु हो गया है। लड़कियाँ सीता, राधा के बदले अपने आप को हेमामालिनी, रागिनी कहलाना चाहती हैं।

जाति वाचक में माता-पिता, माम-डैड हो गए हैं। शिक्षक-टीचर बन गए हैं। पशु पक्षियों के नाम अंग्रेजी में रखे जा रहे हैं। स्थानों में होटल, क्लब, स्टोर आदि शब्द सुनने को मिल रहे हैं। भाववाचक; वहाँ तो स्थिति और भी विचित्र है। मनुष्य में मनुष्यता कम होती जा रही है। नारी में नारीत्व का अभाव हो गया है। मीठा, मिठास खो रहा है। अपनों ने अपनापन खो दिया है। इस प्रकार प्राणी तथा वस्तुओं के अपने गुण, धर्म, दशा, कर्म और मनोभाव बदलते जा रहे हैं।

पत्रकार : लेकिन बात यहीं तक नहीं है। अब भौतिकता के बढ़ते प्रभाव ने दो प्रकार की संज्ञाओं को और जन्म दिया है: समूह वाचक और द्रव्यवाचक। क्या आपको इस संबंध में कोई जानकारी है?

संज्ञानन्द : हाँ! मुझे पता है। बारात समूह वाचक है क्योंकि विवाह में आने वाला समूह है वह। हिरणों का झुंड, डाकुओं का गिरोह, साधुओं की जमात, अनाज का ढेर, सेना की टुकड़ी, चाबियों का गुच्छा ये सभी समूह वाचक हैं। और जो लोग पदार्थ या द्रव्य से प्रेम करने लगे हैं, उन्होंने द्रव्य वाचक शब्दों का अधिक प्रयोग करना शुरू कर दिया है; जैसे - लोहा, लंबा, ठोस, चौड़ी, पानी आदि। पहले ये दोनों प्रकार की संज्ञाएँ जाति वाचक में ही शामिल थीं। अब उनमें भी जाति भेद होने लगे हैं। यह अच्छी बात नहीं है। इतना ही नहीं- एक दिन मैं भ्रमण को जा रहा था, तभी किसी ने पूछा - ''संज्ञानन्द जी, भ्रमण शब्द संज्ञा है क्या ?'' मैंने कहा - हाँ! वे बोले - 'भ्रमण' न व्यक्ति है, न जाति, न भाव फिर यह संज्ञा कैसे ? ''मैंने कहा - यह तो भाव वाचक संज्ञा है। भाववाचक संज्ञा में कुछ संज्ञाएँ ऐसी हैं जो क्रिया से बनाई जाती हैं। लेकिन भ्रमण तो क्रिया से बनाया शब्द नहीं है।'' उन्होंने कहा -
''आपको पता है यह क्रियार्थक संज्ञा है। एक नया भेद भी आपके परिवार में आया है।'' बोलो! तब मुझे पता चला कि संज्ञा के छः भेद हो गए हैं।

पत्रकार : संज्ञानन्द जी, कृपया यह बताइए कि क्या व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाव वाचक संज्ञाओं में आने वाले नाम परस्पर दल -बदल भी कर लेते हैं। ऐसे में तो यह जानना बड़ा कठिन होगा कि कौन सा शब्द किस प्रकार के भेद के साथ है।

संज्ञानन्द : यह गड़बड़ी भी मैं अनुभव कर रहा हूँ। राजनीति की तरह यह प्रवृत्ति भाषा में भी बढ़ रही है। इस प्रवृत्ति से भाषा का स्वरूप विकृत होता जा रहा है। आम आदमी ही नहीं, लेखकगण भी भाषा के तत्त्व तथा उसकी प्रकृति के जाने बिना इसी आधार पर नए-नए शब्द गढ़ते जा रहे हैं।

पत्रकार : मेरा प्रश्न अभी अधूरा है। कुछ स्पष्ट कीजिए। दल-बदल पर प्रकाश डालिए।

संज्ञानन्द : हाँ! मैं बता दूँ- आप जानते हैं, 'पुरी' शब्द का अर्थ है ग्राम या नगर, परन्तु अब इस शब्द का प्रयोग केवल जगन्नाथ पुरी के लिए किया जाता है। यह जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग हुआ। इसकी पहचान यह है कि जाति वाचक संज्ञा का प्रयोग सदा बहुवचन में होता है। यदि उसका प्रयोग एक वचन में

होने लगे तो वह व्यक्ति वाचक प्रयोग कहलाएगा; जैसे- 'पुरी' पहले जातिवाचक शब्द था, जो एक वचन में प्रयोग होने से अब व्यक्ति वाचक हो गया है।

ठीक इस प्रयोग के विपरीत यदि कोई कहे - बस, तुम्हीं एक हरिश्चन्द्र हो, तो यहाँ 'हरिश्चन्द्र' का प्रयोग व्यक्ति के स्थान पर जातिवाचक के रूप में हुआ है, क्योंकि हरिश्चन्द्र एक व्यक्ति है जो सत्यवादी के रूप में जाना जाता है, किन्तु उनका यह गुण यहाँ व्यक्तिवादी न होकर अनेक व्यक्तियों का बोध कराता है। इसलिए यह जातिवाचक हो गया है। एक वचन से बहुवचन बन गया है। यही इसकी पहचान है।

पत्रकार : समझा। इसीलिए कहा जाता है - देश में जयचन्दों की कमी नहीं है। या वह हमारे घर का विभीषण है। अब आप भाव वाचक का भी एक उदाहरण देंगे।

संज्ञानन्द : भाव वाचक संज्ञाएँ सदा एक वचन में रहती हैं। इनका बहुवचन करते ही ये जाति वाचक संज्ञाएँ बन जाती हैं; जैसे -

- आलस्य हमारा शत्रु है। (यहाँ आलस्य भाववाचक है)
- आलसियों से दूर रहना चाहिए। (यहाँ आलसियों शब्द जातिवाचक है)

एक और कसौटी ध्यान में रखो -

भाववाचक संज्ञाओं को देखा या छुआ नहीं जा सकता। इन्हें केवल अनुभव किया जा सकता है। आलसियों को देखा या छुआ जा सकता है, किन्तु आलस्य को नहीं।

(कुमारी विशेषण का प्रवेश)

विशेषण : नमस्ते पिताश्री!

संज्ञानन्द : कहाँ से आ रही हो बेटी। मैं तुम्हारा परिचय इन पत्रकार महोदय से करवाता हूँ। ये मेरे विषय में कुछ जानना चाहते थे।

विशेषण : क्या चर्चा पूरी हो गई। मैं यहाँ यह बताने आई थी कि मैंने एक संस्था बनाई है, जो गरीबों की मदद करती है। पत्रकार महाशय को इस संबंध में अपने पत्र में यह समाचार अवश्य प्रकाशित करना चाहिए।

पत्रकार : अवश्य! अवश्य! **(कुछ देर रुककर)** मैं एक व्यक्ति को जानता हूँ, जो बहुत ग़रीब है। क्या आप उसकी सहायता करेंगी ?

विशेषण : बहुत ग़रीब - यहाँ आपने '**बहुत**' शब्द कहकर मेरा संबंध उस व्यक्ति से ख़ुद-ब-ख़ुद जोड़ दिया है जो ग़रीब है।

संज्ञानन्द : हाँ! बेटी तुमने एक अच्छी बात का स्मरण कराया। एक बात और ध्यान रखिए पत्रकार महोदय। यह बहुत कम लोग जानते हैं कि यदि विशेषण किसी जाति या वर्ग का बोध कराने लगे, तो वे जातिवाचक संज्ञा बन जाते हैं। जैसे- आपने कहा जो बहुत ग़रीब है। यहाँ **बहुत** शब्द **ग़रीब** का विशेषण है, किन्तु कुमारी विशेषण ने जो ग़रीबों-शब्द का प्रयोग किया है, वह जातिसूचक संज्ञा है, क्योंकि इस शब्द

के पहले किसी विशेषण का प्रयोग नहीं हुआ है। अतः यह शब्द सम्पूर्ण ग़रीब समाज का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

पत्रकार : संज्ञानन्द जी! आपका बहुत समय लिया, धन्यवाद। कुमारी विशेषण ने भी इस चर्चा में भाग लिया, मुझे अच्छा लगा; किन्तु चलते-चलते एक प्रश्न और -
परिवर्तन सृष्टि का नियम है। मौसम में भी परिवर्तन होता रहता है। किन्तु परिवर्तन आपके परिवार में भी होता आ रहा है, ऐसा क्यों ? जैसे - लड़का जाता है। लड़की जाती है। लड़कियाँ जाती हैं। लड़कों ने मैच जीता।
इस प्रकार लड़का-लड़की, लड़कियों तथा लड़कों के चार प्रकार के परिवर्तित रूप आपके परिवार में देखने को मिल रहे हैं। ऐसा क्यों ?

संज्ञानन्द : इस संबंध में फिर कभी चर्चा करेंगे। लेकिन ध्यान रखो, हिन्दी में भाषा-भाषी लोगों के लिए- लिंग, वचन और कारक संबंधी कुछ ऐसे नियम हमारे परिवार ने अवश्य बना रखे हैं, जिन्हें हम रटकर नहीं, सहज में ही प्रयोग में लाते हैं। इसलिए मेरे विचार में हमारी इस विशेषता को रटकर याद नहीं रखा जा सकता है। अच्छा होगा, आप हिन्दी में बातचीत करें; हिन्दी में पुस्तकें पढ़ें और निरन्तर अभ्यास से लिंग, वचन तथा कारक का शुद्ध प्रयोग करना सीखें। फिर आप स्वयं प्रसंगानुकूल परिवर्तन के इस रहस्य को जानने लगेंगे। बस, आज इतना ही।

(तभी एक बालक का प्रवेश)

बालक : संज्ञानन्द जी! प्रणाम। **(प्रणाम के पश्चात हल्की मुस्कान चेहरे पर उठती है।)**

संज्ञानन्द : आशीर्वाद! बेटे कहो कैसे हो ? मुस्करा क्यों रहे हो ? क्या कोई ख़ास बात है।

बालक : आपके आशीर्वाद से आनंद में हूँ। मैं मुस्करा इसलिए रहा हूँ कि कल गुरु जी ने कक्षा में पूछा - एक ऐसा वाक्य बनाओ जिसमें संज्ञा के तीनों भेद आ जाएँ। पता है कोई भी वाक्य नहीं बना पाया। पर मैंने बना दिया।

संज्ञानन्द : शाबास! ज़रा सुनाना वह वाक्य।

बालक : सुनिए - सुनील गावस्कर क्रिकेट खेल के बेहतरीन खिलाड़ी है।

संज्ञानन्द : अच्छा! इसमें तीनों भेद कौन-कौन से हैं, बता सकोगे ?

बालक : देखिए, इस वाक्य में - सुनील गावस्कर व्यक्ति वाचक संज्ञा है, खिलाड़ी जाति वाचक और खेल भाव वाचक। ठीक है न... अरे! मुझे स्कूल जाना है। देर हो रही है।

(सभी हँसने लगते हैं। बालक तेजी से भाग जाता है।)

पत्रकार : बहुत-बहुत धन्यवाद! फिर मिलेंगे। आज की इस चर्चा के लिए आपका आभारी हूँ।

संज्ञानन्द : आभार तो तब मानूँगा, जब आपने जो सवाल उठाए हैं, उस भाषा का सम्मान करते हुए समाचार पत्र में हमारी बातचीत को शुद्ध हिन्दी में प्रकाशित करेंगे। आप लोगों ने इस देश की भाषा को खिचड़ी भाषा बना दिया है। इससे हमारे संस्कार भी प्रभावित हो रहे हैं। धन्यवाद!

(तीनों मुस्कराते हैं।)

- पटाक्षेप -

सर्वनाम

*संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द **सर्वनाम** कहलाते हैं; जैसे- मैं, हम, हमारा; तू, तुम, तुम्हारा आदि। ये सबके नाम हो सकते हैं-सजीव-निर्जीव, ज्ञात-अज्ञात सभी शब्दों के स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।*

पात्र परिचय

सुशील	–	कक्षा 5 का छात्र
श्याम	–	सुशील का सहपाठी
मोहन	–	सुशील का सहपाठी
रूपाली	–	सुशील की बहन
सर्वनाम		

- प्रथम दृश्य -

(सुशील अपने अध्ययन कक्ष में बैठा गृहकार्य कर रहा है। गृहकार्य करते समय, वह जो लिख रहा है, उसे ज़ोर-ज़ोर से बोलता भी जा रहा है।)

सुशील : - मोर एक सुंदर पक्षी है।
- मोर प्रायः बादल गरजने पर बोलता है।
- मोर का नृत्य बड़ा मनोहारी लगता है।
- मोर साँप को बड़े चाव से खाता है।
- मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है।

(श्याम का प्रवेश)

श्याम : कहो मित्र! क्या कर रहे हो।

सुशील : देखते नहीं! मैं मोर पर एक निबंध लिख रहा हूँ। क्या तुम्हें पता नहीं ? आज हमें 'मोर' पर पाँच वाक्य लिखकर गुरु जी को बताना है।

श्याम : याद है-याद है।

सुशील : क्या तुमने पाँच वाक्य लिख लिए ?

श्याम : हाँ! लिख लिए।

सुशील : मैं भी तो वही पाँच वाक्य लिख रहा हूँ।

श्याम : ज़रा सुनाओं तो क्या लिखा है तुमने।

सुशील : सुनो!

(सुशील पाँचों वाक्यों का वाचन करता है। श्याम अंतिम वाक्य को सुनकर हँसता है।)

सुशील : क्यों! हँस रहे हो ? क्या मैंने कुछ अशुद्ध लिखा है ?

श्याम : हाँ! इसीलिए मुझे हँसी आ रही है। जानते हो तुमने प्रत्येक वाक्य में 'मोर' 'मोर' लिखा है; जैसे - **(श्याम पुनः पाँचों वाक्यों को दोहराता है।)** तू इतना भी नहीं जानता कि पहले वाक्य में जब हमने 'मोर' लिख दिया, तो अगले वाक्यों में उसको नहीं दोहराना चाहिए। व्याकरण की दृष्टि से यह प्रयोग अटपटा और अव्यावहारिक है।

सुशील : ऐसा! तो फिर मुझे ठीक से समझाओ।

श्याम : देखो! प्रथम वाक्य तो ठीक है- मोर एक सुंदर पक्षी है। किन्तु इसके बाद चार वाक्य इस प्रकार से होने चाहिए-
- यह प्रायः बादल गरजने पर बोलता है।
- इसका नृत्य बड़ा मनोहारी लगता है।
- यह साँप को बड़े चाव से खाता है।
- यह हमारा राष्ट्रीय पक्षी है।

याने बार-बार मोर शब्द लिखकर बोर नहीं करना चाहिए।

सुशील : पर ऐसा क्यों ?

श्याम : अरे! तुझे पता नहीं! गुरुजी ने 'सर्वनाम' पढ़ाते समय कहा था कि जब वाक्य में किसी 'संज्ञा' का एक से अधिक बार प्रयोग होता है, तो बोलने और लिखने में एक प्रकार से अटपटापन लगता है; जैसे–'सुशील ने सुशील के पिताजी से कहा – 'सुशील बाज़ार जा रहा है। सुशील को पचास रु. चाहिए। कुछ सामान खरीद कर लाना है।'

तो! क्या तुम अपने पिताजी से बाज़ार जाते समय इसी प्रकार कहकर रुपए माँगोगे।

सुशील : (कुछ सोचता हुआ) नहीं! मैं पिताजी से कहूँगा – ''मैं बाज़ार जा रहा हूँ। मुझे पचास रुपए चाहिए। कुछ सामान ख़रीद कर लाना है।''

श्याम : बस यही बात मोर के लिए लागू होती है। पाँच वाक्यों में पहली बार 'मोर' अवश्य लिखा जाएगा किन्तु बाद में जैसा कि मैंने बताया मोर के स्थान पर 'यह' और 'इसका' शब्दों का प्रयोग ही करना उचित होगा।

सुशील : समझा! समझा! वाक्य में 'संज्ञा' के बदले सर्वनाम लिखना चाहिए। मोर 'संज्ञा' है, इसलिए इसे एक बार लिखना ही ठीक है।

(सुशील के पिताजी का प्रवेश)

पिताजी : बेटे! सुशील तुमने अपना गृहकार्य पूरा कर लिया ?

सुशील : हाँ! पिताजी। श्याम ने मुझे इस काम में सहयोग किया। मेरे वाक्यों को शुद्ध किया; और 'सर्वनाम' का प्रयोग करना सिखाया। पर मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि 'सर्वनाम' को 'सर्वनाम' क्यों कहते हैं?

पिताजी : जानते हो, किसी के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं। जो शब्द सभी संज्ञाओं (नामों) के स्थान पर आए, उसे हम सर्वनाम ही तो कहेंगे; अर्थात् –

श्याम : 'जो शब्द संज्ञा के स्थान पर आए उसे सर्वनाम कहते हैं।'

सुशील : ऐसे तो अनेक शब्द हो सकते हैं क्योंकि संज्ञाएँ अनन्त हैं, तो क्या सर्वनाम भी असंख्य होंगे ?

पिताजी : नहीं बेटे! हिन्दी में कुल 12 सर्वनाम प्रमुख होते हैं। इनसे कई सर्वनाम बन जाते हैं।

सुशील : पिताजी! अन्य सर्वनाम के बारे में भी इसी तरह बताइए न! ताकि मुझे सरलता से उनके नाम याद हो सकें–

पिताजी : अच्छा! तो क्या सभी कुछ मैं ही बता दूँ। कुछ बातें गुरुजी से भी समझना।

सुशील : ठीक है पिताजी। अब शाला का समय भी हो गया है, और आपको भी ऑफिस जाना है।

(दृश्य - दो)

(स्थान - विद्यालय का हिन्दी कक्ष)

[सभी छात्र अपने-अपने स्थान पर बैठे हैं, तभी गुरुजी का प्रवेश होता है। छात्र 'नमस्ते-गुरुजी' कहकर उनका अभिवादन करते हैं। छात्र अपने-अपने स्थान पर बैठ जाते हैं।]

गुरुजी : क्या तुम सभी 'मोर' पर पाँच-पाँच वाक्य लिखकर लाए हो।

सब बच्चे : हाँ गुरुजी!

गुरुजी : **(किसी एक छात्र की ओर इशारा करते हुए)** - तुम पढ़कर सुनाओ।

(सब बच्चे एक साथ पढ़ने लगते हैं।)

गुरुजी : क्या मैंने सबको पढ़ने के लिए कहा है ?

सब बच्चे : हाँ! गुरुजी, आपने कहा है - ''तुम पढ़ो''

गुरुजी : तो 'तुम' सबके लिए कहा जाता है ?

सब बच्चे : हाँ! गुरुजी।

गुरुजी : ऐसा नहीं है बच्चो! आदर देने के लिए किसी एक छात्र को भी मैं 'तुम' कहकर ही आदेश देता हूँ। मैंने तो राहुल की ओर इशारा करते हुए उसे पढ़ने को कहा है। राहुल को मैं 'तू' नहीं कह सकता। तू कहना हीनता का बोध कराता है। बताओ! 'तुम' कहना चाहिए, या 'तू'।

सब बच्चे : हाँ! गुरुजी हमें भी एक-दूसरे को 'तुम' कहना चाहिए। 'तू' कहना अशिष्टता का सूचक है।

गुरुजी : अच्छा, अब बताओ **'मैं'** किसका नाम है ?

कुछ बच्चे : गुरुजी **'मैं'** शब्द का प्रयोग तो हम सब भी अपने-अपने लिए करते हैं। बिना मैं कहे हम अपनी बात ही नहीं कह सकते, यानी **'मैं'** हम सबका नाम है।

गुरुजी : इसी प्रकार **'तुम'** भी तुम सभी का नाम है। अच्छा बच्चो! मनोज आज विद्यालय क्यों नहीं आया ? कोई बता सकता है ?

मोहन : हाँ! गुरुजी, मैं उसके पड़ोस में रहता हूँ। वह बीमार है। इसलिए आज नहीं आया।

गुरुजी : देखो बच्चो! **'वह'** शब्द किसके लिए आया है ?

सब बच्चे : मनोज के लिए

गुरुजी : मनोज को व्याकरण में क्या कहते हैं ?

सब बच्चे : **'संज्ञा'**

गुरुजी : **'मनोज'** के नाम के स्थान पर **'वह'** शब्द आया है। इसी प्रकार जब किसी

संज्ञा के स्थान पर 'वह' शब्द आता है तो उसे भी सर्वनाम कहते हैं।

सब बच्चे : हाँ! गुरुजी

गुरुजी : तो याद रखो – **'मैं'** मेरे नाम के बदले – हम सभी के नाम के बदले – इसी तरह तू, तुम, वह, वे भी नाम के बदले आते हैं। ये शब्द सबके नाम के स्थान पर आते हैं, इसलिए इन्हें व्याकरण की भाषा में **सर्वनाम** कहते हैं।

(विद्यालय की घंटी बजती है। सब बच्चे शांतिपूर्वक बाहर निकलते हैं। बाहर तीन बच्चे आपस में बातचीत करते हैं-)

सुशील : श्याम! चलो, अब मैदान पर चलकर खेलेंगे।

श्याम : ठीक है! **मैं** गेंद ले आऊँगा। **तुम** ठीक समय पर मैदान पर आ जाना; और मोहन से भी कह देना कि **वह** भी खेलने समय पर आ जाए।

सुशील : वाह भाई! तुमने तो बड़ी चतुराई से 'मैं','तुम', 'वह' का प्रयोग करके दिखा दिया।

(दृश्य – तीन)

(स्थान – श्याम का ड्राइंग रूम। श्याम और रुपाली ड्राइंग रूम में बैठे हैं।)

श्याम : **(श्याम अपने घर में उसकी दीदी रुपाली से सुशील का परिचय कराता है)** दीदी! सुशील और मैं कक्षा 6 में साथ-साथ पढ़ते हैं।

(तभी दरवाजे की घंटी बजती है।)

सुशील : दीदी! कोई घंटी बजा रहा है।

रुपाली : ठीक है। जाओ श्याम दरवाजा खोल दो।

श्याम : जो सुनेगा, वही तो खोलेगा।

(तभी श्याम के पिताजी बेटे श्याम, कहकर आवाज़ लगाते हैं)

श्याम : हाँ! पिताजी

पिताजी : बेटा! देखो तो **कौन** आया है ?

श्याम : अच्छा! पिताजी

(श्याम ने जाकर दरवाज़ा खोला तो देखा कोई अनजान व्यक्ति था।)

श्याम : कौन हो तुम ? अपना नाम तो बताओ। किससे मिलना है आपको?

सर्वनाम : **(हँसते हुए)** इतने सारे प्रश्न। सुनो, मैं तुम्हारा एक दोस्त हूँ। सर्वनाम मेरा नाम है।

श्याम : इस नाम का तो मेरा कोई दोस्त नहीं है।

सर्वनाम : कोई हो, या न हो, मैं तो तुम्हारा दोस्त हूँ। कहो, दोस्ती का हाथ बढ़ाओगे; भीतर आने दोगे; बैठने को कहोगे; तभी न मैं अपनी पहचान बताऊँगा।

(श्याम, 'सर्वनाम' को भीतर लाता है; और सुशील तथा रुपाली से उसका परिचय कराता है।)

श्याम : देखो सुशील और दीदी रुपाली!! ये महाशय अपने आपको 'सर्वनाम' कहते हैं।

सर्वनाम : हाँ! मैं अपना नाम जो है, वही तो बताऊँगा। मैं आप लोगों से मित्रता करने आया हूँ। मेरे बारे में जो भी जानना चाहो, पूछो, मैं खुशी से बताऊँगा।

श्याम : मुझे सर्वनाम के भेदों के बारे में जानना है। क्या आप बता सकेंगे?

सर्वनाम : क्यों नहीं! देखो श्याम! जब मैं तुम्हारे घर पर आया, तो किसी ने कहा था – ''कोई घंटी बजा रहा है।'' यहाँ 'कोई' शब्द का प्रयोग तुमने मेरे लिए ही तो किया था। अत: 'कोई' कहने से किसी निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तु का बोध नहीं होता। तुम्हें मेरे बारे में निश्चित बोध नहीं था कि मैं कौन हूँ? अत: इसे **अनिश्चय वाचक सर्वनाम** कहते हैं। 'कोई' और 'कुछ' ये दो शब्द अनिश्चय वाचक हैं। कक्षा में कल गुरु जी ने यही समझाया था। तुम्हें याद है।

श्याम : हाँ मित्र! लेकिन यह बताओ कि क्या ये दो शब्द ही अनिश्चय बोधक हैं ?

सर्वनाम : हाँ! ये दो शब्द ही अनिश्चय बोधक सर्वनाम हैं।

(श्याम के पिताजी का प्रवेश। श्याम सर्वनाम का परिचय पिता से करवाता है।)

श्याम : पिताजी! ये मेरे नए दोस्त सर्वनाम हैं। **(सर्वनाम पिताजी को नमस्ते करता है।)**

पिताजी : नमस्कार! कहिए, आने का कैसे कष्ट किया?

सर्वनाम : मैं इधर से निकल रहा था, सोचा साथियों से मिलता चलूँ। आपका बालक श्याम पढ़ने में बहुत अच्छा है। कक्षा में यह हमेशा सर्वप्रथम आया है। इसके लिए आप सभी को बधाई।

पिताजी : आपने इतना बताने के लिए यहाँ आने का कष्ट क्यों किया? बेटे श्याम के विषय में मैं **स्वयं** जानता हूँ कि वह कक्षा में प्रथम आता है। मैं यह भी जानता हूँ कि श्याम पढ़ने में होशियार है। वह अपने आप पढ़ता भी है।

सर्वनाम : देखो! साथियो!! यहाँ पिताजी ने **अपने आप** और **स्वयं** शब्दों का जो प्रयोग किया है। यह दोनों शब्द अपने स्वयं के अर्थ में प्रयोग किए जाते हैं। अपने बारे में बतानेवाले इन शब्दों को **निजवाचक सर्वनाम** कहते हैं।

पिताजी : वाह सर्वनाम! तुम तो बच्चों को सर्वनाम के भेद बातों-बातों में बताने लगे। यह तो बहुत अच्छी बात है।

सर्वनाम : पिताजी! व्याकरण का शिक्षण सिद्धांत से नहीं, दैनिक जीवन की चर्चाओं में होता है। हमें हर अवसर पर उसका लाभ लेना चाहिए। मित्रों को परस्पर मिलते समय समय का सदुपयोग इसी तरह करना चाहिए। व्यर्थ की बात करने से क्या मिलता है!

पिताजी : बेटे, नए मित्र का कुछ तो स्वागत करो। इनसे पूछो- क्या लोगे: दूध या चाय। मैं तो ऑफिस जा रहा हूँ। इन्हें जो पसन्द है, वह पिला देना।

सर्वनाम : मैं तो दूध लेता हूँ

पिताजी : बेटे श्याम! बेटी रुपाली! **(चलते-चलते)** तुम में से कौन दूध बनाकर लाएगा ?

रुपाली : मैं पिताजी! मैं दूध बनाकर लाती हूँ। **(पिताजी चले जाते हैं। रुपाली दूध लेने जाती है।)**

सर्वनाम : **(हँसते हुए)** देखो! मित्र - 'क्या' और 'कौन' ये दो शब्द **प्रश्नवाचक सर्वनाम** हैं। याद रखना।

(रुपाली गिलास भर दूध लाती है।)

सर्वनाम : रुपाली जी! आपने सुना होगा- जो करेगा सेवा, सो पाएगा मेवा।

(सभी हँसते हैं।)

रुपाली : मैं कुछ कहूँ।

सर्वनाम : कहो बहन।

रुपाली : आपने कहा 'जो करेगा सेवा, सो पाएगा मेवा' तो भैय्या जो-सो ये दो शब्द भी तो सर्वनाम हैं।

सर्वनाम : हाँ बहन! तुमने बहुत ध्यान से सर्वनाम के भेद पढ़े हैं, लगता है। यहाँ जो-सो वाक्य के दो अलग-अलग उपवाक्यों में प्रयुक्त हुए हैं; और उनका आपस में संबंध जोड़ रहे हैं। अत: इसे **संबंधबोधक सर्वनाम** कहा जाता है। **(ड्राइंग रूम में टँगे एक चित्र की ओर इशारा करते हुए)** अच्छा बताओ रुपाली! यह चित्र किसने बनाया है ?

रुपाली : यह मैंने बनाया है भैया, तथा वह श्याम ने। लगता है भैया आप **संकेतवाचक सर्वनाम** समझा रहे हैं।

श्याम : अब मैं समझा- पास की वस्तु के लिए 'यह' और दूर की वस्तु के लिए 'वह' संकेत वाचक शब्द हैं। इन दोनों को **संकेतवाचक सर्वनाम** कहा जाता है।

सर्वनाम : बहुत अच्छा श्याम। अब हमें चलना चाहिए। बहुत समय हो गया। सारांश में याद रखना। मुझे **6 नामों** से पुकारते हैं-

1. पुरुष वाचक सर्वनाम - मैं, तुम, वह
2. अनिश्चय वाचक सर्वनाम - कोई, कुछ
3. निज वाचक सर्वनाम - अपने-आप, स्वयं
4. प्रश्न वाचक सर्वनाम - क्या, कौन
5. संबंध बोधक सर्वनाम - जो, सो
6. संकेत वाचक सर्वनाम - यह, वह

अच्छा क्या तुम ऐसे छः वाक्य बोल सकते हो जिसमें ये भेद भी आ जाएँ -

श्याम : 1. आज आप से मिलकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई।

2. बाहर कोई दरवाजा खटखटा रहा है।

3. मैं स्वयं जाकर देखता हूँ, कौन है? **(बाहर जाने का अभिनय करता है)**

4. **(पुनः लौटकर)** एक व्यक्ति पूछ रहा था - बाल पत्रिका लोगे क्या? मैंने कहा - हाँ!

5. उसने कहा - जो पैसा देता है, उसे मैं पत्रिका देता हूँ।

6.मैंने उसे पैसे दिए, और यह पत्रिका ले आया। **(पत्रिका दिखाते हुए)**

सर्वनाम : शाबाश! श्याम बस, इस प्रकार किसी चर्चा के माध्यम से हमें विषय-वस्तु समझने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा अभ्यास ही विषय की समझ पैदा करता है।

(सर्वनाम और सुशील विदा लेते हैं।)

-पटाक्षेप-

विशेषण

*संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्द **विशेषण** होते हैं। जिन शब्दों से विशेषण की विशेषता बताई जाती है, उसे **विशेष्य** कहते हैं; जैसे–कायर, अच्छा, बुरा, सुन्दर आदि।*

पात्र परिचय

संज्ञानन्द	–	विशेषण के पिता
क्रिया देवी	–	विशेषण की माँ
विशेषण	–	संज्ञानन्द जी की पुत्री
सर्वनाम	–	संज्ञानन्द जी का पुत्र
लड़का		
नौकर		

(स्थान - ड्राइंग रूम का दृश्य)

[मंच सज्जा - सोफा कुर्सियां रखी हैं। सेंटर टेबल पर गुलदस्ता रखा है। दीवाल पर प्राकृतिक दृश्य का एक चित्र लगा है]

(विशेषण का कमरे में प्रवेश)

क्रियादेवी : आओ बेटी! हम तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहे थे।

विशेषण : क्या कोई ख़ास बात हैं माँ!

क्रियादेवी : हाँ है। बैठो। हम तुम्हारा विवाह करना चाहते हैं। तुम्हें देखने के लिए वह लड़का अभी आने वाला है।

विशेषण : माँ! आपको पहले क्रिया विशेषण के विवाह की सोचना था। मैं तो विवाह नहीं करूंगी क्योंकि इस घर से विदा होने के बाद पिताजी, तथा भैया सर्वनाम की देखभाल कौन करेगा ?

संज्ञानन्द : ऐसी बात नहीं है बेटी। विवाह तो सभी लड़कियाँ करती हैं। इसलिए हमने सोचा- तुम्हारा विवाह समय पर कर देना चाहिए।

विशेषण : ठीक है पिताजी। आपने तो यह भी नहीं बताया कि जिस लड़के का मुझसे विवाह होगा, उसमें कौन-कौन से गुण हैं?

संज्ञा : हमने उस लड़के को देखा है। वह आकार में सुडौल है। देखने में सुन्दर है। उसका रंग गोरा है। वह मोटा-तगड़ा नहीं , दुबला-पतला है। साधारण परिवार का है। अपना भला-बुरा आप जानता है; ईमानदार है, बुद्धिमान है। उसकी तोते-सी नाक है। और क्या जानना चाहती हो ?

विशेषण : बस-बस पिताजी, यह तो आपने उसके रूप, रंग, स्वभाव आदि के विषय में बताया। अब बताइए वह आधुनिक विचारों का है, या प्राचीन, ग्रामीण है या नगरीय; उसकी आवाज़ कर्कश है या मधुर; बलवान है या चतुर; रोगी है या स्वस्थ....

संज्ञा : बस करो। तुम्हें तो हमेशा किसी के गुण-दोष निकालने में ही आनन्द आता है। संसार में इन गुण-दोषों की संख्या इतनी अधिक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने ही ढंग से उनका प्रयोग करता है। वह लड़का जब आ जाए, उसे स्वयं देख लेना; और जो पूछना हो, उसी से पूछना।

(बाहर दरवाज़े की घंटी बजती है)

देखो! शायद वह आ गया है।

(लड़के का प्रवेश। लड़के के हाथ में एक अख़बार है।)

लड़का : नमस्ते पिताजी! नमस्ते माताजी! नमस्ते विशेषण जी

(सभी नमस्ते का उत्तर एक-एक कर देते हैं।)

संज्ञा : तुम्हें आने में कोई कठिनाई तो नहीं हुई। पता तो हमने ठीक से दिया था।

लड़का : नहीं, कोई परेशानी नहीं हुई। आपने जो दिशा, स्थान, समय बताया था, उसके

अनुसार में यहाँ सहज ही पहुँच गया।

संज्ञा : पता बता देने का काम तो हमारी बेटी का है। वह जो दिशा, स्थान, समय आदि के विषय में बताती है, उसे हम दोहराते हैं।

क्रियादेवी : अपने जन्म स्थान और परिवार आदि के विषय में बतलाओ बेटे। हमारी बेटी यह जानना चाहती है।

लड़का : मेरे पिता पंजाबी हैं, माता महाराष्ट्रियन। जब मेरे पिता गुजरात में थे, तभी वहाँ मेरा जन्म हुआ; मैं गुजराती हूँ।

विशेषण : अच्छा तो आप स्वयं में एक अखिल भारतीय परिवार से हैं।

लड़का : **(मुस्कराते हुए)** तो ऐसा ही मानें जी। यही सबसे अच्छा परिचय है मेरा।

विशेषण : आपके परिवार में कुल कितने सदस्य हैं ?

लड़का : कुल चार

विशेषण : कौन-कौन से

लड़का : मेरे पिताजी, माताजी, बहन और स्वयं मैं।

(क्रियादेवी उठकर चल देती हैं। साथ ही संज्ञानन्द भी चल देते हैं।)

विशेषण : आप बड़े हैं, या बहन जी आपसे बड़ी हैं।

लड़का : बहन मुझसे बड़ी है। इस दृष्टि में दूसरे क्रम में हूँ।

विशेषण : आपको वेतन कितना मिलता है ?

लड़का : छः लाख रुपए प्रतिवर्ष। घर का प्रत्येक सदस्य कुछ न कुछ व्यवसाय करता है।

(क्रियादेवी का प्रवेश- उनके साथ में स्वल्पाहार का सामान लिए नौकर भी आता है। सामान सेंट्रल टेबल पर रख देता है।)

क्रियादेवी : अरे! मैं तो समझ रही थी आप लोग चर्चा करने में संकोच कर रहे होंगे। अब चर्चा बन्द करो, और स्वल्पाहार लो।

(सभी स्वल्पाहार लेते हैं। तभी सर्वनाम का प्रवेश)

विशेषण : अरे! भैया आप कहाँ गए थे। सारा नाश्ता समाप्त हो चुका है। थोड़े रसगुल्ले बचे हैं। यही ले लो।

सर्वनाम : मुझे यह रसगुल्ले नहीं चाहिए, वह बर्फी दे दो।

(विशेषण बर्फी देती है।)

सर्वनाम : **(संकेत करते हुए)** मैं जब घर पर आ रहा था तो कोई व्यक्ति घर का पता पूछ रहा था। लगता है, ये वही सज्जन हैं।

(संज्ञानन्द जी का प्रवेश)

संज्ञानन्द : क्या मुझे भी थोड़ी चाय मिलेगी!

विशेषण : अवश्य! अवश्य! पिताजी मैं आपको चाय पिलाती हूँ। थोड़ी नहीं, इसमें तो बहुत कुछ है।

(संज्ञानन्द चाय पीते हैं तभी नौकर का प्रवेश)

नौकर : साहब से कोई मिलने आए हैं।

विशेषण : कह दो! अभी आते हैं।

संज्ञा : यह दरवाजा बन्द कर दो **(नौकर दरवाजा बंद करता है।) (लड़के की ओर संकेत करते हुए)** कहिए, चर्चा हो गई। हमारी बच्ची बड़ी चतुर है। यह चार बातों का विशेष ध्यान रखती है–

1. किसी के गुण–दोष बताना। इसकी इस आदत को हम **गुणवाचक विशेषण** कहते हैं। आपके आने से पूर्व यह आपके गुणों के बारे में जान रही थी।

2. आपके आने पर इसने घर के सदस्यों, वेतन आदि पर चर्चा की होगी। यह इसकी दूसरी विशेषता है। यह हर व्यक्ति अथवा वस्तु की जानकारी संख्या के आधार पर पा लेती है। इसकी इस आदत को हम **संख्यावाचक विशेषण** कहते हैं।

3. मैंने जब चाय पीने की, इच्छा की तब इसने मुझसे कहा – थोड़ी नहीं बहुत मिलेगी। इस प्रकार थोड़ा–बहुत, कुछ–अधिक, मुट्ठी भर आदि शब्दों द्वारा वह वस्तुओं के नाप–तोल करने में चतुर है। इसकी इस आदत को **हम परिमाण वाचक विशेषण** कहते हैं।

4. यह अपने भाई सर्वनाम से इतनी घुल–मिल कर बातें करती है कि यह पता नहीं चलता कि यह सर्वनाम है, या विशेषण। लेकिन मैं इस आदत को अच्छी तरह जानता हूँ। इसलिए जब मैंने अभी दरवाजा बंद करते समय कहा कि "यह दरवाजा बंद कर दो।" तो दरवाजे से पहले 'यह' शब्द का प्रयोग मैंने जानबूझ कर किया है जबकि यह शब्द सर्वनाम है, किन्तु संज्ञा–सर्वनाम एक साथ आने से इसे हमने **सार्वनामिक विशेषण** नाम दे दिया है, ताकि इसकी पहचान स्पष्ट हो सके।

क्रियादेवी : कुछ माता–पिता अपने बच्चों में हीन–भावना भर देते हैं। हर बात में बच्चों की आलोचना करना, उन्हें हतोत्साहित करना उनकी आदत बन जाती है, यह उचित नहीं है। बात–बात में बच्चों को डाँट कर उन्हें मूर्ख कहना उनकी बुद्धि को कुंठित करना है। उनकी स्वतंत्र प्रतिभा पर पाला पड़ने से उनका मानसिक विकास ठीक से नहीं हो पाता। हमने अपनी बच्ची विशेषण को यही सब सोचकर इसके स्वभाव में कुछ विशेषताएँ ऐसी भर दी हैं कि यह इनके पिता संज्ञानन्द और भाई सर्वनाम के साथ ही अधिक रहती है। उन्हें ही अधिक चाहती है।

लड़का : **(हँसकर)** और आपको नहीं चाहती।

क्रियादेवी : नहीं! मेरी सेवा तो क्रिया–विशेषण करती है। वह इसकी बहन है।

लड़का : आज आप सभी से मेरा परिचय हुआ। यह मेरा सौभाग्य है। इतनी सब विशेषताएँ आज किसी परिवार में कहाँ देखने को मिलती हैं! भाई-बहन, पिता-पुत्री, माँ-बेटी का यह प्यार अमर रहे। मैं तो यही चाहता हूँ कि सभी परिवारों में यही वातावरण बन जाए। अच्छा! अब मैं चलता हूँ।

(लड़का जाना चाहता है। तभी उसके हाथों में अख़बार देखकर विशेषण पूछती है।)

विशेषण : ज़रा यह अख़बार बताइए! इसमें तो मेरा फोटो छपा है, ऐसा लगता है।

(संज्ञा तथा क्रियादेवी एक दूसरे को देखते हैं। लड़का विशेषण को अख़बार देता है। विशेषण अपना फोटो देखकर उसमें छपा विज्ञापन पढ़ती है।)

विशेषण : वर चाहिए- व्याकरण परिवार की सुशील, सुदंर, स्मार्ट, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु समकक्ष स्थापित सेवा-रत वर चाहिए। **(पिताजी की ओर देखकर)** पिताजी! यह विज्ञापन अख़बार में आपने कब दिया। मुझे पता ही नहीं चला। मुझसे पूछे बिना ही आपने यह क्यों किया ? **(विशेषण को लजाते देखकर सभी मुस्कराते हैं। लड़का चलना चाहता है।)**

संज्ञानन्द : बेटा! चलते-चलते यह तो बता दो कि हमारी पुत्री आपको पसन्द है, या नहीं।

लड़का : पसन्द है! लगता है, मुझे घर जमाई बनकर रहना होगा। हमारे घर का इतना अच्छा वातावरण नहीं है, जितना आपके घर का है।

(सभी हँसते हैं।)

- पटाक्षेप -

क्रिया

*जिन शब्दों से किसी कार्य के होने या करने का पता चलता है, उसे **क्रिया** कहते हैं। क्रिया किसी काम के करने या होने का बोध कराती है; जैसे–राम पढ़ रहा है।*

पात्र परिचय

क्रिया देवी
संज्ञानन्द
कुछ छात्र

स्थान - क्रियादेवी का अध्ययन कक्ष

[मंच सज्जा - क्रिया देवी अपने अध्ययन कक्ष में बैठी हैं। टेबिल पर कुछ पुस्तकें रखी हैं। पास में ही एक अलमारी है, जिसमें पुस्तकें रखी हैं।]

(कुछ बच्चे क्रिया देवी से मिलने आते हैं। प्रत्येक छात्र के हाथ में पुस्तकें हैं।)

बच्चे : (समवेत स्वर में) - नमस्ते महोदया!

क्रिया देवी : नमस्ते! कहो बच्चो आज अचानक मुझसे मिलने कैसे आना हुआ। (कुर्सी की ओर इशारा करते हुए) यहाँ बैठो।

एक बच्चा : महोदया, कल विद्यालय में भाषा के गुरुजी ने हमसे कुछ क्रिया संबंधी सवाल पूछे, उनका उत्तर हम नहीं दे पा रहे हैं। सोचा, आपसे मिलकर समस्या अवश्य हल हो जाएगी। कृपया आप हमारी सहायता कीजिए।

(संज्ञानन्द जी का प्रवेश। सभी बच्चे उनका अभिवादन करते हैं। क्रिया देवी के पास ही एक कुर्सी पर बैठ जाते हैं।)

क्रिया देवी : हाँ, सुनाओ बच्चो! क्या पूछा था - गुरुजी ने।

एक बच्चा : पानी अधिक ज़रूरी है या पीना ?

दूसरा बच्चा : पढ़ाई अधिक ज़रूरी है या पढ़ना ?

तीसरा बच्चा : खेल अधिक ज़रूरी है या खेलना ?

चतुर्थ बालक : पूजा अधिक ज़रूरी है या पूजना ?

पंचम बालिका : गायन अधिक ज़रूरी है या गाना ?

क्रिया देवी : बच्चो, तुमने एक बहुत ही पेचीदा प्रश्न पूछा है। ज़रूरी तो दोनों ही हैं। पानी होगा, तभी तो हम पिएँगे। पानी नहीं होगा तो क्या पिएँगे। इसे ऐसे समझो- पानी **(संज्ञानन्द की ओर इशारा करते हुए)** इन्हें समझो, और पीना मुझे। हम दोनों मिलकर ही तो किसी क्रिया को करेंगे। हाँ, इतना अवश्य है कि किसी भी काम का करना या होना बिना क्रिया **(स्वयं की ओर इशारा करते हुए)** के संभव नहीं हो सकता।

संज्ञानन्द : अच्छा तो मैं चलता हूँ। लगता है, बच्चे तुम्हारे बारे में ही जानना चाहते हैं; मेरे बारे में नहीं। मैं व्यर्थ ही यहाँ बैठकर अपना समय क्यों गवाऊं।

(संज्ञानन्द जी चल देते हैं)

क्रिया देवी : देखो बच्चो!! ''संज्ञानन्द जी चले गए'' इस वाक्य में संज्ञानन्द जी ने क्या क्रिया की?

बच्चे : चले जाने की क्रिया की।

क्रिया देवी : तो दैनिक जीवन में हम प्रतिपल-प्रतिक्षण किसी न किसी रूप में किसी न किसी क्रिया को करते रहते हैं। यहाँ क्रिया किसने की... संज्ञानन्द जी ने। तो संज्ञानन्द जी क्रिया के कर्त्ता कहलाए। और ......

बच्चे : हमने जो प्रश्न पूछा है, उसे सीधे-सीधे बताएँ महोदया। पानी, पढ़ाई, खेल, पूजा, गायन ज़रूरी है, या पीना, पढ़ना, खेलना, पूजना, गाना।

क्रिया देवी : तुम लोग मुझसे निर्णय चाहते हो तो मैं तो हमेशा एक ही बात कहूँगी कि काम का होना अथवा करना ही अधिक महत्त्वपूर्ण है।

दूसरा बच्चा : किसी क्रिया के होने और करने में क्या अंतर है, कुछ समझ नहीं आता। एक उदाहरण देकर होना और करने को स्पष्ट करेंगी तो बड़ी कृपा होगी।

क्रिया देवी : सुनो बच्चो! एक उदाहरण देकर तुम्हें समझाती हूँ। **(विवेकानन्द के चित्र की ओर इशारा करते हुए)**-

1. यह विवेकानन्द का चित्र है।

अर्थात् यहाँ **'है'** चित्र के होने को बतलाता है।

2. विवेकानन्द भाषण दे रहे हैं।

यहाँ भाषण देना उनके **काम का करना** बताता है। अर्थात् वे क्या कर रहे हैं, इसका पता भाषण देने की क्रिया से लगता है।

अत**:** ध्यान रखो **:**-

वे शब्द जिनसे कार्य का होना या करना पाया जाए, वहीं क्रिया **(स्वयं की ओर इशारा करते हुए)** मौजूद है।

तीसरा बच्चा : महोदया! कर्म और क्रिया में क्या अन्तर है ? गुरुजी ने बताया था एक सकर्मक क्रिया होती है, और दूसरी अकर्मक। इसकी पहचान हम कैसे करें? प्राय**:** भ्रम होता है।

क्रिया देवी : बहुत सही प्रश्न किया है बेटे तुमने। अच्छे-अच्छे लोग इसको स्पष्ट नहीं कर पाते हैं। सर्वप्रथम जैसा कि मैंने बतलाया- याद रखो, बिना मेरे अर्थात् क्रिया के कर्म पूरा नहीं हो पाता। कर्म करने में कर्त्ता(संज्ञानन्द जी) तथा क्रिया (मैं) हम दोनों हमेशा रहते हैं। **(इशारा करते हुए)** कर्त्ता कोई भी हो सकता है; जैसे- तुम, वह, मोहन, सोहन आदि कोई भी.....

दूसरी बात जो सबसे महत्त्वपूर्ण है - वह यह कि कर्म के आधार पर क्रिया दो प्रकार की होती हैं -

1. क्रिया - जिनके साथ कर्म नहीं होता, वहाँ क्रिया कर्त्ता के अनुसार होती है। इसे यूं समझो कि जब कर्त्ता अकेला होता है, तो क्रिया के साथ कर्म नहीं होता है। क्रिया कर्त्ता के अनुसार होती है।

जैसे- (मोहन की ओर इशारा करके) यह मोहन है। मोहन पढ़ रहा है।

यहाँ क्रिया 'है' तथा 'पढ़ रहा है' के साथ कर्म नहीं है – यह वाक्य केवल मोहन के होने को बतला रहा है।

2. क्रिया – जिनके साथ कर्म का प्रयोग होता है अर्थात् जब कर्त्ता के साथ 'ने' लगता है तो क्रिया कर्म के अनुसार होती है। यही दोनों में अन्तर है, जैसे – मोहन ने पिताजी को पत्र लिखा।

इस वाक्य में क्रिया 'लिखा' है, और कर्म है 'पिताजी' तथा 'पत्र'।

अतः ध्यान रखना जिस क्रिया के साथ कर्म होता है। वह **सकर्मक क्रिया,** और जिस क्रिया के साथ कर्म नहीं होता, वह **अकर्मक क्रियों** होती है।

सभी छात्र : हाँ, अब हमें समझ में आया कि सकर्मक और अकर्मक क्रिया में अन्तर क्या है ? एक में कर्म रहता है, दूसरे में नहीं रहता। कर्म रहने की पहचान 'ने' शब्द से होती है।

क्रिया देवी : ध्यान रखना– यह तो मैंने एक उदाहरण 'ने' का दिया है। 'ने' के अतिरिक्त 'से', 'के बाद', 'के लिए', 'का', 'के', 'की' में – आदि कारक चिह्नों के आधार पर भी सकर्मक क्रिया को पहचान सकते हैं।

दोनों की पहचान की एक और सरल विधि है। जिस क्रिया में कर्त्ता के साथ कर्त्ता कारक होता है, और कर्म कारक नहीं होता, वह **अकर्मक** है, तथा जिस क्रिया में कर्त्ता और कर्म कारक दोनों रहें, वह **सकर्मक**।

सभी छात्र : अब हम कारक चिह्नों के द्वारा भी दोनों की पहचान करेंगे। लेकिन महोदया, कहते हैं कोई भी क्रिया समय के साथ ही पूरी हो सकती है। तो किसी भी क्रिया के होने का पता कैसे चलता है कि वह कब हुई या हो रही है या होगी?

क्रिया देवी : इसके लिए बस इतना जान लो –

- आप लोग पिछले वर्ष कक्षा 8 में पढ़ते थे। कर्म हो चुका है। यह 'थे' से पता चलता है। यह **भूतकाल** की बात हुई।
- इस वर्ष कक्षा 9 में पढ़ रहे हो। कर्म हो रहा है। यह **वर्तमान काल** बताता है।
- अगले वर्ष आप लोग कक्षा 10 में जाओगे। कार्य भविष्य में पूरा होगा, क्रिया में यह – गा,गी, गे– लगे शब्द बताते हैं कि कर्म भविष्य में पूरा होगा। अतः यह **भविष्य काल** कहलाता है।

इस प्रकार क्रिया के होने के समय को काल कहते हैं। क्रिया के काल का सही अनुमान जिससे मिले, उसे काल कहते हैं। हम वाक्यों को पढ़कर ही इसका पता लगा सकते हैं।

सब बच्चे : अच्छा महोदया, इतनी अच्छी जानकारी देने के लिए हम आपके कृतज्ञ

हैं।

एक बच्चा : महोदया, यदि आपके पास समय हो तो एक बात और पूछना चाहेंगे।

क्रिया देवी : पूछो! अभी समय है

एक बच्चा : हमने सुना है, कर्त्ता के अनुसार क्रिया के लिंग और वचन बदलते रहते हैं। कर्म के अनुसार भी क्या लिंग और वचन बदलते हैं? एक-एक उदाहरण देकर इसे स्पष्ट करने की कृपा करें।

क्रिया देवी : कर्त्ता के अनुसार क्रिया अपना रूप बदलती रहती है। कर्म के अनुसार भी रूप बदलती है। कर्त्ता के अनुसार क्रिया कैसे बदलती है, इस वाक्य पर ध्यान दो – श्याम केला खाता है। अब बताओ – यहाँ कर्त्ता कौन है?

सब बच्चे : श्याम।

क्रिया देवी : और क्रिया..

सब बच्चे : खाता है।

क्रिया देवी : श्याम–**पुल्लिंग** है, इसलिए हम 'खाता है' कहते हैं।
अब एक वाक्य और ध्यान से सुनो – श्यामा केला खाती है।
यहाँ कर्त्ता कौन है– श्यामा। श्यामा **स्त्रीलिंग** है, इसलिए हम क्रिया खाती है – बोलते हैं।

सब बच्चे : हाँ!

क्रिया देवी : विदेशी लोग यही समझ नहीं रखते हैं, इसलिए वे कहते हैं – श्यामा केला खाता है।

(सब बच्चे हँसते हैं)

क्रिया देवी : अच्छा! अब कर्म के अनुसार वाक्य सुनो –
सुनो – श्याम ने पुस्तक पढ़ी।
श्यामा ने पुस्तक पढ़ी।
यहाँ क्रिया 'पढ़ी' श्याम और श्यामा दोनों के लिए क्रिया एक सी क्यों लगाई गई ?

सब बच्चे : क्योंकि यहाँ कर्म 'पुस्तक' है। क्रिया उसी के अनुसार लगाई गई है। अब समझे।

क्रिया देवी : बहुत अच्छे! अच्छा अब समय हो गया है। मैं भी समय से बँधी हूँ; और आप भी। आज इतना ही।

(सब बच्चे नमस्कार करते हुए चल देते हैं। तभी संज्ञानन्दजी को आते देख उनको भी दूर से नमस्कार करते हैं। संज्ञानन्दजी क्रियादेवी के अध्ययन कक्ष में प्रवेश करते हैं)

क्रिया देवी : अरे! आप कहाँ चले गए थे! आज बच्चों से बातचीत करते समय मुझे बड़ा अच्छा लगा। मुझे एक शिक्षककीय कार्य का भी अनुभव हुआ।

संज्ञानन्द : मैं कहीं गया थोड़े ही था, यहीं उद्यान में भ्रमण कर रहा था। हाँ, इसी

संबंध में मैं एक बात तुमसे पूछना चाहता था।

क्रिया देवी : **(मुस्कराते हुए)** पूछिए।

संज्ञानन्द : कुछ दिनों पूर्व एक पत्रकार मुझसे मिलने आए थे। उन्होंने बताया कि- **'भ्रमण'** क्रियार्थक संज्ञा है। आपके परिवार में यह एक नया भेद और आ गया है। मुझे इसका पता ही नहीं था। मैंने उस समय इस बारे में अपनी अज्ञानता प्रकट की, किन्तु आज यह जानना चाहता हूँ कि क्या यह सही बात है कि तुमने अपने नाम से एक भेद मेरे साथ लगा दिया। पति-पत्नि में अभंग प्रेम बना रहे, इसलिए मैं इस सम्बन्ध में आपत्ति नहीं करता। लेकिन ....

क्रिया देवी : लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। हर बात आपको बताई जाए, आवश्यक नहीं; फिर भी पूछा है, तो बताती हूँ। मैंने कुछ ऐसे शब्द भी मेरे साथ जोड़ लिए हैं, जिससे यह पता चले कि हमारा पूरा परिवार मेरे साथ मिलकर कुछ-न-कुछ काम करता रहता है। व्यर्थ समय व्यतीत नहीं करता। जैसे -

मैंने (**संज्ञानन्द की ओर इशारा करते हुए**) आपसे जो शब्द लिए हैं, वे हैं - लाज से लजाना, दु:ख से दुखाना....

संज्ञानन्द : चलो, अच्छा हुआ हम दोनों के मिलन को सभी अच्छा कहेंगे। परिवार में रहकर सबका ध्यान कैसे रखा जाता है, कोई तुमसे सीखे। हाँ, परिवार में हमारे बच्चों के कौन-कौन से शब्द तुमने लिए हैं, ज़रा बताना तो-

क्रिया देवी : सर्वनाम से मैंने अपना से अपनाना बनाना सीखा। यह अकेली क्रिया केवल पुत्र सर्वनाम ही कर सकता है। पुत्री विशेषण से निराशा से निराश होना..

संज्ञानन्द : और पुत्री क्रिया विशेषण से?

क्रिया देवी : (**हँसकर**) वह तो मेरे साथ हिलमिल कर रहती ही है। फिर इतना जान लो - जहाँ जहाँ संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया-विशेषण में आप **'ना' 'आना'** या **'इयाना'** लगाकर क्रिया-पद देखेगें, वहाँ-वहाँ मैं आपके साथ हूँ, यह याद रखना।

संज्ञानन्द : (**मुस्कुराते हुए**) यह तो बताना तुम भूल ही गई कि तुम्हारे इस काम को लोग किस नाम से जानते हैं?

क्रिया देवी : **संज्ञार्थक क्रिया**। (**मुस्कराते हुए**)कहो, कैसी रही मेरी यह योजना! **क्रियात्मक संज्ञा के साथ संज्ञार्थक क्रिया**।

संज्ञानन्द : (**हँसते हुए**) अच्छा! मुझे अपनी बातों से ललचाना छोड़ो। ऐसा लगता है कि तुम मुझे अपने रंग में पूरी तरह रँगना चाहती हो। अब हमारा

अधिक बतियाना ठीक नहीं। लेकिन एक बात बताओ, तुम किसी काम को स्वयं की प्रेरणा से करती हो या करवाती हो।

क्रिया देवी : मैं अपना काम स्वयं करती हूँ। लेकिन भूलिए मत, आप किसी और के माध्यम से अपना काम पूरा करवाते हैं; स्वयं नहीं करते।

संज्ञानन्द : नहीं। ऐसा तो नहीं है। कोई उदाहरण दो।

क्रिया देवी : याद कीजिए। आप खाना बनाते हैं, या खिलवाते हैं। रेडियो आप स्वयं सुनते हैं कि मुझे सुनवाते हैं। आप स्वयं समाचार पत्र पढ़ते हैं, या पढ़वाते हैं। आप अपने कपड़े स्वयं धोते हैं, या धुलवाते हैं।

संज्ञानन्द : बस! बस!! यहीं तक रहने दो। मैं वेतन के रुपए लाता हूँ तो तुम मुझसे ही तो रुपए गिनवाती हो! पूरे होने पर ही लेती हो।

(दोनों हँसते हैं।)

- पटाक्षेप -

क्रिया विशेषण

क्रिया की विशेषता प्रकट करने वाले शब्द ***क्रियाविशेषण*** *कहलाते हैं; जैसे- प्रातःकाल व्यायाम करो। जल्दी-जल्दी काम करो।*

पात्र परिचय

उमेश – विद्यालय का छात्र
क्रिया विशेषण
परिमाण वाचक विशेषण

स्थान – एक पार्क

(दृश्य – एक)

(उमेश एक पार्क में खड़ा देख रहा है कि गिलहरी धीरे-धीरे कुछ खा रही है। तभी एक लड़की उसके पास आती है और कहती है)

लड़की : तुम्हारा नाम क्या है?

उमेश : मेरा नाम क्यों पूछ रही हो? पहले अपना नाम बताओ।

लड़की : मेरा नाम – क्रिया विशेषण है। मैं तुम्हारा नाम इसलिए जानना चाहती हूँ कि तुम गिलहरी को देखकर यह जानना चाह रहे हो कि वह कैसे खा रही है; कब तक खाती रहेगी; कितनी बार खाकर पेड़ पर चढ़ती-उतरती रहेगी; खाकर यह कहाँ जाएगी?

उमेश : (हँसकर) बस, बस! तुमने तो मेरे हर प्रश्न का अनुमान लगा लिया। सचमुच तुमने ऐसा कैसे समझ लिया कि मेरे मन में गिलहरी को लेकर इतने सारे प्रश्न उठ रहे हैं।

क्रिया विशेषण : क्रिया की विशेषता बताना ही मेरा काम है। कब, कहाँ, कितनी और कैसे – क्रिया हो रही है। इसका बोध मैं ही कराती हूँ।

उमेश : धीमे बोलो। कोई सुन न ले।

क्रिया विशेषण : क्यों?

उमेश : मुझे तुमसे कुछ और भी बातें करना है। हमें बातें करते देख और कोई यहाँ न आ जाए, हमारी बातचीत में विघ्न न हो, इसलिए...

क्रिया विशेषण : **(कुछ रुककर)** अच्छा बताओ। तुम्हें ऐसी क्या बातें करना है, जो दूसरा न सुने।

उमेश : **(कुछ सकुचाते हुए)** मैं तुमसे जो कहना चाहता हूँ। वे चार बातें इस तरह हैं –

1. तुम मुझे कहाँ मिलोगी?
2. कब मिलोगी?
3. कैसे मिलोगी?
4. मिलने में कितना समय दोगी?

क्रिया विशेषण : वाह! क्या खूब कहा तुमने। ये चार बातें बताना ही तो मेरा काम है। अब ध्यान से सुनो – तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर मैं इस प्रकार दूँगी कि इसी बहाने तुम मुझे याद रख सकोगे; और मेरे बारे में भी जान सकोगे। तुम्हारे पहले प्रश्न का

उत्तर देती हूँ –

''मैं हर स्थान पर मिलती हूँ। तुम कहीं भी मुझसे मिल सकते हो। यहाँ-वहाँ, इधर-उधर, दाएँ-बाएँ, ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर, जहाँ भी तुम पहुँचोगे, मुझे पाओगे। यही मेरा ठिकाना है। मेरे स्थान की पहचान '**स्थान वाचक क्रिया-विशेषण**' ही बता देगा।''

उमेश : अच्छा बताया तुमने। मैं तो भूल ही गया था। गुरुजी ने क्रिया विशेषण के जिन भेदों को याद करने के लिए बताया था, उसमें पहला भेद **स्थान-वाचक क्रिया-विशेषण** ही था। यह अब मुझे अच्छी तरह याद रहेगा।

क्रिया विशेषण : दूसरे प्रश्न का उत्तर सुनो –

''मैं आज-कल, प्रातः-सायं, प्रतिदिन, बार-बार, अभी-कभी, जब कभी, पहले भी तुमसे मिलती थी; आगे भी दिन-भर तुमसे मिलती रहूँगी। बोलो, मंजूर है। समय का ज्ञान तुम्हें मेरी '**काल-वाचक क्रिया-विशेषण**' देगा।''

उमेश : यह तुमने ठीक बताया- कहाँ -स्थान बताता है, और कब-समय। यह दो भेद तो मुझे समझ में आसानी से आ गए। अब बताओ कैसे मिलोगी?

क्रिया विशेषण : मैं तुम्हें कैसे भी मिल लूँगी। ऐसे-वैसे, जैसे-तैसे, यों ही, अच्छी तरह, रोते हुए या हंसते हुए, पैदल, अपने आप,प्यार से मिल लूँगी। कभी अचानक मिलूँगी। शायद कभी न मिलूं। यही मेरे तुमसे मिलने का ढंग रहेगा। मैं तुमसे जिस रीति से मिलूंगी, उसे '**रीति-वाचक क्रिया विशेषण**' बताएगा।

उमेश : तुमसे मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। अब मुझे अंतिम बात और बता दो। कितना समय दोगी? अधिक या कम। **(हाथ से संकेत करते हुए)** इतना समय दोगी या.....

क्रिया विशेषण : बस..बस.. कितना समय दूँगी। इसे मैं कैसे बता सकती हूँ।

(तभी अचानक परिमाणवाचक विशेषण का प्रवेश)

परिमाण वाचक : **(क्रिया विशेषण की ओर संकेत करते हुए)** नमस्ते दीदी! (**उमेश की ओर संकेत करते हुए**) नमस्ते, भाई साहब।

उमेश : आपका परिचय।

क्रिया विशेषण : ये मेरी दीदी हैं। परिमाण वाचक विशेषण इनका नाम है। मैं **परिमाण वाचक क्रिया विशेषण** हूँ; और ये ..

उमेश : फिर दोनों में अन्तर क्या है ?

क्रिया विशेषण : ये मेरे पिता संज्ञानन्द जी के साथ रहती हैं। मैं माता क्रिया देवी के साथ। काम हमारा समान है। जब संज्ञानन्द के बारे में कोई उनका नाप-तोल, लम्बाई-चौड़ाई, मोटाई-ऊँचाई या तोल जानना चाहता है, तो ये बताती हैं, और मैं किसी क्रिया का परिमाण माने नाप तोल बताती हूँ। जैसे -

जाओ किलो-भर मिठाई लाओ, तो मिठाई कितनी लाना है, यह बात मेरी बहन ही बता सकती है। मैं ऐसी बात नहीं करती।

मैं तो इतना कहूँगी -

''अधिक मिठाई खाना अच्छी बात नहीं।''

परिमाण वाचक : ऐसा नहीं दीदी। मैं भी कभी-कभी ऐसी बातें कर देती हूँ, जो निश्चत मात्रा नहीं बतातीं।

उमेश : जैसे -

परिमाण वाचक : जैसे - ''कुछ रुपए उधार चाहिए।''

उमेश : मेरे पास तो अभी एक भी रुपया नहीं है।

(क्रिया विशेषण तथा परिमाण विशेषण हंसती हैं)

परिमाण वाचक : नहीं-नहीं। तुम ग़लत समझे उमेश। मैं बताना चाहती हूँ- यहाँ '**कुछ**' कहकर मैंने तुम्हें निश्चित संख्या नहीं बताई है।

उमेश : अब समझा! परिमाण का अर्थ निश्चितता नहीं है।

क्रिया विशेषण : अब तुम समझे। मैं बहुत बातें करती हूँ। यह कम बोलती है। इसकी.....

परिमाण वाचक : चलो बहुत हुआ। मुझे भी जल्दी जाना है। आप दोनों को अकेले बात करते देखकर मैं यहाँ आई हूँ। पिताजी ने कहा था...

क्रिया विशेषण : क्या कहा था ? **(कुछ रुककर)** मुझे पिताजी से क्या मतलब! मैं माँ से पूछकर घूमने आई थी। यहाँ उमेश से मेरी पहचान हुई। इसलिए कुछ गपशप के बहाने एक-दूसरे को समझने की कोशिश कर रहे थे। **(जाते हुए)** उमेश! कल फिर मिलेंगे।

(दृश्य - दो)

(क्रिया देवी का कक्ष। क्रिया देवी अपने कक्ष में टहलते हुए कुर्सी पर बैठकर सिर दर्द होने से परेशान हैं। तभी क्रिया-विशेषण का प्रवेश होता है।)

क्रिया विशेषण : माताश्री प्रणाम

क्रियादेवी : प्रसन्न रहो बेटी! कहाँ गई थी ? तुम्हारे बिना मैं तो परेशान हो गई। पल-पल पर तुम्हारी मुझे आवश्यकता रहती है।

क्रिया विशेषण : क्या हुआ! अभी क्या परेशानी है ?

क्रियादेवी : सिरदर्द हो रहा है। सोच रही थी- चाय पीने से शायद दर्द में कुछ कमी आए।

क्रिया विशेषण : तो स्वयं बना लेती न! उसमें मेरी आवश्यकता ही क्या है? आप पिताजी का काम तो सदैव करती रहती है। स्वयं का क्यों नहीं कर सकतीं?

क्रियादेवी : करती हूँ बेटी। किन्तु अधिकांश काम ऐसे होते हैं, जिसमें मुझे तुम्हारी आवश्यकता रहती है। फिर अधिक काम करते-करते मैं थक भी तो जाती हूँ। भगवान जाने स्त्रियों को कितना काम करना पड़ता है!

क्रिया विशेषण : ऐसा न कहो माँ! आपके बिना तो सृष्टि-चक्र चलना ही बंद हो जाएगा। मैं जानती हूँ, सृष्टि-क्रम कभी रुकता नहीं है। इससे पता चलता है कि आप सदैव कर्म में संलग्न रहती हैं। फिर चाय बनाने जैसे छोटे से काम को आप कैसे पूरा नहीं कर पाईं!

क्रियादेवी : क्या बताऊँ-बेटी! चाय बनाने में क्या-क्या सामान लगता है, यह तो मुझे मालूम है। चाय बनाने की विधि भी मैं जानती हूँ, लेकिन मुझे यह नहीं मालूम कि वह सामान कहाँ रखा है, कहाँ चाय की पत्ती रखी है, कहाँ शक्कर रखी है.... यहाँ-वहाँ, ऊपर-नीचे सब ओर देखा- ये दोनों चीजें मुझे मिली ही नहीं। चाय में दूध कितना डलेगा, यह भी मैं नहीं जानती। थोड़ा या बहुत, अंदाज़ लगा सकती हूँ किन्तु उससे चाय स्वादिष्ट बनेगी या नहीं; और किस विधि से चाय कैसे बनानी है, यह भी मैं नहीं जानती; और कितनी देर तक उसे उबालना है, यह भी मेरे लिए समस्या है ?

क्रिया विशेषण : **(हँसते हुए)** ठीक कह रही हो माँ! मैंने तुम्हें इस विषय में कुछ बताया भी तो नहीं। मैं अभी चाय बनाकर लाती हूँ।

(पटाक्षेप)

सम्बन्ध - बोधक

*संज्ञा अथवा सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों से जोड़ने वाले शब्द **सम्बन्धबोधक** कहे जाते हैं। सम्बन्धबोधक से पूर्व संज्ञा के कुछ परसर्ग जुड़े रहते हैं। इसी से इसकी पहचान होती है। परसर्ग न होने पर वे **क्रियाविशेषण** कहलाते हैं।*

उदाहरण :-

1. मनु राम से **आगे** निकल गया। (यहाँ मनु और राम के सम्बन्ध का पता चलता है।)
2. मनु **आगे** निकल गया। (**आगे** शब्द **क्रिया** का बोध कराता है।)

पात्र परिचय

प्रथम व्यक्ति	–	संबंध कारक
द्वितीय व्यक्ति	–	संबंध बोधक
तृतीय व्यक्ति	–	क्रिया विशेषण
चतुर्थ व्यक्ति	–	संबंध वाचक सर्वनाम
अंग्रेज	–	विदेशी व्यक्ति

(किसी मार्ग पर चलते हुए दो व्यक्ति सहसा एक दूसरे को देखते हुए प्रश्न करते हैं।)

संबंध कारक : **(आश्चर्य की मुद्रा में)** लगता है, मैंने आपको कहीं देखा है।

संबंध बोधक : हाँ! हाँ!! मुझे भी ऐसा ही लग रहा है।

संबंध कारक : कहीं आप संज्ञानन्द जी के पड़ोसी तो नहीं हैं!

संबंध बोधक : आपने ठीक पहचाना, मैं उन्हीं के पड़ोस में रहता हूँ। लेकिन, आपने कैसे जाना ?

संबंध कारक : आप प्रतिदिन प्रात: टहलने जाते हैं। मैं संज्ञानन्द जी के घर में रहता हूँ। इसलिए आपको आते-जाते समय कभी-कभी देख लिया करता हूँ। कृपया अपना परिचय बताएँगे।

संबंध बोधक : मेरा नाम है - सम्बन्धबोधक और उपनाम है - अव्यय। आपका नाम

संबंध कारक : मेरा नाम! आपके ही नाम का संक्षिप्त रूप है, '**सम्बन्ध**' किन्तु उपनाम - कारक है।

संबंध बोधक : चलो! नाम की समानता से अब हम एक दूसरे को नहीं भूल पाएँगे। लेकिन आप करते क्या हैं ?

संबंध कारक : मैं संज्ञानन्द एवं उनके पुत्र सर्वनाम के साथ रहकर उनका सम्बन्ध अन्य व्यक्ति अथवा वस्तु या क्रिया देवी से जोड़ता हूँ।

संबंध बोधक : महोदय! आपका आशय मैं ठीक से समझ नहीं पाया।

संबंध कारक : सुनिए - ***'प्रताप की तलवार रण में चमकती थी।'***

इस वाक्य में जब तक व्यक्ति यह नहीं जाने कि किसकी तलवार रण में चमकती थी, तब तक प्रताप का सम्बन्ध तलवार से कैसे जोड़ा जाएगा, बात भी तो समझ में नहीं आएगी। यहाँ आप जानते हैं - प्रताप, संज्ञा है, तथा तलवार वस्तु। इन दोनों का संबंध मैं की शब्द से जोड़ता हूँ; और यही मेरी पहचान है।

भविष्य में आप संज्ञानन्द जी के साथ जहाँ-जहाँ का, के, की और उनके पुत्र के साथ रा, रे, री ध्वनि सुनें- समझ लें, वही मैं हूँ। यही ध्वनि मेरी पहचान है।

संबंध बोधक : अच्छा! समझा!! आप संज्ञानन्द जी के सहायक हैं।

संबंध कारक : और आप ! आप भी तो अपना परिचय दीजिए। आप क्या करते हैं ?

संबंध बोधक : मैं! संज्ञानन्द जी एवं उनके पुत्र सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर उनका वाक्य के अन्य संज्ञा, सर्वनाम से सम्बन्ध का बोध कराता हूँ।

संबंध कारक : समझा नहीं। ज़रा ठीक से समझाइए। हम दोनों के कामों में अन्तर क्या है ? मैंने तो आपको उनके साथ कभी नहीं देखा।

संबंध बोधक : अच्छा! देखो **(संकेत करते हुए)**

'वह स्त्री घर के भीतर जा रही है।'

देख रहे हो मेरे द्वारा बोले गए इस वाक्य में यदि मैं यह नहीं कहूँ कि '**के भीतर**' जा रही है, तो आप कैसे समझेंगे कि वह कहाँ जा रही है। 'के सामने' 'के यहाँ' आदि शब्दों से जब तक मैं उसका सम्बन्ध क्रिया से नहीं जोड़ूँ, तब तक वह कहाँ जा रही, उस स्थान का निश्चय आप कैसे करेंगे।

संबंध कारक : यह आपने ठीक कहा। क्या इसके अलावा भी आप कुछ और काम करते हैं ?

संबंध बोधक : हाँ! करता हूँ। मेरे पास ऐसे बहुत से काम हैं। क्या सुन पाओगे ? बड़ी लम्बी सूची है उन कामों की। फिर भी उस सूची को पढ़ते समय तुम मुझे पहचानोगे कैसे? यह भी बताता हूँ। ज़रा ध्यान से सुनना।

सिवा आपके सब थे। यहाँ मेरी उपस्थिति आपके पहले हो गई।

संबंध कारक : कैसे ?

संबंध बोधक : आप ही ने कहा था कि मुझे का, की, के - के रूप में पहचानना। अब, आपके पहले मैं 'सिवा' के रूप में आ गया। बताइए! आया या नहीं। मेरे पास ऐसे दो शब्द और हैं - 'मारे' और 'बिना' जो आपके पहले आ जाते हैं - जैसे - मारे गरमी के चैन नहीं। बिना पुस्तक के अध्ययन संभव नहीं। अतः मेरे बारे में अधिक जानना हो तो व्याकरण की पुस्तक में मेरी 'आत्मकथा' पढ़ लेना।

(क्रिया विशेषण का प्रवेश)

क्रिया विशेषण : नमस्ते! दोस्तो! कहिए क्या चल रहा है।

संबंध बोधक : कुछ नहीं! आज हम एक-दूसरे से पहचान कर रहे हैं। पहली-पहली मुलाकात है। किन्तु आप कौन हैं ? यह तो बताइए। हम आपके दोस्त कैसे हुए? हम तो आपको जानते तक नहीं।

क्रिया विशेषण : आप कैसे जानेंगे? मैं तो क्रिया देवी की विशेषता बताती रहती हूँ, इसलिए लोग मुझे क्रिया विशेषण कहते हैं।

संबंध कारक : क्रिया देवी से आपका क्या सम्बन्ध है ?

क्रिया विशेषण : क्रिया देवी की पुत्री हूँ, मैं..

संबंध कारक : किन्तु मैंने तो आपको कहीं देखा नहीं!

क्रिया विशेषण : देखोगे कैसे!! हममें और तुम लोगों में इतनी समानता है कि अच्छे-अच्छे लोग धोख़ा खा जाते हैं।

संबंध कारक : कैसे ?

क्रिया विशेषण : जैसे - कोई मुझसे पूछे - मंदिर कहाँ है ?

तो मैं कहूँगी - सामने मंदिर है।

और सम्बन्ध बोधक से पूछे। तो ये कहेंगे -

संबंध बोधक : घर के सामने मंदिर है।

संबंध कारक : 'सामने' शब्द तो दोनों जगह आया है। फिर हम इसमें अन्तर कैसे जानेंगे कि कौन – सम्बन्ध बोधक है, और कौन क्रिया विशेषण ?

क्रिया विशेषण : **(हँसकर)** इतनी छोटी बात भी तुम नहीं समझते मित्र! मैं और सम्बन्ध बोधक, दोनों का ही उपनाम अव्यय है। हम कभी नहीं बदलते। इसलिए हमें लोग अविकारी शब्द के नाम से भी जानते हैं। किन्तु तुम तो संज्ञा और सर्वनाम के साथ रहकर पल-पल बदलते रहते हो। इसलिए विकारी हो।

संबंध कारक : यह कहकर तुम हमारा अपमान कर रहे हो। संसार में दो ही तो भाव हैं – एक विकारी और एक अविकारी। हम सबका सम्बन्ध अटूट है। एक दूसरे के पूरक हैं हम (याने हमारे ये भाव) ये भाव।

संबंध बोधक : ठीक है! बुरा न मानो। मैं बताता हूँ – हम लोग आपस में भ्रमित नहीं होते। जब क्रिया के बारे में यह पता लगाना हो कि -कैसे, कब, कहाँ और कितनी हो रही है – तो क्रिया विशेषण बताएगी। और जब वाक्य में आए संज्ञा-सर्वनाम शब्द का परस्पर सम्बन्ध बताना हो तो उसका बोध मैं कराऊंगा। इसीलिए तो लोग मुझे 'सम्बन्ध-बोधक' के नाम से जानते हैं। जैसे कि मंदिर के बारे में पूछने पर मैंने बताया – घर के सामने मंदिर है। इसमें मैंने के सामने कहकर घर और मंदिर का सम्बन्ध बता दिया; और सामने कहकर क्रिया विशेषण ने क्रिया के स्थान का बोध करा दिया।

(तभी एक अंग्रेज का प्रवेश)

अंग्रेज : नमस्ते! क्या आप लोग अपना परिचय देंगे?

(सभी एक साथ नमस्ते करते हैं, और एक-एक कर परिचय देते हैं)

संबंध कारक : मेरा नाम सम्बन्धकारक है।

संबंध बोधक : मेरा नाम सम्बधबोधक है।

तृतीय व्यक्ति : मेरा नाम क्रिया विशेषण है।

अंग्रेज : क्या आपके नाम का अंग्रेजी अनुवाद जान सकता हूँ।

संबंध कारक : मुझे अंग्रेजी में Possesive Case कहते हैं। **(द्वितीय तथा तृतीय व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए)** ये दोनों अंग्रेजी नहीं जानते। मैं इनका नाम बताता हूँ। **(द्वितीय व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए)** इनका नाम Post Position है। **(तृतीय व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए)** और इन्हें Adverb कहते हैं।

(तभी एक व्यक्ति का मंच पर प्रवेश होता है। सभी आश्चर्य से देखते हैं और पूछते हैं)

सभी : आप कौन ?

चतुर्थ व्यक्ति : मेरा नाम सम्बध वाचक सर्वनाम है। मेरा काम है वाक्य में एक सर्वनाम से दूसरे सर्वनाम का सम्बन्ध जोड़ना।

संबंध कारक : जैसे

संबंध वाचक : जिसकी लाठी, उसकी भैंस।

जिसकी न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई,

मैं तो साफ–साफ कहता हूँ – जो करेगा, सो भरेगा,

जैसी करनी – वैसी भरनी,

जो सोबत है – सो खोबत है,

जैसा खाए अन्न – वैसा होए मन।

और भी सुनना चाहते है!

प्रथम व्यक्ति : बहुत हुआ भाई, अब चलना चाहिए।

(पटाक्षेप)

समुच्चय - बोधक

*दो शब्दों अथवा वाक्यांशों को एक-दूसरे के साथ जोड़ने वाले शब्द **समुच्चयबोधक** कहलाते हैं।*

<u>पात्र परिचय</u>

रमेश	–	विद्यालय का छात्र
श्यामा	–	विद्यालय की छात्रा
समुच्चय बोधक		

(रमेश और श्यामा का प्रवेश)

रमेश : जानती हो श्यामा! रविवार को मैं, मेरा भाई और मेरा दोस्त श्याम ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर बातें कर रहे थे कि – हो जाए आज पिकनिक। तभी पिताजी आए और कहने लगे – पिकनिक मनाने कहाँ जाओगे? वन-विहार या चिड़ियाघर। मैंने कहा – चिड़ियाघर। सभी जाने की तैयारी में लग गए। अचानक वर्षा होने लगी, और लगातार होती रही। इसलिए हम लोग पिकनिक पर नहीं जा सके।

श्यामा : चलो अच्छा हुआ। मैं तुमसे ही मिलने आई थी। आज गुरुजी ने '**सम्मुचय-बोधक**' पर एक प्रतियोगिता रखी है। प्रतियोगिता में दो दल बनाए गए हैं – एक दल का नाम रखा है – **समानाधिकरण समुच्चय बोधक**; और दूसरे दल का नाम रखा है – **व्यधिकरण समुच्चय बोधक**। शनिवार को तुम विद्यालय नहीं आए थे। इसलिए तुम्हें यह बताना मेरा कर्त्तव्य था। तुम किस दल में भाग लोगे।

रमेश : अरे! पहले यह तो बताओ कि 'समुच्चय बोधक' किसे कहते हैं ? और उन्होंने यह प्रतियोगिता क्यों रखी है ?

श्यामा : तुम नहीं जानते 'समुच्चय बोधक' किसे कहते हैं तो मैं बताती हूँ। समुच्चय का अर्थ है – समूह। जो अविकारी शब्द दो या दो अधिक शब्दों या वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें <u>**समुच्चय बोधक**</u> कहते हैं।

रमेश : यह काम तो 'सम्बन्ध बोधक जी' भी करते हैं। **(सामने से सम्बन्ध बोधक जी आते दिखाई देते हैं।)** देखो! सम्बन्ध बोधक जी आ रहे हैं। उनसे ही चर्चा करते हैं। वे भी तो शब्दों का सम्बन्ध जोड़ते रहते हैं।

(सम्बन्ध बोधक जी दोनों के समीप आते हैं। दोनों उन्हें प्रणाम करते हैं।)

श्यामा : महोदय! रमेश कह रहे हैं कि आप दो शब्दों का परस्पर संबंध जोड़ते हैं; यही काम समुच्चय बोधक जी भी करते हैं। दोनों के काम में क्या अन्तर है ? कृपया बताने का कष्ट करें।

संबंध बोधक : मैं किसी वाक्य में उन शब्दों का सम्बन्ध जोड़ता हूँ, जहाँ संज्ञा और सर्वनाम होते हैं; जैसे- हनुमान राम के भक्त थे; <u>और</u> वे उनकी सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते थे। वाक्य में पहचाना मुझे। यहाँ 'और' के रूप में मैं ही तो वाक्य में भक्त और सेवा को जोड़ रहा हूँ।

अब एक दूसरा वाक्य सुनो – राम शांत स्वभाव के थे परन्तु लक्ष्मण उग्र स्वभाव के थे। इसमें <u>परन्तु</u> शब्द समुच्चय बोधक है क्योंकि यह एक दूसरे के स्वभाव के अन्तर को बता रहा है। विरोधी गुण बताने का काम समुच्चय बोधक का है।

रमेश : परन्तु!

संबंध
बोधक : अब मैं चलता हूँ – किन्तु, परन्तु, क्योंकि यह समझाना मेरा काम नहीं। देखो सामने से वे कौन आ रहे हैं ?

श्यामा : हम नहीं पहचानते उन्हें।

संबंध
बोधक : वे स्वयं समुच्चय बोधक जी हैं। उनसे चर्चा कर आगे की बात जानो।

(एक ओर से सम्बन्ध बोधक जाते हैं। दूसरी ओर से समुच्चय बोधक का प्रवेश)

समुच्चय
बोधक : कहो बच्चो! क्यों परेशान से लगते हो!

(दोनों चुप रहते हैं)

समुच्चय
बोधक : कुछ कहो भी!

रमेश : कैसे कहें ?

समुच्चय
बोधक : क्यों क्या हुआ ?

श्यामा : मैं बताती हूँ महाशय! आज विद्यालय में आपके नाम पर **समुच्चय बोधक प्रतियोगिता** गुरुजी ने आयोजित की है। उसमें दो दल रहेंगे। समानाधिकरण – समुच्चय बोधक पहला दल रहेगा। दूसरे दल का नाम होगा – व्यधिकरण समुच्चय बोधक। अब हम किस दल में भाग लें, यह निश्चय नहीं कर पा रहे हैं। फिर हमारी जीत किस दल में रहकर होगी, यह भी नहीं जानते। आप हमें दोनों दलों के बारे में जानकारी दे दें तो हम निश्चय कर सकें कि मुझे किस दल में रहना ठीक होगा। रमेश को कौन से दल में रहना ठीक होगा। या कि हम एक दल में रहकर जीत सकते हैं।

समुच्चय
बोधक : अच्छा बताओ! प्रत्येक दल में कितने–कितने छात्र रहेंगे ?

श्यामा : चार–चार

समुच्चय
बोधक : चार–चार ही क्यों ? उससे कम या ज्यादा क्यों नहीं।

श्यामा : क्योंकि हमें ऐसा ही बताया गया है कि 'समानाधिकरण समुच्चय' के चार भेद हैं; 'व्यधिकरण समुच्चय' के भी चार। कुल आठ भेद में से हम कैसे पहचानेंगे कि कौन सा वाक्य किस भेद का है। आप तो स्वयं इसके जानकार हैं। कुछ बताइए न।

समुच्चय

बोधक : अच्छा बताओ! प्रतियोगिता का स्वरूप क्या है ?

श्यामा : प्रतियोगिता में दोनों दलों के प्रतिभागी एक दूसरे के सामने बैंठेगे। प्रत्येक छात्र के आगे उनके नाम की पट्टिका लगी रहेगी।

समुच्चय बोधक : क्या तुम्हें उन पट्टिकाओं पर लिखे जाने वाले नामों का पता है?

श्यामा : हाँ महाशय!

समानाधिकरण समुच्चय बोधक दल

1. संयोजक
2. विकल्प-वाचक
3. विरोध-वाचक
4. परिणाम-वाचक

व्यधिकरण समुच्चय बोधक दल

1. कारण वाचक
2. उद्देश्य वाचक
3. संकेत वाचक
4. स्वरूप वाचक

गुरु जी हम को एक वाक्य बोलेंगे, और कहेंगे कि वह छात्र खड़ा हो जाए, जिसके सामने इस वाक्य से संबंधित पट्टिका रखी है। यदि खड़े होने पर छात्र की पट्टिका वाक्य-रचना के अनुसार सही पाई गई तो वह छात्र विजेता रहेगा। प्रतियोगिता तब तक चलती रहेगी, जब तक किसी दल की स्पष्ट विजय न हो।

अब आप इतनी कृपा कीजिए कि इन सबका एक-एक उदाहरण इस प्रकार दें कि हम किसी भी वाक्य में इनको अच्छी तरह पहचान लें।

समुच्चय बोधक : तो सुनो - एक-एक उदाहरण समानाधिकरण के चारों भेदों के सुनो। पहले समानाधिकरण का अर्थ भली भाँति जान लो। समानाधिकरण का सामान्य अर्थ है - जो अव्यय शब्द दो या दो से अधिक समान स्थिति वाले शब्दों को जोड़ते हैं, उन्हें पहचानना। यह पहचान समानता के आधार पर होती है। यह समानता चार प्रकार से होती है -

1. दो शब्दों के मेल द्वारा - इसे **संयोजक** कहते हैं।

जैसे - राम <u>और</u> कृष्ण विष्णु के अवतार हैं।

यहाँ 'और' शब्द क्या है - समानता दर्शाने वाला शब्द। यह शब्द इस वाक्य में राम और कृष्ण की समानता बतलाता है।

अब तुम एक वाक्य बोलो -

श्यामा : राम वन में शबरी से मिले और उसके दिए जूठे बेर उन्होंने खाए।

समुच्चय बोधक : बहुत अच्छे! यह 'और' शब्द ही संयोजक है।

रमेश : समझा। अब तो ऐसे किसी वाक्य में संयोजक महोदय को पहचान लूँगा। अब दूसरी समानता बताइए न।

समुच्चय बोधक : तुम यहाँ मिलो या वहाँ हम हर जगह तुम्हारी समस्या का हल करेंगे। बताओ इसमें विकल्प वाला शब्द क्या है ?

श्यामा : 'या'।

समुच्चय बोधक : अब एक वाक्य बनाओ।

श्यामा : या तो प्रतियोगिता मैं जीतूँगी या पढ़ना छोड़ दूँगी।

समुच्चय बोधक : बहुत अच्छे! मिलकर प्रतियोगिता में भाग लेना वरना पछताओगे। देखो न मैं तुम्हें मिलता, न तुम यह विकल्प की बात समझते। यह 'न' भी **विकल्प वाचक** शब्द है।

दोनों : **(रमेश और श्यामा एक साथ)** ठीक है, समझ गए।

समुच्चय बोधक : अब इस वाक्य को भी ध्यान से सुनना। मैंने और बहुत लोगों को यह बात समझाई लेकिन उनकी समझ में कुछ नहीं आया। अब बताओ इसमें लेकिन शब्द क्या बता रहा है?

रमेश : इसमें **'लेकिन'** शब्द **विरोध वाचक** है। किन्तु-परन्तु, वरन्, बल्कि, यह सब **विरोध वाचक** है। देखिए - एक वाक्य मैं भी बोलता हूँ -
'हरिजन कन्या से विवाह करना लज्जा की बात नहीं वरन् गौरव की बात है।'

(श्यामा हँस देती है और कहती है।)

श्यामा : रमेश याद रखना यह बात वरना मैं तुम्हें....

समुच्चय बोधक : अरे! ऐसे उलझो मत। समय कम है। आगे इस दल के अंतिम सदस्य के बारे में भी जान लो-

'मैं बीमार था, इसलिए प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सका।'

यहाँ - इसलिए, अत: इन शब्दों में पहले वाक्यांश का परिणाम दूसरे वाक्यांश द्वारा जाना जा सकता है, अत: इन्हें **परिणाम वाचक** कहा जाता है।

रमेश : अब व्यधिकरण समुच्चय बोधक के विषय में भी बताइए न, ताकि हम निश्चय कर सकें कि किस दल में हमें बैठना है।

समुच्चय बोधक : समय बहुत कम है। काम भी कठिन है। फिर भी बताता हूँ। **व्यधिकरण** शब्द का अर्थ है (वि + अधिकरण) अर्थात् एक वाक्य में दो उपवाक्य होना। इन दो उपवाक्यों में प्रथम उपवााक्य आश्रय सूचक होता है, दूसरा आश्रित। **व्यधिकरण समुच्चयबोधक** इन दोनों उपवाक्यों को चार प्रकार से जोड़ता है। इस प्रकार व्यधिकरण समुच्चय बोधक के भी चार भेद हैं –

1. कारण वाचक
2. उद्देश्य वाचक
3. संकेत वाचक
4. स्वरूप वाचक

अब मैं एक साथ चार वाक्य बोलूँगा। तब तुम सहजता से ही इनमें छिपे व्यधिकरण समुच्चय बोधक के भेदों में से एक-एक को पहचान कर स्वयं बोलना। वाक्य बोलता हूँ-

पहला वाक्य –

मैं प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सका **क्योंकि** घर पर ज़रूरी काम आ गया था।

श्यामा : यह वाक्य **'क्योंकि'** कहकर कारण बता रहा है अत: यह **कारण वाचक** है।

समुच्चय बोधक : बहुत अच्छे! अच्छा रमेश अब तुम बताओ। कारण बताने वाले और कौन-कौन से शब्द हो सकते हैं –

रमेश : चूंकि, इस कारण, क्योंकि......

समुच्चय बोधक : बहुत ठीक। अब एक वाक्य और सुनो –

प्रतियोगिता में समय पर पहुँचना **ताकि** उसमें भाग ले सको।

रमेश : इसमें **ताकि** शब्द **उद्देश्य वाचक** है। ऐसे और भी शब्द हो सकते हैं; जैसे – जिससे, कि

समुच्चय बोधक : अब तीसरा वाक्य –

यदि तुम मेरी बात ध्यान से सुनोगे, **तो** अवश्य ही जीतोगे

श्यामा : यहाँ **संकेत वाचक** है- **'यदि'.. 'तो'** इसमें पहले शब्द आने के बाद दूसरे का संकेत मिल जाता है अर्थात् पहले शब्द में शर्त होती है, तो दूसरा शब्द उसका संकेत देता है। ऐसे शब्द और भी हो सकते हैं; जैसे यद्यपि... फिर भी,चाहे, परन्तु।

समुच्चय
बोधक : अब अंतिम वाक्य के संबंध में भी जान लो-

सज्जन प्रत्येक व्यक्ति का हितैषी होता है **अर्थात्** भला चाहता है।

- मेरा तुम लोगों से मिलना आज इसीलिए हुआ कि मैं तुम्हारा भला चाहता हूँ, अन्यथा मैं क्यों समय बरबाद करता भला।

रमेश : हाँ! महाशय अब समझे। अब आपने अपने स्वरूप का सही-सही परिचय देकर **स्वरूप वाचक** के अर्थ को भी ठीक- ठीक समझा दिया। अब हम समझ गए कि जहाँ-जहाँ अर्थात्, मानो शब्द आए वहाँ स्वरूप का सही बोध होने से वाक्य का अर्थ ठीक ठीक समझ में आता है। आपने भी यही काम किया। बहुत बहुत धन्यवाद!!

समुच्चय
बोधक : याद रखना -

सत्यमेव जयते अर्थात्

रमेश-श्यामा समवेत स्वर में - सत्य की ही जीत होती है।

(पटाक्षेप)

विस्मयादि - बोधक

मन में भावों या उद्‌गारों का बोध कराने वाले शब्द;
जैसे- सुख-दु:ख, विस्मय, घृणा, शोक आदि।
इन शब्दों का लक्ष्य कोई विशेष अर्थ बताना नहीं होता। यह तो अनायास निकल जाते हैं। इनके आगे और शब्द नहीं लगाते।
इनका प्रयोग वाक्य के प्रारम्भ में होता है; और इनके बाद विस्मय चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे-राम! रक्षा करो!

पात्र परिचय

एक व्यक्ति
विस्मयादि बोधक
प्रथम छात्र
द्वितीय छात्र
फल विक्रेता
अंधा पुरुष
भद्र पुरुष

(मंच पर एक व्यक्ति घबराया हुआ दौड़ रहा है। तभी एक कोने से विस्मयादि बोधक का प्रवेश होता है।)

एक व्यक्ति : हाय! मैं लुट गया। हाय! मैं लुट गया।

विस्मयादि बोधक : अरे! आपको क्या हुआ ?

एक व्यक्ति : क्या बताऊँ! मैं तो लुट गया। मेरा बटुआ सड़क पर कहीं गिर गया। उसे ही ढ़ूँढ रहा हूँ।

विस्मयादि बोधक : क्या! बटुवा गिर गया। अरे! पर्स कहो, पर्स। यहाँ 'बटुआ' कोई नहीं समझता। अब उसे कहाँ ढूँढोगे? उसे तो कोई उठाकर ले गया होगा।

एक व्यक्ति : हे राम! रक्षा करो। मेरा पर्स दिलवा दो।

विस्मयादि बोधक : अरे! देखो! देखो!! सामने से ट्रक आ रहा है। दूर हटो। वरना मर जाओगे।

(व्यक्ति दूर हटता है, ट्रक निकल जाता है। तभी एक बालक बटुआ लिए हुए आता है।)

बालक : अंकल! यह रहा आपका पर्स। (बटुआ देता है।)

एक व्यक्ति : अहा! तुम कितने अच्छे हो।

बालक : धन्यवाद!

एक व्यक्ति : धन्यवाद तो मुझे देना चाहिए। तुम बहुत ईमानदार बालक हो। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ बेटे कि तुम दीर्घायु बनो!

विस्मयादि बोधक : शाबाश! बेटे, जीते रहो! मैं भी तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ।

बालक : **बाप-रे-बाप!**

विस्मयादि बोधक : क्या हुआ बेटे ?

बालक : मुझे स्कूल जाना है। मुझे देर हो रही है। मैं तो भूल ही गया था। **(बालक मंच से चल देता है।)**

विस्मयादि बोधक : कितना अच्छा बालक है! ऐसे ही ईमानदार बालक देश की शान होते हैं।

एक व्यक्ति : **जी हाँ!** ठीक कहा आपने।

(व्यक्ति का प्रस्थान। तभी एक फल विक्रेता टोकरी में फल लेकर बेचने के लिए आवाज़ लगाता हुआ मंच पर आता है।)

फल विक्रेता : फल ले लो! फल..

विस्मयादि
बोधक : **अजी!** इधर तो आओ।
फल विक्रेता : हाँ! क्या चाहिए आपको?
विस्मयादि
बोधक : केले।
फल विक्रेता : ये रहे केले।
विस्मयादि
बोधक : **(केले देखकर) छि:!** कितने सड़े फल रखते हो। **ख़बरदार!** यदि ऐसे केले बेचोगे तो..। **(रुककर, धीमे से) अबे!** खड़ा क्यों हैं ? चलता बन यहाँ से। वरना...
फल विक्रेता : **(मन ही मन) ऊँह!** इस आदमी की तो अक़ल ही मारी गई है।
विस्मयादि
बोधक : **अरे भाई साहब!** क्या कह रहे हो? ज़रा जोर से बोलो तो।
फल विक्रेता : जाओ! जाओ! तुम्हारे जैसे बहुत देखे हैं।

(फलवाला चला जाता है। तभी एक अंधे का प्रवेश)

अंधा : **भला करे भगवान!** इस अन्धे को कुछ देते जाओ।
विस्मयादि
बोधक : **राम-राम!** तुम भीख क्यों माँगते हो?
अंधा : **कौन!** मुझसे कुछ कहा। उपदेश देने वाले बहुत देखे। न देना हो, तो न दो। देखते नहीं! आज कितनी सर्दी है।

(अंधा चला जाता है। स्कूल के दो छात्र परस्पर बातें करते हुए आते हैं।)

प्रथम छात्र : **वाह!** आज तो कमाल कर दिया। मैंने सबसे पहले सभी सवाल हल कर दिए।
द्वितीय छात्र : कहीं नकल करके तो सवाल हल नहीं किए तुमने! सच बताना।
प्रथम छात्र : **अरे मूर्ख!** तू पढ़ाई का मतलब कब समझेगा। जैसा खुद है, वैसा मुझे भी समझता है।
विस्मयादि
बोधक : **शाबाश!** सदा इसी तरह पढ़कर तुम सुयश प्राप्त करो।
द्वितीय छात्र : अरे वाह! तू कौन है, हमारे बीच में बोलने वाला।
प्रथम छात्र : **(द्वितीय छात्र से)** क्यों! सच कहने पर इतना बुरा क्यों लगता है ?
द्वितीय छात्र : **चुप!** ज्यादा मुँह मत चला।
विस्मयादि
बोधक : **उफ!** कितने उद्दण्ड हो तुम। ज़रा तमीज़ से बात करना सीखो। हमारे बीच में मुँह मत मारो।

(तभी भद्र पुरुष का प्रवेश होता है)

भद्र पुरुष : मैं दूर से ही तुम लोगों की बातचीत सुन रहा हूँ। अच्छे बच्चे ऐसा नहीं बोलते। बड़ों का सम्मान करना सीखो। **सावधान!** आगे एक भी शब्द बोला तो। चलो, आगे बढ़ो। **(दोनों छात्र चले जाते हैं।)**

विस्मयादि बोधक : **अरे!** भद्र पुरुष आप यहाँ कैसे!

भद्र पुरुष : आप विस्मयानंद जी हैं। तभी मैं कहूँ, उस बालक ने जो कुछ कहा, वह आपने सुन कैसे लिया ?

विस्मयादि बोधक : सुनना पड़ता है। मैं तो सभी की मंगल कामना करता हूँ, और कहता हूँ - **हे भगवान!** सबको सद्बुद्धि देना।

भद्र पुरुष : सुनना क्यों पड़ता है ? विस्मय का अर्थ होता है - आश्चर्य। जो शब्द अचानक हमारे मुँह से निकल जाते हैं, वे ही तो आश्चर्य प्रकट करते हैं। हम सोच-समझकर इन शब्दों का प्रयोग थोड़े ही करते हैं। लेकिन एक बात मैं पूछना चाहता हूँ विस्मयानन्द जी - **विस्मयादि** में विस्मय के अतिरिक्त 'आदि' बताने वाले कौन-कौन से साथी शब्द आपके साथ रहते हैं ?

विस्मयादि बोधक : मेरा मुख्य काम है मन में आने वाले अलग-अलग भावों को प्रकट करना। विस्मय के अतिरिक्त कुछ मनोभाव और हैं, जो इस प्रकार हैं -

1. **मन की प्रसन्नता के भाव** को प्रकट करने वाले शब्द हैं -
   वाह !, शाबास !, धन्य !, अहा !, क्या खूब !, अति सुन्दर !
2. **मन में भय के भाव** को प्रकट करने वाले शब्द हैं-
   बाप-रे-बाप !, राम-राम !, अरे बाप रे !
3. **शोक प्रकट करने के भाव** को प्रकट करने वाले शब्द हैं -
   हाय !, उफ़ !, अहा ओह !, हाय दैया !, हाय राम !
4. **घृणा के भाव** को प्रकट करने वाले शब्द हैं -
   छी-छी !, थू-थू !, हट !, धिक्कार है !, धत् !
5. **स्वीकार के भाव** को प्रकट करने वाले शब्द हैं-
   हाँ !, हाँ जी !, जी हाँ !, ठीक !, अच्छा !, बहुत अच्छा !
6. **अस्वीकार के भाव** को प्रकट करने वाले शब्द हैं -
   ऊँह ! हुँह !
7. **चेतावनी के भाव** को प्रकट करने वाले शब्द हैं-

सावधान!, ख़बरदार!, बचो!, हटो!

8. आशीर्वाद के भाव को प्रकट करने वाले शब्द हैं-

जय हो!, जियो!

9. विवशता के भाव को प्रकट करने वाले शब्द हैं-

काश!, कदाचित्!

(कुछ स्मरण करते हुए) अरे! मुझे तो संज्ञानन्द जी के घर जाना था। रास्ते में ही इतना समय बीत गया। हे भगवान! वे घर पर मिलेंगे भी, या नहीं।

(विस्मय बोधक का संज्ञानन्द जी के घर के लिए प्रस्थान)

(पटाक्षेप)